Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

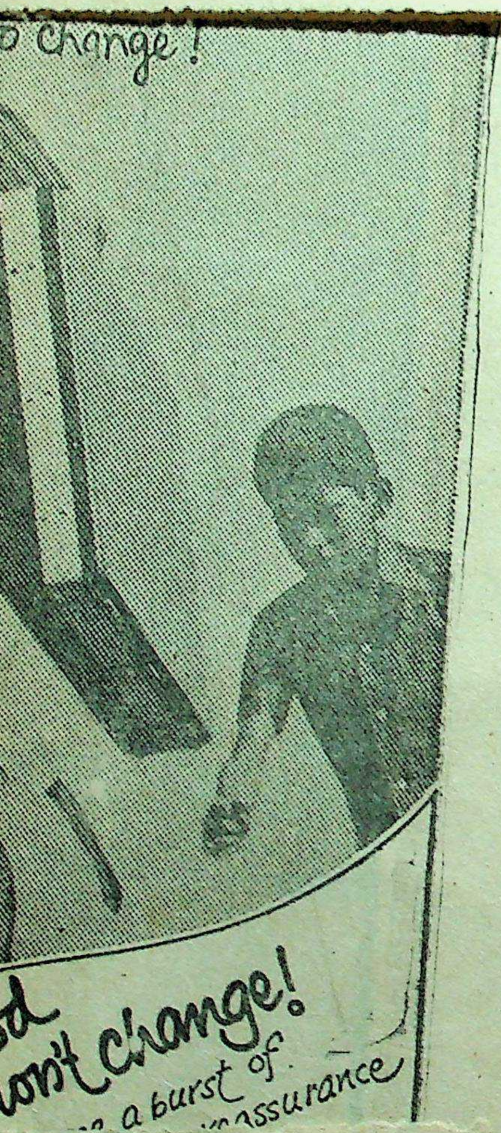

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बाल गंगाधर जी त्रिपाठी द्वारा
श्री त्रिपाठी हिन्दी विद्यापीठ पुस्तकालय
को
—: समर्पित :—

Satish Chandra Misra.
20, [illegible] Nagar,
UNNAO.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

o change

d
on't cha ge!
a burst

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास

Satish Chandra Misra
20, Station Road
UNNAO.
श्री विद्यार्थी विद्यापीठ उन्नाव

लेखक
श्री मन्मथ नाथ गुप्त

प्रकाशक
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० लि०
आगरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक—
गोर्धनदास जैन,
व्यवस्थापक—
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, लि०,
आगरा।

प्रथम संस्करण सितम्बर १९४८
मूल्य ६)

मुद्रक—
बा० गुलाबचन्द अग्रवाल बी०कॉम,
अग्रवाल प्रेस, रावतपाड़ा, आगरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

20, Atal Bavari Nag
UNNAO.

भूमिका

भारतवर्ष में राष्ट्रीय आन्दोलन एक ऐसे सोपान पर पहुँच चुका है, जहाँ से ऐसा प्रतीत होता है कि अब उसका लक्ष्य बहुत दूर नहीं है। ऐसे समय में यह उचित ही है कि हम यह देखें कि किन शक्तियों तथा व्यक्तित्वों की बदौलत हम इस योग्य हुए हैं। यह तो ठीक है, पर कम से कम १०० वर्ष तक फैले हुए इस आन्दोलन का इतिहास लिखना बहुत कठिन कार्य था। इस आन्दोलन के एक एक अध्याय पर एक एक पुस्तक लिखी जा सकती है, और फिर भी इतिहास पूरा न हो। इसलिए स्वाभाविक रूप से हमें नीर क्षीर विवेक से काम लेना पड़ा है, और अत्यन्त सावधानी करने पर भी मुझे डर है कि, कई क्षेत्र में नीर के धोखे में कुछ क्षीर भी छूट गया होगा।'

एक तो भारतवर्ष करीब करीब एक महादेश है। दूसरा यहां के राष्ट्रीय आन्दोलन में इतनी तरह की लहरें उठ चुकी हैं कि सबके साथ न्याय करना असम्भव सा है। क्या कोई महासागर की तरंगों को गिन सकता है? तिस पर जब कि कुछ तरंगें इधर से आ रही हों, कुछ उधर से फिर बाहर की हवा, तिथि तथा वातावरण का असर हो, तब तो यह कार्य और भी कठिन हो जाता है। इसलिए जो लोग इस अपेक्षा कृत क्षुद्र ग्रन्थ में सब कुछ ढूढ़ेंगे, वे निराश होंगे। इतने छोटे से दायरे में किसी एक धारा का भी पूर्ण इतिहास लिखना सम्भव नहीं है। इसके बावजूद मैं यह समझता हूँ कि भारतीय किसी भी भाषा में हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के सम्बन्ध मे इतना अधिक उपादन एक साथ इकट्टा नहीं किया गया है जितना कि इस पुस्तक में किया गया है।

कुछ लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलन के किसी किसी हिस्से का इतिहास लिखा है, पर उन इतिहासों की सब से बड़ी त्रुटि यह है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि उनमें लेखक के विशेषमत तथा अभिरुचि के अनुसार यह दिखाया गया है कि मानो एक ही धारा ने भारत में इतिहास का निर्माण किया है। उदाहरणार्थ श्री. सी. वाई. चिन्तामणि ने राष्ट्रीय आन्दोलन के कुछ हिस्से का इतिहास लिखा है, उसे पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि मानो माडरेटों ने ही घर बैठे कुर्सी तोड़ कर तथा लच्छेदार स्पीचें झाड़ कर भारतीय इतिहास का निर्माण किया है। इसी प्रकार श्री सीता रमैया ने अपने इतिहास में ऐसा दिखाया है कि काँग्रेस के अतिरिक्त कोई विशेष धारा ही नहीं थी। उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन तथा मजदूर आन्दोलन का कोई उल्लेख ही नहीं किया है, या किया भी है तो गौण रूप में उन्होंने १६१३ तक कांग्रेस का भी कोई सिलसिलेवार इतिहास नहीं दिया।

आगामी काल की दृष्टि में आज जो लोग सब से महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व दिखलाई दे रहे हैं, तथा जिनकी तूती सर्वत्र बोल रही है, महाकाल की कसौटी में वे आज की ही तरह महत्वपूर्ण समझे जायेंगे, ऐसी कोई बात नहीं है। जिन दिनों मार्क्स ब्रिटिश म्यूजियम की खाक छाना करता था, उन दिनों कौन जानता था कि बाद के युग में उसका ऐतिहासिक महत्व इतना अधिक होगा कि सारी दुनिया उसके विरोधी तथा उसके अनुयायी इन दो हिस्सों में बटी हुई दिखाई देगी।

इसलिये मैंने इस इतिहास में सब धाराओं के साथ न्याय करने की कोशिश की हैं। मैं यह विश्वास करता हूँ कि जैसे प्रकृति की योजना में कोई भी चीज फालतू नहीं है, उसी प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन में वे सभी धाराएँ जो प्रगतिशील तथा साम्राज्य वाद विरोधी रही हैं अपने अपने ढंग से महत्वपूर्ण हैं, और उन्होंने जनता के मन पर कम या अधिक असर डाला। इस दृष्टि से इतिहास में उनका वर्णन आना चाहिये।

इस इतिहास में हिन्दू मुस्लिम प्रश्न अछूत समस्या आदि की जड़ों पर भी जाना था, क्योंकि ये प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है, केवल इसलिये नहीं कि करोड़ों लोगों के भाग्य से इनका सम्बन्ध है, बल्कि इसलिये भी कि इन प्रश्नों का अभी तक समाधान नहीं हुआ है। इन प्रश्नों की जड़ों तक जाने के लिये हमें भारतवर्ष के प्रारम्भिक तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Satish Chandra Misra, 20, Ashok Nagar, UNNAO.

मध्ययुगीन इतिहास पर बहुत सरसरी निगाह से दो चार बातें कहनी पड़ी हैं। यदि हम इन प्रश्नों की सदियों पुरानी जड़ों तक न जाकर केवल ऊपर ऊपर की बातें कहते, तो मैं समझता हूँ कि पूरी समस्या अपने वास्तविक परिप्रेक्षित में हमारे सामने नहीं आ सकती और इसलिए यह स्वाभाविक है कि उसका सही समाधान हमारे सामने नहीं आता। मैंने केवल दो बातें गिनायीं, पर इसी प्रकार हमारे राष्ट्रीय जीवन में जितनी भी समस्यायें हैं, उन सबका इतिहास के जरिये से ही समाधान करने की चेष्टा की गयी है।

प्राक गांधी युग का इतिहास बहुत से लोगों के निकट बहुत धुंधला है, पर हमारी राष्ट्रीयता का उदय उसी युग में हुआ, इस कारण हमने इस युग के इतिहास को कुछ ब्यौरे के साथ लिखा है। इस इतिहास को जाने बगैर यह सम्भव नहीं है कि हमारी राष्ट्रीयता के गुणावगुण को पूरे तरीके से समझा जाय। फिर गांधी युग का इतिहास तो अभी कल की बात है; उसके सम्बन्ध में अधिक ब्यौरे में जाने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

इस ग्रन्थ में कांग्रेस के प्रारम्भिक युग का इतिहास इस तरह से लिखा गया है कि विचारों तथा धाराओं का विकास अच्छी तरह से समझ में आवे! जैसे विज्ञान के इतिहास में कोई छलांग नहीं है, और यदि छलांग है तो वह विकास की प्रक्रिया के बाहर नहीं है, बल्कि उसी प्रक्रिया को पूर्णता प्रदान करती है वैसे ही राजनैतिक विचारों के इतिहास के सम्बन्ध में कहा जा सकता है। हम यदि अल्पज्ञ है तो हमें ऐसा ज्ञात होगा कि अमुक नेता आया तो उसने देश के सामने जो विचार रखें वे सब के सब नये थे, पर अधिक जानने पर हमें ज्ञात होगा कि विचारों के तांतों में उस नेता का दान शायद इतना ही है कि उसने पहले से मौजूद विचारों तथा कार्य-क्रमों को एक नये समुदाय (Combination) में पेश किया, या कोई नया विचार भी दिया, तो एकाध विचार ही दिये। यही विज्ञान में है, और यही राजनीति में क्या इसका अर्थ यह है कि मैं इतिहास में किसी को महा पुरुष तथा युगान्तरकारी नहीं मानता? नहीं, यह बात नहीं। विज्ञान में भी जिस प्रकार न्यूटन, डार्विन तथा आइनस्टाईन हुए हैं उसी प्रकार भारतीय राजनीति में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिलक, गांधी, जवाहरलाल, नेताजी, भगतसिंह आदि महान् व्यक्तित्वों को मानना पड़ता है, जो सामाजिक आर्थिक अवस्था से उत्पन्न होने पर भी अपने अपने समय की महान् निधि तथा शक्ति हैं। व्यक्तित्व या व्यक्ति के विचारों का विकास दिखाना, उनके अस्तित्व को अस्वीकार करना नहीं है बल्कि ठीक तरह से समझना मात्र है।

अपनी कुछ अनिवार्य त्रुटियों के बावजूद मैं यह आशा करता हूँ कि राष्ट्रीयता को समझने में यह पुस्तक बहुत बड़ी सहायक सिद्ध होगी। कैसे मंजिल दर मंजिल जन शक्ति का इतना विकास हुआ कि हमारे गोरे शासक भारतवर्ष को छोड़ जाने के लिये कुछ न सही तो मौखिक रूप से ही सही एक तारीख देने के लिये मजबूर हुए हैं, यह इस पुस्तक में स्पष्ट हो जायेगा, और यही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

इस पुस्तक के लिखने में जिन पुस्तकों की सहायता ली गयी है, उनमें से कुछ का नाम Bibiliography में दिया गया है, पर मेरा गत २७ साल से राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ सजीव संस्पर्श भी रहा है। इसलिये केवल पुस्तकों से ही मुझे मदद मिली ऐसा कहना गलत होगा।

हजारी बाग, १९४७ **मन्मथ नाथ गुप्त**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: विषयसूची :

विषय	पृष्ठ
(१) प्रारम्भिक युग	१
(२) मुस्लिम आक्रमण	११
(३) पाश्चात्य जातियों का भारत आगमन	२१
(४) ब्रिटिश शासन का सूत्रपात	२८
(५) भारत का लाल होना और देशी धंधो का नाश	४१
(६) १८५७ की महाक्रान्ति और उसका दमन	६५
(७) राष्ट्रीयता का प्रथम प्रारम्भ	६७
(८) संगठित आन्दोलन की ओर	११०
(९) गोरों कालों की बराबरी की मांग	११८
(१०) जन आन्दोलन जोरो पर	१२३
(११) धार्मिक सुधारकों के प्रयास	१३२
(१२) प्राक कांग्रेस युग की संस्थायें	१३७
(१३) कांग्रेस का जन्म	१६०
(१४) कांग्रेस का पहला अधिवेशन	१७३
(१५) १८८६ से बंगभंग तक	१८४
(१६) बंगभंग और स्वदेशी	२३३
(१७) बंगभंग से प्रथम महायुद्ध तक	२४३
(१८) १९१४-१८ की हलचलें	२७३
(१९) प्राक असहयोग युग	२९१
(२०) असहयोग और चोरी चौरा	३०३
(२१) १९३०-३२ का आन्दोलन और उसका अन्त	३४१
(२२) लखनऊ कांग्रेस से त्रिपुरी तक	३७४
(२३) द्वितीय महायुद्ध में कांग्रेस	३९१
(२४) १९४२ की क्रान्ति	४०५
(२५) गांधीजी का अनशन और बंगाल का दुर्भिक्ष	४१४
(२६) आजाद हिन्द फौज	४२१
(२७) १९४२ के बाद	४२७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

BIBILIOGRAPHY

1. Rise of the Christian power in India — B.D. Basu
2. How India wrought for her freedom — Annie Besant
3. The History of the Congress ... Sitaramayya
4. Indian National evolution — Ambica Ch. Majumdar
5. Indian Home rule ... Gandhi
6, Autobiography ... ... Jewaharlal Nehru
7. Discovery of India ... ... Jewaharlal Nehru
8. Indian Struggle ... ... Subhash Bose
9. Nation in Making ... ... Surendra Banerjee
10. My experiments with truth Vol. I+II — Gandhi
11. Indian National congress Vol. I — Hemendradas Gupta
12, Report of the Sedition committee 1918
13. The Indian Press ... ... Vishwanath Iyer
14. Nationalism ... ... Tagore
15. Congress in evolution ... Chakrabarty Bhatta
16. Memories of life and time ... Bepenchandra Pal
17. New India ... ... Henry Cotton
18. Landmarks in constitutional history and national development — Gurmukh Nihal Singh
19. India To-day — Palms Dutt and other books

हिन्दी

१—भारतीय इतिहास की रूपरेखा भाग १ और २ जयचंद्र विद्यालंकार
२—भारत में सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास .... मन्मथनाथ गुप्त
३—अगस्त क्रान्ति और प्रति क्रान्ति .... मन्मथनाथ गुप्त
४—भारत में अंग्रेजी राज्य .... सुन्दरलाल
५—क्रान्ति युग के संस्मरण .... मन्मथनाथ गुप्त

बंगला

१—मुक्ति सन्धाने भारत ... योगेशचन्द्र बागल
२—तरूणेर स्वप्न .... सुभाष बोस
३—नूतनेर सन्धान .... सुभाष बोस
४—आत्मचरित ... राजनारायण वसु
५—आत्मचरित ... शिवनाथ शास्त्री
६—चरित कथा .... विपिनचन्द्र पाल

इनके अतिरिक्त सैकड़ों, पुस्तिकाओं आदि से मदद ली गई है जिनका उल्लेख संभव नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Satish Chandra Misra,
20, Atal Behari Nagar,
UNNAO.

: १ :

प्रारम्भिक युग

मनुष्य जाति के जिस अंश को हम भारतवासी नाम से पुकारते हैं, उसका वर्तमान रूप एक दिन की उपज नहीं है, शताब्दियों की प्रथायें, इतिहास, आर्थिक, सामाजिक कारण उसके विकास के पीछे हैं। यदि आदि काल से भारतवर्ष के इतिहास को लिया जाय तो हम देखेंगे कि यहाँ मनुष्य जाति की उत्पत्ति के बाद से यह देश बराबर सुजला, सुफला, शस्य श्यामला, मलयजशीतला रहा है। सुफला रूपी इसी आर्थिक कारण की ही वजह से यहाँ पहले पहल आर्य ईसा के लगभग ४००० हजार वर्ष पहले जमीन की तलाश में आये।

आर्य जाति से उत्पत्ति ?

ये आर्य वही थे जिनसे बताया जाता है कि योरोप की सब जातियाँ, ईरानी तथा भारतीय पैदा हुए। आर्य जाति पहले कहाँ से फैली, इस सम्बन्ध में यह समझा जाता है कि वह पहले मध्य एशिया में बसी हुई थी। यहीं से वह सारी दुनियाँ में फैली। कुछ भी हो अपने को आर्यों से उतरा हुआ मानना बहुत-सी जातियों में एक सर्वमान्य संस्कार-सा हो गया है। किसी जाति को शरीफ प्रमाणित करने के लिये यह जरूरी समझा जाता है कि उसे आर्यवंश सम्भूत प्रमाणित किया जाय। इस कुसंस्कार की धाक इतिहास लेखकों तक में, जो अपने को वैज्ञानिक समझते हैं इस हद तक बैठ गयी कि कुछ जापानी इतिहास लेखकों ने बड़ी खोज तथा छानबीन कर प्रमाणित कर डाला कि जापान के लोग भी आर्य हैं। अस्तु !

आर्य के साथ अनार्य भी पूर्वज

यह आर्य जाति भारतीयों की पूर्वज जाति मानी गयी है, यद्यपि वस्तुस्थिति यह है कि आर्यों के साथ-साथ अन्य बहुत-सी जातियों का रक्त भी हमारी नसों में प्रवाहित हो रहा है। किसी-किसी क्षेत्र में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो अन्य अनार्यों के मुकाबिले में आर्यों का खून बहुत ही कम है। इस आर्य जाति के सम्बन्ध में भी जब हम गहराई के साथ देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि वह भी बाद की मुगल, पठान आदि आक्रमणकारी तथा लुटेरी जातियों की तरह एक लुटेरी जाति थी। जब मध्य एशिया की समतल भूमि में आर्यों को जगह नहीं रही, तो इनमें से लोग ईरान, रूस, जर्मनी, इंगलिस्तान, ग्रीस, इटली, आदि देशों में फैल गये। यह स्मरण रहे कि यह कोई प्रेम का फैलना नहीं था, और न इसमें सभ्यता या संस्कृति फैलाने का कोई विचार था, याने उतना ही विचार था जितना साम्राज्य विस्तार में साम्राज्यवादियों का रहता है। सच बात तो यह है कि जिस समय आर्य 'भारतवर्ष में आये' तो यहाँ जो आस्ट्रिक लोग थे उनमें ऊँचे दर्जे की सभ्यता थी। आर्यों ने यहाँ आने के बाद संस्कृत में जिस साहित्य का निर्माण किया उससे भी स्पष्ट है कि यहाँ के आदिम निवासियों की सभ्यता ऊँची सतह पर पहुँच चुकी थी। केवल यही नहीं कई दृष्टि से उनकी सभ्यता आक्रमणकारी आर्यों की सभ्यता से ऊँची थी। रहा यह कि फिर भी वे पश्चिमोत्तर तथा पश्चिम दिशा से आनेवाली आर्यों की इस बाढ़ के सामने बह क्यों गये, इसका उत्तर यह है कि उनमें संगठन कमजोर था, तथा दीर्घकाल तक शान्ति में रहने के कारण उनमें प्रतिरोध की शक्ति घट गयी थी। मध्य एशिया से फैले हुये आर्य दूसरे देशों में जाकर हजारों साल तक अर्द्धसभ्य या असभ्य हालत में रहे, पर यहाँ आते ही वे एक ऊँची सभ्यता के जनक हो गये, इसका कारण यह है कि यहाँप्रकृति अन्नपूर्णा की तरह मुक्त-हस्ता थी, तथा दूसरा कारण यह था कि यहाँ पहले से एक ऊँची सभ्यता विद्यमान थी, जिसका लाभ उन्हें मिला।

अनार्य संस्कृति का प्रभाव

बाद को जो बातें आर्य सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध हुईं, उसमें आर्यों का दान होने पर भी, उसमें अनार्य सभ्यता बड़ी मात्रा में सम्मिलित थी। सच तो यह है कि हमारे अनार्य पूर्व पुरुषों का यह दान इतना अधिक है कि कई क्षेत्र में तो उसी का बोलबाला हो गया, और आर्यों की चीजें पीछे रह गयीं। यहाँ ब्योरे में जाना न तो वाञ्छनीय है न सम्भव, इसके लिये मैंने एक वृहत् पुस्तक लिखी है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु इतना तो यहाँ बता दिया जाय कि हिन्दूगण अपने को वैदिक सभ्यता के ठेकेदार कहने तथा समझने पर भी उनमें वैदिक देवताओं की पूजा प्रचलित नहीं है।

वेद के इन्द्र, वरुण, अर्यमा, पुषाण आदि को आज हिन्दू कब पूजते हैं। आज तो कृष्ण, शिव तथा काली की धूम है, और ये देवता अनार्यों से लिए गए हैं। केवल धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं राजनैतिक क्षेत्र में भी कुछ अनार्य सामन्तवादी पद्धति में पहुँच चुके थे, जब कि आक्रमणकारी आर्य मुख्यतः कबीले की हालत में थे। अनार्यगण आर्यों से खेती कहीं अच्छी करते थे। आर्यों ने बहुत-सी चीजों की खेती अनार्यों से सीखी। ये ऐतिहासिक तथ्य हैं, जिन्हें आर्य सभ्यता की डींग मारने वाले प्रायः भूल जाते हैं।

चातुर्वर्ण्य

आर्यों ने भूख की ज्वाला के कारण भारतवर्ष पर आक्रमण कर तथा यहाँ के लोगों को गुलाम या अर्द्ध गुलाम बनाकर उस सभ्यता की बुनियाद रखी जिसे वर्णाश्रम सभ्यता कहते हैं। भारतीय सभ्यता की एक प्रमुख चीज चातुर्वर्ण्य है। यों तो दार्शनिक रूप से इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है और शूद्र, गाय, हाथी में समदर्शी होने की बात कही गई है, किन्तु प्रचलित लोक व्यवहार में शूद्र के साथ व्यवहार गुलामों की तरह रहा। पहले यहाँ के आदिम निवासी दस्यु कहे गये, फिर जब वे दबा दिये गये तो वे दास की श्रेणी में आ गये, फिर उन्हें हिन्दुओं के चातुर्वर्ण्य में शूद्र करके शामिल कर लिया गया। अब तक यही पद्धति बहुत कुछ अंशों में कायम है। जैसे अरस्तू ऐसे परम विद्वान् तत्ववेत्ता के निकट गुलामों को छोड़ कर ग्रीक सभ्यता अकान्यनीय थी, वैसे ही शूद्रों को छोड़ कर हिन्दू समाज का ढाँचा अकान्यनीय है। मनुष्य जाति के इतिहास में वर्ग संग्राम के दौरान में बहुत सी शोषणकारी तथा कष्टकर पद्धतियाँ बनीं पर इसमें कोई संदेह नहीं कि चातुर्वर्ण्य उन सब पद्धतियों में बाजी मार लेता है। इस पद्धति में धर्म दर्शन तथा वर्ग शोषण को इस खूबी से मिलाया गया है कि देख कर आश्चर्य ही करते बनता है। यह आश्चर्य की बात है कि जो पद्धति शोषण के यंत्र होने की दृष्टि से सबसे भयंकर पद्धति थी, उसे एक आदर्श समाज व्यवस्था के अंग के रूप में दिखाने की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चेष्टा की गई है। इतिहास की शक्तियों को एक भावुक स्वाप्निक दृष्टि से देखने का ही यह परिणाम है।

वैदिक धर्म से पार्थक्य

आज जो सभ्यता हिन्दू सभ्यता के नाम से प्रचलित है, वैदिक सभ्यता उससे बिल्कुल भिन्न थी। जो बातें वैदिक सभ्यता की विशेषतायें थी, उनमें से अधिकांश का आधुनिक हिन्दू सभ्यता में कहीं पता नहीं है। इस समय का हिन्दू धर्म अत्यन्त जटिल धर्म है। उसके साथ एक जटिल दर्शन लगा हुआ है, किन्तु वैदिक धर्म में सरल लेन देन मूलक धर्म था। उसमें देवताओं के निकट मोक्ष नहीं मांगा जाता था। बल्कि उनको यह कहा जाता था कि तुम हमें गोधन दो, संतान दो, शत्रुओं पर विजय दो, मेरे शत्रुओं का नाश करो, इसके बदले में मैं तुम्हें सोमरस पिलाता हूँ, इत्यादि। वैदिक सभ्यता के उत्तर काल में ही परलोक की बातें आने लगीं, नहीं तो इस सभ्यता के प्रारम्भिक युगमें परलोक के बनिस्वत इह लोक पर ही अधिक जोर था। इसी प्रकार वैदिक सभ्यता के बाद के युग में वर्णाश्रम की उत्पत्ति हुई। पहले यदि वर्णों का अस्तित्व किसी अंश में था भी तो वह खान पान तथा शादी ब्याह से सम्बन्धित नहीं था, वह एक श्रम का विभाजन मात्र था।

वर्णव्यवस्था वर्ग शोषण का अस्त्र

ऋग-वेद में चातुर्वर्ण्य का उल्लेख केवल पुरुष सूक्त में है, और उसके सम्बन्ध में भी विद्वानों का यह अनुमान है कि वह प्रक्षिप्त है। बाद को यह भ्रूण रूप में मौजूद वर्णव्यवस्था बहुत कड़ी हो गयी, और इसे हम बाद के युगों में वर्ग शोषण के एक भयंकर साधन के रूप में देखते हैं।

वैदिक धर्म का पतन

वैदिक आर्यों का सरल धर्म बाद को चल कर अत्यन्त जटिल कर्मकांड मूलक धर्म में परिणत हो गया, और उसमें पुरोहितों तथा राजाओं का बोलबाला होकर साधारण आदमी कहीं का नहीं रहा, याने वह लकड़ी काटने वाला और पानी खींचने वाला मात्र रह गया, यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है। पहले जिस समय आर्य भारत में आये, वे बहुत कुछ कबीले के रूप में थे, इसके अतिरिक्त जीत पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीत होते रहने के कारण उनके अन्दर का संग्राम वर्ग बहुत कुछ क्षीण हो गया था। जो राजा भी था, वह सरदार होने के कारण ही राज शक्ति धारी था। अब भी कबीले के सब लोगों के एक साथ उठने, बैठने, खाने, उपासना करने की पद्धति थी। सब बहुत कुछ समान थे। इस युग में स्त्री और पुरुष यदि समान नहीं थे तो समाज में स्त्रियों का स्थान करीब करीब बराबर था। स्त्रियों के साथ के बगैर यज्ञ नहीं हो सकता था, किन्तु समाज में वार्गिक विषमता की उत्तरोत्तर वृद्धि होते रहने के कारण स्त्रियों की हालत तो बिगड़ी ही, यह तो पुरुष प्रधान समाज में अनिवार्य था, किन्तु साथ ही साथ सरदारों का एक वर्ग ही हो गया! यज्ञ में पुरुषों के साथ स्त्रियों के बैठने का अधिकार जाता रहा।

परलोक पर जोर देना आरम्भ

स्वाभाविक रूप से इस विषमता की द्योतक पद्धति के विरुद्ध आवाजें उठीं। प्राचीन उपनिषदों में ही हमें इसका प्रमाण मिलता है। उपनिषदों में जो एकेश्वर वाद पहले पहल स्पष्ट तरीके से आया (स्मरण रहे कि वैदिक आर्य गण बहुदेव-देवी वादी थे) वह दर्शन के रूप में एक सत्ता अर्थात् छोटे छोटे सरदारों (जो सामन्त हो चुके थे) का नाश होकर एकच्छत्र एकाधिपत्य की भावना का अनुवाद था। इसके अतिरिक्त उपनिषदों में पहले पहल जिस मोक्ष की जोरदार चर्चा होने लगी, वह जनता की इस भावना को मानो धर्म में अनुवाद कर रहा था कि इस जीवन में कुछ नहीं धरा है, इससे छुटकारा प्राप्त करना चाहिये। जनता पिस रही थी, लुट रही थी, उसका इह लोक कुछ नहीं रह गया था, ऐसी हालत में उस युग के जो Intellectuals ऋषिगण थे, उन्होंने इस जीवन की नश्वरता तथा मोक्ष की आवश्यकता मूलक दर्शन का प्रचार किया। इसमें आश्चर्य नहीं कि राजा गण इस प्रकार के विचारों के प्रचार करने वाले ऋषियों की बड़ी आवभगत करते थे।

उपनिषदों की आवाज

कुछ भी हो उपनिषदों में ही इस प्रकार के धार्मिक उपदेश के विरुद्ध आवाजें उठीं, इसमें संदेह नहीं। विभिन्न उपनिषदों में जगत की उत्पत्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल, व्योम, मृत्तिका आदि भौतिक वस्तु से बतायी गयी। संदेहवाद का भी बोलवाला हुआ। इन सबसे कहीं प्रबल रूप से उपनिषदों में एक और बात दिखाई देती है, जो बहुत बड़ा विद्रोह था। वह था वैदिक कर्मकांड के विरुद्ध विद्रोह। यज्ञ ही पहले के धर्म की विशेषता थी। अब जो उसके विरुद्ध आवाज उठा कर ज्ञान मूलक धर्म की प्रशंसा की गयी यह कोई छोटी बात नहीं थी। फिर भी यह विद्रोह इस कारण विशेष सफल नहीं हुआ कि इसमें कर्मकांड के वर्जन का प्रचार तो किया पर इसमें इसके बदले जो चीज अपनायी गयी, उसमें क्रान्तिकारी उपादान नहीं था। वह तो एक जेल से दूसरी जेल की यात्रा मात्र थी।

कर्मवाद तथा जन्मान्तरवाद

ऐसा क्यों हुआ ? यह पूछा जा सकता है कि विद्रोह मँझधार में क्यों रह गया ? ऐसा इस कारण हुआ कि उपनिषदों में जिस विद्रोह का पता मिलता है, वह शासक वर्ग के अन्तर्कलह से उद्भूत था न कि शोषित वर्ग से उद्भूत। यही कारण था कि यह विद्रोह टॉय टॉय फिस होकर रह गया। सच बात तो यह है कि मोक्ष वाले दर्शन शास्त्र से शासक वर्ग को बहुत फायदा रहा क्योंकि इसके अन्तर्गत जो कर्मवाद तथा जन्मान्तरवाद के सिद्धान्त थे, वे आम लोगों को इस सम्बन्ध में बेखबर करने में कार्य कारी सिद्ध हुए कि उनका यह दुःख-मय जीवन क्यों है। बजाय यह बताने के कि उच्च वर्गों के द्वारा शोषण के ही कारण यह अवस्था है, इस नये दर्शन शास्त्र ने बड़े तार्किक तरीके से यह कहा कि ऐसा इसलिए है कि प्रत्येक व्यक्ति के पूर्वजन्मों का कर्म अलग अलग है। जिसके कर्म अच्छे हैं, वह अच्छा जन्म प्राप्त करता है, उसे सफलता प्राप्त होती है, किन्तु जिसके कर्म खराब हैं, उसे खराब जन्म प्राप्त होता है, वह नीच कुल में पैदा होता है, और वह सफल नहीं हो पाता।

बुद्ध का विद्रोह

बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्ड के विरुद्ध जो विद्रोह किया, उसे उपनिषद् में वर्णित विद्रोह का ही एक सिलसिला कहा जा सकता है। बुद्ध इस विद्रोह में कुछ और आगे गये। उन्होंने आत्मा तथा ईश्वर के झगड़े में पड़ने से तो अस्वीकार किया, फिर भी उन्होंने जीवन को दुखमय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानकर निर्वाण में सारी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ना चाहा। इसलिये उनका विद्रोह भी मँझधार में लटक कर रह गया।

बुद्ध के महान त्याग को स्वीकार करना पड़ेगा। बुद्ध स्वयं शासक-वर्ग के थे। केवल यही नहीं ये राज्य के उत्तराधिकारी थे, किन्तु फिर भी वे जीवन की दुखमयता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सब कुछ छोड़कर संन्यास धारण किया। यह कोई अनहोनी बात नहीं थी कि शासकवर्ग का एक सदस्य शासकवर्ग की पद्धति से असन्तुष्ट था। जब कोई वर्ग पतनशील होता है, तो उसके अन्दर से भी कुछ लोग उसका विरोध करने लगते हैं।

बौद्ध विद्रोह का भी पतन

युगों से राजकुमार सिद्धार्थ का राज्यत्याग कवियों को कविता का विषय देता रहा है, किन्तु कविता और बात है, वास्तविकता और। कविता को इस प्रकार की घटनावली से शायद फायदा पहुँचा हो, किन्तु इससे समस्या का समाधान नहीं हुआ। निर्वाण जीवन की समस्याओं का कोई हल नहीं था। वह तो मोक्ष की ही तरह एक पलायनवाद मात्र था। फिर भी स्वयं बुद्ध ने जिस आष्टांगिक मार्ग का प्रचार किया था, वह बहुत कुछ सरल था, किन्तु बाद को बौद्धधर्म नाम से जो मतवाद चलने लगा है, वह उस समय प्रचलित क्रियाकाण्ड सर्वस्व वैदिक धर्म से किसी प्रकार उत्कृष्ट नहीं था। बुद्ध ने ईश्वर के विषय को गोल रखा था, किन्तु बाद को उनके चेलों ने बुद्ध को ईश्वर का पद प्रदान कर दिया, और असंख्य गपोड़ों की सृष्टि की। बौद्धधर्म और पौराणिक धर्म में कोई मौलिक भेद नहीं रहा। इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बाद को बौद्धधर्म हिन्दूधर्म के सागर में डूब गया। यही गति जैनियों की भी हुई।

गुप्त युग का प्रतिक्रियावाद

गुप्तों के साम्राज्य के समय प्रतिक्रियावाद की पूरी विजय हुई। यह विजय समग्र रही। बौद्धगण कुछ भी हो समतावादी थे। पर अब जिस ब्राह्मण्यधर्म या ब्राह्मण प्रधान धर्म की स्थापना हुई, उसमें वर्णों का वर्त्तमान क्रम सुप्रतिष्ठित हो गया! मजे की बात है कि जिन गुप्त राजाओं को केन्द्र बनाकर वर्णवाद ने जोर मारा, वे स्वयं ऊँची

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाति के नहीं थे, और अनुमान यह है कि वे छोटी जाति के थे। बिंसेंट स्मिथ ने गुप्त शब्द से बहककर उन्हें बनिया बताया है, पर यह बात सही नहीं है।

गुप्त युग का महत्व इस कारण अधिक है कि इसी युग में उस हिन्दू धर्म की सृष्टि हुई जो इस समय प्रचलित है। पहले ही हम बता चुके हैं कि वैदिक धर्म वर्तमान हिन्दू-धर्म से बिलकुल प्रथक् था। इस युग से स्मृतियों की चलने लगीं। इसी युग में पुराणों का कम से कम महाभारत का अन्तिम संस्करण हुआ। वैदिक मन्त्रों की जगह दूसरे मन्त्रों ने ली। हाँ कुछ वैदिक मन्त्र भी रह ही गये।

पौराणिक धर्म का रूप

पुराणों के जो नये संस्करण किये गये उनमें मुख्यतः ब्राह्मणों की श्रेष्ठता तथा अधिकांश स्थलों पर विष्णु पूजा का प्रतिपादन किया गया। वैदिक युग में पहले वरुण का चलता था। फिर बाद को इन्द्र का चला। वेद वरुण और इन्द्र की स्तुति से भरे पड़े हैं। किन्तु अब नव विधान में इन्द्र केवल स्वर्ग की सभा के चेयरमैन मात्र रह जाते हैं। वरुण बिचारे तो इन्द्र के उत्थान के साथ ही साथ जल देवता बनकर रह गये थे। वैदिक युग में इन्द्र ही लोगों को विपत्तियों से उबारते थे, किन्तु अब पुराणों में वे जब देखो तब दैत्यों और राक्षसों के हाथों से पिटते हुए दिखाई पड़ते हैं, और वे भागकर तीन देवताओं में से किसी न किसी की विशेषकर विष्णु की शरण लेते हुए दिखाई पड़ते हैं। उसी युग में शूद्रों के साथ खान-पान का बहुत कड़ाई के साथ निषेध किया गया। उपनिषदों के तथा बुद्ध के युग में क्षत्रिय ब्राह्मणों से श्रेष्ठतर समझे जाते थे, किन्तु इस युग में ब्राह्मण क्षत्रिय के मुकाबिले में अन्तिम रूप से श्रेष्ठतर स्वीकृत हो गया। कहाँ उपनिषद् काल में ब्राह्मण क्षत्रियों से ब्रह्म विद्या सीखते थे और ब्राह्मण दीन ज्ञा कहलाते थे, और कहाँ यह युग आया कि ब्राह्मण प्रधान हो गये।

सिकन्दर

हम इस अवसर पर और अधिक ब्योरे में नहीं जायेंगे। आर्यों के बाद भी बराबर विभिन्न देशों से भारतवर्ष पर हमले होते रहे। जगत प्रसिद्ध सिकन्दर ने ईसा से पूर्व ३२६ में भारतवर्ष पर इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इरादे से हमला किया कि मगध पर विजय प्राप्त करे, किन्तु उसकी सेना के दांत सीमाप्रान्त के पोरस आदि राजाओं से लड़कर ही खट्टे हो चुके थे। इसलिए सिकन्दर की सेना ने ब्यास नदी के इधर आना अस्वीकार कर दिया।

पहली हड़ताल

इस घटना को यों तो जो कुछ महत्व दिया गया है वह उसे प्राप्त है ही। संस्कृति तथा सभ्यता के क्षेत्र में इस हमले के कारण आदान प्रदान हुआ, किन्तु इस घटना को और भी एक अर्थ में बहुत महत्व दिया जाना चाहिये। सिकन्दर की सेना ने जो इस प्रकार आगे बढ़ने से इन्कार किया उसे हड़तालों में पहला स्थान दिया जाना चाहिये।

सिकन्दर के बीस साल बाद उसके सेनापति सेल्यूकस ने अपने आका के शुरू किये हुए काम को पूर्णकर भारत विजय करना चाहा। किन्तु चन्द्रगुप्त के मुकाबिले में वह हार गया। अन्त में लड़की देकर छुटकारा मिला।

बाद के हमले

इन हमलों के बाद कथित मुस्लिमकाल तक भारतवर्ष पर सैकड़ों हमले हुए, किन्तु या तो वे असफल रहे या आंशिकरूप से सफल भी रहे तो आक्रमणकारी आर्यों की तरह वे अपने देश को भुलाकर यहाँ बस गये, और यहाँ की सभ्यता, धर्म तथा भाषा को स्वीकार कर अवश्य साथ ही उनमें अपना दान देकर एकदम भारतवासी हो गये। इस प्रकार हम देखते हैं कि पंजाब के साकलके राजा मिनांडर मिलिन्द हो गये, केवल यही नहीं, वह इतना प्रमाणिक बौद्ध समझा गया कि प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपन्ह जो गुरु शिष्य संवाद के रूप में है उसी के नाम पर लिखा गया। यूनानी राजदूत हेलियोदोरस ने वैष्णव धर्म स्वीकार कर श्रीकृष्ण की स्मृति में एक स्तम्भ का निर्माण करवाया।

इस प्रकार के हमलों का प्रभाव केवल भाषा और राजनीति पर ही पड़ा ऐसी बात नहीं, बल्कि चित्रविद्या, स्थापत्य, भास्कर्य, ज्योतिष तथा विज्ञान पर इन आक्रमणकारी यवनों की छाप पड़ी। चिंतामणि वामन वैद्य आदि विद्वानों ने इन प्रभावों को कूतने की चेष्टा की है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक, हूण आदि के हमले

इसी प्रकार शक, हूण, पल्लवों के भी हमले भारतवर्ष पर हुए। इनमें से कई ने जैसे कनिष्क ने विशाल साम्राज्य कायम किया, किन्तु राजनैतिक रूप से भारत के बाहर से इनका कोई सम्बन्ध न रहने के कारण उनको यहाँ से लूटकर बाहर धन भेजने की फिक्र नहीं थी, और न उनको यही फिक्र थी कि किसी अन्य देश के व्यापार के हक में यहाँ व्यापार को नष्ट कर दें। साथ ही इनके पास कोई आक्रमणात्मक धर्म न होने के कारण वे सम्पूर्ण रूप से भारतीय सभ्यता के महासागर में डूब गये। उनका कोई पृथक् अस्तित्व नहीं रहा। जिसे हम इस समय हिन्दू सभ्यता कहते हैं, उसमें इन लोगों का दान है, यद्यपि यह दान भारत के आदिम अनार्यों के दान से यह दान कहीं कम रहा। फिर भी बहुत से स्थानीय देवताओं, उपदेवताओं, धारणाओं, गाथाओं, संगीत तथा अन्य क्षेत्रों की पृष्ठभूमि में उनका दान मौजूद है। इस क्षेत्र में अभी खोज हो रही है। खोज होने पर पता लगेगा कि आज हम जो कुछ भी बने हैं इसमें उनका दान बहुत रहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २ :

मुस्लिम आक्रमण

मुहम्मद के समय अरब

यूनानियों, शकों, हूणों आदि के हमलों से मुसलमान सरदारों के हमले दूसरे प्रकार के थे। इस बात को समझने के लिये हमें कुछ जड़ की बातों पर जाना पड़ेगा। मुहम्मद साहब का जन्म ५६६ ई० में हुआ। मुसलमान इतिहास लेखक यह दिखलाते हैं कि उस समय अरब एक जाहिल और असभ्य देश था। धर्म तथा विभूतियों के प्रभाव को बढ़ाकर दिखाने के लिए ऐसी एक परिपाटी है कि इस धर्म या विभूति के उदय के पहले उस देश को अत्यन्त पतितावस्था में दिखलाया जाता है। इसी लीक के अनुसार मुहम्मद के पहले के अरब को जाहिल करके दिखलाया जाता है। पर अभी अभी मिश्र के कुछ प्रगतिशील लेखकों ने यह दिखलाया है कि मुसलमान लेखक गण मुहम्मद के युग के पहले के अरब को जितना असभ्य दिखलाते हैं वह हरगिज उतना असभ्य नहीं था।

कबीलों में झगड़े से व्यापार की क्षति

फिर भी अरब के लोग कबीले की हालत में थे, इसमें कोई संदेह नहीं। उनमें कोई जातीय अर्थात् अखिल अरबीय जीवन नहीं था। प्रत्येक कबीले का अलग-अलग बुत था, और एक कबीला बराबर दूसरे कबीले से लड़ता रहता था। इस प्रकार कबीले की हालत में होते हुये भी अरब के लोग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक विशेष हिस्सा अदा करते थे। पर आपस में लड़नेवाले कबीलों के कारण व्यापार की समुचित उन्नति नहीं हो पाती थी। केवल व्यापार की जरूरतों के कारण परोक्ष रूप से प्रभावित होकर अरबों में बहुत से तत्ववेत्ता यह सोचने लगे कि इस प्रकार कबीले की दृष्टि को छोड़कर आगे बढ़ने की जरूरत है। दर्शन के क्षेत्र में यही विचार एकेश्वरवाद के रूप में मुहम्मद से पहले ही अरबों में क्षीण रूप से उठने लगा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुहम्मद द्वारा कबीलों का एकीकरण

अरब के लोग बहादुर तो थे ही, मुहम्मद साहब ने इनको संगठित किया, और उनको एक संयुक्त जाति के रूप में परिणत करने की चेष्टा की। मुहम्मद साहब ने वहदत या एकेश्वरवाद का नारा दिया, तथा कबीलों की बुतपरस्ती के विरुद्ध जो आवाज उठायी, वह एक जातीयता के हक में बहुत अच्छा मतवाद रहा। इस नये मतवाद का प्रचार करते हुये हजरत ने एक बुद्धिमान नेता की तरह पहले की बहुत सी धारणाओं को अपना भी लिया। यद्यपि तार्किक रूप से देखे जाने पर ये धारणायें बुतपरस्ती के विरुद्ध जेहादवाली भावना के विरुद्ध थी। मुहम्मद साहब के पहले ही अरब के सब कबीले अपने अपने सम्प्रदाय को मानते हुए, तथा अपने बुतों की पूजा करते हुये भी सभी काबा को मानते थे। सभी लोग साल में एक बार उसकी यात्रा करने आते थे। इन दिनों कबीलों की आपसी लड़ाई बन्द रहती थी। मुहम्मद साहब ने इस मिलन सूत्र को कायम रखा, और आवश्यकता के अनुसार इसे एक नयी व्याख्या दे दी।

इस्लाम द्वारा दिग्विजय

६०६ में हजरत ने अपने धर्म की व्याख्या की। ६२६ तक उनका प्रभाव इतना बढ़ गया कि मक्का उनके कब्जे में आ गया। इसके बाद दो साल के अन्दर ही समस्त अरब मुहम्मदी झंडे के नीचे आ गया। मानो यह इसी एकीकरण को देखने के लिये जी रहे थे, ६३२ में उनका देहान्त हो गया। ६३७ तक शाम, इराक तथा यरूसलिम भी इस्लाम के झंडे के नीचे आ गये। ६४१ में मिश्र, ६५१ में ईरान और ७१० तक समस्त उत्तर अफ्रीका पर अरबों का साम्राज्य कायम हो गया। धीरे धीरे तातार तथा तुर्किस्तान पर भी कब्जा हो गया, और अरब का झंडा चीन तथा भारत के सिंहद्वार से जाकर टकराया। यह झंडा रूस तथा पोलैंड तक भी पहुँचा तथा शताब्दियों तक गड़ा रहा। अरब में इस्लाम विशेषकर व्यापारी वर्ग की सहायता से फैला। स्वभावतः व्यापारी वर्ग अखिल अरबीय एकता के पक्षपाती थे क्योंकि इससे उनका व्यापार बढ़ता था। इस्लाम जो दूसरे देशों में इतनी सफलता के साथ फैला इसका कारण यह था कि यद्यपि वह अपने देश में मुख्यतः व्यापारी वर्ग के पृष्ठ पोषण से ही बढ़ा, पर अन्य देशों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने मौके के अनुसार कभी वहाँ के शोषकों का साथ दिया तो कहीं शोषितों का। मुख्यत: शोषितों का ही साथ दिया।

भारत पर हमला

भारत के इर्द गिर्द यों तो मुस्लिम सेना बहुत पहले से मंडरा रही थी, किन्तु ७१२ ई० में मुहम्मद बिन कासिम ने खुश्की के रास्ते हमला किया। यह हमला राज्य विजय के लिये नहीं था। दृश्यमान कारण तो यह था कि कच्छ के कुछ डाकुओं ने जहाजों पर से अरबी लड़कियों को छीन लिया था। इन्हीं को सजा देने के लिये मुहम्मद कासिम ने हमला किया था। पर जब वह देश पर चढ़ आया, सिंध और मुलतान जीत लिये गये तो उसने लौट जाने के बजाय इन प्रान्तों में अपनी सरकार कायम कर दी। डाकुओं वाला कारण कहाँ तक सही था, और कहाँ तक आजकल के साम्राज्यवादियों के Frontier Incident की तरह केवल एक बहाना मात्र था यह विचार्य है।

सभी मुसलमान शासक कभी नहीं

यहाँ पर हम दो साधारण कुसंस्कारों का निरसन कर अब आगे बढेंगे। पहली बात यह जो कही जाती है कि मुहम्मद बिन कासिक की विजय इस्लाम ब नाम हिन्दू धर्म की विजय है यह बिलकुल गलत है। हिन्दू शासक के बजाय अब मुस्लिम शासक अवश्य हो गये, किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि सभी मुसलमान शासक वर्ग में आ गये। सच बात तो यह है कि इस अर्थ में मुस्लिम राज्य भारतवर्ष में कभी कायम नहीं हुआ, यहाँ तक कि उन देशों में भी कायम नहीं हुआ जो सौ फी सदी मुस्लिम देश है। जो हजारों, लाखों मुसलमान थे, उनको मुगलों या पठानों किसी की भी अमलदारी में शासक वर्ग की रियायतें न तो प्राप्त थी और न प्राप्त हो सकती थी। एक मुसलमान किसान, मजदूर जुलाहा या दूकानदार धार्मिक बातों में आजादी के अतिरिक्त किसी भी मामले में हिन्दू किसान, मजदूर बुनकार या दूकानदार से कभी भी अच्छा नहीं रहा। अतएव भारतवर्ष के इतिहास के एक विस्तृत काल को मुस्लिम काल नाम से पुकारना न केवल झूठ है, बल्कि आम मुसलमानों को धोखा देकर साम्प्रदायिकता की नींव को मजबूत करना है। न आम हिन्दुओं का ही कभी राज्य रहा, और न आम मुसलमानों का ही राज्य रहा, इस माने में भारतीय इतिहास को हिन्दू काल अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुस्लिम काल में विभक्त करना बिल्कुल मनमाना है। यह मनमाना पन इस कारण और भी खटकता है कि इसका गलत उपयोग किया जाता है, और प्रगति के मार्ग में रुकावट पैदा की जाती है।

हमलों का कारण धार्मिक नहीं

दूसरी आम धारणा यह जो है कि मुहम्मद बिन कासिम ने या बाबर आदि किसी ने भी धार्मिक दृष्टि से हमला किया यह भी बात तथ्यों से प्रमाणित नहीं है। इसके विपरीत हम देखते हैं कि ये शासक धर्म प्रचार के बजाय अपने शासन सुदृढ़ बनाने की ओर अधिक सचेष्ट रहे। सिंध विजय के बाद मुहम्मद बिन कासिम को हजाज से जो हिदायतें मिली थीं—उनमें कहा गया था—"हिन्दुओं को अपनी देवी-देवताओं को पूजने की अनुमति है, तथा उनके धर्म में किसी प्रकार बाधा न पहुँचायी जाय।" क्या यह एक धार्मिक दीवाने के भेजे हुए आदेश हैं, या एक विचक्षण साम्राज्यवादी के? साम्राज्यवादी शब्द से हम यहाँ उसके वैज्ञानिक अर्थ को नहीं ले रहे हैं, यहाँ हमारा मतलब केवल आक्रमणात्मक परोपजीवी राष्ट्र से है, इससे अधिक नहीं। पूंजीवाद के सबसे विकसित रूप साम्राज्यवाद का तो बाद के ही युग में उदय होता है।

भारत विखण्डित था

जिस समय भारत पर मुस्लिम धर्मावलम्बी साम्राज्यलोलुपों के आक्रमण हुए उस समय भारत में अशोक, चन्द्रगुप्त, हर्षवर्धन आदि की तरह कोई सार्वभौम सत्ता बाकी नहीं थी। देश छोटे-छोटे राज्यों में बट गये थे। भारतवर्ष की समाज-व्यवस्था ऐसी थी कि उसमें एकराष्ट्रता टिकती नहीं थी। कई बार भारत एकराष्ट्र हो चुका था, पर उसके लिये उपयोगी उत्पादन पद्धति न होने के कारण यह एक राष्ट्रता टूट कर बिखर जाती थी। जैसे भारतवर्ष में बुद्ध के पहले ही एकेश्वर-वाद का प्रचार हुआ, पर भारतवासी एकेश्वरवाद के पास से हटकर फिर बहुदेव-देवीवादी हो गये, उसी प्रकार कोई संगठनकर्त्ता आता था तो वह कुछ दिन के लिये सामरिक रूप से एकराष्ट्रता भले ही कायम कर दे, पर आत्मयथेष्ट ग्राम्य आर्थिक पद्धति के कारण वह तुरन्त बिखर जाती थी। सच तो यह है कि ये दोनों लक्षण एक ही मौलिक रोग के द्योतक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस युग में देशभक्ति नहीं थी

कुछ भी हो उस समय अखिल भारतीय देशभक्ति का कहीं नामो-निशान नहीं था। अरबी एकता धर्म के नाम पर ही सही पनपी थी, और बाद को यह एक साम्राज्य पिपासा तथा शासन की भूख में परिणित हो गयी थी। इससे तो एका आ ही गया था, किन्तु भारतवर्ष में इस प्रकार का भी कोई एका धर्म के नाम पर यहाँ तक कि एक साधारण शत्रु को सामने देखकर भी नहीं उत्पन्न हुआ था। लोग व्यापक दृष्टि से सोचते ही नहीं थे। बुद्ध धर्म के बुद्धिवाद के सामने तथा कुछ हद तक बदलते हुए आर्थिक संगठन की आवश्यकताओं के अनुसार हिन्दुओं की कर्म कांडी धर्म की जड़ें हिल चुकी थीं, किन्तु साथ ही यह बौद्ध धर्म की विजय बहुत कुछ नहीं थी क्यों कि जैसा कि बताया गया थोड़े दिनों में बौद्ध धर्म के अन्दर भी प्रतिमा पूजा तथा कर्मकाण्ड घुस आया। प्रतिमा पूजा तथा कर्मकाण्ड देश की गिरी हुई हालत के अनुसार था। इनमें जड़ता के सिवाय न बुद्धि की गुन्जाइश थी न स्वतन्त्र विचार की।

धार्मिक एका भी नहीं

धीरे-धीरे बौद्ध धर्म लुप्त हो गया, किन्तु धर्म के क्षेत्र में भी एका नहीं था, वहाँ भी राजनीति की तरह बारह कन्नौजियों के तेरह चूल्हे थे। कोई शाक्त था तो कोई वैष्णव, तो कोई तान्त्रिक। फिर एक-एक में सैकड़ों भेद थे। इस विषय पर पुस्तकें लिखी गयीं और सम्प्रदाय पैदा हो गये कि त्रिपुण्ड्र किस प्रकार काटा जाय, खड़ा या आड़ा। इसी पर बहस को दर्शनशास्त्र कहते थे। कहना न होगा कि यह समय विदेशियों के हमलों के लिये बहुत अनुकूल था।

मुसलमानों का शासन कैसे धीरे-धीरे फैला तथा उसके सामने कैसे कैसे प्रश्न पेश आये, यह हमारे विषय के बाहर है। हम केवल इसी विषय पर जोर देना चाहते हैं कि भारतवर्ष में सब मुसलमानों का राज्य कभी नहीं रहा। प्रारम्भ में जब मुसलमान थोड़े थे और वे विजेता की जाति के थे, उस समय यह बात शायद कुछ हद तक सत्य थी, याने प्रत्येक मुसलमान शासकवर्ग में था। पर बाद को जब मुसलमानों की संख्या अपेक्षाकृत रूप से अधिक हो गई, तो यह बात न तो सत्य हो सकती थी न थी। मैं तो पहले ही यह बता चुका हूँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि इस देश में ही नहीं सौ फीसदी मुसलमान देशों में भी कभी सब मुसलमानों का राज्य नहीं था। उन देशों में भी शासन सूत्र एक खानदान या सौ-पचास खानदानों के हाथों में था। इन्हीं थोड़े से अमीर-उमराओं के हाथ में तथा उसी वर्ग के स्वार्थ के अनुसार कानून बनते थे तथा शासन कार्य चलता था।

प्रतिरोधों का स्वरूप

इसके साथ ही एक अन्य बात की ओर हम दृष्टि आकर्षित करना चाहते हैं। वह यह कि बाहरी आक्रमणों के विरुद्ध भारतीयों की ओर से जो प्रतिरोध हुए, यहाँ तक कि राणा सांगा की ओर से जिस सम्मिलित प्रतिरोध की चेष्टा हुई, इसमें हम कोई देशभक्ति नहीं पाते। हाँ इसमें साधारण शत्रु के विरुद्ध सम्मिलित प्रतिरोध की बात अवश्य थी। एक साधारण असभ्य सरदार दूसरे आक्रमणकारी सरदार के विरुद्ध जिन कारणों से लड़ता है, उनसे इन लड़ाइयों पर उदात्ततर किसी कारण का आरोप करना कठिन है। ये लड़ाइयाँ हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानों की लड़ाई नहीं कहला सकतीं, क्योंकि आम हिन्दू जनता को इन लड़ाइयों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, राणा प्रतापसिंह तथा इस प्रकार के तमाम लोगों में कोई अखिल भारतीय देशभक्ति या दृष्टिकोण था, ऐसा समझना मुश्किल है। शिवाजी के विचार इन सब में व्यापक तथा विस्तृत थे, किन्तु शायद उनके विचार उन्हीं तक सीमित थे क्योंकि उनकी तरफ से जो फौज लड़ती थी, अधिकांश रूप में वह मुगलों की फौज की तरह भाड़े के टट्टू मात्र थी। बंगाल में अब तक बच्चों को मराठी फौजों (वर्गी) का डर दिखलाकर सुलाया जाता है। बाद को नाटककार तथा उपन्यासकारों ने राजपूतों तथा मराठों में देशभक्ति का सबसे विकसित रूप दिखलाया है, पर यह उनकी कल्पनामात्र है। उस युग में केवल भारतवर्ष में ही नहीं कहीं भी जिसे आज लोग देशभक्ति समझते हैं, वह भावना नहीं थी। जातीयता तथा देशभक्ति की भावना पूँजीवादी युग की भावना है। उस युग के पहले उसका उस रूप में कहीं भी अस्तित्व नहीं था।

बाबर आदि धर्म के लिये नहीं आये

बाबर आदि विजेता अपने पहले आने वाले आर्यों की तरह लुटेरों की भाँति ही आये थे। जैसे हिन्दू नाटककार तथा उपन्यासकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार यह दिखलाते हैं कि बाहर से आये हुए मुसलमानों के साथ लड़नेवाले देशभक्ति की भावना से परिचालित थे, उसी प्रकार कट्टर मुसलमान लेखक ऐसा दिखलाते हैं मानों मुसलमान आक्रमणकारी यहाँ पर धर्म प्रचार करने आये थे, पर यह बात बिल्कुल गलत है। ये विजेता केवल विजय की दृष्टि से आये थे। भारतवर्ष के मध्य-युग का इतिहास मुसलमान राजाओं के आपसी युद्ध का इतिहास है। यदि धर्म प्रचार उद्देश्य था तो बाबर के आने की क्या जरूरत थी? लोदी वंश तो राज कर ही रहा था। इसी प्रकार सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं।

सच तो यह है कि कथित सभी मुसलमान आक्रमणकारी अलग अलग जाति तथा कबीले के थे और उन्होंने भारतवर्ष पर अपने विशेष कबीले या जाति का आधिपत्य स्थापित करना चाहा था। इन हमलों को धार्मिक दृष्टि से समझने की कोशिश न कर आबादी के गति के नियमों से समझने की चेष्टा अधिक वैज्ञानिक होगी।

ये विजेता धर्म का वहीं तक उपयोग करते थे जहाँ तक कि धर्म उनके राज्य शासन में सहायक होता था। अवश्य इसके भी कुछ अपवाद भी हैं। कई बार कोई कट्टर राजा धर्म में इतना मतवाला हो गया कि उसने बुद्धि से काम नहीं लिया, पर ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं।

कबीर और नानक की समन्वय चेष्टा

जैसे मुसलमानों के आने के पहले आक्रमणकारियों को भारतवर्ष में हजम कर लिया गया, उसी प्रकार मुसलमानों को भी हजम करने की चेष्टा दूसरे रूप में हुई। मुसलमानों को बिल्कुल हिन्दू बना लेने के बजाय कबीर, नानक आदि तत्वदर्शियों ने यह कहा कि हिन्दू, तुर्क दोनों एक हैं। इन लोगों ने यह चेष्टा की कि दोनों अपना-अपना धर्म छोड़ दें और तीसरा कुछ हो जांय। इन लोगों ने दोनों को एक हद तक गलत बताया। ये लोग सफल न हो सके पर इन्होंने दोनों की साधारण बातों पर जोर देकर दोनों के सम्बन्ध को सरलतर कर दिया इसमें कोई सन्देह नहीं। कबीर या नानक किस हद तक सफल रहे हमें इस बात को कबीर पंथियों तथा नानक पंथियों की संख्या से नहीं कूतना चाहिए। इनकी संख्या बहुत थोड़ी हुई, पर इनका प्रभाव इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से कहीं अधिक रहा। कबीर या नानक ने जिस कार्य को किया, उसके विराट असर को शायद कभी ठीक-ठीक कूता नहीं जा सके, पर उन्होंने एक बहुत प्रगतिशील चेष्टा की इसमें सन्देह नहीं। बाहर से जो मुसलमान आये थे वे यहाँ पर बस चुके थे, ऐसी हालत में विदेशी करार देकर उनके विरुद्ध एक चिरन्तन जेहाद जारी रखना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं होती।

समन्वयवाद का दूसरा पहलू

दोनों धर्मों के इस समन्वयवाद में जो प्रगतिशील पहलू था, उसका हम दिग्दर्शन करा चुके, पर इस प्रकार के समन्वयवाद में एक काला पहलू भी था। यह एक तरह से आध्यात्मिक क्षेत्र में आक्रमण-कारी विदेशियों के सामने पराजय स्वीकार कर लेना तथा समन्वय-वाद के द्वारा लोगों को विदेशी शासन से बे-खबर कर देना था। इसकी सफाई में यह कहा जा सकता है कि यहाँ के लोगों में इतनी ताकत कहाँ थी कि वे विदेशियों का विरोध करते? इसलिये यह सम-न्वयवाद ठीक ही था।

उस युग की विचारधारा

पठान-मुगल काल के सारे साहित्य को पढ़ जाइये, उसमें एक तरफ़ तो शृङ्गाररस है जो सबसे भद्दा पलायनवाद है, और दूसरी ओर आध्यात्मिकों का समन्वयवाद है। यह विचार-धारा एक परा-धीन जाति के उपयुक्त थी। कबीर आदि दार्शनिकों ने लोगों से बार-बार कहा कि रूखा-सूखा खाकर ठण्डा पानी पी। यह कहा गया कि उस दुनियाँ की फिक्र करो। क्यों न ठण्डा पानी पीकर संतुष्ट रहते, दूध तो सब राजा तथा उनके टुकड़खोरों के लिए रिजर्व था। इहलोक जा चुका था, स्वाभाविक रूप से दूसरी दुनियाँ की फिक्र न करते तो क्या करते।

अकबर का समन्वयवाद

यह समन्वयवाद तथा उसके आनुसंगिक मतवाद शासक वर्ग के बड़े मतलब की चीज थी। अकबर ने इस विचार को हद तक पहुँचाना चाहा। इस समन्वय के जोश में अल्लाह, उपनिषद तथा दीन इलाही की सृष्टि की गयी, पर कुछ अमीरों तथा चापलूसों के अलावा किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने इस नवीन धर्म को गम्भीर रूप से स्वीकार न किया। पर फिर भी समन्वयवाद का मध्ययुग में बराबर बोल-बाला रहा।

प्रतिक्रियावादी औरंगजेब

औरङ्गजेब ने आकर कट्टरपन के पहिये को फिर से घुमाना चाहा। औरङ्गजेब की गलती यह थी कि वह समझते थे कि सब हिन्दू मुसलमान बन सकते हैं, पर उनकी यह धारणा गलत साबित हुई। औरङ्गजेब ने अकबर के द्वारा चलाई हुई धारा को उलटने की कोशिश कर बुद्धिमत्ता का परिचय नहीं दिया। फिर सिखों तथा मराठों ने भी कट्टरपन का जवाब कट्टरपन से दिया। नतीजा यह हुआ कि जो भूत किसी न किसी प्रकार सुला दिये गये थे, वे फिर से जग उठे। दिल्ली की केन्द्रीय सरकार की सार्वभौम सत्ता शिथिल तथा दुर्बल हो गयी। दिल्ली के बादशाह भारत सम्राट् न रह कर बहुत कुछ हद तक केवल दिल्ली और उसके इर्दगिर्द तक के राजा रह गये। सिख खालसा राज्य निर्माण में लग गये। मराठे अलग खिचड़ी पका रहे थे, और उनमें भी कई चूल्हे हो गये। राजपूताना तो हमेशा से ही छोटे छोटे राज्यों में बटा हुआ था। न तो सब मुसलमान राजा ही एक थे, न सब हिन्दू राजा ही एक थे, न सब पठान ही एक थ और न सब मराठे ही एक थे। दल बन्दियां किसी उसूल सम्प्रदाय या धर्म पर निर्भर न रह कर सम्पूर्ण रूप से सुविधा देख कर की जाती थी। यदि हिन्दू सचमुच कथित मुस्लिम शासन से परेशान थे. तो उनके लिये यह सुवर्ण सुयोग था, किन्तु सच बात तो यह है कि आम जनता की चाहे वह मुसलमान हो या हिन्दू हो यह राय थी—

कोऊ नृप होय हमैं का हानी।
चेरी छाँड़ि न होउब रानी॥

स्मरण रहे कि ये पंक्तियां कथित मुसलमान काल के ही एक कवि की लिखी हुई हैं। यह चौपाई सच्चे मानो में भारतीय जनता की दयनीय दशा का चित्रण करती है। विशेषकर जिस जमाने का हम चित्र खींच रहे हैं उस जमाने की जनता के लिये यह चौपाई बिल्कुल धरती है।

समय हमले के अनुकूल

कहना न होगा कि यह समय बाहर से आक्रमण करने वालों के लिये बड़ा सुन्दर था। भारत की जनता जो अब तक शासन के प्रति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्ण रूप से उदासीन थी, वह अब अपनी उदासीनता की सजा पाने वाली थी क्योंकि अब जो लोग शासनारूढ़ होनेवाले थे वे उन्हें ग्राम्य आर्थिक पद्धति में रहने देने वाले नहीं थे, वे उनको जबर्दस्ती घसीटकर पूँजीवादी पद्धति के अन्दर ले आने वाले थे, और पटक कर छाती का खून पीने वाले थे। ग्राम्य आत्म यथेष्ट आर्थिक पद्धति का टूटना एक महान क्रान्ति थी, यह उन्नति थी, पर अंगरेज भारतीयों को अपना शोषित बनाने वाले थे। वे अब तक के आक्रमणकारियों की तरह इस देश में बसने वाले नहीं थे। वे यहाँ के लोगों को लूट-लूट कर अपने देश में ले जाने वाले थे। वे पहले से कहीं अधिक अच्छी तरह जनता का शोषण करने वाले थे।

सामान्य संस्कृति का उदय

पाश्चात्य जातियों के भारत आगमन पर लिखने के पहले हम यह बात और भी साफ कर दें कि यद्यपि हिन्दू और मुसलमान धार्मिक रूप से एक नहीं हुए पर फिर भी इस बीच में भाषा, संगीत, कला, स्थापत्य तथा अन्य सभी क्षेत्रों में एक साधारण संस्कृति का उदय हो चुका था। भाषा के क्षेत्र में सभी प्रांतों में हिन्दू और मुसलमान एक हैं, केवल हिन्दुस्तानी प्रांतों में उर्दू-हिन्दी का एक हद तक कृत्रिम पचड़ा लग गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ३ :

पाश्चात्य जातियों का भारत-आगमन

औरंगजेब के समय ही मुगल शासन खोखला

औरङ्गजेब के शासन काल में ही मुगल साम्राज्य का सौध यत्र तत्र टूटने लगा था। उस समय सर्वत्र ऐसी शक्तियां पैदा हो चुकीं थीं जो अपने में ही मुगलों को केन्द्रीभूत सामाज्य को तहस नहस करने की शक्ति रखती थीं, पर उसकी जगह पर किसी नयी केन्द्रीय शक्ति के निर्माण में समर्थ थीं। कहा नहीं जा सकता कि यदि ये शक्तियां अकेली छोड़ दी जातीं, और बाहर से कोई सशक्त और धूर्त्त शक्ति आकर उनके बीच में न पड़ती, तो वे अपने अन्दर निर्माण की शक्ति पैदा कर पातीं या नहीं। इतिहास ने उनको यह मौका ही नहीं दिया। एक तीसरी ही शक्ति आकर बीच में कूद पड़ी। इसके पास पैने तथा उन्नत अस्त्र थे, संगठन था, रण कौशल था, और सबसे बढ़कर जो चीज थी, वह यह थी कि उनमें कूटनीति थी।

भारत का जल-मार्ग ज्ञात नहीं

एक सुजला सुफला देश के नाते भारतवर्ष की ख्याति दूर-दूर तक पहुँच चुकी थी, योरोप के देशों के लोगों के लिये यह असम्भव था कि वे स्थल मार्ग में से भारतवर्ष में आते। बहुत सी जातियां विशेष कर अरबी, यूनानी, इटालियन तथा ईरानी जातियां भारतवर्ष तथा उसके आस-पास के देशों से व्यापार कर माला-माल हो चुकी थीं। सच तो यह है कि भूमध्य-सागर तथा उसके आसपास की जिस भी जाति के हाथ में भारतवर्ष के साथ व्यापार गया, वही जाति बहुत समृद्ध हुई। इस बात को देख कर कई योरपीय जातियों के मुंह में पानी भर आया। वे सीधा भारत से व्यापार करना चाहते थे। ऐसा वे जल मार्ग से कर सकते थे, पर यह मार्ग किसी को ज्ञात नहीं था। इस सम्बन्ध में बहुत दिनों तक असफल चेष्टायें होती रहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चेष्टायें असफल

पन्द्रहवीं शताब्दी में कुछ साहसी योरोपियन नाविकों ने भारत का रास्ता मालूम करने की कोशिश की, पर रास्ते के सम्बन्ध में कोई धुंधला ज्ञान भी न होने के कारण कोई उत्तर पूर्व की ओर गया, तो कोई उत्तर पश्चिम की ओर। इस चेष्टा में बहुत से जहाज चट्टानों से टकरा कर तथा आंधी की थपेड़ में डूब गये। कई अच्छे नाविकों को जल समाधि प्राप्त हुईं। विशेषकर हालैंड, स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस और इंगलैंड के नाविक इस काम में व्यस्त रहे। सैकड़ों चेष्टायें असफल हुईं, पर लक्ष्य इतना मोहक था कि बराबर कोई न कोई प्रयत्न जारी रहा।

कोलम्बस

सुप्रसिद्ध आविष्कारक कोलम्बस जो अमेरिका के आविष्कारक के रूप में मशहूर है, असल में भारतवर्ष की ही खोज के लिये निकले थे, और इसी को खोजते-खोजते उनको अमेरिका का पता लग गया। कोलम्बस को अपनी मृत्यु के समय तक यही विश्वास रहा कि उन्होंने भारतवर्ष का आविष्कार किया है, इसी कारण वे आविष्कृत देश को इण्डिया कहते थे, और इसी का परिणाम है कि आज तक अमेरिका के आदिम निवासियों को रेड इण्डियन या लाल भारतीय कहते हैं। अमेरिका को आविष्कार वाली घटना १४९२ ई० की है।

वास्को-डि-गामा

इसके ६ साल बाद पुर्त्तगाल निवासी वास्को-डि-गामा पहले पहल उत्तमाशा अन्तरीप में पहुंचा। इसी अन्तरीप का नाम उत्तमाशा इस कारण रखा गया कि यहाँ पहुंच कर वास्को-डि-गामा को यह आशा हो गयी कि अब इसे जरूर भारतवर्ष का रास्ता मालूम हो जायगा। स्मरण रहे कि १८६६ ई० तक स्वेज की नहर नहीं बनी थी, और भारत में आने का एकमात्र जल मार्ग आफ्रिका को चक्कर काट कर ही हो सकता था। वास्को-डि-गामा ने १४९८ ई० की २२ मई को मालाबार तट पर कालीकट के पास अपने जहाज का लंगर किया। कालीकट के राजा जमोरिन को भला यह क्या मालूम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था कि भारतीय भूमि पर वास्को-डि-गामा के पदार्पण से भारतीय इतिहास में एक नया ही दौर शुरू होगा, इसलिये उसने वास्को-डि-गामा का खूब स्वागत किया, और उसको तथा उसके देश वालों को भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा दी।

भारत में पुर्तगाली अड्डा

१५०० ई० में पुर्त्तगालियों ने कालीकट में अपनी एक कोठी बनायी। तीन साल बाद उसकी किलेबन्दी की अनुमति प्राप्त हो गयी। १५०६ ई० में इन लोगों ने उत्तर की ओर गोवा पर कब्जा कर लिया, और १५१० ई० में स्वयं राजा के साथ उनका झगड़ा हो गया जिसके फल स्वरूप इन लोगों ने राज-महल में आग लगा दी। इस प्रकार भारतवर्ष में गोरों की ज्यादती के युग का सूत्रपात हुआ।

अंग्रेज-पुर्तगाली संघर्ष

धीरे धीरे पुर्त्तगालियों का व्यापार बढ़ने लगा। अंगरेज बहुत दिनों से भारत के जल मार्ग की टोह में थे। अब जो उन्होंने पुर्त्तगालियों को माला-माल होते देखा तो उनमें जलन पैदा हो गयी। बहुत से अंगरेज नाविकों का बस यह काम हो गया कि पुर्त्तगालियों के जहाजों को लूटें, और उनमें से जो माल हाथ लगे उसे इंगलैंड भेजें। इस प्रकार जो लोग विदेशियों के जहाजों को लूटते थे, वे डाकू होने पर भी अंगरेज समाज में उनका आदर था, इसका प्रमाण यह है कि इन डाकुओं में से कुछ लोग खिताब पाये हुए थे। १५७८ ई० में सर फ्रांसिस ड्रेक ने एक पुर्त्तगाली जहाज को लूटा। इस लूट में जो कुछ मिला सो मिला, पर लूट हुए मालों में कुछ नक्शे भी थे। इन्हीं नक्शों से अंगरेजों को भारतवर्ष के जल-मार्ग का पता चला।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनी

१६०० ई० में इंगलैंड के कुछ व्यापारियों ने अपने को ईस्ट इण्डिया कम्पनी से संगठित किया। इस कम्पनी का उद्देश्य पूर्वीय देशों में व्यापार करना था। जिस समय यह कम्पनी बनी थी, उस समय रानी ऐलिजाबेथ जीवित थी, किन्तु इस कम्पनी की ओर से जो पहला जहाज रवाना हुआ, वह उनके जीवन काल में नहीं लौटा। जेम्स प्रथम के सिंहासन पर बैठ जाने के ६ महीने बाद यह जहाज दस लाख पौंड का गोलमिर्च लेकर लौटा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुगल दरबार में हाकिन्स

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बनने के ८ साल बाद अर्थात् १६०८ ई० में पहला अंगरेजी जहाज जिसका नाम हेक्टर था सूरत में पहुँचा। इस जहाज के अंगरेज सामुद्रिक मार्ग से भारत पहुंचने वाले पहले अंगरेज थे। इस जहाज का कप्तान हाकिंस इंगलैंडेश्वर जेम्स प्रथम की ओर से मुगल बादशाह जहाँगीर के नाम एक पत्र ले आया था। पुर्त्तगाल के कुछ लोग पहले से मुगल दरबार में मौजूद थे, उन्होंने जो एक दूसरी योरोपियन जाति के प्रतिनिधि को सम्राट् के दरबार में आते देखा तो बहुत झुँझलाये। उन्होंने यह कहकर सम्राट् के कान भरने की कोशिश की कि इङ्गलैण्ड एक बहुत ही छोटा देश है, और उसके राजा एक बहुत ही मामूली व्यक्ति हैं। सम्राट् ने इन बातों की कोई परवाह नहीं की, और हाकिंस का स्वागत किया।

अंगरेजों की द्रुत उन्नति

अंगरेजों ने जल्द ही साबित कर दिया कि वे कितनी बड़ी जाति के हैं। चार-पाँच साल के अन्दर ही उन्होंने पुर्त्तगालियों के जहाजों को यत्र तत्र लूट-मार कर उन्हें इस प्रकार तबाह कर दिया कि भारतवर्ष में उनकी मिट्टी पलीत कर दी। इसके साथ ही ६ फरवरी १६१२ ई० को उन्हें एक शाही फरमान प्राप्त हुआ जिसके अनुसार उन्हें सूरत में कोठी बनाने की इजाजत मिल गई। अङ्गरेजों को यह भी अधिकार मिला कि उनकी ओर से स्थायी रूप से एक अङ्गरेज शाही दरबार में एलची के रूप में रहे। इसी प्रकार इनके अधिकार बढ़ते गये। १६१६ ई० में उन्हें कालीकट और मछलीपट्टम में एक-एक कोठी बनाने की इजाजत मिली। १६२४ ई० में एक शाही फरमान के द्वारा उन्हें यह भी अधिकार प्राप्त हो गया कि वे अपनी कोठियों के अन्दर किसी नौकर को यदि सजा देना चाहते हैं तो दे सकेंगे। यहीं से अङ्गरेजों का राष्ट्र एक तरह से बनने लगा। अन्तिम फरमान में एक तरह मुगल सार्वभौम सत्ता ने अपना अधिकार घटाकर अङ्गरेजों को अधिकार दे दिया था।

१६३६ ई० में मद्रास में कम्पनी की कोठी खुली। १६४० ई० में अंगरेजों के भाग्य से सम्राट् शाहजहाँ की एक लड़की किसी प्रकार जल गयी, उसका इलाज एक अंगरेज डाक्टर ने किया। जब शाहजादी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अच्छी हो गई, तो अंगरेज डाक्टर से यह कहा गया कि वह इनाम माँगे, पर उसने अपने लिये कुछ नहीं माँगा और कम्पनी के लिए कुछ अधिकार माँग लिए। उसकी मांग पर बादशाह ने बंगाल के अन्दर आनेवाले सब ब्रिटिश माल की चुङ्गी माफ कर दी, तथा उनके जहाजों को हुगली तक आने की आज्ञा दी। तदनुसार बंगाल में अंगरेजों की पहली कोठी बनी। बम्बई उस जमाने में एक जंगली टापू था जो पुर्त्तगालियों के कब्जे में था। १६६१ में यह टापू इंगलैंड के राजा को दहेज में मिला। यह टापू राजा के किसी मतलब का नहीं था, अतएव उन्होंने १६८८ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ इसे बेच दिया।

इन्हीं दिनों अर्थात् १६६० के बाद दक्षिण भारत में शिवाजी का उदय होने लगा। औरङ्गजेब उससे हर तरीके से परेशान थे। अङ्ग-रेजों ने इस मौके से फायदा उठाया, और शिवाजी के विरुद्ध मदद देने का वादा करके और भी रियायतें प्राप्त कर लीं।

कम्पनी की शरारतें

स्मरण रहे कि ये अङ्गरेज जो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौकर बनकर भारतवर्ष में आये थे, अपनी जाति के सबसे बुरे नमूने थे। इनका उद्देश्य किसी भी तरह धन पैदा करना था। ये न केवल भार-तीयों को ही लूटते थे, बल्कि मौका लगते ही दूसरी योरपीय जातियों के जहाजों को लूट लेते थे। यहाँ तक कि मौका लगने पर वे अपनी कम्पनी को हर प्रकार से धोखा देते थे। इनकी बेईमानियों की बात पहुँचते-पहुँचते स्वयं बादशाह के कानों में पहुँची। फलस्वरूप इनकी कई जगह की कोठियाँ जब्त कर ली गईं, और वहाँ से उनको निकाल बाहर किया गया। उस समय तक अङ्गरेजों की ताकत इतनी नहीं बढ़ी थी कि वे बादशाह की ताकत का मुकाबला करते। उन्होंने इसी में अपनी भलाई देखी कि बादशाह के पैरों पर गिर पड़े। अतएव उन्होंने ऐसा ही किया, और फल-स्वरूप बादशाह ने इनको माफी दे दी। १६६६ में बादशाह ने इन्हें नयी कोठियाँ कायम करने की आज्ञा दे दी। अब अङ्गरेज लोग अपने माल की रक्षा के बहाने छोटी-छोटी फौजें रखने लगे। जब उनको बंगाल के सूबेदार आजिमशाह से तीन गाँव जागीर के तौर पर मिले, तो उन्होंने उसकी किलेबन्दी की। ये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही तीन गाँव याने सूता नदी, गोविन्दपुर और कलिकाता बाद को चलकर कलकत्ता हो गया। तथा इसके साथ की किलेबन्दी ने फोर्ट विलियम का रूप धारण किया। जिस समय इन किले बन्दियों की बात सम्राट् के पास पहुँची, तो उन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की। भला दिल्लीश्वर ६ हजार मील दूर रहनेवाले इन अङ्गरेजों की किलेबन्दी की क्या परवाह करते। वे समझते थे कि जब उनकी खुशी होगी तब वे या उनके वंशज भारत की सर जमीन से मार भगायेंगे, पर इतिहास किसी और ही दिशा में जा रहा था।

मैदान में फ्रांस भी आया

पुर्त्तगाली तथा अंगरेजों के सिवा फ्रांस की एक कम्पनी भी भारतवर्ष में व्यापार करने के लिये आयी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के ६४ वर्ष बाद इस कम्पनी की स्थापना हुई थी। यों तो इन लोगों ने इसी के बाद भारतवर्ष में छोटी-मोटी कोठियाँ स्थापित करलीं, पर जब १७४१ में डूप्ले पांडिचेरी का गवर्नर नियुक्त होकर आया तभी इनका सितारा विशेष बुलन्दी पर गया। डूप्ले एक विचक्षण कूटनीतिज्ञ था। उसने भारतवर्ष में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापना का स्वप्न देखा। इसके लिये उसने भारतीयों को अपने सिपाहियों में भर्ती कर लिया। योरोप में अंगरेज तथा फ्रांसीसियों के बीच एक सुदीर्घ लड़ाई छिड़ी हुई थी। डूप्ले ने इस लड़ाई का फायदा उठाकर मद्रास को छीन लिया, पर ज्योंही योरोप में इन दोनों शक्तियों के बीच शान्ति स्थापित हो गयी, त्योंही उसे मद्रास वापस कर देना पड़ा। डूप्ले ने जिस बात को इस प्रकार मक्कारी, कूटनीति तथा सैनिक बल पर जीता था, उसे योरोप के सन्धिपत्र की एक लकीर के कारण वापस दे देना पड़ा। इस प्रकार योरोप में इन दोनों शक्तियों के बीच शान्ति स्थापित होने के कारण भारत में भी इन दोनों शक्तियों में ऊपर से तो शान्ति स्थापित हो गयी, पर वे भीतर ही भीतर एक दूसरे को उखाड़ फेंकने का षडयन्त्र करते रहे। कर्नाटक और हैदराबाद में जब नये शासक गद्दी पर बैठनेवाले हुए तो इसमें हर जगह पर दोनों शक्तियों ने विरोधी उम्मीदवारों का पक्ष समर्थन किया।

राबर्ट क्लाइव

एसे ही समय में राबर्ट क्लाइव नामक एक व्यक्ति ने सारी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिस्थिति बचा ली। क्लाइव इंगलैंड के एक देहात का लड़का था। लड़कपन से ही इसकी तबियत लूट की ओर थी, और कहा जाता है अपने कस्बे के दूकानदार लोग उसे तथा उसके साथियों को कर के रूप में सेव तथा रोज आधा पेंस दिया करते थे। वे ऐसा इसलिये करते थे कि जिससे उनके शीशे के जंगले बचे रहें। क्लाइव के बारे में समझा जाता था कि वह एक बेकार युवक है जो कभी किसी काम नहीं आ सकता। इसी ख्याल से उसे ६ हजार मील दूर पर एक अल्प-अज्ञात देश में मुंशीगीरी करने के लिये भेज दिया गया। यहाँ आने के बाद भी वह बहुत दिनों तक असुखी रहा, और उसने आत्महत्या की चेष्टा की। पर पिस्तौल की गोली चली ही नहीं।

जब डूप्ले ने मद्रास पर हमला किया, उस समय क्लाइव ने क्लार्की छोड़कर एक सिपाही की तरह काम करना स्वीकार किया। इस नये काम में उसने बड़ी योग्यता दिखलायी। उसने इस मौके पर आर्कट पर हमला करने की सलाह दी। यह सलाह मानली गयी, और आर्कट को जीतने का भार उसी को सौंपा गया। उसने सफलता के साथ इस काम को अञ्जाम दिया। इसी दबाव के फलस्वरूप त्रिचनापल्ली का घेरा उठ गया। अब क्लाइव पर यह भार पड़ा कि वह शत्रुओं से आर्कट की रक्षा भी करे। क्लाइव ने सफलता पूर्वक पचास दिन तक ऐसा किया। यहीं से क्लाइव का नया जीवन शुरू हो गया। कर्नाटक में अंगरेजों के उम्मीदवार को सफलता मिली। इन बातों से फ्रांस की सरकार इतनी नाराज हुई कि उसने डूप्ले को वापस बुला लिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ४ :

ब्रिटिश शासन का सूत्रपात

केन्द्र में मुगल शासन कमजोर

आगे बढ़ने के पहले हम यह देखेंगे कि कलकत्ता की तरफ अंगरेज क्या कर रहे थे, क्योंकि इधर ही से विशेषकर अंगरेजों की शक्ति का अभ्युत्थान हुआ। १७०७ में औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद मुगलों का सितारा डूबने लगा। सूबेदार लोग नाममात्र के सूबेदार थे। वे अब बिल्कुल स्वतन्त्र हो रहे थे, और होने लगे। यहाँ एक बात यह स्पष्ट कर देनी चाहिये कि सूबेदारगण ही सार्वभौम सत्ता के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाने में असमर्थ रहे यह बात नहीं, बल्कि केन्द्रीय सरकार भी सूबा के सरकारों के प्रति अपने कर्त्तव्य पूर्ण करने में असमर्थ रही। जिस समय बंगाल, बिहार, उड़ीसा के सूबेदार अलीवर्दी खाँ ने मराठों के आक्रमणों से परेशान होकर दिल्ली से मदद माँगी थी, तो केन्द्रीय सरकार कुछ न कर सकी थी, फलस्वरूप अली-वर्दीखाँ ने दिल्ली में सालाना कर भेजना बन्द कर दिया।

अंगरेजों की जीभ पर पानी

इस प्रकार सार्वभौम सत्ता को कमजोर होते देखकर अंगरेजों के मुँह में पानी भर आया। वे आये तो थे व्यापार करने, पर जब उन्होंने देखा कि व्यापार करने के हक़ में साम्राज्य कायम करना अच्छा रहेगा, साथ ही उन्होंने देखा कि साम्राज्य कायम करना सरल है तो उन्होंने इसके लिये भीतर-भीतर योजना बनाना तथा षडयंत्र करना शुरू कर दिया। कर्नल स्काट तथा अन्य अंगरेजों ने देशी लोगों से खूब मेलजोल बढ़ाया, और एक पंजाबी करोड़पति अमीचन्द की सहायता से बड़े-बड़े हिन्दू राजाओं तथा धनियों को यह कहकर भड़काया कि यदि अंगरेजों का राज्य हो गया तो इन्हें बहुत फायदा रहेगा। इनसे कहा गया कि वे मुसलमान शासकों के विरुद्ध षडयंत्र करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अलीवर्दी समझे पर देर में

नवाब अलीवर्दीखाँ अंगरेजों की इस कूटनीति को ताड़ गये, पर वे इतने बुड्ढे हो चुके थे कि क्रियात्मक रूप से कुछ करने में असमर्थ थे। अलीवर्दी ने मरने के पहले अपने उत्तराधिकारी सिराजुद्दौला को सारी परिस्थिति समझा दी, और यह कहा कि वह एक एक करके भारत की तीन गोरी ताकतों को नष्ट कर दे।

सिराज से अंग्रेजों की बेअदबी

१७५६ में अलीवर्दी खां की मृत्यु हुई उस समय सिराजुद्दौला की उम्र केवल चौबीस साल की थी। कायदा यह था कि जिस समय नया नवाब गद्दी नशीन होता था, उस समय सब अधीन राजा, अमीर तथा विदेशी लोग उसे अपनी तरफ से नजर पेश करते थे। अंगरेज अब ताकतवर हो चुके थे, और वे साथ ही इतने उद्धत हो गये थे कि उन्होंने इस रस्म को निबाहने में भी अपनी हेठी समझी, और जिस समय सिराज गद्दी पर बैठा उस समय इन्होंने किसी भी प्रकार की नजर भेंट नहीं की। उन्होंने नवाब के दरबारियों में इतना रंग जमा लिया था कि यदि कोई काम पड़ता था, तो वे नवाब को अर्जी बिना दिये ही भीतर ही भीतर अपना काम बना लेते थे। इन्होंने इस प्रभाव का बेजा इस्तैमाल कर राज्य-शक्ति को नुकसान पहुँचाना तथा उसकी अवज्ञा करना शुरू कर दिया। दिल्ली के बादशाह ने इन्हें जो चुंगी से बरी कर दिया था, यह केवल अंगरेजी माल के लिये ही था, किन्तु इन लोगों ने इस आज्ञा का दुरुपयोग किया, और भारतीय व्यापारियों से चुपचाप घूँस लेकर अपने दस्तक वेचने शुरू कर दिये। इससे न केवल राजा के कोष को ही भयंकर घाटा लगा बल्कि नवाब की सरकार की धाक तथा मर्यादा भी घट गयी, और इन विदेशियों का दबदबा कम से कम व्यापारी लोगों पर छा गया। इसके साथ ही इन्होंने कलकत्ते में तथा अन्य स्थानों में जबर्दस्त किलेबन्दी करली, और कलकत्ते की चारों तरफ एक बहुत चौड़ी खाई खोद ली। ये लोग इस समय तक अपनी शक्ति के सम्बन्ध में इतने सज्ञान हो चुके थे कि यदि नवाब का कोई बागी इनके यहाँ पहुंच जाता था तो वे उसको आश्रय तथा अभय देते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शौकतजंग का दमन

भला कौनसा शासक ऐसा था जो अपनी शक्ति को इस हद तक पद दलित होते देख सकता था। सिराज अलीवर्दी से सब कुछ सुन ही चुका था, फिर वह अपनी आंखों से सब कुछ देख रहा था। इतने में उसे खबर मिली कि अंगरेज पूर्णिया के नवाब शौकतजंग को भड़का कर सिराजुद्दौला की गद्दी के दावेदार के रूप में खड़ा करना चाहते हैं। सिराज ने फौरन पूर्णिया की तरफ चढ़ाई कर दी पर शौकतजंग पहले ही से उपहार लेकर पहुंच गया, और अंगरेजों की सारी चिट्ठियों को उनके सामने रख दिया। इतना प्रमाण मिलने पर होना तो यह चाहिये था कि सिराज अंगरेजों को भगा कर समुद्र पार कर आता, पर एक तो सिराजुद्दौला अपने को कमजोर महसूस करता था, दूसरे वह स्वभाव से भी जल्दी किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पाता था। नतीजा यह हुआ कि मामला टल गया, और अंग्रेजों को समय मिला।

सिराज का बागी अंगरेजों के आश्रय में

सिराजुद्दौला राजबलभ नामक अपने एक दीवान से नाराज हुआ, उसका लड़का किसनदास सारी सम्पत्ति लेकर कलकत्ता भाग गया। नवाब ने अंगरेजों को लिखा कि बागी को वापस कर दो, पर अंगरेजों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया।

कासिम बाज़ार पर हमला

१७५६ में सिराजुद्दौला ने कासिम बाजार की कोठी पर हमला कर दिया। अंगरेज मुखिया वाट्स तथा अन्य सब अंगरेज उसके सामने पेश किये गये, किन्तु उसने इन बागियों को सजा देने के बजाय अपने साथ कर लिया। कोठी का तिजारती माल भी छोड़ दिया गया, केवल सामरिक माल जब्त कर लिये गये। अब सिराज कलकत्ते की ओर बढ़ा। वह १६ जून को कलकत्ता पहुंचा। इस बीच में सब अंगरेजों को इस हमले की बात का पता लग चुका था। अंगरेज समझते थे कि उन्होंने जो तरह तरह से नवाब के लोगों को फोड़ा है, कहीं धर्म के नाम पर, कहीं न्याय के नाम पर, और कहीं अन्य सब्ज बाग दिखला कर तो वे ही जीतेंगें, पर २० जून १७५७ को सिराजुद्दौला की सेना ने अंगरेजों की कोठी में प्रवेश किया। सब अंगरेज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैद कर लिये गये। यदि सिराज बुद्धिमान होता तो यहीं पर अपने सब दुखों का अन्त कर डालता, पर जब अंगरेजों ने गिड़गिड़ा कर माफी मांगी तो सिराज ने उन सबको माफी दे दी, पर शर्त्त यह रही कि वे बंगाल का पिंड छोड़कर चले जायेंगे।

अन्ध-कूप हत्या सर्वथ मिथ्या

इस जगह पर कुछ अंगरेज इतिहास लेखक और उनके पिठ्ठू अन्ध-कूप हत्या या ब्लैक हौल ट्रेजडी का वर्णन करते हैं, पर अब यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है कि अन्ध-कूप हत्या की घटना विवेक पीड़ित मन की आत्म समर्थन में की गयी कल्पना मात्र है। इसका उल्लेख करना उसको महत्व देना है। हमने इसका उल्लेख इस लिये कर दिया कि अंगरेज इतिहास लेखक कल्पना को किस प्रकार सत्य की मर्यादा देकर इतिहास के आसन पर बैठने से नहीं चूके। मजे की बात यह है कि हमारी पाठ्य पुस्तकों में यह बात सत्य के रूप में पढ़ायी गयी।

पलता में अंगरेज

कलकत्ते से भगायें हुए अंगरेज बंगाल की खाड़ी के ऊपर कलकत्ते से दक्षिण में पलता नामक एक जगह पड़े रहे। वे एकाध दिन नहीं महीनों वहीं डटे रहे। यहां से इन्होंने नवाब के विरुद्ध षड़यंत्र करना तथा नवाब के लोगों को फोड़ना जारी रखा। साथ ही उन्होंने मद्रास को लिख भेजा कि वहां से बंगाल के लिये नयी सेना भेजी जाय। जब नवाब के मातहतों ने उससे पूछा कि वे चले क्यों नहीं जाते, तो उन्होंने कहा कि मौसिम समुद्र यात्रा के अनुकूल होते ही वे चले जायेंगे। भीतर-भीतर वे जो कुछ कर रहे थे, यह तो हम पहले ही बता चुके।

मद्रास में अंगरेज सेना

१६ अगस्त को कलकत्ता के पतन का समाचार मद्रास तथा अन्य स्थानों के अंगरेजों को लगा। दिसम्बर १७५६ तक आठ सौ गोरे तथा तेरह सौ भारतीय सिपाहियों की एक फौज पलता पहुंच गयी। जल सेना के अध्यक्ष ऐडमिरल वाटसन थे, तथा हमारे पूर्व परिचित कर्नल क्लाइव स्थल सेना के अध्यक्ष थे। सेना आने को तो आ गयी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर अङ्गरेज नेतागण इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि सैनिक बल पर नबाव को जीतना असम्भव है। इसलिये उन्होंने षड़यन्त्र से ही सारा काम निकालना चाहा।

मानिकचन्द की गद्दारी

कलकत्ते के दक्षिण में बजबज में एक नवाबी किला था। राजा मानिकचन्द इस किले के अध्यक्ष थे। यह महाशय भीतर भीतर अङ्गरेजों से मिल चुके थे। इसलिये आध घण्टे के अन्दर ही इसने बिना युद्ध किये किले को अङ्गरेजों के हवाले कर दिया। मानिकचन्द दिखाने के लिए पीछे हटने लगा। कलकत्ता आकर उसने इस दिखावे की भी जरूरत नहीं समझी, और कलकत्ता अङ्गरेजों को सौंप दिया। उसने हुगली पहुँच कर सिराजुद्दौला को खबर भेजी कि अङ्गरेजों के प्रचण्ड हमले के सामने वह ठहर नहीं सका। इस प्रकार बजबज, तान्नाह, कलकत्ता और हुगली के किले अङ्गरेजों को बिना लड़ाई के मिल गये। अङ्गरेज इतने पर सन्तुष्ट नहीं रहे, और १२ जनवरी से १८ जनवरी तक पूरे ७ दिन में हुगली निवासियों को लूटते रहे। साथ ही उनका कत्ले-आम भी हुआ।

सिराज का चरित्र

सिराजुद्दौला को जब यह खबर मालूम हुई तो वह फौज लेकर मुर्शिदाबाद से आगे बढ़ा, और हुगली के पास आकर अङ्गरेज सेनापति वाटसन को एक पत्र लिखा जिसमें अन्तिम तौर पर उसे चेतावनी दी गयी। सिराजुद्दौला एक कमजोर व्यक्ति था। अङ्गरेज इतिहास लेखकों ने उसे कायर, असचरित्र तथा बेईमान करके चित्रित किया है, इसके विपरीत कुछ भारतीय लेखकों ने उदाहरण स्वरूप श्री अक्षयकुमार मैत्रेय तथा श्री सुन्दरलाल ने उस पर सब गुणों का आरोप किया है। सच बात तो यह है कि वह इन दोनों में से कुछ भी नहीं था। वह केवल एक कमजोर व्यक्ति था, तथा इतिहास के जिस पृष्ठ पर उसे साँट दिया गया था, वह इस अर्थ में सम्पूर्ण अयोग्य था, कि वह जिस परिस्थिति में था उसे और बिगाड़ ही सकता था, बना नहीं सकता था। यदि वह उदार था, तथा अङ्गरेजों को अपने हाथ में पाकर भी उसने उन्हें नहीं मारा, तो इसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Satish Chandra Mishra
30, Atal Behari Nagar,

कारण यह था कि उन पर कड़ी कार्रवाही करने की उसमें हिम्मत नहीं थी। उसकी चारों तरफ उसी के विरुद्ध उसी के आदमी षड़यन्त्र कर रहे थे, और उसे कानों कान खबर भी नहीं होती थी। और यदि उसे खबर भी हो जाती थी तो वह एक असहाय की भाँति प्रतीक्षा करता था कि घटना-चक्र न मालूम कौनसी दिशा ले। फिर जब घटना-चक्र एक दिशा ले लेता था, तब वह देखता था कि अब कुछ करने का समय नहीं रह गया। बार बार हम उसके आचरण में इसी विशेषता को पाते हैं। ऐसी हालत में पण्डित सुन्दरलाल ने उसके लिए दूरदर्शी शब्द का इस्तैमाल कर उस शब्द के साथ घोर अन्याय किया है। सिराज को जिस समय यह चाहिये था कि वह समझौते की बातचीत को छोड़कर संग्राम में कूद पड़े, उस समय हम उसे समझौता के लिए बिलबिलाते पाते हैं। और जिस समय उसे निर्दय वास्तविकता पर चलना चाहिये, उस समय हम उसे दयालु पाते हैं। यही उसके चरित्र की विशेषता थी। कुछ भी हो इस कारण से सिराज को अङ्गरेजी राज्य के लिये जिम्मेदार करना गलत होगा। इतिहास की अन्य शक्तियाँ सिराज के विरुद्ध थीं। सिराज भी एक तिनके की तरह इन्हीं शक्तियों की लहरों पर नाच रहा था। यदि वह जैसा था वैसा न होता तो भी उसके वश का कुछ नहीं था।

क्या सिराज के विरुद्ध षडयन्त्र आकस्मिक ?

ये जो सारे के सारे व्यापारी सिराज के बिरुद्ध हो गये, तथा उसके करीब से करीब लोग भी उसके बिरुद्ध षडयन्त्र में शामिल हो गये, क्या यह एक आकस्मिक घटना है, या इसके पीछे गहरे आर्थिक सामाजिक कारण हैं। यह कह देना कि क्लाइव या वाटसन या हालवेल षडयन्त्र करने में कुशल थे, तथा अमीचन्द मानिकचन्द से लेकर नवाब के सब आदमी नमकहराम और बेईमान थे, कोई व्याख्या ही नहीं है। जब हम देखते हैं कि विश्वासघात या षडयन्त्र कोई एक या दो आदमी तक सीमित नहीं था, बल्कि एक आम चीज थी, तो हमारी दृष्टि स्वतः विश्वासघात के पीछे गहरे कारणों की ओर जाती है। हम आज एक तरफ से इन सबको मक्कार और देशद्रोही भले ही करार दें, पर यदि हमसे पूछा जाय कि सिराज के राज्य को कायम रखने में इन्हें क्या दिलचस्पी हो सकती थी, तो हम इसका कोई उत्तर नहीं दे सकते। सच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात तो यों है कि सिराज की सामन्तशाही सरकार हर तरह से नयी बढ़ती हुई व्यापारी तथा धनी श्रेणी की उन्नति में बाधक थी। सिराज के शासन में, बल्कि सिराज की तरह लोगों की शासन में यह श्रेणी आगे पनप नहीं सकती थी, इसलिये जब उनको अंगरेज व्यापारियों की तरफ से यह आश्वासन दिया गया कि वे पनप सकेंगे, और उन्हें यह आश्वासन सही ज्ञात हुआ, तब उन्होंने करीब-करीब एक स्वर से उनका साथ दिया। न तो सिराज सामरिक शक्ति से ही परास्त हुआ, और न केवल धोखेबाजी से ही उसको नीचा देखना पड़ा, बल्कि ऐतिहासिक रूप से उसकी आवश्यकता समाप्त हो जाने के कारण ही उसके साथ लोगों ने धोखा किया, और इसी कारण अंगरेजों की कूटनीति या रणनीति जो कुछ भी कहिये सफल रही। उसकी पराजय एक निकृष्ट पद्धति तथा संगठन की अपने से उन्नततर पद्धति के मुकाबले में पराजय थी।

अंगरेजों की असम्भव शर्तें

अंगरेजों ने जब यह देखा कि इतने पर भी नवाब सुलह चाहते हैं, तो उन्होंने ऐसी शर्तें पेश कीं जिन्हें कोई भी आत्मसम्मानयुक्त व्यक्ति मंजूर नहीं कर सकता था। ये शर्तें इस प्रकार की थीं मानो अंगरेजों ने नवाब को बहुत बुरी तरह हराया था। मजे की बात यह है कि नवाब ने इन सब शर्तों को सिवा एक शर्त के मंजूर कर लिया था। जिस शर्त को नवाब ने मंजूर नहीं किया था उसे मंजूर करने का अधिकार नवाब को था ही नहीं क्योंकि टकसाल केन्द्रीय विषय था, और कम्पनी की ओर से यह माँग की गयी थी कि उन्हें टकसाल खोलने का अधिकार दिया जाय। अंगरेजों को जो कुछ नुकसान हुआ था, नवाब ने उनका हरजाना देना स्वीकार किया था। एक शर्त के अनुसार अंगरेजों को यह भी अधिकार दिया गया था कि वे जहाँ भी चाहें, जैसे भी चाहें, किलाबन्दी करें।

सिराज की गुप्त हत्या की चेष्टा

पर इन बातों पर भी अंगरेज राजी नहीं हुए। अंगरेजों ने सिराज को कलकत्ता जाने के लिये कहा, और कहा कि जो बाकी छोटी मोटी बातें हैं, वे वहीं तय हो जावेंगी। ४ फरवरी १७५७ को सिराज कलकत्ता पहुँचा। अंगरेजों की यह योजना थी कि एक तरफ तो बात-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चीत होती रहे जिससे कि नवाब का विश्वास बना रहे, और दूसरी तरफ नवाब का काम ही तमाम कर दिया जाय। पाँच फरवरी को अपनी योजना के मुताबिक अंगरेजों ने नवाब की सेना पर हमला कर दिया। नवाब को कुछ सन्देह था इसलिये वे अपने निर्दिष्ट खेमे में नहीं थे, नहीं तो उनका उसी समय काम तमाम हो जाता।

नवाब का दब्बूपन

जब नवाब के साथ इस प्रकार विश्वासघात हुआ, तो उन्हें चाहिये था कि बातचीत का भरोसा छोड़कर लड़ाई के लिये तैयार हो जाते। पर ऐसा नहीं हुआ। इस पर उन्हें कमजोर दिल भले ही कह लिया जाय पर यह कमजोरी ऐतिहासिक कारणों से उत्पन्न गुण था। जिसे अपनी सेना पर, सेनापतियों तथा अमीर-उमरावों पर भरोसा न हो, वह कमजोर तबियत का न होता तो क्या होता।

फिर नई शर्तें

९ फरवरी को नवाब और अंगरेजों में अलीनगर की सन्धि हुई, जिसमें ऊपर गिनायी हुई दो शर्तों के अलावा अंगरेजों को चुङ्गी से बरी कर दिया गया, और उन्हें सिक्का ढालने का अधिकार भी दे दिया गया। चुङ्गी से बरी होने वाली शर्त्त को यहाँ तक बढ़ाकर लागू किया गया कि बंगाल, बिहार और उड़ीसा में जिस किसी माल के साथ अंगरेजों का दस्तखत हो, वह सब चुङ्गी से बरी समझा जाय। अंगरेजों की ओर से यह भी शर्त्त थी कि नवाब फ्रांसीसियों को देश निकाला दे दे पर नवाब ने इस शर्त्त को मानने से इंकार कर दिया।

अंगरेज नवाब की कमजोरी तथा बेबसी को अच्छी तरह ताड़ चुके थे, इसलिये १६ फरवरी तक ही उन्होंने और नयी नयी शर्त्तें लगानी शुरू कीं। इन शर्तों के व्यौरे में जाने की आवश्यकता नहीं है। इन शर्त्तों के द्वारा सम्पूर्ण रूप से एक समानन्तर सरकार कायम करने का दावा किया गया था। केवल यही नहीं वे शर्त्तें ऐसी थीं जिनके द्वारा नवाब के कुछ अधिकारों पर हस्तक्षेप किया गया था, जैसे एक शर्त्त यह थी कि कलकत्ते के नीचे नदी से एक मील के इर्द-गिर्द नवाब किसी प्रकार की किलेबन्दी का इरादा न करें।

अङ्गरेजों का असली उद्देश्य

अङ्गरेजों का असली उद्देश्य तो किसी भी प्रकार की सन्धि से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बँधे रहने का नहीं था। वे तो राज्य-शक्ति को हथियाने का इरादा कर चुके थे। इसी बीच में दिल्ली की सरकार से सिराज की कुछ चल गयी। खबर मिली कि केन्द्र की सेना बंगाल आ रही है, इस पर सिराजुद्दौला ने ऐडमिरटल वाटसन की मदद मांगी। अङ्गरेज अपनी ही फिक्र में लगे हुये थे। वे चाहते थे कि बंगाल से फ्रांसीसियों को निकाल बाहर किया जाय क्योंकि यह एक योरोपीय शक्ति थी, और इससे इनको गम्भीर भय था। पहले ही बताया जा चुका है कि नवाब इस बात के विरुद्ध थे और वे चाहते थे कि वे भी रहें।

चन्दननगर विजय

क्लाइव ने इस मौके का उपयोग कर अपनी सेना को चन्दन नगर की ओर बढ़ा दिया, साथ ही उसने नवाब का एक जाली पत्र तैयार किया जिसमें अङ्गरेजों को फ्रांसीसियों पर आक्रमण करने की आज्ञा दी गई थी। नवाब इसको रोकते रहे, उन्होंने यहाँ तक कहा कि मुझे सहायता की आवश्यकता नहीं है पर क्लाइव बढ़ता ही चला गया। १४ मार्च को चन्दननगर का अवरोध शुरू हुआ, और २३ मार्च तक चन्दननगर पर ब्रिटिश झण्डा फहराने लगा। यह न समझा जाय कि चन्दननगर को विजय सामरिक ताकत के बूते पर हुई पर विश्वासघात के बूते पर ही हुई।

सिराज क्या था ?

एक कमजोर राजा की भांति सिराज फिर भी शान्ति की आशा करता रहा। हम पहले ही दिखा चुके कि इस प्रकार की कमजोरी के लिये सिराज को कोसना व्यर्थ है, पर हमें यह आश्चर्य है कि ऐसे कमजोर, संगठन में अपटु तथा अदूरदर्शी राजा को सर्वगुण सम्पन्न करके दिखाने की चेष्टा कैसे की गई है। फ्रेंच राज्य के क्रान्ति के समय राजा लुई तथा रूसी क्रान्ति के समय जार निकोलस के चरित्र के सम्बन्ध में भी लोग इसी प्रकार भ्रम में पड़ गये हैं। इन राजाओं को किसी ने पाप का पुतला, तो किसी ने धर्म और चरित्र का आदर्श करके दिखलाया है। असली बात तो यों है कि ऐतिहासिक शक्तियों के आगे इन लोगों की मति मन्द हो गयी थी। उनकी किंकर्त्तव्य विमूढ़ता तथा कमजोरी इस प्रकार आकस्मिक नहीं थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पलासी का विश्वासघात

अब हम धीरे-धीरे उस दुखमय घटना की ओर जा रहे हैं, जिसको पलासी का युद्ध कहते हैं, पर जो असल में कोई युद्ध नहीं था, बल्कि एक कमजोर तथा संगठनहीन शासक को देशी और विदेशी रक्त तथा धन लोलुप लोग कैसे लूट सकते हैं इसका इतिहास है। युद्ध से पहले ही नवाब के प्रधान सेनापति मीरजाफर के साथ अंगरेजों की एक गुप्त सन्धि हो चुकी थी, जिसमें यह तय हुआ था कि इसके बदले में मीरजाफर बंगाल का नवाब बना दिया जायगा। मीरजाफर के साथ यह तय हुआ कि अंगरेजों को जो रियायतें अब तक प्राप्त हो चुकी हैं, वे तो कायम रहेंगी ही, इसके अतिरिक्त वह नवाब बनकर समस्त फ्रांसीसी कोठियों को अंगरेजों के हवाले कर देगा। इसके अलावा यह तय हुआ कि वह कलकत्ते के हरजाने के लिये कम्पनी को एक करोड़ रुपये देगा, तथा ७७ लाख अन्य अधिवासियों को देगा जिनमें से ५० लाख केवल अंगरेजों को मिलेगा। सामरिक दृष्टिकोण से कुछ और भी शर्त्तें रखी गयीं।

मीरजाफर

कहना न होगा कि मीरजाफर ने इन शर्त्तों को मान लिया, और फिर भी उसने सौदे को सस्ता समझा। सिराज से उसे न तो कोई प्रेम था, और न हो सकता था। साम्प्रदायिक दृष्टि से जो लोग चीजों को देखने के अभ्यस्त हो गये हैं, उनको फिर एक बार इस स्थान पर इस बात को नोट कर लेना चाहिये कि एक मुसलमान ने ही दूसरे मुसलमान का गला काटा। मीरजाफर अपने स्वार्थ की दृष्टि से सोच रहा था न कि धर्म या अन्य किसी दृष्टि से। अगर उसने अपने मतलब के लिये अपने नवाब के साथ विश्वास-घात किया तो इसमें मैं कोई आश्चर्य की बात नहीं पाता। मैं यह भी समझ नहीं पाता कि उसे दूसरे और सैकड़ों विश्वास-घाती, जैसे औरङ्गजेब आदि से, जिन्होंने अपने भाइयों को धोखा दिया तथा कत्ल किया क्यों अधिक बुरा समझा जाय। मीरजाफर ने जिस समय विश्वास-घात किया, उस समय उस अर्थ में देश-भक्ति की भावना विद्यमान नहीं थी, जिस अर्थ में वह अब है। फिर यह भी बात है कि मीर जाफर को यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात न तो मालूम थी और न हो सकती थी कि वह अपने देश को धोखा दे रहा है। मीरजाफर अवश्य ही एक विश्वास-घातक था, और इसके लिये उसे बुरा से बुरा जो कुछ भी कहा जाय, ठीक है, पर उस पर यह आरोप करना कि उसी के कारण इस देश में अंगरेजों का राज्य हुआ, उसे बहुत अधिक महत्व देना है। न तो सिराज ही अकेला कुछ कर सकता था, और न मीरजाफर ही। परिस्थितियों ने उन्हें उत्पन्न किया था। यदि मीरजाफर विश्वास-घात न करता, तो सम्भव है कि ह्रासशील पद्धति के बिखरने में कुछ और देर लगती। पर वह बिखरती तो जरूर ही। उसमें इतनी ताकत कहाँ थी कि वह नयी पद्धति के सामने ठहरे।

सिराज लड़ने पर मजबूर

सिराज ने जब देखा कि अब तो लड़ने के सिवा शत्रु ने कोई चारा ही नहीं छोड़ा, तो वह आगे बढ़ा, और मुर्शिदाबाद से बीस मील दूर पर सेना सहित पलासी नामक स्थान में टिका। सिराज का वही हाल हो रहा था जो राजा लूई तथा जार निकोलस का था। उनकी तरह न तो उसे अपनी सेना पर ही भरोसा था, न अपने ऊपर भरोसा था। उसको इस बात का कुछ कुछ पता था कि भीतर भीतर षड़यंत्र चल रहे हैं, पर उसने फिर भी कुछ नहीं किया था।

उसका पलायन

२३ जून १७५७ को दोनों सेनाओं का सामना हुआ। मीरजाफर के अतिरिक्त सेनापति यार लुत्फ खां तथा सेनापति दुर्लभराय अंगरेजों से मिले हुए थे। इन तीनों विश्वास-घातकों के अधीन ४५ हजार सेना थी। विश्वासपात्र सेनापति मीर मुइनुद्दीन ऊर्फ मदन के अधीन केवल १२ हजार सेना थी। युद्ध शुरू होते ही याने युद्ध का ढोंग शुरू होते ही ये तीनों सेनापति अपनी सेना सहित अंगरेजों से मिल गये। मीर मर्दन अन्त तक लड़ता रहा, पर वह अकेला क्या करता। उसके मरते ही सिराजुद्दौला को भाग जाना पड़ा। २४ को सिराजुद्दौला मुर्शिदाबाद पहुंचा। २६ को क्लाइव भी उसके पीछे पीछे पहुंचा। नवाब फकीर का वेश बना कर भाग निकला।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिराज की हार का कारण

सिराज की तरह नवाब का यह उपयुक्त अन्त था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह सच्चा था तथा, उसने अपने वादों को कभी नहीं तोड़ा था, किन्तु ज्ञात होता है कि उसमें यह सब गुण इसलिये थे कि उसमें वादा तोड़ने का या और किसी प्रकार के छल करने का साहस नहीं था। कुछ इतिहास लेखकों ने उसके सेनापतियों की विश्वास घातकता पर खून के आंसू रोये हैं, पर यदि व्यक्तिगत दृष्टि से देखा जाय तो सिराज पर इसके लिये क्रोध ही आना चाहिये। यदि उसने सुना कि उसके सेनापति दुश्मन से मिले हैं, तो उसने उन सेनापतियों को तोप से बांध कर उड़वा क्यों नहीं दिया? फिर उसने अपने को सेना में जन-प्रिय क्यों नहीं बनाया? यदि वह अपनी सेना में जनप्रिय होता, तो ऐसा तो न होता कि तीन आदमी के विश्वासघात के कारण ४५ हजार सशस्त्र आदमी उसके खिलाफ हो जाते। यदि वह सेना में जनप्रिय होता, तो मीरजाफर, यारलुत्फखां और दुर्लभराय ये तीन व्यक्ति अंगरेजों से जाकर मिलते, या शायद यह भी न होता। क्योंकि एक तो ऐसी हालत में अंगरेजों के निकट उनके विश्वासघात का कोई मूल्य नहीं रह जाता, या यदि सेना को उनके विश्वासघाती इरादे मालूम हो जाते तो सेना ही उन्हें खतम कर देती। इसके अतिरिक्त नवाब सिराजुद्दौला ने अपने यहां की जनता से भी कभी कोई सम्बन्ध नहीं रखा, और न उसने उन्हीं में अपने को जनप्रिय बनाया। बाद को जब क्लाइव ने इंगलैंड में जाकर पार्लियामेंटरी कमिटी के सामने गवाही दी तो उसमें उसने बताया कि जिस समय उसने पलासी की विजय के बाद एक छोटी सेना लेकर सूबे की राजधानी मुर्शिदाबाद में प्रवेश किया, तो उस समय लाखों की जनता एकत्र थी। यदि वह चाहती तो वह लाठियों तथा पत्थरों से ही क्लाइव की सारी महत्वाकाङ्क्षाओं पर पानी फेर देती, पर यह विराट जनता खड़ी खड़ी तमाशा देखती रही। तो इस प्रकार सिराज की हार का असली कारण न तो सेनापतियों का विश्वासघात ही था, और न कुछ रईसों का विरोध ही था। जनता तो खैर न तो सिराज के ही पक्ष में थी न अंगरेजों के। पर उदीयमान पूंजीवादीवर्ग, बीच के व्यापारी तथा इसी बीच में उत्पन्न नया मध्यमवर्ग अंगरेजों के पक्ष में था क्योंकि इन्हें अंगरेजी व्यापार से फायदा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिराज की मृत्यु

मीर जाफर जब गद्दी पर बैठा तो उसने सब तरह से अंगरेजों की इच्छाओं को पूर्ण किया। बाद को सिराजुद्दौला राज-महल में गिरफ्तार हो गया और कत्ल कर दिया गया।

अङ्गरेजों के भारतीय पिट्ठू

हम इस पुस्तक में अङ्गरेजों ने कैसे अपने अधिकारों को बढ़ाया उसके व्यौरे में नहीं जायेंगे। हम इतना बतला देना चाहते हैं कि अङ्गरेजों ने आकर किसी भी वर्ग का कोई विशेष फायदा नहीं किया। जिन वर्गों ने अङ्गरेजों को दावत देकर बुलाया था उनमें से भी कई तबकों को निराश होना पड़ा। फिर भी अब कोई चारा नहीं रहा था। अङ्गरेजों के पैर दिन व दिन मजबूती से जम रहे थे। भारतीयों में कोई एका नहीं था। अङ्गरेजों की सेना सुशिक्षित तथा नये अस्त्र-शस्त्रों से लैस थी, दूसरे शब्दों में अंगरेजों की उत्पादन पद्धति उत्कृष्टतर थी, इसलिये उनके सामने इनका कुछ चलना असम्भव था।

असली शासक अंग्रेज

मीरजाफर से अंगरेजों का जितना काम बन सकता था, उन्होंने बना लिया, इसके बाद जब उन्होंने देखा कि अब उनकी स्वार्थ सिद्धि में बाधा हो रही है, तो उन्होंने २० अक्टूबर १७६० को मीरजाफर को सोते हुए घेर लिया, और मीरकासिम को उसकी जगह सूबेदारी दे दी। मीरकासिम के बाद फिर मीरजाफर आये। सच्चे मानों में तो अब अंगरेज ही उस सूबे के असली शासक हो चुके थे, पर कई कारणों से वे अभी एक न एक शिखंडी बनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते थे। अभी वे अपनी ताकत को पूरी तरह से महसूस नहीं कर पा रहे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ५ :

भारत का लाल होना तथा देशी धंधों का नाश

तीन प्रान्त अंगरेजों के कब्जे में

पूर्व अध्याय में बंगाल पर जिन तरीकों से अंगरेजों का कब्जा होना दिखाया गया है, अगले सौ साल में उन्हीं तरीकों से भारतवर्ष में अंगरेजों का राज्य बढ़ा। क्लाइव ने जिस अट्टालिका की नींव डाली, वह धीरे-धीरे बढ़ती ही गयी। जिस समय वारेन हेस्टिंगस क्लाइव की जगह पर नियुक्त हो कर आया, उस समय बंगाल के अन्दर कुछ इलाके, बल्कि सारा बंगाल, बिहार और उड़ीसा अंगरेजों के अधीन था। जो राजे या महाराजे गद्दी पर बैठे हुए थे, वे महज अंगरेजों की तान पर नाच ने वाले कठपुतले थे।

वारेन हेस्टिंगस

वारेन हेस्टिंगस ने गवर्नर जनरल बनते ही दिल्ली दरबार में जो २६ लाख रुपये करके रूप में भेजे जाते थे, उसे बन्द कर दिया। इस प्रकार वह अपने गुरु क्लाइव से भी बढ़कर निकला। उसने बिहार से आगे बढ़ना शुरू किया। पहले उसने बनारस के महाराज चेतसिंह से छेड़छाड़ की और बहाने बताकर बनारस पर चढ़ाई कर दी, और उस शहर को उजाड़ दिया।

अवध की बेगमों की लूट

उसे कम्पनी की ओर से यह आज्ञा मिली हुई थी कि वह अधिक से अधिक धन एकत्र करके भेजे। इसी के अनुसार वारेन हेस्टिंगस ने अवध के नवाब से एक बड़ी रकम मांगी। नवाब के पास इतना धन नहीं था, कम से कम उसने यही कहा। नवाब स्वयं चुनार के किले में जाकर गवर्नर जनरल से मिले तो यह तय हुआ कि दोनों मिल कर अन्य लोगों को लूटें। इस लूट के लिये जो लोग चुने गये, वे अवध की बेगमें थीं जिनके सम्बन्ध में यह समझा जाता था कि --

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवाब शुजाउद्दौला मरते समय उनके लिये काफी धन छोड़ गये थे। स्मरण रहे कि यह साम्राज्यवादी लूट ही नहीं, बल्कि खुलम खुल्ला डाका था।

अब यह जरूरी था कि इन बेगमों पर कोई लांछन लगाया जाय, तभी तो उन पर हमला हो सकता था। तदनुसार उन पर यह लांछन लगाया गया कि उन्होंने महाराजा बनारस के साथ मिलकर अंगरेजों के विरुद्ध षड़यंत्र किया। इस दोषारोपण के बाद वह घृणित धोखे से बेगमों के महल में घुस गया और १ करोड़ २० लाख की रकम लूट ली गयी।

रुहेलों की लूट

इस लूट की पिपासा को तृप्त करने के लिये वारेन हेस्टिंगस ने १७७३ में नवाब शुजाउद्दौला से एक गुप्त सन्धि की थी जिसमें यह तय हुआ था कि रूहेलखंड पर चढ़ाई कर उस देश को नवाब को दे दिया जायगा। उसके बदले में नवाब को ४० लाख रुपये तथा युद्ध के सारे खर्च देने पड़ेगे। १७ अप्रैल १७७४ को अकारण आक्रमण शुरू कर दिया गया। २३ अप्रैल की लड़ाई में वे फैसला जनक रूप से हरा दिये गये। रुहेलखंड की इस लूट से कम्पनी को ४० लाख तथा हेस्टिंगस को दो लाख रुपये मिले।

नन्दकुमार को फांसी

इसी के बाद राजा नन्दकुमार को जालसाजी के झूठे अपराध में फांसी दे दी गयी। राजा नन्दकुमार कोई दूध के धुले नहीं थे, वे स्वयं विश्वासघात कर अंगरेजों का साथ दे चुके थे, किन्तु जिस जुर्म में उन्हें फांसी दी गयी वह झूठा था। कुछ इतिहास लेखकों ने उन्हें एक आदर्श चरित्र और शहीद करके चित्रित किया है, यह बिल्कुल गलत है। फिर भी उस युग में उनकी फांसी से इसलिये बहुत तहलका मचा था कि वे एक बहुत प्रभावशाली व्यक्ति थे।

जमीन की नई व्यवस्था, कर में वृद्धि

हेस्टिंगस ने जमीन का लगान हद से ज्यादा बढ़ा दिया। पहले के बादशाहों की अमलदारी में जमीन की आमदनी का आधा ले लिया जाता था, किन्तु अब सिद्धान्ततः दस फीसदी छोड़कर सब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ले लिया जाता था। अङ्गरेजों ने ही आने के बाद वर्त्तमान जमींदारों की सृष्टि की। पहले पहल उन्होंने (Revenue Farmers) की सृष्टि की थी, जो थोड़े दिन के लिये नियुक्त होते थे। इन लोगों का काम यह था कि लगान वसूल कर सरकार को दें। बाद को यही लोग वर्त्तमान जमींदारों में परिणत हो गये। पहले ग्राम पंचायत ही यदि जमीन की नहीं तो जमीन की उपज की मालिक समझी जाती थी, अब जमींदार जमीन का मालिक बन गया। इसका नतीजा यह हुआ कि पुराने सम्बन्ध टूट गये, और जमीन सम्बन्धी नये सम्बन्धों का उदय हुआ। इसका एक प्रत्यक्ष नतीजा यह भी हुआ कि जमींदार वर्ग के रूप में सरकार का एक और जबर्दस्त स्तम्भ खड़ा हो गया।

वारेन हेस्टिंगस ने ब्रिटिश साम्राज्य को और भी कई एक प्रकार से पुष्ट किया। उसकी कौंसिल कई बार उसका विरोध करती रही, और मद्रास तथा बम्बई के अङ्गरेज भी उसके मार्ग में रोड़े अटकाते रहे, फिर भी उसने साम्राज्य के लिए बहुत कुछ किया। उसने बंगाल को जिलों में बांट दिया, और सिविल सर्विस की भी व्यवस्था की।

अंग्रेज और फ्रांसीसी

१७७७ के अक्टूबर में साराटोगा में अङ्गरेजों की जो हार हुई, उसका फायदा उठाकर फ्रांसीसियों ने अमेरिका के औपनिवेशिकों से मित्रता कर ली। इसका नतीजा प्राच्य तथा पाश्चात्य दोनों जगह की राज नीति पर पड़ा। फ्रांसीसियों ने मराठों को अपनाया, इस कारण वारेन हेस्टिंगस को लेने के देने पड़ गये। इसी प्रकार दक्षिण में फ्रांसीसियों ने हैदरअली से जो मित्रता की, वह अङ्गरेजों के लिये बड़ी खतरनाक सिद्ध हुई। हैदरअली ने १७८० में करीब-करीब देश के उस हिस्से को अङ्गरेजों से पाक कर दिया। वारेन हेस्टिंगस ने जल्दी से कलकत्ता में एक फ़ौज खड़ी की और उसे आयरकूट की अध्यक्षता में भेजा। अब की बार अंगरेजों को एक विजय प्राप्त हुई; और उनकी स्थिति कुछ संभली। अंगरेजों के सौभाग्य से हैदरअली अगले साल मर गया। जल युद्ध में भी फ्रेंच जल सेनापति सफरेन को ह्यू से मुकाबिला पड़ा और अब वे विशेष घाटे में न रहे। अंगरेजों ने हैदरअली के उत्तराधिकारी टीपू साहब तथा मराठों से सन्धि कर ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हेस्टिंगस का चरित्र

वारेन हेस्टिंगस के कारण ब्रिटिश साम्राज्य की तरक्की तो हुई, पर वह तथा उसका मित्र एलिजा इम्पे दोनों जालसाज तथा बेईमान थे। यह अंगरेजी पार्लियामेंट पर भी जाहिर हो गया था, और इसके लिये बाद को उन पर मुकदमा भी चलाया गया था। हेस्टिंगस को अपने मुकदमे में दास लाख रुपये खर्च करने पड़े, और प्रधान विचारपति सर एलिजा दोषी प्रमाणित हो जाने पर भी यह कहकर छोड़ दिये गये कि उनके दोष के खुल जाने से जो अपमान हुआ, वही यथेष्ट था। हेस्टिंगस भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य का दूसरा बड़ा संस्थापक समझा जाता है, और वह पार्लियामेंट के अनुसार भी एक भंयकर बेईमान तथा जालसाज था।

गवर्नर जनरल के अधिकारों में वृद्धि

१७७३ में लार्ड नार्थ ने भारत के सम्बन्ध में एक कानून बनाया था जिसमें एक गवर्नर जनरल तथा चार सदस्यों की एक कौंसिल बनायी गयी थी। कौंसिल सहित गवर्नर जनरल को कम्पनी के अधीन सारे राज्य पर नियंत्रण का अधिकार था। किन्तु यह देखा गया कि इस कानून से काम नहीं चलता था क्योंकि कौंसिल के सदस्य गवर्नर जनरल के रास्ते में रोड़े अटकाते थे। बात यह है कि कौंसिल के सदस्यों का देश के अन्दर निजी व्यापार था, तथा वे हमेशा यह कोशिश करते थे कि अधिक से अधिक मुनाफा करें। अक्सर उनका निजी मुनाफा कम्पनी के मुनाफे के विरुद्ध जाता था। ऐसी हालत में कौंसिल के अन्दर बराबर एक घमासान मचा रहता था।

इसी कानून के मुताबिक जो जज बनाये गये थे, वे भी कौंसिल के कार्यों में हस्तक्षेप कर सकते थे। इसलिये एक तरह से यह कानून असफल रहा। वारेन हेस्टिंगस के विलायत जाने के पहले १७८४ में कमिष्ट पिट ने एक कानून बनाया जिसके अनुसार गवर्नर जनरल को पहले से अधिक अधिकार दिये गये और अब वे केवल विलायत के एक बोर्ड आफ कन्ट्रोल के अधीन रहे जो वहां से बैठकर भारतीय साम्राज्य तथा ब्रिटिश राज-नीति के रूख की धारा को नियंत्रित करने लगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आगे से सम्राट् द्वारा कुछ नियंत्रण

इसके बाद से यह भी तय हुआ कि गवर्नर जनरल इंगलिस्तान से भेजे हुए कोई ऊँचे घराने के एक व्यक्ति होंगे तथा सम्राट् उनकी तथा बोर्ड आफ कंट्रोल को नियुक्ति अपने मंत्रियों के सलाह से करेंगे। दूसरे कर्मचारियों की नियुक्ति तथा व्यापार सम्पूर्ण रूप से ईस्ट इंडिया कम्पनी पर छोड़ दिया गया, और यह तय हुआ कि ऊँचे ओहदों पर नियुक्तियों को सरकार से समर्थन करना पड़ेगा। सच तो यह है कि यहीं से भारत के शासन पर सीधे-सीधे ब्रिटिश सरकार का कड़ा नियंत्रण शुरू हो गया, यद्यपि माना यही जाता है कि १८५७ के बाद ब्रिटिश सरकार का नियंत्रण शुरू हुआ।

ड्यूक आफ कार्नवालिस

इस नयो पद्धति के अनुसार मार्किस आफ कार्नवालिस पहले गवर्नर जनरल हुए। यह वही सज्जन थे जिन्होंने यार्क शहर की रक्षा की थी। वे इंगलैंड से यह इरादा करके चले थे कि वे भारत में किसी प्रकार के झगड़े-बखेड़े में नहीं पड़ेंगे, किन्तु यहाँ आकर उन्होंने देखा कि कम्पनी जिस रवैये पर चल रही थी उसमें कूटनीति बेईमानी तथा समय-समय पर लड़ाई बिना किये काम नहीं चल सकता।

टीपू और कार्नवालिस

कार्नवालिस के समय की सबसे बड़ी घटना यह थी कि उन्हीं के जमाने में टीपू के साथ लड़ाई हुई और उसके फलस्वरूप अंगरेजों का साम्राज्य बढ़ा। १७८४ में अंगरेजों और टीपू के बीच एक सन्धि हुई थी। अब अंगरेजों के सामने यह प्रश्न था कि कैसे यह सन्धि टूटे जिससे कि टीपू पर आक्रमण करने का मौका मिले। टीपू हैदरअली की तरह वीर होने पर भी उतना कार्यकुशल नहीं था, नतीजा यह हुआ कि आस-पास के राज्यों के साथ उसका सम्बन्ध अच्छा न था। मराठों और निजाम दोनों से उसके कुछ सरहद सम्बन्धी झगड़े चले आ रहे थे। अंगरेज भला इस परिस्थिति से फायदा उठाने से कब चूकने वाले थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्नवालिस ने सबसे पहले टीपू के विरुद्ध निजाम के साथ एक समझौता किया। फिर कार्नवालिस ने पेशवा के दरबार से यह समझौता किया कि यदि पेशवा टीपू के विरुद्ध अंगरेजों को मदद दे, तो बाद को टीपू का सारा राज्य मराठों तथा अंगरेजों में बांट दिया जायगा। अब बहाना ढूँढ़ा जाने लगा कि किस तरह लड़ाई छेड़ दी जाय। त्रावंकोर से टीपू का जो झगड़ा चल रहा था, उसमें मदद देने के बहाने एक अंगरेजी फौज १७६० में जनरल मिडोज के अधीन भेजी गयी, पर इस फौज को बहुत बुरी हार खानी पड़ी और टीपू ने इसे खदेड़ते-खदेड़ते मद्रास तक पहुंचा दिया। इस बीच में निजाम तथा पेशवा की फौज अंगरेजों की मदद के लिये पहुंच चुकी थी। टीपू की फौज में विश्वासघात भी हुए। इस प्रकार तीन प्रबल शत्रु के मुकाबिले में टीपू अकेला कई महीनों तक लड़ता रहा, पर अन्त में उसको पीछे हटना पड़ा। इसके बाद कार्नवालिस ने मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टम पर आक्रमण किया। यहां सोमरपीठ नामक किले पर हमला करते समय जनरल मिडोज फिर हार गये। पर बकरे की मां कब तक खैर मनाती। २३ फरवरी १७६२ को एक सन्धि हुई जिसके अनुसार कम्पनी, निजाम और मराठों के बीच टीपू का आधा राज्य बांट दिया गया। टीपू को साथ ही यह वादा करना पड़ा कि वह हरजाने के लिये ३ करोड़ से ऊपर रुपये देगा। जिससे रुपया वसूल हो इसलिये टीपू को अपने दो बेटों को प्रतिभू के रूप में अंगरेजों के हवाले करना पड़ा।

दिल्ली दरबार से खुली बगावत

पहले ही बताया जा चुका है कि वारेन हेस्टिंगस ने आते ही दिल्ली दरबार में कर देना बन्द कर दिया था, पर यह न देना एलानिया नहीं था। कार्नवालिस ने साफ-साफ एलान कर दिया कि कम्पनी इस कर को देने की कोई जरूरत नहीं समझती।

कार्नवालिस के कारनामे

कार्नवालिस का भारतीय जीवन बहुत ही श्रमपूर्ण था। उसने इटन में छात्र अपने पुत्र को लिखा कि मेरा काम रोज व रोज बढ़ता जा रहा है, और तुम्हारे स्कूल के काम से कहीं ज्यादा काम मुझे करना पड़ता है, तुमको तो कभी कभी छुट्टी भी मिल जाती है, पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यहां तो कभी छुट्टी नसीब नहीं होती। जैसा कि दिखलाया जा चुका लार्ड कार्नवालिस का नैतिक मानदंड वारेन हेस्टिंगस या क्लाइव से कुछ ऊँचा नहीं था, पर फिर भी अंगरेज इतिहास लेखकों का यह ख्याल है कि उसने यहां के शासन यंत्र को शुद्ध किया। कार्नवालिस के सम्बन्ध में दूसरी बात यह है कि उन्होंने बंगाल में इस्तमरारी बन्दोबस्त का प्रबन्ध किया। इस बन्दोबस्त से बंगाल भर की तमाम जमींदारियों का स्वरूप बदल गया, और बहुत सी जमींदारियों को जिनका लगान बाकी था नीलाम कर दिया गया। इसका मतलब यह था कि जो सामन्तवर्ग बहुत जबरदस्त थे, तथा जिनसे अंगरेजों को डर था उनको कमजोर करते हुए भी एक नये मित्र वर्ग की सृष्टि की गयी। इसके साथ ही आम किसानों पर जो आये दिन बहुत मनमाने अत्याचार हुआ करते थे उनका अन्त इसलिये कर दिया गया कि एक तो जमींदारों के मनमानेपन के कारण जमीनें वीरान पड़ी थीं, और १७७० में एक भयंकर दुर्भिक्ष ने यह बता दिया था कि किसानों की हालत कितनी गिरी हुई थी।

पुराने सामन्तों में असन्तोष

इस प्रकार हम देखते हैं कि देश का प्राचीन सामन्तवर्ग अंगरेजों के विरुद्ध होता जा रहा था। इसी समय के लगभग अर्थात् १७८९ में फ्रांस में इतिहास प्रसिद्ध राज्य-क्रान्ति हुई थी। इस राज्य-क्रान्ति में सामन्तवर्ग का तख्ता तबाह कर उसकी जगह पर उदीयमान नवीन पूंजीपतिवर्ग का शासन कायम किया गया था। यही बात एक दूसरे तरीके से भारतवर्ष में अंगरेजों के आने से कुछ हद तक हुई, किन्तु यहां जो पलड़ा पलटा, तो वह देशी पूंजीपतिवर्ग के हक में नहीं पलटा जैसा कि वे चाहते थे। सिराजुद्दौला के समय आम तौर से व्यापारियों ने जो अंगरेजों का साथ दिया था, उससे इस वर्ग का देशी सामन्त से मुक्त होने की इच्छा सूचित होती है, पर कुछ हद तक उनको इस परिवर्तन से फायदा होने पर भी असली फायदा अंगरेज पूंजीपतियों और व्यापारियों का हुआ।

मार्क्विस वेलेसली

१७९८ में मार्किस वेलेसली जो बाद को वाटरलू के सम्बन्ध में प्रसिद्ध अङ्गरेज जेनरल ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के बड़े भाई थे भारत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के गवर्नर जेनरल होकर आये। यह महाशय ईटन में पढ़ते समय बहुत ही अच्छे छात्र थे। ३५ साल की उम्र में ही उनको यह जिम्मेदारी का पद मिल गया। यहाँ पर थोड़े दिन रहने के बाद ही वह यहाँ की सारी परिस्थिति समझ गये। इस समय फ्राँसीसियों का जोर भारतवर्ष में फिर बढ़ रहा था। बात यह है कि फ्राँसीसी अफसर देशी राजाओं की सेना में कवायद आदि कराते थे और इस प्रकार उनका प्रभाव उनकी संख्या से कहीं अधिक बढ़ गया था।

वेलेसली का नया ढोंग

वेलेसली ने देखा कि इस बात को दूर किये वगैर भारत में ब्रिटिश सरकार की जड़ें मजबूत नहीं हो सकतीं। तदनुसार एक नया ढोंग रचा गया, सबसीडीयरी ऐलायन्स याने आर्थिक सहायता पर फौजी मित्राता का एक नया ढंग चलाया। इसका अर्थ यह था कि प्रत्येक रियासत में एक अङ्गरेजी सेना रहे, उसका सेनापति अङ्गरेज हो, पर उसका सारा खर्च रियासत दे। इसका साफ मतलब एक तरह से यह था कि नाममात्र के लिए रियासतें इन सेनाओं पर नियन्त्रण रखने वाली होने पर भी असल में इस प्रकार राजाओं को अपने राज्य में ही ब्रिटिश सरकार का नजरबन्द बना दिया गया। वेलेसली ने निजाम को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह अपने यहाँ से फ्रेंच अफसरों को निकाल दे और इस नये प्रस्ताव को कबूल करे। अङ्गरेजी फौज के खर्च के बाबत निजाम से उसके राज्य का टुकड़ा ले लिया गया। यह व्यवस्था ऐसी ही थी जैसे किसी कैदी से यह कहा जाय कि वह अपने कैद का खर्चा दे। यह बात स्मरण रहे कि यही पहली भारतीय रियासत थी जो इस नयी तजवीज के अन्दर आयी। निजाम की राजभक्ति बहुत पुरानी है।

वेलेसली द्वारा साम्राज्य विस्तार

वेलेसली ने अपने इस नये जाल में एक के बाद एक कई रियासतों को फँसाया, मराठों और मुसलमानों को वश में किया, पेशवा को एक तरह से अपना नजरबन्द बना लिया, कर्नाटक, सूरत, फर्रुखाबाद के नवाबों, तंजोर के राजा, अवध के राजा वजीर के इलाके जब्त कर लिये गये। टीपू, सिन्धिया, होल्कर भोंसले को नष्ट कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया गया, और इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य में चार चाँद लगा दिये गये। कहना न होगा कि इन बातों को करने में वे ही सब उपाय काम में लाये गये, जो पहले के साम्राज्य नेताओं ने इस्तैमाल किया था। इन्हीं के समय में दिल्ली के बादशाह की जो नाममात्र की बादशाहत थी, वह जाती रही। फिर भी अङ्गरेजों को इतनी सफलता दिलाने पर भी इन लड़ाइयों का खर्च इतना अधिक पड़ा था कि कम्पनी तथा ब्रिटिश सरकार घबड़ा गयी, और १८०५ में वेलेसली वापस बुला लिया गया। अब अङ्गरेजों का साम्राज्य दिल्ली से कलकत्ता और कलकत्ता से कन्याकुमारी तक फैल चुका था। अङ्गरेजों के सबसे भयंकर तथा जोरदार शत्रु खतम कर दिये गये, या उनको करीब करीब कुचल दिया गया था। वेलेसली ने फ्रेंचों के लिए भारतवर्ष को बन्द-सा कर दिया था। साथ ही उसने इस देश में अङ्गरेजों की ताकत को सबसे बड़ी ताकत बना दी थी जिसके आगे न कोई देशी ताकत कोइ चीज थी न विदेशी ताकत।

दिल्ली विजय

दिल्ली पर अङ्गरेजों का कब्जा होना एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है, इसलिए उसका थोड़ा-सा विवरण देना जरूरी है। पहले ही बताया जा चुका है कि औरङ्गजेब की आँखें मुँदते ही मुगलों का राज्य बिखर गया। जिस समय का वर्णन हो रहा है, उस समय मराठों की ताकत इतनी बढ़ गयी थी कि दिल्ली का बादशाह एक तरह से उनका मातहत था। सम्राट् शाहआलम इस परिस्थिति से छुटकारा पाना चाहता था, इसलिये उसने अङ्गरेजों के झूठे वादों में फँसकर सिंधिया के विरुद्ध अङ्गरेजों का साथ दिया। सिन्धिया की सेना में जो घूस देकर बगावत तथा विश्वासघात पैदा किया गया था, उसमें शाहआलम का हाथ था। इसी विश्वासघात के कारण जेनरल लेक सिंधिया की फौज को हराने में समर्थ हुए। शाहआलम ने भी वही काम किया जो मीरजाफर ने किया था, फर्क केवल इतना था कि शाहआलम मित्र था और मीरजाफर नौकर था। यह एक आश्चर्य की बात है कि इसके लिए शाहआलम को देशद्रोही नहीं कहा गया। क्या देशद्रोहिता आम हो जाने से वह देशद्रोहिता नहीं रहती? १६ सितम्बर १८०३ को······अवश्य अंग्रेजों का आना भी कोई अच्छा नहीं था।

४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मराठे पीछे हटे

जनरल लेक ने कर्नल अक्टरलोनी नामक एक सज्जन को दिल्ली में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का रेसिडेण्ट बनाया। ये ही वहाँ की अङ्ग-रेजी सेना के सेनापति भी हुए। इस प्रकार मराठों का दिल्ली पर जो आधिपत्य (वास्तविक नाममात्र के लिये तो मुगल लोगों का अधि-पत्य) था, उसका अन्त हुआ, किन्तु १ नवम्बर १८०३ में लसवाड़ी नामक स्थान में जो संग्राम हुआ, उसमें अङ्गरेज हारते-हारते बचे, पर अन्त तक मराठों की पराजय हुई। दिसम्बर १८०३ में अङ्गरेजों के साथ भोंसले तथा सिन्धिया की सन्धि हुई, जिसमें अङ्गरेजों ने जिन प्रान्तों में अब तक कब्जा कर लिया था उन पर बाकायदा उनका शासन मान लिया। इसी प्रकार एक के बाद एक इलाका अङ्गरेजों के हाथ में चला गया।

देश में असन्तोष की वृद्धि

अङ्गरेजों ने अपने राज्य को इस प्रकार बढ़ा तो लिया, किन्तु जिस अन्याय तथा धोखे के जरिये से उन्होंने यह सब किया था, उसके फलस्वरूप भारतवर्ष का वह तबका जिसके हाथों में अब तक शासन सूत्र था बहुत नाराज होता गया। किसानों में भी असन्तोष फैला क्योंकि लगान में वृद्धि होती गई। मुगल सम्राटों ने अक्सर मौकों पर गोवध बन्द कर दिया था, पर पता नहीं अङ्गरेजों ने इसे क्यों जारी कर दिया। खेती में आमदनी कम हो जाने के कारण बहुत से किसान अब डकैत हो गये थे, पर इनका नेतृत्व मध्यवित्त तथा उच्च श्रेणी के वे लोग करते थे जो अब तक शासन तथा फौज के मालिक थे। देश में अराज्यकता बढ़ रही थी और लोग यह नहीं जानते थे कि आगे क्या होने वाला है। इस प्रकार देश में एक तरफ तो डाके बढ़ गये तथा दूसरी तरफ देश उस घटना की ओर जाने लगा जिसे सिपाही विद्रोह कहा गया है।

होलकर वाला काँटा भी दूर हुआ

अब भारतवर्ष में अङ्गरेजों का एक ही जबर्दस्त प्रतिद्वन्दी रह रह गया था, और वह था जसवन्तराव होल्कर। न मालूम कैसे जसवन्तराव पागल हो गया, और उसके दरबार में फूट हो गई। इन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दरबारियों में वह दल प्रबल निकला जो भीतर से अङ्गरेजों से मिला हुआ था। राज्य की बागडोर इन्हीं लोगों के हाथों में चली गयी, इस प्रकार अङ्गरेजों का राज्य बिल्कुल निष्कंटक हो गया। अब कम्पनी की ओर से दो चालें चली गयीं, एक तो होल्कर राज्य के भीतर की फूट को और बढ़ाया गया, और दूसरा यह कि बाहर से दूसरे देशी राज्यों में उसे बढ़ाया गया, इसी प्रकार सिन्धिया तथा बरार राज्य में भी खुफिया भेजकर जगह-जगह बगावत करा दी गई, और प्रत्येक स्थान में इस बगावत ने भयंकर रूप धारण किया।

सिख रियासतों के रुख

मुसलमान धर्मावलम्बी शासकों के आने के बाद जिन धार्मिक नेताओं की उत्पत्ति हुई, उनमें गुरु नानक भी थे। इन्होंने सरल सिख धर्म को चलाया। किन्तु इनके बाद जब सिखों पर कुछ कट्टर मुसलमान सूबेदार और बादशाहों ने जुल्म किया, तब यह धर्म अप्रत्याशित रूप से एक सामरिक धर्म हो गया, और इसके माननेवाले चूंकि विशेषकर पंजाब की लड़नेवाली जातियों में से थे, इसलिये जल्दी ही सिख जाति एक कट्टर सामरिक जाति में परिणत हो गयी। द्वितीय मराठा युद्ध के समय कुछ सिख रियासतों ने मराठों के विरुद्ध भी लड़ाई की थी।

रणजीतसिंह और अङ्गरेज

सिख राजा रणजीतसिंह अङ्गरेजों के साथ देने के दोषी थे, वे तो साथ देते थे, पर अङ्गरेज अपने वादों के मुताबिक उनका साथ नहीं देते थे। इस बात से रणजीतसिंह की आँख खुल गयी। २६ दिसम्बर १८०३ को डाइरेक्टरों को मार्किस वेलेसली का एक पत्र प्राप्त हुआ, जिससे यह मालूम होता है कि सतलज नदी के दक्षिण में सिखों का जो इलाका था, वे उन्हें कम्पनी को दे देने के लिये तैयार हैं। शर्त्त केवल इतनी थी कि जरूरत पड़ने पर अङ्गरेज और रणजीतसिंह में पारस्परिक सहायता का सम्बन्ध रहे। अङ्गरेजों को इस प्रकार सन्धि की जरूरत नहीं थी क्यों कि वे उन रियासतों के अधिकारियों के साथ अलग-अलग सन्धियां करने जा रहे थे। रणजीतसिंह ने पहले तो इन राजाओं के साथ विश्वासघात करना चाहा था, पर जब उन्होंने उससे अपना कुछ मतलब हल होते नहीं देखा, तो उन्होंने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहा कि जमुना तक बढ़कर इन राजाओं के इलाकों को जीत लिया जाय। साथ ही उन्होंने इसकी खबर अङ्गरेजों को दी कि वे जमुना तक अपना राज्य फैलाने जा रहे हैं अवश्य उन्होंने साथ ही यह कहला भेजा कि जिन इलाकों पर अङ्गरेजों का कब्जा हो चुका है, उनपर उन्हीं का कब्जा रहेगा। इस पर लार्ड मिण्टो ने जो उन दिनों भारत के गवर्नर जनरल थे मेटकाफ को रणजीतसिंह के पास भेजा, साथ ही उन्होंने अपने सेनापति को यह हुकुम दिया कि वह तैयार होकर कूच करे। मेटकाफ ने रणजीतसिंह को बहुतेरा समझाया कि फ्राँसीसी गण अफगानिस्तान की ओर से हमला करनेवाले हैं, पर रणजीतसिंह इसी बात पर अड़े रहे कि सतलज के दोनों किनारों की रियासतों पर अङ्गरेज उनकी सार्वभौम सत्ता मानते हैं कि नहीं। इस प्रश्न पर बात-चीत भंग हो गयी। फिर भी मेटकाफ रणजीतसिंह के दरबार में बने रहे।

मेस्टकाफ की कूट नीति

इस बीच में अङ्गरेजों ने पूरी तैयारी करली, और ज्योंही तैयारी पूरी हो गयी, त्योंही २२ दिसम्बर १८०८ में मेटकाफ ने महाराजा को इत्तला दिया कि जमुना और सतलज की बीच की रियासतें अङ्गरेजों के आधीन हैं। रही सतलज के इसपार की रियासतें जिनपर महाराज का अभी कब्जा नहीं हुआ, उन्हें भी छोड़ देना पड़ेगा। रणजीतसिंह को यह भी बतलाया गया कि कम्पनी का यह निश्चय अकाट्य है, और इस बात को मनवाने के लिए एक सेना भी तैयार है।

सन्धि या आत्मसमर्पण ?

यह एक तरह से युद्ध की घोषणा थी, पर फिर भी रणजीतसिंह कुछ पशोपेश में पड़े रहे, और २५ अप्रैल सन् १८०६ को एक सन्धि उनमें और अंगरेजों में हुई जिसके अनुसार सतलज के इस पार जिस टुकड़े पर रणजीतसिंह ने हाल में कब्जा जमाया था, वह उनसे ले लिया गया, सतलज और जमुना के बीच के उस टुकड़े के अलावा जितना भी इलाका महाराजा के अधीन था, वह उन्हीं का मान लिया गया, बाकी सब कम्पनी का रहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजों की दोमुंही नीति

इस बीच में सिखों और अफगानों में कुछ तनातनी के आसार गोचर हुए। बात यह है कि अंगरेजों ने महाराजा को यह कह कर भड़काया था कि यदि वे अफगानिस्तान पर हमला करें तो ब्रिटिश कम्पनी उन्हें पूरी मदद देगी। मजे की बात यह है कि इन्हीं दिनों एलफिनस्टन नामक एक अंगरेज एजेंट अफगानिस्तान को इस बात के लिये भड़का रहा था कि वह ईरान पर हमला कर दे।

साम्राज्य और बढ़ा

रणजीतसिंह के जीवन काल में पंजाब में अंगरेजों की दाल पूरी तरह नहीं गल सकी। अवश्य वे धीरे धीरे रणजीतसिंह के राज्य की जड़ खोदते रहे। हम संक्षेप में इस बीच में देख लें कि १८१४ से १८२३ तक जिस समय लार्ड हेस्टिंगस यहां के गवर्नर जनरल थे क्या हुआ। लार्ड हेस्टिंगस ने पहले तो नेपाल के साथ लड़ाई की। कई बार बुरी तरह हार खाने के बाद इन्होंने कूटनीति से नेपाल पर विजय पाई, और नेपाल का बहुत सा हिस्सा अंगरेजी साम्राज्य में मिला लिया गया। १८१७ में पिंडारियों के साथ कम्पनी का युद्ध हुआ, साथ ही मराठों के साथ भी युद्ध हुआ। अन्त तक अंगरेजों ने यहां भी विजय पाई। पेशवा का सारा राज्य साम्राज्य में मिला लिया गया, और भी बहुत से इलाके अंगरेजों के हाथ लगे। इस प्रकार वेलेसली और लार्ड हेस्टिंगस ने अंगरेजी साम्राज्य को बढ़ाते-बढ़ाते मुगल साम्राज्य के मुकाबिले में पहुंचा दिया।

१८२३ में परिस्थिति यह थी कि कन्या कुमारी से लेकर एक तरफ सिंधिया की सीमा से तथा सतलज तक अंगरेजी साम्राज्य फैल चुका था। इनमें से कुछ हिस्सा देशी राजाओं के अधीन था, किन्तु वे राजा अंगरेजों के अधीन थे। उस समय बर्मा में प्रबल प्रताप शाली वंश राज्य कर रहा था, वहां दाल अभी नहीं गली। १८३६ में पहला अफगान युद्ध हुआ। इधर अंगरेजों को कुछ विशेष सफलता नहीं मिली, और १८४१ में काबुल में जो ब्रिटिश फौज थी उसे लेने के देने पड़ गये। १८४३ में सिंधिया का राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। उधर १८३६ में रणजीतसिंह मर गये, तब अंगरेजों की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बन आयी। उन्होंने वहां की फूट को बढ़ाया, फिर भी चिलयानवाला के रणक्षेत्र में सिखों ने अंगरेजों के दांत खट्टे कर दिये। पर अंगरेजों की कूटनीति के कारण सिखों में फूट बढ़ती ही गयी, और अन्त तक उनकी हार हुई, और पंजाब साम्राज्य मिला लिया गया। बर्मा में भी इसी प्रकार युद्ध हुए, और १८५२ में वर्मा का दक्षिणी हिस्सा साम्राज्य में मिला लिया गया। १८५६ में अवध भी साम्राज्य में मिला लिया गया। नागपुर और झांसी में राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं था, इस बहाने वह भी मिला लिया गया।

इतना बड़ा साम्राज्य इतनी जल्दी कैसे ?

इस प्रकार कैसे अंगरेजों ने भारतवर्ष में अपना साम्राज्य फैलाया, उसकी मोटी-मोटी बातें सामने रख दी गयी। पलासी से लेकर गुजरात के युद्ध तक अंगरेजों ने किस प्रकार छल बल कौशल से भारतवर्ष को अपने कब्जे में किया यह स्पष्ट है। यह देख कर आश्चर्य अवश्य होता है कि इतने बड़े देश को अंगरेजों ने उस जमाने में जब कि यातायात के साधन बहुत कम थे कैसे इतना जल्दी जीता। इसका कारण यह था कि एक तो सदियों से जनता को सरकार में कोई दिलचस्पी नहीं रह गयो थी, दूसरा जो शासक थे, वे ब्रिटिश कूटनीति और रणनीति के सामने दुर्बल साबित हुए। भारतीय राजाओं की फौज सामन्तवादी जमाने के लिये भले ही अच्छी तथा योग्य रही है, पर ब्रिटिश की अपेक्षा कृत आधुनिक फौज तथा संगठन के मुकाबिले में वह कमजोर पड़ी। राजाओं के पास कोई अच्छा खुफिया विभाग भी नहीं था सिराज की तरह शासक को इसका कुछ भी पता नहीं था कि उसके इर्द गिर्द के मंत्री तथा सेनापति दुश्मन से मिल चुके हैं।

अभी देशभक्ति नहीं

हमारे यहां के उपन्यासकार, नाटककार तथा कवियों ने इस युग के तथा इसके पहले के युग के बहुत से भारतीय शासकों तथा अन्य लोगों पर देश भक्ति का सेहरा मढ़ दिया है, और उनके मुंह से बड़ी-बड़ी देशभक्ति की वाणी कहलायी है, पर यह सब मनगढंत है। इतिहास को इस प्रकार ढाल कर नवयुगोपयोगी बनाना कई दृष्टि से उचित और शुभफल उत्पादक कहा जा सकता है, पर यह इतिहास नहीं है। इन युगों में बड़े-बड़े ड़ने वाले थे, वे बहादुर तथा त्यागी भी थे, किन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह कहना कि वे देशभक्ति से परिचालित थे एक बहुत ही गलत बात होगी। हम मुगल युग में यह देखते हैं कि सिसोदिया वंश के सिरमौर राणा प्रतापसिंह ने यह प्रण किया था कि जब तक वे मेवाड़ को मुगलों से मुक्त न कर लेंगे, तब तक वे पत्तल में ही खायेंगे, इत्यादि इसी प्रकार हम टीपू सुल्तान को ऐसा ही प्रण करते पाते हैं, इससे ऐसे लोगों की बहादुरी पर बहुत श्रद्धा होती है, पर यह कहना कि उनकी लड़ाई भारत की लड़ाई थी, यह सत्य नहीं है। अभी अखिल भारतीय देशभक्ति का विकास नहीं हुआ था। लोग अपने छोटे-छोटे इलाकों, कुलों, गोत्रों तथा खानदानों की दृष्टि से सोचते थे। ऐसा कहना किसी अर्थ में उनका अपमान करना नहीं है। इन युगों में तो योरोप में भी देशभक्ति के विचार अच्छी तरह नहीं उदित हुए थे।

सब क्षुद्रस्वार्थ से परिचालित

यदि लोगों में किसी मामूली हद तक भी देश भक्ति उत्पन्न हो चुकी होती, तो हमें विश्वास है कि भारतवर्ष इतनी आसानी से ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं होता। मराठों में शिवाजी के बाद धीरे-धीरे पेशवा सिंधिया, होल्कर, गायकवाड़ ये चार राज घराने हो गये थे। इनमें यदि कुछ भी देशभक्ति होती, याने अखिल भारतीय देशभक्ति नहीं, मराठीपन लिये हुए देशभक्ति होती तो भी ये चार राज्य किसी न किसी सूरत में एक सामरिक तथा परराष्ट्र नीति की दृष्टि से एक बने रहते, कम से कम इनकी परराष्ट्र नीति कुछ नहीं तो अंगरेजों के मुकाबिले में एक होती, पर खुर्दबीन लेकर ढूँढने पर भी हम इनमें कोई ऐसा योग सूत्र नहीं पाते। इसी प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू शासकों के द्वारा शासित राज्यों में भी कोई एका नहीं था, न वे किसी ऐसी नीति का अनुसरण कर रहे थे, जिसे पैन हिन्दू या महासभाई कहा जा सके। यही हाल मुसलमान शासित राज्यों का भी था। हम जब इस सारे दृश्य को एक निगाह से देखते हैं तो हमें ऐसा ज्ञात होता है कि इनमें धर्म या देश के आधार पर कोई सार्वजनिक भावना थी। उस समय के सब राजा, नबाव, बादशाह एक प्रकार से केवल अपने क्षुद्र स्वार्थ वाले शोषक ही जंचते हैं। सम्भव है कि इसमें कहीं कोई व्यतिक्रम दिखलाई दे, पर यह व्यतिक्रम था न कि नियम। कई राजा अच्छे स्वभाव वाले तथा व्यक्तिगत रूप से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परोपकारी थे, पर इससे उनकी पद्धति के अन्तर्निहित चरित्र में कोई फर्क नहीं आता।

कम्पनी के लोग पतित, फिर भी...

अंगरेजों ने भारतवर्ष को इतनी आसानी से जीत लिया, इसका कारण यह है कि यहां के शासक तथा शासनयंत्र बिल्कुल लचर, निकम्मे तथा कमजोर थे। वे पतित भी थे। इसके साथ ही एक बात यह भी साफ कर देनी चाहिये नहीं तो गलतफहमी पैदा होने का डर है, वह यह है कि इन लोगों पर जिस शक्ति ने विजय पाई वह ईस्ट इंडिया कम्पनी भी कोई धर्मार्थ कम्पनी नहीं थी। उनके अपनी ही लेखों-पत्रों तथा पार्लियामेंट के सामने समय-समय पर आये हुए सबूतों से यह साबित है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी डाकुओं का एक गिरोह मात्र था। इसके सभी अफसर, कर्मचारी, छोटे से बड़े लेकर अहलकार अव्वल दर्जे के मक्कार, बेईमान तथा खूंखार थे। फिर भी उनमें एक बात थी जो भारत के राजाओं, नबावों, बादशाहों में नहीं मिलती।

एक उदाहरण

एक उदाहरण लिया जाय। जिस समय मुगल सम्राट शाहजहां की लड़की बीमार हुई थी, और उसका सफल इलाज करने के लिये एक अंगरेज डाक्टर से यह कहा गया कि वह इनाम मांगे तो उसने अपने लिये कुछ मांगने के बजाय सारी अंगरेज जाति के लिये कुछ हक मांग लिये। यह साबित है कि कम्पनी के बड़े से बड़े नौकरों ने उस युग में अपने निजि कारोबार को बढ़ाया, यहां तक कि अपनी जेबों में लाखों की रकमें घूस के रूप में डाली, फिर भी आम तौर से जहां भी कम्पनी के बुनियादी स्वार्थों की बात आयी, वहां उन्होंने न तो कम्पनी को धोखा ही दिया, और न उसके विरुद्ध आचरण ही किया। इसलिये यह मानना पड़ेगा कि सांगठनिक तथा नैतिक दृष्टि से कम्पनी के ये पतित नौकर हमारे राजाओं, नबाबों, वजीरों से अच्छे थे। कम्पनी के नौकरों ने बड़ी से बड़ी घूसखोरी की, पर उनमें कोई न तो मीर जाफर या दुर्लभ राय ही पैदा हुआ जो घूस खाकर कम्पनी के विरुद्ध लड़े, और न कोई ब्रिटिश सेना ही ऐसी निकली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो मीर जाफर तथा दुर्लभ राय की सेना की तरह दुश्मन से जाकर मिल गयी। यह एक कारण है जिसकी वजह से अंगरेजों का सितारा बराबर बुलन्दी पर चढ़ता गया।

अंगरेज़ों की यह खूबी क्यों ?

इससे यह निष्कर्ष निकालने की हरगिज आवश्यकता नहीं है कि नस्ल या जाति की दृष्टि से ही अंगरेजों में कोई खूबी थी। नहीं अंगरेजों में इस प्रकार की किसी खूबी की कल्पना करना गलत है। एक जमाना था जब उनके देश में भी धर्म के नाम पर इतने बड़े वैमनस्य पैदा हो जाते थे कि बाहर के कैथलिकों को देश पर आक्रमण करने के लिये मदद दी जाती थी, पर जिस समय अंगरेज यहां आये थे, उस समय उनमें पूंजीवाद का उदय हो रहा था, और साथ ही साथ देशभक्ति का भी उदय हुआ था। इसलिये अंगरेजों की यह विशेषता नस्ल की खूबी नहीं थी, बल्कि सामाजिक पद्धति की दृष्टि से उन्नत होने का परिणाम था।

उनकी उत्पादन पद्धति

अंगरेजों उत्पादन पद्धति उन्नततर थी। इसका सामरिक असर यह था कि उनके पास अस्त्र शस्त्र उन्नततर थे। फिर उनको यह भी एक सुविधा थी कि विदेश में आ जाने के कारण उनमें स्वतः कुछ नहीं तो अपनी रक्षा के ख्याल से एक एकता आ जाती थी। हजारों मील दूर अपरिचित देश के अज्ञात अधिवासियों में वे सब कुछ करते हुए भी एक बने रहते थे। उनमें एकता बोध इस तरह से भी पुष्ट हुआ था कि वे कई सौ वर्षों से एक ही सार्वभौम सत्ता के अधीन रहते आये थे।

भारतीय उद्योग-धंधे

हम इस स्थान पर संक्षेप में यह भी बतला देना चाहते हैं कि भारतीय उद्योग धंधों का कैसे नाश हुआ। बहुत प्राचीन समय से भारतीय वस्त्र तथा अन्य द्रव्य विदेशों में एक बड़े पैमाने पर भेजे जाते थे। ये माल मेक्स्को, अफ्रीका, जापान तक जाते थे। मध्य युग में भी भारतवर्ष का यह व्यापार कायम रहा, और यहां के मालों की मांग दूर-दूर के देशों में होती थी। सत्रहवीं शताब्दी में भारतवर्ष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के सूक्ष्म वस्त्र इंगलिस्तान में जाते थे, और इतने पसन्द किये जाते थे कि इंगलिस्तान का वस्त्र उनके सामने टिक नहीं पाता था।

भारतीय लूट से ब्रिटेन की उन्नति

जिस समय अंगरेजों के पैर भारत में जम गये, अर्थात् पलासी के विश्वासघात के बाद जब राष्ट्र की बागडोर उनके हाथ में आने लगी, तब भारतवर्ष और इंगलिस्तान का सम्बन्ध व्यापार का न रह कर बहुत कुछ लूट का सम्बन्ध हो गया। भारत की लूट से इंगलैंड को जो विराट धन मिलता गया, इसके कारण वहां विज्ञान तथा उद्योग धंधों में द्रुत उन्नति हुई। विलयम डिगबी के हिसाब के अनुसार पलासी के युद्ध याने १७५७ से लेकर वाटरलू के युद्ध याने १८१५ तक भारत से १५ अरब रुपया शुद्ध लूट के रूप में इंगलैंड पहुँचा। केवल मार्क्स ही नहीं कई विद्वान् लेखकों की राय में यदि यह लूट का धन इंगलैंड में नही पहुँचता तो वहां उद्योग-धंधों में इस प्रकार की उन्नति नहीं होती।

इंगलैण्ड में भारतीय लूट से औद्योगिक क्रान्ति

अमेरिकन लेखक ब्रूक ऐडम पर समाजवादी प्रवृत्ति का अभियोग नहीं लगाया जा सकता। उन्होंने लिखा है कि पलासी के बाद बङ्गाल की लूट से जो धन लन्दन में पहुंचने लगा, उससे फौरन असर पैदा हुए, क्योंकि सभी विद्वान इस बात को मानते हैं कि इङ्गलैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात १७७० से होता है। १७६० में शटल की उन्नति हुई तथा लकड़ी की जगह पर लोहा आदि गलाने में कोयले का स्तैमाल होने लगा। इसी प्रकार बराबर उन्नति होती गयी। ब्रूक ऐडम के अनुसार केवल आविष्कारों से कुछ न होता, वे वैज्ञानिकों के नोट बुकों में पड़े रहते। पर भारतवष की लूट से जो धन प्राप्त हुआ, उससे इन वैज्ञानिक आविष्कारों को कार्यरूप में परिणत करने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत की लूट के ही कारण इङ्गलैंड के उद्योग धन्धे सबसे बढ़ चढ़ कर हो गये, और इङ्गलैंड दुनिया का वर्कशाप हो गया।

जुलाहों पर अत्याचार

ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक व्यापारी कम्पनी थी, कम से कम उसकी उत्पति इसी रूप में हुई थी। उसका उद्देश्य तो यह था कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यहाँ का माल ले जाकर वहाँ बेचे, किन्तु कहना न होगा कि यह व्यापार अधिक नहीं पनप सकता था। जब दोनों तरफ से माल आते हैं तभी व्यापार हो सकता है। उस युग में इङ्गलैंड के पास कोई ऐसा माल नहीं था जो भारतवर्ष में बदले के सौदे के रूप में भेजा सकता। फिर भी कुछ दिनों तक यह व्यापार चलता रहा। यह ऐसे चलता था कि कड़े तथा भयंकर अत्याचारों के द्वारा जुलाहों से कपड़े वसूल किये जाते थे। जुलाहों को एक तरह से गुलाम बना दिया गया था क्योंकि उनको अब कम्पनी की तरफ से जबर्दस्ती काम करना पड़ता था। उनकी अब यह स्वतन्त्रता नहीं रह गई थी कि वे जिसको चाहे उसको माल बेचे। कम्पनी बढ़िया से बढ़िया कपड़े के लिये जो दाम देती थी उससे कहीं घटिया माल के लिए दूसरे योरोपीय देशों के लोग तथा अरब के सौदागर उससे अधिक दाम देने के लिए तैयार थे, फिर भी उनको मजबूरन कम्पनी के हाथ में ही माल बेचना पड़ता था। यह लूट नहीं तो और क्या थी? यदि कोई जुलाहा इसका विरोध करता था, या इन शर्तों को मानने से इन्कार करता था, तो उस पर जुर्माना किया जाता था। जुर्माना तो लोग खुशी खुशी देने के लिये तैयार थे बशर्ते कि इस प्रकार छुटकारा हो जाता क्योंकि जुर्माना देकर भी उनकी आय कम्पनी को माल बेचने से कहीं अधिक होती थी। पर उनको तो और भी सजायें दी जाती थीं। बहुतों ने तो इन बातों से घबड़ाकर अपना धन्धा ही छोड़ दिया। पर उन्हें धन्धा भी छोड़ने नहीं दिया जाता था। कहीं कहीं तो ऐसा भी हुकुम निकाल दिया गया कि जुलाहे बिना आज्ञा के शहर से बाहर न जायं जिससे वे कहीं भाग खड़े न हों। अधीनस्थ राजा नवाबों को यह हिदायत थी कि वे अपने यहाँ के जुलाहों को इस बात के लिए मजबूर करे कि वे सारा का सारा माल कम्पनी के हाथों में ही बेचे, और इधर उधर न बेचे।

१७६३ में तो बंगाल सरकार ने एक कानून ही बना दिया जिसमें यह हुकुम दिया गया कि यदि किसी मनुष्य के पास कम्पनी के कुछ रुपये बाकी है, और वह जुलाहा है, तो वह कम्पनी का काम नहीं छोड़ सकता। किसी दूसरे के लिए उससे काम देने लेने की मुमानियत थी। यदि कोई कारीगर पूरा काम नहीं करता था, तो उसको जेल भेज दिया जाता था, और उसका सब बना तथा कच्चा माल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब्त कर लिया जाता था। कपड़े का दाम नियत कर दिया जाता था, और इस दाम के नियत करने में इस बात का कोई ख्याल नहीं रखा जाता था कि आखिर इसमें जुलाहा को कुछ पड़ता भी पड़ता है या नहीं। जुर्माने करना, बेंत लगाना, तथा जबर्दस्ती कोई प्रतिज्ञा-पत्र लिखवालेना यह तो एक मामूली बात थी। कहीं जुलाहा चुराकर दूसरों को कपड़ा न बेच दे, इस बात की निगरानी रखने के लिए कम्पनी के गुमाश्ते मुकर्रर थे। ज्योंहीं गुमाश्ता देखता था कि थान पूरा हो रहा है, बस वह करघे से थान काटकर चल देता था कई जगह इन अत्याचारों से घबड़ाकर कहा जाता है कि जुलाहों ने अपने अंगूठे काट डाले कि न रहेगा बाँस और न बजेगी बांसुरी। जब अंगूठा ही नहीं रहेगा, तो बुनकारी के लिए कौन कहेगा।

इंगलैण्ड की आम जनता का शोषण

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं कि इस प्रकार से मिला हुआ माल बेचना भी अधिक दिनों तक व्यापारी दृष्टि से लाभ जनक नहीं हो सकता था। इंगलैण्ड की जनता की क्रयशक्ति भी बढ़ाना जरूरी था। स्मरण रहे कि भारतवर्ष की इस व्यापारी लूट से इंगलैंड की जनता को बहुत फायदा नहीं था, क्योंकि यहाँ से जो माल जाता था उसको सस्ता करने के बजाय अधिक से अधिक दामों पर बेचने की कोशिश की जाती थी। हाँ धन की एक बड़ी रकम भारतीय जनता तथा इङ्गलैंड को जनता की जेब से खिचकर इङ्गलैण्ड के पूंजीपतियों की जेब में इकट्ठी हो रही थी। पूंजीवाद का यह श्री गणेश था, यह उसका कटुतम रूप न था।

कम्पनी के लक्ष्य में परिवर्तन

अन्तिम रूप तो वही है जिसने अधीनस्थ देश से कच्चा माल आकर शासकों के देश में बने हुए माल का रूप धारण करे और वही माल फिर जाकर पराधीन देश में तथा कुछ हद तक अपने देश में बिके। यही साम्राज्यवाद का असली रूप था। वस्त्र व्यवसाय को ही लिया जाय। पहले कम्पनी का ध्येय यह था कि यहाँ के कपड़ों को सस्ते से सस्ते दामों पर प्राप्त कर विलायत में अधिक से अधिक दाम पर बेचा जाय, पर विलायत में कल कारखानों की उन्नति के साथ-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साथ साम्राज्यवाद का यह उद्देश्य हो गया कि यहाँ के वस्त्र व्यवसाय को खतम कर दिया जाय, और ब्रिटेन के कारखानों के वस्त्रों को यहाँ पर खपाया जाय। इसी प्रकार सभी क्षेत्र में हुआ। पूंजीवादी देशों का यह उद्देश्य है कि औपनिवेशिक देश खेतिहर मुल्कों के रूप में रहे।

और भी अंगरेज लूट के क्षेत्र में

इस सम्बन्ध में यह भी देख लिया जाय कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार कई सीढ़ियों से गुजरा। १८१३ में एक व्यापारी कानून बना जिसके अनुसार अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बजाय प्रत्येक व्यापारी को यह अधिकार हो गया कि वह भारतवर्ष में व्यापार कर सके। दूसरे शब्दों में इस कानून के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार सम्बन्धी एकाधिकार छिन गया। स्वाभाविक है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बाहर के दूसरे पूंजीपतियों ने जब देखा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी वाले माला माल हो रहे हैं तो उनकी भी जीभ में पानी आ गया, और वे यह चाहने लगे कि उनको भी लूट का कुछ हिस्सा मिले। इसलिये उन्होंने ब्रिटेन की पूंजीपति शासित सरकार पर दबाव डलवा कर यह कानून बनवा दिया। इस बात से भारतीयों की परिस्थिति में कोई फर्क नहीं आया, याने फर्क आया तो वह इतना था कि जिसे हम कह सकते हैं कि वे गरम तवे से चूल्हे के अन्दर चले गये। उनकी परिस्थिति वही शोषितों की परिस्थिति रही।

इसके साथ ही एक दूसरी नीति का सूत्रपात हुआ। वह नीति यह थी कि अब सरकारी तौर पर भारतीय उद्योग धन्धों का गला घोंटा जाना तय हुआ। अब तक पहले उल्लिखित व्यापार नीति थी, अर्थात् सस्ते से सस्ते दामों पर भारत में बना हुआ माल प्राप्त किया जाय, और उसे इङ्गलैण्ड में बेचा जाय, पर अब इङ्गलैण्ड के पूंजीपतियों का स्वार्थ केवल बीच की दलाली खाकर सन्तुष्ट नहीं रह सकता था। इस बीच में वहाँ के पूंजीवादी सौदागरी पूंजीवादी से औद्योगिक पूंजीवादी में परिणत हो चुके थे। इसके फलस्वरूप वे यह चाहने लगे कि इङ्गलैण्ड का बना हुआ अधिक से अधिक माल भारतवर्ष में भेजा जाय। और जिस प्रकार भी हो उसके सारे प्रतिद्वन्द्वियों को बाजार से निकाल बाहर किया जाय। नयी नीति के अनुसार ईस्ट इण्डिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कम्पनी का भारतीय जुलाहों से यह कहना था कि तुम लोग बुनना छोड़ दो, हमें कच्चा माल दे दो, हम तुम्हारे लिये कपड़ा बुनेंगे। यह नयी नीति बहुत मुश्किल से सफल हुई क्योंकि मशीनों के द्वारा बुने जाने पर भी शुरू-शुरू में जो कपड़े बने वे न तो दाम में और न सूक्ष्मता में किसी बात में भी जुलाहों के द्वारा बुने हुए वस्त्रों का मुकाबिला नहीं कर सकते थे। बहुत दिनों तक परिस्थिति यही रही। फिर तो सचमुच मशीन का बना हुआ माल अपने ही गुणों के कारण बाजार से अन्य माल को निर्वासित करने में सफल रहा।

भारतीय धंधों के विरुद्ध पार्लियामेंट की कमेटियाँ

भारतीय व्यापार को नष्ट कर उसके स्थान पर इंगलिस्तान की चीजों को चलाने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट की ओर से दो कमेटियां नियुक्त हुई। इन कमेटियों ने भारत से लौटे हुए खास-खास अंगरेजों की गवाहियाँ ली, और उन्होंने निम्नलिखित बातें तय कीं। ये बातें बड़ी महत्वपूर्ण हैं, और इनसे ब्रिटिश नीति की कलई खुल जाती है, इसलिए हम विस्तार के साथ उनको उद्धृत करेंगे। वे बातें यह थीं—

(१) भारतीयों कारीगरों पर जिस भी तरह हो दवाब डालकर उनके व्यापार के रहस्य का पता लगाया जाय, उदाहरणार्थ कैसे वे थानों को धोते हैं, किस प्रकार सुखाते हैं, तथा रँगते हैं इन सब बातों का पता अच्छी तरह लगाया जाय, और जब इनका पता लग जाय, तो उनको पूरी सूचना इङ्गलैण्ड के कारीगरों को दी जाय।

(२) माल के चालान के लिए महसूल सस्ता से सस्ता करने के लिए भारत में रेलों का विस्तार किया जाय।

(३) भारतीय बाजारों पर जिससे इङ्गलैण्ड के व्यापार का एकाधिपत्य रहे ब्रिटिश साम्राज्य को भारत में बढ़ाया जाय, और भारतवर्ष को इंगलैण्ड के आधीन रखा जाय।

(४) इङ्गलैण्ड का बना माल नाममात्र महसूल पर भारत भेजा जाय।

(५) इङ्गलैण्ड में आने वाले भारतीय माल पर इतना अधिक महसूल लगाया जाय कि इंगलैण्ड में भारत का बना माल इङ्गलैण्ड के माल से सस्ता न बिक सके।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(६) भारत में चुङ्गी को नीति ऐसो हो जिससे भारत का माल भारत में हो महंगा हो जाय, तथा भारत का कच्चा माल इंगलैण्ड में सस्ता पहुँच सके।

(७) अङ्गरेज कारीगरों तथा व्यापारियों को भारत में जाकर वहाँ के व्यापार का रहस्य पता लगाने के लिये आर्थिक सहायता तथा अन्य सुविधायें दी जायें।

सौदागरवाद से पूँजीवाद

उल्लिखित बातों से स्पष्ट है कि अब भारत में ब्रिटिश शासन के उद्देश्य में बहुत गम्भीर परिवर्त्तन हो गया। सच तो यह है कि वह सौदागरवाद से औद्योगिक पूँजीवाद में परिणत हो गया। कुछ भोले लोगों का यह ख्याल था और अब भी है कि ब्रिटिश पूँजीपतियों की असली नीति फ्री ट्रेड या स्वतंत्र व्यापार पद्धति है। किन्तु उद्धृत बातों से स्पष्ठ है कि जिस समय ब्रिटेन का उद्योग-धंधा शैशव अवस्था में था, उस समय उनकी नीति कुछ और ही थी। अपने देश के शिशु उद्योग-धंधे को अपने पैर पर खड़ा कर देने के लिये उन्होंने एक तरफ तो अपने बाजार को दूसरे देशों के विशेषकर भारत के उत्कृष्ट माल के लिये बन्द कर दिया, इसके लिये उन्होंने ऊँची से ऊँची चुंगी की दीवार खड़ी कर दी। दूसरी ओर उन्होंने भारत के उद्योग-धंधों को नीच से नीच उपायों से बन्द किया, यहां के व्यापार के रहस्यों का जबरदस्ती पता लगाया, यहां के लोगों पर अपने यहां के घटिया से माल को जबरदस्ती लादा।

औपनिवेशिक शोषण

यदि हम ब्रिटिश उद्योग-धंधों की उन्नति के कारणों की ओर दृष्टिपात करते हैं तो जैसा कि हम देख चुके हैं यहां की लूट से प्राप्त धन के ही कारण वहां के वैज्ञानिक आविष्कारों को मौका मिला, दूसरा जब इस प्रकार उन्हें मौका मिला और यंत्रों से माल तैयार होने लगे तो उनको भारत में बाजार मिला। यहां पर ब्रिटिश राज्य होने के कारण उन्हें कच्चे माल को लेने में तथा तैयार माल को खपाने में मदद मिली। यदि इंगलैंड के कारखानों में माल तैयार होने लगता,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर उसे भारत की तरह विस्तृत और वृद्धिशील बाजार नहीं मिलता, तो भी उसकी उन्नति एक हद तक ही होती। इस प्रकार भारतवर्ष के राज्य से ब्रिटिश पूँजीवाद को जन्म लेने में अर्थात् सौदागरी पूंजीवाद से औद्योगिक पूँजीबाद में परिणत होने में, साथ ही उस रूप में उन्नति करने में मदद मिली। औपनिवेशिक लूट की यही विशेषता है।

हर तरीके से दमन

१८३० में एक कमेटी इस बात पर जांच करने के लिये बैठायी गयी कि ऊपर दी गयी हिदायतों का कहां तक पालन हुआ और उनमें कहां तक सफलता प्राप्त हुई। कहना न होगा कि उन बातों पर बहुत ही जोर शोर से अमल हुआ था। भारत की तैयार चीजों पर ब्रिटेन में बराबर महसूल बढ़ता गया था। कई चीजों पर तो तीन हजार फी सदी महसूल लगाया गया था। इसके विपरीत भारत में विलायती माल बिना महसूल के या नाम मात्र महसूल के बिकता था। फिर विलायती माल को भारत में पहुँचाने के लिये हर तरह की सहूलियत दी जाती थी। कुछ ऐसे तरीके भी चलते थे जिनसे भारत का बना हुआ माल कुछ मामूली बहाना बनाकर जब्त कर लिया जाता था। कारीगर श्रेणी स्वभाव से बड़ी शांति प्रिय होती है, इस लिये जब उन्होंने देखा कि माल तैयार करने में तथा बेचने में तलाशी, गिरफ्तारी, कैद तक की नौबत आती है तो उन्होंने माल तैयार करना ही छोड़ दिया। फिर चुंगी का कुछ ठिकाना नहीं था। न मालूम कितने दफे कहां-कहां चुंगी देनी पड़ती थी।

सब धंधे नष्ट

कहना न होगा कि इंगलैंड की यह नीति सब तरह से सफल रही। क्यों न होती, जब राष्ट्र की बागडोर ही उनके हाथों में थी, और वे ही हमारे दंड मुंड के विधाता थे, तो फिर नीति को सफल होने में क्या कठिनाई थी। भारत में लोहे का, चीनी का, कागज का तथा जहाज बनाने का बड़ा अच्छा तथा समृद्ध व्यापार था। यहां के जहाज दूर-दूर के देशों में विकते थे। ये सब उद्योग-धंधे धीरे-धीरे उन्हीं तरीकों से नष्ट किये गये जिनसे भारतीय वस्त्र व्यवसाय नष्ट किया गया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विज्ञान में झूठा प्रचार

दिये गये विवरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार भारतीय साम्राज्य के विस्तार के साथ ब्रिटिश पूंजीवाद का भाग्य घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध था। तो उन तरीकों से भारतीय उद्योग-धंधों का नाश हुआ और ब्रिटिश उद्योग-धंधों का उदय हुआ। इन बातों को बताने के बजाय कैसी-कैसी झूठी बातें बीसियों वर्ष तक हमको बताया गया कि मैनचेस्टर तथा बर्मिंहम आदि स्थान की आबहवा ही में कुछ ऐसी बात है कि वहां के उद्योग-धंधों की उन्नति हुई, इत्यादि। विज्ञान के नाम से कैसी-कैसी झूठी बातें हमें ब्रिटिश तथा उनके पिट्ठू लेखकों ने बताया। बात यह है कि उनको भारत की आत्मा को हमेशा के लिये पतित कर देने के निमित्त इन मिथ्याओं की आवश्यकता थी।

: ६ :

१८५७ की महा क्रान्ति और उसका दमन

१७६४ का सैनिक विद्रोह

१८५६ के मार्च तक ब्रिटिश सत्ता भारत में अपने पूर्ण विकास को पहुँच चुकी थी। पर यह न समझा जाय कि इस बीच में जीते हुए राज्यों में कोई विद्रोह नहीं हुआ। पलासी के कुछ सालों के अन्दर १७६४ में बंगाल सेना में काफी व्यापक विद्रोह हुआ था। यह विद्रोह कुछ नये फौजी नियमों के विरुद्ध हुआ था। इन लोगों की मांग यह थी कि ये नियम बदल दिये जायँ। ये लोग पहले हथियार बन्द विद्रोह की तरफ नहीं गये, बल्कि इन्होंने एक तरह से हड़ताल कर दी थी। पर मेजर मनरो को जब उनके इस प्रतिवाद का पता लगा तो वे जल्दी से बांकीपुर से छपरा में पहुँच गये, और गोरे सैनिकों के साथ विद्रोही सैनिकों पर हमला कर दिया। फिर तो इन विद्रोहियों में से जो हाथ आये, उनको तोप के मुँह में उड़ा दिया गया। इस विद्रोह का इतिहास कप्तान क्रम नामक अंगरेज अफसर ने अपनी 'बंगाल आर्मी' नामक पुस्तक में बड़े गर्व के साथ लिखा है। सैनिकों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का क्या वक्तव्य यह था यह तो इतिहास को कभी पता ही नहीं लगेगा।

१७६५ का सिपाही विद्रोह

इसी प्रकार १७६५ में एक अन्य सिपाही विद्रोह का पता लगता है। इसकी कहानी पुराने कलकत्ता गजट के पृष्ठों में छिपी हुई है। उस जमाने में योरोप में नेपोलियन और अङ्गरेजों में युद्ध चल रहा था। अभी-अभी नेपोलियन रंगमंच में आये थे। उनके सामने फ्रेंच-प्रजातन्त्र के दुश्मनों की धज्जियाँ उड़तो जा रहीं थीं। ऐसे ही समय में ३ सितम्बर को बंगाल आर्मी के पन्द्रवें बटालियन को यह हुकुम दिया गया कि वह फौरन तम्बलूक रवाना हो जायं, वहाँ पर जहाज तैयार थे। उनको जहाज पर डचों के साथ लड़ने के लिए जाना था। बटालियन तम्बलूक तक तो चला गया, पर वहाँ जाकर उसने जहाज पर चढ़ने से इन्कार कर दिया। गोरे सेनापति ने यह आज्ञा दी कि यह बटालियन तोड़ दिया जाय, इसका झण्डा जला दिया जाय, सब सैनिकों का कोर्ट मार्शल किया जाय। कोर्ट मार्शल में यह तय हुआ कि विद्रोहियों के नेता रघुनाथसिंह, उमरावगिर, यूसुफखाँ आदि को तोप के मुँह में बाँध कर उड़ा दिया जाय। अन्य सिपाहियों को एक-एक करके बरख्वास्त कर दिया गया। तब से पन्द्रहवां बटालियन खतम कर दिया गया। सिटनकार ने कलकत्ता गजट के जो संक्षिप्त सार तैयार किये हैं उसी के दूसरे खण्ड में इस सिपाही विद्रोह का विवरण है।

वेल्लोर का विद्रोह

इसी प्रकार उन्नीसवीं सदी में १८५७ के पहले ही कई और सिपाही विद्रोहों का पता लगता है। १८०६ में बेलोर में मद्रास आर्मी में देशी सेना ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह ने इतना व्यापक रूप धारण किया कि इसी के कारण कहा जाता है लार्ड विलियम बेंटिक की नौकरी गयी। बाद को बेंटिक ने अपनी सफाई देते हुए कहा कि यह विद्रोह उनके कुशासन के विरुद्ध नहीं था। बल्कि वर्षों से मुसलमानों में जो विद्रोह को आग भड़क रही थी उसी का यह परिणाम था। पर यह बात गलत थी। जैसा कि लार्ड बेंटिक ने खुद ही १८०७ की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८ जनवरी के मिनिट में माना है, बाद को यह विद्रोह नन्दो दुर्ग, संकरी दुर्ग आदि जिन स्थानों में फैल गया, वहाँ फिर हिन्दू और मुसलमान का प्रश्न नहीं रहा। सभी धर्म के सैनिक एक होकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध उठ खड़े हुये थे।

सिपाही विद्रोह के दो साल पहले भी निजाम की फौज की तृतीय घुड़सवार सेना ने १८५५ के २१ सितम्बर को विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया। फौज के अध्यक्ष ब्रिगेडियर मैकेंझी के शरीर पर दस घाव आये, और वे किसी तरह जान लेकर भागे। विद्रोहियों ने उनका घर लूट लिया। इस विद्रोह के नेता भी मुसलमान थे। ❀

अरब में वहाबी आन्दोलन

अंगरेजी राज्य के विरुद्ध इस बीच में केवल सैनिक विद्रोह ही हुए यह बात नहीं। अन्य कई तरह के सार्वजानिक विद्रोह की चेष्टा हुई। इन विद्रोहों में वहाबियों का विद्रोह विशेष उल्लेख योग्य है। १८ वीं सदी में अरब में मुहम्मद अब्दुल वहाब के नेतृत्व में वहाबी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। अरब के नेजद शहर में उनका जन्म हुआ था। मक्का और मदीना में पढ़ने के बाद वे और आगे पढ़ने के लिये शाम चले गये। वहां पर उन्होंने एक तो धर्म के नाम पर होने वाले अनाचारों के विरुद्ध आवाज़ उठायी। दूसरा तुर्की शासन के विरुद्ध भी उन्होंने आन्दोलन किया। इस प्रकार वहाबी सम्प्रदाय एक सम्पूर्ण रूप से विद्रोही समूह था। यह सम्प्रदाय अरब के बाहर भी फैला।

सैयद अहमद वहाबी

सैयद अहमद नामक एक मुसलमान ने भारतवर्ष में वहाबी आन्दोलन का प्रचार किया। वे बरेली के रहने वाले थे। वे धर्म प्रचार करते हुए घूमने लगे, और हर जगह यह कहने लगे कि विदेशियों ने उनके पाक मज़हब पर हमला किया है, यदि इन्हें खतम नहीं किया गया तो मजहब की कुशल नहीं है।

❀ इन विद्रोहों का विवरण 'श्री निवारण चक्रवर्ती' के बंगला लेख से संकलित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीतू मियां

बंगाल के प्रसिद्ध पहलवान तीतू मियां अपने इर्द गिर्द के लोगों में एक सरकश व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे। बारासत जिला के हृदय-पुर में उनका घर था। जब जमींदारों में लड़ाई होती थी, तब तीतू मियां जिसकी तरफ हो जाते थे, उसी की जीत होती थी। इस प्रकार तीतू एक साधारण लड़य्या मात्र थे, पर उस जमाने में सभी सामन्त इसी प्रकार के होते थे, इस बात को जब हम याद रखेंगे तो उनके लिये केवल लड़य्या शब्द का प्रयोग अनुचित होगा। इसी प्रकार के एक झगड़े में तीतू मियां को एक बार जेल की हवा खानी पड़ी। जेल से निकल कर वे हज्ज करने गये, तो उनके साथ सैयद अहमद की भेंट हो गयी। बस फिर क्या था, वे लौट कर अंगरेजों के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार करने लगे।

वहाबिय का ब्रिटिश-विरोध

वहाबियों के भड़काने पर सरहदी जातियों ने बार-बार अंगरेजों पर हमला किया। अम्बाला की घाटी में अंगरेजों के साथ वहाबियों की एक लड़ाई हुई जिसमें न केवल सरहदी जाति के लोग थे बल्कि दक्षिण बंगाल के कुछ गरीब किसान भी उसमें भाग लेने के लिये गये थे।

किसान विद्रोह के उपादान

उधर बंगाल में तीतू मियां के नेतृत्व में जो आन्दोलन चला उसने अंगरेजों के विरोध के साथ-साथ किसान विद्रोह का रूप धारण किया। जब वहाबियों की संख्या बढ़ने लगी, और उनमें लोग धड़ा-धड़ भर्ती होने लगे, तो जमींदार चौकन्ने हो गये, और कुछ मुसलमान जमींदार तथा हिन्दू जमींदार इस बात पर इतने नाराज हुए कि उन्होंने इनको सजा देना चाहा। इन जमींदारों ने वहाबी किसानों पर एक विशेष कर लगाना चाहा। इस पर तीतू मियां के नेतृत्व में इच्छामति नदी के किनारे एक विद्रोह के होने का पता मिलता है।

शरीयतुल्ला और दूदू मियां

फरीदपुर में भी वहाबी नेता शरीयतुल्ला तथा उनके पुत्र दूदू मियां के नेतृत्व में एक विद्रोही गिरोह खड़ा हो गया था। इस गिरोह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का नाम 'फर्ज' था। तीतू मियां तथा शरीयतुल्ला के नेतृत्व में ये जो आन्दोलन हुए, उनने नील कर के विरुद्ध आन्दोलन को पुष्ट किया। कई जगह पर सरकारी फौजों और इन लोगों में खंड युद्ध हुए। कहा जाता है कि कुछ समय के लिये चौबीस परगना, नदिया और फरीदपुर पर इनका दबदबा इतना छा गया था कि इन स्थानों में अंगरेजी राज्य खतम सा हो गया था। इस आन्दोलन का विस्तृत इतिहास अभी लिखा नहीं गया है।

कारतूस में चर्बी से १८५७ का विद्रोह नहीं

इस प्रकार हम देखते हैं कि १८५७ में जो विद्रोह हुआ, वह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यह जो बतलाया जाता है कि १८५७ के सिपाही विद्रोह का कारण कारतूस में चर्बी या इस किस्म की कोई और बात थी बिल्कुल ही गलत है। १८५७ जैसी बड़ी घटना एक छोटी सी तथा तात्कालिक घटना के कारण नहीं हुआ करती। १९१४-१८ के युद्ध के लिये सेराजेवो में आर्कड्यूक फर्डिनेंस की हत्या को एक मात्र कारण समझना गलती है। इस घटना को अधिक से अधिक एक चिनगारी मात्र कहा जा सकता है जिससे पहले से जो बारूदखाना तैयार था उसमें आग लग गयी।

बहुत तरह के कारण

अंगरेजों ने पलासी के पहले ही जिस नीति का प्रवर्त्तन किया था, और जिसे उन्होंने बड़ी प्रचंडता के साथ जारी रखा था उसी का अन्तिम नतीजा १८५७ था। कम्पनी ने एक के बाद एक पुराने राजकुलों को खतम कर अपने में मिला लिया था, यहां के उद्योग-धंधों को जबरदस्ती कुचल डाल कर हजारों लोगों को या तो खेती करने पर मजबूर किया था, जब कि खेतों पर यों ही बहुत भारी बोझ था, या उन्हें मर जाने के लिये बाध्य किया था। उन्होंने मामूली डाकुओं की तरह राजघराने के खजाने को लूट कर उनके स्वामियों को दरदर का भिखारी बना दिया था, सैकड़ों सन्धिपत्रों को तोड़ डाला था। ऐसी हालत में यदि अंगरेजों के विरुद्ध एक विद्रोह हुआ तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेज और देशीराज्य

यह तो साफ है कि भारतवर्ष में अंगरेजी राज्य के विस्तार से जिस श्रेणी को सब से अधिक नुकसान पहुँचा था, वह भारत की पुरानी सामन्त श्रेणी थी। पहले तो अंगरेजों ने धड़ल्ले के साथ यह नीति चलायी कि अधिक से अधिक देशी राज्यों को खतम कर दिया जाय। ब्रिटिश शासन एक पूंजीवादी शासन था, इसलिये उसके लिये सामन्तवाद को खतम करना स्वाभाविक था, पर कुछ दिनों बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने यह अनुभव किया कि इन राज्यों को अपने अधीनस्थों के रूप में कायम रखना बहुत अच्छा रहेगा। तदनुसार कुछ राज्य रखे गये। कुछ राज्य तो बिल्कुल ब्रिटेन की ही सृष्टि है। जो पुराने राज्य भी थे उनको नये आधार पर स्थापित किया गया। उदाहरणार्थ हैदराबाद एक छोटा सा राज्य था, पर एक बार तो टीपू सुल्तान को हार से इसका विस्तार बढ़ा, दूसरी बार मराठों की हार के बाद इसका विस्तार हुआ। मैसूर तो अंगरेजों की ही सृष्टि है। यह टीपू के साथ युद्ध के बाद बना। काश्मीर को ईस्ट इंडिया की कम्पनी ने वर्त्तमान महाराज के पूर्व पुरुषों के हाथ बेचा था, फिर वह ब्रिटिश शासन में आ गया था, फिर एक बार वह एक देशी राज्य बना दिया गया अन्य राज्यों का भी इतिहास बहुत कुछ ऐसा ही है। इनमें से कुछ राज्य यह दावा कर सकते हैं कि वे बहुत पुराने हैं, पर अंगरेजों के द्वारा वे जीते गये और इसमें सन्देह नहीं कि अंगरेजों की दया पर ही उनका पृथक अस्तित्व बना रहा। जिस आशा से अंगरेजों ने इन राज्यों को बनाया था, वह सम्पूर्ण रूप से सफल रही क्योंकि जिस समय यह पुस्तक लिखी जा रही है उस समय भी ये देशी राज्य भारत में प्रतिक्रिया के सब से बड़े केन्द्र हैं, और इनमें नागरिक स्वाधीनता सब से कम है।

सामन्त तथा किसान दोनों नाराज

पुरानी सामन्त श्रेणी के अधिकांश रूप में नष्ट हो जाने के बाद ब्रिटिश शासन से उनका नाराज होना बहुत स्वाभाविक था। यहां के उद्योग-धंधों के नष्ट हो जाने से जो कारीगर श्रेणी का बोझ जमीन पर पड़ा, इससे कारीगरों की तो खैर दुर्दशा हुई ही, किसानों की हालत भी बिगड़ी, और आम तरह से सब का जीवन सम्बन्धी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानदंड घट गया। इस बात को किसी भी लेखक ने नहीं दिखलाया है, पर मैं यह समझता हूँ कि किसानों की हालत बिगड़ने का प्रत्यक्ष असर सैनिकों के मन पर पड़ा क्योंकि वे मुख्यतः किसान श्रेणी से ही आते हैं।

क्या १८५७ का विद्रोह जनविद्रोह था ?

फिर भी क्या १८५७ के विद्रोह को जनक्रान्ति कहना उचित होगा ? इसका उत्तर यह है कि इसे एक हद तक ही जनता की क्रान्ति कही जा सकती है, इसका यह कारण है कि यह केवल विशेष कर एक श्रेणी के हक में ही हुई थी। वह श्रेणी भारत की सामन्त श्रेणी थी। यह विद्रोह पूर्ण रूप से जनता के लिये इस माने में नहीं था क्योंकि इसका उद्देश्य जनराज्य कायम करना नहीं था। सही अर्थ में कोई भी विद्रोह जिसमें जनता अपने हाथों में शक्ति लेने के लिये विद्रोह नहीं कर रही है जन विद्रोह नहीं कहला सकता। जनता विद्रोह में भाग लेने से ही आवश्यक रूप से एक विद्रोह जन विद्रोह नहीं कहला सकता। १८५७ के विद्रोह में सामन्तों ने अपने सामन्तवादी स्थिर स्वार्थों के लिये जनता को जुझवाने की चेष्टा की थी, पर साथ ही यह भी बात है कि वे अपने मन में चाहे जो कुछ भी सोच कर चले हों यह किसी भी तरह नहीं कहा जा सकता कि यदि विद्रोह सफल होता और विदेशी साम्राज्यवादी निकाल दिये जाते तो पुरानी शासन पद्धति का ज्यों का त्यों पुनरुद्धार होता। नहीं, सफल विद्रोह के दौरान में जो जन शक्तियाँ उदभूद होतीं, वे आसानी से सोने नहीं चली जातीं। वे अपने सामन्तवादी पीडकों से कुछ न कुछ रियायतें हासिल कर लेतीं, और इस प्रकार यदि सामन्तवाद का पुनरुद्धार भी होता, तो वह बदले हुए रूप में आता, और वह रूप आवश्यक रूप से पहले का उग्र रूप न होता।❋

कुछ समाजवादी उपादन भी ?

१८५७ का विद्रोह दृश्यमान रूप से भारतीय सामन्तवाद के पुनरुद्धार के लिये होने पर भी, उस विद्रोह के अन्दर कैसे-कैसे क्रान्तिकारी उपादान थे, यह देखने लायक हैं। विद्रोहियों की ओर

❋देखो मेरी लिखी हुई 'अगस्त क्रान्ति और प्रति क्रान्ति'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से समय-समय पर जो घोषणायें निकलीं थी, उनमें से एक को हम उद्धृत करेंगे। उसे देखकर हमें दंग रह जाना पड़ता है कि उनके विचार यदि वैज्ञानिक तरह से समाजवादी नहीं थे, पर युग की दृष्टि से कितने क्रान्तिकारी थे। विद्रोहियों के द्वारा प्रचारित बरेली की घोषणा में यह बताया गया।

"ईश्वर की दी हुई वस्तुओं में सब को आजादी है। जिसने हमसे इन्हें अलग कर दिया है, क्या वह हमेशा हमको इससे अलग रख पायेगा? क्या ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध ऐसा ही होता रहेगा? नहीं, फिरंगियों ने अब इतना अत्याचार किया है कि अब उनका प्याला भर चुका है। वह अब हमारे धर्म को भी बिगाड़ने पर उतारू हैं। क्या ईश्वर की यह इच्छा है कि तुम इसे बैठे बैठे देखा करो। उठो ईश्वर ने अंगरेजों को निकाल बाहर करने के लिये जोश पैदा किया है। अतएव उठो। सभी भाई-भाई हैं। उनमें किसी तरह का प्रभेद नहीं रहेगा।"

जनता के विचार कैसे थे ?

अवश्य ही इन विचारों को सामन्तवादी श्रेणी के पुनरुद्धार के साथ सामंजस्य पूर्ण नहीं कहा जा सकता। इस घोषणा से यह पता लगता है कि जो कुछ भी जनता इस विद्रोह में आयी थी, वह किन विचारों को लेकर आयी थी। इस विद्रोह में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों शामिल थे। भारतवर्ष के इतिहास में १८५७ वह साल है जिसके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि इस समय तक अखिल भारतीय देश भक्ति का उदय होने लगा था। अंगरेजी राज्य को सौ बार कोसते हुए भी यह मानना पड़ेगा कि यह अखिल भारतीय एकता बोध एक जुए के अधीन रहने के कारण उत्पन्न हुई। जिस समय अंगरेज यहाँ आये थे, उस समय यहाँ इस प्रकार की देश भक्ति का कहीं पता नहीं था। अवश्य इसके साथ ही हम यह नहीं भूल सकते कि अंगरेजों के कूटनीति के ही कारण बाद के युग में भारतवर्ष के अधिकांश मुसलमानों में पाकिस्तानी देश भक्ति का उदय हुआ, जो सम्पूर्ण रूप से पहले उत्पन्न अखिल भारतीय देश भक्ति को आड़ा करके काट देती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्रोह के पांच कारण

पंडित सुन्दरलाल ने अपनी पुस्तक भारत में अंगरेजी राज्य में १८५७ की क्रान्ति के पांच मुख्य कारण गिनायें हैं—

(१) अवध के नबाव और अवध की प्रजा के साथ अत्याचार।

(२) डलहौसी की अपहरण नीति।

(३) दिल्ली सम्राट के साथ अंगरेजों का लगातार अनुचित व्यवहार।

(४) अन्तिम पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब के साथ कम्पनी का अन्याय।

(५) भारतवासियों को ईसाई बनाने की आकांक्षा, और भारतीय सेना में ईसाई मत प्रचार।

इन कारणों का विश्लेषण

कहना न होगा कि हमने १८५७ के जो कारण बतलाये हैं, उनमें ये आ जाते हैं। पंडित सुन्दरलाल के अनुसार १८५७ का विद्रोह सामन्त वर्ग का अपने शासनाधिकारों को फिर से वापस पाने के लिये एक विद्रोह मात्र था। हम दिखा चुके है कि यह विद्रोह यह सब तो था ही पर इससे भी कुछ अधिक था। पंडित सुन्दरलाल की दृष्टि से १८५७ का विद्रोह एक प्रतिक्रिया वादी तथा प्रतिक्रान्ति वादी प्रयास मात्र था। पर यह बात नहीं। यदि गदर के पंडित सुन्दरलाल के बताये हुए उद्देश्य सफल होते, अर्थात् दिल्ली के सम्राट अपनी गद्दी पर वापस जाते, दूसरे निकाले हुए राजे महाराजों को अपने-अपने राज्य वापस मिलते, तो यह तो निश्चय है कि भारतवर्ष की घड़ी का कांटा आगे की ओर न जाता। इसमें सन्देह नहीं कि भारत में अंगरेजों के आने से सामन्तशाही का झंडा बहुत कुछ नीचे झुक गया और भारतवर्ष में उस युग का प्रवर्त्तन हुआ जिसमें भारतीय पूंजीवाद की इसलिये साथ ही साथ मजदूर वर्ग की उत्पत्ति हुई। देश में धीरे-धीरे जिस यांत्रिक युग का प्रवेश हुआ, उससे यहां की उत्पादन पद्धति में एक क्रांन्ति पैदा हो गयी। इसके साथ ही इच्छा से हो या अनिच्छा से भारतवर्ष जो पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान तथा साहित्य के संस्पर्श में आ गया, उससे वह विश्व संस्कृति की बीच की धारा में आ गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोग विद्रोह को क्यों नहीं समझे

१८५७ के विद्रोह पर जिन लेखकों ने लिखा है वे समाज की वार्गिक नींव को न समझ पाने कारण एक तरफ तो उल्लास की हिलोरों में बह गये, और दूसरी तरफ उस पर गतानुगतिक तरीके से कुछ मन्तव्य करके रह गये। वे न तो उसके कारण को ही समझ सके न परिणाम को।

पट्टाभि का विश्लेषण

श्री पट्टाभि सीता रमैया ने १८५७ के विद्रोह के सम्बन्ध में लिखा है "निस्सन्देह गदर में धार्मिक उद्देश्य का रंग भी चढ़ा हुआ था, किन्तु दिल्ली के बादशाह नामधारी व्यक्ति जो कि अकबर और औरङ्गजेब के खानदान के थे, और पूना के पेशवा वे व्यक्ति थे जिनकी चारों ओर भारतीयों के राज्य प्रवर्त्तन करने की चेष्टा हुई। इससे स्पष्ट है कि गदर १७५७ के पलासी के युद्ध के बाद एक सदी तक जो कुछ अन्याय हुआ था, यह केवल उसी का नतीजा नहीं था, बल्कि मनुष्य के हृदय में जो एक स्वाभाविक इच्छा होती है कि हम अपने ही लोगों द्वारा शासित हों, और किसी अन्य के द्वारा नहीं, यह उसी इच्छा का परिणाम था।"

भारतीय शब्द का विश्लेषण

श्री पट्टाभि सीता रमैया जो इस बात पर बहुत लिख गये हैं कि भारतीयों का राज्य प्रवर्त्तन करना गदर का उद्देश्य था, यह केवल उसी माने में सच है जिस माने में जार निकोलस का राज्य रूसियों का राज्य था। भारतीय शब्द का क्या अर्थ है? भारतीय शब्द से राजाओं, नवाब, शोषकों को लिया जाय, या अर्द्धमुक्त या अर्द्धनग्न शोषितों को लिया जाय। स्पष्ट है कि इनके स्वार्थ परस्पर विरोधी है। इस मन्तव्य के साथ हम इस बात को साफ कर दें कि अंगरजों के रहने से न तो यहां के पुराने सामन्तवर्ग को फायदा था, और न न आम जनता को, जिन वर्गों को फायदा था उनका पहले ही उल्लेख किया जा चुका है।

१८५७ का विद्रोह साम्राज्यवाद विरोधी

केवल यह भी कह देना इस विद्रोह के चरित्र को स्पष्ट नहीं करता कि यह विद्रोह भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध था। इससे केवल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इतना ही साफ होता है कि यह विद्रोह जहाँ तक भी था अङ्गरेजों के विरुद्ध था, पर उसके अन्दर क्या क्या शक्तियाँ काम कर रहीं थीं, उनके क्या उद्देश्य थे, किस प्रकार लोग परस्पर विरोधी उद्देश्य को लेकर भी चल रहे थे, ये बातें उक्त व्याख्या से स्पष्ट नहीं होती। केवल जातिगत (Racial) दृष्टि से इतनी बड़ी ऐतिहासिक घटना की व्याख्या करने चलना गुमराह कुन है। यह तो स्पष्ट है कि इस विद्रोह का उद्देश्य अङ्गरेजों को निकाल बाहर करना था, इस दृष्टि से यह विद्रोह साम्राज्यवाद विरोधी था, पर यह इससे कुछ अधिक भी था। पहले के दिये हुए उदाहरण की पुनरावृत्ति करते हुए कहा जाय कि जार निकोलस की राज्यपद्धति को रूसी राज्य या रूसियों का राज्य कहा जा सकता है, पर क्या इतना कह देने से यह बात साफ होती है कि लेनिन ने तथा उनके दल ने उसके विरुद्ध विद्रोह का झण्डा क्यों बुलन्द किया ?

ईसाइयत और साम्राज्यवाद

यह एक बहुत ही मार्के की बात है कि अङ्गरेजों के द्वारा लोगों को ईसाई बनाने की चेष्टा भी विद्रोह के प्रवर्त्तक कारणों में हुई। यह बात सही है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा उसके कर्मचारियों की ओर से ईसाई बनाने की चेष्टा बड़े पैमाने पर हुई। पर यह न समझा जाय कि ईसाई बनाने में उनकी जो दिलचस्पी थी वह किसी भी अर्थ में आध्यात्मिक थी। क्लाइव, हेस्टिंगस, वेलेसली, डलहौजी ये लोग कितने अच्छे ईसाई थे, तथा इनके कृत्यों से किस प्रकार ईसाई धर्म में चार चाँद लगे, यह तो हम देख चुके। पर फिर भी ईसाई बनाने में इनकी जो दिलचस्पी थी, वह राजनैतिक थी। बात यह है कि जो ईसाई बन जाता था, उस पर अङ्गरेजों का शुरू शुरू में अधिक विश्वास इसलिए रहता था कि ईसाई बनने के कारण ही वह अपने पहले के समाज से अलग हो जाता था, अपने समाज में वापस जाने के उसके द्वार करीब करीब-करीब बन्द हो जाते थे, ऐसी हालत में इसके सिवा कोई चारा नहीं रहता था कि वह अङ्गरेजों की तरफदारी करे। यह सुख की बात है कि ब्रिटिश शासकों की यह कूटनीति एक हद तक ही सफल रही, और बाद के ईसाइयों ने अपने को बहुत कुछ भारतीय समझा। यदि अङ्गरेज विजेता जिनको ईसाई बनाते जाते,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनके साथ शादी ब्याह करते जाते, तो परिस्थिति कुछ दूसरी होती, पर वे नस्ली रूप से काले ईसाइयों को अपने से हीन समझते थे, इसी का परिणाम यह हुआ कि भारत के ईसाई धीरे-धीरे इस बात ताड़ गये कि धर्म से एक होने पर भी अङ्गरेज उन्हें हीन समझते हैं, इसलिये वे मजबूरन काले भाइयों की तरफ मुखातिब हुए। इस कारण प्रारम्भ में ईसाई राष्ट्रीयता विरोधी होने पर भी बाद को वे राष्ट्रीयतावादी होने लगे।

कारतूस में चरबीवाले कारण का विश्लेषण

रहा कारतूस में चर्बी के प्रयोग की बात। इसका प्रवर्त्तन इसलिये नहीं किया गया था कि हिन्दुओं या मुसलमानों का धर्म बिगाड़ा जाय, बल्कि इसका उद्देश्य कारतूसों की क्रिया शीलता बढ़ाना था जो कि सम्पूर्ण रूप से एक अधार्मिक कारण था। फिर भी लोगों को यह कह कर विद्रोहियों के नेता भड़का सके कि इन कारतूसों का उद्देश्य धर्म बिगाड़ना है तथा इसके पीछे ईसाई धर्म के प्रति अङ्गरेजों का पक्षपात है। यदि कोई जन समूह कोई मिथ्या बात से भड़क जाय या भड़काया जा सके, तो इतिहास लेखक का केवल इतना ही काम नहीं है कि वह यह कह कर आगे बढ़ जाय कि अमुक बात झूठी थी, बल्कि वह इस बात का भी उद्घाटन करे कि क्यों एक विशेष मौके पर एक विशेष झूठ इतना बड़ा काम कर गया।

विनाशात्मक विचार अधिक

उस समय के विद्रोहियों में जो भावना थी, उनमें रचनात्मक विचारों से कहीं अधिक विदेशी शासन को उखाड़ फैंकने की इच्छा थी। यही एक भावना थी जिस पर सभी विद्रोही शक्तियाँ एकमत थीं। वे धर्म के नाम पर कौम के नाम पर इसलिए उठे थे कि इन्हीं नारों से उनका उठना आसान था, तथा इसी प्रकार उन्हें व्यापक से व्यापक सहानुभूति मिलने की आशा थी। विद्रोहियों में इस सम्बन्ध में एकमत होते हुए भी आगे के चित्र के सम्बन्ध में इतना मतभेद था कि ऐसा मालूम होता है कि यदि यह विद्रोह अन्त तक सफल रहा तो कदाचित जोर का गृह युद्ध होता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाना साहब

इस विद्रोह के सबसे बड़े नेता पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब धुन्धुपन्त थे। इनका उद्देश्य क्या था यह समझना कठिन नहीं है। नाना साहब एकाएक विद्रोही हो गये, या जन्म से बागी थे ऐसी कोई बात नहीं। उन्होंने पहले अपनी पेंशन प्राप्त करने के लिए अजीमुल्ला नामक एक व्यक्ति को इंगलैंड भेजा था। पर जब इसमें उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई, तभी उन्होंने दूसरा रास्ता ढूंढ़ा।

अजीमुल्ला और रंगोजी

जिन दिनों अजीमुल्ला अपने प्रभु की ओर से इंगलैंड गये हुए थे, उन्हीं दिनों सतारा के सिंहासनच्युत राजा की ओर से रंगोजी नामक एक व्यक्ति भी इंगलैंड गया हुआ था। इन दोनों की आपस में बात चीत हुई, और योजना बनी। अजीमुल्ला इंगलैंड के बाद योरोप के अन्य देशों में घूमते रहे, और वे अङ्गरेजों की ताकत साथ ही अङ्गरेजों के दुश्मनों की थाह लेते रहे। इसका कोई प्रमाणिक विवरण प्राप्त नहीं है कि अजीमुल्ला को विदेशों में कैसी क्या सफलता मिली। पर उस समय आम तौर से भारतवर्ष में लोग यह कहते थे कि अजीमुल्ला ने रूस के साथ कोई सन्धि कर ली है। यदि इस बात में कुछ भी सचाई हो, याने इतनी भी सचाई हो कि अजीमुल्ला ने इस प्रकार की चेष्टा की थी, तो अजीमुल्ला भारतवर्ष के प्रथम अन्तराष्ट्रीय विचार के क्रान्तिकारी हो जाते हैं।

विद्रोह का संगठन

जब रंगोजी और अजीमुल्ला भारतवर्ष में लौट आये, तो रंगोजी दक्षिण के राजाओं को संगठित करने लगे, और इधर अजीमुल्ला बिठूर में बैठ कर अपने दूत दौड़ा रहे थे। वर्षों तक यह काम चलता रहा, पर अंगरेजों को इसका कुछ पता नहीं लगा। नाना साहब के दूत उत्तर से दक्षिण तक सारे भारत में संगठन करते फिर रहे थे। सब राजाओं को संदेश दिये जा रहे थे। इन संदेशों में नरेशों को यह सलाह दी जा रही थी कि वे आगामी युद्ध में शरीक हों।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहादुरशाह तथा अन्य सामन्त शामिल

सम्राट बहादुरशाह उन दिनों भारत के नाम मात्र बादशाह थे। उन्होंने अपनी बेगम जीनत महल के साथ इस योजना में पूर्ण सहयोग दिया। इसी जमाने में अवध अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया। अवध कोई अंगरेजों का बागी राज्य नहीं था, बल्कि अंगरेजों के साथ देने वालों राज्यों में उसकी गिनती थी। इसलिये जब इस राज्य को भी साम्राज्य में मिला लिया गया, तो वे राजे और नबाव जो अब तक हिचकिचा रहे थे कि इस विद्रोह में साथ देना चाहिये कि नहीं आकर इसमें सम्मिलित हो गये।

संगठन परिपक्व

कहा जाता है कि जब विद्रोह के लिये कहा गया तो हजारों हिन्दू तथा मुसलमान सिपाहियों ने क्रमशः गंगाजल और कुरान हाथ में लेकर अंगरेजों के विरुद्ध विद्रोह में शिरकत करने का वचन दिया। चूंकि इस संगठन के नेता तथा कर्त्ता धर्त्ता राजा तथा नबाव थे इस लिये इसमें धन की कमी नहीं हुई। सभी बातें अत्यन्त गुप्त तरीके से होती थी, और विद्रोहियों के एक गिरोह की बात दूसरे गिरोह को मालूम नहीं हो पाती थी। विद्रोह के संगठन कर्त्ता तथा दूत फकीर तथा साधु का भेष पहन कर इधर से उधर दौड़ रहे थे। विद्रोह के पांच प्रधान केन्द्र थे—बिठूर, दिल्ली, लखनऊ, कलकत्ता, सतारा। सब तैयारी हो चुकी थी। अब उसमें अन्तिम स्पर्श देने के लिये १८५७ के मार्च के प्रारम्भ में नाना साहब तीर्थयात्रा के बहाने बिठूर से निकले। वे दिल्ली में गये, और अनेक स्थानों का दौरा करते हुए बिठूर वापस आ गये। इस दौरे में वे जिन लोगों से मिले, उसके विवरण से ज्ञात होता है कि विद्रोह का चरित्र क्या था। वे दिल्ली के बादशाह और राजाओं से तो मिले ही, इसके अतिरिक्त वे हर छावनी में जाकर हिन्दुस्तानी सिपाहियों से भी मिले।

कमल का फूल तथा चपाती

इस विद्रोह में कमल का फूल तथा चपाती को एक विशेष प्रतीक वादी महत्व प्राप्त हुआ था। कमल का फूल फौजों में तथा चपाती गांव के चौकीदारों में घूमायी जाती थी। इस प्रकार इन चीजों को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घुमाने का मतलब यह था कि पलटन या ग्राम विद्रोह के लिये तैयार है। नाना साहब ने अपनी कथित तीर्थयात्रा के दौरान में ही ३१ मई १८५७ के दिन को विद्रोह के लिये नियत किया था।

दमदम की चिनगारी

इधर घटनायें अपनी ही गति से चली रही थी। कलकत्ता के पास दमदम में १८५३ में नयी किस्म के कारतूस चलाये गये। अब तक कारतूस हाथों से अलग किये जाते थे, पर अब इन नये कारतूसों को दांतों से कांट कर अलग करना पड़ता था। एक दिन दमदम का एक ब्राह्मण सिपाही लोटा लेकर जा रहा था कि एक मेहतर ने उससे यह कहा कि लाओ लोटा मुझे लाओ। इस पर ब्राह्मण ने हिन्दू प्रथा के अनुसार लाटा देने से इनकार किया। तब मेहतर ने कहा—'अब जातिपांति का भला क्या घंमड करते हो? तुम्हारा यह सब ढकोसला तो खतम हो चुका क्योंकि जल्दी ही तुम्हें अपने दांतों से गौ का मांस तथा सूअर की चर्बी काटनी पड़ेगी। नये कारतूसों में यही तो चीज लगती है।'

३१-मई तक रुकना कठिन

बात-बात में यह बात छावनी भर में फैल गयी। कहना न होगा कि इससे बड़ा कोहराम मच गया, और जांच पड़ताल करने पर बैरकपुर के कारखानों के कारतूसों से इस खबर की तसदीक हो गयी। यह बात सारे हिन्दुस्तान में फैल गयी और अब विद्रोह नेताओं के लिये फौजियों को ३१ मई तक रोक रखना कठिन हो गया। इस स्थान पर यह बात बता दी जाय कि यद्यपि सैकड़ों अंगरेज अफसरों ने इस बात का प्रतिवाद किया है कि कारतूसों में निषिध चर्बिया नहीं लगती थीं, पर फिर भी सर जॉन आदि लेखकों ने इस बात को माना है। अवश्य जैसा कि हम पहले ही लिख चुके है इस प्रकार की चर्बियों के व्यवहार का उद्देश्य लोगों को वे धरम करना शायद नहीं था।

कारतूस न बरतने पर सजा

जब सरकार को यह मालूम हुआ कि फौजों में इस प्रकार का असंतोष बढ़ रहा है, तब सरकार की ओर यह कहा गया कि इन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारतूसों में ये चीजें नहीं है, फिर भी जब कई जगह के फौजियों ने इसे बरतने से इनकार किया, तो पूरी फौज को ही सजा दी गयी।

बहरमपुर की फौज में असन्तोष

विद्रोह का प्रारम्भ जिस प्रकार हुआ, वह यों है सन् ५७ की फरवरी में बहरमपुर की १६ नम्बर की पलटन को कुछ नये ढंग के कारतूस दिये गये, पर फौज ने इसे लेने से इंकार किया। तब कर्नल मिचेल ने इनको बुरा भला कहा, और कहा कि कही हुई बातें झूठी हैं। इस पर भी फौज ने उनकी बात नहीं मानी। फौजियों ने विद्रोह तो नहीं किया, किंतु उन्होंने ऐसा रुख अख्तियार किया कि अंगरेज अफसर ने यह निश्चय किया कि इनको सजा दी जाय। पर फौज में जिस एका का प्रदर्शन हुआ था, उससे अफसर को भय था कि कहीं लेने के देने नहीं पड़ जायँ क्योंकि सब से पास वाली गोरी फौज रंगून में थी, इसलिए अंगरेज अफसर सजा देने की इच्छा को कार्य रूप में परिणत न कर सका।

मंगल पांडे

२६ मार्च रविवार शाम को जेनरल हिपरसी ने अपना आखिरी व्याख्यान दिया था। सब अफसर विश्राम कर रहे थे। इतने में एक भारतीय सार्जेण्ट ने आकर सार्जेण्ट मेजर ध्यूसन को खबर दी कि मंगल पांडे नामक एक सिपाही हाथ में भरी हुई एक बन्दूक लेकर सिपाहियों से विद्रोह करने के लिए कह रहा है। इस पर सार्जेण्ट मेजर ध्यूसन वहाँ पहुँचे, और उन्होंने पास के तमाम सिपाहियों को हुकुम दिया कि मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लो। अजीब परिस्थिति थी। उधर मंगल पांडे सिपाहियों को विद्रोह करने के लिए कह रहा था, इधर सार्जेण्ट ध्यूसन मंगल पांडे को गिरफ्तार करने के लिए कह रहे थे। सिपाही न इनकी सुन रहे थे, न उनकी। इतने में मंगल पांडे ने अपनी बन्दूक उठायी। ठांय ठांय, और सार्जेण्ट मेजर वहीं पर ढेर हो गये। हेनरी गिसर्वट के विवरण से ज्ञात होता है कि मंगल पांडे ने तलवार से ध्यूसन को काट डाला गोली से नहीं मारा। जो कुछ भी हो मंगल पांडे ने सार्जेण्ट ध्यूसन तथा लेफ्टिनेंट बाग इन दो अफसरों को खतम कर दिया। खबर पाकर जेनरल हिपरसी कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरों के साथ आये। जब मंगल पांडे ने यह देखा कि ऐसी परिस्थिति है तो उसने अपने ही ऊपर गोली चलायी, पर गिरफ्तार कर लिया गया, और ८ अप्रैल को उसे फाँसी दे दी गयी।

मंगल पांडे की फाँसी के बाद सरकार के कान खड़े हो गये, और उन्होंने अधिक सावधानी अखतियार की, साथ ही साथ सख्ती भी बढ़ गयी। ३४ नम्बर के एक सूबेदार को इस कारण फाँसी दे दी गयी कि उसके यहाँ विद्रोहियों की सभा हुआ करती थी।

९ मई की घटना

९ मई शनिवार की घटना है। मेरठ की तीसरी देशी घुड़सवार पलटन के ८५ आदमियों को नये कारतूस दिये गये, पर उन्होंने इसे लेने से इंकार कर दिया। इस पर उन्हें लम्बी लम्बी सजायें सुना दी गयीं। सारी फौज के सामने इनकी वर्दियाँ उतरवा ली गयीं और इनको हथकड़ियाँ तथा बेड़ियाँ पहना दी गयीं। जिस समय इन ८५ आदमियों के पैरों में बेड़ियाँ ठोकी जा रहीं थीं, और जेनरल हेविट खड़े खड़े इस दृश्य को देख रहे थे, इतने में से ८५ में से किसी सिपाही ने दुहाई माँगी और पास ही खड़े हिन्दुस्तानी फौज की ओर देखा, पर हिन्दुस्तानी फौज न हिल रही थी न डुल रही थी, पत्थर की मूर्तियों की तरह खड़ी थी। दुहाई की आवाज आकाश में गूंजकर विलीन हो गयीं, और केवल बेड़ी ठोंकने की आवाज सुनाई पड़ने लगीं। पहले एक ही ने दुहाई माँगी थी, पर धीरे धीरे कइयों ने दुहाई माँगी, पर वहाँ उनकी पुकारों को सुनने वाला कोई नहीं था। बेड़ियाँ पहनाने के बाद सिपाही कैदखाने में भेज दिये गये। कोई नयी बात नहीं हुई। सब सिपाही अपनी छावनी में लौट गये। सिपाहियों का जी तो चाहता था कि फौरन विद्रोह कर दें, पर उनके नेताओं का हुकुम था कि ३१ मई तक ठहरा जाय, तदनुसार वे ठहर गये। इसलिए वे दिल पर पत्थर रखकर चुप बने रहे।

१० मई को जेल तोड़ी गई

यह घटना सबेरे हुई थी, पर शाम को जब सिपाही बाहर घूमने गये तो मेरठ की स्त्रियों ने इनको बहुत बुरा भला कहा, और शर्मिन्दा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया। इस पर रात को सैनिकों की सभा हुई जिसमें यह तय हुआ कि वे ३१ मई तक नहीं ठहर सकते। १० मई को विद्रोही सिपाहियों ने जेलों में जाकर अपने साथियों को छुड़ा लिया।

विद्रोही दिल्ली रवाना

सारे शहर में इतना जोश फैला हुआ था कि जहां भी अंगरेज मिले लोग उन पर टूट पड़े। अंगरेजों के बंगलों में आग लगा दी गयी और रात तक मेरठ का सब काम खतम कर ये लोग दिल्ली रवाना हो गये। कहना न होगा कि इस प्रकार समय से पहले विद्रोह होने पर विद्रोह की सफलता में संदेह पड़ गया, फिर भी मेरठ में जिस काम का प्रारम्भ हुआ वह भारत भर में फैल गया।

दिल्ली की फौज भी बागी

दिल्ली में कर्नल रिपले को इस बात का पता लगते ही वे ५४ नम्बर की हिन्दुस्तानी पलटन को लेकर आगे बढ़े, पर बागी फौज के साथ भेंट होते ही दोनों फौजें मिल गयी, और कर्नल रिपले को उसी समय खतम कर दिया गया। अब लाल किले पर भी सिपाहियों का कब्जा हो गया। बागी भारतीय अफसरों ने जाकर बहादुरशाह को सलामी दी। इस पर बूढ़े बादशाह ने कहा कि उनके पास कोई खजाना नहीं है और वे फौजों को तनख्वाह नहीं दे सकते, इस पर बागी सिपाहियों ने कहा—आप इसकी परवाह न करें, भारत का सारा अंगरेजी खजाना आप ही का है। दिल्ली के अन्दर इस समय जहां भी जो अङ्गरेज मिला उसकी हत्या कर डाली गयी।

दिल्ली के मेगजीन की रक्षा

६ गोरे दिल्ली की मेगजीन की रक्षा कर रहे थे। इस मेगजीन में लड़ाई का बहुत सा सामान इकट्ठा था। लेफटिनेंट बिलोबी जो इनका कप्तान था देखने में तो एक अधेड़ उम्र का सीधा-सादा व्यक्ति था, पर वह समझता था कि यदि ये अस्त्र-शस्त्र बागियों के हाथ लग गये, तो उसका क्या नतीजा होगा। उसको अब भारतीय सिपाहियों पर विश्वास नहीं रह गया था, इसलिये उसने ब्रिगेडियर ग्रेब से कहा कि जो भी गोरे मिल सकें, वे हमें दिये जाय, किन्तु उसे एक भी गोरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं मिला। फिर भी वह निराश नहीं हुआ, उसने फाटकों पर ऐसी चीजें रख दीं जिनसे वे बन्द हो जाय, और सुविधा जनक स्थानों पर दस तोपें रख दी। थोड़ी ही देर में बागी आये, और भारत सम्राट के नाम पर यह कहने लगे कि मेगजिन पर हमारा कब्जा हो जाने दो, पर विलोबी ने कब्जा देने से इनकार किया। विलोबी ने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि जब तक इस मेगजिन को बचाया जा सकता है बचाया जाय, पर जब देखा जायगा कि यह बच नहीं सकती, तो उसे उड़ा दिया जाय और उसके साथ खुद भी उड़ जाया जाय! अन्त में यही परिस्थिति आयी, और कंडेक्टर स्कैली नामक गोरे ने बारूद खाने में पलीता लगाने की इजाजत मांगी। चुपचाप यह अनुरोध मान लिया गया।

Satish Chandra Misra.

अन्य विवरण

O, Atal Bahari Nagar,
UNNAO.

स्मरण रहे कि ऊपर जो विवरण दिया गया कि वह अङ्गरेजों का दिया हुआ विवरण है। दूसरा विवरण यह है कि बाहर से आग लगा दी गयी थी। कुछ भी हो ये अंगरेज अर्थात् लेफटिनेंट जार्ज विलोबी, फारेस्ट, रेनर, बकले, शा, स्कली, क्रो तथा स्टुअर्ट वहीं पर वीर गति को प्राप्त हुए, किन्तु इसके साथ ही बताते हैं कि आस पास जमा ३ सौ हिन्दुस्तानी भी उड़ गये। कहते हैं कि जिस समय मेगजिन के बारूद खाने में आग लगी उस समय इतने जोर का धमाका हुआ कि दिल्ली शहर कांप उठा, और एक साथ एक हजार तोपों के दागने की आवाज हुई। हेनरी गिलबर्ट लिखता है कि इस धड़ाके के बाद ये अङ्गरेज सब के सब नहीं मरे, और उनमें से सात जिन्दा बच कर उस जलते हुए खड़हर से बाहर निकलने में समर्थ हुए। धड़ाके के बाद जब स्कलो भागने की कोशिश कर रहा था, तो वह एक भारतीय सिपाही की गोली से मारा गया। विलोबी, फारेस्ट, रेनर, बकले, शा तथा स्टुअर्ट मेगजीन के बाहर जीवत निकल आये यद्यपि उनके शरीर अधिकांश रूप में झुलस गये थे। विलोबी और फारेस्ट मेन गारदों से जाकर मिल गये। फारेस्ट, रेनर, बकले, शा तथा स्टुअर्ट मेरठ में जीवित अवस्था में पहुंचे, और उन्हें बाद को विक्टोरिया क्रास मिला। इनका नेता विलोबी इतना भाग्य शाली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं रहा, और जिस समय वह लुढ़कते पुढ़कते मेरठ जा रहा था उस समय उसको किसी ने रास्ते में मार डाला।

३१ मई तक विद्रोह पूर्णाङ्ग

इस प्रकार १६ मई तक दिल्ली पर अंगरेजों का कब्जा एक दम से खतम हो गया। इस बात के सामरिक तथा राजनैतिक महत्व से नैतिक महत्व कहीं अधिक पड़ा, क्योंकि दिल्ली का अधीश्वर ही भारत का अधीश्वर समझा जाता था। इस प्रकार दिल्ली पर अधिकार तो हो गया और सारे भारत पर उसका नैतिक असर भी पड़ा, पर समय से पहले विद्रोह आरम्भ हो जाने के कारण कुछ भारतीय पलटने उधेड़ बुन में पड़ गयी। फिर भी मोटे तौर पर ११ मई से ३१ मई तक सभी जगह की पलटनें बागी हो गयीं। और जहां-जहां बगावत हुई, वहां-वहां अंगरेजों का राज्य खतम हो गया।

और भी फौजी विद्रोह

१० मई को बुलन्द शहर के छावनी में विद्रोह का प्रचार करते हुए एक ब्राह्मण को फाँसी की सजा हो गयी, और उसको अलीगढ़ में फाँसी दे दी गयी। इस पर वहाँ की फौज के लोग निदिष्ट तारीख की बात भूल गये और रात हो को विद्रोह हो गया, अंगरेजों के झंडे की जगह बहादुरशाह का झण्डा फहराने लगा। इसी प्रकार २३ को मैनपुरी में विद्रोह हुआ। देखा देखी एक तरफ से दूसरी तरफ संयुक्त प्रान्त के सारे जिलों में फौजी विद्रोह हो गया।

जेनरल नील के अत्याचार

य खबरें गवर्नर जेनरल लार्ड कैनिंग तक पहुँच चुकी थी, और वे बम्बई, मद्रास, रंगून से एक बड़ी सेना एकत्र करने में लगे हुये थे। जेनरल नील विद्रोह को दबाने के लिए एक प्रकांड सेना लेकर बनारस पहुंचे। बनारस तो अंगरेजों के हाथ में था, फिर भी इधर-उधर विद्रोह तो हो ही चुका था। इनको दबाने के लिये ऐसे अकथनीय अत्याचार हुए जिनके सामने नादिरशाह और चगेंजखां के अत्याचार भी फीके पड़ जाते हैं। अंगरेज लेखकों के लेखों से ही ये अत्याचार सिद्ध हैं। गांवों में आग लगा दी गयी। और गांव वालों को भागने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं दिया गया। सैकड़ों निरीह ग्राम वासी पेड़ों पर लटका कर मार डाले गये। बनारस विजय समाप्त कर जनरल नील ११ जून को इलाहाबाद पहुंचे। १७ को उन्होंने विद्रोहियों के केन्द्र खुशरु बाग पर हमला किया और जीत लिया। यहां भी वही कत्ले आम हुआ जिसका मुकाबिला इतिहास में बहुत कम है। कुछ अबोध बच्चों को इसलिये पेड़ों से लटका दिया कि वे बादशाही हरे झंडे को लेकर खेल रहे थे। आम के पेड़ों को फांसी को जगह पर इस्तमाल किया गया, लोग हाथी पर चढ़ा कर उसमें लटका दिये जाते थे, फिर हाथोहटा लिया जाता था। दर्शकों तथा राह चलने वालों को पकड़ कर फांसियां दी गयी।

कानपुर का विद्रोह

इसके बाद कानपुर की ओर अंगरेजों की दृष्टि गयी। २२ मई को ही नाना साहब वहां पहुंच चुके थे। सर ह्यू हिलर ने नाना साहब को खजाना सौंप दिया था। नाना साहब ने उस पर अपना विश्वस्त पहरा लगा दिया। ४ जून रात १२ बजे कानपुर की छावनी में इशारे के तौर पर तीन गोलियां दागी गयीं, तुरन्त सैकड़ों सवार और हजारों पैदल मैदान में निकल आये। ब्रिटिश झंडे की जगह पर हरे झंडे लहराने लगे। ६ जून को किले का अवरोध शुरू हो गया। २० दिन तक गोला बारी होती रही। नाना साहब को आस पास के जमींदारों तथा धनियों से रसद वगैरह की सहायता मिलती थी। १५ जून को किले पर सफेद झंडा गड़ा हुआ दिखाई पड़ा। १६ तारीख को बात चीत शुरू हुई, किले के सब अंगरेजों ने आत्म समर्पण कर दिया। १७ को किले पर हरा झंडा पहरा दिया गया। इस बीच में शहर में तथा जनता में खबर फैली कि किस प्रकार इलाहाबाद तथा बनारस में विद्रोहियों का दमन हो रहा है। इस पर जो अंगरेज किले से निकाले जाकर बाहर जा रहे थे, उनकी परिस्थिति खराब हो गयी। किसी सिपाही ने अंगरेजों के कर्नल पर गोली चला दी। बस मार काट शुरू हो गयी। स्त्रियों और बच्चों के अलावा केवल ४ अंगरेज बचे। ये वे अंगरेज थे जो किसी तरह बच कर भाग गये।

नाना साहब पेशवा की गद्दी पर

कहना न होगा कि यह हत्याकांड अनुचित रहा, क्योंकि जिनको रक्षा का वचन दिया जा चुका था, उनको मारना उचित नहीं था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर भी यह मानना ही पड़ेगा कि इस प्रकार वचन भंग कर मारने के लिये उत्तेजना यथेष्ट से अधिक थी। २८ जून को नाना साहब ने एक दरबार किया जिससे सम्राट बहादुरशाह को १०१ तोपों की तथा नाना साहब को २१ तोपों की सलामी दी गयी। १ लाख रुपया फौज में बांटा गया। नाना साहब पहली जुलाई को पेशवा की गद्दी पर बैठे।

रानी लक्ष्मीबाई

१८५७ के विद्रोह के सम्बन्ध में लिखते हुए रानी लक्ष्मीबाई को भूलना असम्भव है। इसलिये थोड़ा विस्तार के साथ हम उनका विवरण यहां पर देंगे। १३ मार्च १८५४ को झांसी की रियासत अंगरेजी राज्य में मिला ली गयी थी। गंगाधर राव की विधवा रानी लक्ष्मीबाई ने अपने शिशु पुत्र की ओर से इस पर आपत्ति की, किन्तु कोई सुनाई नहीं हुई। जब १८५७ में देश में आम विद्रोह फैला, तो उस समय ४ जून को हवलदार गुरुबक्ससिंह ने मैगजिन और खजाने पर कब्जा कर लिया। ७ जून को किले की भारतीय सेना भी बागी हो गयी, और सब अंगरेज मार डाले गये। रानी स्वयं नेत्री बनी, और वह अपने शिशु पुत्र की वली की हैसियत से गद्दी पर बैठी। बाद को जब विद्रोह दबा दिया गया तो यह इलाका भी जीत लिया गया। रानी लक्ष्मीबाई शत्रु की फोज से लड़ती हुई मारी गयी। रानी लक्ष्मीबाई की उम्र २० साल के लगभग थी। लक्ष्मीबाई के उदाहरण ने भारतीयों विशेष कर भारतीय नारियों को बहुत अनुप्राणित किया है। बाद को सुभाष बाबू के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज के अन्तर्गत स्त्रियों की फौज बनी, तो उसका नाम लक्ष्मीबाई रेजिमेन्ट रखा गया।

विद्रोह का अन्य ब्यारा

लखनऊ में ३० मई की रात को छावनी की तोप छूटी। ३१ मई की शाम तक करीब-करीब सभी भारतीय पलटनें बागी हो गयी। ब्यौरे में न जाकर इतना ही बताना यथेष्ट है कि इसी प्रकार और जगहों पर भी सफल विद्रोह हुए। पर विद्रोह बहुत कुछ दिल्ली संयुक्त प्रान्त मध्य प्रान्त तथा विहार तक सीमित रहे। यद्यपि दमदम में ही विद्रोह का सूत्रपात हुआ था, फिर भी बंगाल का इसमें कोई हिस्सा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं रहा। बंगाल सम्पूर्ण रूप से ब्रिटिश का हो चुका था। बहुत से बंगालियों ने इस विद्रोह में सरकार की मदद की। उत्तर भारत में बसे हुए कुछ बंगालियों के पूर्व पुरुष ऐसे ही लोग थे और इसी विद्रोह के दबाने के सिलसिले में आ बसे।

गुर्खे तथा सिख विद्रोह के विरुद्ध

इस विद्रोह में गुरुखों तथा सिखों ने सरकार का साथ दिया। यों तो देखने में यह आश्चर्य की बात मालूम होती है कि सिख सब से पीछे गुलाम हुए पर वे इतने गुलाम हो गये कि जो लोग इनसे पहले गुलाम हो गये थे उनसे भी अधिक गुलाम निकले, पर ध्यान से देखने पर यह कोई बहुत आश्चर्य की बात नहीं मालूम होगी। उस समय सिखों और अन्य भारतीयों में किसी सामान्य बंधन की उत्पत्ति नहीं हुई थी। फिर भी जिस समय सिख लड़ रहे थे, उस समय इधर के लोग जाकर अंगरेजों की तरफ से उनसे लड़े थे। फिर सिखों को यह समझाया गया था कि बहादुरशाह के राज्य से उन्हें कोई फायदा नहीं पहुंच सकता क्योंकि दिल्ली के बादशाह तो हमेशा सिखों का दमन करते रहे हैं, इसलिये उन्हें चाहिये कि अंगरेजों की सहायता से अपने पुराने दुश्मनों का बदला निकाले। कहना न होगा कि कई मुगल सम्राटों ने सिखों के साथ बड़ा सख्ती का बर्त्ताव किया था, इसमें सन्देह नहीं, पर सिख इस मौके पर दिल्ली के बादशाह की मदद न कर अपनी मदद तो कर ही सकते थे। उन्होंने ऐसा नहीं किया, इस कारण यह कहना पड़ता है कि सिख सरदार कायर तथा सुस्त निकले।

पंजाब और १८५७

जिस समय सम्राट बहादुरशाह के दूत सिख राजाओं के निकट नये राज्य की सूचना लेकर पहुँचे, उस समय सिख राजाओं ने उनको मरवा डाला। पंजाब की जनता का बहुत सा रुपया सरकारी कर्ज के रूप में सरकार के खजाने में जा चुका था। यदि विद्रोह होता तो ये रुपये डूब जाते। इस प्रकार कुछ तो भेदनीति, और कुछ आर्थिक कारणों से पंजाब में विद्रोह नहीं हुआ, पर भी विद्रोह होता, किन्तु मेरठ का समाचार पाते ही मियाँ मीर पलटन के अध्यक्ष रावर्ट मांट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुमरी ने वहाँ के देशी सिपाहियों के हथियार धरवा लिये। यदि ऐसा न किया गया होता तो पंजाब हाथ से निकल जाता। विद्रोह में पंजाब के शामिल होने का मतलब भारतवर्ष की भूमि से ब्रिटिश झण्डे का उठ जाना होता।

दिल्ली के विद्रोही

दिल्ली में विद्रोह बहुत आसानी से नहीं दबा। दिल्ली पर विद्रोहियों का कब्जा हो जाने के बाद वहाँ इस बात की काफी तैयारी की जाने लगी कि बाहर से हमला हो तो उसका किस प्रकार मुकाबिला किया जायगा। सम्राट की ओर से यह बराबर विश्वास दिलाया जाता था कि हिन्दुओं और मुसलमानों के साथ एक सा व्यवहार होगा। हम यह भी देखते हैं कि इस मौके पर आजादी का नारा भी दिया गया था। दिल्ली का नगर पहले तो सम्पूर्ण रूप से सुरक्षित था, पर अंगरेजों ने दिल्ली के पश्चिम में पहाड़ी नामक स्थान पर कब्जा कर लिया, किन्तु दोनों तरफ से युद्ध स्थगित रहा। अंगरेजों की तरफ से युद्ध इस कारण स्थगित रहा कि अभी उनके पास कम शक्ति थी, पर विद्रोही क्यों चुप रहे यह एक आश्चर्य की बात है। पर नहीं, यह बात आश्चर्य जनक नहीं है। जो लोग विद्रोह का नेतृत्व कर रहे थे, वे आम तौर से एक सड़ेगले वर्ग के थे, इसी कारण सामयिक रूप से विद्रोह करने पर भी उनमें आगे बढ़कर काम करने की बुद्धि नहीं थी। उनकी क्रिया शीलता एक हद तक ही जा सकती थी।

पंजाब से अंगरेजों को मदद

जो नयी सेना बगावत कर के दिल्ली आती थी, वह एक बार जाकर अङ्गरेजी सेना पर जरूर हमला करती थी। पर २३ जून को अङ्गरेजों के मोर्चे पर जबर्दस्त हमला हुआ। करीब ११ बजे विद्रोहियों ने यह हमला शुरू किया, किन्तु वे विजयी न हो सके, क्योंकि कम्पनी की तरफ पंजाब से एक नयी फौज आ गई। फिर एक बार हमें कहना पड़ता है कि यदि सिखों ने इस समय अङ्गरेजों का साथ न दिया होता तो भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त हो जाता।

नेताओं में सुस्ती और उसका कारण

९ जुलाई को सम्राट की सेना ने अङ्गरेजों पर हमला कर दिया, जिसमें अङ्गरेजों को नीचा देखना पड़ा। यह हार अङ्गरेजों को इतनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खली कि उन्होंने शिविर में लौटकर अपने ही कुछ हिन्दुस्तानी नौकरों को मार डाला। १४ जुलाई को भी अङ्गरेजों की हार रही हमें यह देखकर आश्चर्य होता है कि पहला आक्रमण तो जो कुछ हुआ सो हुआ पर बाद को लोगों में कुछ कम शक्ति नहीं रह गयी। न उनमें आपस में कोई सम्बन्ध था। यह स्वाभाविक था क्योंकि जो विद्रोहियों के नेता थे, उनके दिमाग में कोई रचनात्मक या साधारण कार्यक्रम नहीं था। यदि उनकी स्थानीय मांग पूरी हो गयी, तो भी विद्रोह में उनकी दिलचस्पी खमत हो गयी, और यदि स्थानीय मांग पूरी नहीं हो सकी, तो भी वे विद्रोह के प्रति उदासीन हो गये। जहां तक अङ्गरेजों को निकालने का सम्बन्ध था, वहाँ तक तो सब एकमत थे, इसलिए यह काम बहुत कुछ धड़ल्ले से हुआ, किन्तु मालूम होता है कि इस उद्देश्य को प्राप्त कर लेने के बाद विद्रोहियों के नेताओं में कोई जोश बाकी नहीं रहा। अङ्गरेजों के विरोध के लिए बहादुरशाह का प्रतीक ठीक था, पर स्वयं इस प्रतीक में कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे किसी को किसी में जोश होता। बहादुरशाह को विद्रोही नेताओं ने इस कारण मजबूरी से ही स्वीकार किया होगा कि उन्हीं के प्रतीक को लेकर आम विद्रोह किया जा सकता था। नाना साहब या लक्ष्मीबाई इस विद्रोह के प्रतीक नहीं हो सकते थे। बहादुरशाह का प्रतीक अस्पष्ट तरीके से सब सामन्तों को उनकी मुराद दे देता था। पर फिर भी जैसा कि बताया गया कि वह अपने में कुछ भी नहीं था। सदियों तक मुगल भारतवर्ष में राज्य करते रहे। कुछ उच्चवर्ग के हिन्दू तथा मुसलमानों के अतिरिक्त आम हिन्दू मुसलमानों को इस शासन से कोई फायदा नहीं था।

संगठन में शैथिल्य

जनता का जोश न होते हुए भी कई बार राज्य शक्ति सफल रूप से परिवर्तित हो गयी है। यहाँ ऐसा न हो सका इसका कारण यह था कि जो सामन्त वर्ग इस विद्रोह का नेतृत्व कर रहा था, उसमें भी कोई ढंग का संगठन नहीं था, यह कदाचित इस कारण था कि उनमें उद्देश्य की एकता नहीं थी। बहादुरशाह ने डरते-डरते इसमें साथ दिया था। नाना साहब ने विद्रोह को शुरू करने में तो योग्यता दिखाई, पर उसके नेतृत्व में योग्यता का प्रदर्शन नहीं किया। जियाजी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राव सिन्धिया जो इस सलाह में शामिल थे संकोच में पड़े रहे। इसी प्रकार सब नेताओं में कहीं न कहीं हिचकिचाहट थी।

अंगरेज भी असंगठित, पर…

यहां यह भी बता दिया जाय कि अंगरेजों ने इस विद्रोह को दबा तो दिया, पर वे भी कुछ अधिक संगठित नहीं थे। सच बात तो यह है कि कुछ अंगरेज लेखकों के मतानुसार उन्होंने बड़ी बेवकूफी से विद्रोह का सामना किया, किन्तु अंगरेजों ने भारतीय समाज के एक हिस्से को वह चाहे कितना ही छोटा हो अपने साथ ठोस रूप से कर लिया था। यह हिस्सा यह समझता था कि अंगरेजों का राज्य कायम रहे तो उनकी भलाई होगी। फिर सब से बड़ी बात यह है कि यद्यपि विद्रोह से अंगरेजों के पैर कुछ प्रान्तों में उखड़ गये, किन्तु बंगाल तथा अन्य कुछ इलाकों में उनका शासन अच्छी तरह जमा रहा। इससे उनको बड़ी सहायता मिली। उनके साथ गोरी सेना तो थी ही, पर सिख तथा गुरखा सेना ने भी उनको मदद की।

सेनापति और सेना में मेल नहीं

इसके विपरीत विद्रोहियों की सेना में कोई अनुशासन नहीं था। यद्यपि बख्तखां दिल्ली की सेना के सेनापति थे, किन्तु फिर भी बाहर से विद्रोह करके जो सेनायें आयी थी, उनके सेनापति उसे मानने से इनकार करते थे। इस प्रकार नाम मात्र के लिये बहादुरशाह प्रतीक होने पर भी कोई केन्द्रीय नियंत्रण नहीं था। प्रतीक प्रतीक ही रह गया, वह वास्तविकता की जगह नहीं ले सका। फिर यह भी बात समझ में नहीं आती कि सारी सेना दिल्ली में ही क्यों इकट्ठी हो रही थी, और यदि दिल्ली में इकट्ठी हो रही थी, तो वह दिल्ली से बाहर मोर्चों पर क्यों न भेजी जा रही थी। पर भेजता भी तो कौन? किसी का हुक्म तो चलता ही नहीं था। दिल्ली में सब जगह की विद्रोही सेना पूरी तादाद में एकत्रित होने के बजाय यदि वे अपने ही स्थान पर डटी रहती, और अपनी जगह को और मजबूत बनातीं तथा केवल अपने एक हिस्से को दिल्ली में भेज देती तो यह कहीं अच्छा होता। ऐसे समय में एक लोकतांत्रिक कमांड उत्पन्न होता जिसे सब बनाते और मानते, तभी परिस्थिति बच सकती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहादुरशाह का प्रस्ताव

सम्राट बहादुरशाह कदाचित इस बात को समझ रहे थे कि उनका सम्राट होना बहुत से देशी नरेशों को बिल्कुल पसन्द नहीं है। शायद इसी बात को समझ कर सम्राट ने जोधपुर, बीकानेर, अलवर, जयपुर आदि राजाओं को पत्र लिखा जिसमें यह कहा दिया कि सम्राट बना रहना उनका उद्देश्य नहीं है, बल्कि यदि सभी देशी नरेश फिरंगी को देश से बाहर निकालने के लिये अपनी तलवार खींचने के लिये तैयार हों तो वे इस बात के लिये तैयार हैं कि सम्राट होने के तमाम अधिकार तथा शक्ति वे देशी नरेशों के किसी ऐसे गुट को सौंप दें जो इसके लिये चुना जाय। सम्राट की इस घोषणा से हमारी यही बात पुष्ट होती है कि विद्रोह के दौरान में कुछ ऐसी नयी शक्तियों का उत्पन्न होना स्वाभाविक था, जो प्राचीन सामन्तवाद को उसी रूप में कदापि लौटने न देती। तभी तो सम्राट ने ऐसी बात कही। नहीं तो मुगल सम्राटों के वंशधर से ऐसी लोकतांत्रिक (अवश्य नरेशों तक सीमित) बात की उम्मीद कब की जा सकती थी।

इस घोषणा में एक नयी बात थी, किन्तु देशी नरेशों ने इन पर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। वे शायद ऐसे प्रस्तावों पर विश्वास करने के अभ्यस्त नहीं थे। आपस में इतने विश्वासघात हो चुके थे कि कोई राजा किसी दूसरे राजा का विश्वास नहीं करता था।

अनुशासन का अभाव और विश्वासघात

२५ अगस्त को बख्त खां ने नजबगढ़ की अंगरेजी सेना पर हमला किया। इस हमले में देखा गया कि बख्त खां की बात को सारी सेना मानने के लिये तैयार नहीं थी। इसी प्रकार नीमच की सेना ने आज्ञा नहीं मानी, यद्यपि वे बड़ी बहादुरी से लड़े, और उनका एक-एक आदमी मैदान पर कट कर मर गया। सेना का तो यह हाल था, उधर स्वयं बहादुरशाह के समधी मिर्जा इलाही बख्श तक अंगरेजों के खुफिया का काम करते थे। जो कुछ भी गुप्त से गुप्त बात होती थी, उसे वे मेजर हडसन तक पहुंचाते थे।

बहादुरशाह कैद

१४ सितम्बर की लड़ाई में अङ्गरेज दिल्ली के अन्दर घुस आये। फिर तो रक्त की नदियाँ बहने लगीं। २४ सितम्बर तक एक-एक हाथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमि के लिए दिल्ली में लड़ाई होती रही। ऐसे समय में बहादुरशाह के लिए ही भाग जाना अच्छा होता, किन्तु अङ्गरेज जानते थे कि यदि वे भाग गये, तो वे जहाँ भी जायेंगे, सम्भव है वहीं एक दूसरी सेना खड़ी हो जाय, इसलिये उन्होंने मिर्जा इलाहीबख्श के जरिये उनपर यह असर डलवाया कि वे न भागें। वख्तखां बादशाह को बहुतेरा समझाता रहा, किन्तु मिर्जा इलाहीबख्श के सामने उसकी एक न चली। बहादुरशाह मौके से गिरफ्तार कर लिए गये, और बेगम जीनत महल, और शाहजादे जवाँबख्त के साथ लाल किले में कैद कर लिये गये। १३४ दिन के बाद फिर दिल्ली में अङ्गरेजी झंडा फहराने लगा। वख्त खाँ निराश होकर न मालूम किधर निकल गया।

राजकुमारों की हत्या

इसके बाद बहादुर शाह के दो बेटे मिर्जा मुगल और मिर्जा असगर सुल्तान तथा उनके पोते मिर्जा अबुबकर हुमांयु गिरफ्तार कर लिए गये। तीनों राजपुत्रों को मेजर हडसन ने पहरे के अन्दर रथ पर सवार करवाया, फिर जब शहर केवल एक मील रहा तो वह एकाएक उतर पड़ा, और अपने ही एक सिपाही के हाथों से बन्दूक लेकर तीनों को वहीं ठण्डा कर दिया। तीनों के सर काटकर बहादुरशाह के सामने पेश किये गये। कहा जाता है कि इस पर बूढ़े बादशाह ने अपरिसीम धैर्य के साथ कहा—"अलहमदुलिल्लाह तैमूर की औलाद ऐसी ही सुर्खरू होकर बाप के सामने आया करती थी।"

दिल्ली में बदले की लहर

इस पर भी अङ्गरेजों की प्रतिशोध भावना की तृप्त नहीं हुई, और दिल्ली के खूनी दरवाजे के सामने इनके सिर टांगे गये, और कोतवाली के सामने इनके धड़ टांगे गये। एक दूसरी कहानी के अनुसार हडसन ने शाहजादों को मारा और चुल्लु भर-भर कर उनका खून पीया, और कहा कि यदि मैं उनका खून न पीता तो पागल हो जाता। इस प्रकार तैमूर का वंश खतम किया गया।

दिल्ली में कत्ले आम

जब एक बहुत बड़े अफसर ने इस प्रकार का आचरण किया, तो फिर मामूली गोरों ने दिल्ली निवासियों पर कैसे-कैसे अत्याचार किये,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह अनुमान किया जा सकता है। दिल्ली में जितने भी घायल आदमी मिले, उनका चेहरा पहले संगीन से बार-बार रौंदा गया, फिर धीमी आँच में जलाया गया। मुसलमानों को मारने के पहले सूअर की खालों में सी दिया जाता था, लोगों के बदन गरम तवे से दागे गये, गिरजों में लोगों से झाड़ू दिलवायीं गयीं। इन सब का नतीजा यह हुआ कि लोग दिल्ली छोड़-छोड़ कर भाग गये। राजघराने के लोगों को फाँसियाँ दी गयीं। सम्राट बहादुरशाह, उनकी बेगम जीनत महल और जवाँबख्त को रंगून भेज दिया गया। वे वहाँ पर तब तक कैद रखे गये जब तक कि वे मर नहीं गये।

विद्रोह का दमन

विद्रोह कहाँ-कहाँ कैसे दबाया गया, और विद्रोहियों ने कैसी-कैसी बहादुरी दिखलाई, इसके ब्यौरे में जाने की जरूरत नहीं है। अवध के विद्रोही सबसे अधिक बहादुरी से लड़े, पर अन्त तक वे भी हरा दिये गये। जनता की सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थीं, पर वह कोई क्रियाशील सहानुभूति नहीं थी। अवश्य अङ्गरेजों ने जनता को इसके लिए भी सजा दी। जनता की इस उदासीनता के लिये हम उसे अधिक दोष नहीं दे सकते हैं। विद्रोहीगण एलान या घोषणा पत्र के रूप में या और किसी प्रकार से जनता को अपनी ओर अधिक न खींच सके। लोग अङ्गरेजी राज्य से असन्तुष्ट थे, किन्तु बहादुरशाह या अन्य सामन्तों को लौटा लाने में भी उन्हें कोई विशेष उत्साह नहीं था।

कम्पनी के शासन का अन्त

१८५७ के विद्रोह से ब्रिटिश साम्राज्य जिस प्रकार झकझोरा गया, उसमें अन्त तक विजयी होने के कारण वह अपनी कमजोरियों को समझ गया और उनसे फायदा उठाने में समर्थ हुआ। अब तक भारत का शासन ईस्ट-इंडिया कम्पनी के हाथों में न्यस्त था, पर अब मलका की सरकार ने भारत के शासन को अपने हाथ में ले लिया। सन् १६०० में जिस समय ईस्ट इंडिया कम्पनी कायम हुई थी, उस समय की बात कुछ और थी, लोग जानते भी नहीं थे कि भारतवर्ष कहां है और उसका रास्ता किधर से है, किन्तु अब लोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जान गये थे कि भारतवर्ष एक धनी मुल्क है, और अंगरेजी उद्योग धंधों के लिये तो साक्षात् कल्पतरु ही है क्योंकि एक तरफ तो वह कच्चा माल दे सकता है और दूसरी तरफ वहां विलायत का माल खप सकता है। ईस्ट इंडिया कम्पनी से विशेषकर अंगरेज पूंजीपतियों के केवल एक ही हिस्से को फायदा था, अवश्य इस बीच में व्यक्तिगत पूंजीपतियों को यह अधिकार हो गया था कि वे भारपवर्ष में व्यापार कर सकते हैं, ईस्ट इंडिया कम्पनी की ही अधिक चलती थी। स्वाभाविक रूप से सभी पूंजीपति इस सोने की मुर्गी का अंडा चाहते थे। बहुत दिनों से ये इस बात का आन्दोलन करते चले आ रहे थे। पर इनकी दाल नहीं गलती थी। अब १८५७ के भयंकर विद्रोह के बाद उनको मौका मिल गया, और उन्होंने अपनी तजबीज को पार्लियामेन्ट के सामने पेश कर दिया। इसके उत्तर में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने एक विवरण पेश किया जिसमें यह बताया गया कि इस कम्पनी की वजह से इंगलैंड को क्या-क्या लाभ हुआ।

मल्का की घोषणा

कम्पनी की यह दरखवास्त नहीं मानी गयी, और भारत का शासन इंगलैंड की सरकार के हाथों में चला गया। मल्का की ओर से भारतीय समस्त जनता के नाम एक घोषणा पत्र प्रकाशित हुआ। इसमें कहा गया कि धर्म तथा जाति का ख्याल न रख कर सब को शासन के अधिकार (नौकरी) दिये जायेंगे। कहा गया कि भारतवर्ष की कारीगरी की उन्नति के लिये सब कुछ किया जायगा, और ऐसे काम बढ़ाये जायेंगे जिससे आम जनता को फायदा हो। कहना न होगा कि सुन्दर, सुलिखित तथा मिथ्याओं से पूर्ण घोषणा पत्रों से भारतवर्ष के उस तबके को संतुष्ट करने की कोशिश की गयी, जो अंगरेजों के साथ हो चुका था, और अंगरेजों की नौकरी में ही अपनी उन्नति चाहता था। बाद के इतिहास को देख कर यह बिना किसी हिचकिचाहट के कहा जा सकता है कि मल्का की यह घोषणा बिलकुल झूठी थी क्योंकि इस पर कोई अमल नहीं हुआ। हां भारतवासी गुलामों की तरह जब देखो तब इसका हवाला देते रहे। पर यह हवाला भी अंगरेज शासकों को न रुचता था, और लार्ड कार्जन ने १९०४ में कहा कि बारबार इसका हवाला ठीक नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फौज का पुनः संगठन

फिर यह न समझा जाय कि केवल इसी तबके की शुभेच्छा पर ब्रिटिश शासन कायम रहा। साम्राज्यवाद ने अपनी संगीन को भी मजबूत बनाया। इसी समय रेल का प्रवर्तन होने के कारण केन्द्रीभूत सरकार बनाने में मदद मिली। १८५७ के इस महान विद्रोह के फल स्वरूप अंगरेजों ने अपने फौजी संगठन को नये सिरे से ढाला।

रियासतें मिलाई गई

दूसरी ओर उन्होंने यह तय कर लिया कि जितना साम्राज्य बढ़ चुका, बढ़ चुका। अब डलहौसी की नीति से देशी रियासतों को खतम न किया जाय, बल्कि उनको अपने अधीन तथा अपना कठपुतला बनाया जाय। यहीं से सज्ञान तरीके से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की उस नीति का सूत्रपात होता है, जब वह यहां के सामन्तवाद को अपने मोहरों में परिणत करने का तय कर लेता है। इस नीति का परिणाम कितना सुदूर विस्तृत रहा, इसे हम जानते हैं। भारतवर्ष की एक तिहाई इसी नीति के कारण बहुत पिछड़ी रह गयी, क्योंकि इन रियासतों पर अंगरेजी जुए के अतिरिक्त सामन्तों का जुआ भी रहा, याने उनकी गुलामी दोहरी रही। इन रियासतों की संख्या लगभग ६ सौ हैं, और इनमें एक पूरे प्रान्त से लेकर दस बीस बीघा के मालिक राजा भी हैं।

रियासतों को कायम रखने और कठपुतला बनाने की इस नीति से ब्रिटेन ने सामन्तों के एक बड़े तबके को शान्त कर दिया, केवल यही नहीं यह तबका साम्राज्यवाद का स्थायी मित्र तथा भारतीय स्वतंत्रता और हर तरह की प्रगति का स्थायी दुश्मन हो गया। इन में नागरिक स्वतंत्रता तो नाम मात्र भी नहीं रही।

आबपाशी और खेती में उन्नति की योजना

विद्रोह की असफलता के बाद अंगरेजी शासन को चिरस्थायी बनाने के लिये बहुत सी योजनायें बनीं। इन योजनाओं को इस ढंग से बनाया गया कि भारतवर्ष में ब्रिटिश पूंजीवाद को फलने-फूलने का मौका मिले। इनमें से एक योजना भारतवर्ष को कृषि को उन्नत करने की थी। तदनुसार नयी-नयी नहरें खोदी गयी, तथा खेती के कुछ उन्नत तरीके प्रवर्तित किये गये। इन योजनाओं का उद्देश्य भारत को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्नति नहीं बल्कि इनका उद्देश्य भारतीयों की गिरी हुई क्रयशक्ति को बढ़ाना था जिससे उनकी अवस्था कुछ सहन योग्य हो और वे अधिक से अधिक विलायती माल खरीदने में समर्थ हों।

साम्प्रदायिक वैमनस्य की नीति

ब्रिटिश शासन को कायम रखने के लिये साम्प्रदायिक फूट को प्रोत्साहन दिया गया, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। हम पहले ही देख चुके हैं कि १८५७ के विद्रोह के जमाने में सिखों को यह कह कर औरों से अलग रखा गया कि बहादुरशाह का राज्य मुसलमानी राज्य है, तथा मुसलमान हमेशा से सिखों के दुश्मन रहे हैं। इसी प्रकार हिन्दुओं तथा मुसलमानों के इतिहास को इस ढंग से दिखलाया जाने लगा मानो वे एक ही देश में रहने वाली दो आपस में लड़ने वाली जातियां थीं। हम देख चुके हैं कि इतिहास सम्पूर्ण रूप से इस बात के विरुद्ध था। विशेषकर हिन्दुओं तथा मुसलमानों को इस प्रकार आपस में लड़ने वाली जाति करके इस कारण दिखलाया गया जिससे यह निष्कर्ष निकले कि अंगरेज यहां पर आये यह अच्छा ही हुआ। वे देवदूत की तरह सन्धि कराने के लिये आये।

साम्राज्यवाद के लिये अपविज्ञान

हर तरीके से गुलाम मनोवृत्ति को बढ़ाने को कोशिश की गयी। भूगोल तक को ऐसे मरोड़ा गया जिससे यह धुन निकले कि ईश्वर की कुछ ऐसी मर्जी है कि अंगरेज हमारे शासक हैं, और हम उनके शासित। इस बात को भी बहुत बढ़ा चढ़ा कर और रंगीन करके दिखलाया गया कि भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है, और उसके ऐसे बने रहने में ही भलाई है। मानो कुछ देश शुरू से ही औद्योगिक और कुछ देश कृषि प्रधान होकर ईश्वर के यहां से आये हों। इस प्रकार ज्ञान विज्ञान को भी साम्राज्यवादी मिलावटों के साथ दिखलाने की चेष्टा की गयी। संक्षेप में तथ्य यह है कि जब राज्य का सूत्र ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हाथ में आ गया, तो उसका पूरा इस्तेमाल इस उद्देश्य से किया गया कि वह साम्राज्य चिरस्थायी हो। इसकी पूर्ति के लिये सब प्रकार की धूर्त्तता, बेईमानी और जबर्दस्ती से काम लिया गया। भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का इतिहास इसी धूर्त्तता, नीचता, विश्वासघात, विज्ञान शत्रुता का इतिहास है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ७ :

राष्ट्रीयता का प्रथम प्रारम्भ

कम्पनी द्वारा अंगरेजी शिक्षा का विरोध

जब अंगरेज भारतवर्ष में आये, उस समय फारसी यहां की अखिल भारतीय भाषा थी। पर अंगरेजी शासन के आते ही यह जरूरी था कि फारसी का स्थान अंगरेजी ले लेती। १९ वीं सदी के प्रारम्भ में ही भारत में अंगरेजी शिक्षा का सूत्रपात हुआ। १८१४ में राबर्ट मेन नामक एक पादरी ने चूचंड़ा के पास कई शिक्षा संस्थाओं का प्रवर्तन किया, पर यह शायद एक छिट फुट चेष्टा मात्र थी, और इसका उद्देश्य बहुत कुछ धार्मिक था। डेविड हेयर नामक व्यक्ति ने ही सब से पहले इस बात का नारा दिया कि यदि भारतीयों को उन्नत करना है तो उनका अंगरेजी सीखना जरूरी है। उन्हीं से अनुप्रेरित हो कर दीवान वैद्यनाथ मुखोपाध्याय ने सुप्रीम कोर्ट के प्रधान विचारक सर एडवर्ड हाइड ईस्ट को यह कहा कि वे इस सम्बन्ध में अपने प्रभाव का इस्तमाल करें। तदनुसार इन्होंने १८१६ की १४ मई को अपने घर पर गण्यमान्य लोगों को बुलाया। उनका मतलब यह था कि इस सम्बन्ध में लोगों की राय ली जाय। सभा में आये हुए पंडितों की ओर से ईस्ट महोदय को उपहार के रूप में एक फूल दिया गया। यहीं से यह विचार जोर पकड़ने लगा। इनसे स्वतंत्र रूप से राजा राममोहन राय भी अंगरेजी शिक्षा के प्रवर्तन के लिये आन्दोलन कर रहे थे। अभी तक ईस्ट इंडिया कम्पनी ने यह तय नहीं किया था कि भारतीयों को अंगरेजी शिक्षा दी जाय कि नहीं। जब ईस्ट महोदय ने लोगों की इच्छा की बात को कम्पनी तक पहुँचा दिया तो कम्पनी ने इस सम्बन्ध में कुछ करने के बजाय यह हिदायत दी कि जो लोग सरकारी नौकर हैं, वे इस आन्दोलन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न रख सकेंगे। इस प्रकार का विरोध आश्चर्य जनक ज्ञात होगा, पर कुछ सोचने पर ज्ञात होगा कि कम्पनी के नौकरों के लिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह बिलकुल स्वाभाविक था। वे अपने तजुर्बे से इस बात को जानते थे कि भारतीय कई विषयों में दुनिया से बहुत कम परिचित हैं, इसी कारण उन्हें ठगना सम्भव हुआ। पर कम्पनी के इस विरोध के बावजूद १८१७ की २० जनवरी हिन्दू रईसों के रुपयों से हिन्दू कालेज खुल गया। इसमें अंगरेजी के साथ-साथ संस्कृत पढ़ाने की भी व्यवस्था हुई। इस प्रकार पहली अंगरेजी शिक्षा की संस्था भारतीयों के प्रयत्न से ही खुली।

राममोहन राय

इस दिशा में और क्या बातें हुई इस सम्बन्ध में ब्यौरे में जाने के पहले राजा राममोहन राय पर कुछ विस्तार के साथ लिखेंगें क्योंकि वे भारतीय नव जागृति के पुरोधा कहे जा सकते हैं। वे अंगरेजी और भारतीय दोनों विद्या, दर्शन तथा धर्म शास्त्र के ज्ञाता थे। १७७४ में उनका जन्म हुआ था। वे बहुत ही उदार विचार के व्यक्ति थे, और घटनाओं तथा वस्तुओं को भविष्य की दृष्टि से देखने में समर्थ थे। वे जिस युग में पले, उस युग में पश्चिम की उदीयमान पूंजीवादी सभ्यता और भारतवर्ष की ह्रासशील सामन्तवादी धार्मिक सभ्यता में प्रबल संघर्ष हो रहा था। राममोहन ने इन दोनों सभ्यताओं का अच्छी तरह अध्ययन किया था, और उनकी यह राय बन चुकी थी कि भारतीयों को अंगरेजी शिक्षा अपनानी चाहिये।

पादरियों का प्रचार

यों तो १८१३ के पहले सरकारी तौर पर भारतवर्ष में पादरियों को कोई उत्साह नहीं दिया जाता था कि वे धर्म प्रचार करें। पर नयी सनद में सरकार की ओर से एक याजक विभाग खोल दिया गया, और यह तय हुआ कि एक विशप और दो आर्च डिकन भारतवर्ष में होंगे। ये लोग अब सरकारी पैसे से पलने वाले थे। इस प्रकार सरकारी तौर पर तो ईसाई धर्म के प्रचार की व्यवस्था अब हुई, पर इसके बहुत पहले से ही जो पादरी यहां पर किसी तरह घुस आये थे, वे कहीं सती दाह प्रथा, तो कहीं गंगा और सागर के संगम पर बच्चों के विसर्जन की बात को लेकर, तो कहीं हिन्दुओं की मूर्त्ति पूजा को लेकर तरह-तरह का प्रचार किया करते थे, और साबित करते थे कि हिन्दू बहुत निकृष्ट दर्जे के प्राणी हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राममोहन द्वारा एकेश्वरवाद का प्रचार

राम मोहन राय ने शास्त्रों का अध्ययन किया तो वे इस नतीजे पर पहुँचे कि हिन्दू धर्म का सार एकेश्वरवाद है, न कि बहुदेव देवी पूजा। उन्होंने १८०४ में ही फारसी में तूहफात उलमुमाह दीन नामक एक ग्रन्थ लिखा, जिसमें एकेश्वरवाद को स्थापित किया। कहना न होगा कि उनकी इस चेष्टा से पादरी बहुत नाराज हुए, पर सब से मजे की बात तो यह है कि कट्टर हिन्दू भी उनसे नाराज हुए। पर वे इससे दबने वाले नहीं थे। १८१५ में उन्होंने वेदान्त का भाष्य लिखा, और फिर उसमें एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया। उसी साल उन्होंने मानिकतल्ला स्थान में आत्मीय सभा नाम से एक सभा खोली जिसका उद्देश्य वेदान्त की आलोचना करना था। यही आत्मीय सभा १८२८ में उपासना समाज, ब्रह्म सभा या ब्राह्म समाज में परिणत हो गया।

उनका समाज सुधार कार्य

राम मोहन केवल दार्शनिक क्षेत्र में ही लोहा लेकर चुप नहीं रहे, उन्होंने सती दाह प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन किया, और १८२९ तक सरकार को कानूनन बन्द कर देना पड़ा। इस सम्बन्ध में राजा राम मोहन को पंडितों से बहुत लोहा लेना पड़ा।

ब्राह्म समाज की उन्नति

जब राममोहन ने आत्मीय सभा का नाम बदल कर उपासना समाज या ब्रह्म समाज कर दिया, तो प्रति शनिवार को उसकी बैठक होने लगी। एक प्रसिद्ध स्वामीजी जिनका नाम हरिहरानन्दजी था, वे भी इस सभा में शामिल हो गये, और उनके भाई पंडित रामचन्द्रजो बहुत बड़े विद्वान् थे तथा ब्राह्मणों में भी निष्ठावान समझे जाते थे, वे भी इसमें शरीक हो गये। जैसा स्वाभाविक था प्रारम्भकि युग में इस नये सम्प्रदाय में विरोध का ही हिस्सा अधिक था। उन्होंने मूर्त्ति पूजा, तीर्थो का ढकोसला, सती प्रथा आदि के विरुद्ध एक विश्राम-हीन युद्ध की घोषणा कर दी। इसके लिये उन्होंने सभाओं में प्रचार किया, और साथ ही साहित्य की सृष्टि की।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राममोहन के राजनैतिक विचार

जैसा लोग समझते हैं कि राममोहन केवल समाज सुधारक थे, यह बात नहीं। वे दुनिया की हलचलों से परिचित थे, और उन पर बहुत प्रगति शील दृष्टि रखते थे। कहा जाता है कि अस्ट्रीया द्वारा इटली के रौंदे जाने पर उन्हें बड़ा अफसोस था, और एक बार तो ऐसा हुआ कि उन्होंने एक अंगरेज मिस्टर बकलैंड को विलायत में रहते समय मिलने का समय दिया था, पर इटली की एक खबर सुनकर वे इतने दुखी हो गये कि उनसे न मिल सके। जिस समय वे इंगलैंड जा रहे थे उस समय उन्होंने एक फ्रेंच जहाज को फ्रांस की क्रान्तिकारी पताका को धारण करते हुए देखा, इस पर वे इतने मुग्ध हुए कि उन्होंने उस जहाज को खड़ा करवाया, उस पर चढ़े और चिल्ला-चिल्लाकर फ्रांस की जय बोलने लगे एक दूसरे विवरण के अनुसार यह घटना उत्तमाशा अन्तरीप में हुई, और इस मौके पर हड़बड़ाहट के कारण उनके पैरों में जो चोट आयी वह अन्त तक बनी रही। लंदन में रहते समय भी उन्होंने अपना देशी पहनावा नहीं छोड़ा। यह बात शायद आज कोई महत्व की बात न जंचे, पर उस युग में जब कि लोग अंगरेजों के साथ का अर्थ ही ईसाई हो जाना, तथा शराब पीना समझते थे यह एक बहुत बड़ी बात थी। वे भारतवर्ष को "स्वन्तत्र, ब्रिटेन का मित्र तथा एशिया को रोशनी देने वाले" (Independent India, Friend of the United Kingdom & Ireland and Enlightener of Asia) के रूप में देखना चाहते थे।

पत्रकार तथा साहित्य निर्माता

राममोहन ने अपने मत के प्रचार की दृष्टि से सम्वाद पत्र भी निकाले, इस प्रकार के बंगला गद्य तथा पत्रकार कला के आदि पिताओं में भी है। भारतवर्ष में सब से पहला गैरसरकारी छापाखाना श्रीरामपुर के बैपटिस्म मिशनरियों ने खोला था। और १७८० की २६ जनवरी को जेम्स अगस्टसहिकी ने बंगाल गजट नाम से जो अखबार निकाला, वही भारतवर्ष का प्रथम समाचार पत्र था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कम्पनी का विरोध

कम्पनी न केवल समाचार पत्रों के बल्कि भारतवर्ष में छापेखानों के प्रचार के भी विरुद्ध थी। इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि हैदराबाद के निज़ाम ने अपने रेसिडेन्ट से कहा कि मैं कोई यंत्र देखना चाहता हूँ। इस पर रेसिडेन्ट ने एक पम्प तथा छापाखाना लाकर दिखलाया। निजाम ने जब इन चीजों को देख लिया तो वे बहुत खुश हुए, और ये चीजें हटा कर रख दी गयीं। जब कम्पनी को यह बात मालूम हुई तो रेसिडेन्ट डांटा गया। इस पर रेसिडेन्ट ने कहा कि जरूरत पड़े तो वह चुपके से छापेखाने को तुड़वा दे। इस कहानी में जहां तक भी सचाई हो तो ऐतिहासिक तथ्य है कि १७६८ में विलियम बोल्टस नामक एक अँगरेज को इसलिये कलकत्ते से निकाल कर निर्वासित कर दिया गया कि उसने कलकत्ते में एक छापाखाना खोलने की कोशिश की थी।

पत्रों और कम्पनी में संग्राम

जिस समय हिकी का बंगाल गेजट निकला भी तो डाकघर से उसे भेजने की इजाजत नहीं मिली। बंगाल गेजट के परिचालक के साथ सरकार का संघर्ष हुआ और अन्त में बंगाल गेजट बन्द हो गया। फिर भी अखबार नहीं रुक सके। बात यह है कुछ अँगरेज ही इस दिशा में प्रवर्तक रहे। उनको आसानी से टरकाना सम्भव नहीं था। तब कम्पनी को अखबारों का अस्तित्व मान लेना पड़ा। पर १७६६ में लार्ड वेलेसली ने पत्रों का गला घोंटने के लिये—Precensorship या छपने के पहले दिखा लेने की पद्धति चलायी। पत्रों की स्वाधीनता के संग्राम का एक निराला ही इतिहास है, हम उसके ब्यौरे में नहीं जायेंगे, इतना ही बतादें कि पत्रों की स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में भी राजा राममोहनराय का नाम अमर रहेगा। १८२१ के ४ दिसम्बर को उन्होंने सम्वाद कौमुदी नाम से एक पत्र निकाला। इस पत्र में राममोहन नियमित रूप से लिखते थे। वे जो कुछ लिखते थे उनका अनुवाद बाद को साथ ही साथ जेम्स सिल्क बकिंहम के केलकटा जेनरल में प्रकाशित होता था। १८२३ में बकिंहम को भारत से निकाल कर इंगलैंड भेज दिया गया। बाद को यही महाशय पार्लियामेंट के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेम्बर हो गये, और वे फिर उन्हीं बातों को पार्लियामेंट में कहने लगे, जिनके लिये उनको भारत से निकाला गया था।

राममोहन का पत्रों की स्वतंत्रता के लिए युद्ध

१८२३ में ही यह कानून बनाया गया कि कोई भी व्यक्ति बिना इजाजत के न तो छापेखाने का मालिक ही हो सकता है और न उसको इस्तमाल ही कर सकता है। कहना न होगा कि इस कानून से छापाखाना तथा पत्र जगत पर कुठाराघात किया गया। बस क्या था, राममोहनराय तथा अन्य पांच प्रमुख व्यक्तियों ने इसके विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में एक दरख्वास्त दी। ये पांच व्यक्ति थे—चन्द्रकुमार ठाकुर, द्वारकानाथ ठाकुर, हरिचन्द्र घोष, गौरीचरण चट्टोपाध्याय और प्रसन्न कुमार ठाकुर। पर वहां इसे कौन सुनता था। राम मोहन की यह दरख्वास्त Aereopagitica cf the Indian Press नाम से मशहूर है। हम यह बताना भूल गये कि सम्बाद कौमुदी के अतिरिक्त राम मोहन १८२२ के १२ अप्रैल से "मीरतुल अखबार" नाम से एक फारसी अखबार भी निकालते थे।

मीरतुल अखबार बन्द

जब उक्त गलघोंटू कानून निकला तो उन्होंने १८२३ के ४ अप्रैल को इसके प्रतिवाद में मीरतुल अखबार का प्रकाशन बन्द कर दिया। बन्द करते हुये उन्होंने छापेखाने की लाइसेंस के विरुद्ध यों लिखा—

"यद्यपि मैं आदमियों में बहुत ना चीज हूँ फिर भी बड़ी अनिच्छा तथा दुख के साथ इस पत्र को बन्द कर रहा हूँ। जिन बाधाओं के कारण बन्द कर रहा हूँ, वे यों हैं।

(१) पहली बात तो यह है कि चीफ सेक्रेटरी के साथ जिन गोरे सज्जनों का परिचय है उनके लिए लाइसेंस प्राप्त करना बहुत आसान होने पर भी मेरी तरह एक नाचीज व्यक्ति के लिये दरवान और नौकरों के काफिले में से गुजर कर इतने बड़े अफसर की मुलाकात प्राप्त करना कठिन है, और मेरी धारणा के अनुसार जिस बात की कोई जरूरत नहीं है उसके लिये तरह तरह के लोगों से पूर्ण पुलिस और अदालत को पार करना कठिन है। कहा गया है कि जिस इज्जत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को कलेजे के खून से खरीदा गया है, उसे किसी की कृपा प्राप्त करने के लिये दरबानों के हाथ बेच मत डालो।

(२) दूसरी बात यह है कि खुली अदालत में जजों के सामने खुशी से हलफ उठाना समाज में बहुत ही नीच और निन्दित समझा जाता है। फिर ऐसी कोई मजबूरी नहीं है कि जाकर कोई यह सब जहमत उठावे।

(३) तीसरी बात यह है कि एक तो अर्जी पेश की जाय और दूसरी भरी अदालत में बिला वजह हलफ उठाया जाय, फिर भी यह डर बना रहे कि न मालूम कब लाइसेंस छिन जाय और भद्द हो। फिर मानसिक अशान्ति रहे।........ इसीलिये मैंने इसी में भलाई समझी है कि बोलने के बनिस्वत चुप रहूँ। हाफिज, तुम तो एक भिखमंगे मात्र हो, चुप रहो। राजा लोग ही अपनी राजनीति का गूढ़ तत्व जानें।

गोरे और काले में भेद-भाव का विरोध

राम मोहन ने भारतीयों और गोरों में भेद भाव के भी विरुद्ध आन्दोलन किया। १८२८ में उन्होंने इस बात के विरुद्ध आन्दोलन किया कि यह जो कानून बना है कि हिन्दू और मुसलमानों के मुकदमों में ईसाई जूरी हो सकेंगे, पर ईसाइयों के मुकदमों में हिन्दू या मुसलमान जूरी नहीं हो सकेंगे, यह गलत है। उन्होंने इस सम्बन्ध में क्रैफोर्ड को जो पत्र लिखा उसमें यह लिखा कि यदि इस प्रकार का भेद भाव जारी रहा, तो वह दिन आ सकता है जब हिन्दू और मुसलमान मिलकर इस अन्याय पूर्ण कानून के विरुद्ध लड़े, और उसमें उन्हें कामयाबी हासिल हो। उन्होंने कुछ कड़ाई के साथ यह लिखा कि भारतवर्ष कोई आयरलैंड नहीं है कि दो चार जङ्गी जहाजों से खौफ खा जाय, यदि भारतवासी आयरिशों की एक चौथाई साहस भी दिखलावें, तो देर लगने पर भी वे अपने दुश्मन के लिये बहुत खतरनाक हो सकते हैं।

सरकार और सती प्रथा

राम मोहन इस प्रकार नवयुग की प्रतिमूर्त्ति तथा प्रतीक थे। यह आश्चर्य की बात है कि ऐसे मामलों में भी जिनमें अंगरेजों का कुछ बिगड़ता नहीं था, उन्होंने राम मोहन को वर्षों तक टरकाया। सती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाह एक ऐसी कुप्रथा थी जिसके सम्बन्ध में दो राय नहीं हो सकती थीं। पर इस सम्बन्ध में भी सरकार ने दीर्घ सूत्रता से काम लिया। जब जोरों से इसका आन्दोलन उठाया गया तो भी लार्ड वेलेसली पूछताछ कर रह गये। वे भी समझते थे कि यह प्रथा खराब है, किन्तु वे अपने साम्राज्य का हित इसी में समझते थे कि इस प्रथा में हस्त-क्षेप न किया जाय। बहाना यह था कि सरकार धार्मिक बातों में हस्तक्षेप करके जनता में क्षोभ उत्पन्न करना नहीं चाहती, पर पहले दिये हुए विवरणों से ज्ञात है कि सरकार ने ऐसी सैकड़ों बातें की जिससे जनता को क्षोभ हुआ जैसे यहाँ की कारीगरी का नाश कर सैकड़ों लोगों की रोजी ली गयी। इसलिये क्षोभ की बात नहीं थी। सरकार ऐसे मामलों में क्षोभ उत्पन्न करने से नहीं डरती थी, जिनसे उनका काम बनता था। बाकी जन हितकर बातों में वह बहुत तटस्थ बन जाती थी।

सरकार की प्रतिक्रियावादी मनोवृत्ति

मार्किस आफ हेस्टिङ्गस का भी ध्यान इस ओर गया, किन्तु उन्होंने भी इस पर जाँच पड़ताल करने के अतिरिक्त कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया। राजा राम मोहनराय ने इस सम्बन्ध में सैकड़ों प्रमाण देकर एक अँगरेजी में पुस्तक लिखी जिसमें यह दिखलाया गया कि सतीदाह कोई धार्मिक प्रथा नहीं है और इसे बन्द करने में धर्म में हस्तक्षेप का प्रश्न नहीं उठता। प्रजातंत्र का यह एक सम्मानित सिद्धांत समझा गया है कि धर्म में हस्तक्षेप न किया जाय, किन्तु यह कब तक, इसका भी तो कुछ हिसाब है। धर्म में हस्तक्षेप तभी तक नहीं करना चाहिये जबकि वह निर्दोष हो, अपने तक ही सीमित हो, तथा किसी पर उससे जबर्दस्ती न होती हो। इसलिये सती प्रथा के सम्बन्ध में यह उदासीनता सरकार की प्रतिक्रियावादी मनोवृत्ति का परिचय देती है। फिर ईस्ट इंडिया कम्पनी को सिद्धान्तों से क्या मतलब था।

राममोहन की महानता

राममोहनराय ने बङ्गाल में प्रचलित कुलीन प्रथा के विरुद्ध भी आन्दोलन किया। कुलीन प्रथा के अनुसार एक पुरुष कई सौ स्त्रियों तक से विवाह कर सकता था। राम मोहन ने इस कुप्रथा के विरुद्ध आवाज उठायी, पर इस सम्बन्ध में वे कानून नहीं बनवा सके।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्होंने स्त्रियों के दायाधिकार के सम्बन्ध में आन्दोलन किया और यह चाहा कि पति की मृत्यु के बाद उसकी सारी सम्पत्ति पर स्त्री का अधिकार हो जाय। दहेज तथा लड़की बेचने के विरुद्ध भी उन्होंने आन्दोलन किया। संक्षेप में सभी तरह के प्रगतिशील आन्दोलन के वे अग्रभाग में रहे। देश-बन्धु दास ने एक समय बोलते हुए यह जो कहा था कि—The life-work of this great man has got to be re-estimated, re-valued, re-understood and re-interpreted. यानें इस महान व्यक्ति के जीवन के कार्यों पर पुनर्विचार करने, समझने तथा उसकी फिर से व्याख्या करने की आवश्यकता है। यह बात बहुत ही सत्य है। अभी राममोहन को समुचित तरीके से समझा नहीं गया है।

स्कूल बुक सोसाइटी

राम मोहन के अतिरिक्त भी प्रगतिशील धारायें चालू थीं १८१७–१८ में ही कलकत्ते में स्कूल बुक सोसाइटी और स्कूल सोसाइटी नाम से दो संस्थायें बनी, जिनका उद्देश्य किसी न किसी रूप में नई शिक्षा के मार्ग को प्रशस्त करना था। स्कूल सोसाइटी की तरफ से प्रतिभावान छात्रों को वजीफा देकर उच्च शिक्षा दी जाती थी। पहले ही हम हिन्दू कालेज का उल्लेख कर चुके हैं।

डिरोजिओ

इसमें हेनरी लूई डिवीयन डिरोजियो नामक एक फिरङ्गी शिक्षक थे। फिरंगियों में अपने को अँगरेज समझने की जो प्रवृत्ति थी, वह इनमें नहीं थी। वे जन्मभूमि भारत को ही अपना देश समझते थे। वे कवि भी थे, और कविता में स्वदेश प्रेम का प्रचार करते थे। १८२६ में जब वे हिन्दू कालिज में काम लेकर आये, तो उनकी उम्र केवल १७ थी। वे लोगों के विशेष कर छात्रों के मन में देशभक्ति उत्पन्न करने के साथ साथ तरह तरह के विषयों पर बोलते थे। कालेज के अलावा भी वे डेविड हेयर के स्कूल में भी जाकर व्याख्यान दिया करते थे। यह एक अजीब बात है कि डिरोजियो एक तरह से बङ्गालियों की और इसलिये भारतियों की देश-भक्ति के गुरू हुए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डिरोजियो की देश-भक्ति मूलक कविता

उन्होंने अँगरेजी में जो कविता लिखी उसमें से एक को भारतीय देश-भक्ति की पहली कविता बतलायी गई है, इसलिये हम उसे उद्धृत करते हैं :—

My country ! in thy days of glory past
A beautious halo circled round thy brow,
And worshipped as a deity thou wast—
Where is thy glory, where that reverence now ?
Thy eagle pinion is chained down at last,
And grovelling in the lowly dust art thou,
Thy minstrel hath no wreath to weave for thee
Save the sad story of thy misery.
Well-let me dive into the depths of time,
And bring from out the ages that have roued,
A few small fragments of those wrecks sublime
Which human eye may never more behold ;
And let the guerdon of my labour be,
My fallen country ! one kind wish for thee !

डिरोजियो के शिष्य

डिरोजियो की शिष्य-मण्डली और राममोहन प्रचारित प्रगति में एक बहुत बड़ा फर्क यह था कि डिरोजियो के शिष्य अपने सुधारों में धर्म का आधार नहीं मानते थे। धर्म को सब कुसंस्कारों का जनक जानकर उन्होंने धर्म के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा की थी। वे बहुत से काम ऐसे करते थे, जिनको देखकर कट्टर समाज के लोग बहुत घबड़ाते थे, उदाहरणार्थ उन्होंने उसी युग में छूवाछूत त्याग दिया था, गो मांस आदि भक्षण किया था इत्यादि। लोगों को डिरोजियो से इतनी घबड़ाहट हुई कि हिन्दू कालेज की कमेटी ने १८३१ के २५ अप्रैल को उन्हें कालेज से निकाल दिया। इसके बाद डिरोजियो ने पहले जून से ही 'ईस्ट इण्डिया' नाम से एक अखबार निकला। दुर्भाग्य से उसी साल के २६ दिसम्बर को उनकी मृत्यु हो गयी, नहीं तो इसमें संदेह नहीं कि ये जिस सेवा को कालेज के जरिये से कर रहे थे, अब उसी को अखबार के जरिये से व्यापकतर रूप में जारी रखते। डिरोजियो के शिष्यों में कई नव जागृति के नेता हुए। कट्टर लोग उनसे जिस प्रकार घबड़ाते थे, उस प्रकार घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं थी, यह इस बात से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साबित है कि डिरोजियो की शिष्य मंडली में केवल कृष्ण मोहन बन्दोपाध्याय ईसाई हो गये। बाकी लोगों ने किसी न किसी प्रकार के सुधार कार्यों में भाग लिया। कृष्ण मोहन भी बराबर राष्ट्रीय विचार के रहे।

१८३३ की सनद में शिक्षा-व्यय नदारद

अँगरेजी शिक्षा के फलस्वरूप तथा ठोकरों से भारतीयों के मन में धीरे धीरे स्वतंत्रता की भावना जगने लगी। भारतीयों ने अँगरेजी साहित्य को पढ़ा और उन्होंने देखा कि वे कितने पिछड़े हुए हैं। हिन्दू कालेज में अँगरेजी शिक्षा के जो नतीजे हुये, और जिस प्रकार स्वतंत्र भावना युक्त भारतीयों का उदय हुआ उसको देखकर बहुत से अंगरेज बिदक गये। पर अँगरेजी शिक्षा को रोकना सम्भव नहीं हुआ। १८१३ में कम्पनी को जो सनद मिली थी उसमें भारतीयों में शिक्षा प्रचार करने के लिये वार्षिक १ लाख की व्यवस्था थी, पर १८३३ में जो सनद कम्पनी को दी गयी उसमें शिक्षा के लिये कोई रकम नहीं दी गयी। इसके पहले ही ब्रिटिश सरकार ने इस सम्बन्ध में बहुत से सरकारी तथा गैर सरकारी गवाही ली थी कि भारतीयों में अँगरेजी शिक्षा का प्रचार होना चाहिये कि नहीं।

भारतीयों की शिक्षा पर जेनरल स्मिथ

१८३१ के ६ अक्टूबर को पार्लियामेंटरी के सामने गवाही देते हुए मेजर जेनरल सर लाइनोल स्मिथ ने कहा था—"अँगरेजी शिक्षा के फलस्वरूप भारतियों के मन में एक दिन स्वतंत्र होने की भावना जगेगी, उस समय हमें भारतवर्ष को छोड़कर चला आना पड़ेगा। इससे हमें क्षति की आशङ्का तो है ही नहीं, बल्कि कुछ लाभ की ही आशा है। जिस समय अमेरिका ब्रिटेन के अधीन एक उपनिवेश मात्र था, उस समय वह ब्रिटेन के लिये जितना उपयोगी था, इस समय वह उसके लिये कहीं अधिक उपयोगी है। स्वाभाविक रूप से भारतीयगण स्वतंत्र होना चाहेंगे। मुसलमानी अमलदारी में उन्होंने इसलिये स्वतंत्र होना नहीं चाहा कि उस समय उनमें शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। अँगरेजी शिक्षा के फलस्वरूप उनके लिए स्वतंत्रता की इच्छा स्वाभाविक है। अब वे अपनी शक्ति के सम्बन्ध में भी सचेत न हो जायेंगे, और अब वे अपनी शक्ति के परिणाम को भी समझ जायेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसका नतीजा यह होगा कि वे अपने देश से गोरों को निकाल बाहर करने में कुछ भी नहीं हिचकिचायेंगे।"

मेकाले के मन्तव्य

बाद को मेकाले नामक सुप्रसिद्ध अँगरेजी विद्वान ने बड़े जोरों के साथ इस बात की सिफारिश की कि भारतवर्ष में अँगरेजी शिक्षा का प्रवर्तन किया जाय। ऐसी सिफारिश करते हुए उन्होने बहुत सी अप्रासंगिक बातें भी कहीं जैसे उन्होंने कहा कि भारत की सभ्यता तथा संस्कृति कुछ भी नहीं है, पर उन्होंने जो सिफारिश की वही इस सम्बन्ध में दृष्टव्य है न कि उनकी दी हुई गालियां तथा लनतरानियाँ।

अंग्रेजी शिक्षा की पोल

इसके बाद तो अंगरेजी शिक्षा का जोरों से प्रचार हुआ। यह समझना भूल है कि सरकार की तरफ से अंगरेजी शिक्षा का प्रबन्ध होने लगा उसका उद्देश्य भारतीयों की उन्नति थी, या उनमें स्वतंत्रता की भावना को उत्तेजित करना था। सच बात तो यों है कि सरकार के काम काज को चलाने के लिये अंगरेजीदां मुन्शियों, दुभाषियों, क्लार्कों, कर्मचारियों को जरूरत थी। इसीलिये सरकार ने अंगरेजी शिक्षा का प्रवर्तन किया। रहा यह कि इसके फल स्वरूप गौण परिणाम के रूप लोगों में राजनैतिक तथा साहित्यिक जागृति पैदा हुई यह दूसरी बात है। कुछ अंगरेज जो शिक्षा के विरुद्ध थे, वे इसीलिए विरुद्ध थे कि वे यह समझते थे बल्कि डरते थे कि कहीं लोग अपने को जान न जाय। फिर भी सरकार ने भारतीयों को अंगरेजी शिक्षा देने का खतरा इसलिये उठाया कि अंगरेजी दां लोगों के बगैर उनका शासन सुचारू रूप से चल नहीं सकता था।

मुसलमान और अंगरेजी शिक्षा

इस सम्बन्ध में यह विशेष दृष्टव्य है कि भारतीय मुसलमानों ने अंगरेजी शिक्षा को प्रारम्भ में नहीं अपनाया। इसे न अपनाने के बहुत गहरे नतीजे हुए। इसलिये इस सम्बन्ध में कुछ विस्तार के साथ आलोचना करना उचित होगा। पहले ही हम बता चुके हैं कि मुसलमानों का कभी भी राज्य नहीं था, फिर भी अंगरेजों का राज्य हो जाने पर वे अधिकांश मुसलमान, जिनको राज्य में कभी कोई हिस्सा नहीं मिला था, और जो उतने ही पद दलित, शोषित और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निपीड़ित थे जितने कि उसी दर्जे के हिन्दू थे, अंगरेजों से रुष्ट हो गये। अंगरेजो ने भी इस अविश्वास तथा रोष का जबाव उसी ढंग से दिया। इन सारी बातों का नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों ने अंगरेजी शिक्षा को कभी नहीं अपनाया। आम मुसलमानों का तो राज्य कभी नहीं था, उच्च वर्ग के मुसलमानों के प्रचार के कारण अंगरेजी राज्य आने पर वे यह समझने लगे कि उनका राज्य खतम हो गया, और अंगरेज ही उनके राज्य को मिटाने वाले हैं। इतिहास में कोई बात रही हो या न रही हो, जब धारणा बन जाती है तो वह स्वयं एक शक्ति हो जाती है, और अपना कार्य करती है। भारतीय मुसलमानों के पिछड़ेपन का एक महान कारण यह है कि वे अंगरेजी शिक्षा में पीछे रहे। हिन्दू मध्यवित्त श्रेणी ने बड़े जोरों से नयी शिक्षा को अपनाया, सब नौकरियां, पेशे उन्हीं को मिलने लगे। मुसलमानों को बहुत दिनों तक यह भ्रम रहा कि उनका राज्य लौटेगा, जब यह भ्रम दूर हुआ तब ही उन्होंने अंगरेजी शिक्षा को अपनाया, पर इस समय तक हिन्दू बहुत आगे बढ़ चुके थे।

प्रगतिशील विचारों की उत्पत्ति

एक तरफ तो १८३५ के करीब अंगरेजी शिक्षा की संगठित चेष्टा हुई, दूसरा उन्हीं दिनों अर्थात् १८३५ के १५ सितम्बर को सर चार्ल्स मेटकाफ ने भारतीय छापेखानों को स्वतंत्रता दे दी। इसका नतीजा यह हुआ कि देश में स्वतंत्र आलोचना तथा प्रगतिशील विचारों का सूत्रपात हुआ। इन दिनों प्रसन्न कुमार का साप्ताहिक पत्र रिफारमर खूब चलता था। इस पत्र के जरिये से अंगरेजी शिक्षित वर्ग में प्रगतिशील विचारों का प्रचार हुआ, तथा धीरे-धीरे लोग यह महसूस करने लगे कि भारतीयों और गोरों में प्रभेद नहीं होना चाहिये। पर प्रभेद तो था। इस प्रकार हम देखते हैं कि राष्ट्रीय भावना की जड़ में Racialism याने नस्लवाद के उपादान थे। पर यह स्मरण रहे कि भारतीय राष्ट्रीयता में, बल्कि सभी औपनिवेशिक देशों की राष्ट्रीयता में इस उपादान को लाने के लिये स्वयं अंगरेज ही जिम्मेदार हैं। यदि वे शुरू से ही भारतीयों और गोरों में भेद भाव न करते तो इस उपादान की उत्पत्ति ही न होती। बचाव के तरीके पर पददलित भारतीयों में इस उपादान का उत्पन्न होना आवश्यक और अनिवार्य था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ८ :

सङ्गठित आन्दोलन की ओर

पहला राजनैतिक सङ्गठन

भारतीयों में पहली राजनैतिक संस्था बङ्ग भाषा प्रकाशिका सभा है। इस सभा के नामकरण से तो यही ज्ञात होता है कि इस सभा का उद्देश्य बंगला भाषा की उन्नति करना था, पर ऐसी बात नही। भारतीय पुनरुत्थान के प्रारम्भिक युग में राष्ट्रीय आन्दोलन किसी न किसी तरह से अपने को छिपाकर तथा नाम बदल कर ही सामने आ सकता था। १८३६ के अन्त की ओर यह सभा सङ्गठित हुई। इस सभा के नियमों में एक यह नियम था कि सभा के अन्दर धर्म के सम्बन्ध में आलोचना नहीं होगी। यद्यपि सभा के उद्योक्ताओं में कालीनाथ राय, द्वारकानाथ ठाकुर, प्रसन्न कुमार ठाकुर गौरीशङ्कर तर्कबागीश, रामलोचन घोस आदि व्यक्ति राममोहन के उदार धार्मिक मत से प्रभावित थे, फिर भी ये लोग इस बात को समझते थे कि राजनीति से धर्म को अलग रखना चाहिए, नहीं तो सबका संयुक्त मोर्चा नहीं बन सकता। अवश्य यह संयुक्त मोर्चा बहुत अधिक दिन नहीं टिक सका क्योंकि पहले से तय कर लेने पर भी इसके सदस्यों में धार्मिक दलबन्दी कुछ न कुछ रही। इस सभा ने अपने जीवन काल में जो कार्रवाइयाँ कीं उनमें से एक यह भी थी कि जब सरकार ने लगान से मुक्त जमीनों से लगान लेना शुरू किया, तो इस सभा ने इसके विरुद्ध एक आम सभा की।

जमींदार सभा

बंगभाषा प्रकाशिका सभा के बाद एक जमींदार सभा बनी। बंगभाषा प्रकाशिका सभा तो धार्मिक दलबन्दियों के कारण नहीं टिक सकी, पर जमींदारों ने अपना एका कायम कर ही लिया। जिस जमीन पर की मालगुजारी अब तक माफ थी, उस पर जब मालगुजारी वसूल होने लगी, तो झट से विरुद्ध धार्मिक मतवाले लोगों की एक संस्था बन गयी। १८३७ के १२ नम्बर को हिन्दू कालेज में सनातनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और सुधारकों की एक सम्मिलित सभा हुई जिसमें सभा को जन्म दिया गया। १८३८ के १६ मार्च को जमींदार सभा बाकायदा कायम हो गयीं। यह दुस्टव्य है कि इसमें देशी और विदेशी, गोरे और काले, हिन्दू और मुसलमान सभी धर्मावलम्बी जमींदार थे। इसकी कार्य समिति के सदस्य ये लोग थे—थियोडोर डिकेन्स, जार्ज प्रिन्सेप, प्रसन्नकुमार ठाकुर, राधाकान्तदेव, राजनरायणराय, कालीकृष्ण बहादुर, अशुतोष देव, मुंशी अमीर, रामरत्नराय, रामकमल सेन और सत्य चरण घोषाल। ये लोग उस युग के सब से बड़े जमींदार थे। यह ध्यान देने योग्य है कि पहली किसान सभा के बहुत पहिले भारत की इस पहली जमींदार सभा की स्थापना हुई। यह बताया गया है कि इस सभा ने आम किसानों की भी कुछ भलाई की इसमें कोई आश्चर्य नहीं कई मामलों में जमींदार और किसानों के स्वार्थ एक हैं, यदि ऐसे किसी मामले में जमींदार सभा ने किसानों की भलाई का नारा दिया, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

विलायत में कार्य

बाद को जमींदार सभा ने अपना कार्य क्षेत्र बढ़ाने के लिये यह तय किया कि अपने विषय में विलायत में आन्दोलन किया जाय। १८३६ की जुलाई में विलियम ऐडम नामक एक अँगरेज ने अँगरेजों को भारतीय शिकायतों के बारे में उदबुद्ध करने के लिये ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी नाम से इंगलैंड में एक सभा की स्थापना की थी। विलियम ऐडम राममोहन के मित्रों में थे, और जब तक इस देश में रहे भारतियों पर उनका विशेष स्नेह रहा। जमींदार सभा ने १८३६ के ३० नवम्बर को यह तय किया कि ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी विलायत में जमींदार सभा द्वारा उठायी हुई चीजों के सम्बन्ध में आन्दोलन करे। १८४१ में ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी के मुखपत्र के रूप में "ब्रिटिश इण्डिया एडवोकेट" नामक एक पत्र प्रकाशित होने लगा जिसके सम्पादक विलियम ऐडम हुए। ऐडम को गुलामी प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन में प्रसिद्ध जार्ज टामसन का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

जार्ज टामसन

बाद को १८४२ में जमींदार सभा के प्राण द्वारकानाथ ठाकुर विलायत गये। जिस समय द्वारकानाथ लौटे, और वे उसी साल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लौटे, तो वे साथ में जार्ज टामसन को भी लेते आये। टामसन के आने से जमींदार सभा के काम में जो ढिलाई आयी थी, वह दूर हो गई। १८४३ की १७ जुलाई को जमींदार सभा की एक बैठक में यह तय हुआ कि जार्ज टामसन विलायत में सभा के एजेंट नियुक्त होते हैं। पर जमींदार सभा आगे कुछ ही दिन टिकी।

ज्ञानोपार्जिका सभा

यह स्वाभाविक भी था क्योंकि देश में जमीदार कितने थे। देश की उदीयमान मध्यवित्त श्रेणी का जमीदार सभा में न कोई स्थान था और न हो सकता था। इसी बीच में Society for the Acquisition of General Knowledge याने ज्ञानोपार्जिका सभा की स्थापना हो चुकी थी। इस सभा के स्थायी सभापति ताराचन्द चक्रवर्त्ती और मंत्री प्यारीचाँद मित्र थे। इस सभा के अधिवेशनों में इतिहास, साहित्य, राजनीति सभी विषयों पर व्याख्यान दिये जाते थे तथा निबन्ध पढ़े जाते थे। इस सभा के सदस्य कई अखबार भी चलाते थे। ज्ञानोपार्जिका सभा कोई विद्रोहियों की सभा नहीं थी, अँगरेजी शासन को स्वीकार कर ही यह सभा अपने कार्य करती थी जिस समय जार्ज टामसन भारतवर्ष आये, उस समय इस सभा ने १८४३ को ११ जनवरी को सभा की ओर से उनको एक मानपत्र दिया गया। जार्ज टामसन कुछ दिनों तक नियमित रूप से सभा के अधिवेशनों में व्याख्यान देते थे। टामसन की मदद से सभा के सदस्य रामगोपाल आदि के द्वारा प्रकाशित "बंगाल स्पेकटेटर" मासिक से पाक्षिक में परिणत हो गया।

रिचार्डसन ने वक्तव्य वापस लिया

ज्ञानोपार्जिका सभा के ८ फरवरी १८४३ वाले अधिवेशन में दक्षिणारंजन मुखोपाध्याय नामक एक महाशय ने एक निवन्ध पढ़ा। इस निवन्ध में सरकार की कार्यवाहियों की वहुत कड़ी टीका की गयी थी। यह अधिवेशन हिन्दू कालेज के भवन में हो रहा था। कालेज के अध्यक्ष कैप्टन डी० एल० रिचार्डसन भी इस सभा में उपस्थित थे। जिस समय दक्षिणारंजन अपने निबन्ध के उस अंश को पढ़ रहे थे जिसमें सरकार पर कड़ी टीका की गई थी, रिचार्डसन पैजामे से बाहर हो गये, और अपने अधिकार को जताते हुए बोले कि वे हिन्दू कालेज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भवन को राजद्रोहियों के आस्तने में परिणत होने नहीं दे सकते। इस पर सभा के सभापति ताराचन्द बिगड़ गये, और उन्होंने कहा कि इस समय रिचार्डसन एक निमंत्रित की तरह यहाँ पर बैठे हुए है, उन्हें कोई हक नही है कि इस तरह की बात कहें। उन्होंने कहा कि यह सभापति का काम है कि वह देखे कि कौन क्या कह रहा है और जो जो कुछ कह रहा है वह ठीक कह रहा है या नहीं। सभापति ने रिचार्डसन से यह कहा कि वे अपने मन्तव्य वापस लें नहीं तो यह मामला कालेज के अधिकारियों यहाँ तक कि सरकार के सामने पेश किया जायगा। रिचार्डसन को अपना वक्तव्य वापस लेना पड़ा।

विरोध का सूत्रपात

उस युग के लिये यह मामला बहुत बड़ा था। एंग्लो इण्डियन अखबार इंगलिश मैन ने इस मामले को बहुत तूल दिया। प्रगतिशील दल को चक्रवर्त्ती फैक्शन करार देकर उसके विरुद्ध बौछार किये गये। फ्रेण्ड आफ इंडिया नामक अखबार ने तो यहाँ तक लिख मारा कि यदि कोई इस प्रकार का व्याख्यान बटेविया में देता, तो कम से कम इसके लिये वक्ता को देश से निकाल दिया जाता। इधर तो सरकार परस्त अखबारों ने ऐसा लिखा, उधर राष्ट्रीय अखबार "बङ्गाल हर-करा" ने दक्षिणारंजन के पूरे निबन्ध को अपने २ और ३ मार्च के अंक में छाप दिया, और साथ ही में यह लिख दिया कि इसमें तो कोई ऐसी बात ही नहीं जिसके कारण रिचार्डसन तथा उनके भाई बन्द इतने बिगड़े हैं।

ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी

बाद को अनुभव किया गया कि केवल ज्ञानोपार्जिका सभा से कुछ काम न चलेगा। इससे भी ठोस किसी संस्था की आवश्यकता है। जब बङ्गाल स्पेक्टेटर साप्ताहिक में परिणत हो गया, तो यह देखा गया कि जहाँ तक आलोचना का सम्बन्ध है स्पेक्टेटर इस काम को अच्छी तरह निभा रहा है, बाकी कामों के लिये अन्य संस्था चाहिये। इस विषय की सम्भावनाओं को अच्छी तरह से जानने के लिये कई सभायें हुईं और कुछ नतीजे निकाले गये। पहला नतोजा यह निकाला गया कि ब्रिटिश भारतीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साम्राज्य की वर्त्तमान अवस्था में यह जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जाति की उन्नति और अपने देश के कल्याण के लिये प्रयत्न-शील हो। दूसरा नतीजा यह निकाला गया कि लोग व्यक्ति गत रूप से तो जो कुछ कर सकते हैं करें, पर भारतवर्ष के मङ्गल के लिये, और भारत में ब्रिटिश सरकार की उन्नति कार्य क्षमता को बढ़ाने के लिये सब जातियों तथा धर्मों की एक संस्था बनायी जाय, और जिसका नाम बङ्गाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी हो। इसके उद्देश्य के सम्बन्ध में यह तय हुआ कि यहाँ के विषय में सब तरह के तथ्यों का संग्रह किया जाय, तथा शान्ति पूर्ण और वैध उपायों से ऐसी कारंवाई की जाय जिसके फलस्वरूप भारत में सभी श्रेणियों की भलाई हो, और उनके उचित अधिकार तथा स्वार्थों का संरक्षण हो। यह न समझा जाय कि इस संस्था के निर्माता गण बागी थे। इनके उद्देश्यों में यह साफ कर दिया गया कि यह संस्था मल्का के प्रति श्रद्धा रखकर, और उनके शासन तथा कानून को मानकर ही कारंवाई करेगी।

अंगरेज नाराज

जिस समय यह सभा बन गई तो उसके सदस्यों में ज्ञानोपार्जिका सभा के बहुत से लोग आ गये। सच तो यह है कि यह उसी संस्था का दूसरा तथा विस्तृत रूप था। इस सभा के मन्त्री भी प्यारी चांद मित्र हुए, पर इसके सभापति जार्ज टामसन बनाये गए। पूर्वोल्लिखित तारा-चन्द इस सभा के असली नेता थे। यद्यपि टामसन इस सभा के सभापति थे, भारत स्थित साधारण अँगरेज इस सभा की कारंवाइयों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे। उनका मुखपत्र फ्रेण्ड आफ इण्डिया बराबर इस सभा पर कड़ी से कड़ी टीका करता रहता था। टामसन के भारत में रहते रहते ही बङ्गाल स्पेक्टेटर २० नवम्बर १८४३ को बन्द हो गया, जिस बात पर ताना कसते हुए फ्रेण्ड आफ इण्डिया ने यह लिखा कि "इस देश के लोगों के द्वारा कोई अच्छा काम करना कितना असम्भव है इसका प्रमाण टामसन इस देश में रहते रहते हो पा गये।"

तत्वबोधिनी सभा और उसका विद्यालय

यह संस्था भी अधिक दिन नहीं टिकी। इसके बाद तत्वबोधिनी सभा की स्थापना हुई और तत्वबोधिनी पत्रिका निकाली। कवीन्द्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रवीन्द्र के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर इस संस्था के प्रवर्तक थे। इस सभा का एक उद्देश्य यह था कि दार्शनिक सतह पर ईसाइयत का विरोध किया जाय। इस युग में कई लोग ईसाई हो रहे थे, जिनमें बंगला के महान कवि मधुसूदनदत्त का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ताराचन्द भी इस सभा में थे। इस आधार पर जमीदार सभा के लोग और ज्ञानोपार्जिका सभा के लोग एक मञ्च पर हो गये। इनकी तरफ से १८४६ के मार्च को हिन्दू हितार्थी विद्यालय नाम से एक विद्यालय खुला।

राष्ट्रीयता पर धार्मिक रंग

यहाँ पर हम कुछ देर के लिये रुक कर यह देख लें कि भारतीय राष्ट्रीयता के साथ साथ हिन्दू अभ्युत्थान का आन्दोलन कदम रखकर चल रहा था। यद्यपि जैसा कि हमने बङ्गाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी के उद्देश्यों में देखा कि नारा यह था कि सब जातियों तथा धर्मों के लोगों की आम भलाई हो, पर फिर भी राष्ट्रीयता के क्रमिक उदय के इस युग में और बाद को प्रत्येक विषय पर एक हिन्दू रङ्ग चढ़ा हुआ था जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। हम यह मानते हैं कि यह स्वाभाविक था, केवल प्राच्य तथा औपनिवेशिक देशों में ही नहीं इतिहास में बहुत से अवसरों पर किसी जाति के उत्थान के साथ धार्मिक पुनरुजीवनवाद का एक बड़ा स्थान रहा है। इस प्रकार यह बात थी तो स्वाभाविक, पर इसका स्वाभाविक नतीजा भी यह हुआ कि अन्य कारणों के साथ इस कारण से भी मुसलमान राष्ट्रीय आन्दोलन से दूर रहे। जिस समय का विशेषकर वर्णन हो रहा है, उस समय तो खैर मुसलमान बहुत ही पिछड़े हुए थे, पर बाद को भी जब वे कुछ आगे बढ़े, तो भी उनके सामने यह बाधा बनी रही।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

हिन्दुओं में इस जमाने में केवल विद्रोही सम्प्रदायों के रूप में ही ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज आदि की उत्पत्ति हुई ऐसी बात नहीं, कट्टर हिन्दुओं में भी सुधार की लहरें जोरों से चल रही थीं। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर सम्पूर्ण रूप से कट्टरपंथी पंडित थे। उनके पिता भी पुराने ढंग के पंडित थे। सारा खानदान पुराने ढंग का ही उपासक था, किन्तु विद्यासागर एक कट्टर सुधारक के रूप में हमारे सामने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आते हैं। १८१० में उनका जन्म हुआ। विद्वान के रूप में वे ख्याति हो गये, और वे स्वभाव से परोपकारी, दानशील, उदार, मेधावी थे, पर सुधार से वे कोसों दूर रहते थे। एक घटना से उनके हृदय पर इतनी चोट पहुँची कि वे सरपट सुधार में कूद पड़े। उन्होंने श्री शम्भूचन्द्र वाचस्पति नामक एक विद्वान से वेदान्त शास्त्र पढ़ा था। यह महाशय बूढ़े हो गये थे, इनकी स्त्री मर चुकी थी। कुछ लोगों ने इनसे कहा कि फिर से ब्याह करलो, वे कुछ दिनों तक तो इस अनुरोध को टालते रहे, फिर ये राजी हो गये।

गुरु से अलग हुए

वाचस्पतिजी ने अपने शिष्य विद्यासागरजी से पूछा कि उनकी इस सम्बन्ध में क्या राय है। विद्यासागर जो अपने गुरु को पिता की तरह मानते थे बोले कि आपको बहुत कष्ट तो हो रहा है, पर इस उम्र में इस प्रकार एक कम उम्र लड़की से शादी करने का तथा उसको विधवा छोड़कर मर जाने का कोई अधिकार उन्हें नहीं है। वाचस्पति जी इस पर बहुत दिनों तक अपने शिष्य से झकझक करते रहे, किन्तु विद्यासागर ने अपनी राय नही पलटी। बल्कि और भी उग्रता के साथ अपने मत का प्रतिपादन करते रहे। अब वाचस्पतिजी ने शिष्य को समझाने की आशा छोड़ दी, और विवाह करने का ढंग लगा लिया। इस पर विद्यासागर ने गुरु को अन्तिम नमस्कार किया। जब शादी हो चुकी तो गुरु ने फिर शिष्य को बुलाया। जब वे गुरु के सामने गये तो वे उस लड़की की बात सोचकर जिसका गुरुजी ने सर्वनाश किया था रोने लगे। इसके बाद जब उन्होंने गुरुपत्नी को देखा तो और भी रोने लगे। उन्होंने कायदे के अनुसार कुछ रुपये गुरुआइनजी को भेंट को। गुरुजी ने बहुत जिद की कि वे कुछ जल-पान करके जांय, तो उन्होंने कहा—बस हो चुका, मैं अब इस घर में पानी नहीं पी सकता।

विधवा-विवाह प्रचार

इस घटना ने विद्यासागर के मन पर इतनी जबर्दस्त चोट पहुँचायी कि उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता कि शास्त्र में विधवा विवाह का विधान न हो। उन्होंने इसी उद्देश्य से शास्त्रों को छानना शुरू किया। कई मंत्रों में उन्हें ऐसा प्रमाण मिला कि विधवा चिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर से उतार ली गई और इसके बाद उसका पुनर्विवाह हुआ। चिता पर से उतारने के मंत्र भी थे। वेदों में एक शब्द दिधिषू आता है, इसका अर्थ है विधवा से व्याह करने वाला व्यक्ति। उसके अतिरिक्त उन्होंने और भी बहुत से प्रमाण निकाले। कहा जाता है कि जब वे इस काम में संलग्न रहते थे, तो एक ही बार भोजन करते थे, और दिनभर इसीका मनन करते थे। एक तरफ तो उन्होंने शास्त्रीय प्रमाण देकर यह पुस्तक लिखी, जिसमें विधवा विवाह को शास्त्रीय बतलाया गया। दूसरा इन्होंने इस सम्बन्ध में बहुत से लेख लिखे, तथा बंगाल के बहुत से प्रतिष्ठित आदमियों के द्वारा दस्तखत कराकर सरकार को एक प्रार्थनापत्र भेजा। उनके प्रयत्नों का फल १८५६ को २६ जुलाई को हुआ, उस दिन विधवा विवाह सम्बन्धी कानून बन गया। विद्यासागर ने बहुविवाह को रद्द कराने के लिये भी आन्दोलन किया। उन्होंने २५ हजार व्यक्तियों की दस्तखत से एक प्रार्थनापत्र भेजा। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा के लिये एक स्कूल भी खुलवा दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ९ :

गोरों कालों की बराबरी की माँग

गोरों के साथ बराबरी की भावना

ज्यों ज्यों भारतीयों में शिक्षा तथा जागृति बढ़ती गयी, त्यों त्यों उनमें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वे गोरों के साथ बराबरी के दर्जे के समझे जांय। स्मरण रहे कि इस बराबरी के दर्जे का अर्थ उस समय यह नहीं था कि वे यह चाहते थे कि जैसे ब्रिटेन स्वतन्त्र है, उसी प्रकार से भारतवर्ष पर भारतीयों का शासन स्थापित हो जाय। नहीं, उस युग में बहुत कम ही लोग ऐसा सोचने में समर्थ होंगे। उनके नजदीक बराबरी के दर्जे का अर्थ केवल इतना ही था कि भारतीयों को भी नौकरियों में स्थान मिले तथा उनके कानूनी अधिकार बराबर हो।

बीटन का मसविदा

पर वस्तुस्थिति कुछ दूसरी ही थी। तरह तरह के कामों के सम्बन्ध में बहुत से गोरे भारत में आ चुके थे। इनकी नैतिक सतह कितनी नीची थी, और ये किस प्रकार लूटमार के लिये ही इस देश में आते थे, यह तो हम पहले ही बता चुके हैं। मजे की बात है कि कम्पनी का ही राज्य था फिर भी कलकत्ता से बाहर किसी गोरे पर स्थानीय अदालत में मुकदमा नहीं चल सकता था या तो गोरों के विरुद्ध कलकत्ते में मुकदमा दायर किया जा सकता था, या उन पर मुकदमा दायर ही नहीं हो सकता था। इधर देहातों में बहुत से अंगरेज तरह तरह के सिलसिले से बस चुके थे। ऐसी हालत में गोरे बहुत मनमाना करते थे। सरकार को भी यह बात इसलिये पसन्द नहीं थी कि वह समझती थी कि इस प्रकार बेकार में भारतीयों में विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है। १८४९ में बड़े लाट के कानून सचिव जान इलियट ड्रींकवाटर बीटन ने एक कानून का मसविदा बनवाया जिसमें यह बताया गया कि कलकत्ते के बाहर की फौजदारी अदालतों में गोरों पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुकद्दमा चल सकेगा। इसमें दूसरी बात यह थी कि गोरी प्रजा का हक सीमित कर दिया गया। यह जो प्रत्येक गोरा ही अपने को हाकिम समझता था, इसका इस प्रकार अन्त कर दिया गया। तीसरी बात यह की गयी कि जूरी से विचार का प्रवर्तन हुआ, चौथी बात यह थी कि सरकारी नौकरों को संरक्षण दिया गया कि जो चाहे सो उनके काम में दखल न दे और न उन पर हाकिम बने। यह भी नियम गोरों के विरुद्ध ही था क्योंकि प्रत्येक गोरा अपने को गोरा समझता था।

मसविदा वापस

इस कानून की खबर लगते ही गोरे आग बबूले हो गये। और गोरों के अखबार सरकार से कहने लगे कि फौरन इस "काले-कानून" को वापस ले लिया जाय। इंगलैण्ड में इस सम्बन्ध में ३० हजार रुपया चन्दा किया गया, इस रुपये से प्रचार कार्य हुआ। इन लोगों ने अखबारों तथा अपनी सभाओं में इतना हाय वावेला खड़ा किया कि सरकार की हिम्मत पस्त हो गयी और कानून का मसविदा फाइलों में पड़ा रहा।

रामगोपाल घोष निकाले गये

इस प्रकार इस कानून को समाप्त हो जाने पर भारतीयों में बहुत तहलका मचा इस समय तक पहले की "जमींदार सभा" तथा "बँगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी" दोनों खतम हो चुकी थी। गोरे कड़ी कार्रवाई पर तुले हुए थे। रामगोपाल घोष ने जिनका नाम बँगाल स्पेक्टेटर के सम्बन्ध में हम लिख चुके हैं एक पुस्तिका लिखी जिसमें इस बात का प्रतिपादन किया कि इस मसविदा का कानून बन जाना अत्यन्त आवश्यक है। रामगोपाल घोष ऐसी संस्थाओं के सदस्य थे जिनमें गोरों को प्रधानता थी। वे फौरन उन संस्थाओं से निकाल बाहर किये गये लोगों ने इस बात का अनुभव किया कि अब भारतीयों को संगठित होकर कुछ करना चाहिये।

नेशनल एसोसियेशन और ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन

तदनुसार १८५१ के १४ सितम्बर को 'नेशनल एसोसियेशन' नाम से एक संस्था बनी। इसके कोई डेढ़ महीना बाद ही 'ब्रिटिश इंडियन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एसोसियेशन' नाम से एक संस्था बनी। २६ अक्टूबर १८५१ को इसकी स्थापना हुई।❀ इसके सभापति पहले की जमींदार सभा के राजा राधाकान्त देव थे और महर्षि देवेन्द्रनाथ इसके मन्त्री थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ ही नेशनल एसोसियेशन के भी मन्त्री थे। इससे यह स्पष्ट है कि नेशनल एसोसियेशन ही ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन में परिणत हो गया। अब की बार जो संस्था बनी उसकी विशेषता यह थी कि इसमें सदस्य के रूप में कोई अंगरेज नहीं था, और अब तक जो गरम और नरम दल चल रहे थे; उन दोनों के उपादान इसमें मौजूद थे। इस एसोसियेशन का उद्देश्य बंगाल तक ही अपने को सीमित रखना नहीं था। उसी साल ११ दिसम्बर को देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने बंगाल के बाहर के लोगों को जो गश्ती-पत्र लिखा उसमें इस बात को साफ कर दिया कि इस संस्था का कार्यक्षेत्र अखिल भारतीय है। देवेन्द्रनाथ ने यह भी लिखा कि जल्दी ही अर्थात् १८५३ में ही कम्पनी की सनद की मियाद खतम होगी इसीलिये अभी से सब भारतवासी संगठित हो जांय और फिर पार्लियामेन्ट के सामने अपनी मांग पेश करें तो काम होगा। मद्रास में इस संस्था की एक शाखा खुली। बम्बई में कोई शाखा तो नहीं खुली, पर वहां एक स्वतन्त्र संस्था इन्हीं दिनों करीब करीब इन्हीं उद्देश्यों को लेकर स्थापित हुई। दादाभाई नौरोजी इसके नेता थे।

एसोसियेशन की माँग

इस एसोसियेशन ने शासन सुधारों के सम्बन्ध में एक दरख्वास्त तैयार करके पार्लियामेन्ट को भेज दिया। इस दरख्वास्त के लेखक श्री हरिश्चन्द्र मुखोपाध्याय थे। इसमें यह कहा गया कि 'मुगलों के जमाने से कम्पनी के जमाने में हर साल अधिक मालगुजारी वसूल की जा रही है। मुगलों के जमाने में जो कुछ भी वसूल होता था, वह भारतवर्ष में ही रह जाता था, और वह भारतीयों के काम आता था। अब राजस्व की एक बड़ी रकम विलायत चली जाती है, इसलिये कम्पनी के शासन से भारत का धन धीरे-धीरे घट रहा है। पहले की सनदों में यह प्रतिज्ञा की गयी थी कि जिम्मेदार पदों पर भारतीयों

❀ श्री हेमेन्द्रनाथदास गुप्त ने ३१ अक्टूबर लिखा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को नियुक्त किया जायगा, पर इस बात को कार्य रूप में परिणत करने की कोई चेष्टा नहीं की गयी। न्याय के क्षेत्र में गोरों और कालों में भेद था, राजस्व की वसूली में सख्ती थी। नमक और अफीम पर कम्पनी का एकाधिकार था। यह सब दूर किया जाय, भारतीय उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन दिया जाय, भारतीयों की शिक्षा की व्यवस्था की जाय और उच्च सरकारी पदों पर भारतीयों को नियुक्त किया जाय। शासन को परिस्कृत किया जाय।' ऐसोसियेशन ने यह भी मांग की कि औपनिवेशिक स्वराज्य के आदर्श पर यहाँ की धारा सभा बनायी जाय, पार्लियामेन्ट तथा बड़े लाट के अधिकार सीमित किये जांय। ऐसोसियेशन ने यह भी मांग की कि बंगाल, बम्बई, मद्रास और उत्तर पश्चिम प्रान्त प्रत्येक के तरफ से तीन भारतीय इस प्रकार बारह, प्रत्येक प्रान्त की सरकार की तरफ से एक-एक सिवीलियन तथा ब्रिटिश सरकार की ओर से नियुक्त सभापति, इस प्रकार सत्रह व्यक्तियों की धारा सभा बनायी जाय।'

१८५३ की सनद

सरकार ने इन माँगों को नहीं माना, और मनमाने तरीके से फिर भी गोरों की ही प्रधानता रही पर कम्पनी के शासन की शक्ति घटा दी गयी। सनद की मियाद दस साल कर दी गयी। यह तय हुआ कि प्रतियोगितामूलक परीक्षाओं में जो छात्र उत्तीर्ण होंगे, उन्हें नौकरी दी जायगी। बंगाल अब तक सीधे बड़े लाट के अधीन था, अब उसके लिये एक लेफ्टिनेन्ट गवर्नर की नियुक्ति हुई। सनद १८५३ में दी गयी और १८५४ में बोर्ड आफ कण्ट्रोल की तरफ से सरजान वुड ने ऐजुकेशन डीसपेच तैयार किया जिसके अनुसार शिक्षा के तीन हिस्से कर दिये गये। उच्च शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा। १८५७ में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में अलग अलग विश्वविद्यालय की सृष्टि हुई। प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा भी अब इस प्रकार संगठित हुई कि उसमें अब मातृभाषा का भी स्थान हो गया।

गोरे काले का भेद कुछ घटा ?

ब्रिटेन साहब जिस बात को करना चाहते थे पर कर नहीं पाये थे उसने फिर सिर उठाया। बात यह है कि न्याय के क्षेत्र में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरों के साथ विशेष व्यवहार एक ऐसी बात थी जो भारतीयों को अखरती थी, और सरकार को भी इससे कोई विशेष फायदा नहीं था। १८५६-५७ में सरकार ने फिर इस मामले का उठाया, और चाहा कि कोई कानून बन जावे जिससे यह दूर हो। अब की बार भी गोरों ने इसके विरुद्ध आन्दोलन उठाया, पर इस बीच में वे बहुत कुछ सीख चुके थे, और उन्होंने कहा कि खैर राजधानी के बाहर गोरों पर मुकदमा चले तो चले, पर उन पर मुकदमा गोरे जज के सामने चले। कहना न होगा कि यह बात भारतीयों को पसन्द नहीं हो सकती थी। इसलिये १८५७ के ६ अप्रैल को ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन की ओर से एक सभा हुई, जिसमें गोरों की इस मांग की निन्दा की गयी। इन दिनों जार्ज टामसन भारतवर्ष आये हुए थे उन्होंने भी सभा में भाषण दिया। इसके बाद तो १८५७ का प्रसिद्ध विद्रोह हुआ। इसी कारण ये सारी बातें जहां की तहां रह गयी। १८६१ के ५ सितम्बर को बड़े लाट की धारा सभा ने गोरों के साथ पक्ष पात मूलक इस कानून को कुछ हद तक सुधार लिया, पर अब भी भारतीय जजों के द्वारा गोरों के मुकदमे करने की इजाजत नहीं मिली। याने कानून बना पर गोरों के मांग के मुताबिक ही बना।

१८५७ और अंग्रेजीदाँ

पूर्व अध्याय में हम १८५७ के बिद्रोह के इतिहास का सिहांवलोकन कर चुके हैं। अब हम सिर्फ एक मन्तव्य करके आगे बढ़ जायेंगे वह यह कि उस विद्रोह में अंगरेजीदाँ लोगों ने बिल्कुल कोई हिस्सा नहीं लिया था इसका अर्थ यह है कि अंगरेज अपनी शिक्षा नीति में कम से कम पहले दौर में तो सफल रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १० :

जन आन्दोलन जोरों पर

नील के किसानों की अवस्था

बंगाल में नील की खेती के सिलसिले में हजारों लोग लगे हुए थे। उस जमाने में Syntnetic रंगों का आविष्कार नहीं हुआ था। नील से ही रंग बना करता था। १८२६ में राममोहन ने यह कहा था कि नील की खेती से किसानों को फायदा है। पहले पहल उन्हें वाकई फायदा था, पर धीरे धीरे नीलवाले साहबों ने शोषण करते करते ऐसी हालत पहुँचादी कि नील के किसानों को न तो कोई आमदनी ही रही, और न कोई स्वतन्त्रता ही रही। एक दफे किसान नीलवाले साहब के फन्दे में फंस गया तो वह कभी छूटता नहीं था। दीनबन्धु मित्र ने अपने "नील दर्पण" में कहा है कि 'नील के सम्बन्ध में ली गयी पेशगी और धोबी के चिन्ह कभी मिटते नहीं।" यों तो देखने में साल भर का एग्रीमेंट होता था, पर जीवनपर्यन्त उसका पंजा नहीं छूटता था। हर साल जब हिसाब होता था तो नील की गाड़ियाँ देने के बाद नील के किसानों के हिसाब में कुछ भी नहीं निकलता था, नतीजा यह है कि उन्हें और भी पेशगी लेनी पड़ती थी। श्री योगेशचन्द्र बागल ने दिखलाया है कि १८२२ में नील के साहबों के अत्याचार के विषय में समाचार चन्द्रिका और समाचार दर्पण में पहला उल्लेख मिलता है, इसके बाद अक्षयकुमार दत्त ने तत्त्व-बोधिनी पत्रिका में नील के किसानों पर अत्याचारों के सम्बन्ध में लिखा है। अच्छी से अच्छी जमीन पर जबर्दस्ती नील की खेती करायी जाती थी। कहीं कहीं दस साल के एग्रीमेंट का भी पता लगता है। विद्रोह के बहाने नील के साहबों को मैजिस्ट्रेटों का अधिकार मिला हुआ था। अब तो वे बिल्कुल मनमाना करने लगे। नील के साहबों को पहले ही किसानों को अपनी कोठी में कैद रखने वगैरह का अधिकार था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रान्तिकारी हालत

नील के किसानों में बड़ा प्रबल आन्दोलन चल रहा था। इनमें आन्दोलन किस मात्रा तक पहुँच चुका था यह इस बात से साबित है कि बड़े लाट कैनिंग नील के किसानों की परिस्थिति के सम्बन्ध में १८५७ के विद्रोह से अधिक चिन्तित थे। उन्होंने लिखा था "करीब एक हफ्ते तक मैं इतना उद्विग्न बना रहा कि मैं दिल्ली के गदर के समय भी नहीं था, और मुझे डर था कि यदि इस समय किसी नील मालिक ने भय या मूर्खतावश एक गोली चला दी, तो उससे सम्भव है बंगाल के दक्षिणी हिस्से में प्रत्येक कारखाने में आग लग जाय।"

लाट साहब उद्विग्न

शायद इसी उद्विग्नता के कारण बंगाल के लेफ्टिनेंट गवनर सर जान पीटर नदी से बंगाल के देहातों का दौरा करने लगे। १८६० के १७ दिसम्बर को इन्होंने दौरे के बाद एक रिपोर्ट दी जिसमें उन्होंने यह कहा कि 'मैं ६०, ७० मील तक भागीरथी तथा जमुना नदियों में नाव के द्वारा दौरा करता रहा तो उसमें मैंने देखा कि यह ६०, ७० मील का किनारा अर्जी देने वाले किसानों से भरे हुए थे। यहाँ तक कि गाँव की औरत तक जमा थीं, ऐसा मालूम होता है कि जो लोग वहाँ पर अपनी फरियाद लेकर आये थे, वे नदी के दोनों किनारों पर स्थित दूर दूर के गांवों से आये थे। मैं नहीं जानता कि आज तक किसी राजकर्मचारी के भाग्य में यह बात हुई कि नहीं कि लगातार १४ घंटे तक दोनों किनारों पर खड़े अर्जी देनेवालों को कतारों के बीच से स्टीमर पर चले। सभी लोग बड़े अदब से मांग रख रहे थे, और यह स्पष्ट है कि वे लोग जिस विषय को लेकर आये थे उसके सम्बन्ध में बहुत गम्भीर थे। यह सोचना बेवकूफी होगी कि जो यह दसियों हजार लोग आये थे, और जिनमें पुरुष स्त्रियाँ तथा बच्चे थे उसका कोई अर्थ नहीं है।"

साहित्य में प्रकाश

इसके पहले १८५६ में ही पचास लाख नील के किसानों ने हड़ताल कर दी थी। नील के किसानों की व्यथाओं की प्रतिध्वनि बंगला साहित्य में बड़े जोरों के साथ हुई थी। प्रसिद्ध नाटककार दीनबन्धु मिश्र ने इसी विषय को लेकर "नील दर्पण" पुस्तक लिखी। इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुस्तक का अनुवाद अंगरेजी में प्रकाशित हुआ। इससे इतना तहलका मचा कि इसके प्रकाशक पादरी जेम्स लंग पर मुकदमा चला, और उन्हें एक महीने की कैद तथा एक हजार रुपया जुर्माना किया गया। अनुवाद मधुसूदनदत्त ने किया था। उनको भी नौकरी छोड़नी पड़ी।

नील कमीशन

इस विषय पर आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ा कि सरकार ने एक नील कमीशन बैठाया, पर इस कमीशन ने कोई अच्छी सिफारिश नहीं की। कमीशन ने यह कहा कि नील की खेती होनी चाहिये। साथ ही उन्होंने नील के किसानों के दुखों के निवारण के लिये कोई खास व्यवस्था नहीं की। सच तो यह है कि जब तक जर्मनी ने वैज्ञानिक तरीके से नील का उत्पादन नहीं किया, तबतक इन लोगों का कष्ट जैसे का तैसा बना रहा। यह स्मरण रहे कि नील के किसानों का आन्दोलन अधिकांश रूप में सुधारवाद के दायरे में ही रहा। भारतवर्ष में उस समय यदि कोई नेतृत्व ऐसा उत्पन्न होता जो नील के किसानों के आन्दोलन को १८५७ के विद्रोह के साथ संयुक्त कर देता तो इसमें सन्देह नहीं कि भारतीय इतिहास कुछ दूसरा होता।

कम्पनी के युग में दुर्भिक्ष

१८६१ में भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम में भीषण दुर्भिक्ष दिखाई पड़ा। यह नहीं कि पहले कभी भारतवर्ष में दुर्भिक्ष होता ही नहीं था। पुराणों में १२ वर्ष तक पानी न बरसने के फलस्वरूप दुर्भिक्ष होने की कथा आती है, याने अप्रतिकार्य प्राकृतिक कारणों से दुर्भिक्ष आते थे, पर कम्पनी के आने के बाद से दुर्भिक्ष के मानवीय कारण होते थे। भारत में कम्पनी का पैर जमते ही १७७० में बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा। कम्पनी की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार इस दुर्भिक्ष में 'पूर्णिया प्रान्त' के एक तिहाई लोग मर गये, और यही हाल दूसरी जगहों का भी रहा। अनुमान यह है कि १ करोड़ आदमी मर गये, फिर भी लगान की वसूली में कोई कमी नहीं आयी। १७७२ में कोर्ट आफ डायरेक्टरस को रिपोर्ट देते हुए वारेन हेस्टिंग्ज ने लिखा था कि "यद्यपि प्रान्त के कम से कम एक तिहाई लोग मर चुके हैं, और उसी अनुपात से खेती में कमी हुई है, फिर भी १७७१ में राजस्व १७६८ से कुछ ज्यादा ही रहा। स्वाभाविक रूप से होना तो यही चाहिये था कि जनसंख्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घटने के अनुपात से राजस्व भी घटता पर इसे जबर्दस्ती पहले के मानदंड पर रखा गया।"

दुर्भिक्षों का प्रभाव

१६ वीं सदी के पूर्वार्द्ध में सात दुर्भिक्ष पड़े जिनमें १५ लाख आदमी मरे। १८०३ में बम्बई और १८३७ में मद्रास में बहुत जोर का दुर्भिक्ष हुआ था। पर १८६१ के दुर्भिक्ष का भारतीय मन पर दूसरे किस्म का असर पड़ा। अब वह कुछ कुछ जागृत हो चला था। लोगों ने यह अनुभव किया कि यह दुर्भिक्ष ईश्वरकृत नहीं बल्कि मनुष्यकृत है, और इसका नतीजा यह हुआ कि भारतीयों में जातीयता या राष्ट्रीयता की भावना दृढ़तर हुई।

१८६१ का शासन सुधार ?

सरकार ने कुछ नाम मात्र के सुधार देकर यह चेष्टा की कि इस भावना पर रोक थाम करे। १८६१ में ही पार्लियामेन्ट ने इंडियन कौंसिल ऐक्ट नाम से एक कानून बनाया। इस कानून के अनुसार गैर सरकारी कुछ लोगों के व्यवस्था परिषद में लिये जाने की व्यवस्था हुई। आज इसके व्यौरे में जाना किसी भी प्रकार दिलचस्प नहीं हो सकता क्योंकि बाद के मानदंड से यह तो महज मखौल मात्र था। १८६१ के कानून में यह बताया गया कि गैर सरकारी सदस्यों में कम से कम आधे भारतीय होंगे। तदनुसार पटियाला के महाराजा, काशी नरेश और ग्वालियर के भूतपूर्व प्रधान मंत्री दिनकर राव इसमें लिये गये। कहना न होगा कि यह भारतीयकरण बिल्कुल अर्थ हीन था क्योंकि ये तीनों व्यक्ति भारत की जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे, और सरकार के हां में हां मिलाने वाले मात्र थे।

हिन्दू मेला

१८६१ में जातीय गौरव सम्पादनीय सभा नाम से एक सभा मेदिनीपुर में स्थापित हुई थी। श्री राजनारायण वसु ने इसकी स्थापना की थी, यही सभा ६ साल बाद हिन्दू मेला में परिणत हो गया। इस कार्य में नव गोपाल मित्र तथा गणेन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें मदद दी थी। १८६६ में बंगाल के चैत्र मास के अन्त में पहले पहल यह मेला हुआ। हिन्दू मेला के अवसर पर ही राष्ट्रीय शिल्प कला की पहली प्रदर्शनी भी हुई। हिन्दू मेला में कसरत तथा छूरे और तलवार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का खेल भी दिखलाया गया। इसी अवसर पर नेशन और नेशनल शब्द का बहुत प्रयोग हुआ इटली में चलने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन का इस मेला के संगठन कर्त्ताओं के मन पर बहुत भारी प्रभाव था। इन्हीं दिनों जर्मनी का एकीकरण भी हो रहा था। मातृ भाषा के प्रति प्रबल अनुराग का भी यहीं से जन्म होता है। गुड मार्निंग आदि सम्भाषण की जगह पर सुप्रभात आदि शब्द इस्तमाल किये जाने लगे। इस सभा के सदस्यों में जो लोग बात चीत में अंगरेजी शब्द इस्तमाल करते थे, उन्हें प्रत्येक अंगरेजी शब्द के लिये एक पैसा जुर्माना देना पड़ता था।

मेला का लक्ष्य

हिन्दू मेला का हर साल अधिवेशन होने लगा। द्वितीय अधिवेशन के अवसर पर इसके मंत्री गणेन्द्रनाथ ठाकुर के चैत्र मेला के उद्देश्य को व्यक्त करते हुए कहा—"इस मेला का पहला उद्देश्य है कि साल के अन्त में हिन्दुओं को एकत्र किया जाय। इस प्रकार एकत्र होने का क्या परिणाम होगा, यह यद्यपि अभी दिखाई नहीं पड़ रहा है, पर हम लोगों का पारस्परिक मिलन तथा एकत्र होना कितना आवश्यक है और हमारे लिये कितना उपकारी है यह शायद सबको विदित है। किसी एक साधारण स्थान पर एक दिन एकत्र होकर भेंट करने से कितने ही बड़े काम हो सकते हैं, उत्साह बढ़ सकता है, और स्वदेश प्रेम प्रस्फुटित हो सकता है। जितनी भी जनता इकट्ठी है, वह सब हिन्दू मेला की जनता है, और हिन्दुओं की जनता है, इस बात को स्मरण कर हृदय आनन्दित होता है और देश प्रेम बढ़ता है। हम लोगों का यह मिलन साधारण धर्म कर्म के लिये नहीं है, न विषय सुख के लिये ही है, न किसी आमोद प्रमोद के लिये ही है, बल्कि यह स्वदेश तथा भारत भूमि के लिये है। इसका और एक महान उद्देश्य है, वह है अपने पैर पर खड़े होना। अपने पैर पर खड़े होना अंगरेजों का एक बहुत बड़ा गुण है, हम इस गुण के अनुकरण करने के लिये तैयार हुए हैं। अपनी चेष्टा से बड़े काम में लगना और उसे सफल करना यही अपने पैर पर खड़े होना है। भारतवर्ष की यह एक प्रधान कमी है कि हम अपने सभी काम में राज पुरुषों का मुंह ताकते रहते हैं। क्या यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधारण लज्जा का विषय है ? क्या हम लोग मनुष्य नहीं हैं ? मानव जन्म ग्रहण कर चिर काल तक दूसरे की सहायता पर निर्भर करने के अपेक्षा लज्जा का विषय और क्या हो सकता है, इस लिये जिससे कि भारतीयों में यह अपने पैर पर खड़े होना आये, और उनमें यह स्वभाव बद्ध मूल हो, मेला का यह द्वितीय उद्देश्य है।"

मेला की विशेषता

यह एक द्रष्टव्य बात है कि यद्यपि यह मेला भारतीयों के नाम पर था, पर इसमें कोई मुसलमान नहीं था इसका नाम भी हिन्दू मेला और इसका सम्बन्ध हिन्दू पत्र से था।

भारतीय दृष्टिकोण

इस सम्बन्ध में और एक द्रष्टव्य बात है कि यद्यपि इसके कर्त्ता धर्त्ता सभी बंगाली थे पर लोग अखिल भारतीय रूप में सोचते थे। हिन्दू मेला के अधिवेशन में सत्येन्द्रनाथ ठाकुर रचित "गाओ भारतेर जय" जो गाना गाया जाता था उसमें भी भारत शब्द था न कि बंग। बाद को ही चल कर बंग भंग के युग में जब विपत्ति केवल बंगाल पर पड़ी, तभी कैसे बंगाली राष्ट्रीयता का उदय हुआ, इसका हम यथा समय वर्णन करेंगे।

सत्येन्द्रनाथ ठाकुर रचित इस गाने का कुछ अंश हम उद्धृत करेंगे—

**मिले सबे भारत सन्तान, एक तान मनः प्राण, गाओ भारतेर यश गान;
भारतभूमिर तुल्य आछे कौन स्थान ? कौन आद्रिहिमाद्रि समान ?
फलवती वसुमती, स्रोतावती पुरांयवती, शत खनि रत्नेर निधान।
होक भारतेर जय, जय भारतेर जय, गाओ भारतेर जय।
कि भय कि भय, गाओ भारतेर जय।**

सार्वभौम जागृति

इसमें सर्वत्र भारत शब्द का ही उल्लेख है। इस मेला में साहित्य सभा तथा कवि सम्मेलन सा भी होता था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी इसमें भाग लिया था। स्वदेशी प्रदर्शिनी के साथ साथ सब तरह को स्वदेशी कला, कौशल कृषि आदि दिखलाई जाती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दू मेला में रवीन्द्र-कविता

प्रधान हिन्दू मेला के अतिरिक्त देहातों में भी अपना अपना हिन्दू मेला होने लगा। रवीन्द्रनाथ ने आगे भी कई अवसरों पर इस मेला में भाग लिया। १८७७ के मेले में उन्होंने एक कविता पढ़ी थी। कविता न तो काव्य दृष्टि से कोई बहुत अच्छी है, और आज के युग में उसका विषय भी अच्छा नहीं मालूम होगा। उन दिनों बड़े लाट लार्ड लिटन ने जो दिल्ली में दरबार किया था उसीको लेकर यह कविता लिखी गयी थी। फिर भी इस कविता में प्रमुख्य बात यही है कि इसमें बराबर भारत शब्द आया है न कि बंग शब्द।

उन्नतिशील लक्ष्य

यह हिन्दू मेला १८८० तक बराबर चलता रहा। इसमें सन्देह नहीं कि यद्यपि हिन्दू मेला बंगाली हिन्दुओं तक ही सीमित था फिर भी इस संस्था के संगठनकर्त्ता पहले की संस्थाओं से अधिक आगे बढ़े हुए राजनैतिक उद्देश्य सामने रख कर चल रहे थे। हिन्दू मेला के अन्यतम नेता मनोमोहन वसु ने उसके द्वितीय अधिवेशन में यह कहा था कि "हम सरलता और पारस्परिक प्रेम के द्वारा एकता नामक महाबीज को खरीदने आये हैं। इसी को अपने देश के खेत में बोकर और उस पर यत्नरूपी पानी तथा उत्साह रूपी उत्ताप देकर एक मनोहर पौधा उत्पन्न होगा। यह पौधा इतना सुन्दर होगा कि उसमें राष्ट्रीय गौरव रूपी पुष्प लगेंगे और इससे भारत भूमि महक जायेगी। इस पेड़ में जो फल होगा, अभी उसके नाम लेने का साहस नहीं होता। दूसरे देश के लोग उसे स्वतन्त्रता के नाम से पुकारते हैं, और उसके अमृत का स्वाद लेते हैं। हमने वह फल कभी नहीं देखा। बस लोगों से सुना है कि उसमें बड़े बड़े गुण हैं।

स्वदेशी का नारा

इस प्रकार हिन्दू मेला के लोग दूर में स्वतन्त्रता की झलक भी देखते थे। इसी अवसर पर स्वदेशी का नारा पहले पहल दिया गया था, और यह कहा गया था कि लोग स्वदेशी द्रव्यों का व्यवहार करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन से सम्बन्ध

हिन्दू मेला के नेतागण ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन के कड़े आलोचकों में थे ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन में अधिकतर राजा, जमींदार इत्यादि थे, इसलिये वह जमींदार सभा के रूप में हो गयी थी। वे साथ ही कट्टर राजभक्त भी थे। मनोमोहन वसु ने एक बार व्यंग करते हुए कहा था कि हिन्दू मेला में जो लोग धन देंगे, वे चाहे कितना धन दें पर रायबहादुर राजा नहीं हो सकते। यही कारण था कि हिन्दू मेला में जो दो एक राजा थे, वे धीरे धीरे हट गये। पर हिन्दू मेला के सामने कोई निर्दिष्ट कार्यक्रम न रहने के कारण वह एक हद तक ही जा सकता था।

मुसलमान बिल्कुल सुप्त नहीं

यह न समझा जाय कि इस बीच में मुसलमान बिलकुल ही सो रहे थे। हम यहां पर उनमें अंगरेजी शिक्षा के प्रचार का वर्णन करने नहीं जा रहे हैं। हम तो यहां पर उनमें जो विद्रोह मूलक कार्य हो रहे थे उसका वर्णन करेंगे।

वहाबियों का कार्यक्रम

पहले ही हम बता चुके कि वहाबीगण अंगरेजों को भारतवर्ष से निकालने के पक्षपाती थे। १८५७ के विद्रोह की असफलता के बाद भी बराबर छुटपुटरूप में अपना कार्य करते रहे। पटना में इन दिनों उनका प्रधान केन्द्र था। १८७१ में उनके नेता अमीर खां को १८१८ के रेगूलेशन तीन के अनुसार नजरबन्द कर दिया गया। वहाबियों ने इस पर बम्बई के प्रसिद्ध बैरिस्टर मिस्टर एनेस्टी को कलकत्ता लाकर इस नजरबन्दी के विरुद्ध अपील की और यह कहा कि यदि अमीर खां ने कोई अपराध किया है तो उसका फैसला खुली अदालत में होना चाहिये। मिस्टर ऐनेस्टी ने अपनी पैरवी की दौरान में लार्ड मेयो के जमाने में जो ज्यादतियां हुईं थीं, उनका उल्लेख किया। उनकी यह वक्तृता बिल्कुल राजनैतिक रही और वहाबियों ने इसे पुस्तिका के रूप में छपवा कर बंटवा दिया। विचारपति नौरमेन के सामने यह मुकदमा पेश था। मिस्टर ऐनेस्टी की योग्यता-पूर्ण वकालत के बावजूद यह मुकदमा खारिज हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब्दुल्ला और शेरअली

वहाबियों ने इस बात को योंही ग्रहण नहीं किया, और अब्दुल्ला नामक वहाबी ने मिस्टर नौरमेन पर छुरे से हमला कर दिया। वे उसी रात को मर गये। अब्दुल्ला को इस सम्बन्ध में फांसी हुई, पर गोरे उससे इतने नाराज थे कि फांसी के बाद उसकी लाश को कब्र देने के बजाय उसे जला दिया। इसी के बाद १८७२ की ८ फरवरी को जिस समय लार्ड मेयो अण्डमन का दौरा करने गये थे, उसी समय शेरअली नामक एक वहाबी ने उन्हें मार डाला। यह शेरअली खैबरघाटी का रहने वाला था, और मामूली इतिहासों में शेरअली को एक मामूली अपराधी के रूप में दिखाया जाता है, पर वह वहाबी था, और उसका उद्देश्य राजनैतिक था। कुछ भी हो यह कहा जा सकता है कि भारतवर्ष में आतंकवादी आन्दोलन का सूत्रपात अब्दुल्ला और शेरअली ने किया।

1871 में अब्दुल्ला और 1872 में शेरअली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: ११ :

धार्मिक सुधारकों के प्रयास

केशवचन्द्र सेन

इसके बाद के युग में राजनैतिक आन्दोलन ने किस प्रकार उन्नति की इसे बतलाने के पहले इस बीच के दो एक अन्य आन्दोलनों का जिक्र कर देना चाहिये। १८६० के लगभग बंगाल में केशवचन्द्र सेन नामक एक व्यक्ति का उदय हुआ, जो अपने युग में बहुत प्रभावशाली हुए। उनमें अद्भुत वक्तृत्व शक्ति थी। ज्योंही वे ब्रह्मसमाज में आये, त्योंही वे बहुत प्रसिद्ध हो गये, और देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें ब्रह्मानन्द की उपाधि दी। केशवचन्द्र का झुकाव कुछ हद तक ईसाई धर्म की ओर था, पर वे प्रचारक बहुत अच्छे थे। १८६५ तक उनमें और देवेन्द्रनाथ में मतभेद हो गया, और इसके फलस्वरूप उन्होंने भारतवर्षीय ब्रह्म समाज नाम से एक अलग संस्था खोल दी। उनके व्यक्तित्व तथा व्याख्यानों के कारण बम्बई तथा मद्रास में भी अलग ब्राह्म समाज खुल गये। इस प्रकार ब्राह्म समाज की शाखायें कायम होने के अतिरिक्त साधारण हिन्दू समाज पर भी उनका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने जाति पाति के विरुद्ध बहुत जोरों का आन्दोलन किया, और इसके कारण हिन्दू समाज एक बार हिल उठा। बहुत से लोग तो यह समझने लगे कि वे ईसाई हो जायँगे, पर वे ईसाई नहीं हुए। १८७० में वे विलायत गये, वे स्वयं कुछ दिनों तक इण्डियन मिरर का सम्पादन करते थे, पर साधारण लोगों के लिए उन्होंने सुलभ समाचार नाम से एक एक पैसे वाला अखबार निकाला था।

स्वामी दयानन्द

उत्तर भारत में इसी समय के लगभग स्वामी दयानन्द का उदय हुआ। इन्होंने १८७५ में बम्बई नगर के गिरगाँव महल्ले में आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी जी का सुधार कार्य राममोहनराय, देवेन्द्रनाथ तथा केशवचन्द्र से भिन्न किस्म की थी। पहले तीन सज्जनों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का मुह बहुत कुछ योरोप की ओर था, पर स्वामी दयानन्द ने योरोप की ओर पीठ कर रखी थी। राममोहन आदि मानते थे कि सभी धर्मों में सत्य है, वे उन धर्मों के सत्यों पर ही जोर देते थे, पर स्वामी जी का मत भिन्न था। वे वैदिक धर्म में ही पूर्ण सत्य का प्रकाश मानते थे, बाकी सब धर्मों को भ्रान्त समझते थे। उनकी लिखी हुई पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश इस बात का प्रमाण है। मुख्यतः वह पुस्तक दूसरे धर्मों के विरुद्ध के उपादान से पुष्ट है, और इसमें खण्डन का अंश ही प्रधान है। ईसाई मुसलमान धर्मों के अतिरिक्त उन्होंने १८ पुराण मूर्ति पूजा, शैव, शाक्त, वैष्णव सम्प्रदाय का भी विरोध किया। स्वामी दयानन्द का अगाध पाण्डित्य एक तलवार की तरह था जिसे वे सब पर चलाने के लिये उत्सुक रहते थे। इनके अनुसार वेदों का युग ही आदर्श युग था।

शुद्धि का प्रवर्तन

आर्य समाज में यह जो विरोध मूलक आदान मौजूद था, यह कोई स्वामी दयानन्द के तार्किक स्वभाव से उत्पन्न नहीं था, बल्कि इसके गहरे सामाजिक कारण थे। अब तक मुसलमान तथा ईसाई गण ही अपने धर्म में दूसरों को भर्ती करते थे, पर स्वामी दयानन्द ने हिन्दुओं में लुप्त शुद्धि प्रथा को फिर से चलाया जिसके अनुसार अब दूसरे धर्म के लोग भी आर्य समाज में भर्ती हो सकते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि दूसरे धर्म वालों की तरफ से इसका विरोध हुआ।

आर्य समाज अंग्रेजी विरोधी नहीं

स्वामी दयानन्द एक बहुत व्यवहारिक आदमी थे। उस युग में जैसा रिवाज था उसके मुताबिक वे बड़े बड़े पण्डितों से शास्त्रार्थ करते थे और इस प्रकार अपने मत का प्रचार करते थे। यद्यपि आर्य समाज का नारा यह था कि "वेदों के युग में लौट चलो" फिर भी आर्य समाजियों ने अंग्रेजी शिक्षा से परहेज नहीं किया। स्वामी दयानन्द ने सारे भारत का पर्यटन किया और गुरुकुल खुलवाये। स्वामी जी ने जिन बातों पर विशेष ध्यान दिया, वह था संस्कृत का प्रचार विशेषकर वेदों का अध्ययन, हिन्दू संगठन, शुद्धि, विधवा-विवाह इत्यादि। प्रारम्भ में आर्य समाज के लोग सरकार द्वारा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्देह की दृष्टि से देखे जाते थे, पर बाद को जब इनमें से लोग उच्च शिक्षा पाकर सरकारी नौकर होते गये, तो इनमें तबदीली हो गई।

रामकृष्ण परमहंस

इसी युग के लगभग परमहंस रामकृष्ण का भी प्रचार हुआ। वे राममोहन या दयानन्द की तरह कोई विद्वान नहीं थे, पर वे सर्व धर्म के समन्वय में विश्वास करते थे और इसको अपने ढङ्ग से कार्य-रूप में बहुत दूर तक ले गये थे। वे बहुत दिनों तक बिल्कुल अलग अलग धर्मों के अनुसार चले, और अपनी जगह पर बैठे बैठे सरल दृष्टान्तों से अपने मत का प्रचार करते रहे। बाद को स्वामी विवेकानन्द ने इनका भारतवर्ष में और एक हद तक भारत के बाहर प्रचार किया।

सुधार आन्दोलन प्रगतिशील

दक्षिण में महादेव गोविन्द रानाडे ने समाज सुधार सम्बन्धी आन्दोलन किये, और उन्हें इसमें बहुत सफलता मिली। इस युग में छोटे मोटे तरीके पर सारे भारतवर्ष में सुधारमूलक आन्दोलन जारी थे। इनमें से अधिकतर आन्दोलनों का राजनैतिक आन्दोलनों से कोई विशेष सम्बन्ध न होने पर भी इनका राजनीति पर बहुत भारी प्रभाव पड़ा। १८५७ के विद्रोह को इस निर्दयता के साथ दबाया गया था कि भारतवासियों की आत्मा बिल्कुल कुचल चुकी थी। तिस पर गोरे काले का भेद, आर्थिक शोषण, दुर्भिक्ष, फूट, सामाजिक कुप्रथाओं ने भारतीयों को बिल्कुल दुर्बल कर रखा था। ऐसे समय में इन सुधारकों ने भारतीयों को यह वाणी सुनायी कि नहीं तुम ऊपर उठ सकते हो। किसी ने कहा ? तुम्हारा धर्म और संस्कृति औरों के बराबर है, किसीने कहा तुम्हारा धर्म तथा संस्कृति सबसे ऊँची है, विवेकानन्द और केशवचन्द्र ने विदेशों में जाकर यह प्रमाणित कर दिया कि यहां के लोग इतने तुच्छ नहीं हैं, जितना वे अपने को समझते हैं। दुनिया भी उनसे सीख सकती है। हम धर्म को मानें या न मानें यह मानना पड़ेगा कि इन सुधारकों ने भारतीयों में एक नयी जान फूँक दी। पददलित तथा पराधीन भारतवासियों ने इनके मुँह से धर्म के रूप में ही सही नवीन युग की नयी वाणी सुनी। इन लोगों ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने अपने ढंग से लोगों का आत्मविश्वास बढ़ाया। उन लोगों ने अपने अपने युग में बड़ा कार्य किया।

पर उद्भूत राष्ट्रीयता साम्प्रदायिक

यह सब तो हुआ, पर साथ ही ये लोग हिन्दू थे, इनकी भाषा हिन्दू थी, इनके व्याख्यानों में ऐसे दृष्टान्त तथा ऐसे युगों का उल्लेख रहता था जिसे हिन्दू ही समझ सकते थे। नतीजा यह हुआ कि इनका वाणियों से पुष्ट होकर जो राष्ट्रीयता बनी, उसका रूप बहुत कुछ हिन्दू हो गया।

नेशनल मोहमडन एसोसियेशन

हम पहले ही बता चुके कि अब तक मुसलमानों के नेतागण आमतौर से यह विश्वास करते थे कि फिर से मुसलमानी राज्य वापस आ सकता है। इसी आशा के कारण वे अंगरेजी शिक्षा से अलग थे, पर अब कुछ मध्यवित श्रेणी के मुसलमानों में इस ज्ञान का उन्मेष हुआ कि हिन्दू बहुत आगे बढ़े जा रहे हैं, मुसलमान बहुत पिछड़े हुए हैं इसलिये उन्हें अंगरेजी शिक्षा अपनानी चाहिये। इसी विचार को लेकर बंगाल में नेशनल मोहम्मडन ऐसोसियेशन की स्थापना हुई थी। इन लोगों को बहावियों की तरह विद्रोह के मार्ग पर कोई विश्वास नहीं था। ये लोग वैध आन्दोलन के पक्षपाती थे।

अलीगढ़ कालेज की स्थापना

पर उत्तर भारत में ही इस आन्दोलन ने पूरा जोर पकड़ा और सर सैयद अहमदखाँ के नेतृत्व में १८७४ की २४ मई को अलीगढ़ कालेज की स्थापना हुई। कहीं से सरकार परस्त मुसलमानों का संगठित प्रयास शुरू होता है।

हिन्दू और मुसलमान नेताओं की तुलना

गहराई के साथ देखा जाय तो सर सैयद और उस युग के हिन्दू नेताओं में कोई मौलिक प्रभेद नहीं था। हिन्दू नेता भी वैध आन्दोलन के दायरे में रहना चाहते थे, और मुसलमान नेता सर सैयद भी यही चाहते थे। दोनों की उच्चाकांक्षा यह थी कि अधिक से अधिक सरकारी नौकरियाँ मिले। प्रभेद यदि था तो यह था कि हिन्दू नौकरियों के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ चुके थे, और मुसलमान इसमें पिछड़े हुए थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह कहा जा सकता है कि हिन्दू नेतागण भारतीयों को नौकरी दी जाय, यह नारा दे रहे थे और मुसलमान नेतागण मुसलमानों को नौकरी दी जाय यह नारा दे रहे थे, इसलिये इनमें फर्क है, पर यह फर्क स्पष्ट ऐतिहासिक कारणों से था, न कि और किसी मौलिक स्वभावगत प्रभेद के कारण।

हिन्दू मुसलमान की विभिन्नमुखी दिशायें

राममोहन, केशवचन्द्र, दयानन्द, परमहंस, रामकृष्ण आदि नेताओं ने तथा हिन्दू मेला आदि संस्थाओं ने हिन्दुओं में जिस राष्ट्रीयता को जन्म दिया था, यह स्पष्ट है कि उसमें मुसलमानों का कोई स्थान नहीं हो सकता था। उधर नौकरियों के तथा शिक्षा के क्षेत्र में मुसलमानों का पिछड़ा हुआ होना तो एक कारण था ही। जब हिन्दू अपनी नवजाग्रत चेतना में जोर पहुँचाने के लिये राजपूतों के इतिहास, सिखों के इतिहास तथा शिवाजी आदि से अनुप्रेरणा लेते थे, तो उसमें भी मुसलमानों का कोई स्थान नहीं हो सकता था। मुसलमान स्वाभाविक रूप से कथित मुस्लिमकाल की ओर ताकने लगे, साथ ही उन्होंने भारत के बाहर इस्लाम की तरफ भी निगाह डाली। इस प्रकार शुरू से ही कई ऐतिहासिक कारणों से जिनमें तृतीय शक्ति के द्वारा भड़काया जाना भी एक मुख्य कारण था हिन्दू राष्ट्रीयता तथा मुसलमानों की मनोवृत्ति ने विभिन्नमुखी दिशायें लीं। यह कहना मूर्खता होगी कि हिन्दुओं की राष्ट्रीयता जिस तरह उत्पन्न हुई और बढ़ी, वह दूसरे तरीके से हो सकती थी। यह सब कल्पना में ठीक है, पर जिस तरह से शक्तियों ने अपना विकास किया, उसमें इस प्रकार के अटकलपच्चू की कोई गुञ्जाइश नहीं है। सैकड़ों वर्षों के इतिहास के कारण इस प्रकार दो दृष्टिकोण बन गये। इसमें सन्देह नहीं कि प्रारम्भिक युग में राष्ट्रीयता ने धर्म की आड़ बल्कि धर्म से अनुप्रेरणा लेकर उन्नति की, यह अनिवार्य था। पर साथ ही इसने भविष्य के लिये एक समस्या की भी सृष्टि कर दी। वह समस्या इस रूप में है कि किस प्रकार से राष्ट्रीयता, मेरा मतलब संयुक्त राष्ट्रीयता से है, धर्म से अपना छुटकारा करले जिससे कि हिन्दू तथा मुसलमान दोनों एक राष्ट्रीयता के आधार पर चल सकें।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Satish Chandra Misra
20, Atal Behari Nagar,
UNNAO.

: १२ :

प्राक कॉंग्रेस युग की संस्थायें

इण्डियन एसोसियेशन

इसके बाद के युग में राष्ट्रीय आन्दोलन किस प्रकार से आगे बढ़ा इस सम्बन्ध में श्री सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने लिखा है—

"१८७५ के जून में इङ्गलैण्ड से लौटने के बाद मैं छात्रों के संगठन तथा उनमें नवजीवन संचार करने के साथ साथ इस बात के औचित्य पर विचार करने लगा कि पढ़े-लिखे मध्यवर्ग के लोगों के विचारों का प्रतिनिधित्व करने तथा उन्हें सार्वजनिक कार्यों में दिलचस्पी दिलाने के लिए एक एसोसियेशन खोला जाय अवश्य उस समय ब्रिटिश इंडियन नाम से एक संस्था मौजूद थी, जो उस महान् नेता कृष्णदास पाल के नेतृत्व में, जो उन दिनों उसके मन्त्री थे जरूरत पड़ने पर सार्वजनिक हितों की साहस पूर्वक पैरवी करता था, पर यह संस्था अनिवार्य रूप से तथा अपने क्रीड के कारण जमींदारों की सभा थी। इसके अतिरिक्त इस संस्था के स्वीकृत कार्यक्रम में क्रियाशील राजनैतिक आन्दोलन या जनता के प्रति प्रत्यक्ष अपीलों के द्वारा सार्वजनिक मत के निर्माण का स्थान नहीं था। इस प्रकार विस्तृततर लोकतांत्रिक आधार पर एक अन्य राजनैतिक संस्था को आवश्यकता थी। सच तो यह है कि ब्रिटिश इंडियन एसोसियेसन के नेतागण इस बात को मानते थे। यह इस बात से स्पष्ट है कि उस संस्था के कुछ प्रमुख सदस्य जैसे महाराज नरेन्द्रकृष्ण, बाबू कृष्णदासपाल इत्यादि सज्जन नये एसोसियेशन को प्राथमिक सभा में आये, और उन्होंने अपनी उपस्थिति के द्वारा इस संस्था के निर्माण को प्रोत्साहन दिया। और हम यहाँ पर कृतज्ञतापूर्वक इस बात को स्वीकार करते हैं कि बराबर ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन और इस नये एसोसियेशन में सम्बन्ध बहुत ही मित्रतापूर्ण था, और यह अधिकतर कृष्णदासपाल के प्रभाव तथा उदाहरण के कारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था।.......श्री आनन्दमोहन बोस और मैंने इस काम में हाथ बटाया.......। एक साल की तैयारी के बाद इंडियन एसोसियेशन की स्थापना २६ जुलाई १८७६ ई० को हुई। संस्था के नाम को लेकर मित्रों में बहुत चर्चा रही। पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और जस्टिस द्वारकानाथ मित्र जो अभी तक वकालत कर रहे थे इसी तरह की एक संस्था बनाना चाहते थे जो मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करे। इन लोगों को अपना विचार इसलिये त्याग देना पड़ा था कि उन्हें इसमें बहुत समर्थन प्राप्त नहीं हुआ था। ये लोग अपनी संस्था का नाम बंगाल एसोसियेशन रखने वाले थे। हम लोगों ने सोचा कि यह या इस प्रकार का नाम हमारे कार्यक्षेत्र को सीमित कर देगा। हमारे मन में यह विचार था कि नयी संस्था जो बने, वह अखिल भारतीय आन्दोलन का केन्द्र हो। बात यह है कि उस समय तक मेजनि के विचारों से अनुप्रमाणित होकर संयुक्त भारत की धारणा, या कम से कम समूचे भारत को एक राजनैतिक मंच पर लाने की कामना बंगाल के सब नेताओं के मन में समा चुकी थी। तदनुसार हमने इस नयी संस्था का नाम इंडियन एसोसियेशन रखा।"

इण्डियन लीग से सम्बन्ध

सुरेन्द्रनाथ आगे लिखते हैं—"इस सम्बन्ध में जो प्राथमिक सभा हुई थी, उसमें एक ऐसी घटना हो गयी, जिस पर लगे हाथों कुछ कह देना चाहिये। रेवरेन्ड के० एन० बैनर्जी के बाद ही कालीचरण बैनर्जी अपने जमाने के सबसे बड़े भारतीय ईसाई नेता थे। बाद को ये इण्डियन एसोसियेशन के सभापति हुए। इन्होंने ही इस एसोसियेशन के निर्माण का मुख्यतः यह कह कर विरोध किया था कि इस प्रकार का एक ऐसोसियेशन इंडियन लीग के नाम से कुछ महीने पहले स्थापित हो चुकी थी। मैंने उनके तर्कों का उत्तर दिया और सभा ने मेरी बात को मान कर इस संस्था को जन्म दिया।

"इण्डियन लीग ने अच्छा काम किया। अमृत बाजार पत्रिका के बाबू शिशिरकुमार घोष, रईस ऐण्ड रैयत के डाक्टर शम्भुचन्द्र मुकर्जी और बाबू मोतीलाल घोष इस संस्था के प्राण थे। यह संस्था खतम हो गयी, और इसके कुछ प्रमुख सदस्य इण्डियन एसोसियेशन में शामिल हो गये।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इण्डियन एसोसियेशन के उद्देश्य

"××× इण्डियन एसोसियेशन ने एक वास्तविक आवश्यता की पूर्ति की। जल्द ही इसने मध्यमवर्ग को सार्वजनिक रूप से आकर्षित कर लिया, और बंगाल के पढ़े लिखे तबके के प्रमुख प्रतिनिधियों का केन्द्रस्थल हो गया........इस एसोसियेशन के उद्देश्य संक्षेप में यों बताये जा सकते हैं—(१) देश में प्रबल सार्वजनिक मत की एक संस्था का निर्माण (२) भारतीयों नस्लों तथा जातियों के सामान्य राष्ट्रीय हितों तथा आकांक्षाओं के आधार पर एकीकरण। (३) हिन्दुओं और मुसलमानों में मित्रतापूर्ण भावनाओं की सृष्टि और अन्त में (४) उन दिनों के सार्वजनिक आन्दोलनों में जनता को ले आना........इण्डियन एसोसियेशन ने इन आदर्शों पर चलने की कोशिश की।"

भारतीय राष्ट्रीयता और मेजिनी

यह द्रस्टव्य है कि इन संस्थाओं के जन्मदाताओं के मन पर मेजिनि का बहुत प्रभाव था। जैसे आज यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन बल्कि सभी सार्वजनिक आन्दोलन क्रमशः मार्क्सवाद के विचारों की छाया में चले जा रहे हैं, यहां तक कि उसके विरोधी भी उसकी मौलिक बातों को अपनाने, और कुछ नहीं तो उसका स्वांग भरने के लिये बाध्य हो रहे हैं, उसी प्रकार उस जमाने में इटली के नेता मेजिनि के विचार भारतीयों पर विशेष प्रभाव रखते थे। इस सम्बन्ध में स्वयं सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने जो विवरण लिखा है वह बहुत मार्के का है। इस उद्धरण से यह मालूम होगा कि अब सही रूप से आधुनिक अर्थों में अखिल भारतीय राष्ट्रीयता की भावना जोर पकड़ने लगी। स्मरण रहे कि मेजिनि योरोप में राष्ट्रीयता के प्रधान पुरोहित थे, और एक विशेष विचार नेता समझे जाते थे।

असन्तोष की वृद्धि

१८७२–७६ के बीच बंगाल और विहार में फिर भयंकर दुर्भिक्ष हुआ। इस बात से भी शिक्षित समाज कुछ और चौकन्ना हो गया। इन्हीं दिनों बड़ौदा के गायकवाड़ अपनी गद्दी से उतार दिये गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन पर यह आरोप था कि उन्होंने अपने यहां के रसिडेन्ट कार्नल फेयर की हत्या का षड्यंत्र किया। इस अपराध के लिये गायकवाड़ पर ब्रिटिश इलाके में एक मुकदमा भी चला, और उन्हें सजा दी गयी। अवश्य सजा में वे केवल गद्दी पर से ही उतारे गये। बंगाल के अखबारों ने इस पर यथेष्ट आन्दोलन किया, और लोग यह समझ गये कि यह जो कहा गया था कि राजवाड़े स्वाधीन है, यह महज कल्पना थी।

सुरेन्द्रनाथ सिविल सर्विस से अलग

इन्हीं दिनों सुरेन्द्रनाथ बनेर्जी सिविल सर्विस से निकाले गये। वे जिस प्रकार निकाले गये वह स्वयं एक कहानी है। युधिष्टिर नाम के एक व्यक्ति पर नाव चुराने के लिये मुकदमा चल रहा था। जब युधिष्ठर का कागज सुरेन्द्रनाथ के सामने पेश हुआ तो नीचे के कर्मचारी से रिपोर्ट लेकर सुरेन्द्रनाथ ने यह लिख दिया कि युधिष्ठर फरार है। पर असल में शायद वह फरार नहीं था। बस इसी बात पर झूँठी रिपोर्ट लिखने के लिये ऊपर वाले गोरे ने सुरेन्द्रनाथ के विरुद्ध रिपोर्ट कर दी। एक सरकारो कमीशन उन पर जांच करने के लिये बैठा, और उस कमीशन ने सुरेन्द्रनाथ को बर्खास्त कर दिया। सुरेन्द्रनाथ इसकी अपील के लिये विलायत तक दौड़े, पर इससे कुछ नहीं हुआ। यह एक बहुत ही सौभाग्य की बात थी कि सुरेन्द्रनाथ सिविल सर्विस से निकाले गये। इसके बाद उन्होंने जो कुछ किया, वह तो हम उनकी जवानी उद्धृत कर चुके।

बंकिमचन्द्र

इन्हीं दिनों बंगाल में बंकिमचन्द्र का भी उदय हुआ। वे एक डिप्टी मैजिस्ट्रेट मात्र थे, पर बन्देमातरम मंत्र के ऋषि वे ही थे। वे १८७२ से बंग दर्शन प्रकाशित कर रहे थे, और बराबर पांच साल तक इसे प्रकाशित करते रहे। इस पत्र ने बंगाल के पढ़े लिखे वर्ग में जान फूंक दी और साहित्यिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में बंगाल को सब से अगली कतार में रखने में मदद दी। पर बंकिमचन्द्र अपने युग की उपज थे, इस लिये उन्होंने जिस आक्रमणात्मक राष्ट्रीयता का अपने उपन्यासों तथा लेखों में प्रतिपादन किया, उस पर हिन्दुत्व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का पुट अमिट रूप से था। आनन्दमठ नाम उनके उपन्यास में बन्देमातरम् गाना जिस पृष्ठ भूमि में आया है, यह कट्टर मुसलमानों को पसन्द नहीं हो सकता है। अवश्य हम यह नहीं कह रहे है कि जो चीज पहले पहल जिस पृष्ठ भूमि में आयी है, वह आवश्यक रूप से बराबर उसी व्यंजना तथा अर्थ के साथ मौजूद रहेगा। इतिहास के दौरान में चीजों का मूल्य बदलता है।

इंडियन लीग

अब हम फिर संस्थाओं के इतिहास पर आते हैं। इंडियन लीग जिसके सम्बन्ध में हमने अभी सुरेन्द्रनाथ को यह कहते हुए उद्धृत किया कि उसने अच्छा काम किया कुछ समय के लिये अपना जौहर दिखा कर मिट गयी। इसके संस्थापक तीन भाई थे, शिशिर कुमार घोष, मोतीलाल घोष और हेमन्त कुमार घोष। इस संस्था का उद्देश्य राजनैतिक होने पर भी इसने शिल्प विद्यालय स्थापना की चेष्टा की थी। उस युग के सभी बड़े बड़े आदमी किसी न किसी रूप से इससे सम्बद्ध थे। इसमें आश्चर्य नहीं कि ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन के नेतागण लीग से संतुष्ट नहीं थे। बात यह है लीग के नेतागण लोकतंत्र के सिद्धान्तों से प्रभावित थे और ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन के लोग लोकतंत्र से घबड़ाते थे। लीग ने 'एलबर्ट टेम्पल आफ साइन्स' नाम एक शिल्प विद्यालय स्थापित भी किया था। सर रिचर्ड टेम्पल जो १८७४ से १८७७ तक बंगाल के लाट थे इस विद्यालय को कुछ सरकारी सहायता देने की भी व्यवस्था की थी, पर यह विद्यालय बहुत दिनों तक स्थायी न हो सका। यह द्रष्टव्य है कि हिन्दू मेला से लेकर बराबर राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ कुटीर शिल्प तथा देशी शिल्प के उद्धार तथा उसकी प्रतिष्ठा का आन्दोलन भी लगा रहा, पर महात्मा गांधी को ही यह श्रेय प्राप्त रहा कि उन्होंने इन दोनों का गठ बन्धन स्थायी रूप से कर दिया।

इसाई और प्रगतिशील आन्दोलन

रवेरेन्ड कृष्णमोहन ने भी उस शिल्प विद्यालय में सहायता दी थी। बाद के युग में भारतीय इसाई गण राजनैतिक आन्दोलन में अधिक दिल चस्पी नहीं लेते रहे, पर उस युग में बहुत से ईसाई प्रगति शील आन्दोलन के साथ रहे। इसका कारण शायद यह हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि उस जमाने में बहुत से लोग प्रगतिशीलता के कारण ही ईसाई होने के लिये बाध्य हुए क्योंकि हिन्दू समाज का द्वार उनके लिये बन्द हो गया था।

इंडियन लीग और कारपोरेशन

इंडियन लीग की सब से बड़ी सेवा यह थी कि जिस समय सर रिचर्ड टेम्पल कलकत्ते की म्युनिसिपलिटी को एक लोकतान्त्रिक संस्था के रूप में बनाने का विचार कर रहे थे, उस समय ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन के नेताओं ने इस कदम का विरोध किया। यदि इस समय लीग के नेता शिशिरकुमार सामने आकर जन पक्ष का समर्थन न करते तो उसका नतीजा यह होता कि कारपोरेशन प्रगति के मार्ग में आगे नहीं बढ़ सकता। शिशिरकुमार की लेखनी और इंडियन लीग समर्थन के बदौलत ही ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन के नेताओं की प्रति क्रियावादी बातें चल नहीं सकीं। १८७६ में कारपोरेशन का नया विधान बना। इसके अनुसार यह परिस्थिति हो गयी कि ४८ तो जनता की ओर से चुने जाने वाले थे और २४ सरकार के द्वारा नामजद होने वाले थे। बाद के मानदण्डों की दृष्टि से यह कुछ नहीं था, पर उस युग की दृष्टि से यह एक बहुत बड़ा कदम था।

सुरेन्द्रनाथ और राष्ट्रीयता

इण्डियन लीग मरी नहीं बल्कि सुरेन्द्रनाथ की इंडियन एसोसियेशन या भारत सभा में विभाजित हो गयी। सुरेन्द्रनाथ इन दिनों देश भर में वक्तृता देते हुए फिरने लगे। विशेषकर छात्रों पर उनका बहुत प्रभाव पड़ा। सुरेन्द्रनाथ के विलायत से वापस आने के पहले ही आनन्दमोहन वसु ने छात्र सभा की स्थापना की थी। यही शायद भारत की प्रथम आधुनिक छात्र सभा है। छात्र सभा में तरह तरह के विषयों पर व्याख्यान तथा आलोचना हुआ करती थीं। इन व्याख्यानों के द्वारा उनमें देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने की कोशिश की जाती थी।

राष्ट्रीयता की पृष्ठभूमि

सुरेन्द्रनाथ ने विलायत से लौटकर जिन विषयों पर छात्रों में व्याख्यान दिये, उनको देखने से उस समय की राष्ट्रीयता की पृष्ठभूमि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और भी स्पष्ट होती है। सुरेन्द्रनाथ ने पहला व्याख्यान तो 'सिख शक्ति के उत्थान' पर दिया। दूसरा व्याख्यान श्री श्री चैतन्यदेव के विषय पर दिया गया। इसके बाद उन्होंने कुछ व्याख्यान मेजिनि और नवीन इटली पर दिये। उन दिनों उनके व्याख्यान के श्रोताओं में नरेन्द्रनाथ दत्त (बाद के स्वामी विवेकानन्द), विपिनचन्द्र पाल आदि थे। विपिनचन्द्र ने अपनी आत्म-जीवनी में इस बात का वर्णन किया है कि इस जमाने में इन व्याख्यानों का युवकों के मन पर कैसा प्रभाव रहा। उन्होंने लिखा है—

'हम लोगों ने आस्ट्रिया के आधीन इटली के निवासियों तथा ब्रिटिश के आधीन भारतवासियों की अवस्था में बहुत कुछ समता देखी। हम लोगों ने यह देखा कि कलकत्ते के बाहर भारतीय और गोरों में यदि किसी प्रकार का मुकदमा उठ खड़ा होता है, तो उसमें भारतीयों को किसी प्रकार न्याय नहीं मिलता। एक ही सिविल सर्विस के अन्दर भारतीयों और गोरों में जिस प्रकार में प्रभेद था, उससे हमारे दिलों में जलन पैदा होती थी। आसाम के चाय बगीचों के कुलियों की दुर्दशा उन दिनों देशी अखबारों में कुछ कुछ निकलने लगी। अमृत बाजार पत्रिका में मैजिस्ट्रेटों की जुल्म की बात अक्सर निकला करती थी। जब इस वातावरण में हमने मेजिनि के द्वारा परिचालित स्वतन्त्रता संग्राम की बात पढ़ी, तो हमारा मन कड़ुवापन से भर गया। हम लोग मेजिनि के लेख और नवीन इटली के आन्दोलन का इतिहास पढ़ने लगे। हम लोग धीरे धीरे इटली की स्वतन्त्रता के आन्दोलन विशेषकर कारबोनरी संस्था के साथ परिचित हो गये। मेजिनि पहले कारबोनरी के साथ सम्बद्ध थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य से इटली में जो गुप्त समितियां बनी थीं, उन्हीं को कारबोनरी कहते हैं। कारबोनरी की गुप्त पद्धति सदस्यों में किसी न किसी ढङ्ग से कायरपन को ही प्रोत्साहन देती थी। इसलिये मेजिनि ने इनसे नाता तोड़कर खुलेआम विद्रोह की घोषणा की थी। सुरेन्द्रनाथ ने मेजिनि के सम्बन्ध में जो व्याख्यान दिये, उनसे प्रेरित होकर हम लोग भी भारतीय स्वतन्त्रता के लक्ष्य को लेकर गुप्त समितियों के निर्माण में लग गये। पर उस समय भी हम लोग किसी प्रकार की क्रान्तिकारी भावना से परिचालित नहीं हुए थे, और हमने देश की राजनैतिक मुक्ति के लिए किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तरह की गुप्त हत्या की बात सोची थी। स्वयं सुरेन्द्रनाथ इस तरह के बहुत से युवक संघों के नेता थे। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये युवकों के सामने कोई निर्दिष्ट कार्यक्रम नहीं था। यह बात सही है पर अपने आदर्श में उनको निष्ठा प्रबल थी। मैं एक समिति की बात जानता हूँ, मैं इसका सदस्य नहीं था, जिनके सदस्यों को तलवार की नोंक से सीना चीरकर खून निकालना पड़ता था और उस खून से प्रतिज्ञापत्र पर दस्तखत करना पड़ता था।

राष्ट्रीयता में अन्तर्राष्ट्रीयता

स्मरण रहे कि यह १८७५ के लगभग की बात है। अभी से शिक्षित भारतीय के बाहर हलचलों से अपनी बातों को नत्थी करना सीख गये थे। बहुत से लोगों का यह विचार हो कि भारतीय राजनीति में जो अन्तर्राष्ट्रीयता की लहर बाद को बही, वह इश्वर के युग के नेताओं की ही देन है। पर यह बात नहीं। स्वामी विवेकानन्द जिनके सम्बन्ध में अभी हमने बताया है कि वे भी सुरेन्द्रनाथ के व्याख्यानों को सुनने जाया करते थे बड़े भारी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी थे। उन्होंने कहा था "राजनीति और समाज विज्ञान में भी जो समस्यायें बीस साल पहले तक राष्ट्रीय समझी जाती थीं, अब केवल राष्ट्रीय आधार पर उनका समाधान नहीं हो सकता है। अब वे विशाल रूप धारण कर रहे हैं। उनका समाधान तभी हो सकता है जब अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि की विस्तृतर रोशनी में उनको देखा जाय। यह युग अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का है लोग इसी की मांग कर रहे हैं।" स्वामीजी ने बाद को इन विचारों को और भी विस्तृत रूप दिया। यहाँ तक कि उन्होंने अपने को समाजवादी कहकर भी घोषित किया। उन्होंने कहा "मैं इस कारण समाजवादी नहीं हूं कि मैं समाजवाद को एक सम्पूर्ण पद्धति समझता हूँ, बल्कि इसलिये कि कुछ भी रोटी न मिलने से आधी रोटी मिलना अच्छी बात है। दूसरी जो पद्धति थी उसको मौका दिया जा चुका और यह देखा गया कि उसमें कसर है। इसलिये इसपर अमल किया जाय, और किसी लिये नहीं तो इसलिये कि चीज में नवीनता है।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभिन्न गुप्त समितियाँ

उस युग में मेजिनि और गैरीबाल्डी का भारतीय देशभक्तों पर बड़ा भारी असर पड़ा। यहाँ तक कि ठाकुर खानदान के लोग भी गुप्त समिति बना-बनाकर बैठ गये। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी आत्म कथा में एक इसी प्रकार की गुप्त समिति का उल्लेख किया है जिसके सभापति राजनारायण बसु थे, और ज्योतिरिन्द्रनाथ इसके मन्त्री थे। इससे ज्ञात होता है कि उन दिनों लोगों में जोश कितना बढ़ा हुआ था। इसी सिलसिले में यह भी पता चलता है कि श्री शिवनाथ शास्त्री के नेतृत्व में भी एक गुप्त समिति बनी थी। जिस समय यह समिति बनी थी, उस समय शास्त्री जी सरकारी नौकर थे। उन्हीं के घर में समिति का अधिवेशन हुआ करता था। एक दिन लोगों को यह ख्याल आया कि इस बात की प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि कोई भी सरकारी नौकरी नहीं करेगा। तदनुसार एक अग्निकुण्ड जलाया गया और उसके सामने लोगों ने यह प्रतिज्ञा की कि सरकारी नौकरी नहीं करेंगे। अब शास्त्रीजी चूंकि सरकारी नौकर थे। वे इस प्रतिज्ञा को ग्रहण नहीं कर सके। उन्होंने फिर भी अपनी आत्म कथा में लिखा है कि "जब ये लोग ईश्वर का नाम कीर्त्तन करते हुए अग्निकुण्ड की चारों ओर प्रदक्षिणा करने लगे तो मेरे अन्दर एक अपूर्व बल तथा निश्चय का संचार हुआ।" इसके कुछ ही दिनों बाद शिवनाथ शास्त्री ने नौकरी छोड़ दी। शिवनाथ शास्त्री के नेतृत्व में यह जो समिति स्थापित हुई थी इसके संबंध में विशेषता यह है कि इस समिति के लोग राजनैतिक स्वतन्त्रता के साथ साथ समाज तथा धर्म के सम्बन्ध में भी प्रगतिशील विचार रखते थे। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि ये लोग सामाजिक तथा धार्मिक मामलों में ब्रह्मसमाज के उन्नत विचारों से प्रभावित थे। श्री विपिनचन्द्र पाल इस समिति के सदस्य थे। यह समिति १८७६ में स्थापित हुई थी।

समितियों का अर्थ

इन समितियों ने कोई विशेष कार्य नहीं किया। ये लोग जिस कदम को उठा चुके थे, उसके तार्किक परिणाम तक नहीं गये, एक तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्हें वह तार्किक परिणाम क्या है यह शायद मालूम नहीं हो सकता था, और दूसरा यदि मालूम भी था तो उस तक जाने की प्रवृत्ति या साहस उसमें शायद नहीं था, फिर भी ये समितियाँ इस बात को बताती हैं कि किस प्रकार इस युग में वह तबका भी जो तुलनात्मक रूप से सुखी था, तथा जिसे कोई विशेष कष्ट नहीं था, वह भी अङ्गरेजों के विरुद्ध होता जा रहा था। इन समितियों में जो लोग थे, वे बाद को कोई बहुत बड़े क्रान्तिकारी नहीं हुए, पर यह तो सत्य है कि उनके विचार उस युग को देखते हुए बहुत प्रगतिशील थे, और उनके चरित्र बहुत ही शुद्ध रहे। वे जहाँ भी रहे कुछ न कुछ समाज सेवा अवश्य करते रहे।

इण्डियन एसोसियेशन भारतीय संस्था

अब हम फिर भारत सभा या इण्डियन एसोसियेशन के इतिहास पर लौटते हैं। जैसा कि नाम से ही ज्ञात है इस सभा को अखिल भारतीय दृष्टि से संगठित किया गया था। पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्या सागर तथा जस्टिस द्वारकानाथ मित्र बंगाल एसोसियेशन नाम से एक सभा संगठित करना चाहते थे, पर सुरेन्द्रनाथ ही ने कहा कि नहीं इस सभा को अखिल भारतीय दृष्टि कोण से संगठित करना चाहिये। यों तो इण्डियन लीग भी अखिल भारतीय दृष्टिकोण रखती थी, पर उसका यह विचार कागज पर ही रह पाया, अवश्य उसे मौका भी कम मिला। पर इण्डियन एसोसियेशन की शाखायें भारत भर में फैली और सुरेन्द्रनाथ ने जब भी कोई बात उठाई तो सारे भारत का दौरा कर डाला।

रंग भेद का प्रभाव

हमने यह दिखलाया है कि भारतीय अङ्गरेजी शिक्षित वर्ग भी धीरे धीरे अङ्गरेजों से नाराज होता जा रहा था, इसका सबसे बड़ा कारण नौकरियों में गोरे काले का भेद था। शिक्षित भारतीयों को शुरू से ही यह बात बहुत अखरती थी कि गोरों को तो नौकरी मिले और भारतीयों को बड़ी नौकरियां न मिले। भारतीयों की सबसे बड़ी नौकरी जिला मैजिस्ट्रेटी और कमिश्नरी थी। इसके आगे तो उस जमाने में कोई कल्पना ही नहीं कर सकता था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिविल सर्विस और भारतीय

१८५३ में यह तय हुआ था कि सिविल सर्विस प्रतियोगिता मूलक होगी, और उम्मीदवारों की उम्र २३ से कम होगी। उम्मीदवारों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद फौरन नौकरी नहीं दी जाती थी। इसके बाद उन्हें दो साल तक अप्रेंटिस रहना पड़ता था। १८५६ में इन नियमों में परिवर्तन हुआ, और अब नये नियम के अनुसार सिविल सर्विस परीक्षार्थी की उम्र घटाकर २२ कर दी गई और अप्रेंटिसी का समय एक साल कर दिया गया। सबसे मजे की बात यह थी कि कहने को तो परीक्षा प्रतियोगिता मूलक थी, पर व्यवहार में कुछ ऐसे नियम रखे गये थे जिससे गोरे तथा भारतीय परीक्षार्थी में इतना प्रभेद पड़ जाता था कि किसी भी हालत में भारतीय परीक्षार्थी के लिये गोरे परीक्षार्थी का मुकाबला करना कठिन था। गोरे परीक्षार्थी ग्रीक और लैटिन लेकर परीक्षा देते थे, और भारतीय परीक्षार्थी संस्कृत या अरबी लेते थे। साधारण बुद्धि की बात तो यही थी कि इन दोनों तरह के विषयों पर एक से नम्बर होते, पर नहीं। संस्कृत और अरबी में केवल ३७५ नम्बर थे, और ग्रीक और लैटिन में ७५० नम्बर थे। यह बड़ी अद्भुत व्यवस्था थी। सबसे आश्चर्य की बात है कि पाश्चात्य प्रतिभा के अनन्य प्रशंसक भी काले नम्बरों का यह तारतम्य कायम कर गये थे। इस व्यवस्था से पता चलता है कि किस प्रकार ऊपर से बराबरी का दावा होने पर भी भीतर भीतर किस प्रकार वे डरते थे, तभी तो ये पेंचे थीं। खैरियत यह हुई कि १८५६ में संस्कृत और अरबी का नम्बर बढ़ा कर ५०० कर दिया गया। कहना न होगा कि फिर भी भारतीयों को बहुत असुविधा रही। २५० नम्बर का फर्क बहुत अधिक होता है। इसमें आश्चर्य नहीं कि इस बीच में जितने भारतीय परीक्षार्थी गये, वे सब के सब असफल रहे। ताज्जुब तो यह है कि इस पर भी श्री सत्येन्द्रनाथ ठाकुर इस परीक्षा में कृतकार्य रहे। यद्यपि दस साल में एक श्री ठाकुर ही इस परीक्षा में कृतकार्य रहे, फिर भी अधिकारियों में इससे इतनी खलबली मची कि नम्बर घटाकर फिर ३७५ कर दिया गया। हम जानते हैं कि बाद के दृष्टिकोण से सिविल सर्विस के इस इतिहास का कोई मूल्य नहीं है, पर साम्राज्यवादी न्याय के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमूने को दिखलाने के लिये तथा इस बात को स्पष्ट करने के लिये क्यों अङ्गरेजी पढ़े लिखे वर्ग अङ्गरेजी साम्राज्य के विरुद्ध होते जा रहे थे हमने इसका कुछ ब्यौरा दे दिया।

रोकथाम के लिए सब्ज बाग

इस तरीके के व्यवहार पर शिक्षित भारतवासियों में जो असंतोष उत्पन्न हो चुका था, उसपर रोक थाम करने के लिये १८७० में यह कानून बना कि भारत सरकार को चाहिये कि योग्य भारतीयों को सिविल सर्विस के अनुसार ओहदों पर नियुक्त किया जाय। इस कानून में यह भी बताया गया कि सिविल सर्विस के पदों के $\frac{1}{6}$ पर भारतीयों को नियुक्त किया जाय, पर यह केवल सब्ज बाग रहा। बल्कि १८७६ की २४ फरवरी को सिविल सर्विस के परीक्षार्थियों की उम्र घटाकर १६ कर दी गयी।

लार्ड लिटन के स्पष्ट मन्तव्य

सरकार कब चाहती थी कि इन पदों पर भारतीयों की नियुक्ति हो? इन्हीं दिनों भारत के बड़े लार्ड लिटन ने एक गुप्त पत्र में यों लिखा—"भारतीयों की यह जो मांग है कि सिविल सर्विस में उन्हें नियुक्त किया जाय, कभी मानी नहीं जा सकती। इसलिये दो ही रास्ते हैं, एक तो यह कि उनसे साफ साफ कह दिया जाय कि तुम लोगों को इस पद पर नहीं लिया जायगा, और दूसरा यह कि उन्हें धोखा दिया जाय, और सब्ज बाग दिखाया जाय। हम लोगों ने दूसरे मार्ग को ही चुना है। एक तो इंगलैंड में जाकर भारतीयगण परीक्षा दें, तिसपर परीक्षार्थियों की उम्र बराबर घटे इन बातों का उद्देश्य यह है कि इस सम्बन्ध में जो वादे किये गये हैं, उन्हें तोड़ दिया जाय। मैं जो पत्र लिख रहा हूँ, वह एक गुप्त पत्र है, इसलिए इस बात को कहने में हर्ज नहीं है कि हमने जिस बात का का वादा किया है कार्य रूप में उसका पालन नहीं किया है। इस पर कोई यदि हमसे जवाब तलब करे तो हम कुछ कह नहीं सकते।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आई० सी० एस० परीक्षा की उम्र घटने पर विरोध

१८७६ में नियम बना जिसके अनुसार सिविल सर्विस के परीक्षार्थियों की उम्र घटा दी गयी। इसके विरुद्ध देश भर में आन्दोलन हुआ। सुरेन्द्रनाथ के नेतृत्व में इस पर बंगाल भर में सभायें तो हुई हीं, और यह तय हुआ कि समस्त भारतीयों की तरफ से इस सम्बन्ध में एक मेमोरियल तैयार किया जाय और उसे पार्लियामेंट में भेजा जाय।

सुरेन्द्रनाथ द्वारा आन्दोलन

सुरेन्द्रनाथ ने जनमत तैयार करने के लिये सारे भारतवर्ष का दौरा किया, और सब जगह सभायें हुईं। उन्होंने इस सम्बन्ध में पंजाब, बम्बई, मद्रास आदि प्रान्तों का भ्रमण किया, और वहाँ के जननेताओं से भेंट की। वे इलाहाबाद में पण्डित अयोध्यानाथ, लाहौर में सरदार दयालसिंह मजिठिया, लखनऊ में पण्डित विश्वम्भरनाथ, महमूदाबाद के राजा, सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि हरिश्चन्द्र, फिरोजशाह मेहता, महादेव गोविन्द रानाडे, काशीनाथ त्र्यम्बक तेलंग आदि सब नेताओं से मिले, और सबने उनके मत का समर्थन किया।

लालमोहन घोष विलायत में

इसके पहले भी पार्लियामेंट में मेमोरियल भेजे जाते थे, पर अब की बार यह तय हुआ कि मेमोरियल को लेकर एक भारतीय नेता स्वयं इंगलैंड जाय, और पार्लियामेंट के सामने अपनी मांग पेश करे। तदनुसार भारत सभा ने बैरिस्टर लालमोहन घोष को इस काम के लिये चुना। लालमोहन ने विलायत जाकर बहुत से स्थानों पर व्याख्यान दिया। उन दिनों जान ब्राइट चमक रहे थे। उन्हीं के सभापतित्व में पार्लियामेंट भवन में एक सभा हुई, जिसमें लालमोहन ने इस सम्बन्ध में भारतीयों की मांग का स्पष्टीकरण किया।

२४ घण्टे में असर

इस व्याख्यान का इतना असर पड़ा कि कहा जाता है कि २४ घण्टे के अन्दर ही लार्ड सलिसबरी ने १८७० में बनाये हुये नियम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को कार्यान्वित करने का वचन दिया। सिविल सर्विस तो खैर जहाँ की तहाँ रही। अब स्टैच्यूटरी सिविल सर्विस नाम से एक घटिया सिविल सर्विस का प्रबन्ध किया गया। इस सिविल सर्विस में जिन लोगों को लिया जाने वाला था, उनके अधिकार बहुत कम करार दिये गये। पहलेवाली सिविल सर्विस कावेनेन्टड सिविल सर्विस कहलायी। घटिया सिविल सर्विस के लोगों को तनख्वाह पहले की सिविल सर्विस की दो तिहाई होनेवाली थी। इसके अलावा वे उच्च पदों पर नियुक्त नहीं होनेवाले थे। इस समय इस आन्दोलन का यहीं तक असर हुआ। कहना न होगा कि इससे जनमत सन्तुष्ट नहीं हो सका। अब भी आन्दोलन सम्पूर्णरूप से आवेदन निवेदन के दायरे में ही था, पर इस समय भारतीय जनमत को बड़े पैमाने पर संगठित करने की जो चेष्टा की गई, वह एक बड़ा कदम था।

१८७७ का दरबार

१८७६ में ब्रिटिश सरकार ने यह तय किया कि महारानी विक्टोरिया को भारत की सम्राज्ञी घोषित किया जाय। तदनुसार १८७७ की पहली जनवरी को दिल्ली में एक बहुत शानदार दरबार हुआ, जिसमें महारानी की इस नयी उपाधि की बात घोषित की गयी। इस अवसर पर देशी राजाओं को तरह तरह के खिताब भी दिये गये। उस युग में शिक्षित वर्ग आम तौर से राजभक्त था, कम से कम उनका प्रकाश्य रूप यही था। फिर भी राजाओं को जो उपाधि दी गयी, उसकी कुछ लोगों ने यह कह कर समालोचना की कि जब देशी राज्य स्वतंत्र है भला उन्हें इस प्रकार खिताब देने का क्या अर्थ हो सकता है। इस दरबार के अवसर पर जो पानी की तरह धन बहाया गया, उसकी भी समालोचना हुई और लोगों ने यह कहा कि उस समय मद्रास, बिहार आदि प्रान्तों में जो दुर्भिक्ष हो रहा है, यदि उनमें ये रुपये खर्च होते तो हजारों लोगों की जानें बच जातीं।

वर्नाक्युलर ऐक्ट

इसी के बाद १८७८ के १४ मार्च को वर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट के द्वारा अंगरेजी के अलावा सब भाषाओं के पत्रों पर रोक लगा दी गयी। इस का नतीजा यह हुआ कि उस युग के कई प्रसिद्ध बंगला अखबार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशन बन्द कर देने के लिये बाध्य हुए। इस सिलसिले में अमृत बाजार पत्रिका का नाम विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि उसने करीब करीब एक तहर से रात भर में अपने को एक बंगला पत्र से एक अंगरेजी पत्र में परिणत कर दिया, और इस प्रकार इस कानून के शिकंजों से बच गया।

असन्तोष का दमन

इस समय अफगान युद्ध के कारण भी लोगों में असंतोष था। लोग अब इतना सज्ञान हो चुके थे कि वे यह नहीं चाहते थे कि और भी देश पराधीनता की जंजीर में जकड़े जांय। भारतीय सरकार को यह पता था कि देश में असंतोष है। सरकार ने इस असंतोष को दूर करने के बजाय इस बात की ओर ध्यान दिया कि कैसे इस असंतोष का मुकाबिला किया जाय, और जनमत को उभड़ने नहीं दिया जाय।

अस्त्र कानून काप्रवर्त्तन

तदनुसार इस समय आर्मस ऐक्ट याने अस्त्र कानून पास किया गया, जिसके अनुसार बिना लाइसेंस के बन्दूक तमांचा यहां तक कि तलवार रखने की मुमानियत हो गयी। यह मुमानियत केवल भारतीयों के ही लिये थी।

लार्ड रिपन के सुधार

इस प्रकार एक तरफ तो देशी अखबारों का गला घोंट दिया गया, और दूसरी तरफ लोगों से अस्त्र शस्त्र छीन लिये गये। सरकार ने इस बात की कोई गुंजाइश ही नहीं रखी कि लोग विद्रोह कर सकें। पर असंतोष बढ़ता ही गया, इसके कई कारण हुए। पता नहीं यह असंतोष बढ़ते बढ़ते कहां तक बढ़ता, पर इस बीच में १८८० में इंगलैंड में जो चुनाव हुआ उसमें कानजर्वेटिव पार्टी हार गयी, और ग्लेडस्टोन की पार्टी विजयी हुई। इसके पहले ग्लेडस्टोन ने पहले की सरकार की भारतीय नीति की सार्वजनिक रूप से निन्दा की थी। उन्होंने वर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट यहां तक कि आर्मस ऐक्ट की भी निन्दा की थी। जब उनकी पार्टी की सरकार बनी, और लार्ड लिटन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पद त्याग कर के चले गये, तो लार्ड रिपन आये। उन्होंने आते ही बर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट को रद्द कर दिया। अवश्य आर्मस ऐक्ट जहां का तहां रहा। उनके सब से बड़े कार्यों में यह है कि उन्होंने स्थानीय स्वायत शासन को चालू किया म्युनिसिपेलटियां तो इससे पहले ही कहीं कहीं बन चुकी थीं, पर इन म्युनिसिपैलटियों पर जनता का नियंत्रण नहीं था। सुरेन्द्रनाथ बहुत दिनों से इस बात का आन्दोलन कर रहे थे कि म्युनिसिपैलटियों पर जनता का नियंत्रण होना चाहिये। लार्ड रिपन ने इस सम्बन्ध में एक कानून बनाया जिससे म्युनिसिपैलटियों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों पर जनता का नियंत्रण बहुत कुछ मान लिया। लार्ड रिपन ने बाद को चल कर किसानों के भी कुछ अधिकार भी बढ़ा दिये।

रिपन भी साम्राज्यवादी

लार्ड रिपन लिटन के मुकाबिले में कुछ सुधार देने में समर्थ होने पर भी वे आखिर एक साम्राज्यवादी सरकार के नौकर पात्र थे। वे अधिक क्या करते। उन्होंने किसानों के अधिकारों को थोड़ा बहुत बढ़ा दिया और उन्हें कुछ हद तक जमींदारों के जुल्म से बचाया, पर फिर भी इससे जो फायदा हुआ वह बहुत कम था। नये कानून से किसानों का यह तय हो गया कि यदि किसान १२ साल तक लगातार जमीन को जोत चुका हो तो उसका उस पर साधारण हक हो गया, और यह भी तय हुआ कि जमींदार लगान पाने की रसीद दे।

इलबर्ट बिल

व्यक्ति गत दृष्टि से देखने पर लार्ड रिपन ने जिस बात में सब से बड़ा साहस दिखाया वह इलबर्ट बिल था। हम पहले ही बता चुके हैं कि अन्य प्रभेदों के अतिरिक्त अदालतों के सामने भी गोरे और कालों में भेद था। यह बात शिक्षित भारतवासियों को यहां तक कि भारतीय राजकर्मचारियों को बहुत अखरती थी। जिस वार सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने आइ० सी० एस० पास किया था, उसी बार श्री रमेशचन्द्र दत्त तथा बिहारीलाल गुप्ता ने भी आइ० सी० एस० पास किया था। बिहारीलाल गुप्ता कलकत्ता में प्रेसीडेन्ट मैजिस्ट्रेट को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगह पर थे। उसी जमाने में रमेशदत्त राजधानी के बाहर किसी जिले के जिला मैजिस्ट्रेट थे। छात्र जीवन के बाद भी रमेशदत्त और बिहारीलाल गुप्ता में सम्बन्ध बना हुआ था। रमेशदत्त ने एक बार बात चीत में बिहारीलाल गुप्ता से यह कहा कि मुझे यह हक नहीं है कि मैं किसी गोरे का मुकदमा अपनी अदालत में करूं, पर मेरे नीचे जो गोरे मैजिस्ट्रेट है उनको यह अधिकार है।

बिल की उत्पत्ति

अवश्य ही यह एक बहुत अजीब परिस्थिति थी। श्री बिहारीलाल गुप्ता ने सर ऐसले ईडन के सामने इस बात को रखा। सर ऐसले उन दिनों बंगाल के गवर्नर थे। उन्हें बिहारीलाल गुप्ता की शिकायत उचित मालूम हुई, और उन्होंने उनसे कहा कि आप इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य तैयार करें, मैं इसको आगे बढ़ा दूंगा। तदनुसार श्री बिहारीलाल ने एक वक्तव्य तैयार किया, और उसे गवर्नर के सामने रखा। गवर्नर ने उसे वायसराय के यहां बढ़ा दिया। लार्ड रिपन ने जब इस मामले का अध्ययन किया, तो उन्हें भी यह बात ठीक जँची, और उन्होंने कानून सचिव सर कोर्टनी इलबर्ट को यह हिदायत दी कि आप इस सम्बन्ध में मौजूदा कानून में सुधार कर एक बिल बनावें। यही बिल इलबर्ट बिल नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गोरों में क्षोभ

ज्योंही गोरों को यह बात मालूम हुई, उन्होंने इस बिल के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन शुरू किया। २८ फरवरी १८८३ को कलकत्ता के टाउन हाल में बिल के विरोधियों की एक सभा हुई, जिसमें भारतीयों को पानी पी-पीकर कोसा गया। वक्ताओं ने केवल भारतीयों को ही नहीं, उन गोरों को जिन्होंने इस बिल में हाथ बँटाया था, यहां तक कि लार्ड रिपन को भी हजारों गालियाँ दीं। इस सभा में कलकत्ता के प्रसिद्ध गोरा बैरिस्टर ब्रेनसन ने तो हद करदी। इस अवसर पर इस महाशय ने इतना नाम कमाया कि इलबर्ट बिल का विरोध ब्रेनसनवाद कहलाया। इस सभा में जो प्रस्ताव पास हुआ, उसमें इस बिल को अनावश्यक बताते हुए यह कहा गया कि इसके द्वारा गोरों के बहुत पुराने अधिकार छीन लिये गये, और ऐसा करने से भारतीयों को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ फायदा नहीं हुआ। इस प्रस्ताव में यह और भी कहा गया कि इस प्रकार के बिल पास हो जाने से भारत में ब्रिटिश पूंजीपति अपनी पूंजी लगाने से घबड़ायेंगे, और राजधानी के बाहर जो गोरे रहते हैं उनकी जान तथा बहू-बेटियों की इज्जत खतरे में पड़ जायेगी। सरकार को इस बात से भी अगाह किया गया कि इस बिल के कारण जातीय विद्वेष फैला है, इतना कि १८५७ के बाद कभी नहीं फैला था।

ब्रेनसन का टिकट कटा

भारतीयों ने भी इस विषय को लेकर आन्दोलन किया। मिस्टर ब्रेनसन के मुवक्किल भारतीय ही होते थे। अब भारतीय एटर्नियों ने यह तय किया कि ब्रेनसन को एक भी मुकदमा नहीं दिया जायेगा। ब्रेनसन इस बात पर इतना घबड़ाया कि उसने भारतीयों के विरुद्ध जो मन्तव्य किये थे उनके लिये माफी मांगी, पर भारतीय इतने से सन्तुष्ट नहीं हुए। ब्रेनसन ने इलबर्ट बिल पर अपनी राय नहीं बदली थी। अन्त तक ब्रेनसन की यह हालत हुई कि उसे यहाँ प्रैक्टिस की आशा छोड़कर इंगलैंड चल देना पड़ा।

गोरों द्वारा रिपन के विरुद्ध षडयंत्र

फिर भी गोरों का आन्दोलन खतम नहीं हुआ। मिस्टर बकलैंड ने लिखा है कि "कलकत्ते के कुछ गोरों ने इस बात के लिये षड़यन्त्र कर लिया था कि यदि वायसराय इस कानून पर अड़े रहे, तो वे लोग वायसराय भवन के संतरियों को काबू में करके वायसराय को गिरफ्तार कर चांदपालघाट में एक स्टीमर पर बैठा देंगे, और उन्हें कमोरिन अन्तरीप होते हुए इंगलैंड भेज देंगे। इस षडयंत्र के सम्बन्ध में छोटे लाट साहब तथा अन्य जिम्मेदार अफसरों को पता था।" गोरों ने इस समय एक डिफेन्स एसोसियेशन याने आत्मरक्षा समिति भी बनायी थी। बाद को चलकर जो योरोपियन एसोसियेशन बना, वह इसीका विकसित रूप है।

बिल का रूप बदला

गोरों के प्रबल आन्दोलन के कारण जिस रूप में कानून का मशविदा बना था, उस रूप में यह कानून पास न हो सका। १८८३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की २८ जनवरी को यह कानून इस रूप में पास हुआ कि देखने के तो प्रत्येक भारतीय हाकिम को यह हक प्राप्त हुआ कि वह अपनी अदालत में किसी गोरे के मुकदमें की सुनायी करे, पर गोरा मुलजिम को भी यह अधिकार हुआ कि वह यह मांग करे कि जूरी में से आधे गोरे हों। चूंकि राजधानी के बाहर जूरी के लिये इतने गोरे मिलना आसान नहीं था, इसलिये होता यह था कि मुकदमा दूसरे जिले में भेज दिया जाता था या उसी जिले के किसी गोरे हाकिम के इजलास में भेजा जाता था। इन कारणों से परिस्थिति करीब करीब जहां की तहां रही।

हार से लाभ ही हुआ

यह सत्य है कि इलबर्ट बिल जिस रूप में पास हुआ, उससे भारतीय जनमत की कोई विशेष जीत नहीं हुई, पर एक उदीयमान जाति की अग्रगति में इस प्रकार की हारें भी बहुत महत्त्व रखती है। सच तो यह है कि इस अवसर पर भारतीय जनमत की विजय होती, तो उससे उनके मन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में कुछ भ्रम पैदा हो सकते थे, जिससे बहुत हानि होती, पर इस प्रकार जनमत की जो पराजय हुई, उससे लोगों में बृहत्तर लक्ष्यों के लिये एका तथा संगठन की शक्ति आ गयी। लोगों का ध्यान बुनियादी प्रश्न की ओर गया। इससे जाति को बहुत फायदा हुआ। हाँड़ी गई, पर कुत्ते की जाति तो पहचानी गई।

राष्ट्रीयता को नस्ली उपादान क्यों ?

हम फिर इस अवसर पर एक बात पर ध्यान दिलाना चाहते हैं। यह अक्सर कहा जाता है, विशेष कर अपने को मार्क्सवादी कहने वाले कुछ लोग अक्सर यह कह देते हैं कि भारतीय राष्ट्रीयता में नस्ली या Racial उपादान है। अवश्य ही यह बात अच्छी नहीं है। कोई किसी खास नस्ल में पैदा हुआ है, गोरा है या काला है। इसी पर उसको भला या बुरा मान लेना गलत है, पर साथ ही इतिहास लेखक का यह भी तो काम है कि वह दिखावे कि यदि किसी विशेष भावना के साथ कोई विशेष भावना संयुक्त हो गयी है, तो उसका क्या कारण है। ब्रेनसन ऐसे दुष्ट अंगरेजों के कारण ही भारतीय राष्ट्रीयता में नस्ली उपादान आ गये। जिस समय इलबर्ट बिल के विरुद्ध गोरे आन्दोलन कर रहे थे, उस समय उन्होंने अपने सार्वजनिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंचो से तथा पत्रों में यह कहा कि भारतीय तो गुलाम जाति है. वे हमेशा गुलाम रहे हैं, उन्हें भला गोरों के साथ बराबर नागरिक अधिकार कैसे दिये जा सकते हैं। ऐसी युक्तियों की जो प्रतिक्रिया होनी चाहिये थी, वह हुई। औपनिवेशिक देशों में बल्कि जहां भी एक जाति ने दूसरी जाति को पराधीन बनाया है, वहां की जातीयता में नस्ली उपादान का आ जाना बिल्कुल स्वाभाविक है। मैं केवल इतना ही नहीं कहता, मैं तो यहां तक कहता हूं कि यदि आत्म ज्ञान सम्पन्न नेतृत्व हो, और वह अन्तिम लक्ष्य याने मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के लक्ष्य को न भूले तो वह इस उपादान का प्रगतिशील उपयोग भी कर सकता है।

नारिस के विरुद्ध क्षोभ

इसी युग में एक और घटना हुई जिससे जनता में बहुत तहलका मचा। एक मुकदमे के सिलसिले में यह प्रश्न उठा कि जिस शालिग्राम शिला का प्रश्न है, वह पुराना है अथवा नया। इस पर कलकत्ता हाई कोर्ट के मिस्टर जस्टिस नारिस ने यह हुक्म दिया कि बड़ा बाजार के बटुकनाथ पंडित अपनी इस शालिग्राम शिला को अदालत में पेश करे, जिससे कि उसके सनाख्त की कार्यवाही हो सके। इस पर Brahmo public opinion के सम्पादक भुवन मोहनदास ने अपने अखबार के १८८३ के अप्रैल वाले अंक में टीका करते हुए जज की ज्यादती की निन्दा की। उन दिनों सुरेन्द्रनाथ अंगरेजी पत्र "बंगाली" के सम्पादक थे। इन्होंने भी १८८३ के २८ अप्रैल के अंक में लिखा "इसी समय हमारे बीच में एक जज साहब मौजूद है जो यदि जेफरी और स्क्राग आदि के युग की याद नहीं दिलाते, तो कम से कम जब से वे हाई कोर्ट में हैं, तब से उनके इतने कारनामे हो चुके हैं कि यह मालूम होता है कि वे उस मर्यादा की परम्परा को कायम रखने में असमर्थ हैं जो मर्यादा अब तक देश की सब से बड़ी अदालत की विशेषता रही है।"

जनमत क्षुब्ध

यह स्मरण रहे कि श्री भुवन मोहनदास (देश बन्धुदास के पिता) तथा सुरेन्द्रनाथ दोनों में से एक भी सनातन धर्मी नहीं थे, उन्होंने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने लेखों में केवल जनमत को प्रतिफलित किया था। गोरों के मुखपत्र इंगलिश मैन से यह पता चलता है कि उस जमाने में जनमत जस्टिस नारिस के इस कदम के कितने विरुद्ध था। उन दिनों इंगलिश मैन ने लिखा था "जस्टिस नारिस हिन्दू मूर्ति को अदालत में ले आये थे, उससे भारतीय जनमत बहुत क्षुब्ध हुआ।" इंगलिश मैन की इस रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि उस युग में जनमत कितना क्षुब्ध था, और क्यों सनातनी न होते हुए भी श्री भुवन मोहनदास सुरेन्द्रनाथ ने इस विषय पर लिखा था।

सुरेन्द्रनाथ को सजा

जस्टिस नारिस सुरेन्द्रनाथ की इस टिप्पणी को पी नहीं गये। उन्होंने झट से उन पर अदालत की अमर्यादा का मुकदमा चलाया। मजे की बात यह है कि इस पर पत्र में सम्पादकीय तौर पर सुरेन्द्रनाथ ने इस विषय पर अफसोस जाहिर किया, फिर भी फुल बेंच के सामने उन पर मुकदमा चला, और उन्हें दो महीने की सादी कैद दे दी गयी। फुल बेंच के जजों में जस्टिस रमेशचन्द्र मित्रा ने यह राय दी थी कि चूंकि ऐसे ही एक मामले में भूतपूर्व जस्टिस सर वार्मस पीकाक ने केवल जुर्माना ही किया था, इस लिये अभियुक्त पर जुर्माना किया जाय, पर अधिकांश जजों की राय में विशेष कर चीफ जस्टिस सर रिचार्ड गार्थ ने सजा देने की ही राय दी थी। अतएव सुरेन्द्रनाथ को सजा दी गयी।

अदालत के सामने प्रदर्शन

१८८३ की पांच मई को सुरेन्द्रनाथ का फैसला सुना दिया गया। उस दिन अदालत भवन के सामने छात्रों का एक बड़ा भारी जुलूस आया था। बाद के चीफ जस्टिस और कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रधान निर्माता सर आशुतोष मुखर्जी छात्रों का नेतृत्व कर रहे थे। जुलूस में देशबन्धुदास भी थे। कहा जाता है कि इस अवसर पर एक मजेदार घटना यह हुई कि प्रसिद्ध पहलवान परेशनाथ घोष पुलिस को मदद करने के बहाने पुलिस और छात्रों के बीच में जाकर खड़े हो गये, पर उन्होंने अपने पैरों को इस तरह से खोल रखा कि उनकी टांगों के नीचे से होकर छात्र हाई कोर्ट के भवन के अन्दर घुस गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सजा से देश में जोश

सारे भारत में विशेषकर बंगाल भर में इससे भयंकर जोश फैला। श्री आनन्द मोहन वसु ने इंडियन एसोसियेसन की कार्यवाही में लिखा—"इस मौके पर जैसे अशुभ से शुभ का उद्‌भव हुआ, ऐसा कभी नहीं हुआ था। इस मामले में सर्वत्र जितना क्रोध तथा क्षोभ का उद्रेक हुआ, विभिन्न प्रान्तों के लोगों में जिस तरह पारस्परिक प्रीति की भावना बढ़ी, जिस तरह एका का प्रदर्शन हुआ, ऐसा कभी नहीं हुआ था।"

अखिल भारतीय संगठन की मांग

जिस समय सुरेन्द्रनाथ जेल में ही थे, उसी समय लोगों ने इस बात का अनुभव किया कि आन्दोलन को ढंग से चलाने के लिये इस बात की आवश्यकता है कि एक राष्ट्रीय कोष बने। १८८३ के २१ जून के ब्राह्म पबलिक ओपिनियन में इस सम्बन्ध में एक लेख भी निकल गया। इसके साथ इस बात को आवाज उठने लगी कि सही मानों में एक अखिल राष्ट्रीय संगठन होना चाहिये। कृष्णनगर के वकील नेता श्री तारापद्दो बन्द्योपाध्याय ने इस सम्बन्ध में अपने विचारों को नेताओं के सामने रखा। उन्होंने इंडियन मिरर नामक पत्र की ४ जुलाई वाले अंक में एक पत्र भी लिखा जिसमें उन्होंने अपने प्रस्ताव का विशदीकरण करते हुए लिखा कि प्रतिनिधि मूलक शासन कायम करने के लिये एक तो एक राष्ट्रीय असेम्बली कायम की जाय, और दूसरा एक राष्ट्रीय फंड हो। उन्होंने अपने ढंग से यह भी कहा कि इन दोनों की कल्पना को अलग नहीं किया जा सकता है, दोनों का सम्बन्ध वैसा ही है जैसे पुरुष प्रकृति का सम्बन्ध है। मालूम होता है यह तारापद्दो बाबू बहुत अग्रगामी विचारों के थे। उन्होंने खैर यह तो कहा ही कि इंगलैंड में भारतीयों की मांग के सम्बन्ध में आन्दोलन करने के लिये भारत का एक स्थायी एलची वहां पर रहे पर इसके साथ ही कहा कि भारत में जनमत तैयार करने के लिये कुछ राजनैतिक मिशनरी भी हों। ये लोग जनता को शिक्षा देने के अतिरिक्त जगह जगह पर राष्ट्रीय कायम करें तथा राष्ट्रीय शिल्प को प्रोत्साहन दें। इसके साथ ही प्रस्ताव में यह भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा गया कि जो लोग शिल्प में विशेष दक्षता दिखलावें या जो उसके सम्बन्ध में किसी यंत्र का आविष्कार करें, उनको तमगा आदि दिया जाय। इस योजना को कार्यान्वित करने के साथ साथ विभिन्न धर्म के लोगों में प्रेम भाव कायम रखना यह इन मिशनरियों का काम बताया गया। राष्ट्रीय असेम्बली भी इसी आधार पर बनेगी।

सुरेन्द्रनाथ का स्वागत

जिस दिन के इंडियन मिरर में तारापदो बन्दोपाध्याय का यह पत्र प्रकाशित हुआ था, उसी दिन सुरेन्द्रनाथ छूटे। उनको जगह जगह पर मानपत्र दिये गये, विशेष कर छात्रों ने उनको सिर पर चढ़ा कर स्वागत किया। उन्होंने सैकड़ों सभाओं में भाषण दिया। इन अवसरों पर वे जब भी लोगों से अपने व्याख्यान में पूछते कि तुममें से कौन गैरीवाल्डी और मेजिनि होगा, तो इसके उत्तर में सभा के सभी लोग कहते थे हम होंगे हम होंगे। यह शायद किसी बड़े सार्वजनिक नेता के जेल जाने का पहला ही अवसर था, इसलिये सुरेन्द्रनाथ को अभूतपूर्व स्वागत हुआ, वह उचित ही था।

अखिल भारतीय संस्था के लिये उद्योग

सुरेन्द्रनाथ जेल से निकल कर जोशीली भाषा में लोगों में देश भक्ति का प्रचार तो करते ही रहे, पर साथ ही उन्होंने ठोस काम की ओर भी हाथ बढ़ाया। सुरेन्द्रनाथ के लिये यह एक बहुत प्रशंसा की बात थी, और जिस बात को उनके किसी भी जीवनी लेखक ने अच्छी तरह समझ नहीं पाया, वह यह है कि इंडियन एसोसियेशन के होते हुए भी और बंगाल के बाहर भी उसका कुछ प्रचार होने पर भी उन्होंने इस बात को महसूस किया कि एसोसियेशन से पूरा काम नहीं चल सकता। उन्होंने यह अनुभव किया कि एक बृहत्तर संस्था की आवश्यकता है। तदनुसार उन्होंने बाहर के नेताओं से पत्र व्यवहार शुरू किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १३ :

कांग्रेस का जन्म

१८८३ की कानफरेन्स

इस पत्र व्यवहार के फल स्वरूप इण्डियन एसोसियेसन के उद्योग से १८८३ के दिसम्बर में एक राष्ट्रीय कानफरेन्स बुलायी गयो। इस राष्ट्रीय कानफरेन्स का २८,२९ ३० दिसम्बर तीन दिन तक कलकत्ता के इलवर्ट हाल में अधिवेशन हुआ। रोज नये नये सभापति होते थे। पहले दिन बूढ़े नेता रामतनु लाहिड़ी ने सभापतित्व किया। दूसरे दिन कालीमोहनदास तथा तीसरे दिन अन्नदाचरण आस्तगीर ने सभापतित्व किया। लोगों के मन में यह विचार था कि बाद को चलकर जो संस्था राष्ट्रीय पालियामेंट के रूप बनेगी, यह उसी का पहला स्तर है। आनन्दमोहन वसु ने सभास्थल में यही बात कही। इन अधिवेशनों में उन दिनों की भारतीय मध्यवित्त श्रेणी की सब मांगे आ गयीं। पहली मांग तो यह रखी गयी कि सिविल सर्विस में भारतीयों को गोरों के साथ बराबरी में ले, दूसरी बात यह थी कि यह तय किया गया कि राष्ट्रीय फण्ड की स्थापना हो, इनके अतिरिक्त ये मांगे भी थीं कि प्रतिनिधि मूलक धारा सभा बने, शिक्षा विशेषकर शिल्प की शिक्षा दी जाय, न्याय विभाग को पृथक कर दिया जाय, हथियार कानून रद्द कर दिया जाय। हम विशेष कर पाठक की दृष्टि अन्तिम मांग की ओर दिलाते हैं।

सुरेन्द्रनाथ का दौरा

ऐसा मालूम होता है कि राष्ट्रीय कानफरेन्स को अखिल भारतीय रूप से जबानी समर्थन प्राप्त होने पर यह राष्ट्रीय कानफरेन्स बहुत कुछ बंगाली मध्यवित नेताओं तक ही सीमित रही। सुरेन्द्रनाथ को इससे खुशी नहीं हुई। १८८४ की मई को फिर भारत भर का दौरा करने निकले। अब की बार वे उत्तर भारत में सर्वत्र घूमे। सर्वत्र उनका स्वागत हुआ। बात यह है कि वे इस बीच में बहुत प्रसिद्ध हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चुके थे, और खैर वे बहुत अच्छा बोलने वाले तो थे ही। अब की बार भी उनके भ्रमण का उद्देश्य सिविल सर्विस के सम्बन्ध में भारतीयों के प्रति किये गये अन्यायों का प्रतिवाद था, पर इसके साथ उन्होंने अबको बार अखिल भारतीय राष्ट्रीय संगठन तथा राष्ट्रीय फण्ड के विषय को भी लोगों के सामने रखा और लोगों को संगठन का महत्व अच्छी तरह समझा दिया।

दौरे का असर

सुरेन्द्रनाथ के इस दौरे का क्या असर हुआ, यह हेनरी काटन लिखित 'न्यू इण्डिया' (१८८५) से ज्ञात होता है। उसमें मिस्टर काटन ने लिखा था—

"शिक्षित समाज ही देश का कण्ठ तथा मस्तिष्क है। इस समय शिक्षित बंगाली ही पेशावर से चटगांव तक लोगों के जनमत का नियन्त्रण कर रहे हैं। यद्यपि उत्तर पश्चिम प्रान्त के लोग बंगालियों के मुकाबिले में कम शिक्षित हैं, फिर भी वे शिक्षितों के नेतृत्व को मानने के लिये उसी प्रकार तैयार हैं। २५ साल पहले इसका कोई भी लक्षण नहीं था। लार्ड लारेन्स मांट गोमरी, मैक लाऊड आदि कभी यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि पंजाब पर बंगालियों का कोई प्रभाव भी पड़ेगा। पर गत साल (१८८४) एक बंगाली नेता जिस समय उत्तर भारत का व्याख्यान देते हुये दौरा कर रहे थे, उस समय वह किसी वीर की दिग्विजय से कम नहीं था। इस समय ढाका से मुल्तान तक सुरेन्द्रनाथ बनेर्जी के नाम से ही युवकों में जोश आ जाता है।

राष्ट्रीय कानफरेन्स का दूसरा अधिवेशन

१८८५ में राष्ट्रीय कानफरेन्स का दूसरा अधिवेशन फिर कलकत्ते में हुआ। अधिवेशन तीन दिन तक २५, २६, २७ दिसम्बर को होता रहा। अबकी बार यह कानफरेन्स कुछ अधिक प्रतिनिधि मूलक थी। इसमें बंगाल के बहुत से स्थानों के अलावा आसाम, इलाहाबाद, बनारस, मेरठ, मुजफ्फरपुर, तिरहुत, बरेली, उड़ीसा आदि से प्रतिनिधि आये थे। दरभंगा के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाराजा तथा बम्बई के वी० एन० मांडलिक भी सभा में उपस्थित थे। इस कानफरेन्स में इण्डियन एसोसियेसन के नेताओं के अतिरिक्त ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेसन, इण्डियन यूनियन तथा सेन्ट्रल मोह-मडन एसोसियेसन के लोग भी मौजूद थे। अबकी बार के सम्मेलन में भी तीन दिन तीन विभिन्न व्यक्तियों ने सभापतित्व किया। दुर्गा चरण लाहा, जयकृष्ण मुखोपाध्याय तथा महाराजा नवकृष्ण ने क्रमशः सभापतित्व किया।

सुरेन्द्रनाथ क्या चाहते थे ?

सुरेन्द्रनाथ के मन में इससे भी बड़ी बात थी यह उनके पहले दिन के भाषण से ही ज्ञात होता है। उन्होंने कहा कि "जिस समय महारानी विक्टोरिया को भारत सम्राज्ञी करके घोषित करने के उपलक्ष्य में १८७७ में दिल्ली दरबार हो रहा था, उस समय उसे देखकर बहुत से लोगों के दिमाग में यह बात आयी थी कि भारतीय समस्याओं पर विचार करने के लिये भारतीयों की भी ऐसी एक अखिल भारतीय संस्था होनी चाहिये। तभी से विभिन्न तरीके से इस विचार को कार्य रूप में अनुवाद करने की चेष्टा की गयी। १८८३ में जो अन्त-र्राष्ट्रीय प्रदर्शनी कलकत्ते में हुई थी, उसका फायदा उठाकर इंडियन एसोसियेसन ने भारतियों को एक राष्ट्रीय कान्फरेंस की कोशिश की थी। यह चेष्टा केवल बंगाल तक ही नहीं, भारत भर में हुई।"

इस भाषण से स्पष्ट है कि सही माने में एक अखिल भारतीय संस्था की आवश्यकता को लोग बहुत जबरदस्त तरीके से अनुभव कर रहे थे। इस अधिवेशन में भी उन्हीं बातों पर आलोचना हुई जिन बातों पर पिछले साल आलोचना हुई थी, तथा वे ही मांगे रखी गयी, जो पिछले साल रखी गयी थी।

बंगाली किस अर्थ में आगे थे ?

इसमें सन्देह नहीं कि इस युग में बंगाल सब प्रान्तों से आगे था, इसी कारण अब तक जो विवरण आया है उसमें मुख्यतः बंगाल की बात ही आयी है। बंगाल में अँगरेजी शिक्षा सबसे पहले आयी इसी कारण बंगाल में कई मामलों में प्रगति सबसे पहले हुई। पर यह स्मरण रहे कि जिस प्रगति का हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं, वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुधारवादी अर्थों में ही प्रगति है। १८५७ के विद्रोह में बंगाल का जो हिस्सा था उसका तो हम पहले ही वर्णन कर चुके।

बंगाल के बाहर हलचल

बंगाल में जो हलचलें हो रही थी उनके अतिरिक्त सारे भारतवर्ष में इस समय तक कुछ न कुछ हलचलें हो रहीं थीं। मद्रास में महाजन सभा (स्थापित १८८१) नाम से एक संस्था काम कर रही थी जिसके नेता 'हिन्दू' के परिचालकजी सुब्रह्मराय ऐयर थे। पूना की सार्वजनिक सभा भी १८७२ से तरह तरह के सामाजिक तथा राजनैतिक कार्य कर रही थी। इस संस्था के नेता गणेशदत्त जोशी थे। ये सुरेन्द्रनाथ से मिले थे तथा एक अखिल भारतीय संस्था के इच्छुक थे। महाराष्ट्र के समाज सुधारक महादेव गोविन्द रानडे इस सभा के नेता थे। तरह तरह के कार्यों के कारण महाराष्ट्र में रानडे बहुत जनप्रिय थे। महाराष्ट्र में इन दिनों विष्णुशास्त्री चिपलूणकर, नीलकंठ जनार्दन कीर्त्तने साहित्य के जरिये से प्रचार कार्य कर रहे थे। विष्णुशास्त्री ने अपने निबन्धों के जरिये महाराष्ट्र में एक नवीन जीवन का संचार किया। इन लोगों ने यह कहा कि "पाश्चात्य में जो कुछ अच्छी चीजें हैं, उन्हें अवश्य ग्रहण किया जाय, पर इस कारण अपनी चीजों का नाश न किया जाय। हम इस समय जिस विपत्ति में पड़े हुए हैं उसमें से निकलने के लिये हमारी अपनी ही चीजें काम देगी। इस कारण अपनी भाषा, अपने धर्म, अपने इतिहास तथा अपनी परम्परा की रक्षा की जाय। नीलकंठ जनार्दन कीर्त्तने ग्रेन्ट डफ के मराठी इतिहास सम्बन्धी गलतियों को दिखलाया। १८७४ में विष्णुशास्त्री की निबन्ध-माला प्रकाशित हुई। स्मरण रहे कि बंकिमचन्द्र का प्रसिद्ध उपन्यास आनन्द मठ इसके बाद १८८२ के दिसम्बर में प्रकाशित हुआ था।

बम्बई की हलचलें

इसी प्रकार बम्बई में १८८५ की जनवरी में बम्बई प्रेसीडेन्सी एसोसियेशन स्थापित हुई। बाद को जो लोग कांग्रेस के बड़े नेता हुए, उनमें से बदरुद्दीन तैयबजी, फिरोजशाह मेहता, दीनशावाचा इस संस्था के सदस्य थे। इस संस्था के पहले बम्बई में १८५१ में बम्बई ऐसोसियेशन नाम से एक संस्था कायम हुई थी। इसके नेताओं में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगन्नाथ शङ्कर सेठ, दादाभाई नौरौजी, मंगलदास नात्थूभाई, नौरोजी फारदूं जी थे।

थियोजाफिकल सोसाइटी का असर

मद्रास के अडियार में थियोजाफिस्टों का मुख्य केन्द्र था। कार्नल आल का और मादम बनावाटस्की ने थियोजोफिकल सोसाइटी की स्थापना की थी। यों तो थियोजोफिकल सोसाइटी एक नवीन समन्वयवादो धर्म के रूप में था, पर इसके नेताओं ने भारतीय दर्शन तथा संस्कृति को जिस तरह अपनाया, उससे तरह तरह के Inferiority Complex अर्थहीनता बोध से पीड़ित भारतीयों को बड़ी राहत पहुँची। थियोजोफिस्ट सोसाइटी के नेताओ ने कहा था—

"A Hindu had no reason to be ashamed of his past and rush for wisdom and inspriration from the matercalistic west" अर्थात् एक हिन्दू को अपने भूतकाल के विषय में लज्जित होने का कोई कारण नहीं है, और न उसे इस बात को आवश्यकता है कि वह भौतिकवादी पाश्चात्य के पीछे ज्ञान और अनुप्रेरणा के लिये दौड़े।

मद्रास की हलचलें

सारे भारतवर्ष में बहुत से उच्च शिक्षित लोग थियोजोफिकल सोसाइटो के सदस्य थे। थियोजोफिस्टों का हर साल एक कानवेंशन हुआ करता था। १८८४ में मद्रास प्रान्त में इसका जो कानवेंशन हुआ, उसके बाद मद्रास के राव बहादुर रघुनाथ राव के घर पर कुछ विशिष्ट व्यक्ति एकत्र हुए, इन लोगों ने यह सोचा कि जिस प्रकार से दार्शनिक विचारों पर आलोचना करने के लिये हर साल सभा होती है, उसी प्रकार भारत की राजनैतिक समस्याओं पर आलोचना करने के लिये एक अखिल भारतीय सभा क्यों न हुआ करे। इस सम्बन्ध में काम करने के लिये आठ व्यक्तियों की एक कमेटी बना दी गई जिनमें इण्डियन मिटट के सम्पादक नरेन्द्रनाथ सेन, जानकीनाथ घोषाल, रघुनाथ राव, और बाद को जो मद्रास के चीफ जस्टिस हुए सुब्रह्मराव ऐयर थे। जनवरी १८८५ में इन लोगों ने भारत भर के नेताओं को पत्र भी लिखा। इस प्रकार मद्रास में भी लोग इसी दशा में सोच रहे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनता में असन्तोष

शिक्षित समाज तो इस प्रकार अपनी मांगों को लेकर चल रहा था, और चाहता था कि उसकी मांगों को मंजूर कराने के लिये, तथा सरकार से सौदा करने के लिये एक अखिल भारतीय संस्था बने। पर उधर जनता के अन्दर असन्तोष बहुत तीव्र आधार धारण कर रहा था। किसानों की हालत बराबर बिगड़ती गयी थी। जमीन पर बोझा क्रमशः बढ़ता जा रहा था। बात यह है भारतवर्ष के सारे धन्धे नष्ट हो चुके थे। अवश्य इस बीच में कुछ नये धन्धे उत्पन्न हो रहे थे, पर वे भारतीयों उद्योग धन्धों के नाश से जो शून्य स्थान पैदा हुआ था, उसे भरने में असमर्थ थे। शिक्षित समाज जरूर अपनी चीजों के लिए आन्दोलन करता था, पर वह किसान जनता की मांगों से सम्पूर्ण अनिभिज्ञ था। और किसान ही भारत को अधिकांश जनता थी। इनके अतिरिक्त पुराने सामन्त अब भी क्रियाशील थे, और इसी बीच में बहुत से नये लोग अपने तजरबों से सीखकर अङ्गरेजी शासन के विरुद्ध हो रहे थे।

विद्रोह सम्बन्धी परिस्थिति

इन दिनों भारतवर्ष की आन्तरिक हालत बहुत बिगड़ रही थी। सर विलियम वेडरबर्न ने ए० ओ० ह्यूम की जीवनी में लिखा है—"लार्ड लिटन के भारत त्याग के १५ महीने पहले मेरे सामने जो सबूत आये, उनसे मुझे यह निश्चय हो गया कि हम एक भयंकर विस्फोटक के द्वार पर खड़े हैं। मुझे सात बड़ी जिल्दें दिखायीं गयीं, इनमें से प्रत्येक में भारतवष के किसी न किसी इलाके की रिपोट थी। केवल वर्मा, आसाम और कुछ अन्य बहुत छोटे इलाकों को छोड़कर इसमें सारे भारतवर्ष के सम्बन्ध में रिपोर्ट थी। इन जिल्दों में जिला, तहसील, परगना, शहर, गाँव के अनुसार अलग अलग रिपोर्टें थीं। इन जिल्दों में या तो जो मौलिक रिपोर्ट प्राप्त हुई थी, उसका अंगरेजो अनुवाद था, या उसका संक्षिप्त सार था। इन रिपोर्टों की संख्या बहुत थी। कहा जाता है कि उस समय तक इन जिल्दों में तीस हजार व्यक्तियों के द्वारा दी हुई रिपोर्टें थीं। बहुत सी रिपोर्टों में सबसे नीचे के तबके के लोगों की आपसी बातचीत की रिपोर्ट थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन सब से यह जाहिर था कि ये गरीब आदमी वर्त्तमान परिस्थिति से बिल्कुल निराश थे, और वे समझते थे कि उन्हें तो भूखों मर जाना है, इसलिये उन्हें कुछ कर गुजरना है। इस प्रकार ये लोग कुछ करने के लिये तैयार थे, और ऐसा करते हुये वे एक दूसरे से कन्धा मिलाते हुए काम करने वाले थे। कुछ करने से मतलब मारकाट थी। असंख्य रिपोर्टों से यह ज्ञात हुआ कि लोगों ने हजारों तलवारें भाले, बर्छे, टोपीदार बन्दूक छिपा रखे थे, जो मौके पर काम आनेवाले थे। इन रिपोर्टों में यह नहीं कहा गया था कि अभी फौरन सरकार के विरुद्ध कोई विद्रोह होने जा रहा है। सच तो यह है कि सही मानो में कोई विद्रोह होनेवाला ही नहीं था। यह बताया गया कि एकाएक अपराध, अप्रिय लोगों की हत्यायें, महाजनों तथा बाजारों की लूट होने वाली है। लोग जिस तरह अधभूखी हालत में जीवन बिताते थे, उससे उनसे यह शंका थी कि दो चार अपराध जहाँ हुए और उन्होंने रास्ता देख लिया कि बस आम तौर से अपराधों की संख्या बढ़ जायेगी, जिससे कि अधिकारी वर्ग तथा बड़े लोग विपत्ति में पड़ जायेंगे। रिपोर्टों से यह भी ज्ञात होता था कि छोटे छोटे गिरोह पत्ते पर गिरे हुये पानी के बूँदों की तरह इकट्ठा हो जायेंगे, इस प्रकार बदमाशों का गिरोह बहुत बड़ा हो जायगा। शिक्षितों में जो कुछ लोग भी सरकार से बहुत नाराज हैं इन गिरोहों के नेता बनकर सामने आयेंगे, फिर तो यह विस्फोटक एक रूप धारण करेगा, और वह रूप होगा राष्ट्रीय विद्रोह का।"

ह्यूम के विचार

भारतवर्ष की हालत को इस प्रकार देखकर बहुत से अङ्गरेज विशेष रूप से चिंतित थे, पर उनमें से ए० ओ० ह्यूम ने यह समझा कि इस सम्बन्ध में कुछ करना जरूर चाहिये। ह्यूम १८८२ तक आई० सी० एस० में थे और इसके बाद इन्होंने पेंशन ले लिया था। १८८३ के १ मार्च को उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों को सम्बोधित करते हुए एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने लिखा था कि "उनकी राय में विदेशीगण अधिक से अधिक यही कर सकते हैं कि भारतीयों को मदद करे, पर देश हित के सब कार्यों में, शासन में तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने में उन्हें खुद आगे बढ़कर काम करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़ेगा। यदि ५० शिक्षित भारतीय भी अपने वैयक्तिक स्वार्थों को भूलकर देश सेवा में लग जांय, तो वे बहुत से सत्कार्य करने में समर्थ हो सकते हैं। और यदि वे इतना भी न कर सके, तो उन्हें हमेशा दूसरों का गुलाम होकर रहना पड़ेगा। वे हमेशा इस बात को याद रखे कि चाहे व्यक्ति हो चाहे जाति हो सबके लिए सुख तथा स्वतंत्रता को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग आत्म त्याग तथा स्वार्थ त्याग है। जो इन बातों को कर सकते हैं, वे ही अपने भाग्यों के निर्माता बन सकते हैं।

ह्यूम एक उदारचित व्यक्ति

इससे यह ज्ञात होता है कि ह्यूम के विचार भारतीयों की आकांक्षाओं के प्रति उदार थे। पर जैसा कि उस युग में सभी उदार से उदार गोरे तथा भारतीय समझते थे, ह्यूम भी उसी तरह यह समझते कि थे भारत के लिये ब्रिटिश सम्बन्ध अच्छा है क्योंकि ब्रिटेन भारतवासियों को समय आते ही स्वतन्त्रता दे देगा। वे यह सचमुच समझते थे कि ब्रिटेन भारतवर्ष की भलाई के लिये यहाँ पर है। इसलिये जब उन्हें मालूम हुआ कि भारतवर्ष विस्फोटक हालत में है तो वे कुछ करने के लिये व्याकुल हो उठे। ह्यूम के जीवनी लेखक वेडरबर्न ने यह साफ लिखा है कि "लार्ड लिटन के वायसराय रहने के अन्त की ओर १८७८ और १८७९ के करीब मिस्टर ह्यूम को इस बात का निश्चय हो गया कि बढ़ते हुए असन्तोष का मुकाबिला करने के लिये कुछ न कुछ निश्चित रूप से करना चाहिये। देश के विभिन्न भागों से हितैषियों ने उनको लिख भेजा कि सरकार को कितना भारी खतरा है।"

वायसराय का आशीर्वाद चाहिये

दक्षिण में जो किसान विद्रोह हुए थे, उनसे ह्यूम विशेषकर प्रभावित थे। ह्यूम स्वयं कुछ करने में असमर्थ थे क्योंकि वे जानते थे कि यदि वे कुछ करेंगे तो नौकरशाही उनके मार्ग में बाधक होगी, और यदि सरकार बाधक होगी तो वे उस बात को नहीं कर पायेंगे जिसे वे करना चाहते थे। वे तो चाहते थे कि भारतीयों और अंगरेजों का सम्बन्ध दृढ़ हो, पर यदि वे भारतीयों को ही लेकर चलते तो अंगरेजों के नाराज हो जाने का डर था और इससे उनके उद्देश्य का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असफल होना अनिवार्य था। इसीलिये उन्होंने यह तय किया कि इस सम्बन्ध में पहले नये वायसराय मार्किस औफ डफरिन का आशीर्वाद प्राप्त करे और फिर आगे बढ़ें।

बोनर्जी द्वारा स्पष्टीकरण

कांग्रेस के प्रथम सभापति डब्लु० सी० बोनर्जी ने अपनी पुस्तक 'भारतीय राजनीति की भूमिका' में लिखा है—

"बहुत से लोगों को यह बात बिल्कुल नयी मालूम होगी कि कांग्रेस जैसी कि वह बनी है, और जैसी कि वह चलती रही है वह मार्किस औफ डफरिन की सृष्टि है, उस समय की सृष्टि जब वे भारत के बड़े लाट थे। १८८४ में मिस्टर ए० ओ० ह्यूम सी० बी० के मन में यह विचार आया कि देश के लिये यह बहुत ही अच्छा होगा यदि देश के प्रमुख राजनीतिज्ञ हर साल इकट्ठा होकर सामाजिक विषयों पर तर्क वितर्क कर लिया करे, तथा आपस में मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करे। वे यह नहीं चाहते थे कि इन तर्कों में राजनीति भी आवे। लार्ड डफरिन ने इस मामले में बहुत दिलचस्पी ली, और इस प्रस्ताव पर कुछ दिनों तक विचार करने के बाद उन्होंने मिस्टर ह्यूम को बुलवा कर यह कह दिया कि उनकी योजना बहुत सुन्दर है। लार्ड डफरिन ने यह कहा कि इस देश में उस तरह के लोग नहीं हैं, जैसे इंगलैण्ड केपार्लियामेंट में विरोधी दल के लोग होते हैं। उन्होंने कहा कि उनके हक में भी और शासितों के हक में भी यह बहुत अच्छा होगा कि भारतीय राजनीतिज्ञ हर साल मिला करें, और सरकार को यह बतलाया करे कि किन मामलों में सरकार को राज्य परिचालना त्रुटिपूर्ण है, और कैसे इसको दूर किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की जो संस्था हो उस पर स्थानीय गवर्नर सभापतित्व न करे क्योंकि सम्भव है कि गवर्नर के रहने के कारण वे लोग आजादी से बातचीत न कर सके। मिस्टर ह्यूम लार्ड डफरिन की बात मान गये, और जब उन्होंने कलकत्ते, बम्बई, मद्रास तथा देश के अन्य भागों के राजनीतिज्ञों के सामने अपनी तथा लार्ड डफरिन की योजना रखी, तो लोगों ने लार्ड डफरिन की योजना को पसन्द किया, और लोग इस पर अमल करने के लिये तैयार हो गये। लार्ड डफरिन ने मिस्टर ह्यूम से यह कह दिया था कि उनका नाम इस सम्बन्ध में तब तक न लिया जाय जब तक कि वे भारत में रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्यूम तथा डफरिन के विचारों का विश्लेषण

मिस्टर बोनर्जी के इस उदाहरण से तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मिस्टर ह्यूम भारतीयों के जितने बड़े हमदर्द समझे गये, उनके विचार उतने उदार नहीं थे। वे तो कांग्रेस को सामाजिक विषयों पर विचार विनिमय तक ही सीमित रखना चाहते थे। इससे बढ़कर इस बात का और क्या प्रमाण हो सकता है। रहा लार्ड डफरिन, सो वे भी केवल यही चाहते थे कि पीठ पीछे जो षड़यन्त्र हुआ करते हैं, हो सकते हैं या हो रहे हैं, उनके बजाय खुले आम लोग सरकार की आलोचना करें जिससे एक तो सरकार को मालूम होता रहे कि लोगों का क्या कहना है, दूसरा उससे यह नापा जा सके कि लोगों की भावनाओं की गहराई कहाँ तक है। लार्ड डफरिन यह जो चाहते थे कि एक सालाना जलसा हुआ करे, और वह उसी कर्त्तव्य को अदा करे जो पालियामेंट का विरोधी पक्ष अदा करता है, यह उसी प्रकार की इच्छा थी जैसे कोई घोड़े को दाना न दे, और उससे चाहे कि वह पूरी दौड़ करे। पालियामेंट के सदस्य वे चाहे मन्त्री-मण्डल के पक्ष के हों, या चाहे उसके विरोधी पक्ष के हों, जनता के वोटों से चुने हुए होते हैं, तथा यों भीतरी तरीके से मन्त्री-मण्डल तथा उसके दल का शासन होने पर भी देश पर पालियामेंट का शासन समझा जाता है। यहाँ यह परिस्थिति कहाँ थी ?

कांग्रेस एक सेफ्टी वैल्व

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जैसे बायलर के फालतू भाप को निकाल देने के लिये सेफ्टी वैल्व होता है, उसी तरह से ह्यूम और लार्ड डफरिन चाहते थे कि कांग्रेस हो। यह कोई कल्पना नहीं है, इस बात का प्रमाण उसी युग के कांग्रेस नेताओं के लेख से ही मिलते हैं। वेडरवर्न ने इस शब्द को भी इस्तेमाल किया है वे लिखते हैं— "A safety valve for the escape of great and growing forces, generated by our own action, was urgently needed and no more effacacious safety-valve than our congress movement could possibly be devised." याने हमारी ही क्रियाओं से उत्पन्न बड़ी तथा वृद्धि शील शक्तियों के लिये एक सेफ्टी वैल्व की बड़ी जरूरत थी और कांग्रेस से बढ़कर कोई अन्य सेफ्टी वैल्व नहीं हो सकता था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इण्डियन नेशनल यूनियन

कहा जाता है कि १८८३ में ही ह्यूम ने अपने विचारों को कार्य रूप में परिणत करने के लिये इण्डियन नेशनल यूनियन नाम से एक संस्था कायम की थी। उसके उद्देश्य ये थे—पहला उद्देश्य यह था भारतीयों के अलग-अलग अंश को एक सम्पूर्ण जाति के रूप में सङ्गठित करना दूसरा उद्देश्य इस प्रकार की जाति को आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय सभी द्रष्टि से पुनरुज्जीवित करना, तीसरा भारतीयों पर जो कानून लागू हैं, उनमें से जो हानिकर हैं, उन्हें दूर कर इंगलैण्ड के साथ प्रेम सम्बन्ध को दृढ़ करना। बाद को जब कांग्रेस बनी, तो उसमें भी मोटे तौर पर ये ही उद्देश्य रखे गये।

ह्यूम की भारतीय संवाद एजेन्सी

ह्यूम एक अच्छे संगठन कर्त्ता थे इसमें सन्देह नहीं। अवश्य उनको संगठन में सरकार से अनुकूलता प्राप्त हुई थी, यह भी एक बड़ी बात थी। ह्यूम ने इस बात को देखा कि किसी बात को, अर्थात् वे जो करना चाहते थे उस बात को सफलता पूर्वक करने के लिये विलायत के जनमत को संगठित करना आवश्यक है। तदनुसार उन्होंने इस बात की आवश्यकता देखी कि विलायत के लोगों को भारत के सम्बन्ध में सही खबर दी जाय। उस समय भी रायटर अंगरेजी पत्रों को खबर देता था, उसकी खबरों में दकियानूसी अङ्गरेजों का पक्ष ही दिखलाया जाता था, इसको दूर करने के लिये ह्यूम ने "इंडियन टेलीग्राफ यूनियन" नाम से एक भारतीय सवांद एजेन्सी कायम की और विलायत के पत्रों से यह तय किया कि व इंडियन-टेलीग्राफ यूनियन को दी हुई खबरों को छापें। अवश्य उनको यह संवाद एजेन्सी दीर्घ काल तक स्थायी नहीं हुई पर इससे पता लगता है कि उनके विचार कितने उच्च थे। ह्यूम एक कवि भी थे। old man's hope नामक पुस्तिका में उन्होंने भारतीयों को सम्बोधित करके Awake शीर्षक एक कविता लिखी जिसकी उन दिनों बड़ी धूम थी।

कांग्रेस के सम्बन्ध में गश्ती चिट्ठी

हम पहले ही बता चुके हैं कि सर्वत्र एक अखिल भारतीय संस्था बनाने की दिशा में लोग सोच रहे थे। अब इसके लिये जमीन तैयार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो चुकी थी। १८८५ के मार्च को इस उद्देश्य से एक सभा हुई, और उसने देशभर में गश्ती चिट्ठी भेजी इस गश्ती चिट्ठी में यह कहा गया कि "१८८५ के २५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक पूना में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन होगा। इस कानफरेंस में बंगाल, बम्बई तथा मद्रास प्रेसीडेन्सी‡ के अंगरेजी जानने वाले तमाम प्रमुख राजनीतिज्ञ डेलीगेट के रूप में आयेंगे। इस कानफरेंस के प्रत्यक्ष विषय ये होंगे—

(१) राष्ट्रीय प्रगति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को परस्पर से परिचित कराना।

(२) अगले साल जो राजनैतिक कार्य होने वाले हों उनके सम्बन्ध में विचार करना तथा फैसला करना।

परोक्ष रूप से यह कानफरेंस भारत के देशी पार्लियामेंट के बीजाणु रूप में होगा, और यदि ढंग से चलायी गयी तो कुछ सालों में वह इस बात का जबर्दस्त मुंह तोड़ उत्तर के रूप में हो जायेगी कि भारतवासी अभी किसी तरह की प्रतिनिधिमूलक संस्थाके योग्य नहीं है। पहली कानफरेंस ही इस बात पर फैसला करेगी कि अगली कानफरेंस भी पूना में हो होगी या ब्रिटिश एसोसियेशन के ढंग पर हर साल बदल बदल कर महत्वपूर्ण केन्द्रों में होगी"।

पूना में अधिवेशन नहीं हुआ

पहली कानफरेंस पूना में होगी यह इसो समय तय किया गया और पूना की सार्वजनिक सभा के चिपलूणकर, जोशी आदि इसकी स्वागत समिति बनाने वाले थे। पर वास्तविक रूप से यह कानफरेंस पूना में हो ही नहीं सकी, क्योंकि उन दिनों वहां हैजे का प्रकोप था।

दो जगह क्यों ?

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में क्या हुआ इस सम्बन्ध में आलोचना करने के पहले हम इस बात का उत्तर दे कि क्या बात है कि जिस समय पूना में कांग्रेस का पहला अधिवेशन होनेवाला था पर जो पूना में न होकर बम्बई में हुआ। ठीक उसी समय कलकत्ता में इन्हीं उद्देश्यों को लेकर राष्ट्रीय कानफरेन्स का अधिवेशन हो रहा था ? क्या कारण था कि इधर मिस्टर ह्यूम अलग खिचड़ी पका रहे

‡ उस युग में ब्रिटिश भारत इन्हीं तीन प्रेसीडेंसियों में बंटा हुआ था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे, और उधर सुरेन्द्रनाथ अपनी डेढ़ ईंट की अपनी मस्जिद अलग बना रहे थे ? क्या वे एक नहीं हो सकते थे ? दुख है कि किसी भी लेखक ने इस प्रश्न पर कोई रोशनी नहीं डाली। कहा गया है कि सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी कलकत्ते में ही भारतवर्ष की राष्ट्रीय हलचलों का केन्द्र चाहते थे क्योंकि कलकत्ता उन दिनों भारतवर्ष की राजधानी थी, पर क्या यही बात थी ? हम जब गहराई में जाते हैं तो हमें मालूम होता है कि बात इससे कहीं ज्यादा गूढ़ थी। मिस्टर ह्यूम नहीं चाहते थे कि कांग्रेस का जन्म एक ऐसे व्यक्ति की छाया में हो जो जेल में जा चुका था, तथा जिसके विचार तथा नाम से ही अङ्गरेज नाराज होते थे। इसी कारण मिस्टर ह्यूम ने काँग्रेस को सुरेन्द्रनाथ से बचाकर बम्बई प्रान्त में किया। क्या यह बहुत मजे की बात नहीं है कि जो व्यक्ति गत सालों से भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक समझा जाता था, वही काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं हुआ। अवश्य ही राष्ट्रीय सम्मेलन के नेताओं के लिये यह बहुत ही प्रशंसा की बात है कि उन्होंने अपनी कानफरेन्स के तृतीय दिन के अधिवेशन में बम्बई के अधिवेशन को अपनी सहानुभूति का सन्देश भेज दिया। उस दिन प्यारीमोहन मुखोपाध्याय ने राष्ट्रीय कानफरेन्स की तरफ से बम्बई में यह तार भेजा—

"कलकत्ते के सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधिगण बम्बई के सम्मेलन के प्रति अपनी सहानुभूति भेज रहे हैं।"

बाद को सुरेन्द्रनाथ दलबल सहित काँग्रेस में शरीक हो गये, और उसके नेताओं में भी हुए, यह काँग्रेस तथा सुरेन्द्रनाथ दोनों के लिये प्रशंसा की बात है।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १४ :

कांग्रेस का पहला अधिवेशन

श्रीमती बेसेन्ट का वर्णन

कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन पूना में होने वाला था पर वह वहाँ न होकर बम्बई में हुआ। सौभाग्य से श्रीमती बेसेन्ट ने कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का एक अच्छा विवरण लिखा है। हम उसी को उद्धृत करेंगे। वे अपनी पुस्तक How India wrought for freedom में लिखा है—

"पूना में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन नहीं हो सका क्योंकि ऐन बड़े दिन के पहले हैजा फैल गया, कुछ ही लोगों को हैजा हुआ था, पर यह समझा गया, कि शायद अब यह महामारी के रूप में फैले, इस कारण अब प्रस्तावित कानफरेंस, जिसका नाम कांग्रेस हो चुका था बम्बई में हटा दी गयी। गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज और बोर्डिंग हाऊस के मैनेजरों ने अपनी सब सुन्दर इमारतों को कांग्रेस के काम के लिये दे दिया था, और २७ दिसम्बर के सबेरे भारतीय जाति के प्रतिनिधियों के स्वागत के लिये सब तैयारी हो चुकी थी। जब हम अपनी दृष्टि कांग्रेस में उपस्थित लोगों की ओर डालते हैं, तो हम कितने ही ऐसे लोगों को पाते हैं जो बाद को चल कर भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध के इतिहास में मशहूर हुए। ऐसे लोग जो इसमें प्रतिनिधि होकर नहीं भाग ले सकते थे हम इन लोगों को पाती हैं—मद्रास के डिप्टी कलेक्टर तथा सुप्रसिद्ध सुधारक दीवान बहादुर आर० रघुनाथ राव, माननीय महादेव गोविन्द रानडे जो उन दिनों लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य तथा पूना के स्माल काज कोर्ट (Small Cause Court) के जज थे, बाद को बम्बई हाई कोर्ट के जज तथा एक बहुत सम्मानित और विश्वस्त नेता हुए, आगरा के लाला बैजनाथ जो बाद को चलकर एक विद्वान तथा लेखक के रूप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में प्रसिद्ध होने वाले थे, अध्यापक के सुन्दर रमण और आर० जी० भण्डारकर। प्रतिनिधियों में हम 'ज्ञानप्रकाश' पूना सार्वजनिक सभा का quarterly Journal मराठा, केसरी, नव विभाकर, The Indian mirror, नसीम, हिन्दुस्तानी, Tribune, The Indian union, The Spectator, The Induperkash, The Hindu, The Crescent, के सम्पादकों को हम पाते हैं। कितने ही ऐसे नाम आते है जो बहुत ही परिचित और सम्मानित हैं। शिमला से मिस्टर ऐ० ओ० ह्यूम हैं, कलकत्ता से डब्लू० सी० बोनर्जी और नरेन्द्रनाथ सेन है, पूना से डब्लू० एस० आप्टे और जी० जी० आगरकर हैं, लखनऊ से गंगाप्रसाद वर्मा हैं, बम्बई से दादाभाई नौरोजी, के० टी० तेलंग तथा बम्बई कोरपोरेशन के उस समय और इस समय के नेता फिरोजशाह मेहता हैं, डी० ई० वाचा, मद्रास से महाजन सभा के सभापति पी० रंगिया नायडू, एस० सुब्रह्मराय ऐयर, पी० आनन्द चार्लू, जी० सुब्रह्मराय ऐयर, एम० वीरराघवा चारीयर, अनन्तपुर से केशव पिल्ले थे। ये उन लोगों में से हैं जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिये शुरू शुरू में काम किया, और इनमें से जो अब भी जीवित हैं वे अब भी काम कर रहे हैं।

कांग्रेस के प्रथम वक्ता

"१८८५ के २८ दिसम्बर के १२ बजे दिन गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज के हाल में प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में सब से पहले मिस्टर ए० ओ० ह्यूम, माननीय एस० सुब्रह्मराय ऐयर तथा माननीय के० टी० तेलंग की आवाजें सुनायी पड़ी क्योंकि इन्होंने ही कांग्रेस के प्रथम सभापति मिस्टर डब्लू० सी० बोनर्जी का नाम क्रमशः प्रस्ताव समर्थन तथा अनुमोदन किया। वह एक बहुत ही पवित्र तथा ऐतिहासिक मुहुर्त्त था जब कि मातृभूमि के द्वारा इस प्रकार सम्मानित व्यक्तियों की दीर्घ पंक्ति में से प्रथम व्यक्ति ने प्रथम राष्ट्रीय सभा के सभापति का आसन ग्रहण किया।

सभापति द्वारा उद्देश्यों का स्पष्टीकरण

"कांग्रेस के महत्वपूर्ण तथा प्रतिनिधि मूलक चरित्र की ओर दृष्टि दिलाने के बाद सभापति ने कांग्रेस के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण इन चार मदों में किया"—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१) जो लोग देश के विभिन्न भागों में देश के लिये काम कर रहें हैं, उनमें पारस्परिक स्नेह तथा परिचय उत्पन्न करना।

(२) सब देश प्रेमिकों में, याने ऐसे लोगों में जो हमारे देश को प्रेम की दृष्टि से देखते हैं, जाति, धर्म, प्रान्त सम्बन्धी कुसंस्कारों को दूर कर सीधा सीधा प्रेम तथा वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित करना और राष्ट्रीय एकता के उन भावों को दृढ़ करना जो हमारे श्रद्धेय लार्ड रिपन के चिर स्मरणीय राज्य काल में उत्पन्न हुए थे।

(३) उस समय के महत्वपूर्ण तथा जरूरी प्रश्नों पर भारतीय शिक्षित वर्ग के परिपक्व मत को अच्छी तरह तर्क वितर्क के बाद पता लगाना, और फिर जब यह मालूम हो चुका, तो उसे अधिकार पूर्ण ढंग से लिपि बद्ध करना।

(४) अगले बारह महीनों में जनता के हित के लिये देश के नेताओं को जो कुछ करना है, उसका एक खाका बनाना।"

सभापति का परिचय

इस कांग्रेस में ७२ प्रतिनिधि थे। जो प्रस्ताव पास हुए वे इस दृष्टि से बहुत ही महत्व पूर्ण हैं करीब करीब गांधी युग तक कांग्रेस इन्हीं प्रस्तावों के इर्द गिर्द घूमती रही। इसी कारण हम इन प्रस्तावों को कुछ ब्यौरे में देंगे। पर इसके पहले हम बता दें कि इस अवसर पर जो महानुभाव सभापति चुने गये थे, वे कौन थे। वे कलकत्ता के बहुत बड़े बैरिस्टर थे, और बताया जाता है कि एक जमाना था जब कि वे गोरा बनने में ही इति कर्त्तव्यत्ता समझते थे। इलबर्ट बिल के आन्दोलन के जमाने में उनकी आंख खुली, और वे समझ गये कि गोरों और भारतीयों में जो खाई है वह कभी पाटी नहीं जा सकती। तब से उनके विचार बदल गये। जिस समय १८८४ में लार्ड रिपन भारतवर्ष से गये हैं, उस समय उनकी बिदाई समारोह में भी उन्होंने नेतृत्व किया था। लगे हाथों यह बता दिया जाय कि जिस समय लार्ड रिपन भारतवर्ष से गये थे उस समय कलकत्ता और बम्बई के बीच सारे स्टेशनों में लार्ड रिपन की जय मनाई गयी थी। इस बिदाई समारोह को देख कर नौकर शाही हैरान रह गयी थी, और यह कहा गया था—"If it is real, what does it mean?" याने यदि यह वास्तविक है तो इसका अर्थ क्या है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चुनाव पर रोशनी

मिस्टर बोनर्जी ने इस प्रदर्शन में बहुत बड़ा भाग लिया था। मिस्टर बोनर्जी बहुत ही वस्तुवादी व्यक्ति थे इसमें सन्देह नहीं, क्योंकि उन्होंने सभापति की हैसियत से मुँह खोलते ही इस बात को कहा था कि लोग कह सकते हैं कि हम लोगों ने अपना चुनाव आप कर लिया, और हमें किसी ने नहीं चुना, पर बात ऐसी नहीं है। उन्होंने कहा "इस काँग्रेस के होने को बात साल भर से सभी प्रान्तों के लोगों को मालूम है, और यद्यपि कोई जाब्ते का चुनाव नहीं हुआ था, फिर भी जो व्यक्ति यहाँ पर प्रतिनिधि होकर आये हैं, वे विभिन्न संस्थाओं के द्वारा चुनकर भेजे गये हैं।"

सभापति के राजनैतिक विचार

सभापति ने ब्रिटेन तथा भारत के सम्बन्ध पर बताते हुए कहा "ब्रिटेन ने भारत की भलाई के लिये बहुत कुछ किया है, और इसके लिये सारा देश उसका कृतज्ञ है। ब्रिटेन ने भारत को शान्ति दी, रेलें दो, और सर्वोपरि उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा रूपी महान दान दिया। फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है। लोग शिक्षा तथा अन्य तरीके से जितना समृद्ध होते जा रहे हैं, उनमें राजनैतिक मामलों में उतनी ही अन्तर्दृष्टि बढ़ेगी, और उनमें राजनैतिक प्रगति की उतनी ही इच्छा उत्पन्न होगी।" उन्होंने यह भी कहा कि यदि भारतवासी यह चाहते हैं कि यूरोप में प्रचलित शासनप्रणालियों की तरह उनके यहाँ भी लोकतांत्रिक शासन हो, तो इससे ब्रिटिश सरकार के प्रति भारतीयों को राजभक्ति में कोई फर्क नहीं आता।

पहला प्रस्ताव-रायल कमीशन की माँग

कांग्रेस के प्रस्ताव भी उसी सुर में बंधे हुए थे, जिसमें सभापति का अभिभाषण बँधा हुआ था। 'हिन्दू' सम्पादकजी सुब्राह्मराय ऐयर ने पहला प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव में ब्रिटिश सरकार से यह मांग की गयी थी कि भारत पर रायल कमीशन बैठाया जाय, उस कमीशन में भारतीय तथा अङ्गरेज दोनों हों, और वह इङ्गलैंड, और भारत दोनों जगह गवाही लेकर तब किसी निर्णय पर पहुँचे। प्रस्तावक ने अपने व्याख्यान में यह कहा कि १७७३, १७९३, १८१३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८३३ और १८५३ में भारत की परिस्थिति पर जांच करने के लिये रायल कमीशन की नियुक्ति हुई थी, पर गत ३२ सालों से पालियामेंटों ने कोई सुध नहीं ली, इसके फलस्वरूप स्थानीय सरकार और नौकरशाही बहुत मनमाना कर रही है। वक्ता ने यहाँ तक कहा कि देश किसी किसी मामले में कम्पनी की अमलदारी से भी पिछड़ चुका है, और जब से पालियामेंट ने शासन सूत्र अपने हाथ में लिया है, तब से देश की हालत बिगड़ती गयी है। इस प्रस्ताव का समर्थन श्री फिरोजशाह मेहता ने किया और अनुमोदन नरेन्द्रनाथ सेन ने किया।

दूसरा प्रस्ताव-इण्डिया कौंसिल खतम करो

दूसरे प्रस्ताव के प्रस्तावक एस० एच० चिपलूणकर थे। इसमें यह माँग की गयी थी कि इण्डिया कौंसिल नाम से जो संस्था है, वह खतम कर दी जाय। इण्डिया कौंसिल में पेशनयाफ्ता अङ्गरेज सिविल सर्विस वाले होते थे, ये लोग हमेशा दकियानूसी दृष्टिकोण से भारतीय समस्याओं को देखते थे, और उसी के अनुसार ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल को सलाह दिया करते थे। नाम के लिये तो इण्डिया कौंसिल भारतीयों के स्वार्थों की देख रेख तथा प्रतिनिधित्व के लिये थी, पर वह असल में भारतीयों का गला घोटकर साम्राज्यवाद का मतलब पूरा करती थी। भारतीय सरकार के मत्थे अबीसीनिया पर अभियान लन्दन में तुर्की सुलतान के स्वागत, मिश्र पर अभियान आदि का व्यय मढ़ा गया था, पर इस पर इण्डिया कौंसिल खुश ही थी मानो ये सब काम भारतीयों की भलाई के लिए हुये थे। पी० आनन्द चार्लु ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था तथा श्री जानकीनाथ घोषाल ने इसका अनुमोदन किया था।

तीसरा प्रस्ताव-शासन सुधार की माँग

तीसरे प्रस्ताव में लेजेस्लेटिव कांग्रेस की त्रुटियों पर रोशनी डाली गयी थी। उस युग में लेजेस्लेटिव कौंसिल के सभी सदस्य नामजद होते थे इसलिये प्रस्ताव में यह मांग की गयी कि सदस्य चुने जायें, कौंसिल के सदस्यों को प्रश्न पूछने का अधिकार हो, उत्तर पश्चिम प्रान्त अवध (यू० पी० का यही नाम था) तथा पंजाब में कौंसिल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनायी जाय, और पार्लियामेंट की एक कमेटी हो जो भारतीय लेजेस्लेटिव कौंसिल के अधिकांश सदस्यों की तरफ से जो प्रस्ताव आवें उन पर विचार करें।

इस प्रस्ताव पर नेताओं के भाषण

बात यह है कि १८६१ में जो शासन सुधार मिले थे उसके बाद से कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। श्री के० टी० तेलंग ने इस प्रस्ताव को रखते हुये यह कहा कि हमें नामजदगी नहीं चाहिये, हम चुनाव चाहते हैं। "हमें म्युनिसिपलिटी, डिस्ट्रक्ट और लोकल वोर्डों में निर्वाचित सदस्य का अधिकार लार्ड रिपन से मिल चुका है अब हम यह चाहते हैं कि कम से कम लेजेस्लेटिव कौंसिल के कम से कम आधे सदस्य चुने हुए हों। श्री तेलंग ने नाराजगी जाहिर करते हुये कहा "भारत मन्त्री भारत के तानाशाह मुगल सम्राट हैं। उनकी खुशी ही कानून है। इस समय भारत में जितनी भी कौंसिलें हैं उन सब का उद्देश्य यह है कि सरकार की तानाशाही को कानूनी जामा पहनाया जाय।" प्रस्ताव पर कई नेताओं के भाषण हुए। माननीय एस० सुब्राह्मराय ऐयर ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुये कहा कि मैं अपने तजरबे से यह बात कहता हूँ कि यद्यपि सरकार बहुत तुच्छ मामलों में गैर सरकारी सदस्यों की कोई कोई छोटी मोटी बात मान लेती है, पर अधिकांश मामलों में उनकी कोई सुनायी नहीं होती है, इसका कारण यह है कि भारतीय सदस्य चुने हुए नहीं है। श्री दादाभाई नौरोजी ने इस प्रस्ताव पर बोलते हुए कहा कि यदि सरकार शासन सुधार दे दे, और साथ ही कौंसिल के सदस्यों को यह अधिकार हो जाय कि वे प्रश्न पूछ सके, तो सरकार पर लोगों की नाराजगी बहुत कुछ घट जायगी। लाला मुरलीधर ने यह कहा कि चुनाव का होना इसलिये आवश्यक है कि बहुत से लोग जो मियां मिट्ठू बनकर डींग मारते फिरते हैं, उनको कलई खुल जायगी और यह मालूम हो जायेगा कि कौन जाति के प्रतिनिधि है। महादेव गोविन्द रानाडे ने यह कहा कि भारत मन्त्री की कौन्सिल में भी चुने हुए सदस्य हों।

चौथा प्रस्ताव—सिविल सर्विस में समता

चौथे प्रस्ताव में यह मांग की गयी कि ब्रिटेन तथा भारतवर्ष में सिविल सर्विस की परीक्षा एक साथ ली जाय और परीक्षार्थियों की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उम्र १६ से बढ़ कर २३ कर दी जाय। इस प्रस्ताव को दादा भाई नौरोजी ने रक्खा। पहले ही बताया गया है कि इस विषय को लेकर शिक्षित भारतीयों में बहुत भारी असंतोष था। हम पहले यह भी बता चुके हैं कि सरकार ने स्टैच्यूटरी सिविल सर्विस नाम से जो सिविल सर्विस कायम की थी, उससे शिक्षितों में असंतोष घटने के बजाय बढ़ा था। दादा भाई नौरोजी इसी युग में भारत के सम्बन्ध में आर्थिक आलोचना करके लोगों की आंख खोलने में सहायक हो चुके थे। इस अवसर पर बोलते हुए भी उन्होंने यह दिखलाया कि अंगरेजों की औसत वार्षिक आमदनी ४६५ रुपये, फ्रांस वालों का ३४५ रुपया, तुर्की लोगों का ६० रुपया है, पर भारतीयों की वार्षिक आमदनी २७ ही रुपये हैं, जिनमें से यदि जमींदारों, पूंजीपतियों आदि को निकाल दिया जाय तो भारतीयों की आमदनी सालाना २० रुपया होगी। इस हालत में सिविल सर्विस के गोरों की तनख्वाह पेंशन भत्ता आदि में करोड़ों रुपयों का देश के बाहर चला जाना बहुत ही अवांछनीय है। इसलिये दादा भाई का यह कहना था कि जब समान योग्यता वाले भारतीय मिल सकते हैं तो सिविल सर्विस में जितने अधिक भारतीय लिये जांय उतना ही अच्छा है क्योंकि देश का रुपया देश ही में रहेगा।

कांग्रेस में स्वदेशी की पहली आवाज

इस प्रस्ताव पर बोलते हुए बंगाल से आये हुए नव विभाकर के सम्पादक ने स्वदेशी की आवाज उठायी। कहना न होगा कि यह व्याख्यान बहुत कुछ अप्रासंगिक था, फिर भी कांग्रेस के अन्दर स्वदेशी तथा बायकाट की पहली आवाज होने के कारण यह व्याख्यान स्मरणीय है। हम पहले ही देख चुके है कि हिन्दू मेला में स्वदेशी की आवाज उठायी ही नहीं गयी थी बल्कि उसे व्यवहारिक रूप दिया गया था। गिरिजा बाबू ने कहा था "हम गरीब हैं, जो चीजें देश में मिल सकती है, उन्हें हम विदेश से अधिक दाम देकर क्यों खरीदे? हम लोग सिविल सर्विस वालों को तनख्वाह तथा पेंशन के रूप में जो मोटी रकमें देते हैं, वह इस देश के बाहर ही खर्च होती। हम इतने रुपये खर्च करके जो तजरबा हासिल करते हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह इस देश के बाहर चला जाता है, जहाज पर लद कर विदेश में चला जाता है, और हमारे ही विरुद्ध इस्तमाल होता है।"

पांचवा प्रस्ताव—सेना पर खर्च घटे।

पांचवे प्रस्ताव में यह कहा गया कि सेना पर खर्च घटाया जाय। इस प्रस्ताव की आवश्यकता इसलिये हुई कि इन दिनों भारत सरकार पर रूस का हौआ चढ़ा हुआ था। उन दिनों अंगरेज राजनीतिज्ञ इस बात को गम्भीरता के साथ समझते थे कि रूस का जार भारत पर हमला करना चाहता है। लार्ड रिपन ने इसीलिये अफगानिस्तान के साथ एक ऐसा बन्दोबस्त किया था कि अफगानिस्तान उधर से हमला करने वाले से पहला मोर्चा लेगा, पर रूस का हौआ ब्रिटिश सरकार पर इस प्रकार चढ़ा हुआ था कि यह प्रस्ताव हुआ था कि २० लाख पौन्ड खर्च करके दस हजार गोरों और २० हजार भारतीयों की, कुल ३० हजार सेना बढ़ायी जाय। इस प्रस्ताव पर बोलते हुए रंगिया नायडु ने कहा कि इस समय जो भारतीय सेना है वह जातीय सेना नहीं, वह भाड़े का टट्टू है, उनमें राष्ट्रीयता की भावना नहीं है। उन्होंने यह कहा कि भारतीय सेना को इस प्रकार शिक्षित किया जाय कि वह अपने को भारतीय समझे।

श्री वाचा ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि १८५६ में भारतीय सेना में २५४००० लोग थे, १८८५ में घट कर उनकी संख्या १८६००० हो गयी है, फिर भी पहले जहां १७ करोड़ रुपये खर्च होते थे, अब वहां २६ करोड़ रुपये खर्च हो रहें हैं। श्री वाचा ने इस बीच के इतिहास का विश्लेषण करते हुए कहा कि सरकार ने १८५७ के विद्रोह के बाद से यह ढंग रखा कि भारतीय सेना में भारतीय तो घटाये जायँ और गोरों की संख्या बढ़ाई जाय इस नीति के कारण बढ़ाये गये और उनको चूंकि अधिक तनख्वाह दी जाती है, इसलिये सेना घटते हुए भी खर्च बढ़ा। श्री वाचा ने यह भी कहा कि १८५७ के पहले भारतीय सेना भारत में ही काम आती थी, पर तब से जहां भी साम्राज्य में जरूरत होती थी वहीं यह सेना भेजी जाती थी, भेजी जाय उसमें ताज्जुब नहीं, पर उसका सारा खर्च भारतीयों पर लादा जाता था।

छठा प्रस्ताव—युद्ध व्यय का बोझा जनता पर न हो।

छठा प्रस्ताव पर भी सैनिक व्यय से सम्बन्धित था, इसमें यह कहा गया था कि यदि सैनिक व्यय बढ़ाना अनिवार्य हो जाय तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसका खर्च विदेशी माल पर टैक्स लगाकर तथा लाइसेंसों से रुपये लेकर उसे पूरा किया जाय। प्रस्ताव का आशय यह था कि किसी भी हालत में अब भारतीय कर दाता का बोझा बढ़ाया न जाय, क्योंकि उसकी हालत यों ही तबाह हो रही है।

सातवां प्रस्ताव—बर्मा विजय की निन्दा।

सातवें प्रस्ताव में उत्तरी बर्मा को जीत कर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेने का प्रतिवाद किया गया था। लार्ड डफरिन ने उत्तर बर्मा के राजा राजाथिबो पर इस बहाने से हमला कर दिया था कि थिबो ने फ्रेंच सरकार के साथ कोई गुप्त संधि की है जो ब्रिटिश स्वार्थों के प्रतिकूल है। कुछ दिनों तक युद्ध होता रहा, पर १८८५ के २७ नवम्बर को थिबों ने आत्म समर्पण कर दिया और राजधानी पर कब्जा कर लिया गया। हम कुछ आगे बढ़कर यह बता दें कि जिस समय कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था उस समय भी युद्ध हो रहा था और १८८६ की जनवरी को बर्मा का बाकी हिस्सा भी साम्राज्य में मिलाया जाने वाला था। इसी कारण यह प्रस्ताव था। इस प्रस्ताव पर बोलते हुए श्री फिरोजशाह मेहता ने यह कहा कि यदि अन्त तक बर्मा को अधीन में किया ही जाय, तो उसे भारत के अन्तर्युक्त न करके एक क्राऊन कलोनी बना लिया जाय। ऐसा प्रस्ताव रखने में श्री मेहता का यह उद्देश्य था कि इस गुनाह बे लज्जत से भारत को छुटकारा मिले क्योंकि इसकी बदौलत बर्मा का सारा खर्चा विशेष कर सामरिक खर्च भारत को देना पड़ेगा, और इसमें बर्मा की यह भलाई होगी कि क्राऊन कलोनी होने के कारण उसे कुछ शासन सुधार यों ही प्राप्त हो जायेंगे।

आठवां प्रस्ताव-प्रस्तावों का वितरण

आठवें प्रस्ताव में यह कहा गया कि जितने भी प्रस्ताव हुए वे सब देश की विभिन्न संस्थाओं को भेज दिया जाय और उनसे कहा जाय कि इन प्रस्तावों को आंख के सामने रख कर जो उचित है वह किया जाय। यह प्रस्ताव भारत के राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को एक सूत्र में बांधने के लिये आवश्यक था।

नवांप्रस्ताव-अगला अधिवेशन

नवें प्रस्ताव में यह कहा गया कि अगली कांग्रेस का अधिवेशन १८८६ के २८ दिसम्बर को कलकत्ते में होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महारानी की जय से सभा भंग

सब प्रस्तावों के बाद धन्यवाद आदि हुए जिसमें विशेषकर मिस्टर ह्यूम को धन्यवाद दिया गया। कांग्रेस की अपनी रिपोर्ट में अन्तिम दृश्य का यों वर्णन है—"मिस्टर ह्यूम को जो धन्यवाद आदि दिये गये थे, उन्हें स्वीकार करने के बाद वे Cheers दिलाने के लिये उठे, क्योंकि यह काम उन्हीं के सुपुर्द किया गया था। उन्होंने कहा कि Beher lake thun never याने कभी न होता इससे देर ही में हो इस सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए मैं यह प्रस्ताव करता हूँ कि केवल तीन बार नहीं, बल्कि तीन का तिगुना, और हो सके तो उसका भी तिगुना Cheers इस महायहिमामयी महारानी विक्टोरिया के लिये दिये जांय जो उन सब के लिये प्रिय हैं, और जिनकी वे संतान तुल्य हैं, और जिनके जूतों के फीतों को वे अपने को खोलने के योग्य नहीं समझते। इसके बाद वक्ता ने जो मन्तव्य किये वे स्वतः स्फूर्त्त जयकारे की आंधी में डूब गये, और लोगों से जो Cheers मांगा गया था, वे बार बार दिये गये।"

प्रथम कांग्रेस के नेता इतिहास के निर्माता

प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस इस प्रकार महारानी के जयकारे से खतम हुई, इससे हम यह निस्कर्ष न निकालें कि कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के नेतागण कोई दब्बू प्रकृति के या निम्नकोटि के लोग थे। १६४७ में जिस समय यह इतिहास लिखा जा रहा है भारत की सभी असेम्बलियों तथा कौंसिलों में यह प्रथा है कि सदस्य प्रथम बार राज-भक्ति का शपथ लेते हैं, इससे जैसे हम यह उपसंहार नहीं निकाल सकते कि ये लोग राजभक्त हैं उसी प्रकार महारानी को Cheers देने के कारण हम यह नहीं कह सकते कि प्रथम कांग्रेस के नेतागण दब्बू थे। सच तो यह है कि युग को देखते हुए वे काफी आगे बढ़े हुए थे, उनके व्याख्यानों से इसी बात का समर्थन होता है। इतिहास इन लोगों का चाहे जितना छोटा उद्देश्य रहा हो इस बात के लिये हमेशा आभारी रहेगा कि इन लोगों ने एक ऐसी संस्था को जन्म दिया जो बाद को चलकर भारतीय इतिहास के एक युग का नेतृत्व कर भारत को आगे बढ़ाने वाली थी। इस कारण इन नेताओं के नाम स्वर्णाक्षर में लिखे जाने के योग्य हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपेन्द्रनाथ का मत

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक उपेन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय ने कांग्रेस के आदि नेताओं के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा "इस बात को यदि हम कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी कि हमारे देश वासियों में जिन लोगों ने कांग्रेस की नींव डाली वे शिक्षा दीक्षा तथा रुचि में देशवासियों से कहीं ज्यादा करीब उन अंगरेजों के थे जो उनके गुरु तथा शासक थे। सेवा तथा अनुकरण के द्वारा अपने गुरुओं को सन्तुष्ट करने में ही वे अपने जीवन की सार्थकता समझते थे। वे यही बहुत समझते थे कि इन्हीं तरीकों से कुछ टुकड़े-टपक पड़े। सामाजिक मामलों में देश के लोगों को वे जहाँ तक हो सके यूरोपीय तरीके पर ढालना ही वे अपना कर्त्तव्य समझते थे। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में यह तय हुआ था कि कांग्रेस सामाजिक विषयों में सुधार चेष्टा करेगी, पर अन्दरूनी गड़बड़ के कारण दूसरे अधिवेशन में यह निश्चय हुआ कि कांग्रेस विशुद्ध राजनैतिक मामलों को लेकर ही आन्दोलन करेगी, तथा सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप न करेगी।

कांग्रेस केवल राजनैतिक संस्था

इससे यह ज्ञात होता है कि कांग्रेस सामाजिक मामलों में भी कुछ करने का इरादा लेकर चली थी, पर वह किसी कारण से इससे हट गयी। एक दृष्टि से यह अनिवार्य था क्योंकि कांग्रेस का आधार ज्यों ज्यों बढ़ता गया, त्यों त्यों उसमें तरह तरह के लोग आते गये। कांग्रेस की राजनैतिक कार्यशक्ति को कायम रखने के लिये आवश्यक था कि वह केवल राजनैतिक प्रश्नों तक ही अपने को सीमित रखती, पर अवश्य ही सामाजिक मामलों में इस प्रकार तटस्थता की नीति में कुछ असुविधायें भी थीं क्योंकि मूलतः राजनैतिक प्रगति को सामाजिक प्रगति से अलग करना सम्भव नहीं था।

इस अवसर पर हम इस बात को भी देख लें कि जिस रूप में कांग्रेस शुरू हुई थी, उसमें धर्म को राजनीति से बिल्कुल अलग रखा गया था। बाद के युग में कांग्रेस के विरुद्ध बारबार यह जो अभियोग लगाया गया है कि उसने धर्म और राजनीति को एक में कर दिया, हम देखेंगे कि कांग्रेस के आदि नेतागण इसके लिये जिम्मेदार नहीं थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १५ :

१८८६ से बंगभंग तक

कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन

कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन १८८६ में कलकत्ते में हुआ जैसा कि श्री अम्बिकाचरण मजुमदार ने लिखा है कि "यद्यपि कांग्रेस का जन्म बम्बई में हुआ, पर सारी रस्मों के साथ उसका बप्तिसभा साम्राज्य की राजधानी कलकत्ते में हुई। अब की बार श्री सुरेन्द्रनाथ बनैर्जी कांग्रेस में शरीक हुए। इसके बाद से वे बराबर कांग्रेस में शरीक होते रहे, १९१७ तक उनका यही क्रम जारी रहा। यह कांग्रेस के तथा सुरेन्द्रनाथ बनैर्जी दोनों के हक़ में बहुत अच्छा रहा। पंडित मदनमोहन मालवीय पहली बार इस कांग्रेस में आये। अब की बार जो प्रतिनिधि आये वे कांग्रेस के अन्तर्गत विभिन्न संस्थाओं से चुनकर आये। ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन के सभापति तथा प्रसिद्ध पुरातात्विक डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र इस अधिवेशन के स्वागतसमिति के सभापति हुए, और श्री दादा भाई नौरोजी अधिवेशन के सभापति हुए।

राष्ट्रीय संगीत और वन्दे मातरम्

इस अधिवेशन में पहली बार एक राष्ट्रीय संगीत गाया गया। बंगाल के प्रसिद्ध कवि हेमचन्द्र ने स्वरचित राष्ट्रीय संगीत गाया। अभी वन्दे मतरम् राष्ट्रीय संगीत के रूप में स्वीकृत नहीं हुआ था, पर अजीब बात है कि हेमचन्द्र ने जिस गाने को गाया, उसमें उन्होंने वन्देमातरम की कुछ पंक्तियों को ला दिया। हेमचन्द्र ने जिस गाने को गाया वह ऐतिहासिक रूप से महत्व का है, इस कारण हम उसे उद्धृत करते हैं। हेमचन्द्र का गाना यों था—

कि आनन्द आज भारत भुवने-भारत जननी जागिल
आहा कि मधुर नवीन सुहासि
मायेर अधरे रये छे प्रकाशि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Satish Chandra Mis
20, Atal Bihari Nagar
UNNAO

जे नो वा प्रभातो किरणेर राशि उषार कपोले ज्वलिल।
भरि कि सुषमा फुटे छे बदने,
कि बा ज्योति ज्वले उजल नयने
कि आनन्देदिक पूरिल–भारत जननी जागिल।
पूरब बांगला, मगध, बिहार,
देराइस्माइल, हिमाद्रिरि धार
कराची मद्रास, शहर बम्बई,
सूरटि, गुजराती, मराट्ठी भाइ, चौदिके मायेरे घेरिल।
प्रेम आलिंगने करे राखिकर
खुले दे छे हृदि, हृदि परस्पर
एक प्राण सबे एक कंठ स्वर मुखे जयध्वनि करिल।
प्रणय विह्वले धरे गले गले
गाहिल उकले मधुर काकले गाहिल—'वन्देमातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलां सुखदां वरदां मातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीं
फुल कुसुमित द्रुमदल शोभिनि
सुहासिनिं सुमधुर भाषिणीं सुखदां वरदां मातरम्,
बहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदल वारिणीं मातरम्।
उठिल से ध्वनि नगरे नगरे
तीर्थ देवालय पूर्ण जय स्वरे, भारत जगत मातिल

भावार्थ—"आज भारत में तथा जगत में कितना आनन्द है कि भारत जननी जग गयी। आहा कितनी मधुर और ताजी हँसी माता के अधर पर जगमगा रही है मानो उषा के कपोल पर प्रभात की सूर्य किरणें दमक रही है।

चेहरे पर क्या अनुपम सुषमा खिल रही है, उज्ज्वल नयनों में कैसी ज्योति जल रही है, कितने आनन्द से दिशायें पूरित हो रहीं हैं, भारत जननी जग गयी।

पूर्व बंगाल, मगध, विहार, डेरा इस्माइल हिमालय का किनारा, कराची, मद्रास, बम्बई शहर, सूरटी, गुजराती, मराठी भाइयों ने चारों तरफ से मां को घेर लिया। प्रेम आलिंगन में आबद्ध होकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हाथ में हाथ रखकर, परस्पर को हृदय खोल दिया है, और एक प्राण तथा एक कंठ होकर सब लोग जय ध्वनि कर रहे हैं।

प्रेम से विह्वल होकर गले से गले लगा कर सब ने मिलकर मधुरस्पर में गाया—बन्देमातरम्,

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां सुखदां वरदांमातरम्।
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनीं
फुल कुसुमति द्रुमदल शोमिनीं
सुहासिनी सुमधुर भाषिणीं सुखदां वरदां मातरम्
बहुबल धारिणींनमामि तारिणि रिपुदल वारिणीं
मातरम्।

यह ध्वनि प्रत्येक नगर में, तीर्थों में, देवालयों में एक जयकारे की तरह गूंज उठी, भारतवर्ष तथा जगत इसे सुनकर मस्त हो गया।"

इस गाने से ही पता चलता है कि यद्यपि हेमचन्द्र ने इस अवसर पर अपना गाना गाया पर वे नैतिक रूप से समझते थे कि वन्देमातरम् का गाना ही राष्ट्रीय संगीत का स्थान लेने योग्य है।

अन्य ब्यौरे

पहले कांग्रेस का अधिवेशन ब्रिटिश इण्डियन ऐसोसियेशन के हाल में होने वाला था कि क्योंकि यह समझा गया था कि बम्बई में प्रतिनियों की संख्या ७२ थी तो यहां अधिक से अधिक १७२ होगी, पर प्रतिनिधियों की संख्या ४२६ पहुँच गयी इसलिये टाउनहाल में अधिवेशन करना पड़ा। २७ दिसम्बर के अधिवेशन में स्वयं रवीन्द्रनाथ ने भी एक गाना गाया, जिसमें उन्होंने एक तरह से भारतीयों की एक जातीयता पर कवि की वाणी में अपना वक्तव्य कहा। डाक्टर राजेन्द्रलाल मिड़ ने भी स्वागत समिति की ओर से बोलते हुए यह कहा—"यह मेरे जीवन का स्वप्न रहा है कि मेरी जाति की बिखरी हुई ईकाईयां किसी दिन एक हो जायं, और केवल व्यक्तियों के रूप में जीने के बजाय हम एक जाति के रूप में जीने में समर्थ हो। हम इस सभा में इसी प्रकार की एकता का प्रारम्भ देख रहे हैं। मैं इस कांग्रेस में भारतवर्ष के लिये अधिक सुखकर तथा सुन्दरतर पिपर्सों की सूचना देख रहा हूं।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सभापति के मन्तव्य

कांग्रेस के सभापति दादा भाई नौरोजी ने अपने अभिभाषण में भारत की गरीबी की समस्या पर विशद रूप से रोशनी डाली। उन्होंने कांग्रेस के कर्तव्यों का दिग्दर्शन कराते हुए यह कहा कि कांग्रेस केवल ऐसी समस्याओं को लेकर चले जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध सारी जाति से हो और यह सामाजिक सुधार तथा अन्य वर्गों प्रश्नों को वर्ग कांग्रेसों के हाथ में छोड़ दे (and it must leave the adjust men of social reforms and other class questions to class congresses.)

अस्त्र कानून का विरोध

इस कांग्रेस में भी प्रतिनिधि मूलक शासन सुधार, सिविल सर्विस में भारतीयों को नियुक्ति सेना; का व्यय आदि विषयों में प्रस्ताव हुए। इस कांग्रेस में हथियार कानून उठा देने के सम्बन्ध में भी भाषण हुआ। अवध के राजा रामपालसिंह ने इस विषय में जो जोरदार भाषण दिया वह पढ़ने योग्य हैं। उन्होंने कहा—

"सरकार ने हमारी जो कुछ भलाई की, उसके लिये हम आभारी हैं। पर सरकार से हमारी जो हानि हुई है, और जिसकी कभी क्षति पूर्त्ति नहीं हो सकती, हम आभारी नहीं हो सकते। हमको दबाने के लिये, हमारे अन्दर की युद्ध शक्ति को नियमित रूप से विलुप्त करने के लिये एक योद्धा तथा वीर जाति को मुंशियों की जाति में परिणत करने के लिये हम सरकार के आभारी नहीं हो सकते। ईश्वर को धन्यवाद है कि अभी हम लोगों की हालत उतनी नहीं बिगड़ी है। भारत में सर्वत्र हममें ऐसे लोग अब भी मौजूद हैं जो तलवार चलाना जानते हैं, और जरूरत पड़ने पर देश को रक्षा के लिये जान देने के लिये भी तैयार हैं। हम सरकार के इतने आभारी है कि हम उसके लिये जान देने में भी नहीं हिचकेंगें, पर इसके साथ ही साथ हमें ऐसा ज्ञात होता है कि ब्रिटेन ने सब तरह से हमारी जितनी भलाई की है, उससे कहीं अधिक बुराई की है, और भारतीयों को एक दिन इसके लिये दुखित होना पड़ेगा कि अंगरेजों के साथ उनका मनहूस सम्पर्क क्यों हुआ। ये बातें कठोर हैं पर सत्य हैं। यदि किसी देश के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को दबाया जाय और उनमें जाति तथा देश की रक्षा की शक्ति को नष्ट किया जाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो उससे जितनी हानि होती है, उससे किसी भी प्रकार क्षति पूर्त्ति नहीं हो सकती है। सरकार ने जिस गलत नीति का अनुसरण किया है, उसके फलस्वरूप केवल हमीं को दुख भोगना पड़ेगा ऐसी बात नहीं है। आप दुनिया की चारों तरफ देखिये, प्रत्येक देश रण साम्रागियों को इकट्ठा कर रहा है और उनकी सेनायें बड़ी हैं। सारे सभ्य जगत का भविष्य खतरे में मालूम होता है। आज हो, कल हो, भीषण युद्ध शुरू होगा, और उसमें ब्रिटेन भी जरूर फंसेगा। ब्रिटेन अगर अपनी सारी सम्पत्ति लगा भी दे तो अपने देश में प्रति हजार एक सौ सैनिक भी इकट्ठा नहीं कर सकता यद्यपि यूरोप की कई शक्तियां ऐसा कर सकती है। हां इंगलैंड टापू होने के कारण यूरोप से अलग है इसलिये वह कुछ हद तक सुरक्षित है, पर यूरोप और एशिया के बीच में जो सामुद्रिक मार्ग है वह शत्रुओं से पूर्ण है। भारत के स्थलमार्ग भी खुले हुए हैं और सबको मालूम हैं। भारतवर्ष अन्य देशों से कटा हुआ नहीं है और इसी भारतवर्ष जिसे आधीन रखने के कारण ही ब्रिटेन के पास इतनी सम्पत्ति है और इतनी मर्यादा है, कभी न कभी कोई यूरोपीय शक्ति इस पर हमला करेगा और फिर यह भयंकर युद्ध क्षेत्र में परिणत होगा। उस समय इंगलैंड को यह अफसोस करना पड़ेगा कि लाखो भारतीयों को निशस्त्र करके एक छोटी सी सेना पर भारत रक्षा का भार छोड़ कर उसने बड़ी गलती की है।

"पर यह नीति हम भारतीयों के लिये बड़ी घातक है। हम बड़े छोटे सभी अस्त्रों से अपरिचित हो चले हैं, साथ ही साथ हममें अपने पैर पर खड़े होने की वह शक्ति भी विलुप्त होती जा रही है जो मनुष्य को खतरे उठाने में समर्थ करती है। जिस समय मेरी उम्र पांच साल की थी, उस समय से मेरे दादा ने मुझे सब तरह की कसरत सिखायी थी और उसी समय से मैंने अस्त्र चलाना और रणकौशल सीखे थे। पर आज कल अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा कौन देता है। आज कल के नौजवान इन बातों को क्या जाने। पहले के नौजवान युद्ध की वासना न रखते हुए भी युद्ध के कौशल सीखते थे, एक दिन न एक दिन उन्हें मौका मिलेगा यह सोच कर खुश होते थे। आज कल यह मनोवृत्ति कहां है। यदि अच्छा सैनिक बनना है, खतरे के समय काम आना है और खतरा प्रत्येक देश पर आता है तो शस्त्र की शिक्षा आवश्यक है। यह जरूरी है कि बच्चा बचपन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से बाप मां को तथा अपने बुजुर्गों को अस्त्र का इस्तमाल करते देखता रहे। २५ साल पहले भी अवध में सभी भले आदमी युद्ध विद्या सीखते थे।"

मुसलमानों का अनुपात

इस कांग्रेस में ३८ मुसलमान प्रतिनिधि आये थे जिनमें से बम्बई के प्रसिद्ध व्यापारी रहमतुल्ला सैयानी, अवध के राजा अली नबाब, बिहार के सफरूद्दीन के नाम उल्लेख योग्य हैं। इससे ज्ञात होता है कि काफी मुसलमान कांग्रेस के पक्ष में थे, फिर भी कई प्रमुख लोग जैसे नबाब अब्दुल लतीफ सैयद अमीर अली तथा उनके अनुयायी इस कांग्रेस में शरीक नहीं हुए थे।

गोरे अखबारों के मन्तव्य

इस कांग्रेस के सम्बन्ध में सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी पत्रों ने क्या कहा यह दिल चस्प है। स्टेटस मैंन ने यह लिखा कि "कांग्रेस ऐसे लोगों की सभा है जिन पर हम गर्व के साथ ऊंगली उठा सकते हैं कि सौ साल के हमारे शासन में ऐसे लोग उत्पन्न तो हुए। पर लंदन के टाइम्स ने यह लिखा कि "यह तो कुछ असंतुष्ट नौकरी चाहने वालों का मजमा था जो पुआल के बने हैं, और देश से जिन्हें कोई मतलब नहीं, जिनमें अनुकरण करने की काफी शक्ति है पर जो सरकार को वास्तविक समस्याओं को कुछ भी नहीं समझती। ये लोग सब बात बनाने वाले लोग हैं, पर ये सार्वजनिक शान्ति के लिये बहुत खतरनाक हो सकते हैं।"

लार्ड डफरिन द्वारा स्वागत

लार्ड डफरिन ने इस अवसर पर कांग्रेस में आये हुए लोगों को एक गार्डन पार्टी दी, और उनको राजधानी में स्वागत किया, पर साथ ही उन्होंने यह कह दिया कि ऐसा वे सम्राट के प्रतिनिधि की हैसियत से नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपनी व्यक्तिगत हैसियत में कर रहे हैं। लार्ड डफरिन ने फिर भी प्रतिनिधियों के साथ मित्रता पूर्ण विचार विनियम किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस का तृतीय अधिवेशन

कांग्रेस का तृतीय अधिवेशन मद्रास में बम्बई के प्रसिद्ध मुस्लिम बैरिस्टर बदरुद्दीन तैयबजी के सभापतित्व में हुई। इस बार कांग्रेस में ६०० से अधिक प्रतिनिधि आये थे। जनता में काफी जोश था और जनता के लिये पहली बार पंडाल का उपयोग हुआ। पंडाल शब्द मद्रासी है और इसका अर्थ मंच है पर यहीं से यह पंडाल शब्द शब्द अखिल भारतीय हो गया। बंगाल से ८० प्रतिनिधि एक स्टीमर रिजर्व करके मद्रास आये थे। इस बार के सभापति स्वयं मुसलमान थे, फिर भी कुछ लोगों ने यह चेष्टा की मुसलमान इसमें शरीक न हों। ऐसी कुचेष्टा करने वालों में नबाब अब्दुल लतीफ का नाम विशेष उल्लेख योग्य है। इन्होंने बांकीपुर में एक सभा में भाषण देते हुए यह कहा कि वे कांग्रेस में शरीक न हो। फिर भी पटना के बार एसोसियेशन सभा से मौलवी सफरुद्दीन, अमीर हैदर, तफज्जल हुसैन आदि कई मुसलमान चुने गये। बाद को सफरुद्दीन साहब कलकत्ता के हाई कोर्ट के जज हो गये थे।

माधवराव तथा तैयबजी के मन्तव्य

सर टी० माधवराव स्वागत समीति के सभापति थे। इन्होंने उस युग के नेताओं के दुरंगी विचार को व्यक्त करते हुए यह कहा कि "हम विश्वास के साथ अपनों को उस महान जाति तथा महान सरकार के हाथों में सौंप दे जो ईश्वर की कृपा से आज हमारे भाग्य के नियन्ता है। हम विश्वास रखें कि हमारा भविष्य उज्वल है।" सभापति ने अन्य विषयों के अलावा यह भी कहा 'भारत में जो विभिन्न सम्प्रदायें हैं, उनके सम्बन्धों में कोई ऐसी बात नहीं है, जिससे कि हमारे सम्प्रदाय के नेतागण कांग्रेस सरकार को सुधारने की जो कोशिश कर रही है उससे मुसलमान अलग रहे।"

कांग्रेस में जनता

इस अधिवेशन की विशेषता यह थी कि इसमें पढ़े लिखे वर्ग के अतिरिक्त साधारण जनता यहां तक कि मजदूरों ने भी हिस्सा लिया। मद्रास में कांग्रेस को सफल बनाने के लिये जो चन्दा इकट्ठा किया गया था उसमें से बताया जाता है कि साढ़े पाँच हजार रुपये मजदूर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और अन्य गरीब लोग के द्वारा दिये हुए एक आने से लेकर डेढ़ रुपये तक के चन्दों से जमा हुआ था। मद्रासियों को मद्रास में कांग्रेस होने का इतना गर्व था कि रंगून, सिंगापुर, मंडाले आदि से मद्रासियों ने इस कांग्रेस के लिये चन्दा भेजा था। कोई पांच हजार जनता नेताओं को देखने के लिये पंडाल के पास इकट्ठी हुई थी। इस बार के अधिवेशन में तंजौर से तीन बढ़ई कांग्रेस में प्रतिनिधि के रूप में आये थे। इनमें से एक ने कांग्रेस की सभा में भाषण करते हुए बढ़इयों के दुःख दर्दों का उल्लेख किया।

अस्त्र कानून के प्रस्ताव पर ह्यूम परेशान

इस अधिवेशन में भी अस्त्र कानून को हटा लेने के सम्बन्ध में विचार हुआ। विपिनचन्द्र पाल तथा सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने अस्त्र कानून के हटा लिये जाने के सम्बन्ध में दीर्घ भाषण किये। त्रैलोक्यनाथ मित्र ने यह संशोधन रखा कि अस्त्र कानून को इस प्रकार से संशोधित किया जाय कि स्थानीय तथा म्युनिसिपलिटि के अधिकारियों से अनुमति लेकर लोग हथियार रख सके। कहा जाता है कि जिस समय इस प्रस्ताव पर विचार हो रहा था उस समय मिस्टर ह्यूम बहुत परेशान हो रहे थे क्योंकि वे डर रहे थे कि कहीं ऐसे प्रस्ताव पास कर कांग्रेस सरकार का कोप भाजन न हो जाय। ठीक भी था जब मिस्टर ह्यूम ऐसे लोग यह समझते थे कि ब्रिटेन और भारत का गठबन्धन चिरन्तन है, और एक शासित रहेगा और दूसरा उदार चरित शासक तो उस हालत में अस्त्र कानून की बात कहां आ सकती थी। अस्त्र कानून उठाने की मांग करना ही इस बात साबित करता था कि मांग करने वाले किसी भी हालत में अस्त्र इस्तमाल करने में विश्वास करते हैं। इसी कारण मिस्टर ह्यूम को ये विचार खतरनाक प्रतीत हुए पर वे शायद इन्हें रोकने में असमर्थ थे।

ह्यूम पर एक पत्र

इस कांग्रेस के बाद मद्रास कांग्रेस के एक दर्शक ने 'नवजीवन' नामक पत्र में जो चिट्ठी लिखी वह इस सम्बन्ध में बहुत दिल चस्प होगी, इस लिये हम उसे उद्धृत कर रहे हैं। पत्र के लेखक ने लिखा था—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"मैं तीन दिन तक लगातर मिस्टर ह्यूम के चेहरे को देखता रहा। यहां से मैंने यह सुन रखा था कि वह मनुष्य से बढ़ कर देवता हैं, पर जब मैं वस्तु जगत में गया तो मेरा प्रेम तो नहीं घटा, पर उनके लिये मेरे मन में कोई श्रद्धा भी उत्पन्न नहीं हुई।❀ यह उस व्यक्ति के लिये कम श्रेय की बात नहीं है कि वे भारत के मित्र है और भारत के लिये अपने देश वासियो के विरुद्ध लोहा ले रहें हैं। जिस समय अब कानून के उठा दिये जाने के सम्बन्ध में कांग्रेस के अन्दर बात चीत हो रही थी उस समय उनकी परेशानी को कोई देखता, वे बहुत ही अनिच्छुक थे और कई बार ऐसा चेहरा बना रहे थे जिससे यह निश्चित रूप से ज्ञात हो रहा था कि उनमें अपनी जाति के हितों के लिये भी ध्यान हैं यद्यपि वे भारत से भी प्रेम रखते हैं। शायद वे यह चाहते थे कि यहां के उदीयमान आन्दोलन और उनके देशवासियों में एक सन्बन्ध स्थापित हो जाय। मुझे ऐसा मालूम होता है कि कांग्रेस इसी सम्बन्ध को स्थापित करने के लिये एक चेष्टामात्र है। शायद इससे भारत को लाभ हो, पर यदि मैं दिल खोल कर कहूँ तो इससे मुझे आशा भी होती है और आशंका भी। इस प्रकार के सम्बन्ध से जिसके द्वारा दोनों जातियों के हितों को एक साथ बांधने की कोशिश की गयी है, सम्भव है अन्त तक एक ही रह जाय, या यहां का उदीयमान जीवन बिल्कुल किसी धूर्त्त राजनीतिज्ञ के हथकंडों से नष्ट हो जाय।"

कांग्रेस में विभिन्न उपादान

पत्र लेखक के पत्र का अगला हिस्सा मिस्टर ह्यूम से था अब कानून से सम्बन्धित नहीं है, फिर भी हम उसे इसलिये उद्धृत करेंगे कि मालूम हो जाय कि एक साधारण व्यक्ति उस समय को कांग्रेस के सम्बन्ध में क्या सोचता था। पत्र लेखक ने आगे इसी पत्र में लिखा था—

❀इस पत्र के लेखक की छोटी सी रचना में भी उस युग के कांग्रेसियों के मन की दुरंगी हालत साफ झलक जाती है, नहीं तो `म हो और श्रद्धा न हो यह समझ में नहीं आती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"इसके अतिरिक्त मैं इस नतीजे पर पहुंच गया हूँ कि जैसे ब्रिटिश पार्लियामेंट के मेंबरों में सदाकत का अभाव है, उसी प्रकार कांग्रेस की भी हालत हो जायेगी, और वह सच्चे अर्थों में भारत की पार्लियामेंट न हो सकेगी। अब की बार की कांग्रेस की बात है कि जिस समय इनकम टैक्स पर आलोचना हो रही थी, उस समय एक मद्रासी सज्जन मंच पर आये। दुर्भाग्य से वे लंगड़े थे। जिस समय वे लगंड़ा कर मंच की ओर जा रहे थे, उस समय बहुत से प्रतिनिधियों ने तालियां बजायीं। मुझे इस पर जितना दुःख और घृणा हुई, मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। इस प्रकार का व्यवहार तो नाटक देखनेवाले कम पैसे के टिकट वालों से देखा जाता है। जो लोग हमारे देश के प्रतिनिधि थे, और जो भारत के भाग्य का निपटारा करने पहुंचे थे, उनका ऐसा बचकाना व्यवहार देखकर मैं दङ्ग रह गया। दूसरे शब्दों में मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि बहुत से लोग कांग्रेस में केवल मनोरंजन के लिये गये थे। कुछ शक्तिशाली लोग अपनी शक्ति को वहाँ और बढ़ाने के लिये गये थे। कुछ तो मालूम होता है कि इसलिये गये थे कि इस मौके का फायदा उठाकर अपने पत्र के ग्राहकों की संख्या बढ़ाने आये थे। हां कुछ निस्वार्थ देशभक्त भी थे। पर उनमें से अधिकांश बिना प्रैक्टिस के वकील या पत्रकार थे और कुछ मेरी तरह थे जिन्हें समुचित शिक्षा नहीं मिली। नौजवान जमींदार तथा कुछ छोटे मुंह बड़ी बात करनेवाले लोग इकट्ठा होकर वहाँ जो प्रसिद्ध व्यक्ति थे उन्हें बोलने नहीं देते थे, उनकी सलाह को नहीं मानते थ और बिना कारण तालियां बजाते थे। इस प्रकार कांग्रेस की कार्यवाही हुई। × × × यदि कांग्रेस में सिर्फ लच्छेदार भाषण करने वालों का बोलवाला हो तो यह ठीक न होगा, वहाँ कर्मवीरों की आवश्यकता है।"

इस पत्र के लेखक के वक्तव्य पर कहां तक विश्वास किया जा सकता है इसमें सन्देह है, पर कांग्रेस में कुछ अवांछनीय तरीके के लोगों का उसी समय से बोलवाला होने लगा था इसमें सन्देह नहीं। यह इस प्रकार की संस्था में स्वाभाविक था।

गवर्नर की दावत

कुछ भी हो अभी कांग्रेस पर सरकार सम्पूर्ण रूप से कुपित नहीं हुई थी। मद्रास के गवर्नर लार्ड कोनर मारा यह चाहते थे कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे अधिवेशन में शरीक हों, पर लार्ड डफरिन ने यह सलाह दी कि वे कांग्रेस के अधिवेशन में जाने के बजाय कांग्रेस के नेताओं को एक चायपार्टी दें। तदनुसार लार्ड कोनरमारा ने कांग्रेस के प्रतिनिधियों को एक पुरतकल्लुफ दावत दी। गवर्नर का बैंड बजता रहा और कांग्रेस के नेतागण गवर्नर के मेहमान हुए। गवर्नर के अतिरिक्त मद्रास के गोरे बैरिस्टर नार्टन ने भी कांग्रेस के प्रतिनिधियों को दावत दी। वे स्वयं भी कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल हुए थे। इस प्रकार यह अधिवेशन एक सफल अधिवेशन रहा। इसमें भी उन्हीं विषयों में प्रस्ताव हुए जिन पर पहले अधिवेशनों में प्रस्ताव हुए थे।

अश्विनी कुमारदत्त का नया तरीका

मद्रास कांग्रेस में पूर्व बंगाल के नेता श्री अश्विनी कुमारदत्त ४५ हजार व्यक्तियों के दस्तखत से एक अपील ले आये थे जिसमें कांग्रेस के नेताओं की शुभकामना करते हुए शासन सुधार के लिये माँग की गयी थी। इस प्रकार ४५ हजार लोगों के दस्तखत कराना एक नयी बात थी। अश्विनी कुमारदत्त ने इस अपील को पेश करते हुये कहा कि "एक अछूत मेरे निकट आया और उसने कहा कि— "महाशय हमारे अपने लोग ही कानून बनायेंगे, यह कितने आनन्द की बात है।" इसी प्रकार एक गरीब मुसलमान ने मुझे चार आने पैसे दिये और कहा कि मैं इसे अपने लोगों के काम में लगाऊँ। एक दूसरे किसान ने अपने पड़ोसी से कहा कि "देखो जैसे हम पंचायत चलाते हैं और पंचायत के फैसले को मानते हैं, उसी प्रकार हमारे अपने ही आदमी कानून बनायेंगे, तब हम उन्हें क्यों न मानेंगे?" महाशय गण आप देख रहें कि जनता किस प्रकार हमें सहायता देने के लिये उत्सुक हैं।"

और भी अधिक जनता

इस प्रकार मद्रास कांग्रेस में यह क्या सुन्दर शब्द सुनायी पड़ा— जनता! और सो भी ४५ हजार के दस्तखत, फिर उसमें अछूत भी और मुसलमान भी। कांग्रेस के बाद जब नेतागण अपने अपने स्थान पर गये, तो उन्होंने अपने अपने स्थान में सभायें कीं। १८८८ के प्रारम्भ में ही इस प्रकार की एक हजार सभायें जरूर हो चुकी थीं। इनमें कई सभाओं में पाँच हजार से भी अधिक भीड़ थी। फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह हमने यह तो बताया ही नहीं कि मद्रास कांग्रेस के अधिवेशन के पहले मद्रासियों में कांग्रेस के सम्बन्ध में जानकारी पैदा करने के लिये वीर राघवाचार्य ने तामिल में एक पुस्तक लिखी और उसकी तीस हजार प्रतियाँ बटवायी गयीं। फिर कांग्रेस की ओर से "कम्ब-खतपुर के मौलवी फरीउद्दीन और रामचन्द्र में बातचीत" शीर्षक एक पुस्तिका की हजारों प्रतियाँ बांटी गयीं। इस पुस्तिका में यह दिखलाया गया था कि जमींदार जब स्थायी रूप से जमींदारी से बाहर रहता है तो जनता की क्या हालत होती है। यह पुस्तिका दो धार वाली थी। देखने में तो यह जमींदारी के विरुद्ध में थी, पर असल में यह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध थी और उस जमाने के इस विचार को प्रतिफलित करती थी कि यहाँ के स्थानीय कर्मचारियों का ही सब दोष है। यह भी सरकार के विरुद्ध प्रचार करने का एक तरीका था, जिसमें उसकी जड़ों पर चोट न करते हुए भी उस पर चोट की जाती थी।

विरोध का प्रारम्भ

इस प्रकार जब कांग्रेस के साथ जनता का कुछ मामूली ही सही सम्बन्ध होने लगा तो सरकार के कान खड़े हो गये। गोरे अखबार जिसमें उन दिनों इलाहाबाद का पायोनियर भी था खुल्लम-खुल्ला कांग्रेस पर बौछारें करने लगा। उनको इस समय बराबर प्रयुक्त (Nation) या जाति शब्द पर भी आपत्ति थी। वहाँ तो कलकत्ता में लार्ड डफरिन ने तथा मद्रास में लार्ड कोनरमारा ने कांग्रेस के नेताओं को दावत दी थी, पर अब १८८८ के प्रारम्भ में ही उत्तर पश्चिम प्रान्त के (यू० पी०) गवर्नर सर आकलैंड कालविन ने कांग्रेस के विरुद्ध जेहाद बोल दिया। उन्होंने खिताब देने के लिए बुलाए हुए दरबार में काँग्रेस को लक्ष्य करके कहा—

"आपको चाहिये कि आप अपने ध्यान को अपने कार्यक्षेत्र के उचित दायरे में सीमित रखें, और न कि बड़ी बड़ी उड़ानों में अपना समय नष्ट करें, जिनको कार्यरूप में परिणत करने के लिये ऐसी सामूहिक क्रिया तथा व्यवहारिक बुद्धि चाहिये जो दीर्घ वर्षों तक सार्वजनिक कार्यों को परिश्रम के साथ करने पर ही उत्पन्न हो सकती है।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इलाहाबाद अधिवेशन में अड़ंगे

कालविन को जब यह मालूम हुआ कि कांग्रेस इलाहाबाद में होने वाली है, तो उसने तरह तरह के अड़गे लगाना शुरू किया। स्वागत समिति कांग्रेस का अधिवेशन खुशुरू बाग में करना चाहती थी, पर सरकार इस पर राजी नहीं हुई। इसके बाद यह चेष्टा हुई कि किले के पास अधिवेशन हो, पर सरकार ने यहां भी कुछ बहाने बताकर अधिवेशन नहीं होने दिया। तब स्वागत समिति के लोगों ने पायोनियर के दफ्तर के पास एक तम्बू गाड़ कर अधिवेशन करना चाहा, पर इस बात को यह कह कर टाल दिया गया कि इससे वहां के रहने वालों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। तब स्वागत समिति के पंडित अयोध्यानाथ ने कांग्रेस का अधिवेशन अपनी ली हुई एक हवेली में करने का विचार किया। इस पर भी कुछ गड़बड़ी की गयी पर अन्त तक इस मकान में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। गवर्नर कालविन इस प्रकार केवल अधिवेशन के लिये जगह में अड़ंगा लगा कर ही चुप नहीं हुए, उन्होंने एक गश्ती चिट्ठी निकाल कर सब सरकारी कर्मचारियों से यह हिदायत दे दी कि वे कांग्रेस में शरीक न हों। यही नहीं जिस समय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ उस समय वे इलाहाबाद छोड़ कर चले गये। शायद वे डरते थे कि कांग्रेस के कुछ नेता उनसे मिलने की कोशिश न कर बैठें। गवर्नर कालविन ने कुछ भी समझ कर यह सब किया हो, पर इस प्रकार कांग्रेस का भला ही हुआ इसमें सन्देह नहीं। जो प्रतिनिधि कांग्रेस में आ रहे थे, उनसे बीस हजार का मुचलका ले लिया गया।

कांग्रेस और अल्प संख्यक सम्प्रदाय

कांग्रेस की शक्ति बढ़ रही थी यह इस बात से ज्ञात है कि इस बार प्रतिनिधियों की संख्या १२४८ थी, जिनमें २२१ मुसलमान, २२० इसाई, ६ सिख, ११ जैनी और ७ पारसी थे। इस प्रकार कांग्रेस में आधे के करीब प्रतिनिधि अल्प संख्यक सम्प्रदायों के थे। सर सैयद अहमद के विरोध पर भी अवध से बहुत से मुसलमान आये। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने अपनी पुस्तक Nation in making में लिखा है कि 'हम इस महान राष्ट्रीय कार्य में हमारे मुसलमान भाइयों का सहयोग प्राप्त करने के लिये सब कुछ कर रहे थे। कभी कभी तो हम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुसलमान प्रतिनिधियों को रेल का किराया देकर ले आते थे और उन्हें अन्य सुविधायें देते थे।"

फूट के बीज

इधर कांग्रेस तो यह चेष्टा कर रही थी कि सब मिलकर चले, पर सरकार ने इसी समय से हिन्दू और मुसलमानों में बिगाड़ पैदा करने की चेष्टा शुरू की। यों तो कुछ मुसलमानों में शुरू से ही हिन्दू विरोधी भाव मौजूद थे। इसका कारण यह था कि कुछ मुसलमान यह समझते थे कि हिन्दुओं के कारण ही उनका राज्य गया, पर जैसा कि हम दिखा चुके कि एक तो आम मुसलमानों का कभी राज्य नहीं था, दूसरा मीर जाफर कोई हिन्दू नहीं था, तीसरा जिस समय अंगरेज दिल्ली पर पहुँचे उस समय दिल्ली का बादशाह मराठों का एक नजरबन्द मात्र था, अर्थात् मुगल राज्य खतम हो चुका था। फिर भी ये लोग ऐसा समझते थे यह गलत प्रचार कार्य की बलिहारी है।

सर्व इस्लामवाद

फिर इस समय इस्लाम के अन्य देशों में सर्वइस्लाम (Panislamism) की एक लहर बह रही थी। ऊपर से देखने में तो सर्व इस्लामवाद एक आक्रमणात्मक विचार धारा ज्ञात होती है, पर जिस पृष्ठ भूमि में इसकी उत्पत्ति हुई तथा जहां जहां से इसका नारा उठा, उसे देखने पर यह ज्ञात हो जाता है कि ईसाई शक्तियों के आक्रमण के विरुद्ध यह अपनी बचत थी, एक विचार धारा मात्र थी।

जमालुद्दीन नामक एक मिस्री मुल्ला ने आकर भारत में भी सर्व इस्लामवाद का प्रचार किया था जिसमें उन्होंने 'दुनियां के मुसलमानों एक हो' का नारा दिया था। इस प्रकार से तरह तरह के कारणों से जो मंद बुद्धि उत्पन्न हो रही थी, और जिसके पीछे शिक्षा में पिछड़े हुए मुसलमानों का हिन्दुओं के मुकाबिले में डरपाने की आकांक्षा भी थी। १८८२ में मुहम्मद यूसुफ ने बङ्गाल की लेजिस्लेटिव असेम्बली में स्वशासन की मांग पर बोलते हुए यह कहा कि मुसलमान सदस्यों की संख्या निर्दिष्ट कर दी जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर सैयद अहमद अजीब रंग में

इसी साल जब पब्लिक सर्विस कमीशन की रिपोर्ट निकली तो उसमें भी यही गुल खिला। कमीशन ने यह सिफारिश की कि सिविल सर्विस परीक्षा में परीक्षार्थियों की उम्र कम से कम २१ और अधिक से अधिक २३ हो। इसके साथ ही कमीशन ने यह सिफारिश की कि स्टैच्युटरी सिविल सर्विस उठा दी जाय, और योग्य कर्मचारियों को तरक्की देकर इसकी जगहों पर नियुक्त किया जाय। यहां तक तो सभी सदस्य एकमत थे। पर सिविल सर्विस की परीक्षा एक साथ भारत और इंगलैंड में हो इस बात पर सब सदस्य एकमत न हो सके।

गोरों ने इसके विरुद्ध वोट दिया यह तो समझ में आता है। वे तो सिविल सर्विस को अपनी बपौती बनाना चाहते थे, पर दो मुसलमान सदस्यों ने जिनमें सर सैयद अहमद भी थे इस प्रस्ताव का यह कह कर विरोध किया कि भारत में सिविल सर्विस की परीक्षा होने पर हिन्दू बाजीमार ले जायेंगे और मुसलमानों को कुछ नहीं मिलेगा। कहना न होगा कि यह बहुत ही अजीब तर्क था। इस तर्क का अभिप्राय यह था कि मुसलमान पा नहीं सकते इसलिये हिन्दुओं को भी न मिले। सर सैयद अहमद के ये विचार बहुत ही प्रतिक्रिया-वादी थे और दुर्भाग्य से भारतीय अंगरेजी शिक्षित मुसलमानों के वे ही अग्रणी तथा नेता हुए। इन्होंने पेट्रियाटिक एसोसियेशन नाम से एक कांगरेस विरोधी सभा भी स्थापित की थी।

सरकार की अकारण घबड़ाहट

इलाहाबाद कांग्रेस के सभापति के पद पर मिस्टर जार्ज यूल नामक एक स्काच सज्जन बनाये गये। यह उन दिनों बङ्गाल चेम्बर्स आफ कामर्स के सभापति थे। आश्चर्य है कि जब इस प्रकार एक जिम्मेदार गोरा कांग्रेस के अधिवेशन का सभापतित्व कर रहा था, तो फिर सर कालविन को उसमें हौआ क्यों दिखाई पड़ा।

वे ही पुराने प्रस्ताव

इस कांग्रेस में लेजिस्लेटिव कौंसिल का सुधार, न्यायविभाग का पृथक्करण, पुलिस विभाग में सुधार, आवकारी में सुधार, एक हजार से अधिक आमदनी पर इनकम टैक्स, शिक्षा के खर्च में वृद्धि,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औद्योगिक कमीशन की नियुक्ति, नमक-कर की कमी पर प्रस्ताव पास हुए।

लार्ड डफरिन द्वारा कांग्रेस पर बौछार

लोग अब इस बात की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे कि विलायत में प्रचार-कार्य हो। ह्यूम तो इस सम्बन्ध में विलायत में आन्दोलन करते ही रहते थे। विलायत में कुछ प्रगतिशील अंगरेज भारतीयों की हमदर्दी में जब तब कुछ कर भी दिया करते थे। लार्ड डफरिन जब भारतवर्ष से जाने वाले थे तो उन्होंने १८८८ के ३० नवम्बर को सेंट एन्ड्रूज डीनर के उपलक्ष्य में बोलते हुए कुछ अजीब बातें कही थीं। उन्होंने कहा था—

"कुछ बुद्धिमान राजभक्त, देशभक्त और अच्छे विचार वाले लोग यह चाहते हैं कि अगला कदम तो नहीं बल्कि अज्ञात एक बड़ी भारी छलांग इस तरह भरना चाहते हैं कि उनकी इच्छा है कि भारतवर्ष की सरकार में लोकतांत्रिक ढंगों का प्रयोग किया जाय, वे लोकतांत्रिक तथा पार्लियामेंटरी ढंग जिसे इंगलैंड ने धीरे धीरे सदियों की तैयारी के बाद सीखा है। वे यह चाहते हैं कि सरकार लोकतांत्रिक हो, नौकरशाही उसके आधीन हो और उन्हें राष्ट्र के खजाने पर अधिकार मिल जाय, और धीरे धीरे ब्रिटिश अधिकारी वर्ग उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़े हों। इनका अगला कदम यह है कि देश की रक्षा के लिये सिर्फ भारतीय सेना ही रहे और ब्रिटिश सेना आधी कर दी जाय।

"मैं उनसे यह कहूंगा कि भला कोई बुद्धिमान व्यक्ति कैसे इस बात की कल्पना कर सकता है कि ब्रिटिश सरकार इस खुर्दबीन से देखे जाने के योग्य अत्यंत अल्पसंख्या को उस महान तथा विस्तृत साम्राज्य के भाग्य का नियंत्रण करने दे जिसके लिये सरकार ईश्वर तथा सभ्यता की आँखों में जिम्मेदार है। यह बताया गया है कि यह अल्पसंख्या एक बहुत बड़ी तथा वृद्धिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, ठीक है यह वर्ग बढ़ेगा तथा साथ ही साथ उसके सदस्यों का ज्ञान तथा बुद्धि भी बढ़ेगी। पर अभी तो हमें इन लोगों के ये दावे थोथे मालूम होते हैं कि ये मौन करोड़ों के प्रतिनिधि हैं। यदि वे मौन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनता के प्रतिनिधि होते, तो वे इनकम टैक्स को घटाने की जो चेष्टा कर रहे हैं, उसके बजाय उसे दुगुना करने की चेष्टा करते। (हँसी) सच तो यह है कि हजारों लोग इस बात पर शंकित हो रहे है कि इस प्रकार की अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने वाली संस्थायें उनके और निष्पक्ष सरकार हजूर के बीच में बोलने का दावा कर रही हैं। इन लोगों को यह जानना चाहिये कि भारतवर्ष की वर्तमान अवस्था में जब कि उसकी संख्या इतनी विशाल है, जब कि उसके हित भिन्न हैं, और उनमें विभिन्न जातियां हैं, उनका कोई ढंग का या असर प्रतिनिधित्व नहीं हो सकता।"

ब्रिटिश इंडिया कमेटी

लार्ड डफरिन ने इस प्रकार चलते समय जो कांग्रेस पर लात जमाई, उससे एक पूरा वादविवाद उठ खड़ा हुआ। यह व्याख्यान लन्दन के 'टाइम्स' में छपा और भारतबन्धु मिस्टर बैडला ने इस विषय पर न्यूकैसल में एक सभा की। लार्ड डफरिन जिस समय इंगलैंड पहुँचे तो बैडला से मिले और उससे माफी मांगे कि उनका वह अभिप्राय नहीं था जो लगाया गया। उन्होंने यह कहा कि हम यह नहीं समझते कि कांग्रेस एक राजद्रोही संस्था है। इन्हीं बातों को देख कर कांग्रेस के नेताओं ने इस बात की आवश्यकता समझी कि विलायत में बराबर प्रचार कार्य होना चाहिये। तदनुसार १८८६ की २७ जुलाई को लंदन शहर में कांग्रेस का प्रचार-कार्य करने के लिये 'ब्रिटिश इंडिया कमेटी' की स्थापना हुई। दादाभाई नौरोजी उन दिनों इंगलैंड में ही थे। १८८६ में वे पार्लियामेण्ट के लिये उम्मेदवार खड़े हुये थे पर वे इसमें सफल नहीं हो सके थे। उन्होंने मिस्टर बेडरबर्न, डब्लू० एस० केन और विलियम डिगबी के साथ ब्रिटिश इंडिया कमेटी को चलाने का भार लिया। इस प्रकार ब्रिटिश इंडिया कमेटी की स्थापना हुई। बाद को इसी कमेटी की तरफ से १८९० में 'इंडिया' नाम से एक मासिक निकलने लगा। यह पत्र १८९८ को जनवरी से साप्ताहिक हो गया। असहयोग आन्दोलन के समय जब आत्मबल पर स्वराज्य लेने की बात-चीत चली, उस समय इंडिया पत्र का प्रकाशन यह कहकर बन्द कर दिया गया कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस का पांचवाँ अधिवेशन

कांग्रेस का पांचवाँ अधिवेशन १८८६ में फिर बम्बई में हुआ। अब की बार सर विलियम बेडरबर्न इसके सभापति थे। सर फिरोजशाह मेहता स्वागत समिति के सभापति थे। इस अधिवेशन में मजे की बात यह है कि यह सन् १८८६ था और इसमें प्रतिनिधि १८८६ आये थे। स्वाभाविक रूप से बम्बई और सिन्ध से ८२१ प्रतिनिधि आये थे, वर्त्तमान बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम से १६५, मद्रास से ३६६, पंजाब से ६२, वर्त्तमान युक्त प्रान्त से २६१, मध्य प्रान्त और बरार से २१४ प्रतिनिधि आये थे। इनमें से मुसलमान प्रतिनिधियों की संख्या २५८ थी। ६ स्त्रियां भी इस अधिवेशन में प्रतिनिधि बन कर आयीं थीं, उनका नाम यह है—पंडित रमाबाई, विद्यागौरी नीलकण्ठ, रमाबाई रानडे, श्रीमती निकम्ब, कादम्बिनी गांगुली और स्वर्णकुमारी घोषाल। कादम्बिनी गांगुली भारत की प्रथम दो ग्रेजुएटों में से थीं। इस अधिवेशन में पहली बार श्री गोपालकृष्ण गोखले तथा लोकमान्य तिलक पधारे।

कांग्रेस में चार्ल्स बैडला

इस कांग्रेस की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि अब की बार चार्ल्स बैडला कांग्रेस के अधिवेशन को देखने के लिये आये थे। बैडला ब्रिटिश पार्लियामेंट के मेम्बर थे, और पार्लियामेंट में जब भी भारत का प्रश्न आता था, तब भी वे भारत का पक्ष लेते थे, यहाँ तक कि लोग उन्हें मेम्बर फार इण्डिया याने भारत के लिये सदस्य कहते थे। बैडला अनीश्वरवादी थे, पर अपने निर्मल चरित्र के कारण लोगों पर उनकी धाक जमी हुई थी। वे बहुत स्वतन्त्र विचार के थे यह इस बात से प्रमाणित होता है कि जब वे पार्लियामेंट के सदस्य चुने गये तो उन्हें नियमानुसार यह कहा गया कि ईश्वर का नाम लेकर शपथ ग्रहण करें, पर उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इसके लिये उन्हें कुछ दिनों तक पार्लियामेंट में सदस्य रूप में बैठने नहीं दिया गया, पर अन्त में उनके लिये विशेष नियम बना और उन्हें अपने ही शब्दों में शपथ ग्रहण करने दिया गया। उन दिनों वे भारत पर एक बिल प्रस्तुत करने में लगे हुए थे। वे कांग्रेस में विशेषकर यही जानने के लिये आये थे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि यहाँ के नेतागण किस दिशा में सोचते हैं, और वे क्या चाहते हैं। वे केवल कांग्रेस देखना ही नहीं चाहते थे बल्कि और लोगों से भी प्रत्यक्ष परिचय करना चाहते थे। पर वे बीमार पड़ गये और नवम्बर के अन्त में ही आ सके। बैडला की उपस्थिति के कारण कांग्रेस के नेताओं में बड़ा जोश था, उन दिनों लोगों को जो मनोवृत्ति थी उसको देखते हुए यह स्वाभाविक था।

सभापति का भाषण

सर विलियम वेडरवर्न ने ब्रिटिश सरकार की निन्दा करते हुए कहा—"कम्पनी की अमलदारी में कम्पनी पर जो देख-रेख रहती थी उसके कारण फिर भी भारतीयों की अवस्था अच्छी थी, पर १८५८ से जब से सरकार कम्पनी के हाथ से सीधे सम्राट के हाथ में गयी तब से भारतीयों के कष्ट और भी बढ़े हैं। कम्पनी को पालियामेंट की परवाह रहती थी, पर अब सरकार को किसका डर है। उदाहरण स्वरूप लार्ड रिपन ने कृषि बैंक की स्थापना के लिये एक योजना बनायी थी, भारत सचिव के दफ्तर ने इसका समर्थन करने के बजाय इस योजना को खतम कर दिया। मैं यह पूछता हूँ कि कृषि बैंक के बगैर किसानों की कैसे उन्नति हो सकती है? वे तो हमेशा साहूकारों के हाथों में कठपुतले बने रहेंगे। यदि कृषि बैंक न हो तो यह निश्चित है कि किसानों की फसल किसानों के घर में नहीं जायगी। जर्मनी को देखिये कि उसमें दो हजार कृषि बैंक काम कर रहे हैं।

लोकमान्य तिलक

इस कांग्रेस में क्या हुआ इस सम्बन्ध में बताने के पहले हम यह बता दें कि लोकमान्य तिलक तथा गोखले जो अब की बार पहले पहल कांग्रेस में आये थे, वे कौन थे। लोकमान्य तिलक स्वभाव से एक ग्रन्थकीट तथा विद्वान थे, पर वे स्वार्थ पर नहीं थे। वे चाहते थे कि जो शिक्षा उन्हें मिली है वह देश के अधिक से अधिक लोगों को मिले। उन्होंने 'डेकन एज्यूकेशन सोसाइटी' नाम से एक शिक्षा-संस्था तथा एक स्कूल कायम किया था। यही स्कूल बढ़ते बढ़ते फरगूशन कालेज में तबदील हो गया। शिक्षाव्रती होने के अतिरिक्त लोकमान्य पत्रकार भी थे। उन्होंने बराबर सोसाइटी के पत्र मराट्ठा और केसरी में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिखा। वे लिखने में किसी की खुशामद नहीं करते थे। जो उचित समझते थे वही लिखते थे। उन्होंने इसी प्रकार केसरी में बम्बई की एक रियासत की समालोचना कर डाली, जिसके कारण उनकी तथा उनके सहयोगी आगरकर को चार महीने की सजा हुई थी। तिलक संस्कृत तथा गणित के बहुत प्रकाण्ड विद्वान थे। वे गीता रहस्य तथा अन्य गवेषणा की पुस्तकें लिख कर अमर हो गये हैं।

गोखले

गोखले भी डेकन एज्यूकेशन सोसाइटी के सदस्य थे। वे अर्थ शास्त्र के पंडित थे। विचारों से वे उदार पन्थी थे। बाद के पृष्ठों में हमें तिलक तथा गोखले से अक्सर साबका पड़ेगा।

अल्प संख्या का प्रश्न

इस कांग्रेस में भी शासन सुधार की मांग सम्बन्धी प्रस्ताव ही मुख्य प्रस्ताव था। यों तो यह प्रस्ताव पहले की ही तरह था, इसमें कोई विशेषता नहीं थी, पर इसमें एक नयी बात थी। वह बात यह थी कि इस प्रस्ताव में यह कहा गया था कि दस लाख में एक सदस्य लिया जाय, और पारसी, ईसाइ, मुसलमान, जो भी अल्प संख्यक सम्प्रदाय के लोग हों, उनके कम से कम इतने सदस्य लिये जाँय कि दस लाख पर एक के हिसाब से उनके सदस्यों की संख्या कम न हो। मि० आर्डले नार्टन ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। पंडित अयोध्या-नाथ ने इसका समर्थन किया। मिस्टर ह्यूम की राय में इस अल्प संख्या वाली बात की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे बोले "भारतीय तो भारतीय हैं, उनमें अल्प संख्या और बहुसंख्या कैसी। अवध के मुंशी हिदायत रसूल ने यह संशोधन रखा कि यद्यपि हिन्दुओं की बहुसंख्या है, पर धारा सभा में हिन्दू और मुसलमानों की सख्या बराबर हो। लखनऊ के बैरिस्टर मिस्टर हामिद अली खां ने इस संशोधन का यह कह कर विरोध किया कि इस सम्बन्ध में हिन्दू और मुसलमानों का कोई प्रश्न नहीं उठता। इस पर सैयद वाजिद अली विवाजो ने तैश में आकर कहा कि धारा सभा में मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं की संख्या की तिगुनी हो। सैयद मोरुद्दीन अहमद बलखी ने साम्प्रदायिक मनोवृत्तियुक्त संशोधनों का विरोध करते हुए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा कि "हम यहां पर एक सामान्य उद्देश्य लेकर जमा हुए हैं। ऐसे अवसर पर न तो मुसलमान अपने को मुसलमान कह सकते हैं न हिन्दू अपने को हिन्दू कह सकते हैं। यहां तो हम सब सम्प्रदाय जाति-पांति छोड़ कर भारतीय ही हैं। हिदायत रसूल का संशोधन गिर गया स्वयं मुसलमानों ने इसके विरुद्ध वोट दिया।

स्त्रियों को वोट का प्रस्ताव

शासन-सुधार के प्रस्ताव के सिलसिले में कादम्बिनी गांगुली के पति द्वारकानाथ गांगुली ने इस बात का संशोधन पेश किया कि स्त्रियों को भी वोट का अधिकार मिले। गांगुली महाशय स्त्रियों को स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में आन्दोलन करने के सिलसिले में चुके थे। वे 'ललनासुहृत' नामक एक स्त्रियों के अधिकार सम्बन्धी पत्र के सम्पादक भी थे। मिस्टर गांगुली का संशोधन पास नहीं हुआ, बल्कि उन्हें इसे वापस लेना पड़ा। यह कोई आश्चर्य को बात नहीं है क्योंकि अभी तक इंगलैंड में भी स्त्रियों को अधिकार नहीं मिला था। यद्यपि वहां स्त्रियों की हालत भारतीय स्त्रियों से कहीं अच्छी थी। उस युग के कांग्रेसी नेताओं के लिये ब्रिटिश कानून तथा विधान आदर्श था। वे उसके आगे सोच ही नहीं सकते थे। फिर भला वे इस संशोधन को कैसे मानते।

विलायत में प्रतिनिधि मंडल

इसी अधिवेशन में यह तय हुआ कि विलायत में कांग्रेस नेताओं का एक प्रतिनिधि मंडल भेजा जाय। इस प्रतिनिधि मंडल में ह्यूम नार्टन, यूल, सुरेन्द्र बनर्जी, आर० एन० मुधोलकर, फिरोजशाह आदि थे। ये लोग १८६० में विलायत गये, और पहले इन्होंने दादा भाई नौरोजी के निर्वाचन क्षेत्र फिन्सबरी से काम शुरू किया। फिर मंडल ने कई जगह विलायत में व्याख्यान दिये। चार-पांच महीना घूम कर यह मंडल विलायत से १८६० की जुलाई के लगभग लौट आया।

मिस्टर बैडला के विचार

अगली कांग्रेस के विषय में बताने के पहले हम यह बता दें कि मिस्टर बैडला के भारत आने से और क्या घटनायें हुईं। पांचवे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिवेशन के बाद मिस्टर बैडला को एक मानपत्र दिया गया। बहुत से मानपत्र तैयार थे, पर यह तय हुआ कि कांग्रेस का मानपत्र ही पढ़ा जाय और बाकी सब पठित करके मान लिया जाय। तदनुसार ऐसा ही हुआ। मानपत्र में यह कहा गया था कि मिस्टर बैडला ने जनता के लिये अपना जीवन न्यौछावर किया है। इसके उत्तर में मिस्टर बैडला ने कहा कि "जनता के लिये नहीं तो हम किसके लिये काम करें, हम जनता में ही पैदा हुए, जनता हम पर विश्वास करती है, और, मैं जनता के लिये ही मरूँगा।" पर मिस्टर बैडला ने कांग्रेस के नेताओं को कोई विशेष उम्मीद नहीं दिलायी उन्होंने कहा कि मौका ऐसा है कि कांग्रेस कुछ ज्यादा उम्मीद न करे। उन्होंने कहा "इंगलैंड में जो बड़े बड़े सुधार हुए हैं, वे हमेशा धीरे धीरे हुए हैं। जिन लोगों ने पहले उन सुधारों की आवाज उठायी वे राजद्रोही कहे गये, और कभी कभी तो अपराधियों की तरह जेल भेजे गये, पर वाणी और विचार अमर हैं। जेल भेज कर सत्य का गला नहीं घोंटा जा सकता है, इससे कुछ देर के लिए सत्य की प्रगति रुक सकती है, इससे सत्य घंटा दो घंटा विलम्बित हो सकता है, पर काल कोठरियों की दीवारों के अन्दर इसे बिजली की तरह गति प्राप्त होती है और फिर यह बड़े जोर से निकलती है।" स्मरण रहे कि बैडला उन लोगों में थे जो भारत के सबसे अच्छे मित्र समझे जाते थे, और उनके ये विचार थे। यदि अन्तर्गत वस्तु की दृष्टि से देखा जाय तो उनका कथन विशेष आशावर्द्धक नहीं था। उन्होंने कांग्रेस की प्रशंसा की, और लोगों से कहा कि 'लोग पार्लियामेंट के पास हजारों, लाखों और हो सके तो करोड़ों के दस्तखत से अर्जी भेजें।' इस प्रकार मिस्टर बैडला कांग्रेस नेताओं को वे ही मार्ग बता गये जिनका वे अनुसरण कर रहे थे। उसमें कोई नई बात नहीं थी। मिस्टर बैडला ने लौट कर पार्लियामेंट में भारत सम्बन्धी एक बिल पेश किया, पर इस बिल के पास होने के पहले ही वे ३० जनवरी १८९१ को मर गये। इस कांग्रेस में अधिक प्रतिनिधि आये थे, इस कारण प्रतिनिधियों के आगमन नियमित करने के लिये यह तय हुआ कि प्रति दस लाख आबादी पर एक प्रतिनिधि आ सकेगा। हम देखेंगे कि इस नियम के कारण अगली कांग्रेस में प्रतिनिधियों की संख्या घट गयी। कांग्रेस का कोई जमाना था जब उसमें कुछ लोगों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का किसी तरह आ जाना ही अच्छा समझा जाता था, पर अब कांग्रेस की ताकत बढ़ चुकी थी। स्वाभाविक रूप से अब प्रतिनिधियों के नियमन की जरूरत पड़ी। मिस्टर ह्यूम प्रधान मंत्री रहे और इलाहाबाद के पंडित अयोध्या नाथ उनके सहकारी चुने गये। इनको सलाह देने के लिये बङ्गाल के उमेश बनर्जी, मद्रास के आनन्द चालू और बम्बई के फिरोजशाह मेहता को लेकर एक स्टैंडिंग कौंसिल बनी, इसे हम एक तरह से कार्य समिति का प्रारम्भ कह सकते हैं।

कांग्रेस का छठा अधिवेशन

कांग्रेस का छठा अधिवेशन १८६० में कलकत्ते में श्री फिरोजशाह मेहता की अध्यक्षता में हुआ। स्वागत समिति के सभापतित्व के लिये सर रमेशचन्द्र मित्र को लोगों ने घेरा। अभी अभी वे कलकत्ता हाई-कोर्ट की जजी से पेंशन लेकर अलग हुए थे, पर उन्होंने बीमारी के आधार पर यह पद अस्वीकार कर दिया। तब कलकत्ता के प्रसिद्ध बैरिस्टर मनमोहन घोष स्वागत समिति के सभापति हुए। इस अधिवेशन के लिये नये नियमों के अनुसार १ हजार प्रतिनिधि चुने गये थे, पर इनमें से केवल ७०० अधिवेशन में शरीक हो सके।

सरकारी कर्मचारियों का कांग्रेस में शरीक होने की मुमानियत

इस अधिवेशन पर भी सरकार का कोप स्पष्ट था। अधिवेशन के कुछ दिन पहले ही गोरों के अखबारों में यह खबर निकली—फिर सरकार ने यह विज्ञप्ति निकाली है कि कोई भी सरकारी कर्मचारी दर्शक की हैसियत से भी कांग्रेस के अधिवेशन में शरीक न हो। इससे बहुत तहलका मच गया। इस प्रकार की बातों से नौकरशाही की मूर्खता ही सूचित होती है। बात यह है कि नौकरशाही तो बिल्कुल किसी तरह की आलोचना सुनना ही पसन्द नहीं करती। सरकार ने जो विज्ञप्ति निकाली थी उसके सम्बन्ध में यह समाचार निकला था।

"बंगाल सरकार को यह मालूम हुआ है कि कांग्रेस के पंडाल के अन्दर जाने के लिये कलकत्ता में रहने वाले बहुत से सरकारी नौकरों को प्रवेशपत्र दिये गये हैं, इसलिये सरकार ने विभागों के अध्यक्षों तथा मंत्रियों को यह आदेशमूलक गश्ती चिट्ठी दी है कि कांग्रेस के अधिवेशन में कोई भी सरकारी नौकर न शामिल हो, और उसकी कारवाई में तो भाग लेना बिलकुल मना है।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निमन्त्रण पत्र लौटाये गये

कांग्रेस के अधिकारियों ने बंगाल के गवर्नर सर चार्ल्स ईमियट तथा उनके कौंसिलियरों के लिये सात कार्ड भेजे थे। यह कार्ड यह कहकर लौटा दिये गये कि गवर्नर महोदय अथवा उनके घर के लोग, इन कार्डों का कोई इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि भारत सरकार ने ऐसी समाजों में सरकारी नौकरों के जाने की मुमानियत करदी है, इसलिये यह कार्ड लौटाये जाते हैं। इस प्रकार सरकार का कोप स्पष्ट था।

इस पर नेताओं का रोष

इस पर कांग्रेस के नेताओं में बड़ा जोश फैला क्योंकि उस युग के कांग्रेसी नेता अपने को यदि देशभक्त समझते थे तो साथ ही साथ राजभक्ति में भी किसी से पीछे समझे जाने के पक्षपाती नहीं थे। मिस्टर जार्ज यूल ने इस पर भाषण देते हुए कहा—क्या हम अछूत हैं? क्या हम किसी तरह किसी से राजभक्त कम हैं? इसलिये जब ऐसी हिदायतें दी जाती हैं कि कोई सरकारी कर्मचारी हमसे न मिले, तो हम इसे अपना अपमान समझते हैं और हम इसके उत्तर में यह कहते हैं कि इंसानियत के गुणों की दृष्टि से हम उनसे किसी प्रकार घट कर नहीं हैं।' यही उस युग के नेताओं की भावना थी।

लार्ड लैंसडाउन की सफाई

इस सम्बन्धमें उस समय के बड़े लाट लार्ड लैंसडाउन को एक पत्र भी लिखा गया जिसमें इस प्रकार की गश्ती चिट्ठी का प्रतिवाद किया गया। इसके उत्तर में बड़े लाट की तरफ से यह कहा गया कि बङ्गाल के गवर्नर साहब गश्ती चिट्ठी का सही मतलब नहीं समझ सके। यह बताया गया कि 'कांग्रेस आन्दोलन बिल्कुल वैध है! भारत सरकार यह मानती है कि कांग्रेस आन्दोलन का भारत में वही स्थान है जो यूरोप में अग्रगामी उदार पंथियों का है। अवश्य साथ ही देश में कानसर्वेटियों का बहुमत है।' इस पत्र के सिलसिले में बड़े लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी ने यह लिखा कि 'जिस प्रश्न पर आप विशेष रूप से बड़े लाट साहब से पूछ रहे हैं उसके सम्बन्ध में मेरा यह कहना है कि यह गश्ती चिट्ठी सिर्फ उन लोगों पर लागू होती है जो इस समय सरकारी नौकरी में हैं, यह नियम पेंशनयाफ्तों या ऐसे लोगों पर लागू नहीं होता जो सरकारी नौकरी से अलग हो चुके हैं।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लार्ड डफरिन को जबाब

लार्ड डफरिन यहां से बिदा होते समय कांग्रेस को जो लात जमा गये थे उसका उत्तर देते हुए इस अधिवेशन के सभापति श्री फिरोजशाह मेहता ने कहा—"हमारे ऊपर यह जो अभियोग लगाया गया था कि हम खुर्दबीन से देखेजाने योग्य अल्प संख्यक हैं, हम उस अभियोग के बाद भी जो रहे हैं। हम पर यह जो अभियोग लगाया गया है कि हम लोग सब छद्मवेशधारी नौकरी चाहने वाले बाबू हैं, हम उससे भी नहीं मरे, हम पर जो बौछारें की गयीं, गालियां दी गयीं, हमें गलत दृष्टि से देखा गया, हम उसके बावजूद जीवित हैं। हम पर राजद्रोही होने का जो अभियोग लगाया गया, हम उससे भी बरी हो चुके हैं।"

दो तरफा दुरंगीनीति

इस प्रकार सभापति के अभिभाषण में हम उसी दुरंगी बात को पाते हैं जो उस युग को विशेषता थी। बुद्धिमान पाठक ने यह देखा होगा कि बड़े लाट साहब तथा उनके प्राइवेट सेक्रेटरी के पत्र में भी इसी प्रकार की दुरंगी बात थी। वे कांग्रेस को वैध मानते हुए भी उसमें न तो शामिल होते हैं और किसी को शामिल होने भी नहीं देते। कांग्रेस और सरकार का यह सम्बन्ध अजीब था। बात यह है कि दोनों में से कोई भी दूसरे को न तो बिल्कुल दुश्मन ही करार देने के लिये तैयार था, और न दोस्त ही बन सकता था। कांग्रेस इसी परिस्थिति में बहुत दिनों तक रहने वाली थी।

अल्प संख्यक सम्प्रदाय और चुनाव

इस कांग्रेस में भी शासन सुधार पर प्रस्ताव आया। पटना के सैयद सरुफूद्दीन ने लार्ड क्रास तथा लार्ड सलसबरी के मन्तव्यों का उत्तर देते हुए कहा कि 'यह जो कहा गया है कि मुसलमान अल्प संख्यक है और उनको शासन सुधार से हानि होगी, इसका कोई अर्थ नहीं है, हम दूर क्यों जांये, पटना को ही लें। वहां पर म्युनिसपलिटी में २० सीटें हैं, पर हिन्दुओं की बहुसंख्या के होते हुए भी १३ मुस्लिम सदस्य हैं। बम्बई में हिन्दुओं की बहुत अधिक संख्या है, फिर भी पांच पारसी, तीन गोरे, दो हिन्दू, और दो मुसलमान इस के सदस्य हैं हमारे देश में अभी तक बहुसंख्या के विषय में कोई असुविधा नहीं हुई है इसलिये यह प्रश्न उठाना ही नहीं चाहिये।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विलायत में कांग्रेस के अधिवेशन का प्रस्ताव

इस अधिवेशन में एक प्रस्ताव यह भी आया था कि १८६२ की कांग्रेस विलायत में हो। पार्लियामेंट के मेम्बर मिस्टर केन ने इस सम्बन्ध में लोगों से कहा कि हम विलायत के लोगों की तरफ से यह आश्वासन देते हैं कि जब आप विलायत में आयेंगे तो हम आप को ऐसा स्वागत दिलायेंगे कि आप की तबियत खुश हो जायेगी। पर यह प्रस्ताव माना नहीं गया। स्पष्ट ही सब लोगों का विलायत जाना सम्भव नहीं था।

कुछ प्रस्ताव

इस कांग्रेस के अन्य प्रस्तावों में नमक कर के विरुद्ध, बंगाल के अतिरिक्त अन्य स्थानों में इस्तमरारी बन्दोबस्त चालू करने के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पास हुए। कांग्रेस ने मादक द्रव्यों पर नियंत्रण के सम्बन्ध पर भी एक प्रस्ताव पास किया।

कांग्रेस का सातवां अधिवेशन

कांग्रेस का सातवां अधिवेशन नागपुर में मद्रास के आनन्द चालू के सभापतित्व में हुआ। ६ठें अधिवेशन के बाद कहा जाता है कि मिस्टर ह्यूम इंगलैंड गये थे और उन्होंने इस बात थी जी तोड़ कोशिश की थी कि कांग्रेस का अगला अधिवेशन लदंन में हो। कुछ लोग इस प्रस्ताव को अव्यवहारिक समझते थे, पर मिस्टर ह्यूम एक समय इस पर इतना अड़ गये थे कि उन्होंने लिख भेजा था कि 'यदि मेरा प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ तो मेरा त्यागपत्र ले लिया जाय। कुछ भी हो यह प्रस्ताव कार्यरूप में परिणत नहीं हुआ और नागपुर में कांग्रेस होना तय हुआ। मिस्टर नारायण स्वामी स्वागत समिति के सभापति हुए।

ह्यूम मान गये

यद्यपि मिस्टर ह्यूम ने कांग्रेस से अलग हो जाने की धमकी दी थी, पर वे इस अधिवेशन में आये और अपने हाथों में कांग्रेस को सूत्र को ले लिया। यह समझ में नहीं आता कि वे लंदन में कांग्रेस का अधिवेशन करने के इतने पक्षपाती क्यों थे। शायद वे अपने ढंग से यह समझते थे कि लंदन में अधिवेशन होने पर ब्रिटिश सरकार पर अधिक असर पड़ेगा। भारत में आते ही मिस्टर ह्यूम ने कांग्रेस के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेताओं को एक गश्ती चिट्ठी इस आशय की लिखी कि सातवीं कांग्रेस में किसी नये प्रस्ताव की आलोचना की जरूरत नहीं है, बल्कि पुराने प्रस्तावों पर नये तरीके से ठप्पा लगाकर काम को आगे बढ़ाया जाय। ऐसी गश्ती चिट्ठी भेजने में उनका आशय कदाचित यह था कि पार्लियामेंट पर असर डाला जाय कि वे ही प्रस्ताव बराबर आते हैं इसलिये मांग मान ली जाय।

सैनिक व्यय पर प्रस्ताव

इस कांग्रेस में लोकमान्यतिलक ने बढ़े हुए सैनिक विभाग के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव रखा जिसमें उन्होंने यह कहा कि बेकार में होने वाले भविष्य आक्रमण के नाम पर सैनिक व्यय बढ़ाते जाने का कोई अर्थ नहीं होता, इससे तो बल्कि भारतीयगण जिससे आत्मरक्षा में समर्थ हो सकें, इसलिये एक तो अस्त्र कानून के बरतने में जो कड़ाई तथा पक्षपात से काम लिया जाता है उसे दूर किया जाय, युद्ध विद्या सीखने के लिये सैनिक कालेज खोले जाय इत्यादि। अली अहमद भीम जी ने लोकमान्य का समर्थन करते हुए यह दिखलाया कि भारत सब से गरीब देश है पर यहां का सैनिक व्यय सबसे अधिक है। कांग्रेस नेताओं का इस विषय में शंकित होना बहुत ही स्वाभाविक था। १८६४ से १८८५ तक सैनिक व्यय ५ करोड़ रुपये बढ़े थे पर १८८५ से १८९१ तक ५४ करोड़ रुपये व्यय बढ़ा था। भारत सरकार यह सब रूस के डर से कर रही थी। लोगों को यह शंका थी कि भारत रक्षा के नाम पर सरकार भविष्य युद्ध की तैयारी कर रही है; और वह भारतीयों के दाम पर।

इस कांग्रेस के प्रस्ताव

इस बार के अधिवेशन में जंगल कर के विरुद्ध एक प्रस्ताव पास हुआ। पहले के जमानों में जंगलात बहुत कुछ आम सम्पत्ति समझी जाती थी। फिर जंगल कर का प्रत्यक्ष फल यह हुआ था कि अकेले मद्रास में ही एक साल के अन्दर ३ लाख गायें मर चुकी थीं। इस प्रकार कांग्रेस ने यह एक प्रस्ताव रखा जिसके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वह मध्यवित वर्ग से सम्बद्ध नहीं था। इसी अधिवेशन में एक प्रस्ताव सरकारके इस चेष्टाके विरुद्ध भी पास हुआ कि सरकार जन-शिक्षा के बहाने उच्चशिक्षा को सीमित कर रही है। पहले ही हम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिखा चुके हैं कि तरह तरह का दावा करने पर भी बराबर कम्पनी से लेकर ब्रिटिश सरकार के कर्मचारी सभी भारतीयों को उच्च शिक्षा के विरोधी थे। सरकार से यह भी अनुरोध किया गया कि शिल्प कला की शिक्षा तथा ग्रामशिक्षा की तरक्की के लिये एक कमीशन बैठा कर देखें कि कैसे भारत की उन्नति हो सकती है।

काँग्रेस का आठवाँ अधिवेशन

१८९२ में कांग्रेस का, आठवाँ अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ। लोग चाहते तो यह थे कि अब को बार दादाभाई नौराजो कांग्रेस के सभापतित्व के पद को सुशोभित करें, पर वे पार्लियामेण्ट के चुनाव के झगड़े से फुरसत न पा सके इस कारण उमेशचन्द्र वेनर्जी कांग्रेस के सभापति बनाये गये। दादा भाई नौराजी इस बीच में पार्लियामेण्ट के मेम्बर चुने गये थे। उनको अपने प्रतिद्वन्दीसे तीन वोट ज्यादा मिले थे। उनके प्रतिद्वन्दी ने इस बात को अर्जी दी थी कि फिर से वेलट के कागजों को परीक्षा हो, इसी कारण दादाभाई को विलायत में रुकना पड़ा। कुछ भी हो दादा भाई के चुने जाने पर कांग्रेस के नेताओं में बड़ी खुशी थी और सभापति ने इसको अपने अभिभाषण में व्यक्त किया। सन्देह नहीं कि उन दिनों को दृष्टि से वह एक बहुत ही भारी सम्मान था।

१८९२ का इंडियन कौंसिल्स ऐक्ट

इस बीच में १८९२ का इंडियन कौंसिल ऐक्ट पास हो चुका था। इसमें कोई ऐसी बात नहीं थी पर फिर भी पुराने कानून से यह कुछ अच्छा था। ब्रैडला ने पार्लियामेंट के सामने जो कानून रखा था, वह पास नहीं हो सका था। उस कानून के प्रस्तावक की मृत्यु के साथ साथ वह कानून भी खतम हो चुका था। पर चतुर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इस बात को समझते थे कि भारतीय जनमत को संतुष्ट करने के लिये कुछ न कुछ दिखावा करना चाहिये, तदनुसार लार्ड क्रास ने एक तजवीज हाऊस आफ लार्डस में रखी थी। इस तजवीज में भारतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्यों की संख्या १२ से १६ कर दी गई। चुनाव का सिद्धान्त लागू नहीं हुआ, पर यह कहा गया कि नामजदगी करते समय म्यूनिसिपलिटियां और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की राय लेकर नामजदगी की जायेगी। इस कानून में यह था कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रत्येक प्रांत के भारतीय कौंसिल में एक गैर सरकारी भारतीय लिया जायेगा। प्रांतीय कौंसिलों के भी सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गयी। पहले बम्बई और मद्रास में ८ ही सदस्य होते थे, अब इसमें २०, उत्तर पश्चिमी प्रांत (यू० पी०) में १५ तथा पंजाब में ६ सदस्य कर दिये गये। म्युनिसपलिटियों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों, चेम्बर आफ कामर्सों तथा विश्वविद्यालयों के भी कुछ अधिकार बढ़ा दिये गये। लेजिस्लेटिव कौंसिलों के अधिकार भी कुछ बढ़ाये गये, और सदस्यों को यह अधिकार हुआ कि वे प्रश्न पूछ सकते हैं। लोकतंत्र की दृष्टि से देखने पर यह बिल बिल्कुल निकम्मा था, क्योंकि न तो इसमें जनता या जनता के किसी हिस्से द्वारा चुनाव ही था, और ज़ो कौंसिलें इस प्रकार बनने वाली थीं, उनमें सरकारी सदस्यों की ही बहुसंख्या रही। लार्ड क्रास का यही बिल पास हुआ। हाउस आफ कामन्स में भारतीय उपसचिव मिस्टर कर्जन (बाद को लार्ड कर्जन) ने इस बिल को पेश किया। ब्रैडला प्रस्तावित बिल के साथ तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि यह बिल कितना प्रतिक्रिया वादी था। ब्रैडला का बिल भी लोकतांत्रिक दृष्टि से बहुत त्रुष्टिपूर्ण था, फिर भी उसमें यह प्रस्ताव था कि जो भी कौंसिल बने चाहे केन्द्रीय कौंसिल हो या प्रांतीय कौंसिल, उसके आधे सदस्य भारतीयों के द्वारा चुने हुए हों, एक चौथाई सरकार द्वारा नामजद हों, और एक चौथाई सरकारी सदस्य हों।

इस ऐक्ट पर कांग्रेस का प्रस्ताव

कांग्रेस ने इस बिल के सम्बन्ध में प्रस्ताव करते हुए यह कहा कि यद्यपि कांग्रेस राजभक्ति के साथ इस ऐक्ट को ग्रहण करती है फिर भी प्रधान मंत्री तथा अन्य लोगों की तरफ से यह जो कहा गया है कि इसका उद्देश्य धारा सभाओं में भारतीयों को वास्तविक सजीव प्रतिनिधित्व देना है, सो ऐक्ट ऐसी कोई बात नहीं करता, कांग्रेस यह उम्मीद रखती है कि ऐक्ट के जो नियम वगैरह बनाये जा रहे हैं, वे मेस्टर ग्लैडस्टोन की घोषणा के अनुसार होंगे, और उनसे जनता के प्रति न्याय करने की चेस्टा की जायेगी। इस प्रस्ताव के अतिरिक्त कांग्रेस और कर ही क्या सकती थी। कांग्रेस के निकट एक ही अस्त्र था वह था ब्रिटिश सरकार के सामने हाथ पसारना सो इस उपाय से इससे अधिक उस समय मिलने वाला नहीं था। कौंसिल के मेम्बरों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को प्रश्न पूछने का जो अधिकार दिया गया था वह निरर्थक इसलिये था कि प्रश्न का जो उत्तर दिया जाता था, वह अन्तिम समझा जाता था। न तो उस उत्तर पर कोई बहस हो सकती थी, और न उसकी जांच हो सकती थी। सदस्यों को बजट की आलोचना करने का अधिकार तो मिला था, पर उस पर वोट देने का अधिकार उन्हें नहीं था। इन सब बातों को देखकर विधान बनाने के सम्बन्ध में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की प्रतिभा की प्रशंसा करनी पड़ती है, पर यह स्मरण रहे कि यह प्रतिभा संगीन के जोरों पर ही काम कर सकी, नहीं तो उस समय के कांग्रेस के नेता जहां तक बारीकी का सम्बन्ध है इनसे पीछे नहीं थे। पर जबर्दस्ती के आगे भला इन लोगों की बारीकी क्या चलती।

कांग्रेस का नवां अधिवेशन

कांग्रेस का नवां अधिवेशन लाहौर में दादा भाई नौरोजी के सभापतित्व में १८६३ में हुआ। सरदार दयालसिंह मजीठिया स्वागत समिति के सभापति थे। इस बार प्रतिनिधियों की संख्या ८६६ थी जिनमें से पंजाब से ही ४८१ प्रतिनिधि आये थे। दादा भाई नौरोजी के पार्लियामेंट में चुने जाने से छात्र समाज उन पर ऐसा खुश था कि घोड़ा हटाकर छात्रों ने ही सभापति की गाड़ी खींची। उनके पार्लियामेंट में चुने जाने से पार्लियामेंट के सदस्यों में भारतीयों के सम्बन्ध में एक अच्छा खासा आन्दोलन खड़ा हो गया था। दादा भाई नौरोजी लाहौर आने के पहिले ही इंडियन पार्लियामेंटरी कमेटी के नाम से एक कमेटी बना चुके थे। इस कमेटी में १५४ एम० पी० शामिल हो गये थे। इसी कमेटी के आन्दोलन के फलस्वरूप बाद को चलकर भारत सचिव के विरोध के बावजूद यह प्रस्ताव पास हो गया कि भारतवर्ष में भी विलायत के साथ साथ सिविल सर्विस की परीक्षा हुआ करें। इसी कमेटी के प्रभाव के कारण इंडिया कौंसिल ऐक्ट को कार्यरूप में परिणत करने के लिये जो नियम तथा उपनियम बने, वे एक हद तक उदार बने, और विश्वविद्यालय म्युनिसिपलिटी, चेम्बर आफ कामर्स, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, कारपोरेशन, जमींदार सभा को यह हक़ मिल गया कि वे सदस्य का नाम भेजें। अवश्य सम्बन्धित लाट साहब को यह अधिकार रहा कि वे चाहे तो इन सिफारिशों को ठुकरा कर अपनी राय के किसी व्यक्ति को कौंसिल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में लेलें, पर अक्सर वे ऐसा नहीं करते थे। इस प्रकार परोक्ष रूप से चुनाव का कुछ मामूली श्रीगणेश हुआ। कलकत्ता कारपोरेशन ने इसी प्रकार सुरेन्द्रनाथ को कौंसिल में भेजा था।

दादाभाई का गौरव

इस कारण दादा भाई नौरोजी का सम्मानित होना बहुत ही स्वाभाविक था। उस समय के अंगरेजी पढ़े लिखे नेताओं की दृष्टि में ब्रिटिश पालियामेंट ही सब अधिकारों का देनेवाला कल्पतरु था, जब दादाभाई इसी पालियामेंट में पहुँच गये तो फिर क्या कहना था फिर उन्होंने इसका फायदा उठाकर वह पालियामेंटरी कमेटी बनायी थी।

अधिवेशन के अन्य प्रस्ताव

इस कांग्रेस में भी शासनसुधार, सिविल सर्विस आदि पर प्रस्ताव हुए। लाला लाजपतराय ने सरकार की शिक्षा नीति की तीव्र आलोचना करते हुए कहा कि 'हमने सरकार को धन-जन से सब तरीके से मिश्र, अबोसिनिया, तथा अफगानिस्तान में मदद की, इसका हमें यह बदला मिल रहा है कि हमारी शिक्षा घटाने की तैयारी है।' इण्डियन मेडिकल सर्विस में भारतीयों को लिये जाने के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास हुआ। फिन्सबरी के निर्वाचकों को दादाभाई को चुनने के लिये धन्यवाद दिया गया। कांग्रेस की ब्रिटिश कमेटी तथा इंडिया नामक पत्र के लिये ६० हजार की रकम मंजूर हुई।

कांग्रेस का दसवाँ अधिवेशन

कांग्रेस का दसवां अधिवेशन १८९४ में पालियामेंट के आयरिश मेम्बर अल्फ्रेड वेब के सभापतित्व में हुई। सभापति ने अपने अभिभाषण में यह दिखलाया कि भारतीय सरकार की आमदनी की एक चौथाई भारत के बाहर खर्च होती है, फिर भारतवर्ष गरीब क्यों न हो। इस साल भी मामूली तरीके से वे ही प्रस्ताव पास हुए। फिर ब्रिटिश कमेटी के लिये ६० हजार रुपया मंजूर हुआ।

वस्त्रशिल्प पर सरकार द्वारा प्रहार

इस साल कई ऐसी बातें हुई जिससे अब यह जाहिर होने लगा कि कांग्रेस के तरीके के आन्दोलन से अब आगे बढ़ना बहुत कठिन है। इस बीच में भारतवर्ष में कुछ मिलें खुली थीं। १८६० तक भारतवर्ष में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाहर से यंत्र मंगाने पर इस माने में रोक थी कि इस पर बहुत भारी टैक्स लगाया जाता था। १८६०में यह टैक्स हटा दिया गया,इस प्रकार भारत के औद्योगीकरण का प्रारम्भ हो गया। सबसे पहले तो सन की मिलें खुलीं, फिर कुछ कपड़े की मिले भी खुल गयीं। इस प्रकार भारतवर्ष में मिलों की इतनी तरक्की होने लगी कि विलायत के मिल मालिक घबड़ाये। तदनुसार इस साल भारत सरकार की सिफारिश को भी ठुकरा कर ब्रिटिश सरकार ने यहाँ के वस्त्रशिल्प पर कर लगाया। इस प्रकार भारतवर्ष को लंकाशायर की बलिवेदी पर चढ़ा दिया गया। कहना न होगा कि इस नियम से उदीयमान भारतीय वस्त्रशिल्प को बहुत धक्का पहुँचा, पर ब्रिटिश सरकार को इसकी क्या परवाह थी। जो लोग बहुत सुखेरू बनकर यह कहते हैं कि भारतीय राष्ट्रीयता में नस्ली या Racial उपादान हैं कि वे विशेषकर ब्रिटिश सरकार की औद्योगिक नीति को ध्यान से देख लें। मजे की बात है कि सरकार की यह भेदभरी नीति अभी अभी तक यहाँ तक कि १६३६-४५ के महायुद्ध के दौरान में भी कायम रही, और सरकार ने कई बहुत जरूरी युद्ध से सम्बद्ध उद्योग-धंधों को भी भारतवर्ष में पनपने की इजाजत नहीं दी।

भारत में परीक्षा से इनकार

ब्रिटिश सरकार ने जो दूसरा अन्याय किया वह सिविल सर्विस के सम्बन्ध में था। पालियामेंट के अधिकांश सदस्यों की यह राय हो चुकी थी कि सिविल सर्विस की परीक्षा भारत तथा इंगलैंड दोनों जगह पर हो पर भारत सचिव ने १६ अप्रैल को भारत सरकार को यह सूचित किया कि यह प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं किया जायेगा। इस सम्बन्ध में यह ध्यान देने योग्य है कि ब्रिटिश सरकार ने इसके पहले भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों की राय मांगी थी। मद्रास सरकार के अतिरिक्त सभी सरकारों ने इसके विरुद्ध राय दी थी। इस प्रकार जो माँग मध्यमवर्ग की प्रधान मांगों में से थी, वह ठुकरा दी गयी, और पालियामेंट में प्रचार कार्य के बावजूद।

नये नेतृत्व की आवश्यकता

इस पर होना तो यह चाहिये था कि कांग्रेस के नेताओं का अपने आन्दोलन के तरीकों पर विश्वास उठ जाता और वे किसी नयी दिशा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोचते। साफ बात थी कि एक विषय के सम्बन्ध में आन्दोलन करते करते पालियामेंट तक पहुँचा दिया गया, और वहां के बहुत से सदस्यों की अनुकूल राय भी प्राप्त कर ली गयी। पर फिर भी वह कार्यरूप में न आ सकी और उनकी राय कूड़ेखाने में पड़ी रह गयी। इस पर स्वाभाविक तरीके से नेताओं को आगे सोचना चाहिये था। पर वे तो कुछ आगे सोचने में असमर्थ थे। वे तो अभी गांधी जी के आने तक वर्षों इसी राह की धूल फांकने वाले थे।

गणपति और शिवाजी उत्सव

इन्हीं दिनों अर्थात् १८६४ के करीब लोकमान्य तिलक तथा महाराष्ट्र के नौजवान किसी और ही तरीके से सोच रहे थे। १८६३ के करीब लोकमान्य तिलक ने गणपति उत्सव तथा बाद को १८६७ में शिवाजी उत्सव का प्रवर्तन किया। इस उत्सव के प्रवर्तक धार्मिक आड़ लेकर क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करना चाहते थे। गणपति उत्सव और शिवाजी उत्सव में कौन सी भावनायें काम कर रही थी यह उन उत्सवों के अवसरों पर जो व्याख्यान दिये जाते थे उनसे स्पष्ट होजाता है। यह साफ था कि इस उत्सव के प्रवर्तक तथा नेतागण केवल अर्जी भेजने में विश्वास नहीं करते थे। दुर्भाग्य से इन उत्सवों को एक धार्मिक और शिवाजी उत्सव के विषय में तो यह कहा जा सकता है कि उसे एक मुसलमान विरोधी रूप प्राप्त हुआ, पर मैं समझता हूँ कि यह रूप बहुत कुछ अनिच्छाकृत था, सच तो यह है कि इसके अलावा कोई चारा नहीं था। ये नेता प्रत्यक्ष रूपसे अंगरेजों के विरुद्ध कुछ कह नहीं सकते थे, इसलिये वे मुसलमान शासकों के विरुद्ध ढाल-ढालकर अंगरेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति का प्रचार करते थे। अवश्य यदि उनके उत्सवों का रूप अनिच्छा से ही सही और ऊपर से ही सही मुसलमान विरोधी था, तो इसके भी कुछ परिणाम हुए। वह परिणाम यह हुआ कि इस आन्दोलन को अन्तर्गत वस्तु क्रान्तिकारी होते हुए भी मुसलमान इससे अलग रहे, बल्कि चिढ़े, और तृतीय शक्ति को हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानों को भड़काने का एक अच्छा मौका मिल गया। लोकमान्य तिलक ने पहले गणपति उत्सव और बाद में शिवाजी उत्सव का प्रवर्तन किया, यह भी अर्थपूर्ण है। प्रथम उत्सव में धामिक आवरण बहुत अधिक था, पर शिवाजी उत्सव में यह आवरण कम हो गया। यह तो खुल्लमखुल्ला राजनैतिक था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये उत्सव मुस्लिम विरोधी नहीं

इन उत्सवों के प्रबन्धों के उद्देश्य क्या थे, कम से कम मुसलमानों के विरुद्ध भावना उनमें काम नहीं कर रही थी, यह उन उत्सवों के अवसर पर गाये हुए शिवाजी श्लोकों तथा गणपति श्लोकों से ज्ञात होता है। पर पुनरुज्जीवन वादी तो थे ही। मैंने अपनी पुस्तक "भारत में सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास" में एक शिवाजी श्लोक और एक गणपति श्लोक उद्धृत किया है, वे श्लोक यहां भी उद्धृत किये जाते हैं—

शिवाजी श्लोक

केवल बैठे बैठे शिवाजी की गाथा की आवृत्ति करने से आजादी नहीं मिल सकती है। हमें तो शिवाजी और बाजीराव की तरह कमर कसकर भयानक कृत्यों में जुट जाना पड़ेगा। दोस्तो अब आपको आजादी के निमित्त ढाल तलवार उठा लेनी पड़ेगी। हमें शत्रुओं के अब सैकड़ों झुंडों को काट डालना पड़ेगा। सुनो, हम राष्ट्रीय युद्ध के मैदान में अपने जीवन का बलिदान कर देंगे, और आज उन लोगों के रक्त से जो हमारे धर्म को नष्ट कर रहे हैं या आघात पहुँचा रहे हैं, पृथ्वी को रंग देंगे। हम मारकर ही मरेंगे, और तुम लोग घर बैठे औरतों की तरह हमारा किस्सा सुनोगे।

गणपति श्लोक

हाय, गुलामी में रहकर भी तुमको लाज नहीं आती। इससे अच्छा यह है कि तुम आत्महत्या कर डालो। उफ, दुष्ट हत्यारे कसाईयों की तरह गोवध करते हैं, गौ माता को इस दयनीय दशा से छुड़ा लो। मर जाओ, किन्तु पहले अंगरेजों को मारो तो सही। चुप मत बैठे रहो, बेकार पृथ्वी का बोझ मत बढ़ाओ। हमारे देश का नाम तो हिन्दुस्तान है, फिर यहां अंगरेज राज्य क्यों करते हैं ?*

चाफेकर की हिन्दू धर्म संरक्षिणी सभा

इसी समय के लगभग श्री दामोदर चाफेकर तथा उनके भाई

---

*भारत में सशस्त्र क्रान्ति की चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास (द्वितीय संस्करण) पृष्ठ १८।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री बालकृष्ण चाफेकर ने 'हिन्दू धर्म संरक्षिणी सभा' नाम से एक सभा की स्थापना की। इस सभा के उद्देश्य भी ऊपर उद्धृत श्लोकों से व्यक्त होते हैं। सच तो यह है कि उद्धृत श्लोकों को चाफेकर बन्धुओं ने ही उत्सव के अवसर पर गाया था। हमें बाद को चाफेकर बन्धुओं के सम्बन्ध में अधिक कहने का मौका मिलेगा।

कांग्रेस का ग्यारहवां अधिवेशन

कांग्रेस का ग्यारहवां अधिवेशन १८६५ में पूना में श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ। यह एक मजे की बात है कि कांग्रेस के जन्म के पहले भारतीय राजनैतिक गगन पर सुरेन्द्रनाथ ही चमक रहे थे, पर कांग्रेस में शामिल होने के बाद दस साल के बाद उन्हें उस संस्था के सभापति होने का मौका मिला। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि इसके पीछे कई कारण थे। एक तो कारण यह था कि कांग्रेस के संस्थापक तथा नेतागण कांग्रेस को एक राजभक्त संस्था के रूप में दिखाना चाहते थे, अधिक से अधिक गोरों को इस बीच में सभापति बनाने का भी यही उद्देश्य था, पर अब एक तो जमाना बदल चुका था, और सुरेन्द्रनाथ भी बदल चुके थे। लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में जिस नौजवान दल का उदय हो रहा था, उसके सामने श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की गरम जोशी बहुत कुछ म्लान हो चली थी। फिर अब कांग्रेसी नेतागण भी कुछ कुछ पुराने ढंगों से ऊब चुके होंगे। इस कारण कांग्रेस के जन्म के समय सुरेन्द्रनाथ तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं में जो पार्थक्य की रेखा थी वह बहुत कुछ मिट गयी थी। इसी कारण सुरेन्द्रनाथ अब सभापति हुए। सुरेन्द्रनाथ ने सभापति की हैसियत से अढ़ाई घंटे तक भाषण दिया, और इस प्रकार अपनी व्याख्यान शक्ति के यश को कायम रखा।

तिलक और गोखले

इस कांग्रेस का जिस समय अधिवेशन हो रहा था, उसके पंडाल में समाज सुधार सम्मेलन के अधिवेशन के सम्बन्ध में लोकमान्य तिलक तथा गोपालकृष्ण गोखले में झड़प हो गयी। गोपलकृष्ण गोखले यह चाहते थे कि समाज सुधार सम्मेलन यहीं पर हो पर तिलक इसके विरुद्ध थे। यह एक विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि तिलक राजनीति में उग्रवादी थे पर सामाजिक मामलों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनके विचार प्रतिक्रियावादी थे। उन दिनों इस विषय पर देशभर में वादविवाद चल रहा था कि स्त्रियों की सम्मति की उम्र (age of consent) दस से बढ़ाकर बारह कर दी जाय या नहीं। रानडे तथा पुराने बहुत से नेता बारह साल के पक्ष में थे, पर तिलक जी इसके विरोधी थे, और बारह साल के विरुद्ध जो आन्दोलन हुआ उसका उन्होंने नेतृत्व किया। इस प्रकार हम एक बहुत ही अजीब दृश्य देखते हैं कि जो लोग सामाजिक दृष्टि से प्रगतिशील विचार रखते थे, वे राजनैतिक दृष्टि से पिछड़े हुए तथा दब्बू थे, पर जो लोग सामाजिक दृष्टि से प्रतिक्रियावादी थे, ये राजनैतिक दृष्टि से प्रत्यक्ष कार्य प्रणाली के पक्षपाती थे। इसका अवश्य नतीजा यह हुआ कि दोनों में से एक भी नेतृत्व यथेष्ट प्रगति न कर सका। कुछ अप्रासंगिक होते हुए भी यह बता दिया जाय कि इस दृष्टि से देखने पर गांधी जी अपने राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यों में समान रूप से प्रगतिशील या प्रतिक्रियावादी विचार लेकर बाद को आये इसलिये उनकी विचारधारा को जो सामंजस्य तथा गति अनिवार्य रूप से प्राप्त हुई, वह इन नेताओं के विचारों को प्राप्त न हो सकी।

राजभक्त सुरेन्द्रनाथ

सभापति के पद से सुरेन्द्रनाथ ने जो अभिभाषण दिया उसमें उन्होंने तमाम समस्याओं पर रोशनी डालते हुए अन्त में यह कहा कि वे ब्रिटिश सदिच्छा में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार उन्होंने सरकार तथा कांग्रेस के अन्य नेताओं के निकट यह साफ कर दिया कि वे कोई बिलबिलाते हुए क्रान्तिकारी नहीं हैं। यह कहा जा सकता है कि सुरेन्द्रनाथ के जीवन का यह वह बिन्दु था जहां से वे एक नरम नेता के रूप में सामने आने लगे। उन्होंने अपनी राजभक्ति के जोश में यह भी कह डाला कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि भारत को एक दिन उसी प्रकार से स्वतंत्रता मिलेगी जैसे ब्रिटेन के साथ संस्पर्शवाले अन्य देशों को प्राप्त हुई है।

इस अधिवेशन के अन्य प्रस्ताव

इस कांग्रेस में भी वे ही मामूली प्रस्ताव रहे। इन दिनों भारतीय राजस्व था किस तरह व्यय होता है इस सम्बन्ध में एक पार्लियामेंटरी कमेटी बैठ चुकी थी। इस कमेटी को सुझाव देते हुए एक प्रस्ताव पास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ। दक्षिण आफ्रिका के भारतीयों पर ज्यादती के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास हुआ। सरकार द्वारा शिक्षा को सीमित करने की नीति पर एक प्रस्ताव पास हुआ। सिविल सर्विस के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव हुए। रेल के तीसरे दर्जे के मुसाफिरों के दुख दर्दों के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव हुआ। अब की बार भी विलायत में काम के लिये ६० हजार की रकम मंजूर हुई। इस कांग्रेस में पंडित मदनमोहन मालवीय ने जो भाषण दिया था उसकी बहुत तारीफ की गयी।

कांग्रेस का बारहाँ अधिवेशन

कांग्रेस का बारहाँ अधिवेशन १८९६ में कलकत्ते में मिस्टर रहमतुल्ला सियानी की अध्यक्षता में हुआ। आप बम्बई के अच्छे वकील तथा पुराने कांग्रेसी थे। सभापति ने अपने अभिभाषण में इस बात को प्रमाणित किया कि यह जो कहा जाता है कि मुसलमान कांग्रेस में शामिल न हो यह बिल्कुल बेबुनियाद है। उन्होंने इस बात की अपील की कि मन में कोई शंक न रखकर अब मुसलमान कांग्रेस में शरीक हो जायँ।

कवीन्द्र द्वारा वन्देमातरम गान

इस कांग्रेस के कवीन्द्ररवीन्द्र ने सफेद पोशाक पहनकर वन्दे मातरम् गाना गाया। उनके भाई श्री ज्योतिरेन्द्रनाथ आरगन बजा रहे थे, और वे अपनी मस्त आवाज में गा रहे थे। यह पहला ही अवसर था जब कांग्रेस के अन्दर बन्देमातरम् गाना गया था। इसके पहले कवि हेमचन्द्र ने किस प्रकार से अपने एक गाने में बन्देमातरम् के कुछ हिस्से को लेकर कांग्रेस में गाया था, इसका पहले ही वर्णन हो चुका है।

शिक्षा विभाग में भी भेद नीति

अब तक कांग्रेस में सिविल सर्विस का ही रोना रहता था, कांग्रेस के नये अधिवेशन आइ० एम० एस में भारतीयों के लिये जाने का प्रस्ताव किया गया था, पर अब की बार एक नया प्रश्न आया कि शिक्षा विभाग में भारतीयों और अंगरेजों में भेद पूर्ण व्यवहार किया जाता है। इस प्रस्ताव पर बोलते हुए आनन्द मोहन वसु ने यह दिखलाया कि १८८० के पहले जहाँ तक बंगाल के शिक्षा विभाग का प्रश्न है किसी प्रकार का रंगगत भेदभाव नहीं था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर १८८० से भेदमूलक नीति का सूतपात हुआ और भारतीयों को प्रारम्भिक तनख्वाह पाँच सौ से घटाकर ३३० कर दी गयी, और १८८६ में इसे और घटाकर २५० कर दिया गया जब कि गोरों का ५०० ही रहा।' उन्होंने कहा कि भेदमूलक नीति यहीं पर नहीं रुकी। १८९६ में जो अभी व्यवस्था हुई है उसके अनुसार इस विभाग की नौकरियों को अखिल भारतीय और प्रान्तीय इन दो भागों में विभक्त किया गया है और यह तय हुआ है कि अखिल भारतीय नौकरियों में सिर्फ गोरे ही रहेंगे। वक्ता ने बड़े अफसोस के साथ कहा कि विलायत के विश्वविद्यालय में शिक्षित होने पर भी भारतीय प्रान्तीय सर्विस में ही लिये जायेंगे और कुछ कालेजों के तो वे प्रिन्सपल भी न हो सकेंगे।

भारत में दुर्भिक्ष पर प्रस्ताव

इन दिनों बड़े जोरों से भारत भर में दुर्भिक्ष फैल रहा था इसके सम्बन्ध में श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने एक प्रस्ताव रखा जिसमें यह कहा गया कि देश का धन अत्यन्त अधिक मात्रा में बाहर जा रहा है, तथा सिविल और सामरिक विभाग में फजूल-खर्ची हो रही है, देश में कोई उद्योग-धन्धा नहीं है इसी कारण ये दुर्भिक्ष हुआ करते हैं। १८७८ में सरकार ने बार-बार होने वाले दुर्भिक्षों के कारणों को जाँच करने के लिये एक कमीशन बैठाया था। इसने १८८० में अपनी रिपोर्ट देते हुए यह कहा था कि भारत में दुर्भिक्षों का एक बड़ा भारी कारण, और यह कारण ऐसा है जिसकी वजह के उन्हें व असर तरीके से मदद नहीं दी जा सकती वह यह है कि जनता का बहुत बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है और कोई दूसरा धन्धा नहीं है जिससे कि लोग पल सके। इस कमीशन ने यह भी कहा कि 'भारतवर्ष की गरीबी तथा फसल की कमी आदि के समय विपत्ति का दुखद कारण यह है कि सारी जनता खेती पर निर्भर है, और दुर्भिक्षों को दूर करने में तब तक कोई विशेष सफलता नहीं मिलेगी जब तक कि लोगों के और धन्धे न हो।' दूसरे शब्दों में कमीशन ने, यह स्मरण रहे कि यह सरकारी कमीशन था यह कह दिया कि ब्रिटिश सरकार की नीति के ही कारण यहाँ दुर्भिक्ष पड़ते रहते हैं क्योंकि उसी ने लोगों के दूसरे धन्धों को नष्ट किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य प्रस्ताव

सरकारी चिकित्सा विभाग में गोरे और कालों में भेद भाव है उसके सम्बन्ध में भी प्रस्ताव हुआ। दक्षिण आफ्रिका पर भी एक प्रस्ताव हुआ। परमेश्वरं पिल्ले ने इस प्रस्ताव को रखा। दक्षिण आफ्रिका में भारतीयों की कितनी दुर्दशा थी यह इसी से व्यक्त होगा कि वहां पर भारतीयों को स्वतंत्रता के साथ चलने फिरने की भी इजाजत नहीं थी, काम करना और व्यापार करने की तो बात ही और है। रात में वे घर से नहीं निकल सकते थे, और न वे जहां चाहे तहां रह सकते थे। वे रेल में किराया देकर भी अव्वल तथा दूसरे दर्जे में सफर नहीं कर सकते थे। उन्हें होटलों में या पार्कों में जाने की इजाजत नहीं थी। भारतीयों पर राह चलते गोरे थूक देते थे तथा उन्हें ट्राम से धकेल देते थे। नेटाल में भी भारतीयों के सम्बन्ध में भेद मूलक कानून पास हुआ था।

कांग्रेस में प्रदर्शनी

इस कांग्रेस के साथ एक प्रदर्शनी भी हुई जिसमें देशी द्रव्य दिखलाये गये। बाद को ऐसी प्रदर्शनियां कांग्रेस के साथ होने वाली बिल्कुल एक अनिवार्य संस्था हो गयी थीं।

कांग्रेस का तेरहवां अधिवेशन

कांग्रेस का तेरहवां अधिवेशन १८९७ में बरार की राजधानी अमरावती में शंकरन नैयर की अध्यक्षता में हुई। इसी कांग्रेस में ६०० प्रतिनिधि आये हुए थे। कांग्रेस के प्रस्तावों का सरकार पर कुछ असर न पड़ता हो ऐसी बात नहीं। बराबर कांग्रेस की तरफ से यह जो मांग की जा रही थी कि सरकार अपना खर्चा घटावे, सो इस बीच में पार्लियामेंट ने इस सम्बन्ध में जांच करने के लिये लार्ड वेलबी के सभापतित्व में एक कमीशन नियुक्त किया था। इसी कमीशन में दादा भाई नौरोजी भी थे और इसमें चार भारतीयों की गवाही हुई। बम्बई के श्री वाचा, महाराष्ट्र के गोपालकृष्ण गोखले, सुरेन्द्र बनर्जी तथा जी० सुब्रह्मराय ऐयर ये गवाह थे।

मिस्टर रैंड की हत्या

इस वर्ष कुछ ऐसी घटनायें हुईं थीं जिनको किसी भी प्रकार कांग्रेस आन्दोलन के अन्तर्गत नहीं गिना जा सकता, फिर भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में उनका स्थान बहुत ही ऊँचा है। इस साल की २२ जून को महारानी विक्टोरिया का साठवां राज्याभिषेक दिवस या हीरक जुबली के रूप में मनाया जाने वाला था। इसके लिये बड़ी धूमधाम की तैयारी थी। उधर देश भर में दुर्भिक्ष फैल रहा था। लोग तड़प तड़प कर मर रहे थे। ऐसे समय में बम्बई में ताऊन फैल गया। सरकार ने ताऊन का मुकाबिला करने के लिये ताऊन कमेटी की स्थापना की। मिस्टर डब्ल्यू० सी० रैंड ताऊन कमिशनर के रूप में तैनात हुए ताऊन के सिलसिले में ताऊन पीड़ितों का एक कैम्प भी खोला गया था। जब किसी के सम्बन्ध में मालूम हो जाता था कि उसे ताऊन हुआ है तो उसे राजी से हो या जबर्दस्ती पकड़ कर ताऊन कैम्प में भरती किया जाता था। कुछ लोग इससे बचने के लिये अपना रोग नहीं बताते थे। इस कारण तलाशी वगैरह होती थी। मिस्टर रैंड ने इस सम्बन्ध में बहुत सख्ती का वर्त्ताव किया, जनता में जोश फैला और पहले हम जिन चाफेकर बन्धुओं का उल्लेख कर चुके हैं, उन्होंने मिस्टर रैंड पर गोली चलायी। इसी सम्बन्ध में लेफ्टिनेन्ट आयर्स्ट भी मारे गये। बाद को चाफेकर बन्धुओं को फाँसी हुई।*

आम धरपकड़

हत्या तो २२ जून की रात को हुई, लोकमान्य तिलक २१ जुलाई को गिरफ्तार हुए। 'प्रबोध' के सम्पादक भी पकड़े गये। इनके अतिरिक्त "वैभव" के सम्पादक विश्वनाथ केलकर तथा बलवन्तराव नाटू और रामचन्द्रराव नाटू दो भाई पकड़े गये। तिलक पर यह आरोप लगाया गया कि १२ जून को जो गणपति उत्सव हुआ था उसमें उन्होंने केसरी में उसका १५ जून को जो विवरण निकला था वह आपत्ति जनक था। इसके अतिरिक्त लोकमान्य पर यह आरोप भी लगाया गया कि उन्होंने शिवाजी उत्सव के मौके पर अफजल खां की हत्या का समर्थन करने के बहाने अंगरेजों की हत्या का प्रचार किया। अधिकारी वर्ग का यह विचार था इन्हीं सब बातों के कारण युवकों का सिर फिर गया।

---

*ब्योरे के लिये देखिये 'भारत में सशस्त्र क्रांति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास'।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सजा

अच्छे से अच्छे वकील ने लोकमान्य की वकालत की, पर उन्हें डेढ़ साल की सजा दे दी गयी। नाटू बन्धुओं को १८६६ तक नजर-बन्द रखा गया। उनकी सम्पत्ति भी जब्त कर ली गयी। इस प्रकार गण्यमान्य लोगों पर प्रहार करने के लिये सरकार के विरुद्ध लोगों में बहुत जोश फैला। लोकमान्य को एक मामूली कैदी के रूप में रखा गया। बाद को मैक्समूलर तथा विलियम हटंर बीच में पड़े तब उन्हें जेल में पढ़ने लिखने की सुविधा दी गयी। वैभव तथा प्रद्योत सम्पादकों को भी सजा हुई। इस प्रकार दो अंगरेजों के मारे जाने पर सरकार ने अपनी नादिरशाही का बहाना ढूढ़ लिया।

अश्विनीकुमार की नई वाणी

अमरावती की कांग्रेस में बारी साल के श्री अश्विनीकुमार दत्त ने एक नयी आवाज उठायी। स्मरण रहे कि ये वे ही महाशय थे जो कांग्रेस में ४५ हजार की दस्तखत से एक मांग पत्र ले आये थे। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने इस समय नवयुग के उपयुक्त नारा दिया। सच तो यह है कि वे इसी ढंग पर काम करते आ रहें थे। उन्होंने कहा—"साल में तीन दिन कांग्रेस करके या उसी के सिलसिले में कुछ सभायें करके देश की यथार्थ उन्नति नहीं हो सकती। यह तो महज तमाशा है। पूरा साल प्रतिदिन, प्रतिक्षण काम करना पड़ेगा। इस उद्देश्य से एक संघ भी बनाना पड़ेगा।" अश्विनीकुमार दत्त की ये बातें स्वाभाविक रूप से कांग्रेस के उस युग के नेताओं में केवल एक आंलकारिक स्फारण मात्र समझा गया, और इस सम्बन्ध में कांग्रेस की तरफ से कोई कार्यवाही नहीं हुई। यों तो अन्य छोटे छोटे दल जैसा समझ में आता था उसके अनुसार काम करते जाते थे।

सभापति द्वारा भविष्य वाणी

अवश्य इसी कांग्रेस के सभापति श्री नैयर ने अपने अभिभाषण में यह कहा था "नाटू बन्धुओं को बिना मुकद्में के नजरबन्द रखा गया, और तिलक को ६ बनाम ३ बांट से सजा दी गयी और उनके साथ एक मामूली अपराधी का बर्ताव किया गया। यह सब तो हुआ पर सरकार ने यह नहीं बताया कि आखिर इन लोगों पर जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिकायतें हैं उसकी जड़ क्या है। पर सारा भारत आज इसी प्रश्न को पूछ रहा था, और भविष्य संताने भी इसी प्रश्न को पूछेंगी। प्रगति को रोकने का नतीजा यह हो सकता है कि या तो लोग गुप्त कार्य शुरू करें, या बाढ़ आ जावे।" इस कथन का आशय स्पष्ट था। इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि लोगों में जोश इतना बढ़ रहा था कि बाधा पाने पर अब वह गुप्त आन्दोलन में परिणत होने वाला था।

नजरबन्दी कानूनों का विरोध

इस कांग्रेस में स्वाभाविक रूप से १८१८ के रेगूलेशन ३, मद्रास का १८१९ का रेगूलेशन २, बम्बई के १८२७ का रेगूलेशन २५ आदि नजरबन्दी की दफाओं की निन्दा की गयी। लोकमान्य तिलक, दो अन्य सम्पादक तथा नाटू भाइयों के साथ सहानुभूति के प्रस्ताव पास हुए।

राजद्रोह कानून सख्त हुआ

सरकार इन बातों को सुनने के बजाय दफा १२४ अलिफ को और भी खराब तथा कड़ा करने पर तैयार हो गयी। यों ही राजद्रोह का दफा बहुत ही व्यापक था, पर जजों ने इसे और भी खराब कर दिया था। बंगवासी तथा लोकमान्य तिलक के मामले में इस कानून का जो रूप देखने में आया था, वह बहुत कड़ा था, उनमें जजों ने यह कहा था कि सरकार के प्रति प्रेम का अभाव ही विद्वेष है। अब इसी कानून को और भी कड़ा कर दिया गया, और मैजिस्ट्रेटों को यह अधिकार दे दिया गया वे जिससे चाहें मुचलक लेलें।

कांग्रेस का चौदहवाँ अधिवेशन

कांग्रेस का चौदहवाँ अधिवेशन १८९८ में मद्रास में श्री आनन्द-मोहन वसु की अध्यक्षता में हुआ। इस समय तक सरकार के दमन ने उग्ररूप धारण किया था। इससे लोगों में इतना असंतोष फैला था कि मिस्टर रमेशचन्द्रदत्त आई० सी० एस० ने २० जुलाई को लन्दन की एक सभा में बोलते हुए यह कहा था "मुझे यह बड़ा अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि कोई भी जमाना ऐसा याद नहीं पड़ता, मुझे गदर का जमाना भी याद है जिस समय कि आज दो साल से सरकार के न्याय तथा सुविचार पर लोगों का विश्वास इतना उठ गया हो।" सभापति ने भी अपने एक मित्र को इसी लहजे में एक पत्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिखा था—'क्या ब्रिटिश राज्य के मित्र हैं ? यदि हैं तो अधिकारी-वर्ग को वर्त्तमान घातक नीति से बाज रखिये। और यदि आप ब्रिटिश राज्य के शत्रु हैं, तो मेरी यह सलाह है कि आप चुपचाप रहिये, और सब मामलों में अपना रास्ता आप चुन लीजिये।

अन्य प्रस्ताव

राजद्रोह सम्बन्धी कानून के विरुद्ध एक प्रस्ताव पास हुआ। इसके प्रस्तावक जे० मुदालियर ने यह कहा कि 'आज सरकार में लोगों की सदिच्छा तथा विश्वास के बदले लोगों में सरकार पर अविश्वास ही है। अटक से कटक तक सब लोगों का मन सरकार की तरफ से कड़वा हो गया है।' इन दिनों सीक्रेट प्रेस कमेटी नाम से अखबारों पर जो सेंसर बैठाया गया था, उसकी भी निन्दा की गयी। सरकार इन दिनों म्युनिसिपलिटियों के अधिकार को घटाने की भी चेष्टा कर रही थी, उस चेष्टा के विरुद्ध भी प्रस्ताव पास हुए। इन्हीं दिनों दक्षिण आफ्रिका नेटाल और ट्रांसवाल में भारतीयों के प्रति वहां के गोरों का दुर्व्यवहार हद दर्जे तक पहुँच गया था, महात्मा गांधी इसी युग में इन अत्याचारों के विरुद्ध बहुत जोर का आन्दोलन चला रहे थे। कांग्रेस ने वहां के भारतीयों के साथ हमदर्दी का एक प्रस्ताव पास किया।

कांग्रेस का पन्द्रहवाँ अधिवेशन

कांग्रेस का पन्द्रहवाँ अधिवेशन १८६६ में लखनऊ में श्री रमेशचन्द्र दत्त के सभापतित्व में हुआ। अमरावती में जिस समय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था, उस समय बरार के चीफ कमीशनर ऐंटोनी मैकडोनल नामक एक गोरा था। यही गोरा इस समय संयुक्त प्रांत का गवर्नर था। अमरावती में कांग्रेस के होने में इसने कोई आपत्ति नहीं की थी, पर जब लखनऊ में कांग्रेस होने लगी तो इसने उसे शहर में होने नहीं दिया। नतीजा यह है कि शहर से आठमील दूर पर देहात में कांग्रेस हुई। बंशीलाल सिंह स्वागत समिति के सभापति थे।

सभापति का अभिभाषण

मजे की बात यह थी कि सभापति रमेशचन्द्र सरकारी बड़े अफसर थे। उन्होंने दमन नीति की निन्दा करते हुए कहा कि यदि राजद्रोह के नाम पर लोगों को बोलने तथा लिखने से रोका गया तो उसका नतीजा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह होगा कि राजद्रोह और भी जल्दी फैलेगा। रमेशचन्द्र ने इस बात का पर्दाफाश किया कि आबादी की वृद्धि के कारण देश में दुर्भिक्ष नहीं होते। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि भारतीयों को केवल खेती पर निर्भर करना पड़ता है, इतने टैक्स देने पड़ते हैं तथा इतना भारी सैनिक खर्च का बोझा उठाना पड़ता है कि वे गरीब हैं।

इस अधिवेशन में मुसलमान

इस कांग्रेस में ३०० मुसलमान प्रतिनिधि उपस्थित थे। कांग्रेस के अधिवेशन में मुसलमान शरीक न हों इस उद्देश्य से ४ दिसम्बर को लखनऊ में राजा अमीर हुसैनखाँ के सभापतित्व में एक सभा हुई थी। इतने पर भी ३०० मुसलमान प्रतिनिधि कांग्रेस में आये यह एक बहुत ही ध्यान देने योग्य बात है।

म्युनिसिपलिटियों पर प्रहार

इस बीच में कलकत्ता कारपोरेशन के अधिकारों पर जो कुठाराघात हुआ था उस पर भी एक प्रस्ताव हुआ था। अब तक कारपोरेशन के जितने सदस्य होते थे उनमें से $\frac{2}{3}$ चुने हुए सदस्य होते थे, पर अब उनकी संख्या घटाकर आधी कर दी गयी थी और तिस पर चेयरमैन सरकारी आदमी होता था। इस प्रकार कारपोरेशन में चुने हुए आदमियों की अल्पसंख्या हो गयी थी। बम्बई कारपोरेशन के अधिकारों को घटाने के लिये भी एक बिल तैयार हो रहा था। इस विषय के प्रस्ताव पर बोलते हुए श्री सुरेन्द्रनाथ ने लार्ड कर्जन के शासन की बहुत निन्दा की। साथ ही उन्होंने यह कहा "अपनी शिकायतों को रफा कराने के लिये दो में एक उपाय का अवलम्बन करना पड़ेगा, एक तो विधानवाद और दूसरी क्रान्ति। हम लोगों ने अपना रास्ता चुन लिया है, सरकार अपना रास्ता चुन ले। क्या सरकार हम लोगों को मदद करना चाहती है या क्रान्ति को सुलगाना चाहती है? विधानवाद और क्रान्ति इनके बीच में कोई मध्यम मार्ग नहीं है। या तो तुम विधानवाद का पक्ष लोगे या क्रान्ति की पताका के नीचे जाकर खड़े होगे।"

सरकार की दमन नीति

सरकार ने इन बातों को कोई परवाह नहीं की और अपनी उग्र-नीति कायम रखी। सरकार को यह बात भी नापसन्द थी कि भार-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीयों को बाहरी जगत की कोई खबर मिले, इसलिये सरकार ने टेलीग्राफिक मेसेजेल बिल नाम से एक कानून का मसविदा पेश किया जिसके अनुसार सरकार को यह हक हुआ कि बाहर से तार द्वारा आये हुए समाचारों पर देख-रेख रखे। इस देख-रेख का मतलब तो स्पष्ट था। कांग्रेस ने इस कानून का प्रतिवाद करते हुए एक प्रस्ताव पास कर दिया। इन्हीं दिनों सरकार ने शिक्षा संस्थाओं में काम करने वालों पर भी प्रहार किया। यह प्रहार इस रूप में हुआ कि सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों तथा अधिकारी वर्गों को यह हुकुम दिया गया कि वे शिक्षा विभाग के डायरेक्टर की आज्ञा के बिना किसी भी राजनैतिक कार्य में शरीक नहीं हो सकते। कांग्रेस ने इसके विरुद्ध भी प्रस्ताव पास किया।

कांग्रेस का पहला विधान

लखनऊ अधिवेशन के अवसर पर कांग्रेस का पहला विधान बना। यह यों था—

(१) कांग्रेस का उद्देश्य विधानवादी तरीकों से भारतीय साम्राज्य के लोगों के हितों तथा स्वार्थों की पैरवी करना तथा बढ़ाना है।

(२) प्रतिनिधिगण राजनैतिक एसोसियेशनों, या अन्य संस्थाओं के द्वारा सार्वजनिक सभाओं के जरिये से चुने जायेंगे।

(३) अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के ४५ सदस्य होंगे। इनमें से ४० प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों के द्वारा, और यदि किसी प्रान्त में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी न हो तो उस प्रान्त के प्रतिनिधि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्यों को चुनेंगे। ये सदस्य १ साल के लिये एक अधिवेशन से दूसरे अधिवेशन तक के लिये चुने जायेंगे।

(४) कमेटी की साल में कम से कम तीन सभायें होंगी और कमेटी को यह अख्तियार होगा कि वह नियम बनावें।

(५) प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी प्रान्तीय अधिवेशन करेंगी, और प्रान्तीय कांग्रेस जिला कमेटियों का निर्माण करेंगी।

(६) इंगलैंड में एक ब्रिटिश कांग्रेस कमेटी होगी जिसमें एक वेतन वाला मंत्री भी होगा। इस कमेटी का खर्चा साल में ५ हजार रुपया होगा, जो विगत स्वागत समिति और आने वाली स्वागत समिति में आधा आधा बट जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस का सोलहवां अधिवेशन

कांग्रेस का सोलहवां अधिवेशन १६०० में नारायणगणेश चन्दावरकर के सभापतित्व में लाहौर में हुआ। जिस समय चन्दावरकर कांग्रेस के सभापति बनकर आये थे कहा जाता है कि उसके ऐन पहले ही उनको बम्बई हाईकोर्ट के जज रूप में अपने नियुक्त होने की बात मालूम हुई थी इस कारण उनका अभिभाषण बहुत नरम हुआ। इस कांग्रेस में भी पहली कांग्रेसों के प्रस्तावों की पुनरावृत्ति हुई। मालूम होता है इन दिनों भारतीय उद्योगधंधो को बढ़ाने की ओर नेताओं का विशेष ध्यान था। इसलिये लाला लाजपतराय ने इस अधिवेशन में यह प्रस्ताव रखा कि कांग्रेस और बातों के अलावा कम से कम आधा दिन शिक्षा तथा उद्योग धंधे को आलोचना पर दिया करें। इस उद्देश्य से दो कमेटियां भी बनी।

कांग्रेस का सत्रहवां अधिवेशन

कांग्रेस का सत्रहवां अधिवेशन १६०१ में कलकत्ते में दीनशाहदुल जी वाचा की अध्यक्षता में हुआ। इस कांग्रेस की सब से बड़ी विशेषता आज की दृष्टि से यह है कि इसमें महात्मा गांधी, उन दिनों मिस्टर मोहनदास करमचन्द गांधी उपस्थित थे। १८६४ से ही वे अफ्रिका में भारतीयों के अधिकारों के लिये लड़ रहे थे और इस क्षेत्रमें उन्होंने अपने त्याग तथा तपस्या के द्वारा सफलता भी प्राप्तकी थी। उस समय कोई नहीं जानता था कि यही मिस्टर गांधी अपने देश का इतना प्यारा होगा जितना कि कभी कोई भारतीय नहीं हुआ, तथा एक पूरे युग तक देश के सारे कार्यों पर इस नाटे से व्यक्ति की छाप रहेगी।

इस कांग्रेस में भी और और अधिवेशनों की तरह प्रस्ताव पास हुए। मिस्टर स्मेडलि नामक एक निमंत्रित व्यक्ति ने कांग्रेस में भाषण देते हुए लोगों से यह कहा "आप लोग तरह तरह के प्रस्तावों में जो मांगे पेश करते हैं, वे बहुत ही मामूली हैं, अधिकारी वर्ग इनकी पूर्ति कर आप लोगों को होमरूल न देकर आपको लक्ष्य से और भी दूर हटा रहें हैं। मैं तो यही कहता हूँ कि आप लोग भारतवर्ष के होमरूल के लिये हर तरीके से चेस्टा कीजिये, ईश्वर आपको सहायता करेंगे।" इस प्रकार एक बाहरी आदमी ने भी कांग्रेस को यह उपदेश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दे ही दिया कि कांग्रेस होमरूल के लिये लड़े पर अभी कांग्रेसी नेतागण इससे बहुत दूर थे। अभी उनको बहुत सी ठोकरें खानी थीं।

कांग्रेस का अठाहरवां अधिवेशन

कांग्रेस का अठाहरवां अधिवेशन अहमदाबाद शहर में श्री सुरेन्द्रनाथ बनेर्जी के सभापतित्व में १६०२ में हुआ। कांग्रेस के साथ साथ एक स्वदेशी प्रदर्शनी भी हुई। बड़ौदा के गायकवाड़ ने इसका उद्घाटन किया। इस बीच में लार्ड कर्जन भारतीयों की उच्चशिक्षा में बाधा पहुचाने के लिये जो बातें कर रहें थे, उनके विरुद्ध सभापति ने अपने अभिभाषण में बहुत कड़े मन्तव्य किये। इसके अतिरिक्त इस कांग्रेस में बोलते हुए सुरेन्द्रनाथ ने एक नई बात कही। वे बोले—"अभी तक स्वतंत्रता का झंडा बुलन्द नहीं हुआ। स्वतंत्रता की देवी बड़ी इर्स्यापरायण है। वे अपनी भक्त मंडली से बराबर यह चाहती है कि दीर्घकाल तक निरन्तर तपश्चरण किया जाय। "कहीं इसका अर्थ अधिक गहरा न समझा जाय इस लिये उन्होंने यह जोड़ दिया कि 'स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये वैधानिक संग्राम चलाने के लिये कितना अटूट धैर्य, सहनशक्ति तथा स्वार्थत्याग की जरूरत है यह इतिहास से सीखिये।' इस बार प्रतिवार की तरह मामूली प्रस्ताव रहे। यह स्पष्ट था कि कांग्रेस का नेत्रत्व कुछ करने में असमर्थ था। वह अपने तरीकों के निकम्मेपन को समझते हुए भी उसी मार्ग पर चलने के लिये बाध्य था।

कांग्रेस का उन्नीसवां अधिवेशन

कांग्रेस का उन्नीसवां अधिवेशन मद्रास में १६०३ में श्री लाल-मोहन घोष के सभापतित्व में हुआ। उन्होंने अपने भाषण में सरकार के प्रतिक्रियावादी कानूनों की तीव्र समालोचना की। उन्होंने अपने भाषण में बङ्गभङ्ग की भी सूचना दी कि इस प्रकार का एक षड़यंत्र चल रहा है। उन्होंने बहुत जोरदार शब्दों में सरकार की नीति की आलोचना की। नौजवानों ने इसको बहुत पसन्द किया। इस कांग्रेस में अन्य प्रस्तावों के अतिरिक्त ऑफिसियल सीक्रेट ऐक्ट का विरोध किया गया, जिसके अनुसार सरकार की किसी गुप्त कार्यवाही के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करना या देना दंडनीय हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस का बीसवां अधिवेशन

कांग्रेस का बीसवां अधिवेशन बम्बई में सर हेनरी काटन के सभापतित्व में १९०४ में हुआ सर हेनरी काटन इलबर्ट बिल के दिनों में हो भारतीय पक्ष ले चुके थे। वे १९०३ तक आसाम के चीफ कमिशनर के पद पर थे। इस पद से उन्होंने यह सिफारिश की थी कि चाय बगान के कुलियों को तनख्वाह बहुत कम है और वह बढ़ाई जाय। पर उनका प्रस्ताव इस कारण स्वीकृत नहीं हुआ कि चाय बगान के मालिकों ने लार्ड कर्जन को पोट लिया। भारतीयों के प्रति सहानुभूति के प्रति ही काटन साहब बंगाल के लाट नहीं हो सके। काटन ने अपने अभिभाषण में A federation of free and separate states, the united states of India का नारा दिया। उन्होंने प्रस्तावित बङ्गभङ्ग पर बोलते हुए यह कहा कि यदि इतने बड़े प्रान्त को एक लाट सम्भाल नहीं सकता तो या तो बम्बई और मद्रास की तरह बंगाल का शासन सूत्र कौंसिल सहित गवर्नर पर दिया जाय या बंगलाभाषियों को अलग करके एक प्रान्त बनाया जाय। स्मरण रहे कि उन दिनों के बंगाल में बिहार और उड़ीसा शामिल था। बङ्गभङ्ग जिस तरीके से बाद को किया गया उसमें बंगला भाषियों को दो अलग अलग दो हिस्सों में बांट दिया गया।

अन्य प्रस्ताव

लार्ड कर्जन तो मानो प्रतिक्रियावाद की मूर्त्ति होकर यहां आये थे। उन्होंने विश्वविद्यालय ऐक्ट बनाकर विश्वविद्यालयों की स्वतंत्रता लेली। उन्होंने इस प्रस्ताव को खुल्लम खुल्ला रखा कि शासन विभाग को अच्छी तरह चलाने के लिये गोरों की अधिक नियुक्त होनी चाहिये। कांग्रेस ने इसका भी विरोध किया। उन दिनों हजार से ऊपर तनख्वाह वाले पदों में चौदह फीसदी भारतीय और ५०० के पदों में सत्रह फी सदी भारतीय थे। तिस पर भी कर्जन का यह प्रस्ताव था। लार्ड कर्जन ने साम्राज्य बढ़ाने के लिये तिब्बत में एक ब्रिटिश मिशन भी भेजा था। एक प्रस्ताव में कांग्रेस ने इसके विरुद्ध टीका की। उस युग के कांग्रेस के नेतागण इस मिशन के असली अर्थ को समझते थे, यह इस बात से प्रमाणित है कि श्री वादिया ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रस्ताव पर बोलते हुए कहा कि तिब्बत के किसान अपनी स्वतंत्रता के लिये बहुत शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध लड़ रहे हैं फिर हम एक बार दृष्टि आकर्षित करना चाहते हैं कि हमारे नेता अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को ढंग से समझते थे। इसी कांग्रेस में यह तय हुआ कि कुछ प्रतिनिधि विलायत जांय। लाला लाजपतराय अमेरिका गये पर उन्होंने यह कहा कि भारतीय समस्या भारतीय ही हल करेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १६ :

बङ्गभङ्ग और स्वदेशी

बङ्गभङ्ग कार्य रूप में परिणत

बङ्गभङ्ग होने वाला है यह बात बहुत दिनों से लोगों को मालूम थी। १६०३ तथा १६०४ की कांग्रेस में इस योजना के विरुद्ध प्रस्ताव भी पास हुए थे। पर लार्ड कर्जन ने इसकी कोई परवाह नहीं की। २० जुलाई १६०५ को बङ्गभङ्ग के प्रस्ताव पर भारत सचिव का ठप्पा बैठ गया। पहले ही हम बता चुके हैं कि बङ्गभङ्ग से यह मतलब नहीं है कि बंगाल वर्त्तमान रूप में (१६४७) जैसा है उसे दो टुकड़ों में बांट दिया गया बल्कि बंगाल जैसा कि वह था, उसे दो टुकड़ों में बांट दिया गया। राजशाही, ढाका तथा चटगांव को आसाम के साथ मिला दिया गया, इस प्रान्त को पूर्वबङ्ग और आसाम कहा गया और बाकी हिस्सा याने प्रेसीडेन्सी कमीशनरी, बर्दमान कमिशनरी, बिहार, उड़ीसा और छोटा नागपुर मिलकर बंगाल नाम से प्रान्त बना। कहना न होगा कि इस प्रकार का विभाजन बिल्कुल मनमाना था। इसमें कोई आधार ही नहीं था। इस अवसर पर हिन्दू और मुसलमानों को यह कह कर लड़ाने की चेष्टा भी की गई कि इस विभाजन से मुसलमानों को फायदा है क्योंकि पूर्व बङ्ग और आसाम में उन्हीं का बोलबाला रहेगा। पहले ढाका के नवाब तथा अन्य कुछ मुसलमानों ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई थी, पर बाद को वे इसके पक्ष में हो गये। जो गोरे महाशय सर बैमफील्ड फूलर इस प्रकार से पूर्व बङ्ग और आसाम का नया प्रान्त बना, उसके गवर्नर हुए, कहा जाता है कि उन्होंने कई जगह यह खुल्लम खुल्ला लोगों से कहा कि हिन्दू और मुसलमान उनकी दो बीवियां हैं, इनमें से मुसलमान बीबी उनको चाहती है। इस प्रकार की युक्तियों का आशय स्पष्ट था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रवीन्द्रनाथ का रणघोष

बंग भंग के कारण बंगाली हिन्दुओं में जो जोश फैला, वह अभूतपूर्व था। रवीन्द्रनाथ उन दिनों बंकिमचन्द्र के चलाये हुए बंगदर्शन को चला रहे थे। उन्होंने उसमें लिखा—

"बाहर की कोई बात हममें फूट पैदा कर हमें अलग कर देगी, इस बात को हम किसी भी प्रकार नहीं मान सकते। जब बनावटी विच्छेद हमारे बीच में खड़ा होगा, तभी हम सचेतन रूप से इस बात का अनुभव करेंगे कि बंगाल के पूर्व तथा पश्चिम को चिरकाल से एक ही जान्दवी ने अपने बाहुओं में बाँध रखा है, और एक ही ब्रह्मपुत्र ने उनके प्रसारित आलिंगन को ग्रहण किया है। यही पूर्व तथा पश्चिम बंगाल हृदय के दाहिने तथा बायें हिस्से की तरह बंगाल की शिराओं तथा उपशिराओं में रक्त को चलाया है, तथा जननी के दाहिने तथा बायें स्तन की तरह हमेशा से बंगाली संतान को पालन किया है। हम यह नहीं चाहते कि हमसे कोई लाड़ प्यार करे, प्रतिकूल परिस्थितियों के द्वारा ही हममें शक्ति का उद्बोधन होगा। आज विधाता को रुद्रमूर्त्ति में ही हमारा परित्राण है। जड़ को चेतन करने के लिये एकमात्र उपाय है आघात-अपमान तथा अभाव, न आदर से; न सहायता से, न आराम से यह वृत्ति विकसित हो सकती है।"

जापान द्वारा रूस के पराजित करने का असर

इस प्रकार बंगालियों ने सरकार की इस व्यवस्था को लेट कर ग्रहण नहीं किया, इसके विरुद्ध प्रबल आन्दोलन किया, रवीन्द्रनाथ की भाषा में विधाता की रुद्रमूर्त्ति का आवाहन किया। इन्हीं दिनों जापान ने जार के रूस पर जो विजय पाई, उसका भी असर पढ़े-लिखे भारतीयों के मन पर बहुत अधिक हुआ। प्रायः कई शताब्दियों से पूर्वीय देश पाश्चात्य देशों के हमलों के सामने पीछे हटते चले जा रहे थे, होते होते लोगों के दिमाग में यह धारणा जम गयी थी कि गोरे अजेय हैं। जारशाही रूस पर जापान की विजय कोई जनता की विजय नहीं थी, (और न यह कोई जनता की पराजय ही थी) फिर भी इस घटना ने भारत के राष्ट्रीय विचार के लोगों पर इतना प्रभाव डाला, इसका कारण यह था कि इससे गोरों की अजेयता वाली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धारणा खतम हो गयी। सारे पूर्वीय देशों के उदीयमान राष्ट्रीय आन्दोलनों पर इसका यही असर पड़ा जो हमने बताया। तो गोरे भी हराये जा सकते हैं, यह धारणा लोगों में फैल गयी और इसने लोगों को बल दिया। पूर्व का प्रत्येक देश किसी न किसी यूरोपीय शक्ति की साम्राज्यवादी इच्छाओं का शिकार था, उनमें इस प्रकार के विचार उठना स्वाभाविक था।

बायकाट का नारा

यत्रतंत्र सभायें होने लगीं पर कोई यह नहीं बता पाता था कि कौन-सा तरीका इस्तैमाल किया जाय। जहाँ तक कहने सुनने की गुंजाइश थी, वहाँ तक तो सभी कुछ किया जा चुका था। कांग्रेस ने ही प्रस्ताव पास किये थे। सर हेनरी काटन ऐसे सरकार के विश्वास-पात्र लोगों ने भी इसके विरुद्ध आवाज उठायी थी, पर कुछ हुआ नहीं था। ऐसे समय में विदेशी वस्तुओं के बायकाट का नारा कहीं से आया। बस बंगाल की जनता ने इस नारे को उठा लिया। बायकाट शब्द की उत्पत्ति इस प्रकार हुई कि कैप्टन चार्ल्स कनिंगहम बायकाट आयरलैंड में एक जमींदार के एजेंट थे। वे किसानों से अधिक लगान माँग रहे थे, इस पर किसानों ने लगान देना तो अस्वीकार कर ही दिया, उनसे हर तरीके से असहयोग किया। यहां तक कि उनके नौकर उन्हें छोड़ गये और उन्हें खाद्यद्रव्य भी नहीं मिला। इस समय विदेशी द्रव्यों के सम्बन्ध में यही नारा दिया गया। घोर अन्धकार में एक ज्योति सी दिखायी पड़ी।

कृष्णकुमार मित्र ने नारा दिया

इस नारा को पहले पहल व असर तरीके से प्रसिद्ध नेता कृष्ण-कुमार मित्र ने दिया। उन्होंने अपनी संजीवनी में लिखा कि सब लोग यह प्रतिज्ञा करें कि 'हम लोग मातृ भूमि का पवित्र नाम स्मरण कर स्वदेश के कल्याण के लिये यह प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि आगे से यदि देशी माल मिलेगा तो हम विदेशी माल कभी नहीं खरीदेंगे। ऐसा करने में यदि हमें कुछ आर्थिक या अन्य तरह की हानि उठानी पड़े तो भी हम उसे सहर्ष उठायेंगे। हम लोग केवल खुद हो नहीं करेंगे बल्कि अपने मित्रों से भो जहां तक हो सके करवायेंगे। ईश्वर हमारे इस शुभ कार्य में सहायक हों।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साहित्यकों द्वारा नारे का समर्थन

सारे बंगाल ने इस वाणी को अपना लिया। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ने तथा अन्य साहित्यकों ने अपनी कविताओं तथा लेखों के द्वारा इस वाणी को बहुत जोरों के साथ प्रचार किया। कवि रजनीकान्त का गाना—

मायरे देवा मोटा कापड़
भाथाय तुले नेरे भाई,
दीन दुखिनो भा जेतो देर
तार वेशी आर साध्य नाई।
इत्यादि।

उन दिनों बहुत प्रसिद्ध हुआ। सुप्रसिद्ध नाटककार डी० एल० राय ने भी स्वदेशी का नारा दिया। सच तो यह है कि सारे बंगाल की मध्यवित्त श्रेणी के नेताओं ने स्वदेशी के मंत्र को अपनाया।

स्वदेशी के गहरे कारण

इन दिनों बायकाट और स्वदेशी का नारा इतना सफल हुआ इसका कारण केवल यही नहीं था कि इस प्रकार जानता को अपने भावों को कार्य रूप में अनुवाद करने के लिये एक मौका मिल गया, बल्कि इसके और भी सामाजिक आर्थिक गहरे कारण थे। इस समय तक भारतवर्ष में कुछ स्वदेशी मिलें खुल चुकी थीं, ब्रिटिश सरकार का इनके प्रति क्या रुख था यह वस्त्र शिल्प पर लगी हुई असुविधा जनक रोकों से ही ज्ञात होता है। इसलिये स्वदेशी मिलों तथा उदीयमान देशी पूंजीवाद के अपने पैर पर खड़े होने के लिये स्वदेशी का नारा बहुत ही उपयोगी था। विलायती चीजों के मुकाबिले में स्वदेशी चीजें मुश्किल से ठहर सकती थी, इसी कारण उन्हें भावुकता के सहारे की आवश्यकता थी। स्वदेशी के नारे ने इसी शून्य की पूर्त्ति की, इसी कारण यह नारा फौरन उच्च तबकों के द्वारा अपना लिया गया और उनके द्वारा तथा मध्यवित्त वर्ग प्रचारित होकर एक शक्ति शाली जन आन्दोलन में परिणत हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वदेशी और मुसलमान

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कुछ मुसलमान सरकार के बहकावे में आ गये, पर अन्य बहुत से मुसलमानों ने स्वदेशी के नारे को अपनाया। ढाका के नबाब सलीमुल्ला के भाई अकातुल्ला, बैरिस्टर अब्दुल रसूल, अब्दुल हलीम गजनवी, अब्दुल गफूर सिदकी, इस्माइल सिराजी, लियाकत हुसैन आदि मुसलमान विशिष्ट नेताओं ने स्वदेशी के नारे को अपना लिया। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि जो कारण बताये गये वे मुसलमानों पर उतनी हद तक लागू न होने पर भी, याने जिन मिलों का उद्घाटन हो रहा था उनमें मुसलमान पूंजीपतियों की अल्प संख्या होने पर भी वे सामान्य पूंजीवाद के असरों से बरी नहीं हो सकते थे। फिर इस नारे से मुसलमानों में सुप्त हो सही अंगरेज विद्वेष पुष्ट होता था।

स्वदेशी के लिये संगठन

विलायती माल के बायकाट तथा स्वदेशी माल को अपनाने के लिये इस युग में बहुत सी समितियाँ बन गयीं। ऐसी समितियों में चित्तरंजन दास (बाद के देशबन्धुदास) के घर में स्थापित स्वदेशी मंडली, मनोरंजन गुहठा कुरत्ता की वृत्ति समिति, सुरेशचन्द्र समाज पति का बन्दे मातरम् सम्प्रदाय तथा भवानीपुर का संतान सम्प्रदाय कलकत्ता की फिल्ड एन्ड ऐकडेमी कल्ब, और डाउन सोसाइटी बरीसाल की स्वदेश बान्धव समिति मैमनसिंह की सुहृत समिति विशेष उल्लेख योग्य है।

राखी बन्धन और अरंधन

सरकार की तरफ से यह घोषणा की गयी १६अक्टूबर को बंग भंग कर दिया जायेगा और उस दिन से दो प्रान्त अलग अलग काम करने लगेंगे। गत दो तीन सालों से बंगाली इस बात का आन्दोलन करते आ रहे थे कि बंग भंग न हो, पर यह हो ही गया। बंगाल का जनमत इस घोषणा से बहुत ही बिक्षुब्ध हुआ। रवीन्द्रनाथ बंग भंग आन्दोलन के बिल्कुल सामने की कतार में थे। उन्होंने यह वक्तव्य दिया कि खैर सरकार तो बंगला भाषियों को अलग कर रही है, पर हम दिल से अलग नहीं हो सकते, इसी के प्रदर्शन के लिये उन्होंने १६ अक्टूबर के दिन राखी बांधने का नारा दिया। राखी एकता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का सूचक था। रवीन्द्रनाथ ने तो इधर यह नारा दिया और उन दिनों के बंगाल साहित्य के अन्यतम प्रधान महारथी श्री रामेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी ने यह नारा दिया कि लोग उस दिन अरंधन याने बंगाल भर में उस दिन किसी के घर में चूल्हा न जले और बच्चों तथा रोगियों के अतिरिक्त कोई खाना नहीं खावे। लोगों को यह प्रस्ताव भी पसन्द आया।

अखंड बंग भवन का प्रस्ताव

इसी तरह सुरेन्द्रनाथ ने यह प्रस्ताव रखा कि कलकत्ते में 'होटेल द इनवैलिड', के नमूने पर एक भवन बने। जिस समय सुरेन्द्रनाथ पैरिस में गये थे उस समय उन्होंने देखा था कि होटेल द इनवैलिड भवन में फ्रांस के प्रत्येक डिपार्टमेंट या जिले की मूर्त्तियां हैं। उन दिनों अलसास लरेन जर्मनी के अधीन था। इस लिये अलसास लरेन की मूर्त्ति तो वहां पर थी, पर वह ढकी हुई रहती थी। इसी के अनुकरण में सुरेन्द्रनाथ का यह प्रस्ताव था कि कलकत्ते में जो भवन बने उसमें बंगाल के प्रत्येक जिले की एक मूर्ति रहे, और जो जिले बंगाल से अलग हैं, उनकी मूर्त्तिया अलसास लरेन के तरीके पर ढकी हुई रहे। सुरेन्द्रनाथ का यह प्रस्ताव भो जाति को पसन्द आया।

बंगाल का नारा

१६ अक्टूबर को ये तीनों कार्य क्रम पूरे किये गये। आम हड़ताल रही। लोगों के घरों में चूल्हे नहीं जाले और सारा बंगाल उस दिन भूखों रहा। अवश्य सारा बंगाल से यहां कुछ मुसलमानों को छोड़ कर लिया जा रहा है। उस दिन कई तरह की कार्यवाही एक साथ हुई। एक तो राखी बांधी गयी।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ने राखी के लिये एक गाना बनाया—

बांगलार माटी बांगलार जल,
बांगलार हवा, बांगलार फल,
पुन्य होऊक पुन्य होऊक हे भगवान
इत्यादि।

यह द्रष्टव्य है कि अब कवियों ने भारतवर्ष को छोड़ कर बंगाल का नारा दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंगालियों में प्रान्तीयता क्यों ?

यह स्वाभाविक ही था क्योंकि बङ्गभङ्ग की आफत बंगाल पर ही आयी थी, और दूसरे प्रान्तों के लोगों ने भले ही इसके लिये, सहानुभूति दिखाई हो, पर बंगालियों ने उन दिनों जिस भावुकता का अनुभव किया, उसे दूसरे प्रान्त वाले समझ नहीं सके, उसमें भाग लेने की बात तो दूर रही। बंगालियों में प्रान्तीयता की भावना का यहीं से जोरो से उदय हुआ। यों तो जब मध्यवित्त श्रेणी के कुछ बंगाली ब्रिटिश झंडे की छत्रछाया में और उसकी विजय यात्रा के साथ साथ बंगाल के बाहर अफसर, दुभाषिया, मुंशी आदि के रूप में गये थे, और ब्रिटिश ताकत के कारण तथा अपने अंगरेजी ज्ञान के कारण जिस जिस प्रान्त में गये थे उस उस प्रान्त के लोगों से ऊंचे ओहदों तथा पेशों में पहुंच गये, और उनका यह तांता बहुत दिनों तक जारी रहा, तो उनमें एक आत्मश्लाघा उत्पन्न हो गयी थी। इस आत्मश्लाघा की अन्तर्गत वस्तु यह थी कि बंगाली समझते थे कि जाति दृष्टि से वे उन उन प्रान्त के निवासियों से ऊंचे हैं, जब कि असली बात यों थी कि वे इन ओहदों तथा पदों पर इसलिये पहुंचे थे तथा उन्हें नये ढंग की उच्च शिक्षा इसलिये मिली थी कि वे पहले गुलाम हुए थे। वे अपनी गुलामी को ही अपनी शराफत समझ बैठे थे। कुछ भी हो इसका नतीजा एक दुष्ट आत्मश्लाघा के रूप में प्रगट हुआ था। बाद को जब अन्य प्रान्त के लोग भी अंगरेजी शिक्षित हो गये तो वे भी सरकारी गुलामी में हिस्सा मांगने लगे, और बंगाली चूंकि पहले से इन ओहदों पर डटे थे और अपने बाद अपने बालबच्चों को भी इन ओहदों पर डटाना चाहते थे, इस कारण उनसे उनका मोर्चा हुआ। यहीं से बंगाली-बिहारी, बंगाली-आसामी आदि विद्वेष का सूत्रपात हुआ। कुछ अप्रासंगिक होते हुए भी हमने इस विषय में थोड़ा विस्तार के साथ इसलिये लिखा कि इतिहास लेखक का काम केवल इतना नहीं है कि वह कह दे कि अमुक जाति में अमुक त्रुटि है, बल्कि उसका काम यह भी है कि यह दिखावे कि ऐतिहासिक रूप से यह त्रुटि कैसे आई।

बङ्गभङ्ग ने इसी पहले से उत्पन्न भावना को और भी पुष्ट किया। सब बंगाली इस समय एक मुसीबत में थे, इस प्रकार बंगाली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कृति, बंगाली सभ्यता और न मालूम कौन कौन से नारे निकल पड़े।

यह आन्दोलन बङ्गभङ्ग से आगे

इस आन्दोलन की यद्यपि उत्पत्ति बङ्गभङ्ग से ही हुई थी, और स्वाभाविक रूप से बङ्गभङ्ग के रद्द हो जाने से ही इसका अन्त होना चाहिये था, पर यह इतने में ही समाप्त नहीं होने वाला था, यह १६ अक्टूबर को जो गाने गाये गये उन्हीं से ज्ञात था। जाति की सुप्त चेतना एक ठोकर से जगी थी, पर वह उस ठोकर के बहुत आगे जाने वाली थी। इस अवसर के लिये रवीन्द्रनाथ के उल्लिखित गीत के अतिरिक्त एक और भी गीत साथ ही साथ गाया गया। हम उस गीत का अनुवाद देते हैं—

"उनका बन्धन जितना ही कड़ा होगा उतना ही वह टूटेगा, हम लोगों का बन्धन उतना ही टूट चलेगा। उनकी आँखे जितनी ही लाल पीली होंगी, हम लोगों की आँखे उतनी ही खुलेंगी, उतनी ही खुलेंगी। आज तुम्हें कर्मक्षेत्र में जुट पड़ना है, स्वप्न देखने का समय नहीं है, इस समय वे जितना ही तर्जन गर्जन करेंगे, हमारी नींद उतनी ही खुलेगी हमारी नींद उतनी ही खुलेगी।"

यह स्पष्ट है कि यह आन्दोलन अपने जन्म के पहले ही दिन बङ्गभङ्ग से कहीं आगे बढ़ चुका था बङ्गभङ्ग तो एक चिनगारी थी जिसने जन-आन्दोलन को एक विराट अग्नि स्तूप में परिणत कर दिया।

प्रतिवाद में सभा

उस दिन कलकत्ते में लोगों ने गंगा स्नान किया तथा राखी बांधी। उस दिन दोपहर के बाद सुरेन्द्रनाथ के प्रस्ताव के अनुसार अखंड बङ्गभवन की स्थापना के उपलक्ष्य में एक सभा हुई। बूढ़े नेता आनन्दमोहन बसु बहुत सख्त बीमार थे। थोड़े दिन बाद वे मर भी गये पर उस दिन इस सभा का सभापतित्व करने के लिये उन्हें आराम-कुर्सी पर ले आया गया। ५० हजार जनता इकट्ठी थी। आनन्दमोहन सभास्थल में तो आ गये, पर वे बोल नहीं सके। सुरेन्द्रनाथ ने आनन्द मोहन का व्याख्यान लोगों को पढ़ कर सुनाया। रवीन्द्रनाथ सभास्थल पर उपस्थित ही नहीं थे बल्कि उन्होंने इस सभा की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्यवाही में प्रमुख भाग लिया। उस दिन बन्देमातरम् की ध्वनि से आकाश गूंज रहा था और यहीं से यह नारा स्थायी रूप से राष्ट्रीय नारा हो गया।

उस दिन की घोषणा

उस दिन का प्रस्ताव कहा जाय या घोषणा कहा जाय, बूढ़े आनन्दमोहन बसु ने अपने हाथ से लिखा था। इसे अंगरेजी में बाद के जस्टिस सर अशुतोष चौधरी ने और बंगला में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पढ़कर सुनाया। यह घोषणा यों थी—

"चूंकि बंगाली जाति के सार्वजनिक विरोध को न मानकर पार्लियामेंट ने बंगभंग करना उचित समझा है, इसलिये हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि बंगभंग के कुपरिणामों को नष्ट करने के लिये तथा बंगाली जाति की एकता की रक्षा करने के लिये हम लोगों से जो कुछ भी बन पड़ेगा वह करेंगे। ईश्वर हमारी सहायता करें।"

चर्खा और करघा प्रचार

संध्या समय एक और सभा हुई। इसमें १ लाख से ऊपर जनता इकट्ठी थी। यह सभा विशेष कर इसलिये बुलायी गयी थी कि स्वदेशी वस्त्र तैयार करने के लिये एक कोष खोला जाय। इस सभा में पचास हजार रुपये मिले। बाद को यह रकम सत्तर हजार हो गयी। इस रकम से कार्नवालिस स्ट्रीट पर एक मकान में चर्खा और करघा विद्यालय स्थापित हुआ बताया जाता है कि इस विद्यालय में कई सौ चर्खे थे। इस प्राकर हम थोड़ी देर के लिये ठहरकर यह देखलें कि बाद को गांधी जी के नेत्रत्व में कांग्रेस ने चर्खा की जो योजना रखी है, वह पहले से ही मौजूद थी। यह विद्यालय बहुत दिनों तक चला पर स्वाभाविक रूप से ऐसा विद्यालय बहुत दिन टिक नहीं सकता था क्योंकि उसका आधार आर्थिक नहीं था। बाद को गांधी युग में ये चीजें टिक गयी इसका कारण यह था कि बाद की विपुल शक्तिशाली कांग्रेस ने अपनी सारी शक्ति इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिये लगा दी।

देशी उद्योग धंधो की उन्नति

चर्खा और करघा सफल न रहने पर भी स्वदेशी आन्दोलन के फलस्वरूप भारत के उदीयमान पूंजीवाद को बहुत सहायता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिली। बंग लक्ष्मी मिल, कई बैंक, साबुन स्टील ट्रंक आदि के कारखाने, जूते के कारखाने, बीमा कम्पनियां आदि बहुत से नये उद्योग धंधे खुले। इन में से कुछ स्थायी हो गये, कुछ नहीं टिक पाये, पर स्वदेशी के नारे ने देश के उद्योग धंधों को आगे बढ़ाया इसमें सन्देह नहीं। इस प्रकार बंगभंग आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।

स्वदेशी और स्त्रियां

स्वदेशी के प्रचार में बंगाल की स्त्रियों ने बहुत अच्छी तरह हाथ बटाया। रामेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी ने "बंग लक्ष्मी की व्रत कथा" में लड़कियों के लिये व्रत की प्रतिज्ञायें लिखीं—"माता लक्ष्मी, कृपा करो, कांचन देकर कांच नहीं खरीदूंगी। घर का होगा तो बाहर का नहीं लूंगी। शाँखा रहते हुए चूड़ियां नहीं पहनूंगी। दूसरे के द्वार पर भीख नहीं मागूंगी। मोटा वस्त्र पहनूंगी, सादे गहने पहनूंगी, सादी पोशाक होगी। पड़ोसी को खिलाकर खाऊंगी। मोटा अन्न अक्षय हो, मोटा वस्त्र अक्षय हो, घर की लक्ष्मी घर पर रहे, बाहर न जावे।"

सच मुच स्त्रियों ने स्वदेशी को सफल किया। कवियों ने बहुत से गाने केवल स्त्रियों को ही सम्बोधित करके गाये। कवि मनोमोहन चक्रवर्त्ती ने स्त्रियों से यह अनुरोध किया कि स्त्रियां विलायती चूड़ी आदि न खरीदें। पूर्व बंग में विशेष कर स्त्रियों का सहयोग अधिक रहा और कहीं कहीं तो ऐसा हुआ कि विलायती माल बिल्कुल नहीं बिका। हम फिर इस विषय पर आगे लिखेंगे कि स्वदेशी आन्दोलन कितना सफल रहा इसी बीच में देख लें कि कांग्रेस के नेता क्या कर रहे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १७ :

बंग भंग से प्रथम महायुद्ध तक

कांग्रेस का इक्कीसवां अधिवेशन

कांग्रेस का इक्कीसवां अधिवेशन बनारस में १६०५ में श्री गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता में हुआ। सभापति ने अपने अभिभाषण में स्वाभाविक रूप से बंग भंग का उल्लेख किया, और कहा कि "बंग भंग के फलस्वरूप बंगाल में जो विराट जागृति हुई है, उसका हमारे राष्ट्रीय इतिहास में बहुत बड़ा स्थान है। ब्रिटिश शासन में यह पहला ही मौका है जब धर्म और जात पात भूल कर बाहर के किसी की सहायता का परवाह न कर बंगाली अपनी स्वाभाविक वृत्ति से आगे बढ़ रहें हैं।" श्री गोखले ने उस समय के बंगाली नेताओं के त्याग तथा तपस्या पर जोर देते हुए कहा कि वहां के लोगों ने इस अवसर पर जनता की सेवा के आदर्श को बहुत ऊंचा उठा दिया है। श्री गोखले ने अपने अभिभाषण में स्वदेशी के नारे का तो समर्थन किया पर बायकाट के नारे के सम्बन्ध में यह कि इस शब्द के साथ द्वेष तथा हिंसा की भावना रहने के कारण यह ठीक नहीं है। श्री गोखले ने यह जो कहा इसमें हम गांधीवाद की एक मूलगत बात को पाते हैं। अवश्य श्री गोखले ने इस प्रकार मन्तव्य करने के बाद भी यह कहा (यह भी गांधी वादी ढंग है) कि बंगाल की हालत इतनी खराब हो गयी है कि उसमें बायकाट भी सही मालूम होता है। श्री गोखले ने स्वदेशी पर विस्तार के साथ भाषण दिया। उन्होंने यह भी कहा कि स्वदेशी उद्योग धंधों के लिये देशी पूंजी होनी चाहिये। इस प्रकार उन्होंने एक ही साथ देशी बैंक तथा देशी मिल मालिकों के लिये बहुत अच्छी बात कही।

बंग भंग का प्रस्ताव

सभापति के अभिभाषण के अतिरिक्त बंग भंग पर एक प्रस्ताव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी रक्खा गया। श्री सुरेन्द्रनाथ ने इस प्रस्ताव को रक्खा। उन्होंने अपने भाषण में बंगाल में जो जो अत्याचार हो रहे थे उनका उल्लेख किया। सभा, जुलूस, भजन पार्टियों पर रोक, बन्दे मातरम् गाने के लिये मारपीट, बच्चों को सजायें, गुरुखों का अत्याचार आदि विषयों का उल्लेख किया। बंग भंग के कारण बंगाल के छात्र समाज में बहुत जोरों का आन्दोलन हुआ। सरकार ने इसको दबाने के लिये हर तरीके से काम लिया। पहले तो गश्ती चिट्ठियां गयीं, पर इनसे जब काम न हुआ तो और तरीके से भी दमन हुए। बहुत से छात्रों को स्कूल से निकाल दिया गया था, कुछ लोगों को बेंत भी मारे गये थे। गश्ती चिट्ठियों से घबड़ा ने के बजाय कलकत्ते के छात्र समाज ने 'गश्ती चिट्ठी विरोधी सभा' नाम से अपना संगठन कायम किया। इसी सभा की तरफ से बड़े बाजार की विलायती कपड़े की दूकानों पर पिकेटिंग भी हुई। निर्यातित छात्रों को लेकर १९०५ के ६ नवम्बर को कलकत्ते में एक सभा हुई जिसमें राष्ट्रीय विद्यालय स्थापन करने के लिये सुबोधचन्द्र ने १ लाख रुपया दान दिया था। इसी प्रकार कई और जमींदारों ने बाद को और भी दान दिये थे। छात्र समाज नहीं दबा था।

यह उचित ही था कि सुरेन्द्रनाथ ने अपने भाषण में विशेष कर दमन नीति का वर्णन किया। पंडित मदनमोहन मालवीय ने एक प्रस्ताव में वायकाट का समर्थन करते हुए बहुत ओजस्विनी भाषण दिया। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिये भारतीयों के हाथ में एक यही तरीका है। लाला लाजपतराय ने भी स्वदेशी का समर्थन करते हुए कहा कि देश की गरीबी को दूर करने के लिये यही एक उपाय है।

विलायत में चुनाव

बंग भंग के अलावा कांग्रेस में पहले की तरह बहुत से प्रस्ताव हुए। इस बीच में विलायत में चुनाव हुआ था और उसमें उदार नैतिक दल की जीत हुई। इससे भारतीयों को बड़ी आशायें थी। जान मार्ले के भारत सचिव हो जाने से इस प्रकार की आशायें और भी पुष्ट हुई थीं। मार्ले बंग भंग के पक्षपातो नहीं थे, तो भी उन्होंने कहा कि वह बात तो तय हो चुकी है (Se Hledfact) इससे और भी जोश फैला, और लोगों ने स्वदेशी को अपनाया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस के बाहर आन्दोलन

जब से कांग्रेस की उत्पति हुई तब से हमने राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास को कांग्रेस के इर्द गिर्द में घूमते हुए दिखाया, पर १६०५ के बाद से यह नहीं कहा जा सकता कि कांग्रेस ही राष्ट्रीय आन्दोलन के औसत तबके का भी प्रतिनिधित्व करती है। इसलिये अब हमें कांग्रेस के अलावा अन्य आन्दोलन का भी वर्णन करना पड़ेगा। स्पष्ट है कि कांग्रेस के नेता बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन के मुकाबिले में पिछड़ गये। इस समय बंगाल ही राष्ट्रीय आन्दोलन की पहली कतार में आ गया इस में सन्देह नहीं।

बारीसाल सम्मेलन

१८८८ में बंगाल में एक प्रान्तीय राजनैतिक सम्मेलन हुआ करता था। यह तय हुआ कि १६०६ के १४ और १५ अप्रैल को इस सम्मेलन का अधिवेशन बरीसाल में हो। इस कानफरेंस के बैरिस्टर अब्दुलरसूल चुने गये। बारीसल की उन दिनों हालत यह थी कि वहां बन्देमातरम् का नारा भी गैर कानूनी था। बरीसाल के बहुत से युवक इस हुकुम को न मानकर जेल जा चुके थे, तथा उन पर मार पड़ चुकी थी। सरकार को यह खतरा था कि इस कानफरेंस के अवसर पर अवश्य बन्देमातरम् का नारा दिया जायेगा। तदनुसार स्वागत समिति के यह वादा करा लिया गया कि जब प्रतिनिधि बरीसाल पहुँचे तो उनके स्वागत में बन्देमातरम का नारा नहीं दिया जायगा। ऐसा ही हुआ पर पूर्वोल्लिखित 'गश्ती चिट्ठी विरोधी सभा' के सदस्य इस शर्त पर इतने नाराज हुए कि उन्होंने स्वागत समिति से सम्बन्ध रखना उचित नहीं समझा और अलग जाकर ठहर गये। अन्त में दोनों दलों में यह समझौता हुआ कि कानफरेंस के पहले दिन प्रतिनिधि गण मिलकर बन्देमातरम् का नारा देंगे और राजा बहादुर की हवेली नामक इमारत से जुलूस बनाकर सभा स्थल पर जायेंगे।

जुलूस पर लाठियाँ

जुलूस में आगे आगे सभापति अब्दुलरसूल तथा उनकी मेम पत्नी की गाड़ी थी। इसके पीछे पीछे नेतागण पैदल चले। सब से पीछे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गश्ती चिट्ठी विरोधी सभा के सदस्य थे, जो बन्देमातरम् का नारा तो नहीं दे रहे थे पर बन्देमातरम् का बैज पहने हुए थे। ज्योंही गश्ती चिट्ठी विरोधी सभा के लोग हवेली से निकले, त्योंही पुलिस ने उनपर लाठियों से हमला कर दिया। अब क्या था लोग चिल्ला चिल्ला कर बन्देमातरम् कहने लगे। ऊपर से लाठियां पड़ने लगीं। बंगाल में ही तालाब था एक तो उसी में गिर पड़ा।

सुरेन्द्रनाथ पर जुर्माना

सरकार ने सुरेन्द्रनाथ को १८८ दफा के अनुसार गिरफ्तार कर लिया और उन्हें २०० रुपया जुर्माना कर दिया। सुरेन्द्रनाथ ने अदालत में एक कुर्सी पर बैठने की चेष्टा की इस पर अदालत की अमर्यादा करने के कारण उनपर और २०० रुपये जुर्माना हुए। वे जुर्माना देकर चले गये।

अत्याचार की निन्दा

सम्मेलन में पहला आलोच्य विषय पुलिस का अत्याचार हुआ जो सज्जन तालाब में डूबते डूबते बचे थे उन्होंने खड़े होकर पुलिस के अत्याचार की कहानी बतायी। कई प्रस्तावों में यही जिक्र रहा। सभापति महोदय ने यह साफ कर दिया कि धर्म अलग अलग होने पर भी राजनैतिक आन्दोलन में हिन्दू मुसलमान ईसाई सब एक हैं। यह एक प्रष्टव्य बात है कि सरकार ने सभापति को नहीं पकड़ा और सुरेन्द्रनाथ को पकड़ा जो उनकी गाड़ी के पीछे पैदल चल रहे थे। ऐसा करने में सरकार का उद्देश्य स्पष्टतः यह था कि एक मुसलमान को गिरफ्तार कर साधारण मुसलमानों को तैश न दिलाया जाय।

पुलिस द्वारा सभा भंग

अगले दिन जब नेतागण सम्मेलन को कार्रवाई के लिये पधारे, तो पुलिस सुपरिंटेंडेंट सभा स्थल में आये और मिस्टर रसूल से यह कहा कि या तो वह वादा करें कि सभा में बन्देमातरम् का नारा नहीं दिया जायेगा, और नही तो सभा भंग करें। नेतागण इस प्रकार की अपमान जनक शर्त को मानने के लिये तैयार नहीं हुए, परिणाम यह हुआ कि सम्मेलन की कार्रवाई पूरी नहीं हुई और सभा भंग कर दी गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंगाल में शिवाजी उत्सव

इस साल बंगाल में बड़ी धूमधाम के साथ शिवाजी उत्सव मनाया गया इस उत्सव के प्रवर्त्तक लोकमान्य तिलक श्री खापडे तथा मुंजे को लेकर इस मौके पर बंगाल पधारे। उत्सव के साथ साथ एक स्वदेशी मेला भी लगा। जिस समय लोकमन्य तिलक बंगाल आये, उस समय बंगालियों ने इनका खूब स्वागत किया। १० जून को ३० हजार जनता ने लोकमान्य तिलक को लेकर जुलूस निकाला और जाकर गंगा स्नान किया। इस मौके पर भवानी पूजा भी हुई। इस प्रकार इस उत्सव में शिवाजी, गंगा स्नान, भवानी पूजा आदि ऐसी कई बातें जुड़ गयी, जिनके कारण मुसलमान इस आन्दोलन में नहीं आ सकते थे। इन्हीं दिनों प्रतापादित्य और सोताराम राय आदि मुगल विरोधी वीरों का उत्सव मनाया गया और उनको लेकर पुस्तकें लिखीं गयी। श्रीमती सरलादेवी ने वीरपूजा का भी नारा दिया। अखाड़े तथा छुरा आदि खेलने का भी प्रारम्भ हुआ। स्पष्ट था कि यह आन्दोलन अब धीरे धीरे उग्रतर धारा की ओर जा रहा था।

"बन्देमातरम" और अरविन्द

इन्ही दिनों बन्देमातरम तथा युगान्तर प्रकाशित हुए। बन्देमातरम का मोटो भारतीयों के लिये भारत था बन्देमातरम के सम्पादक मंडल में विपिनचन्द्र पाल भी थे। बाद को श्री अरविन्द घोष इस पत्र के नियमित लेखकों में हो गये। उन्होंने बन्देमातरम में न्यू स्परिट या नया मार्ग करके एक लेखमाला लिखी, जिसका जनता पर बहुत भारी असर पड़ा। इसके कोई ११ साल पहले ही उन्होंने इन्दुप्रकाश नामक बम्बई के पत्र में कांग्रेस के उन दिनों की नीति की निन्दा करते हुए एक लेख लिखा था और बताया था कि भिक्षापाड़ से कुछ होना जाना नहीं है

युगान्तर

युगान्तर पत्र इन दिनों बहुत अधिक चला। इसके सम्पादक स्वामी बिवेकानन्द के छोटे भाई श्री भूपेन्द्रनाथ दत्त थे। अन्य लेखकों में अरविन्द घोष, उपेन्द्र बन्दोपाध्याय आदि थे। उन दिनों आज-कल की तरह पत्रों की ग्राहक संख्या हजारों तक पहुँची हुई नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होती थी पर फिर भी इस पत्र की ग्राहक संख्या ७ हजार थी, और एक एक पत्र को बीसियों लोग पढ़ा करते थे। इस पत्र में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रचार किया जाता था और यह कहा जाता था कि क्रांतिकारी तरीकों से ही देश स्वतंत्र हो सकता है। बाद को जब क्रांतिकारी षड़यंत्र हुए और उनके सम्बन्ध में पकड़े हुए लोगों में कुछ मुखबिर भी निकले तो उन्होंने बयानों में युगान्तर का नाम अवश्य लिया। सब ने यह कहा कि युगान्तर पढ़कर मेरे विचार क्रांतकारी हो गये। १६०८ को ११ मई को बयान देते हुए मुखविर ऋषिकेशकांजो लाल ने यह कहा कि युगान्तर पढ़ने के बाद मेरे विचार क्रांतकारी हुए, और मैं इस बात की टोह में रहने लगा कि कोई इस प्रकार को संस्था है या नहीं जो इन विचारों को लेकर काम कर रही है। युगान्तर जनता में इतना प्रिय हो गया था कि छपते ही छपते उसकी कापियाँ लुट जाती थीं। रवीन्द्रनाथ भी भंडार नामक एक पत्र में स्वदेशी पर जोर दे रहे थे।

क्या इस युग की राष्ट्रीयता प्रतिक्रियावादी ?

यहाँ यह बात स्पष्ट कर दी जाय कि बन्देमातरम्, युगान्तर तथा उसके परिचालक अरविन्द, वारीन्द्र, उपेन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय, भूपेन्द्र नाथ दत्त आदि सभी व्यक्ति धार्मिक विचारों के थे। इनमें से श्री अरविन्द तो बाद को सार्वजनिक जीवन छोड़कर सम्पूर्ण रूप से आश्रम जीवन व्यतीत करने लगे। अन्य लोग भी बाद को राजनीति से अलग हो गये। यह बिल्कुल निश्चित है कि इन लोगों के निकट धर्म का स्थान और किसी बात से भी ऊंचा था और इन लोगों ने धर्म के अंगरूप में ही राजनीति में भाग लिया था। क्या इस कारण उन्हें प्रतिक्रियावादी कहना उचित होगा। हम समझते हैं कि यह विल्कुल गलत होगा। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में यह लिखा है कि सामाजिक रूप से यदि कहा जाय तो १६०७ में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का जो पुनरुजीवन हुआ, वह निश्चित रूप से प्रतिक्रियावादी था। हम समझते हैं कि इस प्रकार के मन्तव्य बहुत ही अजीब हैं। किसी विचार धारा पर मन्तव्य करते समय absolutes याने बिल्कुल एक काल्पनिक आदर्श को सामने रखकर कुछ कहना गलत होगा। हम किसी विचारधारा को उसकी सामाजिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृष्ठभूमि में देखकर तभी उसको क्रान्तिकारी या प्रतिक्रियावादी कह सकते हैं। इस दृष्टि से देखने पर इस समय जिस राष्ट्रीयता का उदय हो रहा था वह प्रगतिशील था। रहा यह कि उसमें दूसरा पेहलू था, इसमें कोई सन्देह नहीं, पर यह शायद समाजवादी राष्ट्रीयता के अतिरिक्त सभी तरह की राष्ट्रीयता में प्रतिक्रियावादी उत्थान होने के लिये बाध्य है। १६०७ राष्ट्रीयता की बात जाने दी जाय क्या बाद के युग में जिस राष्ट्रीयता को लेकर गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस चली, उसमें सामाजिक दृष्टि से कोई प्रतिक्रियावादी पहेलू नहीं था ? हम यथा समय इस पर आलोचना करेंगे।

पामदत्त की गलती

हमें इस बात का भी अफसोस है कि पामदत्त भी इस प्रश्न के इस पहलू को समझ नहीं सके, और वे अपनी पुस्तक India to-day में स्वदेशी आन्दोलन को समझ नहीं पाये। केवल यही नहीं उन्होंने अज्ञातवश या जिद के कारण उस समय के आतंकवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन को छोटा करके दिखलाने की कोशिश की है। सच तो यह है कि सीता रमैया आदि लेखकों की तरह उन्होंने आतंकवादी आन्दोलन को कोई महत्व ही नहीं दिया मानो इतिहास के सृजन में इनका कोई हाथ ही नहीं था। यह अच्छा प्रचार कार्य हो सकता है पर बहुत गलत इतिहास है। पामदत्त को यह स्मरण रखना चाहिए था कि सर्वकाल के श्रेष्ठत्तम क्रान्तिकारी लेनिन आतंकवाद के परम विरोधी होते हुए भी रूस के आतंकवादियों की बड़ी प्रशंसा कर गये हैं। फिर स्वदेशी आन्दोलन में केवल आतंकवाद ही नहीं था, उसमें बहुत से अन्य पहलू थे। और उनमें से कई बहुत रचनात्मक थे। सच तो यह है कि बाद के कांग्रेस आन्दोलनों में जो बातें गांधीवादी युग की विशेषता समझी गयी, उनमें से सभी बातें स्वदेशी आन्दोलन में उठायीं गयीं थीं।

राष्ट्रीय शिक्षा-परिषद

स्वदेशी आन्दोलन के सिलसिले में अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा की बात भी उठी। विशेषकर यह प्रश्न नेताओं के सामने इस कारण आया कि बन्देमातरम् तथा स्वदेशी आन्दोलन में भाग लेने के कारण बहुत से छात्र अपने विद्यालयों से निकाल दिये गये, कई तो रस्टीकेट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर दिये गये, याने उनके लिये किसी भी स्वीकृत शिक्षा-संस्था में भर्ती होने की मुमानियत हो गई। लोगों को इस बात की आवश्यकता ज्ञात हुई कि एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना हो। कवीन्द्र रवीन्द्र, सर गुरुदास वन्द्योपाध्याय, हीरेन्द्रनाथ दत्त आदि ने इसका बीड़ा उठाया। इन्हीं लोगों ने भीतर-भीतर इसके लिये आन्दोलन किया, और जब आन्दोलन कुछ परिपक्व हो गया, तो इन लोगों ने कलकत्ता के टाउन हाल में एक सभा बुलाई। डाक्टर रासबिहारी घोस इसके सभापति हुए। इसी सभा में नेशनल कौंसिल आफ एज्यूकेशन या राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की स्थापना हुई। श्री सतीशचन्द्र मुखोपाध्याय इस परिषद् के अध्यक्ष बनाये गये। 'डान' नामक पत्र के संपादक तथा डान सोसाइटी के संस्थापक के रूप में सतीश बाबू पहले ही प्रसिद्ध हो चुके थे।

छात्र समाज पर फुलर का प्रहार असफल

छात्रों पर सरकार का कोप विशेष रूप से इस कारण गया कि उन्हीं के कारण आन्दोलन दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था। पहले ही बताया जा चुका है कि बंगाली छात्रों को आन्दोलन से अलग कर देने के लिये तरह-तरह की गश्ती चिट्ठियां निकाली थीं, पर इससे कुछ काम नहीं हुए। छात्र समाज तो तुल चुका था। जितना ही विरोध हुआ छात्र उतना ही आगे बढ़े। सिराजगंज के विक्टोरिया हाई स्कूल के छात्रों ने आन्दोलन में विशेष भाग लिया। इस पर पूर्वी हिस्से के लाट साहब सर बैमफील्ड फुलर छात्र समाज को ऐसा सबक देने पर तुल गये कि लोगों में आतंक छा जाय। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के अधिकारीवर्ग से यह कहा कि विक्टोरिया स्कूल को स्वीकृत विद्यालय की सूची से निकाल दो। विश्वविद्यालय के अधिकारी वर्ग फुलर की इस बात पर राजी नहीं हुए। लार्ड मिन्टो उन दिनों भारत के वायसराय होने के अतिरिक्त कलकत्ता विश्वविद्यालय के चैंसलर थे। यह मामला उनके निकट फैसले के लिये गया तो विश्वविद्यालय की ओर से सर आशुतोष ने बड़े लाट से मिलकर यह समझा दिया कि विश्वविद्यालय को ऐसे मामले में नहीं पड़ना चाहिये। लार्ड मिन्टो को यह बात समझ में आ गई, और उन्होंने लाट फुलर को लिख भेजा कि इस मामले को जाने दो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और अपनी माँग को वापस लो। पर फुलर इस बात पर राजी नहीं हुआ। वह तो बड़े लाट से भी ज्यादा खैरख्वाह बनता था, ऐसे ही लोगों के लिये कहा गया है more royalist than the king याने राजा से बढ़ कर खैरख्वाह। फुलर ने लार्ड मिन्टो को लिख भेजा कि यदि उसकी मांग मानी नहीं गई, तो वह इस्तीफा दे देगा। अब लार्ड मिन्टो क्या करते, उन्होंने इस मामले की रिपोर्ट भारत सचिव मार्ले को लिखा भेजी। मार्ले ने भी बड़े लाट का पक्ष लिया। इस कारण फुलर को इस्तीफा देना पड़ा! इस प्रकार फुलर से बंगाल का पिण्ड छूटा। इस अवसर पर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने जिस साहस का प्रदर्शन किया, वह बहुत ही सराहनीय था। भारत सरकार फुलर के मार्ग पर इस कारण चलना नहीं चाहती थी कि वह यह नहीं चाहती थी कि आन्दोलन बढ़े।

आगा खाँ की साम्प्रदायिक माँगें

लार्ड मिन्टो ने इस साल के प्रारम्भ में ही देश की बिगड़ती हुई हालत को देखकर ब्रिटिश सरकार से यह प्रस्ताव किया था कि भारतीयों को शासन-सुधार की एक किश्त दी जाय। इसी सिलसिले में १९०६ के १ अक्टूबर को आगा खाँ तथा कुछ अन्य मुसलमान वायसराय से मिले, और उनसे यह कहा कि भविष्य के शासन-सुधारों में मुसलमानों को अलग प्रतिनिधित्व दिया जाय, साथ ही इसमें यह कहा गया कि मुसलमानों को उनकी वास्तविक आबादी से अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाय। लार्ड मिन्टोने इनकी बातों को ध्यान से सुना, और कहा कि मैं आप लोगों की माकूल माँगों को मानूंगा। बादको जो मार्ले-मिन्टो सुधार दिये गये, उसमें सचमुच आगा खाँ की ये माँगें मान ली गईं। यहीं से उस विषवृक्ष का सूत्रपात होता है, जिसने बाद में बहुत ही विषमय फल दिये।

मुस्लिम लीग स्थापित

६ नवम्बर १९०६ के दिन नवाब सलीमुल्ला खाँ ने प्रतिष्ठित उच्च श्रेणी के लोगों की सलाह से एक गश्ती चिट्ठी भेजी, जिसमें 'भारत के मुसलमानों की एक राजनैतिक संस्था संगठित करने' की ओर दृष्टि आकर्षित की गई। इसी उद्देश्य को सामने रखकर अखिल भारतीय मुस्लिम एजुकेशनल कॉनफरेन्स की सालाना बैठक बुलाने के लिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा गया। तदनुसार ३० दिसम्बर १९०६ को ढाके में विख्यात मुसलमानों की एक सभा हुई, और यही नबाब बकारुलमुल्क के सभापतित्व में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग क़ायम की गई।

लीग के उद्देश्य

लीग जिन उद्देश्यों को लेकर स्थापित हुई, वे यों थे—

(१) भारतीय मुसलमानों के दिल में ब्रिटिश सरकार के प्रति वफ़ादाराना ख्यालात (राजभक्ति के भाव) उत्पन्न करना, और सरकार की कार्रवाइयों के बारे में जो गलतफ़हमियाँ हो जायँ उन्हें रफ़ा करना।

(२) मुसलमानों के राजनैतिक हकों तथा हितों पर निगरानी रखना, और उनकी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को नम्रता के साथ सरकार के सामने पेश करना।

(३) लीग के दूसरे उद्देश्यों को नुक़सान पहुँचाये वगैर भारत के मुसलमानों में दूसरी जातियों के प्रति सद्भाव रखना।

लीग और कांग्रेस

इस प्रकार लीग सरकार के प्रति करीब-करीब उसी रुख को लेकर चली, जिसे अपनाकर कांग्रेस का जन्म हुआ था, पर एक भारी फर्क यह था कि लीग इक्कीस साल बाद उन उद्देश्य को लेकर चली, और दूसरा यह कि लीग एक साम्प्रदायिक संस्था बनकर जन्मी, और उसी रूप में आगे बढ़ी जब कि कांग्रेस जिन माँगों को भी रखती थी, उन्हें सब भारतीयों (अवश्य यहाँ मैं वर्ग स्वार्थ वाले प्रस्तावों पर नहीं जाऊँगा) की दृष्टि से रखती थी। वार्गिक दृष्टि से देखने पर भी लीग के नेता सामन्तवादी तथा मध्यवित्त श्रेणी के थे, जबकि कांग्रेस उच्च तथा पढ़े लिखे मध्यवित्तों की तरफ़ से बोलती थी।

बंग भंग और लीग

पहली लीग ने किस प्रकार का राजनैतिक रुख लिया, यह इस बात से स्पष्ट हो जायगा कि एक प्रस्ताव में बंग भंग को मुसलमानों के हक़ में अच्छा बताया गया, और यह कहा गया कि लोग इसके विरुद्ध आवाज उठा रहें हैं, वे मुसलमानों को नुकसान पहुँचा रहें हैं। भारतवर्ष में एक तरह से जन-आन्दोलन का सूत्रपात ही बंग भंग आन्दोलन से होता है, इसके उद्देश्य में निश्चित रूप कोई ऐसी बात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं थी जो मुसलमानों के विरुद्ध थी, और लीग ने अपने जीवन का सूत्रपात ही इस आन्दोलन के विरोध से ही किया। लीग का यह रवैया बराबर रहा। इसने बाद को १६०८ में यह प्रस्ताव पास किया कि कांग्रेस ने वंगभंग के विरुद्ध जो प्रस्ताव पास किये हैं, वे स्वीकृत होने योग्य नहीं।

क्रांतिकारी षड़यन्त्र का प्रारम्भ

इधर तो लीग का यह कार्यक्रम जारी हुआ, पर उधर प्रगतिशील शक्तियाँ संघबद्ध होती जा रहीं थीं। अवश्य जिस प्रकार की परिस्थिति थी याने जन-जागृति की जो अवस्था थी, उसी के अनुसार यह भी निर्णीत हुआ कि यह शक्तियाँ किस प्रकार संघबद्ध होंगी। १६०३में ही वारीन्द्रकुमार घोष के दिमाग़ में इटली के ढंग पर गुप्त समितियाँ कायम की जाय, पर बंगाल का दौरा करके उन्होंने देखा कि अभी परिस्थिति परिपक्व नहीं हुई है। १६०४ में जब वंगभंग के सम्बन्ध में बंगाली बहुत क्षुब्ध हो चुके थे, उस समय वारीन्द्र ने बंगाल का फिर दौरा किया तो ज्ञात हुआ कि ज़मीन पहले से अधिक तैयार हो चुकी है। उन्होंने अब की बार अखाड़ों की स्थापना में भाग लिया, साथ ही यह चेष्टा की कि इन अखाड़ों में लोग राजनीति की भी आलोचना करें। इस प्रकार धीरे-धीरे अस्त्रशस्त्र भी एकत्र होने लगे और गुप्त समिति बन गई। वारीन्द्र ने जिस संगठन का निर्माण किया, वह जब बाद को जाकर पकड़ा गया तो अलीपुर षड़यन्त्र के नाम से मशहूर हुआ। हम यथा समय इसका उल्लेख करेंगे।

कांग्रेस का बाईसवाँ अधिवेशन

कांग्रेस का बाइसवाँ अधिवेशन कलकत्ता में १६०६ में होने वाला था। पर गरम और नरम दल में भीतर ही भीतर चल रहा था। कौन कांग्रेस का सभापति हो इस बात को लेकर नरम और गरम दल में मनमुटाव चल रहा था। गरम दल के नेता लोकमान्य तिलक थे। उनका दल यह चाहता था कि लोकमान्य तिकल सभापति हों, पर नरम दल इस बात को बचाना चाहता था। इन दिनों नरम दल के नेता सुरेन्द्र बनर्जी, गोखले, भूपेन्द्र वसु आदि थे। सच तो यह है कि कांग्रेस के सभी पुराने नेता नरम दल में थे। नरम दलवालों ने देखा कि विवाद अनिवार्य है, और संख्या में अधिक होने पर भी कांग्रेस में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नरम दल की भद्द ही रहेगी। इसलिये उन्होंने यह चाल चली कि ८२ साल के वृद्ध नेता श्रीदादाभाई नौरोजी को सभापति बनाया जाय तो गरम दलवालों का मुँह बन्द हो जायेगा, और यदि वे इस पर भी चुप नहीं रहे तो उल्टा उन्हीं की भद्द होगी। तदनुसार दादाभाई सभापति चुने गये। उन दिनों नियम यह था कि स्वागत समिति सभापति चुनती थी। और स्वागत समिति कलकत्ते की थी, जहाँ उन दिनों नरम भी बहुत कुछ गरम हो रहे थे। इसलिये यदि चुनाव होता तो लोकमान्य तिलक ही चुने जाते। पर इस चाल के कारण गरम दल वाले चुप रह गये।

स्वराज्य के लिये निरुपद्रव अन्दोलन पर ज़ोर

इस कांग्रेस के समय बड़ा जोश था। बीस हजार जनता अधिवेशन देखने आई, और सोलह सौ से अधिक प्रतिनिधि आये। बाद को कांग्रेस में गांधीजी ने जो अहिंसा तथा शान्ति का नारा दिया, वह भी कांग्रेस के अन्दर विकास की प्रतिक्रिया के आधार पर उद्भूत हुई, यह इस बात से ज्ञात होगा कि इस अधिवेशन के सभापति पद से बोलते हुए प्रपितामह दादाभाई ने कहा—"आन्दोलन करो, निरन्तर आन्दोलन करो। लोकतांत्रिक ब्रिटिश जाति अन्दोलन के सामने जितना सिर झुकाती है, उतना किसी बात के सामने नहीं। पर आन्दोलन सर्व प्रकार के उपद्रवों से वर्जित हो और लोकतांत्रिक हो।" दादाभाई ने अपने अभिभाषण में पहले पहल स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया, और उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि इससे औपनिवेशिक स्वराज्य ही अभीष्ट है।

इस कांग्रेस के प्रस्ताव

इस कांग्रेस के प्रस्तावों में स्वदेशी युग की पूरी छाप थी, यद्यपि उनकी अन्तर्गत वस्तु पहले के अधिवेशनों के प्रस्तावों के बहुत भिन्न नहीं थी। स्वराज्य अर्थात् औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग करते हुए यह कहा गया कि इसे कार्य रूप में परिणत करने के लिए पहले कदम के रूप में फौरन आई० सी० एस० आदि की परीक्षा में भारत तथा इंगलैन्ड दोनों स्थानों पर हो, कौन्सिलों में भारतीय सदस्यों की संख्या बढ़े, स्थानीय स्वायत्त-शासन को विस्तृत किया जाय इत्यादि। एक प्रस्ताव में स्वदेशी को मंजूर किया गया, दूसरे प्रस्ताव में राष्ट्रीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिक्षा की आवश्यकता बतलाई गई। बायकाट के समर्थन में भी एक प्रस्ताव पास हुआ। इस प्रस्ताव पर बहस के समय एक मजेदार बात यह हुई कि इस पर भाषण देते हुए श्रीविपिनचन्द्र पाल यह बोल गये कि बायकाट से उनका आशय यह है कि पूर्वबंग के लाट की कौन्सिल में कोई भारतीय हिस्सा न ले। इस पर महामना मालवीयजी ने यह कहा कि प्रस्ताव का आशय यह नहीं है, यों कोई वक्ता चाहे तो जो कुछ भी कह सकता है। श्री गोखले ने भी महामना मालवीय का समर्थन किया। कुछ भी हो बंगाल ने श्रीविपिन पाल के ही अर्थ को लिया, और पूर्व बंगाल की कौन्सिल का भी बायकाट हुआ।

कांग्रेस के विधान में परिवर्तन

अब की बार के अधिवेशन में कांग्रेस के विधान में कुछ परिवर्तन हुए। अब तक स्वागत समिति अधिकांश वोट से सभापति का चुनाव करती थी, पर अब यह नियम हो गया कि सभापति का चुनाव तीन चौथाई वोटों से होना चाहिये। यदि सभापति का चुनाव इस प्रकार से न हो सके, तो अखिल भारतीय स्टेंडिंग कमेटी सभापति का चुनाव करेगी। इस विधान में ही हम भविष्य आँधी की सूचना पा सकते हैं। किसी भी संस्था के विधान में जब परिवर्तन होता है तो वह किसी न किसी कारण से होता है, अब की बार क्या कारण था यह स्पष्ट है। नरमदल वाले कांग्रेस को विधान से इस प्रकार बाँध रहे थे कि वह उनके हाथ से निकल न जाय।

गरम दल अर्द्ध रहस्यवादी तथा अर्द्ध-धार्मिक

कांग्रेस में इस प्रकार गरम दल तथा नरम दल दो भाग हो जाने से ब्रिटिश सरकार को बड़ा फायदा पहुँचा। उसके लिये अब यह आसान हो गया कि उग्र विचार वालों को दबाये तथा उनका निर्यातन करे यह न समझा जाय कि उन दिनों के उग्र विचार वाले सब वर्गहीन समाज के ही उपासक थे। उनमें से अधिकांश तो यह जानते ही नहीं थे कि वे क्या चाहते हैं, वे अर्द्ध धार्मिक अर्द्ध-रहस्यवादी शब्द-जाल का प्रयोग करते थे, और वस्तुवाद से बहुत कुछ दूर थे।

अरविन्द के अस्पष्ट विचार

यद्यपि इन्हीं दिनों लाल, बाल, पाल शब्द की उत्पत्ति हुई, और इसके अनुसार लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिपिनचन्द्र पाल ही इस समय गरम दल के नेता कहे गये हैं, फिर भी अरविन्द इन दिनों के प्रधान गरम नेताओं में से थे। वे राजनैतिक विषयों को ऐसे धार्मिक शब्दों में कहते थे कि उनका मतलब ही नहीं निकलता था। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना तथा देशभक्ति को ईश्वर से उद्भूत एक धर्म करार दिया। वे बोले "राष्ट्रीयता को कोई रोक नहीं सकता क्योंकि ईश्वर ने ही इसे नियंत्रित किया है।....केवल राष्ट्रीय कार्य कर, राष्ट्रीय शिक्षा प्रवर्तित कर या बायकाट का कार्यक्रम अपना कर इस देश का उद्धार सम्भव नहीं है। स्वदेशी से कुछ आर्थिक लाभ हो सकता है, पर इसकी तड़कभड़क से भूलकर और इसको अपनाने में असली उद्देश्य के नष्ट हो जाने की सम्भावना बहुत अधिक है। दृश्यमान शक्तियों से स्वदेश की शक्तियाँ दूसरी तरह की हैं। देशमाता की शक्ति अपनी है। इसकी पुष्टि के लिये न तुम्हारी जरूरत है, न मेरी, दूसरे किसी की आवश्यकता नहीं है।"

श्री योगेशचन्द्र बागल ने अरविन्द की इस उक्ति को उद्धृत करते हुए गद्गद् होकर लिखा है कि—'उन्होंने नयी विचारधारा को धर्म के पर्याय में चढ़ाकर उसे अपूर्व स्निग्धता दी।' इसके विरुद्ध मैं यह समझता हूँ कि इससे राष्ट्रीयता की अन्तर्गत वस्तु, उसके लक्ष्य तथा कार्यक्रम के स्पष्टीकरण में बाधा ही पहुँची। बाद को अरविन्द राजनीति से क्यों अलग हो गये, इसका रहस्य भी इन्हीं उक्तियों में अन्तर्निहित है।

विपिनचन्द्र के विचार

अरविन्द की तुलना में विपिनचन्द्र और तिलक के पैर जमीन पर अधिक थे। विपिनचन्द्र ने कहा—कोई किसी को स्वराज्य दे नहीं सकता। यदि आज अंग्रेज मुझसे कहें कि स्वराज्य ले लो तो मैं उसे ठुकरा दूँगा, क्योंकि जिस चीज को मैं स्वयं उपार्जन नहीं कर सकता, उस चीज को मैं लेने का अधिकारी भी नहीं हूँ। हम अपनी सारी शक्ति को इस तरह से लगायेंगे, जिससे विरोधी शक्ति को अपने मत पर ला सकें। विलायती मालों के वायकाट से लेकर सविनय आज्ञा-भंग (Passive resistance) तक हमारे अस्त्र हैं। हम रचनात्मक कार्य भी करेंगे। हम देश भर में सरकारी शासन-व्यवस्था की तरह व्यवस्था भी सारे देश में प्रतिष्ठित करेंगे।" यह द्रष्टव्य है कि विपिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाबू के वक्तव्य में सविनय आज्ञा भंग तथा समान्तराल सरकार सम्बन्धी विचार भी मौजूद हैं।

तिलक के विचार

लक्ष्य के सम्बन्ध में लोकमान्य तिलक के विचार और भी स्पष्ट थे। वे लोकतंत्र चाहते थे, पर हो सके तो ब्रिटिश शासन के अन्दर ही रहना उनका ध्येय था। बाद को लोकमान्य के विचार उग्रतर हुए, पर यहां तो उस समय का जिकर हो रहा है। नरम दलवालों के विचारों के सम्बन्ध में तो हम पहले ही बता चुके है। गरम नेताओं के विचार अस्पष्ट और शब्दजाल समन्वित होने पर भी, उसमें और नरम नेताओं के विचारों में बहुत फर्क था।

पंजाब में दमन

नरम और गरम दलवालों के इस विरोध से सरकार ने फौरन फायदा उठाया। सरकार ने उग्र विचार के पत्रों का दमन तथा उग्र-नेताओं की गिरफ्तारी शुरू की। पंजाब के 'इण्डिया' तथा 'पंजाबी' नामक पत्रों के सम्पादक और प्रकाशकगण जेल भेज दिये गये। लाला लाजपतराय पंजाब के सर्वप्रधान नेता थे। उन दिनों सरकार ने लगान बढ़ाया था। लालाजी इसके विरुद्ध आन्दोलन कर रहे थे, बस वे ६ मई १६०७ को १८१८ के रेगुलेशन तीन में नजरबन्द कर मन्डाले भेज दिये गये।

बंगाल में दमनचक्र

बंगला 'युगान्तर' के सम्पादक श्री भूपेन्द्रनाथदत्त तथा उसके मुद्रक पकड़े गये। मिस्टर किंग्सफोर्ड की अदालत में मुकद्दमा था। उन्होंने २० जुलाई को श्रीदत्त को एक साल तथा मुद्रक को दो साल की सजा दी। सम्पादक को कम तथा मुद्रक को अधिक सजा देने में सरकार का उद्देश्य यह था कि सम्पादक तो मिलते हैं, पर मुद्रक भड़क जाय। इस प्रकार भूपेन्द्रदत्त को सजा देने पर लोग दबने के बजाय और भी उभड़े। कलकत्ते की स्त्रियों ने भूपेन्द्रदत्त की माता को एक विराट सभाकर अभिनन्दित किया।

वन्देमातरम् और सन्ध्या पर प्रहार

युगान्तर के अतिरिक्त 'वन्देमातरम्' और ब्रह्मबान्धव उपाध्याय के 'संध्या' पत्र पर भी प्रहार हुआ। 'संध्या' बहुत दिनों से उग्रराष्ट्रीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विचारों का प्रचार कर रहा था। दोनों पत्रों के सम्पादक श्री अरबिन्द तथा ब्रह्मबान्धव उपाध्याय पकड़े गये।

विपिनपाल को सज़ा और छात्र प्रदर्शन

अरविन्द के मुकद्दमे में इस्तगासे की ओरसे गवाही देने के लिये श्रीविपिनपाल बुलाये गये, पर उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया। इस पर उन पर अदालत को मानहानि करने का मुकद्दमा चलाया गया। इस प्रकार बिना कारण देश के एक महान नेता पर मुकद्दमा चलाने के लिये जनता में बड़ा क्षोभ फैला। विशेषकर छात्रों ने मुकद्दमे के फैसले के दिन अदालत के सामने प्रदशन किया। इस पर छात्रों और पुलिसवालों में कुछ झगड़ा हो गया। सुशीलसेन नामक एक छात्र इसी सम्बन्ध में पकड़ा गया। मिस्टर किंग्सफोर्ड ने उसे बेत की सजा दी। बिपिनपाल को छै महीने की सज़ा दी गई।

अरविन्द रिहा, ब्रह्मबान्धव मर गये

बिपिनपाल को तो अरबिन्द के मुकद्दमे में गवाही न देने पर छै महीने की सज़ा हो गई, पर अरविन्द अपने मुकद्दमे में २३ सितम्बर को छूट गये। ब्रह्मबान्धव उपाध्याय ने अदालत के सामने यह कह दिया था कि वे ईश्वर के आदेश पर जिस स्वराज्य आन्दोलन को चला रहे हैं, उसके लिये वे सरकार के सामने सफाई देने के लिये तैयार नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि वे सन्यासी हैं, इस कारण कोई भी सरकार उन्हें कैद नहीं कर सकती। हुआ भी यही, वे हवालात में रहते समय ही मर गये। ब्रह्मवान्धव उपाध्याय ने अदालत से असहयोग किया था।

सीडीसस मीटींगस ऐक्ट

इन अत्याचारों से देश में आन्दोलन बढ़ा न कि घटा। सैकड़ों सभायें होने लगीं, और सरकार की निन्दा की जाने लगी। इन सभाओं में विशेष कर मिस्टर किंग्सफोर्ड की निन्दा की जाती थी क्योंकि सभी राजनैतिक मुकद्मे उन्हीं की अदालत में हुए थे। सरकार ने जब देखा कि सभाओं का रोग बढ़ता जा रहा है। (एक तानाशाही सरकार के लिये यह रोग ही था), तो १६०७ के १ नवम्बर को सिडीशस मीटींगस ऐक्ट नाम से एक कानून बना दिया। कहना न होगा कि यह कानून का गला घोंटा गया था। पर यह कोई नई बात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं थी। इससे पहले ही भारत सरकार ने एक आर्डीनेन्स निकाल कर पूर्व बंगाल तथा पंजाब की सभाओं पर रोक लगा दी थी, अब इसी को विस्तृत करके यह नया कानून बना, जिसके अनुसर सारे भारतवर्ष में सभाओं पर रोक लगा दी गई। इस प्रकार गुप्त समितियों के लिये मार्ग प्रशस्त हो गया।

नागपुर से सूरत

जो आँधी १६०६ में प्रपितामह दादा भाई को सभापति बना कर किसी तरह बचा दी गई थी, १६०७ में वह अधिक वेग के साथ दृष्टि गोचर हुई, और उसी प्रश्न याने सभापति के चुनाव के इर्द गिर्द यह झगड़ा शुरू हुआ। अब की बार भी गरम लोग लोकमान्य को सभापति बनाना चाहते थे, पर नरम दल के नेतागण इसके विरुद्ध थे। पहले अधिवेशन नागपुर में होने वाला था, यहां लोकमान्य को वोट मिल जाते, इस कारण नागपुर से अधिवेशन को बदल कर सूरत में कर दिया गया। सूरत में नरम दल का हाथ था।

नरम नेता टस से मस नहीं

इन्हीं दिनों लाला लाजपतराय छूट कर आ गये। लोकमान्य तिलक ने नरम दल वालों पर वही चाल चलनी चाही जो परसाल वे लोग उन पर चले थे। उन्होंने लालाजी का नाम यह समझ कर पेश कर दिया कि अपनी कैद के कारण वे देश में जन प्रिय हो रहे हैं, नरम दल वाले उनका विरोध थोड़े ही करेंगे। पर नरम दल वाले इस चाल में नहीं आये। वे अपनी टेक पर अड़े रहे। वे डाक्टर रासबिहारी घोष को सभापति बनाना चाहते थे।

समझौते की चेष्टा व्यर्थ

इसी वातावरण में कांग्रेस का तेइसवां अधिवेशन सूरत में हुआ। सोलह सो प्रतिनिधि थे। नरम लोगों की बहुसंख्या थी, उनकी संख्या करीब ६०० थी। इस प्रकार नरम नेताओं को अपने वोटों पर काफी भरोसा था। नरम दल वाले केवल अपना सभापति चुन कर ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहते थे, वे गत साल के अधिवेशन में वायकाट आदि का समर्थन करते हुए जो प्रस्ताव पास हुए थे उन्हें भी बदल कर पास कराने पर तुले हुए थे। गरम दल को नरम दल के इन मंसूबों का पता लग गया, इसलिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूरत में पहुंच कर गरम दल ने नरम नेताओं से यह कहा कि यदि वे प्रस्तावों को बदलने का अपना मंसूबा त्याग दें, तो वे उनके सभापति को चुन जाने देंगे। नरम नेताओं की तरफ से गोखलेजी ने यह कहा कि खुले अधिवेशन में क्या होगा नहीं होगा, इस सम्बन्ध में वे कुछ कह नहीं सकते।

अधिवेशन में हुल्लड़

इस पर दोनों दलों में समझौता नहीं हो सका, और दोनों तरफ से तैयारी होने लगी। जब अधिवेशन शुरू हुआ, और स्वागत समिति के सभापति के अभिभाषण के बाद जब सुरेन्द्रनाथ अधिवेशन के सभापति का नाम प्रस्ताव करने के लिये उठे, तो हुल्लड़ मच गई। इस पर उस दिन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। यह २७ दिसम्बर को बात है।

कांग्रेस में जूता चला

२८ दिसम्बर को फिर कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। लोकमान्य तिलक ने पहले ही इसी बात की चेष्टा की थी कि मामला सुलझ जाय, आज भी उन्होंने यह चेष्टा की थी। जिस समय सभापति का जुलूस जा रहा था, उस समय लोकमान्य तिलक का एक रुक्का स्वागत समिति के सभापति श्री त्रिभुवनदास मालवी को दिया गया था जिस में लोकमान्य ने यह अनुरोध किया था कि अधिवेशन शुरू होते ही जब सभापति का नाम प्रस्तावित तथा समर्थित हो जाय तो वे एक बैठक स्थगित करने का प्रस्ताव रखेंगे। उन्होंने रुक्के में लिखा था कि 'मैं झगड़ा मिटाने के लिये एक रचनात्मक प्रस्ताव रखना चाहूंगा, मुझे मौका दिया जाय।' यदि लोकमान्य को यह मौका दिया जाता तो झगड़ा निपट जाता, कम से कम फिर लोकमान्य सम्पूर्ण रूप से वैधानिक ढंग से चलते, पर नरम दल वालों ने उनके रुक्के को बिलकुल हजम कर लिया। लोकमान्य ने एक रुक्का भेज कर उन्हें याद भी दिलाया कि उन्हें बोलने दिया जाय, पर वहां कौन सुनता था। नरम नेता तो कुछ न सुनने पर तुले हुए थे। तब लोकमान्य उठे, और जाकर बोलने लगे। पर अधिवेशन के सभापति उन्हें बोलने न देने पर तुले हुए थे। इस पर भयंकर हुल्लड़ मच गई। उसी हुल्लड़ के समय एक मराठा चप्पल सुरेन्द्रनाथ को छूता हुआ फीरोजशाह मेहता को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगा। इस पर तो और भी हुल्लड़ मच गई। फिर तो कुर्सियां भी चलीं, और छड़ियां भी फेंकी गईं। उस दिन का अधिवेशन इस प्रकार भंग हो गया।

अलग कानवेनशन

इसके बाद नरम प्रतिनिधियों ने अपना अलग कानवेनशन या अधिवेशन किया। मजे की बात है कि लाला लाजपतराय इस कानवेनशन में शरीक हुए। इस कानवेनशन ने एक उप समिति इस बात के लिये नियुक्त कर दी कि कांग्रेस के लक्ष्य तथा विधान के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट तैयार करे। बाद को १६०८ के १८ तथा १६ अप्रैल को इसी कावेनशन का इलाहाबाद में अधिवेशन हुआ और उपसमिति की रिपोर्ट मंजूर की गई। इस उपसमिति ने क्या विधान बनाया, इसके ब्योरे में जाने की आवश्यकता नहीं। इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि वैधानिक उपायों से धीरे-धीरे औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करना कांग्रेस का लक्ष्य बताया गया, और यह साफ कह दिया गया कि जो इस लक्ष्य तथा साधन को स्वीकार करते हैं, वे ही कांग्रेस के प्रतिनिधि हो सकते हैं। इस के बाद से कांग्रेस बहुत सालों तक केवल नरम दल वालों की संस्था रही।

लाट साहब पर बम

बाद के युग के सम्बन्ध में यदि कोई यह दावा करता कि कांग्रेस का इतिहास ही देश का इतिहास है तो यह दावा कहां तक ठीक होता इसे तो हम बाद को देखेंगे, पर इस समय यह बात बिलकुल सही नहीं रह गई। एक तो तमाम उग्र विचार के लोग कांग्रेस से निकाले गये या निकल गये, दूसरा देश में इन दिनों जो आतंकवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन चला, वह सम्पूर्ण रूप से कांग्रेस आन्दोलन से स्वतंत्र था, और उसमें कांग्रेस के नेताओं का कोई हाथ नहीं था। सूरत में कांग्रेस के अधिवेशन के पहले ही पूर्वी बंगाल के अत्याचारी गवर्नर को दो बार मारने की चेष्टा हुई। इसमें से एक बार तो गवर्नर की गाड़ी पटरी पर से उतर गई और वे बाल बाल बचे। पुलिस रिपोर्ट के अनुसार इस धड़ाके से पाँच फुट चौड़ा और पाँच फुट गहरा गड्ढा हो गया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुजफ्फरपुर हत्याकांड

१६०८ के ३०अप्रैल को मिस्टर किंग्सफोर्ड के धोखे में मुजफ्फरपुर श्रीमती केनेडी तथा कुमारी केनेडी मारी गई। अत्याचारी किंग्सफोर्ड की तैनाती इन दिनों मुजफ्फरपुर में थी। इसको मारने के लिये खुदीराम तथा प्रफुल्ल चाकी दो युवक बाहर से आये थे। हमला करने के बाद दोनों युवकों में से एक ने अर्थात् प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या की, और खुदीराम को फाँसी हुई।

अलीपुर षड़यंत्र

इसी के बाद २ जून को पुलिस को मानिकतला में एक बम के कारखाने का पता लगा। इसके सम्बन्ध में बारीन्द्र घोष आदि गिरफ्तार हुए। अरविन्द भी इसी सम्बन्ध में गिरफ्तार हुए। नरेन्द्र गोस्वामी मुखबिर हो गया, पर कन्हाईलाल और सत्येन्द्र ने पिस्तौल मंगाकर जेल में ही उसका काम तमाम कर दिया। दोनों को फाँसी हो गई। बाकी लोगों पर जो मुकद्दमा चला, वह अलीपुर षड़यंत्र के नाम से मशहूर हुआ। सब को कालेपानी की सजा हुई। इस मुकद्दमे में आशुतोष विश्वास सरकारी वकील थे, वे २४ फरवरी सन् १६०६ को मारे गये। सरकार की ओर से जो डी० एस० पी० यह मुकद्दमा चला रहा था, वह भी बाद को मारा गया।

चिदम्बरम पिल्ले को कालापानी

यह न समझा जाय कि केवल क्रान्तिकारियों को लम्बी सजायें दी गई। श्रीविपिनचन्द्र पाल जिस समय मद्रास का दौरा करने गये थे, उस समय उनकी अनुप्रेरणा से वहां एक राष्ट्रीय दल का संगठन हुआ। श्रीचिदम्बरम पिल्ले तथा उनके साथी श्रीसुब्रह्मराय शिव इस दल का बहुत अच्छा प्रचार कर रहे थे। बस १२ मार्च १६०८ को ये घेर लिये गये और राजद्रोहात्मक व्याख्यान के अपराध में चिदम्बरम को आजन्म तथा सुब्रह्मराय को दस साल कालेपानी की सजा हुई। यह सजा इतनी अधिक थी कि उन दिनों के भारत सचिव मार्ले ने भी इसके विरुद्ध वायसराय को लार्ड मिन्टो को लिख भेजा। मार्ले ने साफ लिखा कि मैं चाहता हूँ कि शान्ति और सुव्यवस्था कायम रहे, पर इस प्रकार की सजाओं से लोग बम के मार्ग की तरफ बढ़ेंगे न कि और कुछ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दमन का दौरदौरा

मार्ले ने यह पत्र १४ जुलाई को लिखा था, पर इसके पहले ही भारत-सरकार ने अपनी कठपुतली धारासभा में ८ जून को ही विस्फोटक तथा समाचार पत्र कानून पास कर लिया था। विस्फोटक कानून के अनुसार विस्फोटक रखने को सजा आजन्म कालेपानी तक हो गई। और समाचारपत्र कानून में अखबार बन्द तथा प्रेस जब्त किया जा सकता था। इस कानून के पहले ही बहुत से अखबारों पर रोक लगाकर उन्हें बन्द कर दिया गया था। ऐसे पत्रों में उर्दू-इ-मुअल्ला था।

लोकमान्य को ६ साल सजा

लोकमान्य तिलक ने खुदीराम के विषय को लेकर 'केसरी' में कई निबन्ध लिखे। इन निबन्धों में उन्होंने आतंकवाद की निन्दा की थी पर साथ ही सरकारी आतंकवाद को भी जारशाही कह कर बुरा भला कहा था। इसी अपराध में वे २४ जून (१६०८) को गिरफ्तार कर लिये गये, और २२ जुलाई को उन्हें छः साल की सख्त सजा और १००० रुपया जुर्माना सुना दिया गया। लोकमान्य ने इस सजा के जवाब में कहा "जिस पवित्र कार्य को सिद्ध करने की मैंने प्रयत्न किया है उसके हक़ में दुःख उठाना अच्छा ही रहेगा। शायद ईश्वर की यही इच्छा है।" इस कठोर दंडादेश से देश भर में तहलका मच गया।

पत्रों पर प्रहार तथा नेता नजरबन्द

पर इससे 'उपद्रव' न रुक कर बढ़ते ही गये। ११ दिसम्बर को सरकार ने क्रिमिनल ला में कुछ संशोधन किये। स्पष्टतः इनका उद्देश्य क्रान्तिकारियों का दमन था इन संशोधनों के द्वारा अब सरकार को यह अधिकार हुआ कि वह किसी भी संस्था को केवल सन्देह पर गैर कानूनी करार दे। सरकार ने फौरन इस कानून का फायदा उठाकर वरीसाल की स्वदेश-बान्धव समिति, ढाका की अनुशीलन समिति मैमनसिंह की सुहृत समिति तथा इस प्रकार की अन्य बहुत सी समितियों को गैरकानूनी घोषित कर दी। अकेला अनुशीलन समिति की ही ढाके में ५०० शाखायें थीं, याने आधुनिक युग के कांग्रेस संगठन से यह संगठन तगड़ा था। सरकार इतनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घबड़ाई हुई थी कि सेवा समितियों पर भी उसे सन्देह हुआ, और इनकी निगरानी होने लगी। इसके अतिरिक्त सरकार ने बंगाल के मुख्य ६ नेताओं को नजरबन्द कर लिया, इनके नाम ये हैं—अश्विनीकुमार दत्त, कृष्णकुमार मित्र, मनोरंजन गुह ठाकुरता, श्यामसुन्दर चक्रवर्ती, सुबोध मल्लिक, सतोश चट्टोपाध्याय, शचीन्द्र बसु, पुलिनदास, भूपेश नाग।

आतंकवाद की जड़ें जनता में

बंगाल में इस प्रकार से खुली संस्थाओं के दमन तथा नेताओं की गिरफ्तारी का नतीजा यह हुआ कि गुप्त समितियों का प्रचार हुआ तथा देश आतंकबाद की ओर बढ़ा। बंगाल के आतंकबाद की नींव ऐसी बहुत सी संस्थाओं पर थी. जो खुली तथा कानूनी रहते समय जनता के अन्दर तक बैठी हुई थी, इसी कारण वह सरकारी दमन से दबाया न जा सका। इस क्रान्तिकारियों के पीछे सारी असन्तुष्ट मध्यवित्त श्रेणी तो थी ही, इसके अतिरिक्त जनता को भी ब्रिटिश साम्राज्यबाद के मुकाबले में लड़ने के कारण इन अलमस्तों से सहानुभूति थी। इसलिये पामदत्त आदि ने आतंकवादी आन्दोलन को जिस बच्चों का खेल प्रतिपादित करने की चेष्टा की है,* वह बहुत ही निन्दनीय है, और यह सूचित करता है कि उन्होने भारतीय वग-शक्तियों से परिचय प्राप्त नहीं किया।

एक नहीं हुआ

जिस समय राष्ट्रीय शक्तियों पर इस प्रकार साम्राज्यबाद का प्रहार हो चुका था, और लोकमान्य तिलक, अश्विनीकुमार आदि नेता सींखचों के अन्दर बन्द हो चुके हों, उस समय चाहिये तो यही था कि बचीखुची राष्ट्रीय शक्तियाँ संयुक्त मोर्चा बनाकर साम्राज्यवाद का मुकाबला करतीं, पर ऐसा नहीं हुआ। गरम दल का हाथ तो आगे बढ़ा हुआ था ही, पर नरमदल के नेतागण शायद इस बीच में और डर गये थे, और वे किसी भी प्रकार एकता के लिये तैयार नहीं थे।

कांग्रेस का चौबीसवाँ अधिवेशन

१६०८ में मद्रास में डाक्टर रासबिहारी घोष के ही सभापतित्व

*India To day p. 272.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में विभक्त कांग्रेस का २४ वाँ अधिवेशन हुआ। डाक्टर घोष शायद फिर से सभापति इस कारण बनाये गये कि वे सूरत में ढंग से सभापतित्व कर ही नहीं पाये थे। डाक्टर घोष ने सरकारी दमननीति की भी निन्दा की और गरम दल की भी निन्दा की। कांग्रेस के प्रस्तावों का भी यही आधार रहा। क्रान्तिकारी कार्यों की निन्दा की गई। जब गाँधीयुग में बराबर कांग्रेसों में क्रान्तिकारियों की निन्दा में प्रस्ताव पास हुए तो फिर इन नरम नेताओं ने ऐसे प्रस्ताव पास किये तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? शासन सुधार के सम्बन्ध में भी प्रस्तव पास हुए।

महाराष्ट्र में दमन

सरकार की तरफ से शासन सुधार देने की तैयारी थी, पर उधर दमन भी जोरों पर था। १९०९ के ९ जून को गणेश दामोदर सावरकर को 'लघु अभिनव भारत मेला' नामक कविता पुस्तक के कारण आजन्म कालेपानी की सजा दी गई। कविताओं के कारण इतनी सजा, सरकार बिलकुल पगली हो रही थी पर यह कविता पुस्तक तो एक बहाना मात्र था। सरकार किसी और ही कारण से नाराज थी।

श्यामजी कृष्ण वर्मा

रैंड हत्याकांड के जमाने से ही सरकार उन पर उनके भाई विनायक दामोदर पर तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा पर नाराज़ थी। श्यामजी कृष्ण वर्मा गड़बड़ देखकर उन्हीं दिनों लन्दन चले गये थे और बहुत दिनों तक चुके थे। १९०५ से फिर से इंडिया-होमरूल सोसाइटी बनाकर इंगलैंड में काम करते रहे। वे Indian Socioloist नामक एक पत्र का सम्पादन भी करते रहे। वे विशेष कर भारत से पढ़ने के लिये आये हुए छात्रों में काम करते रहे। जब विनायक सावरकर पढ़ने गये तो वे भी उनके प्रभाव में आये। सावरकर बन्धु भारत मेला तथा अभिनव भारत सोसाइटी के भी संस्थापक थे। सरकार ने इन्ही सब बातों के लिये गणेश सावरकर पर यह बदला लिया।

धींगरा को फाँसी, विनायक को कालापानी

उधर विनायक के शिष्य मदनलाल धींगरा ने १९०९ की पहली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जुलाई को सर कर्जन बाइली नामक एक अंगरेज को गोली मार दी।* सर बाइली भारती छात्रों पर खुफिया का काम करते थे। धींगरा को फांसी हुई जिसे उन्होंने बड़ी बहादुरी से ग्रहण किया। विनायक के दल ने नासिक के मैजिस्ट्रेट जैकसन की भी हत्या की, इस पर विनायक पकड़ कर लन्दन से लाये गये, उन पर मुकदमा चला और उन्हें भी आजन्म कालापानी दे दिया गया।

कांग्रेस का पच्चीसवां अधिवेशन

१६०६ में कांग्रेस का पचीसवाँ अधिवेशन पं० मदनमोहन मालवीय के सभापतित्व में लाहौर में हुआ। इस बार मुश्किल से २५० प्रतिनिधि थे। पंडित जी ने शासन सुधार की कड़ी निन्दा करते हुए कहा कि यह यथेष्ट नहीं है। उन्होंने अपने भाषण से उपस्थित लोगों पर अपना जादू डाल दिया। सैयद हसन इमाम ने साम्प्रदायिक निर्वाचन की निन्दा करते हुए कहा कि यह देश के स्वार्थ के लिये घातक सिद्ध होगा। कांग्रेस ने शासनसुधार की निन्दा करते हुए चार प्रस्ताव पास किये। इसमें विशेषकर साम्प्रदायिक निर्वाचन तथा मुसलमान वोटरों के साथ अन्यायपूर्ण पक्षपात की निन्दा की। इसने साफ कह दिया कि सरकार की बहुसंख्या होने के कारण यह सारा शासनसुधार तथा उसकी धारासभायें निकम्मी हैं यह तय हुआ कि वङ्गभङ्ग के सम्बन्ध में जनता को कितना क्षोभ है इसको बताने के लिये श्री सुरेन्द्रनाथ तथा भूपेन्द्रनाथ बसु विलायत जावे और वहां जाकर जनमत को जागृत करें। कहना न होगा कि देश को जिस नेत्रत्व की आवश्यकता थी, कांग्रेस उसकी पूर्ति नहीं कर सकी।

क्रान्तिकारी कार्य जारी

उधर बंगाल में बराबर क्रान्तिकारियों का कार्य जारी रहा। सरकारी खुफिया पुलिस भी नये नये षडयन्त्र चलाने लगी। कहीं डाके डाले जाते थे, तो कहीं बम पकड़े जाते थे, तो कहीं मुखबिर मारे जाते थे। जनता को क्रान्तिकारियों से सहानुभूति थी। मध्यवित्त श्रेणी के लोग इन्हें देवता समझते थे। १६१० के मार्च में हावड़ा षड्यन्त्र चला, जिसमें ४० अभियुक्त थे। इसी साल की जुलाई में

*इन घटनाओं का व्योरा 'भारत में सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास' में देखें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ढाका षड़यन्त्र चला, इसमें पुलिन दास भी फाँसे गये जो अभी कुछ महीने पहले नजरबन्दी से छूटे थे।

मार्ले-मिन्टो शासन सुधार

इसी साल मार्ले मिन्टो शासन-सुधार दिया गया। इसमें सन्देह नहीं कि यह पहला शासन-सुधार था, जिसमें चुनाव का सिद्धान्त किसी हद तक माना गया था। पर किसी भी क्षेत्र में चुने हुए सदस्यों की अधिक संख्या नहीं थी। भारतीय धारासभा के ६८ सदस्यों में ३६ सरकारी थे। इसी प्रकार सब प्रान्तीय धारासभाओं के सम्बन्ध में नियम बना। वोटर चार हिस्सों में बाँटे गये थे (१) साधारण (२) जमींदार (३) मुसलमान (४) विशेष स्वार्थ। जमीन्दार और विशेष स्वार्थ के क्षेत्र में हिन्दू वोटर में फर्क रक्खा गया। यदि एक मुसलमान ७५०) रु० मालगुजारी देता तो वह वोटर हो जाता था, पर एक हिन्दू को यह अधिकार तभी मिलता जब वह ७०००) देता। इसके अतिरिक्त एक मुसलमान इनकमटैक्स देते ही वोटर होता था, पर एक हिन्दू केवल इतने से ही वोटर नहीं हो सकता था। इस प्रकार हिन्दू-मुसलमान झगड़े को बढ़ाने का सब तरह से ढंग किया गया। इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य यह है कि भारत-सचिव मार्ले पृथक निर्वाचन के विरोधी थे, पर भारत की ब्रिटिश नौकरशाही इसके पक्ष में थी। इन्हीं लोगों ने साम्प्रदायिकतावादी मुसलमानों को भड़काया कि ये प्रथक निर्वाचन की मांग को पेश करते रहें। इसका जो विषमय परिणाम हुआ यह तो बाद के इतिहास से ज्ञात है। साम्राज्यवादी कूट नीतिज्ञ सफल रहे, इसमें सन्देह नहीं।

धारासभाओं का खोखलापन

एक तो धारासभाओं में सरकार की बहुसंख्या, तिस पर सदस्यों को यह अधिकार प्राप्त नहीं हुआ कि वे बजट पर वोट भी दें, हां बजट पर आलोचना का समय बढ़ा दिया गया। विधान में यह था कि बजट पर अर्थमन्त्री एक बयान देंगे, इस बयान के कुछ अंशों पर सदस्य प्रस्ताव रख सकते थे, पर बहुमत होने पर भी सरकार प्रस्ताव को मानने के लिये बाध्य नहीं थी। सदस्यों के प्रश्न सम्बन्धी अधिकार बढ़ा दिये गई। धारासभा के सभापति लाट साहब का होना निश्चित हुआ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस के नेताओं की असमर्थता

१६१० के २५ दिसम्बर को यह नया शासन-सुधार लागू हुआ। इसमें आश्चर्य नहीं कि कांग्रेस के नरम नेताओं ने भी इसे पसन्द नहीं किया, पर इसे पसन्द न करने पर भी वे और किसी तरीके के सम्बन्ध में सोच नहीं सकते थे। उनके पास बस एक ही अस्त्र था भिक्षापात्र और वे भिखमंगे के असीम धैर्य से शसस्त्र थे।

सरकार की नरम गरम नीति

सरकार किस प्रकार से अपनी नरम गरम नीति में विश्वास रखती थी इसका प्रमाण यह है कि शासन-सुधार की घोषणा के साथ ही लार्ड मिन्टो ने यह कहा था कि वे किसी प्रकार की ज्यादती का सहन नहीं करेंगे। बात यह है कि २४ दिसम्बर को पुलिस के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट शमसुल आलम क्रान्तिकारियों की गोली का शिकार होचुके थे। लाट साहब ने उसी का उल्लेख किया था। इस प्रकार शासन-सुधार भी दिया और धमकी भी दी। इसी प्रकार १६११ की ६ फरवरी को नज़रबन्द रिहा कर दिये गये, पर साथ ही सरकार ने उसी दिन संवादपत्रों का गला घोंटने के लिये एक प्रेस ऐक्ट पास कर लिया। अब छापाखाना खोलने के लिये ५००) रु० से २०००) रु० तक की जमानत जरूरी हुई। आपत्तिजनक चीज छपने पर १०००) से १००००) जुर्माना। फिर छापाखाना जब्ती की व्यवस्था की गई। इस प्रकार यह मानो स्पष्ट कर दिया गया कि शासन-सुधार मज़ाक मात्र था।

कांग्रेस का छब्बीसवां अधिवेशन

कांग्रेस का छब्बीसवाँ अधिवेशन १६१० में इलाहाबाद में सर विलियम वेडरबर्न की अध्यक्षता में हुआ। वेडरबर्न ने यह चेष्टा की कि गरम तथा नरम दल में सन्धि हो जाय, पर वे इस शुभ चेष्टा में सफल नहीं हुए। इस अधिवेशन में भी मार्ले मिन्टो सुधार की आलोचना हुई। प्रेस ऐक्ट की निन्दा की गई। बाद के इतिहास की दृष्टि से इस कांग्रेस की सब से बड़ी घटना यह है कि इन्हीं दिनों डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्यूनीसिपलिटी आदि स्थानीय स्वायत्तशासन की संस्थाओं में भी साम्प्रदायिक निर्वाचन के प्रवर्तन की बातचीत जारी थी, बाद के कायदे आज़म मुहम्मदअली जिन्ना ने एक प्रस्ताव में यह बताया कि ऐसा करना घातक होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रयत्न

मिस्टर वेडरबर्न ने इस बात का भी प्रयत्न किया कि हिन्दू और मुसलमान एक हो जायँ। इस उद्देश्य को लेकर १६११ की पहली जनवरी को उन्होंने हिन्दू तथा मुसलमान नेताओं की एक सम्मिलित बैठक बुलाई, पर इसमें कोई विशेष नतीजा नहीं निकला। जब तीसरी शक्ति वैमनस्य फैलाने के लिये सारी कुटनीति लगा रही थी, और कुछ लोग उसके हाथ में खेलने को तैयार थे, तो फिर मेल कैसे होता।

१६१२ के १२ दिसम्बर को दिल्ली में एक दरबार हुआ। इसमें सम्राट पंचम जार्ज तथा सम्राज्ञी मेरी आई थी। सम्राट ने वङ्गभङ्ग को रद्द कर दिया, पर साथ ही राजधानी कलकत्ते से हटाकर दिल्ली में लाने की घोषणा की गई। इस प्रकार वङ्गभङ्ग के आन्दोलन का उद्देश्य तो प्राप्त हो गया, पर इस कारण वह क्रान्तिकारी आन्दोलन जिस का सूत्रपात इसी बात को लेकर हुआ था नहीं रुका। अब तो वह आन्दोलन स्वतंत्रता के लिये आन्दोलन में परिणत हो चुका था। शायद शुरू में वङ्गभङ्ग न किया गया होता तो आन्दोलन यह रूप नहीं लेता, पर अब तो यह सरकार के हाथों से बाहर निकल चुका था।

कांग्रेस का सत्ताइसवां अधिवेशन

१६११ में कांग्रेस का सत्ताइसवां अधिवेशन कलकत्ते में हुआ। अब की बार मिस्टर रैमजे मैकडोवाल्ड सभापति होने वाले थे, पर इस बीच में उनकी स्त्री का देहान्त हो गया इस कारण वे न आ सके। इसलिये लखनऊ श्री विशन नारायण दर इस बार के सभापति हुए। दर साहब ने अपने भाषण में यह कहा कि अब भारत में थोड़े से संतुष्ट हो जाने वालों की जरूरत नहीं है, हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो देश के काम की धुन में अपने को भूल जांय। उन्होंने बहुत धीरे चलने के विरुद्ध चेतावनी देते हुए कहा कि इसमें खतरा यह है कि लोग कायर हो जायेंगे। श्री दर विचारों से मध्यममार्गी थे।

इस कांग्रेस में भी यथारीति दमन का प्रतिवाद किया गया, और शासन सुधार पर प्रस्ताव पास हुए।

हार्डिंज पर बम

दिल्ली में उठाकर राजधानी को जिन कारणों से लाया गया था,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनमें से एक यह भी था कि राजधानी को बंगाल से हटाया जाय क्योंकि बंगाल क्रान्तिकारियों का केन्द्र था, पर दिल्ली में आये अभी साल भर मुश्किल से गुजरा था कि वही रोग वहां भी दिखाई पड़ा। १६१२ के २३ दिसम्बर को लार्ड हार्डिंज राजाओं के ठाठ से हाथी पर जुलूस में दिल्ली में जा रहे थे कि उन पर बम गिरा। हार्डिंज बच गये, पर उनका अंगरक्षक मारा गया। हार्डिंज मूर्छित भर हुए। बम फेंकनेवाले पकड़े न जा सके। बाद को कुछ सुराग लगा, और दिल्ली षड्यंत्र चला। मास्टर अमीरचन्द, अवधबिहारी, बालमुकुन्द तथा वसन्तकुमार को फाँसी हो गई। पर इनका नेता रासबिहारी पुलिस के हाथ नहीं लगा, और अन्त तक फरार रहा।

कांग्रेस का अट्ठाइसवाँ अधिवेशन

१६१२ में कांग्रेस का अट्ठाइसवां अधिवेशन श्री आर एन मुधोलकर के सभापतित्व में बाँकीपुर में हुआ। इस कांग्रेस की स्वागत समिति के अध्यक्ष मजहरूल हक थे। उन्होंने अपने भाषण में बलकान युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नीति की निन्दा की। इन दिनों भारतीय मुसलमानों में इस कारण बड़ा क्षोभ फैला हुआ था। इसका प्रत्यक्ष नतीजा यह हुआ था कि हिन्दू मुसलमानों में जो वैमनस्य पैदा किया गया था, अब धारा उसके विरुद्ध जा रही थी।

अफ्रीका में सत्याग्रह

दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों पर जो अत्याचार हो रहे थे, उनकी निन्दा करते हुए कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया। इस बीच में श्री गोखले वहां हो आये थे, उन्होंने अपने निजी तजरबे से बतलाया कि वहां भारतीयों की कितनी घोर दुर्दशा है। महात्मा गान्धी के नेतृत्व में भारतीय वहां जेल भी जा चुके थे, और तरह तरह की तकलीफ उठा चुके थे। केवल गोरों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध संग्राम में ही दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों का यह युद्ध उल्लेखनीय नहीं है, बल्कि यह इस कारण भी महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक है कि अफ्रीका में ही महात्माजी उस अस्त्र को पैना कर रहे थे, जिसका प्रयोग वे भारत में करने वाले थे।

१६१२ में लीग

१६१२ में लीग की बैठक ढाके में हुई। नवाब सलीमुल्ला खां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सभापति थे। नवाब साहब ने अपने अभिभाषण में हिन्दुओं की शोरिशों और सरकार की 'बेमुरव्वतियों' का बड़े जोरदार शब्दों में चित्र खींचा। सरकार को बेमुरव्वत इस कारण कहा गया था कि लीग ने बङ्गभङ्ग का समर्थन किया था, पर उसे बिना पूछे ही सरकार ने बङ्गभङ्ग रद्द कर दिया। स्मरण रहे कि लीग उन दिनों मुसलमानों की बहुत कम संख्या का प्रतिनिधित्व करती थी। अब तक भारतीय मुसलमान या तो जगे ही नहीं थे, या जगे थे तो राष्ट्रीयतावादी थे।

कांग्रेस का उनतीसवां अधिवेशन

१९१२ में कांग्रेस का उनतीसवां अधिवेशन नबाव सैयद मुहम्मद बहादुर की अध्यक्षता में करांची में हुआ। इन्होंने अपने अभिभाषण में हिन्दू तथा मुसलमानों को एक होने के लिये कहा क्योंकि इसी में सबकी भलाई थी। सीतारमैया ने तो यहां तक लिखा है कि नबाव बहादुर ने इस अवसर पर जो बीज बोये, वे ही बाद को जाकर लखनऊ पैक्ट में पल्लवित हुए।

कनाडा में गोरों की ज्यादती

इस कांग्रेस में भी दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के साथ सहानुभूति के प्रस्ताव पास हुए। गोरों का यह अत्याचार तो जारी था ही, उधर कनाडा के गोरों ने यह सोला छोड़ा कि यदि भारतीय सीधे कनाडा पहुंचे तभी वे वहाँ उतरने दिये जायेंगे, नहीं तो वे लौटा दिये जायेंगे। इसका साफ मतलब यह था कि भारतीय वहाँ न उतरें। श्रम की प्रतियोगिता में गोरे भारतीयों के मुकाबले में ठहर नहीं सकते, तभी भारतीयों पर यह रोक लगाई गई। न नौ मन तेल जलेगा, न राधा नाचेगी। जहाज की ऐसी कोई लाइन ही नहीं थी जो भारत से सीधा कनाडा जावे। कनाडा में पाँच हजार के करीब सिक्ख थे। इनकी तरफ से इनकी बातों का प्रतिनिधित्व करने के लिये सरदार नन्दसिंह इस कांग्रेस में आये। उन्होंने कनाडा के गोरों की अमानुषिक बर्बरता की ओर ध्यान दिलाया। जरा बाद को बात पर जाते हुए यह बता दिया जाय कि कनाडा के सिख केवल कांग्रेस में प्रतिनिधि भेजकर चुप नहीं रहे।

कौमागाटामारू

बाद को पूर्व एशिया के विख्यात सिख धनी बाबा गुरदित्तसिंह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने कोमागाटामारू नामक एक जहाज को किराये पर ले लिया, और भारतीय सिख तथा मुसलमान यात्रियों को लेकर सीधा कनाडा पहुचे। यह २३ मई १९१४ की बात है। पर फिर भी कनाडा की सरकार ने यात्रियों को उतरने नहीं दिया। तब २ महीना कनाडा के उपकूल में पड़े रहने के बाद यह जहाज वापस हुआ, और १९ सितम्बर को बजबज पहुँचा। इस बीच में यात्रियों में कायापलट हो चुकी थी। अमेरिका की ग़दर पार्टी के प्रचार कार्य के कारण जहाज में लोग क्रान्तिकारी हो चुके थे। हर बन्दरगाह पर कुछ क्रान्तिकारी चढ़ते गये। सब चाहने लगे कि देश में लौट कर क्रान्ति करें बजबज में जब ये यात्री उतरे तो पुलिस ने उनकी तलाशी लेनी चाही। यात्रियों में कुछ सशस्त्र थे, इस पर लड़ाई हो गई जिसमें कई व्यक्ति मारे गये। ❀ बाबा गुरदितसिंह तथा २८ अन्य यात्री पुलिस को चकमा देकर भाग गये। बाबाजी सात साल तक फरार रहे, और असहयोग के युग में उन्होने पुलिस को आत्मसमर्पण कर दिया।

देशभक्ति में गोरों का द्वेष क्यों?

कनाडा की सरकार ने जो ज्यादती की, वह स्पष्ट है। तिसपर यहां की सरकार ने जले पर नमक छिड़का, निरीह भारतीयों का खून किया। यदि ऐसी बातों के कारण भारतीयों की देशभक्ति के साथ गोरों का विद्वेष या racial element आ गया तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? मैं तो बल्कि यही समझता हूँ कि भारतीयों ने संयम से काम लिया। गोरों की इतनी इतनी ज्यादतियों पर भी भारतीयां ने उनकी अच्छी चीज़ों को, जैसे साहित्य आदि को अपनाया और उससे अनुप्रेरणा ली यह उनके लिये बड़ी प्रशंसा की बात है, तथा उनके चरित्र की सहिष्णुता और प्रगतिशीलता को सूचित करता है।

❀ब्यौरा देखो—भारत में सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १८ :

१९१४-१८ की हलचलें

१९१४–१८ के महायुद्ध की पृष्ठभूमि

योरोप में लड़ाई के बादल बहुत दिनों से छा रहे थे। बात यह है कि यद्यपि जर्मन पूँजीवाद कार्यक्षेत्र में देर में उतरा था, पर उन्नीसवीं सदी के अन्त तक वह सब से आगे बढ़े हुए ब्रिटिश पूँजीवाद के साथ एक कतार में आ चुका था, और बीसवी सदी के प्रारंभ में वह यंत्रनिर्माण आदि जो सब से उन्नत उद्योगधंधे हैं, उनमें ब्रिटिश पूँजीवाद को हरा दिया था। अब तो वह अपने में इतनी ताकत का अनुभव कर रहा था कि उसने सीधा सीधा यह मांग रखना शुरू किया कि यदि दूसरों के पास उपनिवेश हैं, तो उसके पास भी उपनिवेश होने चाहिये। साथ ही वह नौसेना तथा रणतरियों के क्षेत्र में बढ़ने लगा। यह तनातनी बढ़ती गई, और एक बार १९०५ में फिर १९११ में लड़ाई बच गई, अन्त में जुलाई १९१४ में यह लड़ाई छिड़ ही गई। अस्ट्रिया हंगरी के युवराज फर्डिनेन्ड का सेराजेवो में मारा जाना तो एक उपलक्ष्य मात्र था।

लोकमान्य और महायुद्ध

जून १९१४ में ही लोकमान्य छूटे। ज्यों ही लड़ाई छिड़ी उन्होंने एक वक्तव्य में यह स्पष्ट कर दिया कि भारतवासियों को चाहिये कि लड़ाई में मदद दें। उन्होंने यह भी कहा कि यदि भारत को साम्राज्य के अन्तर्गत होमरूल मिल जाय तो उसी से वे सन्तुष्ट हो जायेंगे। कहना न होगा कि यह एक बहुत ही नरम बयान था, और इसके आधार पर नरम तथा गरम दल में एका हो सकता था, पर कुछ नरम नेता विशेषकर फीरोजशाह मेहता इस मिलन में बाधक हुए। और यह मिलन नहीं हो सका। अवश्य मैं यह नहीं कहता कि यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनो दलों में मिलन हो जाता, तो सरकार स्वराज्य दे देती, फिर भी एका का अपना मूल्य था ही।

कांग्रेस का तीसवाँ अधिवेशन

इसी वातावरण में कांग्रेस का तीसवां अधिवेशन १६१४ में मद्रास में श्री भूपेन्द्रनाथ बसु के सभापतित्व में हुआ। उन्होंने पुराने ढंग के एक व्याख्यान में यह कहा कि सरकार को चाहिये कि भारतीयों को औपनिवेशिक स्वराज्य दे दे। आश्चर्य है कि महायुद्ध छिड़ जाने पर भी कांग्रेस के नरम नेताओं ने कोई नया नारा नहीं दिया, यहां तक कि उन्हें एका की जरूरत भी नहीं ज्ञात हुई।

कांग्रेस के नेता परिस्थिति के अयोग्य

कांग्रेस के नरम तथा गरम दोनों तरह के नेताओं ने महायुद्ध के छिड़ने से अजीब शैथिल्य दिखलाया। सच तो यह है कि पुराने वक्तों में चाहे जो कुछ रहा हो, पर इस समय इन दोनो दलों में कोई विशेष फर्क नहीं रह गया था। अब चीजें बहुत कुछ व्यक्तिगत हो चली थी, और उनमें कोई तत्व नहीं था। पर देश में तथा देश के बाहर देशभक्तों का एक गिरोह था जो समझता था कि इस समय ब्रिटेन मुसीबत में फंसा हुआ है, इसी समय उस पर हमला बोल दिया जाय। ये लोग भारत के क्रान्तिकारी थे।

क्रान्तिकारी दल क्रियाशील

उत्तर भारत में रासबिहारी का दल काम कर रहा था। शचीन्द्र-नाथ सान्याल उनके दाहिने हाथ थे। मास्टर अमीरचन्द वगैरह इस दल के नेताओं को पहले ही फाँसी हो चुकी थी। बंगाल में अनुशीलन दल काम कर रहा था। कलकत्ते की तरफ यतीन्द्र मुकर्जी काम कर रहे थे। इन सब का अलग अलग इतिहास है। उधर भारत के बाहर गदर पार्टी बनी थी। पहले अमेरिका के भारतीयों ने अपनी हालत सुधारने के लिये जगह जगह पर अपने संगठन कायम किये थे, बाद को ये ही संगठन मिलकर 'हिन्दी ऐसोसिएशन' का जन्म हुआ। इसी हिन्दी एसोसियेशन का नाम बाद को गदर पार्टी पड़ा। इसके नेताओं में सोहनसिंह, केहरसिंह, लाला हरदयाल और काशीराम प्रमुख हैं। इस पार्टी का उद्देश्य आज़ादी और बराबरी था। बराबरी का उद्देश्य विशेषकर क्यों रक्खा गया यह स्पष्ट है। भारतियों और गोरों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बराबरी ही उनका विशेष उद्देश्य था। इन पर्टियों का इतिहास भारतीय इतिहास का एक अत्यन्त गौरवपूर्ण अध्याय है।

क्रान्तिकारियों का कार्यक्रम

इस इतिहास में हम केवल संक्षेप में इतना ही बता सकते हैं कि इन क्रान्तिकारियों ने किन तरीकों से काम किया। इन्होंने देश भर में गुप्त समितियाँ कायम करने की चेष्टा की, अस्त्रशस्त्रों का संग्रह किया, बम के कारखाने खोले, सेना के साथ सम्बन्ध कायम किया, चन्दा तथा डकैतियों के द्वारा धनसंग्रह किया, विदेशों में जाकर ब्रिटेन के शत्रुराष्ट्रों से सम्बन्ध कायम किया, क्रान्तिकारी साहित्य फैलाये यानी सभी सम्भव तरीकों से क्रान्ति की तैयारी की। उन्होंने कुछ आतंकवादी कार्य भी किये, पर यह उनके कार्यों का बहुत छोटा हिस्सा था। इस कारण उनको कहाँ तक आतंकवादी कहना उचित होगा, यह अनिवार्य है, फिर भी अन्य क्रान्तिकारियों से अलग करने के लिये मैंने इन्हें आतंकवादी क्रान्तिकारी कहा है, और जब तक हम समझ लेते हैं कि वे क्या थे, उन्हें ऐसा पुकारने में कोई हर्ज नहीं। आतंकवादी कार्य पार्टी के अस्तित्व को जाहिर करने के लिये या किसी भयंकर शत्रु को मारने के लिये ही किये गये। पामदत्त ऐसे कुर्सी तोड़ क्रान्तिकारी भले ही यह कह कर अपनी मूर्खता प्रमाणित करें कि इनका प्रयत्न बहुत छोटा था, पर इसका इतिहास सिडिशन कमेटी की रिपोर्ट में लिखा है।

कांग्रेस का इकत्तीसवां अधिवेशन

१९१६ में श्री गोखले तथा श्रीफीरोजशाह मेहता मर गये। इस साल इसी वातावरण में कांग्रेस का एकतीसवाँ अधिवेशन श्री सत्येन्द्र-प्रसन्नसिंह की अध्यक्षता में बम्बई में हुआ। श्री सिंह ने एक बहुत ही प्रतिक्रियावादी व्याख्यान दिया। पता नहीं ये सभापति कैसे बन गये। उनकी विद्वत्ता में कोई सन्देह नहीं था, पर देश के इस अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर पर नेतृत्व के सम्पूर्ण अयोग्य थे। अपने व्याख्यान में उन्होंने बतलाया कि भारतवर्ष एक ऐसे रोगी की भाँति है जिसके टूटे हुए अङ्गप्रत्यङ्ग स्प्लिंट में बंधे हुए हैं। दूसरे शब्दों में उन्होंने अभी भारत को स्वराज्य तथा स्वावलम्बन के अयोग्य बतलाया। अवश्य उन्होंने साथ ही में अब्राहमलिंकन का government of the people,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

for the people, and by the people यानी जनता द्वारा जनता के लिये जनता की सरकार का नारा भी दिया। पर यह महज बकवास थी इसमें सन्देह नहीं। इसमें आश्चर्य नहीं कि बाद में श्री सिंह बाद को बिल्कुल निष्क्रिय हो गये। बाद को ये महाशय लार्ड बनाकर बिहार उड़ीसा के लाट बनाये गये थे।

बम्बई कांग्रेस के प्रस्ताव

बम्बई कांग्रेस में २२५६ प्रतिनिधि आये थे। एक प्रस्ताव में राजभक्ति तथा अन्य प्रस्ताव में ब्रिटेन के युद्धोद्देश्यों में श्रद्धा प्रकट की गई। ब्रिटेन की नौसेना ने इस बीच में जो साहसपूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त की थीं, उनकी सराहना की गई। एक प्रस्ताव में लार्ड हार्डिञ्ज के सम्बन्ध में सरकार से यह प्रार्थना की गई कि उनके वायसराय होने का समय बढ़ा दिया जाय। कनाडा और दक्षिण अफ्रीका के भारतीय विरोधी कानूनों की निन्दा की गई। शासन सुधार की माँग की गई। बीसवें प्रस्ताव में सरकार से यह कहा गया कि सब प्रान्तों में इस्तमरारी बन्दोबस्त या कम से कम ६० साल के लिए बन्दोबस्त हो।

लीग और कांग्रेस

अब की बार बम्बई में ही लीग का भी अधिवेशन हुआ था। इससे लीग और कांग्रेस में सद्भाव का मौका लग गया। कांग्रेस के सभापति तथा प्रतिनिधिगण अपना सद्भाव व्यक्त करने के लिये लीग के अधिवेशन में पहुँचे और वहाँ इनका यथायोग्य स्वागत हुआ। कांग्रेस ने अपने उन्नीसवें प्रस्ताव में शासनसुधार की मांग करते हुए यह कहा कि मुस्लिम लीग के नेताओं के परामर्श से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी एक शासनसुधार की योजना तथा शिक्षात्मक और प्रचारात्मक कार्यक्रम की योजना बनावे। इस बीच में लीग ने अपने उद्देश्यों में कुछ परिवर्तन किया था, और जब ब्रिटेन के अधीन सेल्फ गवर्नमेन्ट प्राप्त करना उसके उद्देश्यों में हो गया था, यद्यपि मुसलमानों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति राजभक्ति का प्रचार अब भी उसके उद्देश्यों में था। सो तो इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने पहले ही प्रस्ताव में राजभक्ति व्यक्त किया था। इस प्रकार लीग और कांग्रेस में मेल का रास्ता खुल गया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गान्धीजी चुनाव हारे

बाद के इतिहास की दृष्टि से यह एक बहुत ही दिलचस्प बात है कि गान्धीजी १९१५ की कांग्रेस की विषय निर्धारिणी समिति में चुने नहीं जा सके, इस कारण सभापति श्री सिंह ने अपने विशेषाधिकार से उन्हें विषयनिर्धारिणी समिति में चुन दिया। इतिहास भी क्या २ परिहास करता है।

विधान में परिवर्तन

इस अधिवेशन में कांग्रेस के विधान में कुछ परिवर्तन हुआ। अब यह नियम हो गया कि कोई भी संस्था जो दो साल से या उससे अधिक समय की है कांग्रेस के लिये प्रतिनिधि चुन सकती है बशर्ते कि वह कांग्रेस के लक्ष्य आदि को मानती हो। इस बिधान सम्बन्धी परिवर्तन से गरम दल का कांग्रेस में लौटना आसान हो गया। संभव है महामति गोखले तथा श्री फीरोजशाह की मृत्यु से नरम दलवाले अपने को कुछ कमजोर भी पा रहे थे, इसी कारण वे कांग्रेस की जिम्मेदारी को दूसरों के साथ बटाना पसन्द कर रहे हों।

तिलक का कार्यक्रम

लोकमान्य तिलक समझते थे कि इस समय देश के लोगों की ओर से एक प्रतिनिधिमंडल इंगलैंड भेजा जाय तो अच्छा रहे। पर वे कांग्रेस के नेताओं को इस सम्बन्ध में राजी नहीं कर सके। अभी कांग्रेस में उनका स्थान नहीं था। हाँ नये विधान के अनुसार अगले साल वे कांग्रेस में जा सकते थे। इस बीच में उन्होंने अप्रैल में होमरूल लीग का संगठन किया। थोड़े ही दिन में होमरूल लीग की धूम मच गई, और इसके तत्वाधान में तिलक तथा उनके साथियों की विचारधारा का प्रचार होने लगा। यद्यपि लोकमान्य पहले के मुकाबिले में नरम पड़ चुके थे, फिर भी वे जन-सम्पर्क में विश्वास करते थे। उनकी राजनीति केवल भिक्षापात्र की नहीं थी, यद्यपि उसमें भिक्षापात्र का स्थान था।

श्रीमती बेसेन्ट

इस बीच में श्रीमती बेसेन्ट भारतीय राजनीति में आ चुकी थीं। वे एक श्रेष्ठ विदुषी थीं तथा बहुत ऊँचे दर्जे की बोलनेवाली थीं। यद्यपि वह अँग्रेज़ थी, पर भारतवर्ष को ही अपना देश समझती थीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह चाहती कि भारतवर्ष को होमरूल दिया जाय। इसी उद्देश्य के प्रचार के लिये श्रीमती बेसेन्ट ने १६१४ के २ जून को ही 'कामनवील' नाम से एक साप्ताहिक तथा १४ जुलाई से 'न्यू इंडिया' नामक पत्र प्रकाशित किया था। वह चाहती थी कि औपनिवेशिक स्वराज्य के ढाँचे पर भारतवर्ष को होमरूल मिले। उन्होंने भी १६१६ के सितम्बर में होमरूल लीग की स्थापना की।

ब्रिटिश सरकार का प्रहार

ब्रिटिश सरकार को न तो तिलक का ही कार्यक्रम पसंद था, न बेसेन्ट का। स्मरण रहे कि दोनों साम्राज्य के अन्तर्गत औपनिवेशिक स्वराज्य के ही समर्थक थे, फिर भी सरकार को ये पसन्द इसलिये नहीं था कि सभाओं तथा लेखों के द्वारा ये जनता में पहुँच रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने लड़ाई के बहाने १६१५ के ८ मार्च को डिफेन्स आफ इंडिया ऐक्ट बना लिया था। इस कानून में इंडिया शब्द फिजूल में ही था। यह कानून साम्राज्यवाद की रक्षा के लिये था, न कि भारत की रक्षा के लिये। मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली, अबुलकलाम आजाद तथा सैकड़ों की तादाद में क्रान्तिकारी इस ऐक्ट में नजरबन्द हो चुके थे। मुहम्मद अली सम्पादित 'कामरेड' पत्र भी बन्द कर दिया गया था। अब १६१६ के २६ मई को श्रीमती बेसन्ट सम्पादित न्यू इंडिया से दो हजार की जमानत माँगी गई। इस पर भी जब न्यू इंडिया ने अपना लहजा नहीं बदला, तो २८ अगस्त को यह जमानत की रक़म जब्त करली गई। लोकमान्य पर सरकार ने इससे भी भद्दा हमला किया, और उनसे एक मामूली बदमाश की तरह चालीस हजार रुपये की जमानत मुचलका मांगा गया कि वे नेकचलन रहेंगे। ख़ैरियत यह है कि बम्बई हाईकोर्ट ने इस हुक्म को मंसूख कर दिया।

सम्मिलित योजना

बम्बई कांग्रेस में लीग के साथ मिलकर जिस शासन-सुधार की योजना बनाना तय हुआ था, वह १७ नवम्बर १६१६ तक बन गई। अक्टूबर महीने में ही इसका खाका बड़े लाट की कौंसिल के १६ चुने हुए सदस्यों की दस्तखत से सरकार के सामने पेश हो चुका था। इसमें यह कहा गया था कि युद्ध के बाद भारतवर्ष को इस आधार पर जिम्मेदारी दी जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस का बत्तीसवाँ अधिवेशन

१९१६ में लखनऊ में कांग्रेस का जो बत्तीसवां अधिवेशन श्री अम्बिकाचरण मजूमदार के सभापतित्व में हुआ, वह बहुत ही महत्व-पूर्ण था। सूरत में गरम तथा नरम दल में जो विछोह हुआ था, वह अब जाकर मिलन में परिणत हुआ। इसके अतिरिक्त सब से बड़ी बात थी कि हिन्दू और मुसलमान नेता एक दिखाई दे रहे थे। गान्धीजी अब भारतवर्ष में आकर बस गये थे, और इस कांग्रेस में वे भी मौजूद थे। इस बार भी गान्धीजी को विषय निर्धारिणी समिति में जाने में दिक्कत पड़ती, पर लोकमान्य की बुद्धिमानी से वे फिर आ गये। अभी तक गान्धीजी दूसरों की दया पर कांग्रेस में थे। यह तब जब कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की इतनी सेवायें कर चुके थे। यह कोई अच्छी बात नहीं थी।

कांग्रेस-लीग पैक्ट

लखनऊ कांग्रेस की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि कांग्रेस तथा लीग ने एक सम्मिलित योजना तैयार की। इस योजना में पृथक निर्वाचन को स्वीकार कर सीटों को निम्नलिखित रूप से बाँटा गया था।

प्रान्त का नाम	मुसलमान
पंजाब	५० फी सदी
संयुक्तप्रान्त	३० ,, ,,
बंगाल	४० ,, ,,
बिहार	२५ ,, ,,
मध्यप्रान्त	१५ ,, ,,
मद्रास	१५ ,, ,,
बम्बई	३३.३ ,, ,,
केन्द्रीय कौंसिल	३३.३ ,, ,,

सब धारासभाओं के लिये यह मांग की गई थी कि केवल ⅘ सदस्य निर्वाचित हों, हां यह मांग रखी गयी थी कि जहां तक हो सके निर्वाचक-मंडल विस्तृत हो। यह मान लिया गया था कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों के अध्यक्ष क्रमशः बड़े लाट तथा वहां के स्थानीय लाट होंगे और उनकी कार्य-कारिणी समितियों के केवल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आधे सदस्य ही वहां की धारा सभा के चुने हुए सदस्यों के द्वारा चुने हुए होंगे। जिस दृष्टि से भी देखा जाय यह एक बहुत ही नरम मांग थी, पर जैसा कि हम देखेंगे सरकार इतना भी मानने के लिये तैयार नहीं थी।

अन्य ब्यौरे

लखनऊ कांग्रेस में अन्यान्य प्रस्तावों के साथ नजरबन्दी कानूनों के अपप्रयोग की निन्दा की गई और सरकार से यह सिफारिश की गई कि इङ्गलैंड में जिस प्रकार से इन कानूनों का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार से भारत में भी इन कानूनों का प्रयोग किया जाय। इस कांग्रेस में अपनी अधीन संस्थाओं को यह हिदायत दी कि वे सभायें कर स्वराज्य की पेश की हुई माँग के सम्बन्ध में जनमत तैयार करें। इस अधिवेशन में २३०१ प्रतिनिधि आये। इस कांग्रेस को स्वागत समिति के अध्यक्ष पण्डित जगतनारायण थे जो बाद को मैनपुरी तथा काकोरी षड्यंत्रों के सरकारी वकील थे।

असन्तोष की वृद्धि

श्रीमती बेसेन्ट ने अपनी लेखनी तथा वक्तृत्व शक्ति का इस खूबीसे उपयोग किया कि होमरूल आन्दोलन बहुत जोर पकड़ गया। लड़ाई के कारण भारतीयों की दशा यों ही खराब हो गई थी। विशेष कर मध्यवित्त श्रेणी बड़ी आफत में थी। १९१७ के प्रारम्भ में ही इस्लिंगटन कमीशन की रिपोर्ट निकली। इस कमीशन को नियुक्ति इस कारण हुई थी उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति के सम्बन्ध में जाँच करे, पर इसने इसकी अधिक संख्या ने इसके विपरीत यह लिख दिया कि नहीं जो है सो ठीक ही है। कमीशन के दो भारतीय सदस्यों ने इसके विरुद्ध अपना मत लिखा। कमीशन ने सिविल सर्विस की उम्र घटा कर १९ करने का प्रस्ताव किया।

राष्ट्रपति विलसन को पत्र

इस प्रकार के भेद भाव कारण होमरूल आन्दोलन का खूब प्रचार हुआ। भारतीय इस बात का अनुभव करने लगे कि होमरूल के बगैर भलाई नहीं। २४ जून १९१७ को होमरूल लीग के सभापति भूतपूर्व जस्टिस सर एस सुब्रह्मण्य ऐयर ने अमेरिका के राष्ट्रपति विलसन को एक पत्र लिखा जिसमें भारतीयों के ज़रिये होमरूल को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मांग की गई। मान्टेगू साहब उस समय तक भारत सचिव हो चुके थे। उन्होंने इस पत्र का उल्लेख करते हुए यह कहा कि इस प्रकार का पत्र disgraceful and improper अर्थात लज्जा जनक तथा अनुचित है। इस पर श्री ऐयर ने अपनी सर उपाधि त्याग दी।

होमरूल लीग पर प्रहार

इस बीच में क्रान्तिकारी चुप नहीं थे, पर अनेक कार्यों के पहले हम बता दें कि अन्य लोग क्या कर रहे थे। श्रीमती बेसेंट इन दिनों भारत के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक दौड़ रहीं थी। इन दिनों होमरूल लीग कांग्रेस से कहीं अधिक महत्वपूर्ण संस्था हो चुकी थी। सरकार को यह पसन्द नहीं था कि ये नेतागण इस प्रकार स्वतंत्रता के साथ घूमें फिरें। विशेष कर छात्र इन दिनों के आन्दोलन में बहुत भाग ले रहे थे। प्रान्तीय शिक्षा विभागों ने गश्ती चिट्ठियाँ निकाल कर छात्रों को होमरूल लीग की सभाओं में भाग लेने से रोका। तिलक और विपिन पाल पर यह रोक लगी कि वे दिल्ली और पंजाब में न घुसें, श्रीमती बेसेंट भी कई प्रान्तों में घुसने से रोक दी गईं। इन रोकों से नेताओं का प्रभाव और भी बढ़ा। अन्त तक ऐसा हुआ कि मद्रास के गवर्नर लार्ड पेन्टलैंन्ड ने धारा सभा की बैठक में श्रीमती बेसेंट को बुरा भला कहा। श्रीमती बेसेन्ट इस से दबने वाली थोड़े ही थी। उन्होंने 'न्यू इंडिया' में लेख पर लेख लिख कर लार्ड पेन्टलैंन्ड की धज्जियां उड़ा दीं। एक की जगह चार बातें सुनाईं। अब सरकार क्या करती? १६ जून को श्रीमती बेसेंट नजरबन्द कर ली गईं। इसी के साथ उनके अनुयायी बी० पी० वाडिया और जी० एस० अरंडेल नजरबन्द कर लिये गये।

दमन से आन्दोलन बढ़ा

इन तीन नेताओं की गिरफ्तारी से होमरूल आन्दोलन और बढ़ा। पी० के० तेलंग, ए० रंगास्वामी आयंगर, सी० पी० रामस्वामी ऐयर आदि नये नेता सामने आये। उन दिनों श्रीमती बेसेन्ट की गिरफ्तारी से क्या परिस्थिति उत्पन्न हुई, यह भारत सचिव मिस्टर मान्टेगू की डायरी से ज्ञात होता है। उन्होंने उन दिनों अपनी डायरी में लिखा कि 'श्रीमती बेसेन्ट को गिरफ्तार करने से वही हालत हुई जो शिवजी ने अपनी स्त्री को ५२ टुकड़ों में काटने के बाद देखा था। उन्होंने देखा कि अब ५२ स्त्रियां हो गईं।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सविनय अवज्ञा की बात

लोकमान्य तिलक ने फौरन श्रीमती बेसेन्ट के मामले को जोरों से उठाया। उन्होंने ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को इस बात के लिये मजबूर किया कि वह सरकार के निकट श्रीमती बेसेन्ट आदि की रिहाई की मांग करे। यह आन्दोलन यहां तक जोर पकड़ गया कि जिम्मेदार लोगों में सविनय अवज्ञा की बात चलने लगी। यहां तक कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के जुलाई अधिवेशन में यह बात चली। और प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों तथा मुस्लिम लीग की कौंसिल को यह हिदायत दी गई कि वे इस सम्बन्ध में छै हफ्ते के अन्दर रिपोर्ट दें। बाद को कई प्रान्तीय कमेटियों ने इसकी सिफारिश भी की। लोकमान्य ने यह भी प्रस्ताव रखा कि श्रीमती बेसेन्ट आगामी कांग्रेस की सभानेत्री हों। आन्दोलन के फलस्वरूप श्रीमती बेसेन्ट छूट भी गईं। पहले नरम दल के लोग श्रीमती बेसेन्ट को सभानेत्री बनाना नहीं चाहते थे; यहां तक कि कलकत्ते में दो स्वागत-समितियां भी बनाई गईं थीं, पर जनमत के सामने नरम दल की कुछ नहीं चली।

मान्टेगू द्वारा घोषणा

इधर जनता में इस बात पर बड़ा जोश था कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलेगा। सरकार ने इस बीच में दो काम किये। एक तो श्रीमती बेसेन्ट को छोड़ दिया, और दूसरा अगस्त घोषणा हुई। २० अगस्त को भारत-सचिव मिस्टर मान्टेगू ने निम्नलिखित घोषणा की—

"सम्राट की सरकार की राय में और भारत सरकार की राय भी यही है कि शासन-कार्य के प्रत्येक विभाग में भारतीयों का अधिकाधिक सहयोग हो तथा सामन्त शासन मूलक संस्थाओं का क्रमिक विकास हो जिस से कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत भारत में जिम्मेदार सरकार का विकास हो। इन दोनों सरकारों ने यह तय किया है जहां तक संभव हो शीघ्र इस दिशा में अच्छा क़दम उठाया जाय।" मिस्टर मान्टेगू ने यह दिखाने के लिये कि वे इस दिशा में कार्य करना चाहते हैं अब तक सम्राट के कमीशन में भारतीयों के लिये जाने में जो रोक थी उसे उठा लिया, साथ ही शासन सुधारों पर बहस जारी कर दी। श्री पामदत्त ने India To-day (p 276) में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह लिख मारा है कि यह घोषणा रूसी क्रान्ति के फलस्वरूप हुई, यह समझ में नहीं आता। सच तो यह है कि भारतीय अभी इसके बारे में जानते नहीं थे। और उनका मतलब किस क्रान्ति से है ? अभी तो साम्राज्यवादी क्रान्ति हुई ही नहीं थी।

श्रीमती बेसेन्ट में परिवर्तन

६ अक्टूबर को इलाहाबाद में मुस्लिम लीग की कौंसिल और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की जो सम्मिलित बैठक हुई, उसमें सविनय अवज्ञा वाला प्रस्ताव आया तो लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। स्मरण रहे कि कई प्रान्त से सविनय अवज्ञा का समर्थन आया था। स्वयं श्रीमती बेसेन्ट ने जिनसे लोग यह आशा लगाये हुए थे कि वह आयेंगी तो कोई जोरदार कार्यक्रम रखेंगी, सविनय अवज्ञा के प्रस्ताव का विरोध किया। कुछ महीनों की नजरबन्दी ने ही उन्हें बदल दिया। सच तो यह है जैसा कि मान्टेगू की डायरी से ज्ञात है वे किसी प्रकार की प्रतिज्ञा करके छूटी थी। इसके बाद से वह बराबर कुछ नरम पड़ती गई। श्रीमती बेसेन्ट ने फिर भी पहले जो कुछ किया था, उसके कारण उनका नाम भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा, पर उन्होंने जिस भारी काम को उठाया था, वे उसकी योग्या साबित न हो सकीं। और यह इतने अध्यात्मवाद के बावजूद ??

चम्पारन में महात्मा

इधर तो श्रीमती बेसेन्ट का सूर्यास्त हो रहा था, उधर चम्पारन में गान्धीजी नील के किसानों की तकलीफों को लेकर लड़ने में व्यस्त थे। भारतीय राजनैतिक गगन में एक नये सूर्य का उदय हो रहा था। पहले नील उत्पन्न करना किसानों के लिये बिल्कुल लाभप्रद नहीं था, पर किसान इसके लिये गोरे प्लैन्टरों द्वारा मजबूर किये जाते थे। पर जब से वैज्ञानिक तरीके से नील उत्पन्न होने लगा था, तब से नील का उत्पादन प्लैंटरों के लिये भी लाभजनक नहीं रह गया था। पर प्लैंटर इस हानि को उठाने के लिये तैयार नहीं थे। वे किसी न किसी तरह सारी हानि का बोझा किसानों पर डालना चाहते थे। इसके लिये वे जबरदस्ती किसानों से झूठे बांड लिखवाते थे। सरकार इन्हें मदद दे रही थी। फिर क्या था, पूरी नादिरशाही थी। गान्धीजी ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन्हीं किसानों के कार्य को उठा लिया था। वे अप्रैल १९१७ में मोतिहारी पहुँचकर खोज करने लगे कि किसानों की क्या तकलीफें हैं, तो सरकार ने उन पर १४४ लगाकर यह हुक्म दिया कि वे फौरन जिला छोड़कर चले जायँ। उन्होंने ऐसा करने से इन्कार किया। यही नहीं उन्होंने लड़ाई में मदद के सम्बन्ध में प्राप्त अपना कैसर-इ-हिन्द मेडिल लौटा दिया। सरकार ने अन्त में उनके विरुद्ध १४४ का मुकद्दमा लौटा लिया। इसके बाद उन्होंने बीस हजार किसानों के बयान लेकर उनकी मांग सरकार के सामने रखी। सरकार एक कमीशन बैठाने पर मजबूर हुई, और अन्त तक किसानों की बहुत सी माँगें मानी गईं। इस प्रकार गान्धीजी पहले-पहल भारतीय राजनीति में सताये हुए किसानों के मित्र रूप में आये।

दस लाख का दबाव

गान्धीजी ने जन-सम्पर्क के इसी तरीके को भारतीय राजनीति के बृहत्तर क्षेत्र के लिये प्रयोग करना चाहा। उन्होंने यह कहा कि कांग्रेस और लीग ने शासन-सुधार की जो योजना बनाई है, उसे केवल अँग्रेजी में सीमित न रखकर भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाय, उन्हें जनता तक पहुँचाया जाय। तदनुसार १९१७ के अन्त तक दस लाख लोगों की दस्तखत से यह प्रस्ताव रखा गया।

कलकत्ता कांग्रेस

१९१७ में कलकत्ता में कांग्रेस का तैंतीसवां अधिवेशन श्रीमती बेसेन्ट की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में ४९६७ प्रतिनिधि आये थे। इस कांग्रेस में भी राजभक्ति का प्रस्ताव हुआ। अन्य प्रस्ताव और और बार की तरह थे। कांग्रेस ने मान्टेगू घोषणा का स्वागत किया, पर यह कहा कि कब तक भारतीयों को पूरी जिम्मेदारी दी जायगी, यह बता दिया जाय। कांग्रेस ने यह कहा कि पहले क़दम के रूप में फौरन कांग्रेस और लीग ने मिलकर जो योजना बनाई है, उसे कार्यान्वित किया जाय। एक प्रस्ताव में आन्ध्र को पृथक प्रान्त बनाने की मांग की गई। इस कांग्रेस की फिर भी सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस अधिवेशन में झंडे का प्रश्न उठा। इससे पहिले ही होमरूल लीग ने तिरंगे को अपनाया था। कांग्रेस ने प्रस्ताव तो यह किया था कि होमरूल लीग के तिरंगे झंडे की जाँच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिये एक कमेटी बने, और यह कमेटी बनाई भी गई थी, पर इस कमेटी की कभी बैठक हुई ही नहीं, और होमरूल लीग का झंडा ही कांग्रेस का झंडा हो गया। हां बाद को इसमें चर्खा जोड़ा गया, और केसरिया की जगह लाल कर दिया गया।

नरमदली की डेढ़ ईंट की मस्जिद

१६१७ की कांग्रेस अन्तिम कांग्रेस थी जिसमें नरमदलवाले मौजूद थे। बाद को अर्थात कलकत्ता कांग्रेस के ऐन बाद नरमदल वाले अलग हो गये, और उन्होंने 'नेशनल लिबरल लीग' कायम कर ली। मजे की बात है कि नरमदलवालों ने यह जो अलग संस्था कायम की यह मिस्टर मान्टेगू के भड़काने पर किया था। मार्ले बहुत उदार समझे जाते थे, और लेखक रूप में वे थे भी उदार, पर उन्होंने भारत-सचिव की हैसियत से rally the moderates का नारा दिया था, उसी का अनुसरण कर दूसरे उदार भारत-सचिव मान्टेगू ने भारत के नरमदलवालों को यह सलाह दी थी कि नरमदलवाले कांग्रेस से अलग होकर अपनी एक अलग संस्था कायम करें। इस सम्बन्ध में मान्टेगू की डायरी का १२ दिसम्बर १६१७ को लिखा गया यह हिस्सा द्रष्टव्य है—

"हम लोगों ने माडरेट पार्टी के कायम करने के सम्बन्ध में आलोचना की। उन्होंने (भूपेन्द्र वसु और सत्येन्द्र सिंह) इस विषय में अपना आग्रह प्रदर्शित किया, समाचारपत्र प्रकाशन तथा अन्य विषयों पर भी वे बोले। मेरा विश्वास है कि उन्होंने जैसा कहा वैसा ही करेंगे।"

सुरेन्द्रनाथ नरम दल के नेता

सो तो वे बाद के पक्के साबित हुए, पर उन्होंने इस प्रकार आत्महत्या कर ली। मान्टेगू भड़काते या नहीं भड़काते, ये लोग आगे कांग्रेस में रह नहीं सकते थे क्योंकि कांग्रेस अब धीरे धीरे जनता की संग्रामकारी संस्था में परिणत होती जा रही थी। ये नरमदल वाले यह समझते थे कि वे केवल व्याख्यानों, डेपुटेशनों आदि के द्वारा इतिहास की सृष्टि कर रहे हैं। मजे की बात है कि श्री सी० वाई० चिन्तामणि ऐसे लोग इसी आधार पर राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास लिख गये हैं। इस सम्बन्ध में यह भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रष्टव्य है कि इस अवसर पर कभी के अत्यन्त उग्र नेता श्री सुरेन्द्र बनर्जी, वह सुरेन्द्र बनर्जी जो प्रथम कांग्रेस में उग्र होने के नाते बुलाये नहीं गये थे, और जो बहुत से असहत्वपूर्ण लोगों के कांग्रेस के सभापति हो जाने पर भी बहुत दिनों तक सभापति न हो सके थे, उन्हीं के नेतृत्व में प्रथम बार लिबरल मिले। इस प्रथम मिलन में ही उन्होंने मान्टेगू की तारीफ के पुल बाँध दिये।

श्रीमती बेसेंट का डूबता सूर्य

श्रीमती बेसेन्ट कांग्रेस की प्रथम प्रधान थी जिन्होंने यह दावा किया कि अधिवेशन का सभापति साल भर प्रधान होता है, और इन्होने इस दावे को कार्यरूप में इस अर्थ में परिणत किया कि वह देश भर में बराबर दौड़ती रही। पर जैसा कि मैं बता चुका वह समय के साथ क़दम मिलाकर आगे नहीं बढ़ सकी। वह कुछ दूर आगे बढ़कर पीछे हटने सी लगी। जैसा कि सीतारमैया ने लिखा है १९१८ के सितम्बर की स्पेशल कांग्रेस में भी बेसेन्ट का प्रभाव अधिक था, पर १९१८ के दिसम्बर में वह हतप्रभाव हो चुकी थीं।

कांग्रेस का विशेष अधिवेशन

२९ अगस्त १९१८ को कांग्रेस का एक विशेष आधिवेशन बम्बई में हसन इमाम साहब के सभापतित्व में हुआ। इसमें ३८४५ प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस कांग्रेस के सम्बन्ध में यह ख्याल था कि आपस का वैमनस्य बढ़ेगा क्योंकि शासनसुधार के प्रस्तावों के सम्बन्ध में लोगों के मत कुछ कुछ भिन्न थे। पर कांग्रेस के अधिवेशन में ऐसी कोई बात दृष्टिगोचर नहीं हुई। इस कांग्रेस ने शासन सुधार के प्रस्ताव को अनावश्यक और निराशाजनक करार दिया। इस समय तक रौलट कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, कांग्रेस ने इसकी निन्दा की।

रौलट कमेटी

१० दिसम्बर १९१७ को भारत सरकार ने एस० ए० टी० रौलाट के सभापतित्व में भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन की जाँच के लिये बैठाई गई थी। रौलट कमेटी ने एक सुबृहत रिपोर्ट पेश की। इसकी रिपोर्ट में वे सभी बातें आ गईं जो पुलिस को मालूम थीं। इस कमेटी ने भारतीयों की रही सही स्वतंत्रता पर पानी फेरकर बिलकुल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जारशाही चलानी चाही। इसे पता नहीं था कि रूस में इन्हीं दिनों जारशाही खतम की जा रही है। यद्यपि कुछ लोग भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रकोष्ठों में बटा रूप में देखना और दिखाना चाहते हैं, पर इस कमेटी की "सारी रिपोर्ट को पढ़ जाइये, आपको यह मिलेगा कि कमेटी के माननीय सदस्यों ने लोकमान्य तिलक तथा चाफेकर, विपिनचन्द्र पाल और खुदीराम को एक ही बाँट से तौला है, और हमेशा उनको एक ही दृष्टि से देखा, और उनके लिये एक ही दवा तजबीज की। सच्ची बात तो यह है कि उन्होंने एक को दूसरे का पूरक समझा है।"

रौलट रिपोर्ट

इस कमेटी ने जो सिफारिशें की उसके अनुसार जिस किसी व्यक्ति को जब चाहे तब नजरबन्द किया जा सकता था, गिरफ्तार किया जा सकता था, तलाशी ली जा सकती थी, जमानत माँगी जा सकती थी। संक्षेप में यह सामरिक क़ानून का ही एक रूप था। भारत-रक्षा क़ानून तो था ही, जिसके बूते पर सरकार ने १६०० नजरबन्द किये थे, फिर इसके सम्बन्ध में एक तसल्ली यह थी कि यह कानून युद्धकालीन था, पर रौलट रिपोर्ट तो शान्ति काल में प्रयोग में आनेवाला था। स्मरण रहे अभी केवल रिपोर्ट ही प्रकाशित हुई थी, पर लिफाफा देखकर मजमून भाँपा जा सकता था और कहा जा सकता था कि इस रिपोर्ट पर बिल कैसा रहेगा।

१९१८ की कांग्रेस

१९१८ में दिल्ली में पंडित मदनमोहन मालवीय के सभापतित्व में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। अधिवेशन के पहले ही महायुद्ध का अन्त हो चुका था। इस लड़ाई में एक लाख भारतीय सैनिक मारे गये थे और भारत का १००० करोड़ खर्च बैठा था। लड़ाई खतम होने का नतीजा यह हुआ था कि भारतीय नेता यह समझने लगे कि अब सरकार भारत के साथ किये गये वादों को पूरा करे। इस कांग्रेस में ४८६५ प्रतिनिधि थे। इस कांग्रेस में भी राजभक्ति का प्रस्ताव हुआ, तथा युद्ध की सफल समाप्ति पर सरकार को बधाई दी गई। युद्धकाल में मित्रपक्ष के नेताओं ने यह वादा किया था कि युद्धान्त होने पर प्रगतिशील जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार दिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जायगा। कांग्रेस ने तदनुसार यह मांग की कि भारतीयों को प्रगतिशील जाति मानकर उन्हें आत्मनिर्णय का अधिकार दिया जाय। कांग्रेस ने शान्ति कानफरेन्स के लिये लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी और मिस्टर हसन इमाम को चुना। इस कांग्रेस में प्रिन्स आफ वेल्स के आने का स्वागत किया गया।

युद्धकाल का क्रान्तिकारी आन्दोलन

अब हम संक्षेप में देखलें कि युद्धकाल में भारत के क्रान्तिकारी क्या कर रहे थे। कुछ तो पहले ही वता चुके बाक़ी दो एक महत्वपूर्ण बात बताते हैं। बनारस षड़यंत्र में अभियुक्त तो अधिक नहीं थे, पर इसमें लोगों पर यह अभियोग था कि उन्होने फौज में प्रचार किया। पिंगले तो मेरठ छावनी में ही पकड़े गये थे। उन्हें फाँसी हुई थी। लाहौर से लेकर मान्डले तक जहां भी षड़यंत्र चला क्रान्तिकारियों पर यह अभियोग था कि उन्होने षड़यंत्र किया। डकैतियों के भी बहुत से अभियोग थे। मैनपुरी षड़यंत्र में कई डाके अभियुक्तों पर लगाये गये थे। इसके नेता पंडित गेंदालाल दीक्षित थे।

मुसलमान क्रान्तिकारी

क्रान्तिकारी आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों ने भी हाथ बटाया। इस महायुद्ध में तुर्की ब्रिटेन के शत्रुपक्ष में था, इस कारण भारतीय मुसलमान इस युद्ध में अंग्रेजों के बहुत भक्त तथा अनुगत नहीं थे। यों तो कई तरह के सरकार बिरोधी कार्यों में मुसलमान शरीक रहे, पर रेशमी चिट्ठियों का षड़यंत्र इस सम्बन्ध में विशेष उल्लेखयोग्य है। मैं अपनी पुस्तक भारत में सशस्त्र क्रान्तिचेष्टा का रोमांचकारी इतिहास' से इसका संक्षिप्त विवरण देता हूँ। सन् १९१६ में सरकार को यह पता लगा कि भारतवर्ष के मुसलमान सरकार को उलटने के लिये एक बिराट षड़यंत्र कर रहे हैं। १९१५ के अगस्त में मौलवी ओबेदुल्ला सिन्धी तीन साथियों के साथ अर्थात ओबेदुल्ला फतहमुहम्मद और मुहम्मद अली के साथ सरहद पार कर गये। ओबेदुल्ला पहले सिक्ख थे, फिर मुसलमान होकर इस धर्म में दी जानेवाली ऊँची से ऊँची शिक्षा पाकर देवबंद में मौलवी हो गये थे। यहां पर ओबेदुल्ला ने यह सोचा कि क्यों न फिर से मुस्लिम राज्य हो। बहुत से लोग उनके प्रभाव में आ गये। यहां तक कि देवबंद के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब से बड़े अध्यापक मुहम्मद-हुसैन उनके प्रभाव में आ गये। पर इस कार्य के लिये बाहर जाना उचित समझा गया, तदनुसार मुहम्मद हुसैन और ओबेदुल्ला दोनों अलग अलग भारत के बाहर पहुँचे। ओबेदुल्ला बाहर जानेवाले भारतीय मुसलमानों में खूब प्रचार करते रहे। पर बाद को उन्हें पता लगा कि भारत के हिन्दू भी बाहर उसी काम को कर रहे हैं जिसे वे कर रहे थे। ऐसे लोगों में राजा महेन्द्रप्रताप, चम्पकरमण पिल्ले, हरदयाल, बरकतुल्ला, हेरम्बलाल गुप्त आदि थे। तब ओबेदुल्ला ने महेन्द्रप्रताप से मिलकर काबुल में भारत की एक अस्थायी सरकार बनाई। इसकी ओर से रूसी तुर्किस्तान तथा रूस के जार को पत्र भेजे गये थे जिनमें उनसे यह अनुरोध किया गया था कि वे इंगलैंड के साथ मित्रता न रक्खें। ये चिट्ठियां पोले रेशम पर बहुत साफ तरीके से लिखी गई थी। भारत में भी ऐसी चिट्ठियां आईं जिनमें अंग्रेजों के विरुद्ध जेहाद की घोषणा की गई थी। इसी कारण यह षड़यंत्र रेशमी चिट्ठियां का षड़यंत्र कहलाया।

अमेरिका और जर्मनी में क्रान्तिकारी

अब हम अपनी उसी पुस्तक से बहुत ही संक्षेप में विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारी जो कुछ कर रहे थे, और जिस प्रकार ब्रिटेन की शत्रु-शक्तियों से मिलकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ें उखाड़ रहे थे, उसका विवरण देंगे। कैलीफोर्निया, ओरिगन तथा वाशिंगटन के भारतीयों ने जर्मन एजेंटों तथा भारतीय क्रान्तिकारियों की मदद से युद्धकाल में एक षड़यंत्र किया था। इसी सम्बन्ध में अमेरिका की सरकार ने सैनफ्रांसिस्को षड़यंत्र चलाया। उधर जुरिख में चम्पकरमण पिल्ले ने काम किया। उन्होंने बर्लिन जाकर जर्मन जेनरल स्टाफ से मिलकर Indian National Party स्थापित की थी। इसके सदस्यों में लाला हरदयाल भी थे। इस कमेटी ने बरकतुल्ला को इस लिये नियुक्त किया कि जितने भी भारतीय फौजी जर्मनों के हाथ गिरफ्तार हों, उनको ब्रिटिश विरोधी बना दिया जाय, इस प्रकार आजाद हिन्द फौज की नींव पड़ी। इसी दल के हेरम्बलाल गुप्त कुछ दिनों तक अमेरिका में काम करते रहे, फिर इन पर यह भार दिया गया कि वे श्याम में जाय, और वहां अपने लोगों को शिक्षा देकर वर्मा पर धावा बोल दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एमडेन आदि के विफल प्रयास

भारतीय क्रान्तिकारी यह समझते थे कि क्रान्ति के लिये सब उपादान भारत में मौजूद हैं। केवल एक चीज नहीं है, वह है अस्त्र। तदनुसार क्रान्तिकारियों ने यह चेष्टा की कि विदेश से अस्त्र आवें। सच तो यह है कि जर्मनी ने भारत में क्रान्तिकारी आग भड़काने के लिये कई जहाज भेजे भी। मावेरिक, हेनरी एस० तथा ऐमडेन के नाम इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय हैं। योजनायें बहुत विराट थीं, भारतीय क्रान्तिकारियों ने इस सम्बन्ध कोई कष्ट उठा नहीं रखा, फिर भी वे सफल नहीं हो सके इसका मुख्य कारण है कि उनकी योजनायें त्रुटिपूर्ण निकलीं और अभी जनता तथा सेना उनके साथ नहीं हुई थी। इनके वीरतापूर्ण प्रयासों का इतिहास भारतीय इतिहास में एक निजी स्थान रखता है। हम इस इतिहास में उसको छूही सके, उस पर इस पुस्तक में विस्तार से कहने की गुंजाइश नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: १६ :

प्राक-असहयोग युग

रौलट बिल

१६१६ को फरवरी में रौलट बिल का रूप-रंग सामने आ गया। इसमें भारतीयों की रही सही नागरिक स्वाधीनता बिलकुल खतम कर दी गई थी। इस बिल के दो भाग थे। एक भाग तो सामयिक था, और भारत रक्षा कानून के चले जाने से सरकार की जो शक्ति छिन जाती थी, उसकी पूर्ति करता था, और दूसरा भाग स्थायी था, तथा प्रचलित फौजदारी कानून ऐसे परिवर्त्तन करता था जिससे जनता का हक घट कर पुलिस की मनमानी ताकत बढ़ती थी। सारे देश में इन बिलों के विरुद्ध बहुत प्रबल आन्दोलन हुआ, पर सरकार के रुख से ज्ञात हुआ कि यह बिल ऐक्ट हो कर रहेगा।

आशा भंग

कहां तो लोगों को लड़ाई की सफल समाप्ति पर क्या-क्या आशायें थीं, और कहां यह सुन्दर तोहफा मिला। हम यह तो बता चुके हैं कि लोकमान्य तिलक ने युद्ध के शुरू होते ही युद्ध में सहायता का नारा दिया था, पर हम यह बताना भूल गये कि महात्मा गांधी ने यही नारा दिया था। बूअर युद्ध में भी उन्होंने ब्रिटिश सरकार को मदद दी थी। वे बहुत सक्रिय रूप से रंगरूट भर्ती कराने में लगने ही वाले थे कि इतने में युद्ध की समाप्ति की घोषणा हो गई। केवल तिलक और गांधी ही नहीं, हम दिखा चुके कि कांग्रेस युद्ध में मित्र पक्ष की विजय चाहती थी। केवल क्रान्तिकारी दूसरे मार्ग को अपनाये हुए थे। कुछ भी हो इस बफादारी के फलस्वरूप नेताओं को बहुत आशायें थीं।

गांधीजी का महत्व

अब जो रोलट बिल आया तो लोग अपने को बहुत असहाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुभव करने लगे। पुराने नेता यहां तक कि लोकमान्य तिलक भी कुछ सलाह नहीं दे सके। ऐसे समय एक व्यक्ति नहीं घबड़ाया। उसके माथे पर शायद बल आये, या नहीं आये, पर उन्होंने अपने सामने एक मार्ग देखा। दूसरे नेताओं की तरह उन्होंने अपने को असहाय नहीं पाया। उन्होंने १ मार्च को यह घोषणा कर दी कि यदि यह बिल ऐक्ट में परिणत हो गया तो वे सत्याग्रह आन्दोलन शुरू करेंगे। उन्होंने इस उद्देश्य से जनमत को संगठित करने के लिये सारे देश का दौरा किया। हम पहले ही दिखा चुके हैं कि कई वर्षों से सविनय अवज्ञा का प्रस्ताव कांग्रेस के सामने था, इसलिये गांधीजी का यह नारा अप्रत्याशित नहीं था कि लोग चौंक कर इससे फिर जायँ। सच तो यह है कि लोग इसके लिये मानसिक रूप से एक हद तक तैयार थे। गांधीजी इस नारे के कारण ही एकाएक भारतीय गगन पर चमके ऐसा नहीं, वे सत्याग्रह के विशेषज्ञ समझे जाते थे। दक्षिण अफ्रीका में तो खैर उन्होंने सत्याग्रह किया ही था। पर अभी अभी उन्होंने चम्पारन तथा कैरा में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया था। उन्होंने केवल एक नये तरीके का नारा दिया ऐसी बात नहीं, वे इस नारे को देने के अधिकारी समझे गये, यही उनकी सहसा प्रसिद्धि का कारण है।

अन्य नेता दुबिधा में

इस प्रकार कांग्रेस के अन्दर जो धारा तीन साल पहले जारी हुई थी, और जिसे शासन सुधार का पत्थर अटकाकर बन्द कर दिया गया था, अब फिर जारी हो गई थी। गांधीजी की यह धमकी भारतीय खुली राजनीति में एक बिलकुल ही नई बात थी। सरकार ने तथा भारतीय नेताओं ने इसे गंभीरता के साथ लिया। नरम दल वाले नेताओं ने इस पर अपनी शंकायें जाहिर कीं। श्रीमती बेसेंट जो अब तक बहुत उग्रवादिनी समझी जाती थी इस प्रस्ताव के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने कहा कि सत्याग्रह छेड़ना माने ऐसी शक्तियों को मुक्त करना जिनकी बुराई की तकातें क्या हैं यह किसी को मालूम नहीं है। इस प्रकार कभी की क्रान्तिकारिणी नेत्री ने बिलकुल प्रतिक्रियावादी आवाज उठाई। नजर बन्दी से छूटने के बाद से ही श्रीमती इसी तरह की बातें करती जा रहीं थीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कानून भंग की प्रतिज्ञा

पर महात्माजी इससे पीछे नहीं हटे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि वे रौलट बिल को वापस कराने में समर्थ होंगे। १८ मार्च को यह बिल कानून बन गया। उसी दिन गांधीजी ने एक प्रतिज्ञा पत्र छपवाया जिसमें दस्तखत करने वाले को यह प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी—"चूँकि मैं इन बिलों का विरोधी हूँ, और उनको अन्यायपूर्ण, वैयक्तिक स्वतंत्रता के लिये घातक तथा मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात करने वाला समझता हूँ, इसलिये यदि ये बिल कानून बन गए, तो मैं इस कानून का तब तक लंघन करूंगा जब तक कि ये कानून रद्द न किये जायें। साथ ही प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं सत्य तथा अहिंसा का पालन करूँगा।"

दिल्ली में उपद्रव

जब कानून बन गया तो यह तय हुआ कि इसके विरोध में ३० मार्च को भारत व्यापी हड़ताल हो, और उस दिन लोग उपवास करें और प्रार्थना करें। यह द्रष्टव्य है कि यह दिवस धार्मिक व्रत के रूप में मनाया जाने वाला था। बाद को यह तारीख ३० मार्च से ६ अप्रैल कर दी गई, पर दिल्ली में इसका पता नहीं लगा, और कार्यक्रम के अनुसार जुलूस और हड़ताल हुई। गोलियाँ भी चलीं। जुलूस का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानंद कर रहे थे। कुछ गोरे सिपाहियों ने उनको धमकाया कि गोली मार देंगे, इस पर उन्होंने अपना सीना खोल कर तान दिया जिस से गोरे झेंप गये दिल्ली स्टेशन पर झगड़ा हो गया जिसमें ५ मारे गये और बीसियों घायल हो गये।

सफल आम हड़ताल

६ अप्रैल को सारे देश में हड़ताल रही। ऐसा कभी देखने में नहीं आया था। हिन्दुओं और मुसलमानों में सदभाव के अपूर्व दृश्य दिखाई पड़े। इन दिनों मुसलमानों का दिल भी सरकार से इस कारण खट्टा हो चुका था कि वे इस बात का अनुभव कर रहे थे कि लड़ाई में हार जाने के कारण खलीफतुल इस्लाम की दुर्गति होगी। हिन्दुओं ने भी इस कारण मुसलमानों से सहानुभूति दिखाई। स्मरण रहे सारे मेल का आधार धर्म था। पंजाब के गवर्नर सर माइकेल ओडायर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

युद्ध काल में जबर्दस्ती युद्ध के लिये चन्दा वसूल कर तथा रंगरूट भर्ती कर सरकार को जनता की घृणास्पद बना चुके थे इस कारण पंजाब में हड़ताल का विशेष जोर रहा।

अमृतसर १० अप्रैल

अमृतसर में अगली कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था, पर सर ओडायर इस बात पर तुले हुए थे कि पंजाब को खतरे से बाहर रक्खा जाय क्योंकि पंजाब सामरिक जातियों का घर था। और यहां राजनैतिक आन्दोलन का फैलना खतरे से खाली नहीं था। ओडायर को एक अनुप्रेरणा के मुहूर्त में ऐसा अनुभव हुआ कि ब्रिटिश साम्राज्य पर खतरा है, और उस विशेष समय पंजाब का गवर्नर होने के कारण उसे बचाने का भार उन पर है। बस उन्होंने दिल कड़ा करके काम शुरू कर दिया। १० अप्रैल को सवेरे अमृतसर कांग्रेस के संगठन कर्ता डाक्टर किचलू और सत्यपाल अमृतसर के जिला मजिस्ट्रेट के बंगले पर बुलाये गये, और वहीं से वे न मालूम कहां भेज दिये गये। यह खबर बात की बात में फैल गई, और बड़ी भीड़ आप से आप इकट्ठी होकर यह पूछ ने के लिये मैजिस्ट्रेट के बंगले पर पहुंची कि "वे कहां है ?", पर इस भीड़ को बंगले की तरफ जाने नहीं दिया गया। जनता पर गोली चलाई गई, तो वह लौटी, पर साथ ही अब की वार जो लोग काम आये थे, उनका जुलूस भी चला। जनता ने लौटते समय नेशनल बैंक में आग लगा दी, और उसके गोरे मैनेजर को मार डाल। सब समेत उस दिन पाँच अंग्रेज जान से मारे गये।

गान्धीजी को पंजाब निकाला

डा० सत्यपाल तथा स्वामी श्रद्धानन्द के निमन्त्रण पर गान्धीजी ८ अप्रैल को दिल्ली रवाना हो चुके थे। पर रास्ते में उनको यह हुक्म दिया गया कि वे पंजाब में प्रवेश न करें। गान्धीजी ने इस आदेश को मानने से इनकार किया, और वे पल्वल नामक एक स्टेशन से स्पेशल द्वारा १० अप्रैल को बम्बई वापस कर दिये गये।

कसूर में झगड़ा

कसूर में १२ अप्रैल को भीड़ ने स्टेशन को नुकसान पहुँचाया, सिग्नल और तार के खंभों को तोड़ा, कुछ गोरों पर हमला किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१८ अप्रैल को गुजरान वाला में भीड़ ने रेल के एक छोटे पुल को जला डाला। तार घर, डाक घर स्टेशन, डाक बँगला, कचहरी, गिर्जा आदि कई जगहों में आग लगा दी गई।

जलियानवाला बाग का हत्याकांड

सब से रोमांचकारी घटनायें तो अमृतसर में हुई। डा० सत्यपाल और किचलू की गिरफ्तारी पर वहाँ आम हड़ताल हुई। ११ अप्रैल कोशहर की परिस्थिति ऐसी खराब हो गई कि फौज बुलाली गई। १२ को सभाओं पर रोक लगाई गई, पर किसी को पता नहीं लगा। १३ को हिन्दुओं का नया साल शुरू होता था। उस दिन शाम के समय अमृतसर के जलियानवाला बाग में सभा हुई। जलियानवाला बाग चारों तरफ से घिरा हुआ है, एक तरफ एक पतला सा रास्ता है जिसमें होकर एक गाड़ी नहीं जा सकती। जिस समय यह स्थान भीड़ से खचाखच भर रहा था, और हंसराज नामक एक व्यक्ति का व्याख्यान हो रहा था, उस समय एक सेना की एक टुकड़ी के साथ जनरल डायर वहाँ आये, और लोगों पर बिना किसी चेतावनी के गोलियां चलाना शुरू किया। अब जनता भागती भी तो कैसे भागती। सेना उसी पतले प्रवेश पथ को लक्ष्य करके गोली चला रही थी। सरकारी हिसाब से भी ३७६ आदमी मारे गये थे, पर वास्तव में १००० आदमी मारे गये थे। कई हजार तो जख्मी होकर रात भर वहीं पड़े रहे। उन्हें किसी प्रकार न तो मदद दी गई, न देने दी गई।

डायरशाही का नंगा नाच

जनरल डायर की वीरता यहीं पर खतम नहीं हुई। वे तो विद्रोही पंजाबियों को एक सबक सिखाना चाहते थे। उन्होंने शहर की बिजली और पानी भी काट दिया। राहगीरों को पकड़ कर रास्ते पर छाती के बल चलने को मजबूर किया गया। दो आदमियों से अधिक के लिये एक साथ चलने की मनाही कर दी गई। लोगों को बिना किसी अपराध के खुली सड़क पर बेंत लगाये गये, रेल पर तीसरे दर्जे का टिकट बन्द कर दिया गया। साइकिलें छीन ली गईं। शहर में जगह जगह बेत लगाने की टिकटी लगा दी गई। फौजी अदालतों में लोगों को मनमानी सजा दी गई। ५१ आदमियों को तो फाँसी दे दी गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर माइकल ओडायर को जब जनरल डायर के इन अत्याचारों की बात मालूम हुई, तो उन्होंने उनके काले कारनामों का समर्थन करते हुए एक तार भेज दिया।

बाहरी दुनियां से अलग

लाहौर, अमृतसर कई जिलों में जलियान वाला के बाद ही मार्शल ला जारी कर दिया। बाहर के किसी नेता को आने नहीं दिया गया। सी० एफ० ऐन्ड्रूस ने इन स्थानों में जाने की चेष्टा की तो वे गिरफ्तार कर लिये गये। अखबारों में कुछ छापना मना था। महामना मालवीय इन स्थानों में जाने में सफल नहीं रहे। देश के लोगों को कुछ पता ही नहीं लगने दिया गया।

कशमकश

२० तथा २१ अप्रैल को पंजाब की घटनाओं पर जाँच की मांग तथा गान्धीजी तथा अन्य नेताओं के पंजाब प्रवेश पर रोक की निन्दा करने के लिये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। इस बैठक की ओर से श्री बिट्ठलभाई पटेल तथा नृसिंह चिन्तामणि केलकर इंगलैंड भेजे गये कि जाकर परिस्थिति की भयानकता समझा दे। भारत सरकार ने २१ अप्रैल को एक आर्डिनेन्स निकाल दिया जिसके द्वारा पंजाब सरकार को यह अधिकार दिया गया कि ३० मार्च के बाद किये गये किसी भी अपराध का फौजी अदालत में फैसला हो सके। घटनायें बहुत द्रुत गति से चल रही थी।

कांग्रेस का स्थान वही रहा

१६ तथा २० जुलाई को अ० भा० काँ० कमेटी की बैठक हुई, और पंजाब की खराब परिस्थिति होने पर भी अमृतसर में ही अगली कांग्रेस का होना निश्चित रहा।

सत्याग्रह स्थगित

२१ जुलाई को बम्बई से गांधीजी का एक वक्तव्य निकला, जिसमें उन्होंने अपने अद्भुत तरीके से यह कहा कि बम्बई के गवर्नर के जरिये उन्हें भारत सरकार की एक गंभीर चेतावनी मिली कि सविनय अवज्ञा के बहुत ही भयंकर नतीजे हो सकते हैं। इसके अलावा मित्रों ने भी उनपर यही प्रभाव डाला। कुछ गरम नेता भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बोले कि हिंसा हो सकती है। गाँधीजी ने बताया कि तरह तरह के कारणों से उन्होंने सामयिक रूप सत्याग्रह के प्रस्ताव को स्थगित करना ही उचित समझा है क्योंकि सरकार को परेशान करना सत्याग्रही का उद्देश्य नहीं है। गाँधीजी ने इस बयान में अपने अनुयायियों से यह कहा कि वे अब स्वदेशी तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के कार्यक्रम में लग जायँ।

श्रीमती बेसेंट से झपट

इन दिनों बहुत से नेता इंगलैण्ड में भारत के प्रतिनिधि बनकर गये थे। कांग्रेस के प्रतिनिधियों को इस कारण दिक्कत पड़ी कि श्रीमती बेसेंट उनके विरुद्ध प्रचार कर रही थी। श्रीमती बेसेंट का यह रुख बहुत अजीब रहा। पहले तो उन्होंने इस प्रकार के कुछ मन्तव्य किये थे कि रौलर बिल में ऐसी कौन सी बात है जिससे वास्तविक रूप से निर्दोष नागरिक को बुरा लगे। उन्होंने यह भी कहा कि जिस समय जनता उत्तेजित हो जाती है, और फौज पर ढेला वगैरह मारने लगती है उस समय यह वृथा की बात है कि सिपाहियों से कहा जाय कि वे कुछ छरें चला दें। विलायत में श्रीमती बेसेन्ट ने जो कुछ किया, उससे और भी रद्द हुई। यदि वे प्रतिज्ञा करके रिहा हुई थी, तो राजनीति से अलग हो जाती और थियोसोफी तथा धर्म लेकर रहती, पर नहीं वह राजनीति में टांग भी अड़ाना चाहती थी, और अपनी प्रतिज्ञा पर सच्ची बनी रहना चाहती थी। हद तो उस दिन हुई जब १९१९ के १५ अक्टूबर को लन्दन में मिस्टर लेंसबरी की अध्यक्षता में सभा हुई। इस सभा में भारतीयों के आत्मनिर्णय की मांग के समर्थन में पेश हुआ तो और भारतीय नेता तो यह कह रहे थे कि भारतवर्ष को पूर्ण जिम्मेदारी दी जाय, पर श्रीमती बेसेंट ने वहाँ मान्टेगू के प्रस्तावित शासन सुधार की तारीफ के पुल बाँध दिये। इस पर श्री विट्ठलभाई पटेल को यह कहना पड़ा कि वे भारतीय मत का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहीं हैं। श्री खापर्डे ने इस पर उन्हें पूतना की उपाधि ही दे डाली। इस में सन्देह नहीं कि श्रीमती बड़ी गलती की। यदि वे इस प्रकार की ग़लतियाँ न करतीं, और जिस वेग से नजरबन्दी के पहले भारतीय राजनैतिक रंगमंच पर आईं थीं, उसी वेग से बराबर कायम रहतीं, तो इसमें सन्देह नहीं कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारतीय उनकी गाँधीजी के समान कद्र करते, यों भी जनता की गाड़ी को चालू करने का श्रेय उन्हीं को रहेगा।

हत्याकांड पर जाँच

पंजाब के हत्याकाण्ड को लेकर इतने प्रबल आन्दोलन का सूत्रपात हुआ कि सरकार ने अक्टूबर में हंटर कमेटी नाम से एक जाँच कमीशन बैठाया। चित्तरंजनदास कांग्रेस की तरफ से इसके सामने आये, पर कुछ ऐसी दिक्कतें पेश आईं कि कांग्रेसवाले टिक न सके। काँग्रेस चाहती थी कि जाँच के सम्बन्ध में कुछ मार्शल ला कैदियों को पेश किया जाय, पर हंटर कमेटी इस पर राजी नहीं हुई। इसके बाद काँग्रेस ने अपनी अलग जाँच कमेटी बैठाई। गाँधीजी, पं० मोतीलाल, सी० आर० दास, फजलुलहक़, अब्बास तैयबजी इसके सदस्य हुए, और के सन्तानम इसके मन्त्री हुए। यथा समय दोनों जांच कमेटियों की रिपोर्ट निकली, लीपापोती करने पर भी हण्टर कमीशन के सामने जनरल डायर ने जो कुछ कहा था वही इस बात को प्रमाणित करने के लिये यथेष्ठ था कि यह हत्याकाण्ड पहले से सोचा हुआ था। उस समय तक भारत में आधुनिक काल ऐसा हत्याकाण्ड नहीं हुआ था। उस समय तक इस कारण लिखा कि १९४२ में ऐसे कई हत्याकाण्ड हुए।

शासन सुधार का स्वरूप

इसी युग में साम्राज्यवाद की सुपरिचित एक तरफ नरम तथा दूसरी तरफ गरम नीति के अनुसार शासन सुधार का काम भी चालू था। १९१९ के २३ दिसम्बर को पार्लियामेण्ट का यह शासन सुधार सम्बन्धी ऐक्ट भी पास हो गया। इस प्रस्ताव के द्वारा डायार्की या द्वैत-शासन का सूत्रपात हुआ। इस पद्धति का नाम द्वैत शासन इसलिए दिया गया कि स्थानीय स्वायत्त शासन, शिक्षा, स्वास्थ्य चुने हुए सदस्यों में से बने हुए मंत्रियों के हाथों में रहनेवाला था, तथा राजस्व, पुलिस, क़ानून पहले की तरह सरकार के हाथों में रहनेवाला था। कहना न होगा कि यह कोई होमरूल नहीं था, जो विषय मंत्रियों के हाथों में दिये भी गये थे, वे व्यर्थ इस कारण थे कि किसी भी योजना को कार्यान्वित करने के लिए पैसों की जरूरत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़ती, और राजस्व का सारा विभाग ही सरकार के हाथों में था। यह तो ऐसी व्यवस्था थी कि किसी को एक खजाना दे दिया जाय, पर उसकी चाबी अपने पास रख ली जाय, और उस पर अपना ही पहरा भी रखा जाय क्योंकि पुलिस और फौज भी तो सरकार के हाथों में रिजर्व थी।

अन्य ब्यौरे

भारत की करोड़ों जनता में केवल ५३ लाख व्यक्तियों को प्रान्तीय धारा सभाओं का वोटर बनाया गया। फिर भी पहली बार प्रत्यक्ष निर्वाचन का अधिकार मिला था। स्त्रियों को वोटाधिकार नहीं दिया गया, पर प्रान्तीय धारा सभाओं को यह अधिकार दिया गया कि वे चाहें तो अपने प्रान्त की स्त्रियों को वोटाधिकार दें। धारा सभाओं में पहली बार निर्वाचित सदस्यों का बहुमत हो गया, पर कौन्सिल आफ स्टेट में वोटरों की संख्या १८ हजार होने के कारण इसका कोई अर्थ नहीं रहा। फिर जहां निर्वाचित सदस्यों का बहुमत भी रहा, वहां भी इसका कोई विशेष अर्थ इसलिये नहीं रहा कि उनका बहुमत हो या न हो उन्हें कोई शासन सम्बन्धी हक़ प्राप्त नहीं हुआ। सदस्यों को बजट पर आलोचना का अधिकार रहा, पर सैनिक खर्च, सिविल सर्विस आदि की तनख्वाह, भत्ता, गिर्जा आदि पर उनको वोट देने का कोई अधिकार नहीं रहा, और जिन विषयों पर वोट का अधिकार भी रहा, सरकार उन विषयों में बहुमत को मानने के लिये मजबूर नहीं थी लाट साहबों को ६ महीने के लिये आर्डिनेन्स बनाने का अधिकार रहा। और इसके बाद फिर यदि आर्डिनेन्स धारा सभामें पेश होने पर पास नहीं होता,तो फिर आर्डिनेन्स कानून हो जाता। कांग्रेस लीग का साम्प्रदायिक निर्णय मान लिया गया, पर पंजाब में सिखों को, तथा सर्वत्र गोरों, अधगोरों तथा इसाइयों को भी पृथक निर्वाचन दिया गया। ये चेम्बर आफ प्रिंसेस का भी जन्म हुआ। स्पष्ट ही है कि कुछ नई नौकरियां उत्पन्न करने के अतिरिक्त इस से कोई वास्तविक अधिकार नहीं मिलता था।

कुछ कैदी छूटे

शासन-सुधार कानून बनते ही मार्शल लॉ के कैदी तथा अन्य कुछ राजनेतिक कैदी छूटे। क्रान्तिकारी कैदियों में बहुत थोड़े छूटे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनारस षड़ यंत्र के श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल विना शर्त छूटे, पर मैनपुरी षड़यंत्र के लोग शर्त देकर ही छूटे। पर कांग्रेस के नेता इस शासन सुधार से सन्तुष्ट नहीं थे। वे इससे कहीं अधिक की उम्मीद कर रहे थे।

शासन-सुधार पर लोकमान्य

लोकमान्य सर वैलेन्टाइन चिरौल के विरुद्ध मान हानि के मुकद्दमे के सिलसिले में इंगलैंड गये थे, पर वे अमृतसर कांग्रेस के पहले आ गये। इंगलैंड में रहते समय उन्होंने सुधार योजना के सम्बन्ध में यह वक्तव्य दिया था कि जितना मिला है, वे उसे ले लेंगे, और बाकी के लिये लड़ेंगे। पर भारत में आते ही शायद लोकमत तथा मित्रों का प्रभाव पड़ा, वे पलट गये। फिर भी जब ऐक्ट पास हुआ तो उन्होंने ब्रिटिश मंत्री मंडल को बधाइयां भेजी और Responsive cooperation का नारा दिया। इसके लिये लोकमान्य को दोष देना उचित न होगा क्योंकि उनके सामने कोई और रास्ता नहीं था। उन्होंने चाफेकर आदि को अनुप्रेरित किया था, बाद को खुदीराम के सम्बन्ध में उन्होंने प्रशंसात्मक लेख भी लिखे थे, पर या तो वे व्यवहारिक रूप से यह समझ चुके थे कि यह मार्ग फलोत्पादक नहीं है, या वे अपने को अब इस मार्ग के लिये उपयुक्त नहीं पाते थे।

अमृतसर कांग्रेस

इसी वातावरण में अमृतसर की कांग्रेस पं० मोतीलाल की अध्यक्षता में १९१९ में हुई। इस कांग्रेस में मतों का संघर्ष रहा। देशबन्धु दास ने कांग्रेस का मुख्य प्रस्ताव इन शब्दों में रखा -

१—कांग्रेस अपनी उस घोषणा की पुनरावृत्ति करती है कि भारत वर्ष पूर्ण स्वराज्य के उपयुक्त है, और इसके विरुद्ध कही गई बातों का प्रतिवाद करती है।

२—कांग्रेस दिल्ली में पास शुदा प्रस्ताव का समर्थन करती है, और समझती है कि सुधार की योजना ना काफी, असन्तोष जनक तथा निराशा प्रद है।

३—पालियामेन्ट को चाहिये कि जल्दी से जल्दी भारतवर्ष को आत्मनिर्णय के सिद्धान्तों के अनुसार पूर्ण स्वराज्य देने के लिये क़दम उठावे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गान्धीजी का संशोधन

गान्धीजी ने इस प्रस्ताव में आये हुए निराशाप्रद शब्दों को उड़ाते हुए यह पैरा जोड़ने का संशोधन रखा—

४—पार्लियामेन्ट द्वारा पूर्ण स्वराज्य प्रवर्तित होने तक कांग्रेस राज भक्ति पूर्ण तरीके से सम्राट की घोषणा में व्यक्त इन भावुकता पूर्ण शब्दों का स्वागत करती है—'हमारी प्रजा तथा कर्मचारियों में एक सामान्य उद्देश्य से काम करने से एक नवयुग का प्रभात हो', और यह विश्वास करती है कि जनता तथा कर्मचारी गण इस प्रकार सहयोग का शासन-सुधार को कार्यान्वित करेंगे कि जल्दी से जल्दी पूर्ण जिम्मेदार सरकार कायम हो। यह कांग्रेस इस सम्बन्ध में परिश्रम के कारण श्रीमान् मान्टेगू को धन्यवाद देती है।

कहना न होगा कि यह गान्धीजी का विशेष तरीका था। फिर भी लोगों ने इसे पसन्द नहीं किया। इस संशोधन से यह स्पष्ट था कि गान्धीजी को रातो रात भारत का जो नेतृत्व मिला था, वह उसे ग्रहण करने में हिचकिचा रहे थे।

संशोधन का अन्तिम रूप

कुछ भी हो अन्त तक संशोधन का यह रूप रहा।

४—जब तक पार्लियामेन्ट द्वारा पूर्ण स्वराज्य स्थापित नहीं होता, तब तक कांग्रेस को यह विश्वास है कि जनता शासन-सुधार को इस प्रकार कार्यान्वित करेगी जिससे पूर्ण जिम्मेदार सरकार जल्दी स्थापित हो, साथ ही यह कांग्रेस शासन-सुधार के सम्बन्ध में किये गये परिश्रम के लिये मिस्टर मान्टेगू को धन्यवाद देती है।

लीग साथ थी

मुस्लिम लीग ने भी इसी प्रकार का एक प्रस्ताव पास किया। अभी लीग और कांग्रेस साथ साथ चल रही थी।

प्रस्तावों का विश्लेषण

पंजाब हत्याकांड के बावजूद गान्धीजी का यह प्रस्ताव कुछ आश्चर्य जनक जरूर लगेगा, पर जब हम गहराई से सोचेंगे तो हमें ज्ञात होगा कि श्री दास का प्रस्ताव ऊपर से अधिक गरम होने पर भी उसका आधार भिक्षापात्र ही था। उसमें भी यही कहा गया था

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि पार्लियामेन्ट ऐसा करे। अपनी ताकत का कहीं बोध नहीं था। अवश्य अपने व्याख्यान में श्री दास ने यह कह दिया कि आवश्यकता पर बाधा पहुंचाई जायगी।

अमृतसर के अन्य-तथ्य

इस कांग्रेस में ६००० प्रतिनिधि आये थे, और ३६००० दर्शक थे। इस कांग्रेस के समय जनता में बहुत जोश था। पंजाब हत्याकांड के कारण जनता में यह जोश आया था। फिर भी जैसा कि हमने दिखाया यह कांग्रेस पुरानी लीक पर ही थी। इस कांग्रेसमें प्रिंस आफ वेल्सके आगमन का स्वागत किया गया। तुर्की और खिलाफत के प्रश्न पर कुछ ब्रिटिश मंत्रियोंके शत्रुतापूर्ण रुखकी निन्दा की गई। बायकाट का समर्थन हुआ। पंजाब हत्याकांड की तो खूब निन्दा की गई। इस कांग्रेस में अलीबन्धु आये और उनका खूब स्वागत हुआ।

हम इस सम्बन्ध में यह तो बताना भूल ही गये कि मार्शल ला के युग में कवीन्द्र रवीन्द्र ने प्रतिवाद स्वरूप अपनी सर उपाधि त्याग दी थी। पर अब की बार वे राजनीति में नहीं आये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २० :

असहयोग और चौरी चौरा

महायुद्ध और तुर्की

१९१४-१८ के महायुद्ध में तुर्की मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध लड़ा था। इससे भारत की मुस्लिम जनता में यथेष्ट असन्तोष था। इस असन्तोष का कहीं कोई सक्रिय नतीजा न हो, इस कारण इंगलैंड के प्रधान मन्त्री श्री लायड जार्ज ने भारत के मुसलमानों को यह पक्का वादा किया था कि वे किसी भी हालत में तुर्की पर कब्जा करने नहीं जा रहे थे। सरकार ने इधर तो यह वादा किया, उधर तुर्की के अधीन अरब जातियों में अपने दूत भेजकर विद्रोह की ज्वाला भड़काई। इस काम के लिये अंग्रेजों ने योग्य से योग्य आदमियों को भेजा और पानी की तरह धन बहाया। यह बात सच है कि अंग्रेज अपनी योजना में इस कारण सफल हुए कि तुर्की के अधीन देशों में कुछ भी स्वतन्त्रता नहीं थी, और ये जातियां स्वतन्त्र होना चाहती थी। भारतीय मुसलमान इन बातों से बेखबर थे, और उनकी यह मांग थी कि लड़ाई में हारने पर भी तुर्क साम्राज्य जैसे का तैसा बना रहे।

अजीब मांग

इसके साथ यह भी सही है कि अंग्रेजों ने युद्धकाल में अरब जातियों की स्वतन्त्रता के लिये अरब में षड्यन्त्र नहीं किया था। उनका उद्देश्य तो तुर्की सरकार को कमजोर करना तथा पेट्रोल प्राप्त करना था। यदि अंग्रेज स्वतन्त्रता को दो कौड़ी का भी महत्व देते, तो पहले भारत को स्वतन्त्र कर देते। फिर भी इस सम्बन्ध में भारतीय मुसलमानों की जो माँग थी, वह बहुत प्रतिक्रियावादी थी, और यह सूचित करती थी कि भारत के मुसलमान अर्थात् मध्यवित्त श्रेणी (क्योंकि यही एक सजग श्रेणी थी, तथा दूसरी श्रेणियों के जनमत को ढालती थी) बिलकुल पैनइस्लामिक या सर्वइस्लामवादी मनोवृत्ति से परिचालित हो रही थी। और इसे सर्व इस्लामवादी भी कैसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा जाय क्योंकि जो जातियां तुर्की के मध्ययुगीन साम्राज्यवादी जुऐं के नीचे पिस रहीं थीं, वे भी मुसलमान थी। यह सरासर बेवकूफी थी। हजारों मीलों की की दूरी पर बैठकर तथा स्थानीय परिस्थितियों से बिल्कुल अपरिचित होते हुए भारतीय मुसलमानों की तरफ से ऐसी मांग का किया जाना बहुत मूर्खतापूर्ण था। ऐसी मनोवृत्ति एक मजहबी पागलपन, इतिहास को अनभिज्ञता तथा जबर्दस्त मूर्खता के कारण पुष्ट हुई थी। उनकी यह मूर्खता भारतीय मुस्लिम इतिहास के सम्बन्ध में भी अज्ञान सूचित करता है। भारतवर्ष मुगलों पठानों, पठानों पठानों में हो चुकी, ऐसी हालत एक धर्म होने के कारण यह उम्मीद करना कि शाम, इराक, फिलिस्तीन आदि के लोग हजारों वर्ष तुर्कों के गुलाम बने रहें, यह बहुत अद्भुत बात थी।

बिलायत में प्रतिनिधि मण्डल

१६२० की फरवरी और मार्च में खिलाफत के प्रश्न ने और भी विराट रूप धारण किया। १६२० के मार्च में मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मण्डल इंगलैंड गया। इस प्रतिनिधि मण्डल के नेता मौलाना मुहम्मदअली इंगलैंड में मंत्रियों से मिले। यह प्रतिनिधि मण्डल शान्ति कानफरेन्स के सामने अपनी मांगें पेश करना चाहता था, पर उसे इसकी अनुमति नहीं प्राप्त हुई। १७ मार्च को उस समय तक प्रधान मन्त्री ने प्रतिनिधि मण्डल को उत्तर देते हुए कहा कि मुसलमान होने के कारण तुर्की के साथ कोई विशेष दुर्व्यवहार नहीं होगा, उसके साथ वही व्यवहार होगा जो ईसाई शत्रु राष्ट्रों के साथ होगा। उन्होंने यह साफ साफ कह दिया कि इस बात की कोई गारंटी नहीं दी जा सकती कि तुर्की साम्राज्य में जितने भी देश हैं, सभी उसी में रह जायेंगे। कहना न होगा कि ऐसा रहने में लायड जार्ज का यह उद्देश्य नहीं था कि अरब जातियों को आत्मनिर्णय मिले। उनका उद्देश्य तो तुर्कों से बदला लेना, तुर्की राष्ट्र का अंगभंग करना तथा उस अंगभंग अपने देश के साम्राज्यवादी हितों की रक्षा करना था। बाद को तुर्की साम्राज्य के अन्तर्गत देशों में जिस प्रकार से जो जो बातें हुईं, उससे यह साफ हो जाता है कि इंगलैन्ड का असली उद्देश्य साम्राज्यवादी था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६ मार्च की हड़ताल

१६ मार्च इस बात के नियत हुआ कि उस दिन देश के सारे मुसलमान उपवास रखें, और ईश्वर से प्रार्थना करें। ऐसे समय में गान्धीजी आगे आये, और उन्होंने कहा कि यदि तुर्की के साथ सुलह भारतवर्ष के मुसलमानों की भावना के अनुसार नहीं होती, तो वे असहयोग आन्दोलन चलायेंगे। मौलाना शौकतअली ने १६ मार्च को सर्वत्र पास किये जाने के लिये एक प्रस्ताव बनाया कि यदि सुलह की शर्तें भारत के मुसलमानों को नापसन्द हुई तो मुसलमान इस बात के लिये मजबूर हो जायेंगे कि वे ब्रिटिश सिंहासन से अपना राजभक्तिपूर्ण सम्बन्ध तोड़ दें। उस समय आम जनता में यह भावना इतने जबर्दस्त तरीके से फैल रही थी कि अंग्रेज सरकार को यह डर हुआ कि कहीं सरकारी अफसर भी इस आन्दोलन में बहने न लगें, इसलिये उन्होंने एक हुक्मनामा निकाला जिसके अनुसार १६ मार्च के प्रदर्शनों में सरकारी नौकरों को भाग लेने से मना कर दिया गया था।

महात्माजी का वक्तव्य

महात्माजी ने इस पर एक लम्बा बयान दिया, जिसमें उन्होंने कहा—"मुसलमानों की भावनाओं को कुचलने के लिये जो कोशिश की जा रही है, उसको हम मान नहीं सकते, और जो लोग सरकारी तमग़ा, उपाधि आदि पाये हुए हैं, उनसे अनुरोध है कि वे इसके विरोध में उन्हें त्याग दें, और सरकार में जितने लोग नौकरी पर हैं, वे उसे त्याग दें। असहयोग से हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि हम किसी व्यक्ति से असहयोग करें। जो लोग असहयोग नहीं करेंगे, उन्हें समाज से निकाल ही दिया जाय, इसका मैं समर्थन नहीं करता। असहयोग का अर्थ है इच्छापूर्वक सहयोग वापस लेना। ऐसे असहयोग में ही जनता की सच्ची भावनाओं तथा असन्तोष का पता लग सकता है। असहयोग पहला क़दम है आखिरी नहीं। हम धीरे धीरे असहयोग करें जिससे कि हमें पीछे न हटना पड़े, और अत्यन्त गरमीगरमा की हालत में भी हम अपने पर काबू रखें।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खतरे का ज्ञान नहीं

इस प्रकार गान्धीजी ने खिलाभत के प्रश्न पर क्षुब्ध मुस्लिम भावनाओं का राजनैतिक इस्तैमाल करना चाहा, पर यह कहाँ तक सही नीति थी इसमें सन्देह है। मुसलमानों की कथित धार्मिक विपत्ति में उन्हें सहायता पहुँचाने तथा उनको काम में लाने की जल्दी में गान्धीजी ने यह नहीं देखा कि खिलाफत आन्दोलन की बुनियादी माँगें सही हैं या ग़लत, व्यवहारिक रूप से कुछ होने जाने वाला है या नहीं, तथा इस प्रकार धार्मिक ज़रिये से मुसलमानों के मन तक पहुँचने के क्या खतरे हैं। इस आन्दोलन में कई अवास्तविकतायें थीं। एक तो यह थी कि लोग यह माँग कर रहे थे कि तुर्की साम्राज्य हार गया है, फिर भी उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाय मानों वह जीत गया था।

लोकमान्य और खिलाफत

लोकमान्य तिलक अभी तक जीवित थे। उन्होंने यह वक्तव्य दिया कि "हमारा दल खिलाफत के प्रश्न का वही समाधान चाहता है जो मुस्लिम विश्वास तथा कुरान के अनुसार हो।" कहना न होगा कि लोकमान्य ने ऐसा वक्तव्य इस कारण दिया कि वे मुसलमानों को खुश करना चाहते थे।

ज्वार के साथ आये, भाटे के साथ गये

इस प्रकार उनके उद्देश्य सम्पूर्ण रूप से अच्छे होते हुए भी एक बहुत ही बड़ा ग़लत कदम उठा, और इससे मुसलमानों में सर्व-इस्लामवाद तथा साम्प्रदायिकता के बढ़ने की परिस्थितियाँ पुष्ट हुई। जर्मन और तुर्की साम्राज्य दोनों १९१४-१८ के महायुद्ध में परास्त हो गये थे, और दोनों का अंगभंग हुआ, पर भारतीय मुसलमानों ने, लोकमान्य तथा महात्मा ने तुर्की के अंगभंग के विरोध में नारा दिया। इस पक्षपात का इससे बढ़कर क्या कारण हो सकता था कि इसके पीछे केवल यही कारण था कि तुर्कीगण यहाँ के मुसलमानों के धर्म भाई हैं। यह जरूर है कि गान्धीजी खिलाफत की कुञ्जी से ही उन दिनों भारतीय मुसलमानों के हृदय में घुसने में समर्थ हुए, पर इसका अन्तिम नतीजा यह हुआ कि ज्योंही तुर्की के सुयोग्य नेता कमालपाशा के ही हाथों से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खिलाफत समाप्त हो गई, त्योंही ये सारे के सारे मुसलमान जो ज्वार के साथ आये थे, भाटे के साथ गये। यह सच है कि कुछ मुसलमान कांग्रेस में ज़रूर टिक गये, पर वे सुलझे हुए लोग थे, खिलाफत आन्दोलन चाहे उठाया जाता या न जाता वे राष्ट्रीय आन्दोलन में अवश्य आते।

सेब्रस सन्धि पत्र

जिस समय भारत से भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल अभी योरोप में ही था, उसी समय सेब्रस संधिपत्र १४ मई १६२० को प्रकाशित हुआ। यह सन्धिपत्र क्या था, सीधे सीधे तुर्कों से बदला लिया गया था। इसके अनुसार एक तरह से सुलतान कुस्तुन्तुनियाँ में नज़रबन्द हो गये। अरब, फिलिस्तीन, शाम, इराक मैंडेट में आ गये, अर्थात् अंग्रेजों और फ्रेंचों में बट गये। वायसराय को यह डर था कि इन शर्तों के प्रकाशन से भारतीय मुसलमानों में असन्तोष बढ़ेगा, इसलिये यह सन्धिपत्र वायसराय के सन्देश के साथ प्रकाशित हुए जिसमें यह बताया गया कि इन शर्तों के उद्देश्य अच्छे हैं।

पंजाब पर रिपोर्ट

इस सन्धिपत्र के प्रकाशन से देश में बड़ा असन्तोष फैला। पंजाब पर कांग्रेस की सब-कमेटी की रिपोर्ट २५ मार्च को ही निकल चुकी थी। इस रिपोर्ट से यह साबित हो गया कि सरासर सरकार की ज्यादती से ही हत्याकांड हुआ था। २८ मई को सरकारी हंटर-कमेटी की रिपोर्ट निकली। चमनलाल शीतलवाड़ और जगत-नारायणलाल ने बहुसंख्यक सदस्यों से अलग रिपोर्ट दी जिसमें उन्होंने यह नहीं माना कि गोलियाँ चलाने का कोई कारण था। हंटर कमेटी के बहुसंख्यक सदस्य फिर भी यह मानने के लिये बाध्य हुए कि न तो कोई आम विद्रोह हो रहा था और न इसका सम्बन्ध अफगान युद्ध से था। इन सदस्यों ने यह भी माना कि उतनी देर तक गोलियाँ चलाने का कोई कारण नहीं था।

पार्लियामेण्ट और पंजाब हत्याकांड

इसके बाद ८ जुलाई को जब हाउस ऑफ कामन्स में पंजाब हत्याकांड पर आलोचना हुई तो मिस्टर मांटेगू ने कहा कि जनरल डायर बहुत गलती पर थे, और उन्होंने बहुत ग़लत फैसला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(grave error of judgment) किया। यह विचार हुआ कि उन्हें आगे भारत सरकार किसी पद पर नियुक्त न करे। एक हज़ार आदमी को मार डाला, और यह सज़ा ! यह खूब रहा ! पर हाउस ऑफ लॉर्डस में यह विषय आलोचनार्थ गया तो लॉर्डस ने ८६ के विरुद्ध १२६ वोट से हाउस ऑफ कॉमन्स की टीका पर खेद प्रकट किया, और डायर ओडायर की सराहना की। यही नहीं अंग्रेज औरतों ने चन्दा करके डायर को तीन लाख की थैली दी।

मुसलमान और असहयोग

इस प्रकार की बातों से भारतीयों में असन्तोष बढ़ता ही गया। यह स्पष्ट था कि अंग्रेजों से न्याय की आशा नहीं की जा सकती थी। २६ फरवरी १६२० को कलकत्ते में प्रान्तीय खिलाफत कान्फ्रेंस में सभापति के आसन से मौलाना अबुलकलाम ने पहिले-पहल मुसलमानों के सामने असहयोग का कार्यक्रम रखा था। गान्धीजी ने जब खिलाफत का समर्थन किया तो इस आन्दोलन की संभावना और भी बढ़ गई।

मुहम्मदअली का ग़लत जोश

इसी बीच में मौलाना मुहम्मदअली ने जोश में आकर यह कह मारा कि यदि अफगानिस्तान हिन्दुस्तान पर हमला करे तो भारतीय मुसलमान उसका साथ देंगे। कहना न होगा कि यह उक्ति बहुत गुमराहकुन थी। और सर्व-इस्लामी मनोवृत्ति को सूचित करती थी। इस बयान से हिन्दुओं के मन में सन्देह का उदय हुआ। खैरियत यह है कि मौलाना अबुलकलाम ने एक दूसरा वक्तव्य देकर परिस्थिति सम्हाल ली। उन्होंने कहा कि यदि हिन्दुस्तान स्वतंत्र हो, और उसमें ऐसी शासन-पद्धति हो जिसमें मुसलमानों को और हिन्दुओं को बराबर हक मिले हुए हों तो इस्लाम की शरियत का यह हुक्म है कि मुसलमान अपने मुल्क की हिफाजत करे चाहे स्वयं खलीफा ही ने उस मुल्क पर हमला किया हो।

असहयोग की तैयारी

२ जून को इलाहाबाद में सब दलों के नेताओं के सामने असहयोग का प्रश्न रखा गया। इस कान्फ्रेंस में असहयोग का प्रस्ताव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पास हो गया। और एक कमेटी मुकर्रर हुई जिसके सदस्य गान्धीजी तथा कुछ मुसलमान नेता हुए। इस कमेटी पर यह भार सौंपा गया कि वह असहयोग का कार्यक्रम बनाये। इस कमेटी ने जो कार्यक्रम बनाया, उसमें कालेज, स्कूल, अदालतों के बायकाट का नारा भी दिया गया।

समय परिपक्व

असहयोग के लिये समय बिल्कुल परिपक्व हो गया था। एक योग्य राजनीतिज्ञ तथा सेनापति की तरह गान्धीजी ने अधिक से अधिक उपादान को अपने साथ ले लिया था। इस प्रकार गान्धीजी केवल एक नये तरीके के विशेषज्ञ तथा प्रस्तावक के रूप में ही सामने नहीं आये, बल्कि वे एक बहुत अच्छे संगठनकर्त्ता तथा नीतिज्ञ साबित हुए। अवश्य इन बातों के साथ यह स्मरण रहे कि पंजाब हत्याकाण्ड, खिलाफत आदि के कारण ही गान्धीजी को यह मौका मिला। यदि ये परिस्थितियाँ न होतीं, तो भले ही वे दो चार चम्पारन, कैरा में अपने प्रयोग करते, पर उन्हें अपना जौहर दिखाने के लिये इतना बड़ा कैनवास न मिल पाता। जो शासन-सुधार दिया जा रहा था, वह बहुत कम था, लड़ाई के कारण मध्यवित्त श्रेणी की हालत बुरी हो रही थी, ये कारण सहायक कारण थे।

लोकमान्य का देहान्त

लोकमान्य तिलक ने भी असहयोग के प्रस्ताव का समर्थन किया था, पर ३१ जुलाई की रात को एक बजकर ४५ मिनट पर वे चल बसे। मानो इस प्रकार उन्होंने गान्धीजी के कन्धों पर भारत का नेतृत्व छोड़ दिया। पहली अगस्त को बजाब्ता असहयोग होने वाला था, और ३१ जुलाई को लोकमान्य चल बसे।

मुहाजरिन

इस बीच में कुछ मुसलमान हिजरत करके अफगानिस्तान जाने लगे। मुस्लिम शास्त्रों में एक ऐसी व्यवस्था है कि जब कोई राजा अन्यायी हो तो उसके राज्य को छोड़कर चला जाना चाहिये। सिन्ध में ही पहले पहल इस आन्दोलन का सूत्रपात हुआ, पर धीरे धीरे यह आन्दोलन फैला, और १८००० मुसलमानों ने अफगानिस्तान की राह ली। अफगानिस्तान ने इन हिजरत करनेवालों का स्वागत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं किया, इसके विपरीत उनमें से कुछ गिरफ्तार कर लिये गये, और उन्हें तरह तरह की तकलीफें दी गईं। ये हिजरत करने वाले यह समझते थे कि ये जहाँ इस्लामी मुल्क में पहुँच गये कि इनका बड़े तपाक से स्वागत होगा, पर इसके विपरीत बहुत से ब्रिटिश गुप्तचर समझे गये। अफगानिस्तान से अपनी आबादी ही नहीं सपरती थी, वह बाहर के लोगों को कैसे रखता। इस हिजरत से फिर भी कुछ फायदे हुए। जो लोग इस धोखे में थे कि शास्त्रों में चाहे जो कुछ भी लिखा हो, पर प्रत्येक मुल्क का आदमी अपने ही आदमी को चाहता है और धर्मभाई होने के कुछ विशेष फायदे नहीं हैं। उन्हें यह भी ज्ञात हो गया कि बाहर के मुसलमानों को यहाँ के मुसलमानों से कोई सहानुभूति नहीं है। कुछ हिजरती मुसलमान तो भटककर रूस चले गये, वहाँ पर उन पर यह प्रभाव पड़ा कि वे कट्टर मुसलमान के बजाय धर्म-विरोधी समाजवादी होकर लौटे।

युवराज डर गये

अगस्त में जिस समय केन्द्रीय धारासभा का अधिवेशन हो रहा था, उस समय कुछ सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया। इस प्रकार असहयोग का सूत्रपात हो ही गया। वायसराय ने इस पर चिढ़कर कहा कि असहयोग की योजना बहुत मूर्खतापूर्ण है। पहली अगस्त को असहयोग घोषित कर दिया गया। इसका पहला असर यह हुआ कि युवराज भारत आने वाले थे, सो उन्होंने अनिश्चित काल के लिये अपनी यात्रा स्थगित कर दी। उनकी जगह पर ड्यूक ऑफ कानट आने वाले हुए।

कांग्रेस का विशेष अधिवेशन

असहयोग का एक तरह से प्रारम्भ तो हो चुका था, पर सोचा गया कि इस प्रश्न को कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन के सामने रखा जाय। तदनुसार ४ सितम्बर १९२० को कलकत्ते में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन हुआ। लाला लाजपतराय सभापति हुए। लालाजी महायुद्ध के छिड़ते के साथ अमेरिका चले गये थे, बाद को वे आ नहीं पाये। अमेरिका में वे इण्डिया ब्यूरो स्थापित कर तथा 'यंग इण्डिया" पत्र प्रकाशित कर भारत का प्रचारकार्य कर रहे थे। वे २० फरवरी को भारत लौटे, फिर "बन्देमातरम्" पत्र चलाने लगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रान्तों की राय

विशेष अधिवेशन के पहले ही विभिन्न प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों की तरफ से असहयोग के सम्बन्ध में रायें आ चुकी थीं। आन्ध्र तथा पंजाब की कांग्रेस कमेटी ने यह राय भेजी थी कि वर्तमान परिस्थिति में असहयोग ही एकमात्र नीति है, पर साथ ही यह राय दी कि विशेष अधिवेशन के बाद ही नीति को कार्यान्वित किया जाय। बंगाल ने यह राय दी थी कि असहयोग के अतिरिक्त जनता के हाथों में कोई अस्त्र नहीं है, साथ ही यह कहा कि नये शासन-सुधारों के अनुसार बनी हुई धारा सभाओं के बायकाट की ज़रूरत नहीं है। बाहर रहकर धारा सभाओं के बायकाट की जगह पर यह प्रस्ताव किया गया कि भीतर जाकर उनका बायकाट किया जाय। हम बंगाल की इस राय में भविष्य की स्वराज्य-पार्टी का बीज देख सकते हैं। मद्रास ने लिखा कि असहयोग की पालिसी तो अच्छी है, पर गान्धीजी की पालिसी ठीक नहीं। सिन्ध ने चार हिस्सों का एक कार्यक्रम भेजा, पर कहा फौजियों को फ़ौज से इस्तीफे की ज़रूरत नहीं। संयुक्तप्रान्त ने पूर्ण तरीके से असहयोग को अपनाया, पर साथ में ड्यूक ऑफ़ कानट के बायकाट का भी एक कार्यक्रम बनाकर भेजा।

हंटर रिपोर्ट पर कांग्रेस

विशेष अधिवेशन ने हंटर कमेटी की रिपोर्ट पर विचार करते हुए यह राय दी कि हंटर कमेटी की जाँच पक्षपात-पूर्ण है, और उसमें सत्य का पता लगाने की चेष्टा न कर पंजाब तथा भारत सरकार के कुकृत्यों पर पर्दा डाला गया है।

मुख्य प्रस्ताव

इस कांग्रेस का मुख्य प्रस्ताव यों था—

"चूँकि खिलाफत के मामले में भारतीय तथा इंगलैंड की सरकार ने भारतीय मुसलमानों के साथ अपने कर्तव्य का पालन न करके वादाखिलाफी की है, इसलिये प्रत्येक अमुसलमान का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने मुसलमान भाई की मदद करे, चूँकि भारतीय सरकार तथा सम्राट की सरकार ने पंजाब की निहत्थी जनता के साथ जिन अफसरों ने अन्यायपूर्ण बर्ताव किया, उन्हें सजा देने में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्परता नहीं दिखलाई, और इस तरह इस बात को प्रमाणित कर दिया कि पंजाब के मामले में सरकार न्याय करना नहीं चाहती, और न उसमें कोई पश्चात्ताप की भावना ही है, चूँकि असन्तोष के इन दोनों कारणों को दूर किये बिना भारत में कोई शान्ति नहीं हो सकती, और भारत के आत्म-सम्मान का तक़ाज़ा यह है कि भारत के लोग अब अहिंसात्मक असहयोग का मार्ग ग्रहण करें, और तब तक इसे चलावे जब तक हमारे ऊपर किये गये अन्याय दूर नहीं किये जाते, और स्वराज स्थापित नहीं हो जाता।"

कार्यक्रम

इस प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि सरकार अपनी शक्ति को उपाधियों तथा तमग़ों को बाँटकर, स्कूलों पर नियंत्रण रखकर तथा धारा सभाओं और अदालतों पर अपने अधिकार के कारण अपनी शक्ति को मजबूत बनाती है, इसलिये कांग्रेस निम्नलिखित बातों के किये जाने की सिफारिश करती है—

१—सब उपाधि, ऑनरेरी पद तथा स्थानीय स्वायत्त शासन की संस्थाओं से नामज़द किये हुए सदस्य इस्तीफा दें।

२—सरकारे के दरबारों तथा राजभक्ति प्रकट करने के लिये बुलाई गई सभाओं में भाग न लिया जाय।

३—लड़कों को धीरे-धीरे सरकारी तथा सरकार की सहायता-प्राप्त शिक्षा-संस्थाओं से निकाल लिया जाय, राष्ट्रीय विद्यालय खोले जायँ तथा उनमें लड़के भर्ती किये जायँ।

४—धीरे-धीरे ब्रिटिश अदालतों को वकील तथा मुकद्दमे वाले बायकाट कर दें, और आपसी झगड़ों के लिये अपनी अदालत जारी की जाय।

५—फौज और कुलीकोर तथा अन्य सरकारी कार्यों में नियुक्त लोग ईराक जाने से इनकार करदें।

६—नये शासन-सुधार के अनुसार जो कौंसिलें बनी है, उनमें न तो वोटर लोग वोट देकर किसीको भेजें, और न तो कोई उनके लिये खड़ा हो।

७—विदेशी द्रव्यों का बॉयकाट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चर्खे का कारण

इस प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि चूँकि भारत की मिलें अभी इतना कपड़ा पैदा नहीं कर सकती जिससे कि राष्ट्र की ज़रूरत पूरी हो, और आगे बहुत दिनों तक वे शायद ऐसा न कर सकें, इसलिये यह सलाह दी जाती है कि चर्खा चलाना शुरू किया जाय।

गांधीजी का क्रान्तिकारित्व

महात्माजी ने यह प्रस्ताव रखा था। यह द्रष्टव्य है कि गान्धीजी ने पहले-पहल चर्खे को मिल के प्रतिद्वंदी नहीं बल्कि पूरक रूप में रखा था। मिल-मालिक इस कार्यक्रम से क्यों नहीं घबड़ाये यह स्पष्ट है। इस अवसर पर हम कुछ ठहरकर यह देखलें कि महात्मा जी ने जो कार्यक्रम इस अवसर पर देश के सामने पेश किया, उसकी प्रत्येक बात (यहाँ तक कि चर्खा भी) पहले के आन्दोलनों में थी। ऐसा बताने में हमारा उद्देश्य यह नहीं कि गान्धीजी के कार्यक्रम तथा तरीके के युगान्तरकारित्व को अस्वीकार किया जाय। नहीं, इस बात को कौन अस्वीकार कर सकता है? गान्धीजी ने जिस अवसर पर इन चीज़ों को जिस तरीके से रखा और उन सबको एक सूत्र में पिरोकर पेश किया मानो वे सब एक ही पद्धति के अंग हों, यही एक बड़ी भारी नवीनता थी। जैसे आविष्कारों के क्षेत्र में छलाँग नहीं होती, खोज करने पर मालूम होगा कि अत्यन्त क्रान्तिकारी आविष्कारक ने केवल एक ही नयी कड़ी निकाली है, उसी प्रकार खोज करने पर ज्ञात होगा कि मार्क्स की तरह परम क्रान्तिकारी आविष्कारक ने भी केवल दो ही एक नयी कड़ियों का आविष्कार किया है। यदि इतिहास लेखक के लिखने से यह बात नहीं खुलती, तो वह इतिहास ही त्रुटिपूर्ण है। गान्धीजी एक क्रान्तिकारी के रूप में कांग्रेस के रंग-मंच पर आये, और वे क्रान्तिकारी थे, पर उसी अर्थ में क्रान्तिकारी थे जिस अर्थ में मार्क्स या आइनस्टाइन अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में क्रान्तिकारी थे। इससे अधिक अर्थ में नहीं।

गरम नरम पड़ गये, और नरम गरम

गान्धीजी के प्रस्ताव पर पुराने गरम नेता श्री विपिनचन्द्रपाल ने यह संशोधन रखा कि ब्रिटिश सरकार को एक और मौका देकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसके पास एक मिशन भेजा जाय, जो जाकर यहाँ के दुखदर्दों तथा जरूरतों को सरकार के सामने रखे, किन्तु यदि सरकार इस मिशन की बात से इनकार करे तब यह कार्यक्रम देश के सामने रखा जाय। मज़े की बात यह है कि देशबन्धु ने इस संशोधन का समर्थन किया। उन्होंने अमृतसर में यह प्रस्ताव रखा था कि फौरन सरकार का बायकाट शुरू किया जाय, पर अब जब कि वह बात व्यवहारिक रूप से सामने आ गई तो वे देर करने की बात करने लगे। यह संशोधन गिर गया।

सरकार की घुड़की

सरकार ने इस प्रस्ताव पर जल्दी ही अपनी राय दे दी। यह घोषित कर दिया गया कि स्थानीय सरकारों को यह हिदायत दी जा चुकी है कि यदि कोई व्यक्ति बातों से, लेखों से लोगों को हिंसा के लिये भड़कावे, तथा फौज या पुलिस में विद्रोह फैलाने की कोशिश करे तो उसे सजा दी जाय। सरकार ने साथ ही साथ यह विश्वास प्रकट किया कि उसे विश्वास है कि जनता इस कार्यक्रम का साथ नहीं देगी, और इस बात को समझ लेगी कि ऐसे आन्दोलन के फैलने से देश में मारकाट, अराजकता तथा ऐसी बातें फैलेंगी जिससे उन सब लोगों को नुकसान पहुँचेगा जिनके पास कुछ सम्पत्ति वगैरह है।

विशेष अधिवेशन के निर्णय के अनुसार बहुत से लोग जो धारा सभाओं में खड़ा होना तय कर चुके थे, चुनाव से अलग हो गये। ८० फी सदी वोटरों ने वोट नहीं दिया। स्मरण रहे वोटरों की संख्या बहुत कम थी। देशबन्धु इस कार्यक्रम के विरोधी थे। वे चाहते थे कि धारासभाओं के अन्दर से असहयोग किया जाय। देशबन्धु आदि कुछ बंगाली नेताओं ने इसके लिये सभा भी बुलाई कि कांग्रेस की यह बात मानी जाय या नहीं। श्री अश्विनीकुमार ने इस अवसर पर बंगाल के नेताओं को समझाया कि कांग्रेस की बात मानी जाय। इस प्रकार बंगाल की नाव सम्हली।

तिलक फंड

१९२० के २ अक्टूबर को अ० भा० कां० कमेटी की एक सभा हुई, और उसमें तिलक मेमोरियल फण्ड खुला, पर फण्ड इकट्ठा करने में अभी दिलचस्पी नहीं ली गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असहयोग पर खापर्डे

महाराष्ट्र में असहयोग के प्रस्ताव का विशेष स्वागत नहीं हुआ। श्री जी० एस० खापर्डे ने यह कह दिया कि कांग्रेस अपनी शक्तियों को राजनैतिक कार्यक्रम से हटाकर नैतिक शक्ति तथा आत्मिक बल की ओर लगा रही है, यह ग़लत है। उन्होंने कहा कि सम्भव है जो संघर्ष छिड़ने वाला है, उससे जनता की सहनशक्ति बढ़ जाय, किन्तु राजनैतिक लाभ होना दूसरी बात है।

नागपुर कांग्रेस

अगली कांग्रेस नागपुर में श्रीविजय राघवाचार्य के सभापतित्व में हुई। श्री जमुनालाल बजाज इस बार स्वागताध्यक्ष थे। इसी कांग्रेस में असहयोग के सम्बन्ध में अन्तिम फैसला होने वाला था। इस कांग्रेस में १४ हज़ार प्रतिनिधि उपस्थित थे। यह अधिवेशन कई दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण था। गान्धीजी का असहयोग प्रस्ताव पास हुआ, पर बंगाल तथा महाराष्ट्र की ओर से इसका विरोध हुआ। अकेले देशबन्धुदास २५० प्रतिनिधि लेकर नागपुर गये थे। पर उन्होंने गान्धीजी का विरोध नहीं किया, इस अधिवेशन में कांग्रेस का नया विधान बना। अ० भा० कां० कमेटी का नये ढंग से निर्माण हुआ। कार्य समिति बनी। गान्धीजी ने बतलाया कि कांग्रेस का उद्देश्य सब प्रकार के वैध तथा शान्तिपूर्ण उपाय से भारत के लोगों के द्वारा स्वराज्य की प्राप्ति है। कुछ लोगों ने जो इस नये क़दम से घबड़ा रहे थे उद्देश्य पर बहुत बारीक बहस छेड़ दी। क़ायदे आज़म जिन्ना इसी के बाद से कांग्रेस से अलग हो गये।

विदेशी मित्र की सनक

इस अधिवेशन में सुप्रसिद्ध ब्रिटिश राजनीतिज्ञ कर्नल वे..उड वेन मौजूद थे। उन्होंने दाल भात में मूसरचन्द के तरीके से एक अत्यन्त मूर्खतापूर्ण व्याख्यान में कहा—"आप इस प्रस्ताव को पास कर इंगलैंड में अपने मित्रों की कठिनाई बढ़ा रहे हैं, आपके काम में रुकावट पड़ेगी, पुलिस आपके पीछे पड़ेगी। आपको चाहिये कि आप रचनात्मक कार्यक्रम ग्रहण करें।" आश्चर्य यह है कि लोगों ने कर्नल का व्याख्यान सुन लिया। कर्नल को पता होना चाहिये था कि विदेशी मित्रों के द्वारा किसी जाति का भाग्य नहीं बना करता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य ब्यौरा

डयूक आफ कानट के स्वागत के बॉयकाट का प्रस्ताव पास हो गया। मुसलमानों को इसलिये धन्यवाद दिया गया कि उन्होंने गो-वध बन्द करने का प्रस्ताव पास कर दिया। इसी कांग्रेस से गान्धी युग का सूत्रपात होता है, ऐसा कहा जा सकता है। इस युग में जैसा कि हम देखेंगे कि कई बार अपने साथियों के सामने उन्हें कच्चा होना पड़ा, एक बार तो कांग्रेस से रिटायर भी हो जाना पड़ा, पर अन्त में उन्हींकी जीत रही।

प्रस्तावों का असर

नागपुर कांग्रेस के प्रस्तावों का जनता में बड़ा असर रहा। 'वोट न दो' का जनता ने अच्छा स्वागत किया। कालेज-स्कूलों का बॉयकाट उतना सफल नहीं रहा, अदालत का बॉयकाट इससे भी कम सफल रहा, फिर भी कुछ वकीलों ने वकालत छोड़ दी। जिन वकीलों ने वकालत छोड़ी, उनमें से ६६ फी सदी बाद को वकालत करने लगे, यही हालत स्कूल कालेज छोड़ने वाले छात्रों की हुई। बात यह है कि छात्रों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया जा सका। कुछ विद्यापीठ खुल गये, पर इनमें देश को सबसे बढ़कर जिस शिक्षा की जरूरत थी, याने वैज्ञानिक तथा औद्योगिक शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ। यह द्रष्टव्य है कि बाद के आन्दोलनों में गान्धीजी ने इन बातों पर जोर नहीं दिया।

अन्य कार्य

जनवरी में श्रीयमुनालाल बजाज ने तिलक स्वराज्य फंड में एक लाख दिया। देशबन्धुदास को इस बात का भार सौंपा गया कि वे मजदूरों का संगठन करें। मि० एल० आर० तैयबजी को आर्थिक बॉयकाट कमेटी का संयोजक बनाया गया। तिलक स्वराज्य फंड के लिये एक करोड़ की माँग की गई। गाँवों और शहरों में जोर का प्रचार कार्य शुरू हुआ। सैकड़ों सभायें होने लगीं। अभी तक राजनैतिक कार्यकर्त्ता गाँव में नहीं जाते थे, पर अब गाँवों में भी राजनीति पहुँची। चर्खे चलने लगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरकार और अलीबन्धु

इसी बीच में सरकार अपनी उग्रनीति का प्रदर्शन करने लगी थी। अप्रैल में लार्ड रीडिंग वायसराय होकर आ गये थे। पंडित मालवीय की मध्यस्थता से गान्धीजी तथा रीडिंग मिले। लार्ड रीडिंग ने यह कहा कि जब अहिंसा इस आन्दोलन का ध्येय है तो अलीबन्धु दूसरी बातें क्यों कहते फिरते हैं। इस पर अलीबन्धुओं ने लिखकर एक बयान दिया जिससे सरकार ने उन्हें फौरन जेल भेजने का इरादा त्याग दिया। इस वक्तव्य का जनता पर कुछ अच्छा असर नहीं पड़ा।

आन्दोलन ज़ोर पर

धर-पकड़ होती रही। कांग्रेस कार्य समिति ने ३० अप्रैल के अपने अधिवेशन में यह राय दे दी कि गिरफ़ार असहयोगी अदालत से सहयोग न करे। हाँ वह एक बयान दे सकता है। जमानत, मुचलका देने की भी मनाही कर दी गई। जुलाई के अन्त में अ० भा० कां० कमेटी की बैठक में मालूम हुआ कि चन्दा एक करोड़ से १५ लाख अधिक मिला। पर सदस्य एक करोड़ की जगह ५० लाख हुए, और २० लाख चरखे चल रहे हैं। यह तय हुआ कि पहली अगस्त से कोई भी कांग्रेसजन विदेशी वस्त्र नहीं पहनेगा। बम्बई के मिल-मालिकों से कहा गया कि मजदूरों का पेट न काटते हुए मिलों के कपड़े को सस्ता कर दे। विलायती कपड़े के व्यापारियों से यह कहा गया कि वे नया माल न मँगावें, और जो माल है उसे विदेशों में खपा दें।

मौलाना मुहम्मदअली

आन्दोलन दिन दूना रात चौगुना बढ़तागया। सरकार ने जब इस आन्दोलन को बढ़ते देखा तो दमन चक्र शुरू हो गया। संयुक्त-प्रान्त और बंगाल में कांग्रेस तथा खिलाफत के वालंटियर दल को ग़ैर-कानूनी करार दिया गया। कराची में ८ जुलाई १६२१ को खिलाफत कान्फ्रेंस के अवसर पर मौलाना मुहम्मदअली ने एक तगड़ा व्याख्यान दिया। इस कान्फ्रेंस में यह प्रस्ताव पास हुआ था कि कोई फौज में शरीक न हो। इसके सम्बन्ध में कई आदमियों को सजायें हुईं। जिस समय गान्धीजी को मालूम हुआ कि मुहम्मद-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अली आदि पर एक व्याख्यान तथा प्रस्ताव के सम्बन्ध में मुकद्दमा चल रहा है, वे त्रिचनापल्ली में थे। जब गान्धीजी को यह मालूम हुआ तो उन्होंने स्वयं एक सभा में उस व्याख्यान को सुनाया, और कांग्रेस कमेटियों से भी कहा कि वे इस व्याख्यान को देश के कोने-कोने दुहरावे। पर इस सम्बन्ध में न तो वे खुद और न और कोई गिरफ्तार हुआ।

सत्याग्रही के लिये शर्तें

१६२१ के ५ नवम्बर को अ० भा० कां० कमेटी ने प्रत्येक प्रान्त को यह अधिकार दिया कि वह जब भी उचित समझे असहयोग छेड़ दे, पर असहयोगी के लिये यह शर्तें रखी गई कि वह चर्खा कातना जाने, विलायती न पहनता हो, हिन्दू-मुस्लिम एका तथा चर्खा में विश्वास रखता हो, यदि वह हिन्दू हो तो छुआछूत को राष्ट्रीयता का विघातक समझता हो। जो लोग जेल जा रहे थे, उनसे यह कहा गया कि वे किसी भी तरह अपने लिये या अपने परिवार के लिये सहायता की माँग न करें। गान्धी ने यह कहा कि साल भर के अन्दर स्वराज्य मिलेगा, याने १६२१ के ३१ दिसम्बर की आधी रात तक स्वराज्य मिलेगा। यह एक साल वाली बात अब कितनी हास्यास्पद जँचे, पर एक तो इसमें कई यदि थे, दूसरा उस युग में इस विचार ने जनता में प्राण प्रतिष्ठा कर उसे अनुप्रेरित किया था।

युवराज का बायकाट

१२ नवम्बर को युवराज भारतवर्ष पधारे। असल में युवराज नई असेम्बली का उद्घाटन करने वाले थे, पर जैसा कि हम बता चुके हैं १६२० की अगस्त में भारत का राजनैतिक वातावरण ऐसा था कि ब्रिटिश सरकार ने उनको न भेजकर ड्यूक आफ कानट को भेजा था। कांग्रेस ने पहले ही तय किया था कि युवराज का बायकाट किया जायगा। तदनुसार युवराज का बायकाट किया गया। और साथ ही विलायती कपड़े जलाये गये। जिस दिन युवराज बम्बई पहुँचे, उस दिन बड़े ज़ोरों का सरकार-विरोधी दंगा हुआ, और यह दंगा तीन चार दिन तक होता रहा। गांधीजी और सरोजिनी देवी भीड़ में घुसकर लोगों को समझाते रहे, पर दंगा कठिनता से बन्द

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ। लोग अंग्रेजी राज्य का खातमा कर तभी दम लेने वाले थे। बहुत से आदमी जान से मारे गये। गान्धीजी ने इन सबका प्रायश्चित्त करने के लिये ७ दिन का उपवास रखा। यदि गान्धीजी इस प्रकार इन दंगों को न रोकते, तो पता नहीं पानी कहाँ जाकर रुकता।

मजदूरों में भी बेचैनी

बम्बई के अतिरिक्त और स्थानों में भी हजारों व्यक्ति युवराज के बॉयकाट के सम्बन्ध में गिरफ़ार हो गये। अधिकतर १४४ और १०८ का प्रयोग हुआ, पर क्रिमिनल लॉ अमेन्डमेन्ट भी काम में लगाया गया। इन दिनों जो आन्दोलन हो रहा था, उसकी पृष्ठभूमि में प्रबल आर्थिक कारण थे। इसलिये इस आन्दोलन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होने पर भी आसाम के चायबगानों में भी विद्रोह की लहर उठी। चाय बगान के हजारों कुलियों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये चायबगान छोड़कर यात्रा कर दी। वे चाँदपुर पहुँचे, यहाँ इनका स्वागत गोलियों से किया गया। इन कुलियों के साथ सहानुभूति में उधर के ए० बी० आर० तथा स्टीमर कम्पनी में हड़ताल हो गई। ताल्लुकेदारी की चक्की में पीसे हुए अवध के किसान भी इसी प्रकार बाबा रामचन्द्र के नेतृत्व में उठ रहे थे। मालाबार में मोपला विद्रोह हो रहा था। पहले यह विद्रोह ब्रिटिश-विरोधी था, पर साम्राज्यवाद की चालाकी से यह हिन्दू-विरोधी हो गया।

युवराज परेशान

युवराज जिधर गये, उधर गिरफ़ारियाँ हुईं। देशबन्धुदास, त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल, अबुलकलाम आजाद, सुभाषचन्द्र, जवाहर सब गिरफ़ार हो गये। युवराज ने जो यह सब देखा तो बोले कि वे परेशान हो रहे हैं (Perplexed and puzzled)।

समझौते की आशा

इन्हीं दिनों पंडित मदनमोहन मालवीय ने सरकार और कांग्रेस में समझौते की चेष्टा की। पंडित मालवीय ने वायसराय की तरफ से देशबन्धु दास से यह कहा कि यदि फौरन असहयोग वापस किया जाय, तो सरकार सब असहयोगी कैदियों को छोड़ देगी और गैरकानूनी घोषित संस्थाओं को कानूनी करार देगी। यह भी वादा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था कि सरकार एक गोलमेज़ कान्फ्रेंस में भारत के भाग्य का निर्णय करने के लिये तैयार है। गान्धीजी ने इस पर यह कहा कि अलीबन्धु तथा अन्य ऐसे लोग छोड़े जायँ। सरकार इस पर राजी नहीं हुई। देशबन्धु दास समझौता के पक्ष में थे। सुभाष बाबू ने लिखा है कि देशबन्धु ने अन्त तक गान्धीजी को अपने मित्रों के जरिये से कह कहाकर राजी कर लिया, पर उस समय देर हो चुकी थी। वायसराय ने राय ली थी।

समझौता होता तो

कलकत्ते में युवराज के विरुद्ध प्रदर्शन हुआ। आन्दोलन जोर पर था। इस विषय पर लोगों में बड़ा मतभेद है कि गान्धीजी ने समय पर समझौता करके ग़लती की या नहीं। आज इस दूरी से इस विषय पर कोई राय कायम करना कठिन तो है, पर बाद की घटनाओं को अब हम जानते हैं, इस नाते यह कहा जा सकता है कि चौरीचौरा की घटना से इसके तीन महीने के अन्दर आन्दोलन रोक लेने से कहीं अच्छा यह होता कि इस समय समझौता कर लिया जाता। गोलमेज़ सम्मेलन की बात सम्भव है बहुत कुछ झोल साबित होती, पर राजनैतिक कैदी तो छूट ही जाते। रहा अलीभाई, सो वायसराय ने कहा था कि वे शर्त के रूप में नहीं पर यों ही छोड़ दिये जाते। और जैसा कि देशबन्धुदास ने श्री सुभाष से कहा था कि आन्दोलन तो फिर छेड़ा जा सकता है। समझौता भंग होने पर आन्दोलन दुगुने ज़ोर से चलता।

अहमदाबाद कांग्रेस

यथासमय अहमदाबाद कांग्रेस दिसम्बर १९२१ में हुई। पर इस समय इसबार के निर्वाचित सभापति देशबन्धु दास तथा ३०००० अन्य लोग जेल में थे। हकीम अजमलखाँ सभापति हुए। आन्दोलन के प्रधान सेनापति अभी जेल के बाहर थे। यह बात आपात दृष्टि से आश्चर्यजनक होने पर भी असली बात यों है कि सरकार यह डरती थी कि गान्धीजी की गिरफ़ारी से न मालूम कैसी परिस्थिति हो जाय। अहमदाबाद कांग्रेस के पहले तक कुर्सी तथा बेंच आदि का इस्तैमाल होता था, पर अबकी बार यह सब निकाल दिया गया था। कांग्रेस अब जनता में आ चुकी थी। अंग्रेज़ी की जगह पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दुस्तानी का प्रयोग हुआ, और अब कांग्रेस में खद्दर ही खद्दर दिखाई देता था।

पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव गिरा

इस समय असहयोग पूरे जोर पर था। अहमदाबाद कांग्रेस की सबसे बड़ी घटना यह है कि हसरत मुहानी ने कांग्रेस के लक्ष्य की 'विदेशियों के प्रभाव से सम्पूर्ण रूप से मुक्त पूर्ण स्वतंत्रता (Complete Independence free from foreign control) के रूप में परिभाषा करनी चाही, पर गान्धीजी ने इसका जबर्दस्त विरोध किया। मुहानी का प्रस्ताव गिर गया। इस कांग्रेस में गान्धीजी पहली बार कांग्रेस के सर्वाधिनायक चुने गये।

समझौते की फिर चेष्टा

इस कांग्रेस के पन्द्रह दिन के बाद सर शंकरन नैयर तथा सर विश्वेश्वरैया ने सरकार तथा कांग्रेस के बीच समझौता कराने की चेष्टा की, पर सरकार ने कोई सुनाई नहीं की।

बारदोली में तैयारी

उधर गान्धीजी लगानबन्दी के तैयारी कर रहे थे। बारदोली ग्राम इसके लिये चुना गया। वहाँ के लोगों पर गान्धीजी का विशेष प्रभाव था। गान्धीजी तुले हुए थे, उन्होंने १ ली फरवरी को लाट साहब को यह सूचना भी दे दी कि बारदोली में लगानबन्दी शुरू होगी।

चौरीचोरा और आन्दोलन का अन्त

इधर गोरखपुर के चौरीचौरे ने सारे इतिहास को बदल दिया। ५ फरवरी को चौरीचौरा में एक जुलूस निकल रहा था, पुलिस ने इसमें बाधा पहुँचाई। इस पर जनता उत्तेजित हुई, उसने पुलिसवालों को खदेड़कर थाने में बन्द कर दिया, और उसमें आग लगा दी। इससे २२ पुलिसवाले जलकर मर गये। इस बात से गान्धीजी पर इतना असर हुआ कि १२ फरवरी की कार्य समिति की बैठक में असहयोग बन्द कर दिया, और यह हिदायत दे दी गई कि आगे कोई भी ऐसा कार्यक्रम न चलाया जाय जिसमें गिरफ़्तारी की गुञ्जाइश हो। अब देश के सामने केवल रचनात्मक कार्यक्रम रहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेता कुपित

इस प्रकार असहयोग वापस लिये जाने का सोचने वाले लोगों पर बहुत बुरा असर पड़ा। सुभाष बाबू ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संग्राम' में इसके विषय में यह लिखा है कि 'ऐसे समय जब कि जनता का जोश सर्वोच्च विन्दु पर पहुँच चुका था, पीछे लौटने का नारा राष्ट्रीय विपत्ति से कुछ कम नहीं था। महात्माजी के सभी मुख्य शिष्य देशबन्धुदास, मोतीलालजी, लाला लाजपतराय सभी इस पर क्षुब्ध हुए। मैं उन दिनों देशबन्धु के साथ जेल में था, इस पर दुःख से उनका बुरा हाल हुआ।" इन नेताओं ने तो गान्धीजी के पास क्रोधपूर्ण पत्र भी लिखे, पर गान्धीजी ने इन सब सन्देशों को यह कहकर टाल दिया कि जो लोग जेल में हैं, वे नागरिक रूप से मरे हुए हैं, उनको किसी बात में बोलने का कोई अधिकार नहीं।

क्या अन्य कारण था ?

यह कहकर गान्धीजी की नीति को समर्थन करने की चेष्टा की गई है कि गान्धीजी ने ऊपर से कारण चाहे जो कुछ भी दिखाया हो, पर असल में उन्होंने यह देखा कि अब आन्दोलन ह्रास पर है और जल्दी ही ठप्प हो जायगा, इससे एक बहाने से इसे बन्द कर दिया जाय। पर क्या बात ऐसी ही थी ? क्या सचमुच आन्दोलन ठप्प हो रहा था ?

वायसराय का गुप्त पत्र

९ फरवरी १९२२ को वायसराय ने भारत सचिव को जो पत्र लिखा था, उससे स्पष्ट है कि बात कुछ और ही थी ! वायसराय ने इस तारीख को लिखा था—

"शहरों की निम्न श्रेणी पर असहयोग का बहुत प्रभाव पड़ा है..........। कई स्थानों में तो किसानों पर भी बहुत असर पड़ा है, विशेषकर आसाम की उपत्यका, संयुक्तप्रान्त, बिहार, उड़ीसा तथा बंगाल के किसानों में बड़ी बेचैनी है। जहाँ तक पंजाब का सम्बन्ध है अकाली आन्दोलन गाँव के गरीब सिखों में फैल गया है। देश भर के मुसलमानों का एक बड़ा हिस्सा कड़वापन की भावना से ओत-प्रोत है। कुछ भी हो सकता है। भारत-सरकार इतिहास में अभूतपूर्व भयानक परिस्थितियों के लिये तैयार है, और इस बात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को घटाकर नहीं रखना चाहती कि बहुत भयानक संभावनायें हैं।"

गुन्टुर और अन्य प्रमाण

श्री पामदत्त ने भारत-सचिव के नाम वायसराय के इस पत्र का हवाला देने के अतिरिक्त गुन्टुर का विवरण दिया है जहाँ एक ग़लतफ़हमी के कारण लगान-बन्दी शुरू हो गई थी, और जब तक गान्धीजी बीच में नहीं पड़े पाँच फी सदी लगान भी वसूल नहीं हो सका था। संयुक्त-प्रान्त तथा अन्य स्थानों की भी यही हालत थी। सारी अवस्था किसान-क्रान्ति की थी। बाद को लार्ड लायड ने भी यह लिखा कि गान्धीजी का कार्यक्रम सफलता के एक इंच के अन्दर पहुँच गया था, और यदि वे उसे वापस न करते तो ईश्वर जाने क्या होता।

रचनात्मक कार्यक्रम

गान्धीजी ने असहयोग के संग्रामात्मक हिस्से को स्थगित कर देने के बाद यह तय किया कि अब रचनात्मक कार्यक्रम लेकर चला जाय। रचनात्मक कार्यक्रम के सम्बन्ध में गान्धीजी की धारणा भी बराबर बदलती रही है, इस कारण यह बता दिया जाय कि इस समय इससे उनका क्या मतलब था। इस समय रचनात्मक कार्यक्रम से उनका मतलब था—

(१) चर्खा तथा करघा प्रचार
(२) अछूतोद्धार
(३) राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना
(४) कांग्रेस में सदस्यों की भर्ती
(५) ग्राम-पंचायत स्थापना

२४ तथा २५ फरवरी को दिल्ली में अ० भा० कां० कमेटी का जो अधिवेशन हुआ, उसमें यही सब कार्यक्रम स्वीकृत हुआ।

गान्धीजी गिरफ्तार

यद्यपि गान्धीजी ने आन्दोलन वापस ले लिया था, पर फिर भी सरकार मौका पाते ही उनको गिरफ्तार करना चाहती थी। जब क्रान्तिकारी परिस्थिति खतम हो गई, और देश में फिर निद्रा-सी छाने लगी, और सरकार ने यह समझ लिया कि अब उन्हें गिरफ्तार करने से कोई खतरा नहीं है, तब १३ मार्च को वे गिरफ्तार कर लिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गये। कहाँ तो उनकी गिरफ़ारी पर क्रान्ति का भय था, पर अब वे गिरफ़ार कर लिये गये और एक उँगली भी नहीं उठी।

मुकद्दमा और सज़ा

उन पर १२४ अलिफ का मुकद्दमा चला, और 'यंग इंडिया' में प्रकाशित तीन लेखों के सम्बन्ध में (Tampering with Loyalty, The puzzle and its solution, Shaking the Manes) मुकद्दमा चला। उन्हें छै साल की सज़ा दी गई। गान्धीजी ने सारे आन्दोलन विशेषकर चौरीचौरा की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। गान्धीजी ने उदारता पूर्वक आन्दोलन वापस ले लिया, पर सरकार ने राजनैतिक कैदियों को नहीं छोड़ा, इसके विपरीत और भी लोग गिरफ़ार होते गये। गान्धीजी हिंसा में विश्वास नहीं करते थे, पर सरकार उसी में विश्वास करती थी।

लीग की बुरी हालत

इसी बीच में लीग की क्या हालत थी इसे भी हम संक्षेप में देख लें। लीग की १९२१ वाली बैठक ने लीग के जीवन को खतरे में डाल दिया था। यह इजलास मौलाना फजलुल हसन के सभापतित्व में अहमदाबाद में हुआ था, और पूर्व सालों की तरह इस बैठक में कांग्रेस के बाहर मौजूद सभी बड़े नेता याने महात्माजी, विजयराघवाचार्य, पटेल, हकीम अजमलखाँ उसमें गये थे। देश में विशेषकर मुसलमानों में भी बड़ा जोश था, पर लीग में जैसे लोग भरे पड़े थे, वे असहयोग प्रस्ताव के पक्ष में नहीं थे। सब प्रगतिशील मुसलमान उन दिनों खिलाफत कान्फ्रेंस में थे। लीग में असहयोग का प्रस्ताव पास नहीं हुआ, इस कारण लीग लोगों की आँखों में गिर गई। लीगी नेता इस्लाम के नारे पर भी खड़े नहीं हो सके। वे घर बैठे रहे। लीग का सितारा इस कारण ऐसा डूबा कि १९२२ में इसकी कोई बैठक ही नहीं हुई। १९२३ के मार्च को लीग की बैठक लखनऊ में गुलाम मुहम्मद भरगिरी की अध्यक्षता में बुलाई गयी, पर कोरम पूरा न होने की वजह से सभा विसर्जित कर दी गई। इस प्रकार लीग का हाल रहा।

नया कांग्रेस

कांग्रेस का अगला अधिवेशन गया में १९२२ में देशबन्धु दास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के सभापतित्व में हुआ। श्री दास ने कमालपाशा के नेतृत्व में उदीयमान स्वतंत्र तुर्की राष्ट्र का अभिनन्दन किया, और एशियाई संघ का नारा दिया। उन्होंने बदले हुए समय के लिए बदली हुई कर्मपद्धति का नारा दिया। वे धारा सभाओं के वायकाट के पक्ष में कभी नहीं थे, अब उन्होंने खुल कर इसका नारा दिया। पर राजागोपालाचारी के नेतृत्व में अधिकाँश प्रतिनिधियों ने काँग्रेस के पहले कार्य-क्रम पर डटे रहने का नारा दिया। काँग्रेस में दो दल हो गया, एक Prochanger परिवर्तन वादी, दूसरा Nocharger अपरिवर्तन वादी। अपरिवर्तन वादियों की ही बहुसंख्या रही, इसलिए श्री दास ने इस्तीफा दे दिया। गान्धी जी की गिरफ्तारी के साथ ही सविनय अवज्ञा सम्बन्धी परिस्थिति की जांच के लिए एक कमेटी नियुक्त हुई थी, इस कमेटी के सदस्यों में भी मतभेद हो गया था। हकीम अजमल खाँ, पं० मोतीलाल नेहरू, बीजे पटेल ने देशबन्धु के पक्ष में और डा० अंसारी, राजागोपालाचारी तथा आयंगर ने इसके विरुद्ध राय दी। पर श्री दास ने जब इस्तीफा दे दिया, और पं० मोतीलाल नेहरू ने स्वराज्य पार्टी के निर्माण की घोषणा कर दी तो परिस्थिति बदल गई। सुभाष बाबू ने लिखा है कि गया कांग्रेस से अपरिवर्तन वादी जीत कर गये, पर उनके मन में खुशी नहीं थी, और स्वराजी हार कर गये, पर वे लड़ कर जीतने के लिए कटिबद्ध थे।

दलों का संघर्ष

हुआ भी यही। १९२३ के मध्य भाग तक स्वराजी अ० भा० कां० कमेटी में बहुसंख्या में हो गये, इस कारण कार्यसमिति को इस्तीफा देना पड़ा। पर स्वराजी भी कार्यसमिति बनाने के लिए तैयार नहीं थे, इस कारण कुछ मध्यमपंथी कार्य समिति बना कर चलने लगे। सब प्रान्तों में दो दलों में झगड़ा चलने लगा, यहाँ तक कि बंगाल में एक साथ दो कांग्रेस कमेटी चलती रही। इन्हीं बातों के कारण १९२३ के सितम्बर में कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया गया।

खिलाफत का अन्त और उसका प्रभाव

उधर योरोप में कमाल पाशा ने तुर्की की स्वतन्त्रता के लिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो लड़ाई छिड़ी थी, वह सफल हो गई, और १६२३ की जुलाई में तुर्की राष्ट्र एक सचमुच स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया, याने उस पर से विदेशियों का प्रभाव नष्ट हो गया। तुर्की सुलतान भाग गए और तुर्की राष्ट्र गणतांत्रिक हो गया। पहले कमाल ने एक ख़लीफा बनाया था, पर बाद को उसे कतई खतम कर दिया, इस प्रकार खिलाफत का अन्त हो गया। इसका नतीजा भारत की परिस्थिति पर यह हुआ कि मुसलमान राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग होने लगे। धार्मिक आधार पर मेल का यह नतीजा हुआ। पर क्या यह नतीजा अनिवार्य था? हमें तो गहराई के साथ सोचने पर मालूम होता है कि नहीं, यह अनिवार्य नहीं था। हिन्दू खिलाफत के प्रश्न को उठा कर यह दिखा चुके थे कि वे किस हद तक मुसलमानों के साथ हैं। इस बीच में कोई ऐसी घटना नहीं हुई थी कि हिन्दुओं ने उनकी भावना को ठेस पहुँचाई हो। हाँ, १६२२ में कुछ हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए थे, पर उनमें हिन्दू ही दोषी थे, यह बात नहीं। इस कारण मुसलमानों के इस प्रकार फिर जाने का कोई विशेष कारण नहीं था। इसके लिए उनका पिछड़ापन ही विशेषकर जिम्मेदार था।

कार्य-क्षेत्र में खराबी

दिल्ली के विशेष अधिवेशन में कौंसिल प्रवेश के लिए उस मार्ग में विश्वास करने वालों को स्वतन्त्र कर दिया गया। अब तो स्वराज्य पार्टी बाकायदा चुनाव की तैयारी करने लगी। दिसम्बर तक चुनाव हो गया और स्वराज्य पार्टी की अच्छी जीत रही। हम लगे हाथों यह देख लें कि कभी बंगाल के 'बेताज के बादशाह' सुरेन्द्रनाथ पहले ही सर हो चुके थे, और अब चुनाव में स्वराज्य पार्टी के विरुद्ध खड़े हुए तो उन दिनों एक मामूली व्यक्ति श्रीविधान राय के विरुद्ध हार गये। इस बीच में नरम दल वाले कौंसिलों में डटे थे, और मंत्री भी बने थे। इन लोगों ने अपनी समझ में कुछ सेवा की। कुछ काम तो हुए भी जैसे म्युनिसिपलिटियाँ पहले के बनिस्बत स्वतन्त्र हो गई, और उन्हें गैर-सरकारी चेयरमैन चुनने का अधिकार मिला।

स्वराज्य पार्टी से जोश

पंडित मोतीलाल स्वराज्य पार्टी की ओर से केन्द्रीय धारा सभा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में गये, और उन्होंने शुरू से ही बड़ी योग्यता तथा निर्भीकता प्रदर्शित की। स्वराज्य पार्टी के नेतृत्व में पहले ही राष्ट्रीय मांग पर एक प्रस्ताव पेश हुआ जिसका अर्थ यह था कि फौरन औपनिवेशिक स्वराज्य के ढाँचे पर शासन विधान बनाने के लिए गोलमेज बुलाई जाय। सरकार ने इस पर सर अलेक्जंडर मूडीमैन के सभापतित्व में एक कमेटी बनाई, पर इसका कोई नतीजा नहीं निकला। पर इस प्रकार स्वराज्य-पार्टी के कारण देश में एक तरह का जोश बना रहा, जो केवल रचनात्मक कार्य-क्रम से कभी सम्भव नहीं था। उन दिनों स्वराज्य पार्टी और अपरिवर्तन वादियों में जो झगड़े चले, वे बाद को भुला दिया गया, क्योंकि बाद को सारी काँग्रेस ही स्वराज्य-पार्टी हो गई। बाद को काँग्रेस एक साल गाँधी जी का सत्याग्रह करती, तो नौ साल स्वराज्य-पार्टी बनी रहती। इस दृष्टि से देखने पर श्री दास के दान को उतना महत्व नहीं दिया गया, जितना दिया जाना चाहिये। बाद को गाँधीवाद का जो रूप बना, उसमें दासवाद आ गया।

गाँधी जी रिहा

गाँधी जी १९२४ की ५ फरवरी को स्वास्थ्य के आधार पर छूट गये। उनको स्पेंडिसाइटिस नामक कठिन रोग हो गया था, उसके कारण उनका आपरेशन किया गया था, और वे बहुत कमजोर हो गये थे। इसी पर वे छोड़ दिये गये थे।

कोकनद-काँग्रेस

इसके पहले १९२३ वाली काँग्रेस कोकनद में मौलाना मुहम्मद अली के सभापतित्व में हो चुकी थी। इसमें भी कौंसिल-प्रवेश का समर्थन किया गया था। मौलाना मुहम्मद अली ने कौंसिल-प्रवेश के पक्ष में राय दी थी।

गांधीजी और स्वराजी

गान्धी जी जब छूटे तो देश में स्वराज्य पार्टी का रोब बैठ चुका थ। इस पर जैसा कि सुभाष बाबू ने लिखा है उन्होंने अनिवार्य के सामने सिर झुका दिया, या ऐसा हो सकता है कि उन्होंने यह समझा हो कि बदली हुई हालत में नीति बदल देनी चाहिये। "कुछ भी हो, वे स्वराजी नेता श्रीदास और पं० मोतीलाल से मिले और इन में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक तरह का समझौता सा हो गया। वह समझौता जिसे गान्धी-दास पैक्ट कहा गया, इस आशय का था कि महात्माजी खद्दर-प्रचार में लगे, और राजनैतिक कार्य स्वराजियों के हाथों में रहेगा। जिससे गान्धीजी स्वराज्य पार्टी या कांग्रेस के हस्तक्षेप के बगैर अपना काम कर सकें, इस कारण गान्धी जी को अधिकार दिया गया कि वे 'चर्खा संघ' नामक स्वतंत्र संस्था का संगठन करें।" सुभाष बाबू ने यह भी साफ साफ लिखा है कि स्वराज्य पार्टी के लोगों के मन में गान्धी जी के लिये अधिक से अधिक इज्जत थी, पर यह पार्टी स्पष्ट रूप से एक गान्धी विरोधी पार्टी थी, और यह पार्टी इतनी तगड़ी थी कि इसने गान्धीजी को इच्छापूर्वक राजनीति से बैठजाने के लिये मजबूर किया, और उन्हें करीब करीब १९२८ कलकत्ता कांग्रेस तक बैठा रहना पड़ा।"

फिर क्रान्तिकारी संगठन

जब तक असहयोग आन्दोलन चला, तब तक भारतीय क्रान्तिकारी चुपचाप थे। मैं 'भारत में सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास' से उद्धृत करता हूँ। "बिखरे हुए क्रान्तिकारी दल फिर से संगठित होने लगे। कुछ पुराने क्रान्तिकारी नेता पस्त हो चुके थे, उनकी जगह नये नेता आये। कुछ पुराने नेता भी संगठन करने लगे, पर सम्हल सम्हल कर। उत्तर भारत में श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल तथा बंगाल में अनुशीलन समिति आदि संगठन करने लगी।"

गोपीमोहन शाहा

हम इस आन्दोलन के ब्यौरे में न जायेंगे। ३ अगस्त १९२३ को जब कुछ क्रान्तिकारियों ने शंखारी टोला पोस्टआफिस पर हमला कर दिया, तो पता लगा कि क्रान्तिकारी आन्दोलन सिर उठा रहा है। इस प्रकार कुछ और घटनायें हुईं। १९२४ की जनवरी को गोपीमोहन शाहा ने जब कुख्यात पुलिस साहब टेगर्ट के धोखे में एक अङ्गरेज सौदागर अर्नेस्ट डे को मार डाला, तो इस पर बड़ी सनसनी फैली। असहयोग की विफलता से क्षुब्ध भारतीय पढ़े लिखे नौजवानों को इस घटना से अनुप्रेरणा मिली। उसी साल बंगाल सिराजगंज में मौलाना अक्राम खाँ के सभापतित्व में प्रादेशिक राजनैतिक कानफरेन्स हो रही थी, इसमें गोपीमोहन शाहा के कार्य की निन्दा करते हुए भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़े तगड़े शब्दों में शहीद की देशभक्ति तथा साहस की प्रशंसा हुई। गान्धीजी ने इस प्रस्ताव की बहुत कड़े शब्दों में निन्दा की। देशबन्धु ने उत्तर दिया, इस पर बात बढ़ गई। जून में अहमदाबाद में जब अ० भा० कां० कमेटी की बैठक हुई तो महात्माजी ने सिराजगंज के प्रस्ताव के विरुद्ध एक प्रस्ताव रखा। देशबन्धु ने इस पर एक संशोधन रखा, पर गांधीजी कुछ वोटों से जीत गये।

कोहाट का दंगा

इसी साल कई जगह हिन्दू मुस्लिम दंगे हुए, कोहाट में सितम्बर का दंगा बड़ा भयंकर रहा। कोहाट के दंगे पर जाँच करने के लिये शौकतअली और गांधीजी की एक कमेटी बनी, पर वे एक मत न हो सके। शौकतअली इस राय पर पहुँचे कि दोष हिन्दुओं का है। तथ्य तो यह था कि हिन्दू सैकड़ों की तादाद में मारे गये थे। यहीं से अलीभाई साम्प्रदायिकता की ओर जाने लगे। गान्धीजी ने कोहाट के दंगे पर दिल्ली में मौलाना मुहम्मदअली के घर में २१ दिन का उपवास शुरू किया। इसी उपलक्ष्य में एक एका कानफरेन्स भी हुई। पर इस पर भी दंगे नहीं रुके।

बंगाल आर्डिनेन्स

बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन संगठित हो रहा था। अहिंसा तथा रचनात्मक कार्यक्रम से निराश मध्यवित्त नौजवान धड़ाधड़ क्रान्तिकारी दल में शामिल होते चले जा रहे थे पर प्रचलित कानून से सरकार इनमें से सभी को पकड़ने में असमर्थ थी। शंगरिटोला डाकखाने की लूट के मामले को सरकार ने एक षड़यंत्र करना चाहा था, पर यह षड़यंत्र छूट गया, तब पटपट के रेगुलेशन ३ का प्रयोग हुआ। १९२४ के अप्रैल में मिस्टर ब्रूस की हत्या का प्रयत्न किया गया, फिर फरीदपुर में बम निकला। दो एक क्रान्तिकारी पिस्तौल सहित गिरफ्तार हुए। श्रीशचीन्द्र सान्याल लिखित Revolutionary पर्चा सारे भारत में पहले ही बट चुका था। १८ अक्टूबर को संयुक्त-प्रांत से लौटते हुए श्रीयोगेशचन्द्र चटर्जी हवड़ा स्टेशन पर गिरफ्तार हो गये। उनके पास कुछ कागजात मिले जिनसे सरकार को यह पता लगा कि बंगाल के बाहर कम से कम २३ स्थानों में क्रान्तिकारी संगठन हो चुका। बस १९२४ के २५ अक्टूबर को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंगाल आर्डिनेंस जारी कर दिया गया। यह रौलट ऐक्ट का ही सगा भाई था।

दमन का प्रतिवाद

इस आर्डिनेन्स में सुभाष बाबू, जो उन दिनों कारपोरेशन के एक्जिक्यूटिव आफिसर थे तथा बंगाल स्वराज्यपार्टी के अन्य बड़े नेता गिरफ्तार हो गये। इस आर्डिनेन्स के द्वारा बंगाल के सब प्रगतिशीलों पर हमला किया गया। बम्बई में इसी दमन का प्रतिवाद करने के लिये तथा स्वराज्य का एक मसविदा बनाने के लिये २१ तथा २२ नवम्बर को एक सर्वदल-सम्मेलन बुलाया गया।

बेलगांव कांग्रेस

१९२४ के दिसम्बर में महात्मा गांधी के सभापतित्व में बेलगाँव कांग्रेस हुई। गांधीजी ने अपने अभिभाषण में सम्पूर्ण रूप से हिंसा त्याग पर जोर दिया। बेलगाँव में रचनात्मक कार्यक्रम पर जोर दिया गया।

कानपुर का षड़यंत्र

१९२४ का विवरण समाप्त करने के पहले कानपुर षड़यंत्र का उल्लेख करना उचित होगा। १९१७ की क्रान्ति के कारण रूस में समाजवादी राष्ट्र स्थापित हुआ था। स्वाभाविक रूप से उसी समय से रूस क्रान्तिकारियों के लिये तीर्थ स्थान हो गया। समाजवादियों का उद्देश्य केवल यह नहीं है कि एक देश में समाजवाद स्थापित हो, सच तो यह है कि किसी एक देश में तब तक केवल एक हद तक ही समाजवाद स्थापित हो सकता है जब तक देशों में समाजवाद स्थापित न हो। फिर समाजवाद का उद्देश्य अखिल मानव-जाति में शोषण का अन्त है। नरेन्द्र भट्टाचार्य उर्फ एम० एन० राय पहले आतंकवादी क्रान्तिकारी थे। इसी हैसियत में वे अस्त्र-शस्त्र के सिलसिले में बैटेविया भेजे गये थे, पर उधर ही जब पता लगा कि भारत में दमन हो रहा है तो वे घूम-घामकर रूस पहुँचे। वहीं से उन्होंने भारत में पत्र आदि भेजकर समाजवादी संगठन की चेष्टा की। इस सम्बन्ध में यह बता दिया जाय कि भारत में प्रथम समाजवादी संगठन कायम करने का श्रेय श्री सत्यभक्त को है, जो बाद को इस कार्य से अलग होकर हिन्दी पत्रकार रह गये। उनके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चलाये हुए संगठन में सौ के करीव लोग हो गये थे। कानपुर षड़यन्त्र में चार अभियुक्तों को चार-चार साल की सजा हुई थी।

दास की मृत्यु

१६ जून १६२५ को श्री दास का देहान्त हुआ। यह देश के लिये बड़े दुर्भाग्य की बात थी। उनकी मृत्यु से स्वराज्य पार्टी को विशेष-कर नुकसान पहुँचा। फिर भी २१ और २२ सितम्बर को अ० भा० कां० कमेटी की बैठक में स्वराज्य दल की ही जीत रही थी।

कांग्रेस और म्यूनिसिपलटी

इस बीच में गांधीजी के छूटने पर जो कांग्रेस सदस्यता के साथ सूत का बखेड़ा लग गया था, वह जाता रहा। चार आना दे या सूत दे अब यह परिस्थिति रही। कट्टर अपरिवर्तनवादी सूत, चर्खे में ही व्यस्त रहे ऐसा नहीं। अब की बार म्युनिसिपलिटी के चुनावों में उन लोगों ने भाग लिया, और इन संस्थाओं पर कांग्रेस का कब्जा हो गया।

पद लोलुपता तथा विगठन

पर स्वराज्य दल के कुछ लोगों में पद लोलुपता भी जोर मार रही थी। व्यर्थ के विरोध से कुछ फायदा नहीं ज्ञात हो रहा था। मध्यप्रान्त की कौंसिल के स्वराजी सभासद पार्टी की पीठ के पीछे एकाएक गवर्नर की कार्य समिति का पद ग्रहण कर लिया। पं० मोतीलाल ने इसका विरोध किया, और बताया कि कुछ समय से कुछ लोग इसी ओर झुक रहे हैं, यह इसी का नतीजा है। केलकर, जयकर, मुंजे भी स्वराज्य दल की कौंसिल से अलग हो गये।

कानपुर कांग्रेस

१६२५ में कानपुर में श्रीमती सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। श्रीमती नायडू एक कवयित्री के रूप में बहुत प्रसिद्ध थी। वर्षों से वह गांधीजी की शिष्या थी। कानपुर कांग्रेस में बहुत से प्रस्ताव पास हुए। पहले ही बता चुके कि इस समय तक देश में निर्जीवता आ चली थी। स्वराज्य पार्टी का जोश घट रहा था। इस कांग्रेस में यह प्रस्ताव हुआ कि सरकार फरवरी के अन्दर भारतीयों की कम से कम मांग को मान ले या तो फिर स्वराज्य पार्टी धारा-सभाओं से निकल जायेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिखरने की प्रक्रिया

स्वराज्य पार्टी में कुछ लोग थे जो विरोध के कार्यक्रम को पसन्द नहीं करते थे। ऐसे लोगों ने देश के अन्य नरम उपादानों के साथ मिलकर एक नई पार्टी बनाई जिसका नाम 'इंडियन नेशनल पार्टी' पड़ी। कहीं ये लोग बहुत दूर न हट जायँ, इस कारण गान्धी जी ने २१ अप्रैल को साबरमती में एक कानफ्रेन्स बुलाई, जिसमें किसी तरह एक समझौता हुआ। पर यह समझौता टिक न सका। जो लोग बिना कुछ देखे सुने विधानवाद में सरपट कूदना चाहते थे, और विधानवाद को सफल बनाने के लिये कुछ दबाव राजनीति भी करना नहीं चाहते थे, वे कब तक कांग्रेस में टिकते? इनका तो सही स्थान लिबरल फेडरेशन था, और हुआ भी यही, ऐसे लोग अन्त तक हिन्दू महासभा में चले गये।

इन्डिपेन्डेन्ट कांग्रेस पार्टी

कुछ मध्यपंथी जैसे लालाजी और पंडित मदनमोहन मालवीय। १९२६ के नवम्बर में जब आम चुनाव होने को हुआ तो लालाजी स्वराज्य पार्टी से अलग हो गये, और मालवीयजी के साथ मिलकर 'इंडिपेन्डेन्ट कांग्रेस पार्टी, बनाई। अब की बार चुनाव में कोई बहुत अच्छे नतीजे नहीं रहे।

गौहाटी कांग्रेस

ऐसी हालत में १९२६ में श्री श्रीनिवास आयंगर के सभापतित्व में गौहाटी में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस साल बराबर हिन्दू मुस्लिम दंगे होते रहे। ऐन कांग्रेस के अधिवेशन के पहले स्वामी श्रद्धानंद अब्दुर्रशीद नामक मुसलमान आततायी के हाथों से मारे गये। स्वामी श्रद्धानंद कुछ दिनों से शुद्धि आन्दोलन चला रहे थे, और उसमें वे एक हद तक सफल रहे, बस इसी कारण वे धर्मान्ध मुसलमानों के कोप भाजक हुए। मुसलमानों का यह क्रोध गलत इसलिये था कि मुसलमान दूसरे धर्मवालों को अपने में भर्ती करते हैं, फिर उनके क्रोध का क्या कारण था। मैं न शुद्धि का समर्थक हूँ न तनजीम का, पर मैं यह समझता हूँ यदि एक सही है तो दूसरा भी सही है। कुछ भी हो स्वामी श्रद्धानंद की मृत्यु के कारण गौहाटी कांग्रेस में सभापति का हाथी पर जो जुलूस निकलने वाला था, वह बन्द हो गया।

Agamnigam Digital Preservation.Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वही नीरस कार्यक्रम

इस कांग्रेस में वे ही प्रस्ताव आये। महात्माजी ने स्वामी श्रद्धानन्द पर प्रस्ताव रखा, और मुहम्मदअली ने उसका समर्थन किया। केनिया में भारतीयों पर दिन ब दिन अत्याचार की जो वृद्धि हो रही थी, उसकी निन्दा की गई। नजरबन्दों की रिहाई की माँग की गई। इस काँग्रेस में भी पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव आया। सच तो यह है कि अहमदाबाद से बराबर यह प्रस्ताव आ रहा था) और गाँधीजी ने इसका विरोध किया, और प्रस्ताव गिर गया। कहना न होगा कि अब कांग्रेस का अधिवेशन पहले की तरह याने प्राक गाँधी युग की तरह नीरस हो चला था। सीतारमैया ने भी इस बात को स्वीकार करते हुए लिखा है "अब (१६२६) तक काँग्रेस का इतिहास शुभेच्छा पूर्ण प्रस्तावों की तथा कौन्सिलों में बतंगड़ की इकरस कहानी हो चली थी।" ठीक तो है, अब इसमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता थी।

सुभाष रिहा

सुभाष बाबू चार साल की नज़रबन्दी के बाद १७ मई १६२७ को छूट गये। अभी उनके अन्य साथी नहीं छूटे थे। वे स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण ही छूट गये थे।

एका कानफरेन्स

हिन्दू मुसलमानों का सम्बन्ध बराबर बिगड़ता ही गया था। इसको सुधारने के लिये कई एका कानफरेन्स बुलाई गई थी। २७ अक्टूबर को एकाएक कानफरेन्स कलकत्ते में बैठी। इन दिनों सारा झगड़ा मसजिद के सामने बाजा तथा गौकुशी को लेकर होता था। इसलिये कानफरेन्स ने बाजे का समय तथा गौकुशी के स्थान का निर्णय कर दिया। यह सब होता रहा, पर झगड़े नहीं रुके। जब तक झगड़ा करानेवाला था, तब तक कैसे झगड़े रुकते ?

कमीशन की घोषणा

ब्रिटेन में चुनाव नजदीक था। उन दिनों लार्ड इर्विन बड़े लाट थे। वे तथा भारत सरकार अच्छी तरह इस बात को जानते थी कि अब काँग्रेस उतावली हो रही है, देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन भी तेजी से बढ़ रहा था। ऐसी हालत में ब्रिटिश सरकार ने यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घोषित किया कि शासन-विधान की जाँच के लिये एक कमीशन बैठेगा। यह खबर इतनी महत्वपूर्ण समझी गई कि गाँधीजी उन दिनों मंगालार में थे, उन्हें दिल्ली बुलाकर यह खबर दी गई। ८ नवम्बर को साइयन के नेतृत्व में कमीशन आने का निश्चित एलान हो गया।

कमीशन से क्षोभ

कमीशन के ऐलान से जैसे बारूदखाने में चिनगारी पड़ गई। सरकार ने इसका एलान भारतीयों को खुश करने के लिये किया था, पर परिणाम बिलकुल ही उलटा हुआ। काँग्रेस तो खैर इससे खुश हुई ही नहीं, नरमपंथी, लीगी, सब इसके विरुद्ध राय देने लगे। जगह जगह पर पर सभायें हुई, और साइयन कमीशन की निन्दा हुई। इस कमीशन के सातों सदस्य अंग्रेज थे। फिर मांग तो यह थी कि कम से कम राष्ट्रीय मांग मानी जाय, यहां तो वर्षों कमीशन के घूमने तया रिपोर्ट तैयार करने की देर थी।

इस बीच में लीग

इस बीच में लीग के इतिहास को हम देख लें। हम यह तो पहले ही बता आये हैं कि १९२१, २२ तथा २३ लीग का जीवन खतरे में रहा। १९२४ की मई में लीग के पुनरुज्जीवन के लिये लाहौर में उन मुसलमानों की एक सभा हुई जिन्होंने खिलाफत तथा स्वतन्त्रता के संग्राम में कोई भाग नहीं लिया था, और घर बैठे रहे, तथा हजारों की तादाद में जो मुसलमान जेल गये थे, उनसे अलग रहे। इस सभा के सभापति हमारे पूर्व परिचित मिस्टर जिन्ना थे। इस प्रकार लीग की गाड़ी फिर से चल निकली, पर इसके अधिवेशनों में खास बात नहीं होती थी।

लीग के दो टुकड़े

दिसम्बर १९२७ में सर मुहम्मद याकूब के सभापतित्व में लीग का अधिवेशन कलकत्ते में हुआ, जिसमें साइमन कमीशन के बायकाट का प्रस्ताव पास हुआ। यह तय हुआ कि कांग्रेस के साथ मिलकर एक विधान बनाया जाय जिसमें मुसलमानों के हकों की रक्षा हो और सिन्ध अलहदा हो जाय। इसी वर्ष पृथक और सम्मिलित चुनाव के प्रश्न पर मुसलिम लीग में विरोध हो गया था। शौत शफी और जिन्ना लीग नाम से इसके दो टुकड़े हो गये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे। सर मुहम्मद इक़बाल और सर शफी ने पृथक निर्वाचन का पक्ष लिया, और मि० जिन्ना तथा अलीभाइयों ने कुछ शर्तों के साथ सम्मिलित चुनाव का पक्ष लिया। परिणाम यह हुआ कि दिसम्बर १६२७ में एक ही तारीख में लीग के दो अधिवेशन हुए, शफी लीग का लाहौर में और जिन्ना लीग का कलकत्ते में। आगे इन दोनों टुकड़ों में कैसे मेल हुआ यह हम बाद को लिखेंगे।❀

दंगे जारी

१६२७ में बराबर हिन्दू मुसलमान दंगे होते रहे, लाहौर, मुलतान, बरेली, नागपुर आदि स्थानों में दंगे हुए। इनको रोकने के लिये कई एका कानफरेन्स भी हुईं। इन कानफरेन्सों में पहले की तरह शुभेच्छापूर्ण प्रस्ताव हुए जिनका नतीजा कुछ नहीं हुआ क्योंकि जो न्याय करता, वही तो झगड़े करा रहा था।

मद्रास कांग्रेस

१६२७ में डाक्टर अंसारी के सभापतित्व में मद्रास में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। डा० अंसारी बहुत उदार चरित्र के व्यक्ति थे। वे १३१२ में बलकान युद्ध में मेडिकल मिशन के साथ तुर्की में गये मद्रास कांग्रेस में साइमन कमीशन के बायकाट का प्रस्ताव पास हुआ। यह तय हुआ कि जिस दिन कमीशन भारतवर्ष के उपकूल पर पैर डाले, उस दिन सारे देश में प्रदर्शन हो। इस अधिवेशन में काकोरी के शहीदों की फाँसी पर उनके परिवारों के साथ सहानुभूति प्रकट की गई, और जनता के क्षोभ के बावजूद उन्हें फाँसी देने की निन्दा की गई।

काकोरी षड़यंत्र

संक्षेप में यह बता दिया जाय कि काकोरी षड़यंत्र क्या था जिसके शहीदों के लिये कांग्रेस को प्रस्ताव करना पड़ा था। पहले ही हम बता चुके है कि असहयोग की वापसी के बाद क्रान्तिकारी फिर संगठन करने लगे, और श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल उत्तर भारत में संगठन करने लगे। शचीन्द्र बाबू को सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य,

---

❀ लीग का विवरण 'राजनैतिक भारत' से लिया गया जिसका मैं लेखकों में हूँ

—म० गुप्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दामोदर सेठ, विष्णुशरण दुर्वालस, रामप्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लाहिनी आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। इन लोगों की सहायता से और फिर बाद को योगेशचटर्जी के सहयोग उत्तर भारत में एक बहुत ही तगड़ा क्रान्तिकारी संगठन कायम हो गया। दल का उद्देश्य भारत के संयुक्त राष्ट्रों का प्रजातांत्रिक संघ कायम करना था। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये दल की ओर से क्रान्तिकारी पर्चे बांटे गये, अस्त्रशस्त्र इकट्ठे किये गये, और धन के लिये डाके भी डाले गये। संक्षेप में तथ्य यह है कि इस दल की ओर से लखनऊ के पास काकोरी स्टेशन से कुछ फासले पर आठ डाऊन पैसेंजर रोक लिया गया, और उसका खजाना लूट लिया गया। इसी सिलसिले में बाद को गिरफ्तारियाँ हुई, और षड़यंत्र चला। डेढ़ साल तक मुकदमा चला। अभियुक्तों की सफाई के लिये एक कमेटी बनी जिसमें पंडित मोतीलाल नेहरू तथा पंडित जवहरलाल भी थे। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी तथा उनके प्रताप ने इस मुकदमे में विशेष दिल चस्पी ली। पंडित गोयिन्दवल्लभ पंत, चन्द्रभान गुप्ता, मोहन-लाल सक्सेना अभियुक्तों की ओर से वकील थे। अन्त तक इस मुकदमे में सरकार के कोई १५ लाख रुपये खर्च हुए, पंडित रामप्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ो, रोशनसिंह तथा अशफाकउुला को फांसी हुई, अन्य अभियुक्तों को काले पानी से लेकर चार साल तक की सजा हुई। देश में इन सजाओं पर बहुत जोश रहा। केन्द्रीय असेम्बली के चुने हुए सदस्यों की ओर से फांसी की सजा रद करने के लिये दरख्वास्त भी भेजी गई थी, पर फिर भी १७ तथा १६ दिसम्बर को चारों अभियुक्तों को फांसी हो गयी थी।

साइमन कमीशन पर क्षोभ

साइमन कमीशन १६२८ की ३ फरवरी को बम्बई में उतरा। उस दिन सारे देश में हड़ताल मनायी गयी। जहाँ जहाँ कमीशन गया, वहां वहां उसका स्वागत लौट जाओ साइमन के नारे से किया गया। मद्रास की जस्टिस पार्टी तथा कुछ मुस्लिम संस्थाओं के अतिरिक्त सबने इसका वायकाट किया। जिस समय यह कमीशन लखनऊ पहुँचा तो उसके वायकाट के सम्बन्ध में पंडित जवाहरलाल तथा श्री गोविन्दवल्लभ पंत को भी चोटें आयीं। पटना में कमीशन का वायकाट हुआ, सरकार कुछ भाड़े के आदमियों को गाँवों से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फुसलाकर ले आयी थी, पर वे लोग आते ही प्रदर्शनकारीयों में शामिल हो गये। इसी प्रकार सब स्थानों पर हुआ, पर लाहौर में ३० अक्टूबर को जो कुछ हुआ वह बिल्कुल ऐतिहासिक इसलिये हो गया कि उसके साथ लाला लाजपतराए की मृत्यु तथा भगतसिंह का नाम संयुक्त हो गया। लाहौर में लाला जी के नेतृत्व में कमीशन का बायकाट हुआ। लाला जी पर पुलिस की लाठी पड़ी। इसी चोट के बाद उन्होंने जो बिस्तरा पकड़ा तो वे उठे नहीं १७ नवम्बर को मर गये। बाद को क्रान्तिकारी दल ने इसका बदला लेने के लिये भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद तथा अन्य दो क्रान्तिकारियों को भेजकर लाहौर के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर सैन्डर्स को १५ दिसम्बर को चार बजे गोलियों से मरवा दिया। हम यथा समय इसका और विवरण देंगे। क्रान्तिकारी दल ने अपने तरीके से साइमन कमीशन के बहिष्कार की चेष्टा की। काशी से मनमोहन गुप्त, मार्कंडेय सिंह तथा हरेन्द्र बहुत शक्तिशाली बम लेकर इसलिए रवाना हुए थे कि साइमन कमीशन को चलती गाड़ी में ही उड़ा दिया जाय, पर मनमाड में बम फट गया, मार्कंडेय स्वयं शहीद हो गये, और बाकी दो व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गये।

नेहरू रिपोर्ट

मद्रास कांग्रेस में यह प्रस्ताव हुआ था कि एक तरफ तो साइमन कमीशन का बायकाट हो, और दूसरी तरफ देश के लोग एक विधान बनावें। तदनुसार दिल्ली में एक सर्वदल सम्मेलन बुलाया गया था। इस सम्मेलन की ओर से १९ मई को पंडित मोतीलाल नेहरू के सभापतित्व में एक कमेटी बना दी गयी जिस पर यह भार सौंपा गया कि वह भारत के लिये एक विधान बनावे। यही कमेटी नेहरू कमेटी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस कमेटी में अध्यक्ष के अतिरिक्त सर तेजबहादुर सप्रू, सर अली इमाम, श्री अने, सैयद कोरैशी, सुभाषचन्द्र बोस और जी० आर० प्रधान थे। इन लोगों ने बड़े परिश्रम से औपनिवेशिक स्वराज्य के आधार पर एक विधान बनाया। पर किसी किसी मामले में जैसे सामरिक तथा वैदेशिक मामलों में कमेटी ने जो सिफारिशें की, वे औपनि-

२२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेशिक स्वराज्य से भी कम थीं। इस प्रकार का विधान बनाने का ऊपरी उद्देश्य चाहे जो कुछ भी बताया जाय, पर असली उद्देश्य ब्रिटिश सरकार पर प्रभाव डालना था और यह दिखाना था कि हम बहुत कम में संतुष्ट होने के लिये तैयार हैं बशर्ते कि हमें ये चीजें दे दी जायं। कहना न होगा कि यह कदम पुराने माडरेटों के ढंग पर ही था। अवश्य जैसा कि हमने बताया, इसका उद्देश्य यही था कि सरकार इसे मान ले।

इन्डिपेन्डेन्स लीग

सर्वदल सम्मेलन ने नेहरू कमेटी की बनायी हुई रियोर्ट को स्वीकार कर लिया। कांग्रेस के अन्दर इस समय तक कुछ ऐसे लोगों का उद्भव हो चुका था जो औपनिवेशिक स्वराज्य को अपना ध्येय मानने के लिये तैयार नहीं थे। इन लोगों के नेता पंडित जवाहर लाल तथा श्री सुभाष चन्द्र बोस थे। कांग्रेस के अन्दर पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास कराने में असमर्थ रहकर इन लोगों ने इनडिपेन्डेन्स लीग बना ली। ये लोग बराबर प्रत्येक प्रश्न पर इसी दृष्टिकोण से विचार करते थे, और करीब करीब एक पार्टी की तरह काम करते थे। ऐसे लोगों को नेहरू रिपोर्ट स्वीकार्य नहीं हो सकती थी। इन लोगों ने फिर भी इसे इस नाते स्वीकार किया कि इसके आगे उन्हें आन्दोलन का अधिकार रहा।

बारदोली में किसानों की जीत

इस साल की एक प्रसिद्ध घटना यह है कि बारदोली और बोरसात में नये बन्दोबस्त के उपलक्ष्य में लगान बढ़ा दिया गया। इस पर वहां के किसानों की तरफ से यह कहा गया कि आय तो बढ़ी ही नहीं, फिर लगान क्यों बढ़े। बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में किसानों ने सत्याग्रह कर दिया, कई एक महीना आन्दोलन चला तो सरकार को हार माननी पड़ी और एक समझौता हो गया।

कलकत्ता कांग्रेस

१९२८ में कांग्रेस का अधिवेशन पंडित मोती लाल नेहरू की अध्यक्षता में कलकत्ते में हुआ। श्री सुभाषचन्द्र इस मौके पर स्वयंसेवकों के जी. ओ. सी. थे। अभी तक साइमन कमीशन भारतवर्ष का दौरा कर रहा था और सर्वत्र उसका विरोध हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहा था गोरे तथा अधगोरे अखबार इस बायकाट से इतने बौखलाये हुए थे कि उन लोगों ने अपने पत्रों में भारतीय राष्ट्रीयता के सिर को कुचल देने का नारा दिया। पंडित मोती लाल ने अपने अभिभाषण में बायकाट की सफलता का वर्णन किया।

महात्माजी फिर सामने

बहुत दिनों बाद महात्मा गांधी ने कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया। गत दो वर्षों से वे कांग्रेस में आते तो थे पर कोई विशेष भाग नहीं लेते थे। अब की वे सामने आये और उन्होंने नेहरू कमेटी को स्वीकृति सम्बन्धी प्रस्ताव पेश किया। विषय निर्धारिणी कमेटी में इस विषय पर बड़ी चख चख रही, क्योंकि स्वतंत्रता संघ के नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा सुभाष बाबू ने इस पर संशोधन पेश किया। अन्त तक गांधी जी को इस प्रस्ताव में कुछ परिवर्त्तन करना पड़ा। पर बाद को जब यह प्रस्ताव उठाया गया तो सुभाष बाबू ने इस पर एक संशोधन रख दिया जिस का समर्थन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने किया। सीता रमैया ने लिखा है कि सुभाषबाबू तथा पंडित जवाहर लाल दोनों समझौते में शरीक थे, इसलिये गांधी जी बहुत बिगड़ गये और उन्होंने इन लोगों को डांटते हुए यह कहा तुम लोग जिस तरह मुसलमान अल्लाह का नाम लेते हैं, और हिन्दू कृष्ण तथा राम का नाम लेते हैं, उस प्रकार स्वतंत्रता-स्वतंत्रता रट सकते हो, पर इससे कुछ न होगा यदि इस के पीछे सन्मान न हो। यदि तुम लोग अपने वचन पर डटे नहीं रह सकते तो स्वतंत्रता कहां से आयेगी। स्वतंत्रता इस से कठिन चीज की बनी हुई है। बातों के जमाखर्च से स्वतंत्रता नहीं आजाती।"

एक साल की मुहलत

इस कांग्रेस में यह भी प्रस्ताव पास हुआ कि यदि ब्रिटिश पार्लियमेंट १६२६ के ३१ दिसम्बर तक सर्वदल समेलन की मांग को पूर्ण रूप से मान ले तब तो ठीक है, पर यदि इसके पहले या इस तारीख तके मांग न मांगी जाय तो कांग्रेस अहिंसत्माक असहयोग टैक्स बन्दी तथा अन्य उपायों को ग्रहण करेगी।

अगले साल के लिये कांग्रेस में लोगों से रचनात्मक कार्यक्रम अपनाने की अपील की गयी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देशी रिवासतों की चेतावनी

इस अधिवेशन में कांग्रेस ने देशी रियासतों से यह अनुरोध किया कि वे अपने अपने इलाकों में नागरिक अधिकारों को बढ़ावे और प्रजा के मौलक अधिकारों को मान कर प्रतिनिधि मूलक शासन का सूत्रपात करें।

इस कांग्रेस से फिर गांधी जी ने अपने हाथों में कांग्रेस की बागडोर ले ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २१ :

१९३०-३२ का आन्दोलन और उसका अन्त

कांग्रेस दलदल में

यह स्पष्ट था कि अब कांग्रेस विधानवादी कार्यों की असफलता से ऊब चुकी थी। सच तो यह है कि इन दिनों कांग्रेस का प्रभाव देश में बहुत कम हो गया था। प्रत्येक प्रान्त से क्रान्तिकारी आवाजें आ रही थीं। स्वयं कांग्रेस में ही स्वतन्त्रता संघ वालों का जोर बढ़ता जा रहा था। अब औपनिवेशिक स्वराज्य के द्वारा नौजवानों को प्रलुब्ध करना असम्भव था। कांग्रेस ने जो प्रस्ताव पास किया था उसका आशय स्पष्ट था। अब देश में लड़ाई का वातावरण हो रहा था, और लड़ाई को रोकना असम्भव था। विश्वव्यापी आर्थिक मन्दा का भारत पर असर हो रहा था।

इंगलैंड से आशा

साइमन कमीशन १४ अप्रैल को भारत में अपना कार्य समाप्त कर चुका था। मई में इंगलैंड में आम चुनाव होने वाला था। हम थोड़ा आगे बढ़ कर यह बता दें कि इस चुनाव में लेबरपार्टी को अधिक सीटें मिलीं पर इतनी नहीं कि वह स्वयं सरकार बना सके। कुछ भी हो लेबरपार्टी ने दूसरे लोगों से मिलकर सरकार बना ली और रैमसे मैकडोनाल्ड प्रधान मन्त्री तथा वेज्यूड वैंड भारत सचिव हो गये। रैमसे मैकडोनाल्ड भारत पर एक पुस्तक के लेखक थे, तथा जैसा कि हम दिखा चुके हैं। वे कांग्रेस के एक अधिवेशन के सभापति भी बनाये जाने वाले थे। इसलिये उनके पदारूढ़ होते ही देश में एक आशा की लहर दौड़ गयी, पर अभी भारतीयों को यह सीखना बाकी था कि जहाँ तक साम्राज्य सम्बन्धी नीति थी—इंगलैंड की सब पार्टियाँ एक ही तरीके से सोचती थीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मजदूर संगठन

आगे की घटनाओं के वर्णन के पहले हम कुछ पीछे जाकर यह देख ले कि इस बीच में और कौन-सी शक्तियाँ क्या कर रही थी। हम पहले ही कानपुर षड़यन्त्र के वर्णन में यह बता चुके हैं कि रूस के समाजवादी भारत में अपनी शाखा कायम करने के लिये उत्सुक थे। दुनिया के सब देशों में कम्यूनिस्ट पार्टियाँ स्थापित हो रहीं थी। भारत में भी मजदूर आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा था। यह एक बहुत ही ध्यान योग्य बात है कि भारत में मजदूरों को संगठित करने में भी गांधीजी का बहुत बड़ा हाथ रहा है। उन्होंने १९१७ में ही अहमदाबाद में मजदूर संघ की स्थापना की थी। अवश्य उन्होंने मजदूरों को जिस आधार पर संगठित किया था, समाजवादियों के संगठन का उद्देश्य बिल्कुल उसके विपरीत होता है।

मजदूरों की क्रमिक वृद्धि

कुछ भी हो १९२१ में अखिलभारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की बम्बई में स्थापना हुई। उसी समय मजदूरों की संख्या बहुत हो गयी थी। जो आकड़े प्राप्त है उनसे मजदूरों की संख्या जिस प्रकार बढ़ती गयी, वह यों हैं।

साल	कारखानों की संख्या	औसत मजदूर
१८९४	८१५	३४९८१०
१९०२	१५३३	५४१६३४
१९१४	२९३६	९५०९७३
१९१८	३४३६	११२२९२२
१९२२	५१४४	१३६१००२
१९२६	७२५१	१५१८३९१
१९३०	८१४८	१५२८३०२

कम्युनिस्ट पार्टी

यों तो अहमदाबाद कांग्रेस से ही श्री एम० एन० राय लिखित कोई न कोई पर्चा गुप्त रूप से अधिवेशन में बँटा करता था, पर बकायदा कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना कागजी तौर पर १९२६ में मानी जाने पर भी १९२८ में ही कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और ये लोग मजदूरों में काम करने लगे। कम्यूनिस्ट पार्टी रूस के नेताओं के नेतृत्व में काम करती थी, इसमें कुछ फायदे भी थे पर कुछ नुकसान भी थे।

मजदूर और साइमन कमीशन

जब हम ट्रेड यूनियन कांग्रेस की ओर जाते हैं तब हम यह पाते हैं कि यद्यपि उसकी स्थापना सन् २१ में हो गयी और तीसरे अधिवेशन में देश बन्धुदास उसके सभापति हुए, फिर भी १६२७ के दिसम्बर में इसका जो अधिवेशन हुआ, वहीं से इसका महत्व शुरू होता है। इस अधिवेशन में साइमन कमीशन के बहिष्कार चीन की स्वतन्त्रता के लिये लड़ने वालों के साथ सहानुभूति, तथा वहाँ भारतीय फौज भेजने की निन्दा के प्रस्ताव पास हुए। जिस समय साइमन कमीशन बम्बई में उतरा था, उस समय उसके बायकाट के नारे लगाते हुए काले झंडे लिये हुए मजदूरों का एक विराट जुलूस निकला था।

१६२८ में मजदूर

१६२८ भारतीय मजदूरों की इतिहास में मजदूर पूंजीपति संघर्ष के लिये स्मरणीय है। १६ अप्रैल को हड़ताल शुरू हुई। २३ अप्रैल को परशुराम यादव नामक एक मजदूर गोली से मारा गया। १६२८ की हड़ताल से श्रेणी युद्ध की बुनियाद तगड़ी हो गयी।

मेरठ षड्यन्त्र

सरकार को मजदूर आन्दोलन योंही अखर रहा था। इतने में ट्रेड यूनियन कांग्रेस का झरिया अधिवेशन हुआ जिसमें यह तय हुआ कि उसका सम्बन्ध लीग ऐगेनस्ट इमपरिलिजिम से कर दिया जाय। बस २० मार्च १६२६ को वे लोग जिन्होंने बम्बई और बंगाल की हड़ताल में प्रमुख भाग लिया था गिरफ्तार कर लिये गये। यही बाद को मेरठ षड्यन्त्र नाम से मशहूर हुआ। इस षड्यन्त्र में भी श्री एम० एन० राय पर अभियोग था पर वे पकड़े न जा सके। बाद को जब वे भारतवर्ष में चोरी से आये तब उन को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर यही मुकदमा चला। इस षड्यन्त्र में सजा पाने वालों में डांगे, मुजफ्फर अहमद, शौकत उस्मानी का नाम विशेष उल्लेख योग्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाहौर षड़यन्त्र

इसी स्थान पर लाहौर षड़यन्त्र का भी थोड़ा-सा वर्णन दे दिया जाय। काकोरी षड़यन्त्र के बाद क्रान्तिकारी दल का नेतृत्व श्री चन्द्रशेखर आजाद तथा भगतसिंह पर पड़ा। इन लोगों के हाथों में क्रान्तिकारी आन्दोलन करीब करीब एक जन आन्दोलन के रूप में परिणत हो गया। इन लोगों ने न केवल षड़यन्त्र किया बल्कि नौजवान भारत संघ नाम से खुली संस्थाओं को कायम किया जो पंजाब में बहुत दिनों तक कांग्रेस तथा अन्य किसी संस्था से भी अधिक तगड़ी हो गयी। सरदार भगतसिंह केवल इसी कारण प्रसिद्ध नहीं हुए कि उन्होंने मनो वैज्ञानिक मुहूर्त में सब काम किये, बल्कि वे एक बहुत बड़े संगठनकर्त्ता तथा सिद्धान्तवादी भी थे। काकोरी युग में क्रान्तिकारी समिति का नाम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन था, इन लोगों ने इसका नाम बदल कर हिन्दुस्तान से सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशियेसन रख दिया। इस प्रकार इन्होंने साम्यवाद को अपना लिया।

असेम्बली में धड़ाका

भारत में साम्यवाद का प्रचार न हो इस कारण सरकार पब्लिक सेफ्टी बिल तथा ट्रेड डिस्पुट बिल पास करना चाहती थी। इन दोनों का उद्देश्य मजदूर आन्दोलन का दमन था। इन बिलों के सम्बन्ध में देश में बहुत जोश था। ट्रेड डिस्पूट बिल अधिक वोटों से पास हो गया। पब्लिक सेफ्टी बिल विचरार्थ उपस्थित था। सभापति पटेल इस पर अपना निर्णय देने वाले थे। सब लोगों की आँखें उन्हीं को ओर लगी हुई थी ऐसे समय में एकाएक असेम्बली भवन में दर्शकों की गैलरी से एक भयानक बम गिरा। सर जार्ज सूस्टर तथा सर वायनजी दलाल आदि कुछ व्यक्तियों को हल्की चोटें आयीं। बम फेंकने वाले दो नवयुवक थे, एक का नाम सरदार भगतसिंह था और दूसरे का नाम बटुकेश्वर दत्त था।

यतीन्द्रनाथ दास

पहले ही हम सैन्डर्स हत्या कांड का उल्लेख कर चुके हैं।। इन्हीं सब घटनाओं को लेकर लाहौर षड़यन्त्र चला। और इस समय की घटनाओं में लाहौर तथा मेरठ षड़यन्त्र का।एक बहुत ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रमुख स्थान है। लाहौर षड़यन्त्र के श्री यतीन्द्रनाथ दास ने अपने साथियों के साथ राजनैतिक कैदियों के लिये विषेष व्यवहार की मांग कर अनशन किया, और ६२ दिन अनशन कर वे १३ सितम्बर को शहीद हो गये। इन्हीं दिनो बर्मा के फूंजी विजय ने १६४ दिन अनशन के बाद प्राण त्याग दिया। यतीन्द्रनाथ लाहौर में मरे, पर अर्थी शव वहाँ से कलकत्ता भेजा गया। प्रत्येक स्टेशन पर अपार भीड़ रही। ६ लाख आदमी कलकत्ते में उनकी अर्थी के साथ मौजूद थे।

एशियाई संघ

कलकत्ता काँग्रेस ने कार्यसमिति को यह हिदायत दी थी कि अखिल-भारतीय काँग्रेस कमेटी के साथ वैदेशिक विभाग खोला जाय और साथ ही जल्दी से जल्दी एक एशियाई काँग्रेस बुलायी जाय। हम पहले ही दिखा चुके हैं कि देशबन्धुदास ने गया काँग्रेस में ही इस प्रकार का नारा दिया था। १९४७ में ही काँग्रेस नेताओं का यह स्वप्न सफल हो सका।

इरविन का सब्ज बाग़

महात्मा गांधी बराबर देश का दौरा करते रहे। इस बीच में लार्ड इरविन छुट्टी में इङ्गलैण्ड गए हुए थे। वे १६ अक्टूबर को लौट आये और ३१ अक्टूबर को उन्होंने यह घोषणा कर दो कि भारत के लिये एक शासन विधान बनाया जाय। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इस उद्देश्य से एक गोलमेज कान्फ्रेन्स बुलायी जायेगी। लार्ड इरविन का यह बयान पूरा सब्ज बाग़ था, एक हद तक नेतागण इस पर रीझ गये, पर साथ ही साथ उन्होंने यह मांग पेश की कि कुछ बातों में जो अस्पष्टता है उसे दूर कर साफ साफ बात बतायी जाय। विशेष कर यह पूछा गया कि सरकार गोलमेज निश्चित रूप से इसलिये बुला रही है या नहीं कि औपनिवेशिक स्वराज्य का विधान बनाया जाय। जब काँग्रेस कार्यसमिति की तरफ से इस प्रकार का बयान दिया गया तो सुभाष बाबू ने उससे इस्तीफा दे दिया।

जले पर नमक

नेताओं ने जिन बातों के सम्बन्ध में गारेन्टी मांगी उस सम्बन्ध

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में सरकार की ओर से कोई विशेष बात नहीं कही गयी। इसके विपरीति पार्लियामेंट में उसी वेज उडवेन ने जो भारत के मित्र रूप में एक बार कांग्रेस में बोले थे पार्लियामेंट में यह कहा कि भारतीय-गण तो व्यवहारिक रूप से तो औपनिवेशिक स्वराज्य तो पा ही चुके हैं। उनका यह कहना था कि राजसंघ में भारतीय सदस्य हों। साम्राज्य सम्मेलन में भारतीय सदस्य है। फिर औपनिवेशिक स्वराज्ज में कमी क्या? वेज्यूउडवेन के इस बयान से परिस्थिति और बिगड़ गयी। २३ दिसम्वर को इन्हीं सब बातों के सम्वन्ध में सफ़ाई करने में बड़े लाट लार्ड इरविन तथा महात्माजी, मोतीलाल नेहरू, जिन्ना, पंडित मालवीय, विट्ठल भाई पटेल का मिलना तय हुआ।

वायसराय की गाड़ी पर बम

लार्ड इरविन कहीं बाहर थे नेताओं से बात-चीत करने के लिये वे उसी दिन दिल्ली लौट रहे थे। उधर कई दिन पहले ही से क्रान्तिकारीगण वायसराय की टोह में रेल लाइन के नीचे बम लगाये हुए प्रतीक्षा कर रहे थे। जब वायसराय की गाड़ी बमों के ऊपर आई तो बटन दवा दिया गया, और बड़े जोर का धड़ाका हुआ। थोड़ी देर हो गयी, यानी कई एक सेकेन्ड की देर हो गयी, इसलिये वायसराय का डिब्बा न उड़कर उससे तीसरा डब्बा उड़ गया। इस कार्य में चन्द्रशेखर आजाद, बाद के लब्ध प्रतिष्ठ हिन्दी लेखक यशपाल का प्रमुख भाग बताया जाता है।

कोई गारण्टी नहीं

वायसराय नेताओं को इस किस्म की कोई गारण्टी नहीं दे सके कि जो गोलमेज बुलायी जायेगी, उस में ओपनिवेशिक स्वराज्य दिया जायेगा इस प्रकार यह प्रमाणित हो गया कि लार्ड इरविन ने ३१ अक्टूवर को जो घोषणा की थी, वह केवल भारतीयों को धोखे में डालकर निस्क्रिय कर देने के लिये किया गया था। एक अनुमान यह भी है कि लेबर सरकार कुछ करना चाहती थी, पर वायसराय के ३१ अक्टूवर वाली घोषणा से पार्लियामेन्ट में इतना कोहराम मचा कि लेबरमेनियों को पीछे हट जाना पड़ा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाहौर कांग्रेस

१९२९ की कांग्रेस लाहौर में पंडित जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में हुई। पंडितजी जब से योरोप से लौट आये थे, तब से बराबर पूर्ण स्वतंत्रता और समाजवाद का नारा दे रहे थे। इसे कहने में कोई भी हिचकिचाहट नहीं है कि उस समय तक पंडित जी ने समाजवाद को जनप्रिय बनाने में सबसे प्रमुख हाथ बटाया था। ऐसे समय में पंडित जवाहरलाल नेहरू को सभापति का आसन देना पुराने नेताओं के लिये बहुत ही बुद्धिमत्ता की बात थी क्योंकि लाहौर में विचारों का प्रबल संघर्ष होने वाला था। कलकत्ता कांग्रेस में ब्रिटिश सरकार को जो चरम पत्र दिया गया था, उसके उत्तर में बच्चों को बहलाने के उपयुक्त सब्ज बाग दिखाया गया था और जब इस सब्ज बाग की जांच की गयी तो पता लगा कि वह एक मरीचिका मात्र है। नौजवान दल जोरों पर था। लाहौर तथा मेरठ षड़यन्त्र के कारण लोगों का जोश उबलने के बिन्दु तक पहुँच रहा था। खुले क्षेत्र में पीड़ित जवाहरलाल और सुभाषबाबू इनके नेता थे, पर इनके हृदयों में भगतसिंह तथा यतीन्द्रदास बसे हुए थे।

पंडितजी का सिंहनाद

पंडितजी ने अपने अभिभाषण में अपने को एक प्रजातंत्रवादी तथा समाजवादी घोषित किया। उन्होंने कहा कि उन्हें राजाओं में कोई विश्वास नहीं। उन्होंने रणनीति की तौर पर अहिंसा की प्रशंसा की। उन्होंने यह साफ कर दिया कि उनके निकट स्वतन्त्रता का अर्थ ब्रिटिश सम्बन्ध से बिल्कुल अलग हो जाना है।

संग्राम का प्रारम्भ

इस अधिवेशन में लाट साहब की गाड़ी पर आक्रमण की बहुत कड़े शब्दों में निन्दा की गयी। मद्रास कांग्रेस में ही पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास हो गया था, पर यह प्रस्ताव बिल्कुल निरर्थक था यह कलकत्ते में नेहरू रिपोर्ट की स्वीकृति तथा इस बीच में होने वाली अन्य घटनाओं से साबित हो गया था। अतएव कलकत्ता कांग्रेस के निश्चय के अनुसार १ साल की मियाद बीत जाने पर ३१ वीं दिसम्बर को १२ बजे रात के बाद पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पास कर दिया गया। अब यह कह दिया गया कि नेहरू रिपोर्ट की पूर्ति से भी भारत संतुष्ट नहीं हो सकता, असेम्बली तथा कौंसिल के सदस्यों को यह हिदायत दी गयी कि वे अपनी धारा सभाओं की सदस्यता से इस्तिफा दे दें। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को यह अधिकार दिया गया कि वह पूर्ण स्वतन्त्रता को ध्येय मानकर आन्दोलन शुरू कर दें और उसे यह भी अधिकार दिया गया कि वह जब और जहाँ चाहे करबन्दी तथा सत्याग्रह का आन्दोलन चलाये।

सुभाषबाबू की नई पार्टी

लाहौर कांग्रेस ने एक तरह से कांग्रेस में तथा देश में नये सिरे से जान फूँक दी। सुभाषबाबू ने इस अवसर पर श्रीनिवास आयंगर से मिलकर कांग्रेस डिमोक्रेटिव पार्टी नाम से एक दल की स्थापना की चेष्टा की। अब की बार पंडित जवाहरलाल उनके साथ नहीं थे। वे तो कांग्रेस के सभापति थे। कुछ भी हो यह पार्टी पनप नहीं सकी और पैदा होते ही सौर में मर गयी क्यकि उसके बाद इस पार्टी के सम्बन्ध में कुछ सुनाई नहीं पड़ा अवश्य इसके कुछ ही दिनों बाद वे गिरफ्तार हो गये, फिर पार्टी कौन बनाता ?

स्वतन्त्रता दिवस

लाहौर कांग्रेस के बाद से प्रत्येक २६ जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है, तया स्वतन्त्रता सम्बन्धो प्रतिज्ञापत्र पढ़ा जाता है। इस प्रतिज्ञा पत्र में यह कहा गया कि भारतीयो को स्वतन्त्रता प्राप्त करने का अविच्छेय अधिकार है क्योंकि ब्रिटिश शासन से भारतवर्ष का आर्थिक, राष्ट्रीय, नैतिक तथा सांस्कृतिक पतन हुआ है।

देश में जोश

२६ जनवरी को सारे भारतवर्ष में स्वतन्त्रता दिवस जिस जोश के साथ मनाया गया, इससे यह ज्ञात हो गया कि देश में कितना प्रबल जोश है। २५ जनवरी को वायसराय ने धारा सभा के सम्मुख जो भाषण दिया था उससे यह साफ हो गया था कि सरकार कुछ देना लेना नहीं चाहती। इस कारण स्वतन्त्रता दिवस और भी जोरों से मनाया गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गांधीजी की ग्यारह शर्तें

महात्मा गांधी ने सरकार की सच्चाई की परीक्षा करने के लिये ११ शर्तें रक्खीं—

(१) सम्पूर्ण मादक द्रव्य निषेध।

(२) एक रुपया एक शिलिङ्ग चार पेंस के बराबर हो।

(३) लगान कम से कम आधा कर दिया जाय, और इसे धारा सभा के अधीन कर दिया जाय।

(४) नमक कर उठा लिया जाय।

(५) सामरिक खर्चा प्रारम्भिक तौर पर आधा कर दिया जाय।

(६) लगान की कमी को देखते हुए बड़ी-बड़ी नौकरियों के वेतन कम से कम आधे कर दिये जायँ।

(७) विदेशी कपड़ों के आयात पर निषेधात्मक-कर लगाया जाय।

(८) भारतीय समुद्र तट को केवल भारतीय जहाजों के लिये सुरक्षित करके कानून बनाया जाय।

(९) जिन राजनैतिक कैदियों को हत्या या हत्या के प्रयत्न में सजा मिली है, उनके अतिरिक्त सब राजनैतिक कैदियों को छोड़ दिया जाय, या मामूली कानूनी ट्रिब्यूनलों में उनका मुकदमा चलाया जाय; सब राजनैतिक मुकदमें वापस ले लिये जायँ, १२४ अलिफ तथा १८१८ के रेगूलेशन ३ को रद्द कर दिया जाय! और भारत के बाहर जो देश निकाला पाये हुए लोग हैं उन्हें लौटने दिया जाय।

(१०) खुफिया पुलिस का महकमा तोड़ दिया जाय, अथवा उसे जनता के अधिकार में रखा जाय।

(११) सबको आत्म-रक्षार्थ हथियार रखने का लाइसेंस मिले, और जनता का उस पर अधिकार हो।

सरकार तैयार नहीं

कहना न होगा कि सरकार ने इन बातों को मंजूर नहीं किया। फरवरी तक कांग्रेस की ओर से धारा सभा में गये हुए सब सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया। इस बीच में धर-पकड़ भी शुरू हो गयी, और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुभाष बाबू तथा और उनके ग्यारह साथी २३ जनवरी को गिरफ़्तार कर लिये गये ।

कैदियों का वर्गीकरण

हम पहले ही बता चुके हैं कि यतीन्द्रनाथदास राजनैतिक कैदियों की मांगों के लिये अनशन करते हुए शहीद हो गये थे । इसीके फल-स्वरूप पंजाब में जेल कमेटी बैठी । लाहौर के क्रान्तिकारी कैदियों ने यह समझा कि कहीं कमेटी बनाकर सरकार समय निकाल तो नहीं रही है, जिससे कि उन्हें सजा हो जाय और वे काकोरी वालों की तरह सरकार द्वारा उल्लू न बनाये जायँ । इसके अतिरिक्त उन्होंने यह सोचा कि यतीन्द्रनाथ दास का त्याग व्यर्थ न जाय । इसलिये उन्होंने यतीन्द्रनाथ दास की मांगों को लेकर अनशन कर दिया । साम्राज्यवाद के विरुद्ध जेलों के अन्दर संग्राम में इस अनशन का विशेष महत्व है । इस अनशन में तीन काकोरी कैदियों ने (राजकुमार, शचीन्द्रनाथ, मन्मथनाथ) ने भाग लिया, और वे भगतसिंह आदि के बाद तक याने तब तक डटे रहे जब तक उनका वर्गीकरण नहीं हुआ । कांग्रेस कार्य समिति ने अपने १४, १५, १६ फरवरी के अधिवेशन में इन पर भी एक प्रस्ताव पास किया। सरकार ने १९ फरवरी को एक विज्ञप्ति निकालकर जेल में ए० बी० सी० श्रेणियों की सृष्टि की । इससे यतीन्द्रनाथ की मांगें पूरी नहीं हुई, पर कुछ तरक्की हुई । सरकार ने इस वर्गीकरण में राजनैतिक या अराजनैतिक कोई बात नहीं रखी, उसने हैसियत पर यह वर्गीकरण किया ।

डाँडी यात्रा

१४, १५ और १६ अप्रैल को साबरमती में कांग्रेस कार्यसमिति की एक बैठक हुई । इसमें गांधीजी ने यह घोषणा कर दी कि पहले वे सत्याग्रह करेंगे । इसी अवसर पर उन्होंने इस बात की भी घोषणा कर दी कि वे नमक सत्याग्रह से काम शुरू करेंगे । महात्मा जी ने २ मार्च को इसी आशय का एक पत्र लार्ड इरविन को लिख भेजा । १२ मार्च से गांधीजी ने ७९ आश्रमवासियों के साथ डांडी यात्रा शुरू कर दी । पहले ही से देशी तथा विदेशी अखबारों के सम्वाददाता वहाँ पर मौजूद थे, और यह यात्रा बड़े ही नाटकीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ढंग से चलती रही। कार्यक्रम यह था कि समुद्र किनारे पहुँच कर वे सामुद्रिक जल से नमक बनायेंगे : डांडी पहुँचने के रास्ते में जितने भी पड़ाव हुए, गांधीजी सर्वत्र व्याख्यान देते गये। हजारों की भीड़ उनके व्याख्यान को सुनने के लिये एकत्र होती थी।

नमक सत्याग्रह पर दमन

५ अप्रैल को गांधीजी डांडी पहुँचे। फिर उन्होंने वहाँ पर कार्यक्रम के मुताबिक नमक कानून तोड़ा। गांधीजी ने कार्यक्रम को इस तरह से रखा था कि ६ अप्रैल से ही राष्ट्रीय सप्ताह पड़ता था। स्मरण रहे कि यह राष्ट्रीय सप्ताह जलियान वाला बाग की स्मृति में मनाया जाता था। गांधीजी ने यह तय किया था कि ५ अप्रैल को वे कानून तोड़कर नमक बनायेंगे, और ६ अप्रैल से सार्वजनिक रूप से नमक बनाना शुरू हो जायेगा। यों तो सरकारी प्रवक्ताओं ने यह कहा था कि जिस तरह से गांधीजी नमक बनाने को कहते हैं, उसमें खर्चा अधिक पड़ेगा, पर जब सार्वजनिक रूप से नमक बनाना शुरू हो गया, तब सरकार के कान खड़े हो गये, और दमन का दौर-दौरा शुरू हो गया। नमक बनाने में सत्याग्रहियों का उद्देश्य आर्थिक नहीं बल्कि राजनैतिक था। गांधीजी के बहुत से अनुयायियों ने भी नमक सत्याग्रह का नाम सुनकर नाक भौंह सिकोड़ा था, पर वे यह नहीं जानते थे कि गांधीजी की नाटकीय बुद्धि बहुत जबर्दस्त थी, और वे इस बात को जानते थे कि किस प्रकार जनता के मन पर प्रभाव पैदा किया जाता है।

गिरफ्तार न होने पर अन्य उपाय

पर एक मामले में गांधी जी को धोखा हुआ। वे यह समझते थे कि डांडी में नमक बनाते ही वे गिरफ्तार कर लिये जायेंगे, पर ऐसा नहीं हुआ। तब गांधी जी इधर घूमते रहे और सोचते रहे। गांधी जी के तरीके में गिरफ्तार होना ही सफलता था प्रारम्भ था, इसलिये जब वे डांडी में गिरफ्तार न हो सके तो उन्होंने एक दूसरा कार्यक्रम बनाया। धरसना में सरकारी नमक का गोदाम था। गांधी जी ने यह तय किया कि इस गोदाम पर धावा बोलकर सरकारी नमक पर कब्जा कर लिया जाय। यह कहा गया कि जिस प्रकार पानी और हवा पर सबका अधिकार है, उसी प्रकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमक पर सबका अधिकार है। यदि सरकार ने नमक इट्ठा कर रखा है तो यह अन्याय है। अवश्य यह धावा अहिंसात्मक तरीके से होने वाला था।

गांधीजी गिरफ्तार

गांधी जी ने धरसना पर धावा बोलने के पहले वायसराय को पत्र लिखा। अब सरकार के लिये चुपचाप रहना असम्भव हो गया क्योंकि यद्यपि सिद्धान्तिक रूप से कांग्रेस अब भी अहिंसा पर डटी ही थी, पर धरसना पर धावा से परिस्थिति बिगड़ने का डर था। अब सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करना तय किया, और ५ मई को दिन के १ बजकर १० मिनट पर वे गिरफ्तार कर लिये गये।

नमक गुदामों पर हमला

गांधीजी की गिरफ्तारी से आन्दोलन को बहुत उत्तेजना मिली। भारत भर में जोर की हड़ताल हुई। गांधी जी के बाद धरसना पर धावा करने के लिये वृद्ध नेता अब्बास तैयबजी चुने गये। वे भी गिरफ्तार हो गये। इसके बाद श्रीमती नायूडू सामने आयीं। वह भी गिरफ्तार हो गयीं। फिर तो आमतरीके से धरसना पर स्वयंसेवकों का धावा होने लगा। सरकार की तरफ से लाठी चार्ज की नीति बरती जाने लगी। धरसना की तरह अन्य नमक के गोदामों पर भी हमले शुरू हुए। और कहीं कहीं तो स्वयंसेवक नमक लेकर भागने में समर्थ हुए।

आन्दोलन का विस्तृत रूप

गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद इलाहाबाद में कार्यसमिति की बैठक हुई। इस में यह तय हुआ कि नमक सत्याग्रह तो जारी रखा ही जाय पर साथ ही साथ सत्याग्रह के क्षेत्र को विस्तृत किया जाय। कार्यसमिति ने यह तय किया कि विदेशी वस्त्र का पूर्ण बायकाट किया जाय, जो स्टाफ मौजूद है, उसे बेचा न जाय, और कपड़ों के जो आर्डर विदेशों में दिये गये हैं, उन्हें मन्सूख कर दिया जाय। कमेटी ने यह तय किया कि जिन स्थानों में जमीन का रैयतवारी बन्दोबस्त है जैसे महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र, तामिलनांड, तथा पञ्जाब में लगान बन्दी की जाय, और बंगाल बिहार तथा उड़ीसा में चौकीदारी टैक्स न दिया जाय। कार्यसमिति ने यह राय दी कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जंगल कानून तोड़ा जा सकता है, और जो भी इस प्रकार के अन्य कानून हैं वे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की आज्ञा से तोड़ा जा सकते हैं। समिति ने विलायती बैंक, बीमा, जहाज तथा अन्य कम्पनियों के बायकाट का भी नारा दिया। इस बीच लार्ड इरविन ने एक आर्डिनेन्स से प्रेसकी स्वतन्त्रता करीब करीब खतम कर दी; इसके प्रतिवाद में कई अखबारों ने प्रकाशन बन्द कर दिया था। कार्य-समिति ने इनकी सराहना करते हुए अन्य अखबारों से भी ऐसा करने के लिये कहा।

सफल बायकाट तथा धावे

इन दिनों विदेशी वस्त्र का बायकाट इतने ढंग से हुआ कि दूकानों में माल पड़ा पड़ा सड़ता रहा। प्रत्येक शहर और गांवों में नमक सत्याग्रह हुआ। नमक के किसी किसी कारखाने पर १५ हजार लोगों ने एक साथ हमला किया। बडाला में ऐसा ही हुआ। कर्नाटक में शनीकट्टा में दस हजार से १५ हजार लोगों ने एक एक बार में एक साथ हमला किया, और वे हजारों मन नमक उठा कर ले गये।

स्वराज्य के सार की मांग

२० मई को लन्दन के डेलीहेराल्ड के प्रतिनिधि मिस्टर जार्ज सोलोकोम्ब गांधीजी से मिले, और उन्होंने विलायत में अपने अखबार में यह लिखा कि गांधी जी इस समय भी सत्याग्रह को स्थगित करने के लिये तैयार हैं बशर्ते कि जो गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाय उसके सम्बन्ध में यह वादा किया जाय कि उससे जो विधान बनेगा उस में स्वराज्य का सार दिया जायेगा, साथ ही नमक कानून उठा लिया जाय, शराबबन्दी की जाय और विदेशी वस्त्र पर रोक लगादी जाय, राजनैतिक कैदियों को छोड़ा जाय। इस प्रकार गांधी जी ने यह कहा कि दी हुई २१ शर्तों में से ४ शर्तें ही मानी जाय तो सत्याग्रह बन्द हो सकता है।

दमन का तांता

सरकार ने इन बातों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। अखबार तथा कार्य कर्त्ताओं का दमन तथा गिरफ्तारी जारी रही।

२३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३१ अखबारों से दो लाख चालीस हजार की जमानत ली गयी। धीरे-धीरे कांग्रेस कमेटियां भी गैर कानूनी करार दी जाने लगीं, और जून के अन्त में कांग्रेस की कार्यसमिति भी गैर कानूनी करार दी गयी, और पण्डित मोतीलाल नेहरू भी गिरफ्तार हो गये।

भयंकर अत्याचार

यह सम्भव नहीं है कि इस समय की गिरफ्तारियों का ब्यौरे में वर्णन किया जाय। इतना ही कहना यथेष्ठ होगा कि गिरफ्तारी, गोली चलाना तथा लाठी चार्ज आम बात हो गयी। पेशावर में पठानों ने इस समय विशेष बहादुरी दिखलायी। इसके लिये सारा श्रेय खान बन्धुओं को है। खान अब्दुलगफ्फारखाँ बहुत पुराने जन सेवक थे। १९११ में उन्होंने एक संस्था कायम की जिसका नाम अफ़गानयूथ लीग था। १९२८ ने उन्होंने खुदाई खिद्मतगार आन्दोलन का प्रारम्भ किया। १९३० से यह संस्था काँग्रेस के अन्तर्गत हो गयी। इस समय खुदाई खिद्मतगारों पर बड़े से बड़े अत्याचार हुए। लोगों को अपमानित करने के लिए जबर्दस्ती पकड़ कर माफीनामे पर अंगूठा लगवाया जाता था, फिर वह सबको दिखलाया जाता था। बहुत से वीर पठानों ने इस पर अंगूठा ही कटवा डाला कि न रहे बांस, न बजे बांसुरी। खान अब्दुलगफारख़ाँ के घर में आग लगा दी गई। उनके भाई डाक्टर खान साहब का मकान जमींदोज कर दिया गया। अरबाब अब्दुल गफूर को बेंत लगाया गया। लोगों को कपड़े उतार कर सार्वजनिक स्थान में नंगा कर दिया गया। पेशावर की घटनायें खुद ही एक कहानी है। पेशावर में अङ्गरेजी राज्य कई दिनों के लिये खतम सा हो गया था। सेना भी प्रभावित हुई थी। गढ़वालियों ने जनता पर गोली चलाने से इन्कार किया। शोलापुर में भी अपनी सरकार हो गयी थी।

लगान बन्दी का जोर

लगानबन्दी का आन्दोलन का विशेषकर गुजरात, कर्नाटक, संयुक्त-प्रान्त बंगाल में जोर रहा। गुजरात के हजारों लोग तो लगान बन्दी के बाद जाकर बड़ौदा में बस गये। बंगाल के मेदिनीपुर के काँथी नामक स्थान के लोगों ने विशेष बहादुरी दिखलायी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चटगाँव शस्त्रागार काण्ड

इस बीच में क्रान्तिकारी क्या कर रहे थे यह एक प्रश्न है। गांधीजी डांडी में ५ अप्रैल को पहुँचे और १८ अप्रैल को चटगांव के करीब ७४ नौजवानों ने मिलकर एक साथ पुलिस लाइन, टेलीफोन एक्सचेंज पर आक्रमण कर दिया। ये लोग चार टुकड़ियों में बटे थे। सबसे पहले टेलीफोन और तार जो चटगाँव को ढाका तथा कलकत्ते से जोड़ते थे काट दिये गये, और उनमें आग लगा दी गयी। एक टुकड़ी जब यह काम कर रही थी तो दूसरी टुकड़ी ने रेल की कुछ लाइनें काट दीं। जो दल एफ० आर० हेडकार्टस में गया था, उसने सर्जन मेजर, एक संतरी तथा एक सिपाही को वहीं गोली से मार दिया। वहाँ जितनी भी रायफलें, पिस्तौलें आदि मिलीं, उन पर क्रान्तिकारियों का कब्जा हो गया। एक लोविसगन भी ले लिया गया। पुलिस लाइन वाली जो टुकड़ी थी वह सबसे बड़ी थी। उसने पुलिस लाइन के संतरी को मार डाला, मेगजीन लूट ली, और वहाँ आग लगा दी। जिला मैजिस्ट्रेट रात १२ बजे आये, पर क्रान्तिकारियों ने उनका बुरा हाल किया उनके सन्तरी तथा मोटर ड्राइवर को खतम कर दिया गया। सरकार की तरफ से तोप से भी काम लिया जाने लगा। तब क्रान्तिकारी भागकर जलालाबाद पहाड़ी पर गये। अन्त तक लड़ाई में क्रान्तकारी हार गये उनमें से १६ तो जलालाबाद की पहाड़ी पर शहीद हुए। इस प्रकार क्रान्तिकारियों ने देश के इस ऐतिहासिक अवसर पर उसके सामने एक आदर्श रखना चाहा। चटगाँव वालों का यह उद्देश्य था कि लोग उनके उदाहरणों को अपना कर शक्ति पर कब्जा करें। इन्हीं दिनों और भी घटनायें हुई जिनका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता है।

सप्रू-जयकर वार्ता

जुलाई १६३० में सर तेज बहादुर सप्रू और एम० अ र० जयकर ने सरकार और काँग्रेस के बीच एक वार्ता चलायी, इसी सम्बन्ध में वे जेल में नेताओं से मिले। पर इसका कोई विशेष नतीजा नहीं निकला। इस सम्बन्ध में पण्डित मोतीलाल नेहरू, जवाहरलालजी और डाक्टर सैयद महमूद यरवदा जेल में गाँधी जी से मिलाये भी गये थे। जब यह चेष्टा व्यर्थ गयी, मिस्टर होरेश अलेक्जेंडर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नामक एक अध्यापक ने भी समझौते की चेष्टा की, पर उनकी भी चेष्टा व्यर्थ गयी।

गोलमेज

सरकार ने १२ नवम्बर १६३० को लन्दन में गोलमेज की बैठक बुलायी। इस बैठक में राजाओं की तरफ से १६ ब्रिटिश भारत से ५६ तथा विलायत से १३ प्रतिनिधि लिये गये। कहना न होगा कि इसमें काँग्रेस का कोई प्रतिनिधि नहीं था। और जो लोग प्रतिनिधि बनाये गये वे सरकार द्वारा नामजद किये हुए थे। इस कानफ्रेंस में उपस्थित भारतीयों में श्री निवास शास्त्री तथा मिस्टर जिन्ना प्रमुख थे। ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मिस्टर मैकडोनल्ड ने गोल-मोल बातें शुरू कीं। यह कानफरेन्स तो केवल अकड़ के मारे बुलायी गयी थी। थोड़े ही दिनों में सबने यह समझ लिया कि इस कानफरेंस से कोई मतलब हल नहीं होगा।

नेतागण रिहा

२५ जनवरी १६३१ को वायसराय ने एक वक्तव्य प्रकाशित कर १६३० की पहली जनवरी से जितने लोग कार्यसमिति के मेम्बर हुए थे, उनको रिहा कर दिया। पण्डित मोतीलालजी बीमारी के कारण पहले ही छूट चुके थे। साथ ही कांग्रेस कार्य समिति पर से सब तरह की रोक उठा ली गयी। पर एक तरफ तो सत्याग्रह जारी रहा, और दूसरी तरफ गिरफ्तारियां जारी रहीं। कार्य समिति के मौलिक तथा बाद के सब सदस्य ३१ जनवरी को इलाहाबाद में एकत्र हो चुके थे। पर इस बीच में लन्दन से श्रीनिवास शास्त्री तथा श्री सप्रू ने तार भेजा था कि अभी कोई फैसला न करें। आपसी आलोचना होती रही, पर कोई फैसला प्रकाशित नहीं किया गया। इसी बीच में ६ फरवरी १६३१ को पण्डित मोतीलाल का देहान्त हुआ। सारा देश शोकमग्न हो गया। देश अपने इतिहास के अवसर पर ऐसे महान् नेता की सेवाओं से वंचित हो गया।

इस बीच में लन्दन से सप्रू तथा शास्त्री लौट आये। उनके जरिये से यह तय हुआ कि महात्माजी १७ फरवरी को लार्ड इरविन से मिले। ऐसा मालूम होता था कि अब कुछ होकर ही रहेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्रशेखर आज़ाद

इन्हीं दिनों क्रान्तिकारियों के महान नेता श्री चन्द्रशेखर आज़ाद पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिले। पंडित जी ने इसका विवरण अपनी आत्मकथा में लिखा है। श्री आजाद का उद्देश्य यह था कि यदि कोई समझौता हो तो जेल के अन्दर बन्द सैकड़ों क्रान्तिकारियों को न भूला जाय। उन्होंने पंडित जी को यह भा समझा दिया कि आतंकवाद में अब किसी को विश्वास नहीं है, और जो क्रान्तिकारी भागते फिर रहें हैं, वे बहुत कुछ इस कारण भागते फिर रहें हैं, कि उनके सामने और कोई रास्ता नहीं है। इसी प्रकार किसी सिलसिले में घूमते हुए वे २७ फरवरी को इलाहाबाद के एक पार्क में पुलिस द्वारा घेर लिये गये और दोनों तरफ से गोलियां चलने के बाद वे शहीद हो गये।

गांधी-इर्विन पैक्ट

गांधीजी तथा वायसराय में सुदीर्घ बातचीत के बाद ५ मार्च को एक समझौता हुआ। यही समझौता गांधी इरविन पैक्ट नाम से प्रसिद्ध है। यह सन्धि बहुत महत्व पूर्ण है, इसलिये संक्षेप में दिया जाता है।

(१) मिस्टर गांधी और वायसराय के बीच बातचीत होकर एक अस्थायी सन्धि हुई है; इसलिये सत्याग्रह स्थागित कर दिया गया, और सरकार की ओर से भी तदनुकूल कार्यवाई की जाय।

(२) शासनविधान के प्रश्नों पर आगे विचार होगा, किन्तु उसके सम्बन्ध में मुख्य बातें इस प्रकार तय हो गयी:—

(क) शासन का स्वरूप फेडरेशन होगा। (ख) केन्द्र में उत्तर दायित्व रहेगा। (ग) विदेशी नीति, रक्षा आदि भारत के हित की दृष्टि से रखें जायेंगे।

(३) गोलमेज़ कानफरेंस में कांग्रेस के प्रतिनिधि लिये जायेंगे।

(४) सन्धि का सम्बन्ध सत्याग्रह अन्दोलन से है।

(५) सत्याग्रह अन्दोलनअसली रूपमेंबन्द कर दिया जायेगा।

(६) विदेशी कपड़ों के बहिस्कार का राजनैतिक रूप हटा लिया जायेगा। आगे ऐसा बहिस्कार केवल आर्थिक उन्नति के लिये किया जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(७) शराब और विलयती कपड़ों पर धरना कानूनी हद के भीतर रहेगा।

(८) पुलिस के अत्याचारों की जांच के लिये मिस्टर गांधी ने अपना आग्रह वापस ले लिया। केवल सरकार का ध्यान उस ओर आकर्षित कर दिया गया।

(९) दमन बन्द किया जायेगा।

(१०) आर्डिनेन्स वापस ले लिये जायेंगे सिवाय आर्डिनेन्स नं० १ सन् १८३१ के जो कि आंतकवादी अन्दोलन के विरुद्ध है, और इसलिये रद्द न किया जायेगा।

(११) सत्याग्रह अन्दोलन के सिलसिले में जो हुकुम संस्थाओं को गैरकानूनी करार देने के लिये जारी किये गये हैं वापस ले लिये जायेंगे।

(१२) मुकदमें उठा लिये जायेंगे।

(१३) सत्याग्रह अन्दोलन के कैदी छोड़ दिये जायेंगे, किन्तु हिंसात्मक अपराधों के कैदी न छोड़ जायेंगे।

(१४) जुर्माने माफ होंगे, किन्तु वसूल शुदा जुर्माने लौटाये न जायेंगे।

(१५) अतिरिक्त पुलिस के लिये लगाया हुआ टैक्स बंद होगा।

(१६) जब्त की हुई जायदाद वापस होगी।

(१७) १९३० के ९ वें आर्डिनेन्स के मुताबिक कब्जा की हुई जायदाद वापस कर दी जायगी।

(१८) सरकार जिला अफसरों को हिदायत कर देगी कि अगर किसी जगह लगान गैर कानूनी तौर पर वसूल हुआ है तो उसकी जाँच करें।

(१९) जो नौकरियां स्थायी रूप से भर गयी हैं, वे न मिल सकेंगी, शेष सब फिर से मिल जायँगी।

(२०) जहाँ नमक बन सकता है, वहाँ अपने लिये या गाँव में ही बेचने के लिये नमक बनाया जा सकेगा।

(२१) यदि कांग्रेस शर्तों का यथोचित पालन न करेगी, तो सरकार मुनासिब कार्रवाई करेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पैक्ट पर विचार

यदि गहराई के साथ देखा जाय तो गांधी इरविन समझौता सिर्फ इसी माने में एक बड़ी जीत थी कि सरकार ने जिस संस्था को कल तक गैर कानूनी करार दे रखा था, उसीके नेता के साथ उसे झुक कर समझौता करना पड़ा। फिर कांग्रेस और सरकार में यह पहली सन्धि थी इसलिये यह महत्वपूर्ण है। पर जैसा कि पामदत्त ने लिखा है कि कांग्रेस इस पैक्ट में किसी बात को यहां तक कि नमक कानून हटवाने में भी समर्थ नहीं रही। इस समय आन्दोलन बहुत तेजी के साथ ऊपर की ओर जा रहा था। और बिल्कुल क्रान्तिकारी परिस्थिति हो रही थी। बायकाट इतना सफल हुआ था कि विलायत के कारखानों में रोना मच गया था। आन्दोलन घट रहा हो ऐसी बात नहीं, बल्कि वह और उग्र होता जा रहा था। कई स्थानों में तो समानान्तर सरकार कायम हो गयी थी। जनता ने लड़ाई को अपने हाथ में ले लिया था। ऐसी हालत में यह समझौता हुआ। अवश्य ही ब्रिटिश सरकार ने तभी समझौता किया, जब वह अपनी परिस्थिति को खतरनाक पाने लगी। यह द्रष्टव्य है कि उस समय सरदार भगतसिंह को फांसी दी जाने वाली थी। सारी जनता उनकी फांसी की मंसूखी की मांग कर रही थी, गांधीजी ने भी इस सम्बन्ध में कुछ चेष्टा की थी, पर वे इसमें सफल नहीं हुए। २३ मार्च को भगतसिंह तथा उनके साथियों को फांसी हो गयी!

कराची अधिवेशन

इन्हीं परिस्थितियों में मार्च के अन्त में करांची में सरदार वल्लभ भाई पटेल के सभापतित्व में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। पंडित जवाहरलाल नेहरू पर समझौता सम्बन्धी प्रस्ताव को रखने का भार दिया गया। उन्होंने लिखा है कि इस प्रस्ताव को उन्होंने मानसिक संघर्ष तथा प्रबल बेचैनी में भी रखना कबूल किया। सुभाष बाबू ने राष्ट्रीय एकता दिखाने के लिये इस प्रस्ताव का विरोध नहीं किया। इस प्रकार गांधीजी की पूरी विजय रही। अवश्य कुछ युवकों ने उनको काले झंडे भी दिखाये थे। पर वे मजे में कांग्रेस के अन्दर समझौते का प्रस्ताव पास करा ले गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कानपुर का दंगा और विद्यार्थीजी की शहादत

जिस दिन भगतसिंह को फांसी हुई, उस दिन कानपुर की हालत इतनी क्रान्तिकारी थी कि यदि सही नेतृत्व मिलता तो वहां क्रान्ति हो सकती थी। यही हालत बहुत से स्थानों की थी। पर तृतीय शक्ति की धूर्त्तता से, और हम केवल इसी को दोष क्यों दें जनता की मूर्खता के कारण यही क्रान्तिकारी परिस्थिति आपस की भयंकर मारकाट में परिणत हो गयी। सैकड़ों हत्यायें हुईं। इस सम्बन्ध में हिन्दू मुस्लिम एकता के अन्याय उपासक, क्रान्तिकारियों के चिरमित्र सम्पादक केशरी श्रीगणेश शंकर विद्यार्थी मुसलमानों के हाथ २५ मार्च को मारे गये। कांग्रेस में इसकी खबर गयी। उनकी हत्या से करांची में मातम छा गया।

भगतसिंह पर प्रस्ताव

इस अधिवेशन में समझौते का प्रस्ताव तो मुख्य था ही, पर भगतसिंह तथा उनके साथियों पर जो प्रस्ताव था उसको लेकर काफी झड़प हुई। प्रश्न यह था कि इस प्रस्ताव के साथ ये शब्द रहें कि न रहें कि कांग्रेस किसी भी रूप में राजनैतिक बल प्रयोग से अपने को अलग रखती है तथा उसे नापसन्द करती है। कांग्रेस के अन्दर प्रस्ताव इन्हीं शब्दों के साथ पास हुआ। पर स्वयंसेवकों की कानफरेंस में यह प्रस्ताव इन शब्दों को निकाल कर पास किया गया

अन्य प्रस्ताव

कांग्रेस ने अन्य अनेक विषयों पर प्रस्ताव पास किये, जिनमें सत्याग्रहियों को अभिनंदित किया गया, साम्प्रदायिक दंगे की निन्दा की गयी, शराबबन्दी की प्रशंसा की गयी, खद्दर प्रचार का समर्थन किया गया, शराब तथा विलायती कपड़ों की दुकानों पर शान्तिपूर्ण पिकेटिंग की सिफारिश की गयी, सरहदी प्रान्त के लोगों को यह आश्वासन दिया गया कि जो भी शासन सुधार होगा, वह वहाँ भी लागू होगा। वर्मा के लोगों का भारत से अलग हो जाने का हक स्वीकृत हुआ, पर सरकार अलग करा रही है इसकी निन्दा की गयी, क्योंकि यह बताया गया कि ऐसा करने में सरकार का उद्देश्य वर्मा को हड़पना है न कि उसकी भलाई करना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कराची कांग्रेस के प्रस्ताव

करांची कांग्रेस में मौलिक अधिकारों पर भी एक प्रस्ताव पास हुआ, इस प्रस्ताव का उद्देश्य वाम पंथियों में बढ़ते हुए अविश्वास को रोकना था ऐसा मालूम देता है क्योंकि कुछ लोगों का उद्देश्य ऐसा मालूम होता था कि कांग्रेस फिर उसी पुरानी लीक पर चले। मौलिक अधिकारों सम्बन्धी प्रस्ताव को यहाँ व्यौरे में उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं हैं। मौलिक अधिकार जैसे होते हैं वैसे ही थे। कुछ खूबियाँ यों थी—किसी को खिताब नहीं दिया जायेगा, मृत्यु दण्ड नहीं रहेगा। लगान घटाने का वायदा किया गया। यह तय हुआ कि किसी सरकारी नौकर को पाँच सौ रुपयों से अधिक तनख्वाह नहीं मिलेगी। विदेशी वस्तु तथा विदेशी सूत को देश से निकालने का वायदा किया गया। यह कहा गया कि सब प्रधान उद्योग धन्धों पर, खानों, रेलों, जल पथों, जहाज तथा सार्वजनिक यातायात के अन्य साधनों पर या तो राष्ट्र का कब्जा रहेगा या राष्ट्र उन पर नियन्त्रण करेगा। किसानों की कर्जदारी घटाने तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सूदखोरी पर नियन्त्रण का वादा किया गया। सब नागरिकों को सामरिक शिक्षा देने का वादा किया गया।

जिच उत्पन्न

करांची अधिवेशन के बाद ही कांग्रेस वालों को यह ज्ञात होने लगा कि गांधी इरविन समझौते का पालन कांग्रेस की तरफ से तो हो रहा है, पर सरकार की तरफ से उसका कुछ पालन नहीं हो रहा है। कांग्रेस ने तो विशेष कर गुजरात और संयुक्त प्रान्त में सरकार को लगान वसूल करने में मदद दी। यदि कांग्रेस मदद न देती, तो इन प्रान्तों में लगान वसूल नहीं होता। पर सरकार की तरफ से बराबर दमन जारी रहा। लार्ड इरविन १८ अप्रैल को ही भारत छोड़ कर चले गये, और उनकी जगह लार्ड विलिग्डंन भारत के वायसराय होकर आये। लार्ड विलिग्डंन मानो कांग्रेस को कुचलने के लिये ही आये थे। सरकार की तरफ से जहाँ जहाँ शर्तें टूटीं, गांधीजी ने उनकी फेहरिस्त बनाकर सरकार के पास भेज दी, पर सरकार ने इसके जवाब में एक दूसरी फेहरिस्त दी जिसमें कांग्रेस वालों पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने शर्तें तोड़ी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब गांधीजी ने सरकार को यह लिख भेजा कि एक निष्पक्ष अदालत बैठायी जावे जो इन पर जाँच करे। पर लार्ड विलिंगडंन इस पर राजी नहीं हुए। परिस्थिति इतनी बिगड़ गयी कि गांधीजी ने कार्य समिति की राय बिना लिये गोलमेज में जाना अस्वीकार कर दिया। इसके बाद गांधीजी के साथ सरकार की फिर बातचीत हुई। गांधीजी लाट साहब से मिले, और चूँकि बड़े लाट साहब बरदोली के मामले में जाँच करने पर राजी हुए इसलिये वे २६ अगस्त को विलायत के लिये रवाना हो गये। सीता रमैया ने लिखा है कि यद्यपि गांधीजी विलायत के लिये रवाना हो गये, पर वे निराश हो गये।

गोलमेज की भद्द

गोलमेज में जो लोग गये थे, वे सरकार द्वारा नामजद थे, इन लोगों की राय एक दूसरे से मिलती नहीं थी, फिर तृतीय पक्ष भी बराबर भड़काता रहता था। इसलिये सब मामलों में काफी भद्द रही, और प्रत्येक विषय में अन्तिम निर्णय सरकार पर छूटता रहा। गांधीजी ने भरसक कोशिश की कि सरकार की तरफ से कोई निश्चित आश्वासन मिले, पर इसमें वे सफल नहीं रहे। यह सारा सम्मेलन जैसा कि सरकार चाहती थी एक तमाशे में परिणात हो गया। राष्ट्रीय माँग की आलोचना तो कम रही, अधिकतर आलोचना इसी बात पर रही कि अल्प संख्यकों का प्रश्न कैसे सुलझाया जाय। और इस प्रश्न को सुलझाने की जितनी ही कोशिश की गयी, वह उतनी ही उलझती गयी।

ब्रिटेन का मन्त्रीमंडल बदला

इस बीच में विश्वव्यापी मन्दी के कारण ब्रिटेन में मन्त्रिमंडल का पतन हो गया। और संयुक्त मंत्रिमंडल बना। मिस्टर मैकडोनल्ड प्रधान मन्त्री बने, पर यह नाम मात्र के लिये था। सर सैमुएल होर भारत सचिव बने।

भारत में दमन

चाहे इसी मंत्री-मंडल के परिवर्तन के कारण हो चाहे और किसी कारण से हो, और वह कारण यह था कि सरकार इस बीच में कांग्रेस से लड़ाई की सब तैयारी कर चुकी थी, गांधीजी ने लौटते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही भारतवर्ष में दमन की परिस्थिति पायी। गांधीजी १ दिसम्बर को गोलमेज की बैठक से बिदा होकर २८ दिसम्बर को भारत वर्ष में पहुँचे।

क्रान्तिकारियों के कार्य

इस बीच में भारतवर्ष में जो घटनायें हुई थीं उनका संक्षेप में दिग्दर्शन कराया जाता है। क्रान्तिकारियों ने अपना आन्दोलन पूरे जोर से जारी रखा था। चटगाँव शस्त्रागार काण्ड के बाद से चटगाँव में भद्रलोक श्रेणी के युवकों पर यह रोक थी कि सूर्यास्त के बाद के रास्ते में दिखाई न पड़े। और तब तक बाहर न निकले जब तक कि सूर्योदय न हो। खान बहादुर अशमुल्लाह नामक पुलिस कर्मचारी विशेष कर अत्याचार के लिये प्रसिद्ध हो चुके थे। ३० अगस्त १९३० को हरिपद भट्टाचार्य नामक एक नौजवान ने उनको गोली से मार दिया। इसके बाद ही चटगाँव में भयङ्कर हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया। २५ अगस्त को ही कलकत्ते में मिस्टर टेगर्ट पर फिर हमला हुआ था। २९ अगस्त को ढाका में पुलिस के इंसपेक्टर जेनरल लोमैन पर विनय कृष्ण बोस ने गोली चलायी, वे दोदिन बाद मर गये। छोटे मोटे कितने ही हमले हुए। ८ दिसम्बर १९३० को कलकत्ते की रायटर्स बिलडिंग में जेल के इंसपेक्टर जेनरल मिस्टर सिमशन पर गोली चलायी गयी और वे वहीं ढेर हो गये।

संयुक्त प्रान्त की हलचलें

जिस समय गांधीजी भारतवर्ष लौट आये उस समय विशेषकर संयुक्त प्रान्त के किसानों की हालत बहुत खराब हो गयी थी। कांग्रेस के समझाने बुझाने पर किसानों ने भरसक लगान अदा किया था। पर एक बिन्दु ऐसा आ गया, जहाँ से आगे वे लगान देने में असमर्थ थे। संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने यह चाहा कि इस विषय पर सरकार तथा कांग्रेस के प्रतिनिधियों में बातचीत हो और सरकार पक्ष परिस्थिति को समझ ले। पर सरकार इस पर राजी नहीं हुई। तब कांग्रेस को मजबूरन किसानों को यह सलाह देनी पड़ी कि वे फिलहाल लगान देना बन्द रखें, पर साथ ही सरकार को यह भी कह दिया गया कि कांग्रेस समझौते तथा बातचीत के लिये तैयार है। कांग्रेस कमेटी ने सरकार से यहाँ तक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुझाव रखा, यदि सरकार इस बीच में लगान की वसूली बन्द रखे तो वे किसानों से लगान अदा न करने के सम्बन्ध की अपनी सलाह को वापस ले लेंगे। पर सरकार इस पर भी राजी नहीं हुई तो लगान बन्दी जारी रही। सैकड़ों कांग्रेसियों को इस बीच में जेल भी भेज दिया गया।

सीमाप्रान्त में दमन

सीमा प्रान्त में भी हालत बहुत अजीब हो रही थी। सरकार को यह बहुत अखर रहा था कि सीमाप्रान्त के पठानों में कांग्रेस का प्रचार हो रहा है। एक लाख लाल कुर्ती वाले तैयार थे। खान अब्दुल गफारखाँ को सीमाप्रान्त के चीफ़ कमिश्नर के दरबार में बुलाया गया। उन्होंने वहां जाने से इनकार किया। इस बहाने पर गांधीजी के लौटने के कई एक दिन पहले खान बन्धु गिरफ़ार कर लिये गये। सीमाप्रान्त में इस प्रकार कांग्रेस और सरकार की सन्धि भंग हो गयी।

काले बादल

गांधीजी जब भारतवर्ष पहुँचे तो पंडित जवाहरलाल नेहरू और मिस्टर शेरवानी उन्हें परिस्थिति समझाने के उद्देश्य से बम्बई जा रहे थे। रास्ते में ही दोनों नेता गिरफ़ार कर लिये गये। तो इन परिस्थितियों में गांधीजी ने आते ही लार्ड विलिंग्डन से लिखा कि वे उनसे मिलना चाहते हैं। इसका उत्तर यह आया कि सरकार बंगाल, संयुक्त प्रान्त तथा सीमाप्रान्त में जो आर्डिनेन्स जारी किये गये हैं, उनके सम्बन्ध में गांधीजी से आलोचना करने के लिये तैयार नहीं है। गांधीजी ने फिर १ जनवरी को तार दिया कि वे इन्हीं बातों के सम्बन्ध में लार्ड विलिंग्डन से बातचीत करना चाहते हैं। इसी बीच में कांग्रेस कार्य समिति भी एक नतीजे पर पहुँच चुकी थी। सच तो यह है कि इंगलैंड से लौटते ही गांधीजी को बम्बई में कार्यसमिति तैयार मिली थी। गांधीजी ने अब यह लिख भेजा कि यदि बड़े लाट साहब गांधीजी से बिना शर्त के मिलने से अस्वीकार कर दें तो इसका मतलब यह लगाया जायेगा कि गांधी इरविन पैक्ट टूट गया। दूसरी तारीख को इसका भी उत्तर आ गया और उसमें यह कहा गया कि लाट साहब उनसे मिलने के लिये तैयार नहीं हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ तारीख को गांधीजी ने फिर तार दिया, पर उसका कोई उत्तर नहीं मिला।

दमन शुरू

बात यह है कि सरकार किसी प्रकार के समझौते के लिये तैयार ही नहीं थी। जिस कारण से भी हो सरकार ने यह तय कर लिया था कि आन्दोलन को कुचल देना है। इस बीच में जनता का जोश घट गया था, और सरकार ने खूब तैयारी कर ली थी। ४ जनवरी को महात्मा गांधी तथा सरदार पटेल गिरफ्तार हो गये। सुभाष बाबू बंगाल लौटते हुए गिरफ्तार हो गये। लार्ड इरविन ने एक एक करके आर्डिनेन्स जारी किये थे। पर अब की बार एक साथ कई आर्डिनेन्स जारी कर दिये गये। कांग्रेस इस प्रचंड तथा अचानक हमले के लिये तैयार नहीं थी। पहले चार महीने में ही ८० हजार गिरफ्तार हो गयीं। १९३३ के अप्रैल में जो कांग्रेस के नाममात्र का अधिवेशन हुआ था इसके अनुसार उस समय तक १ लाख २० हजार गिरफ्तारियां हुई थीं। सब कांग्रेस कमेटीयां, राष्ट्रीय विद्यालय यहां तक कि जिन मकानों में ये संस्थाये थीं, उनपर कब्जा कर लिया गया। मारपीट की तो कोई बात ही नहीं थी। गिरफ्तारियां कम हुईं, और मारपीट अधिक। आतंकवादियों ने भी इन दिनों खूब खुलकर खेल खेला। विशेष कर बंगाल में बहुत सी घटनायें हुईं। सरकार ने भी हजारों बंगाली युवकों को नजरबन्द कर लिया।

आन्दोलन चला

इस सम्बन्ध में एक द्रष्टव्य बात यह है कि शुद्ध कांग्रेसियों ने भी गुप्त रूप से बहुत से काम किये। आर्डिनेन्सों की कृपा से सभी बातें तो गैर कानूनी थी, फिर काम कैसे होता? इस युग में सैकड़ों बुलेटिनें, पुस्तकायें, पर्चे, गैरकानूनी रूप से निकले। अक्सर टाइप या साइक्लोस्टाइल से काम लिया गया। पर कभी कभी चीजें छपकर भी निकलीं। रेल और तार से कांग्रेस को काम लेने से रोका गया, इसका नतीजा यह हुआ कि विशेष दूत देशभर में दौड़े। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने कानून तोड़ने के तथा सरकार को परेशान करने के नये नये उपाय निकाले, इनमें से कुछ सही थे और कुछ गलत। जहाँ तहाँ जंजीर खींचकर रेल खड़ी कर दी जाती थीं, लेटर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बक्सों में फासफोरस डाल कर चिट्ठियाँ जलायीं जाती थी। कहना न होगा कि शेषोक्त कार्य बहुत गलत था, पर शायद ऐसे सब कार्यों का उद्देश्य यह था कि सरकार बिलकुल पंगु बना दिया जाय, और लोग सरकार से सहयोग न करें सरकार ने तो यह तय किया था कि ६ हफ्ते के अन्दर आन्दोलन दबा दिया जाय, पर यह आन्दोलन २६ महीने तक चलता रहा।

दिल्ली की गैरकानूनी कांग्रेस

१६३२ के अप्रैल में दिल्ली में कांग्रेस का अधिवेशन होनेवाला था। सरकार इस बात पर तुली हुई थी कि किसी प्रकार यह अधिवेशन न हो सके, पर प्रत्येक प्रान्त से कुछ न कुछ प्रतिनिधि रवाना हो चुके थे, और उनमें से कई दिल्ली पहुँच भी गये। सेठ रणछोड़दास अमृतलाल ने सभापति का काम किया क्योंकि मनोनीत सभापति पंडित मदनमोहन मालवीय रास्ते में गिरफ्तार कर लिये गये थे। इस अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता को फिर काँग्रेस का ध्येय बताया गया, सत्याग्रह का समर्थन किया गया, महात्मा गांधी के नेतृत्व में जाति ने जो कुछ किया था, उसके लिये जाति को बधाई दी गयी, इत्यादि।

साम्प्रदायिक बटवारा और गाँधीजी का अनुशन

इस बीच में सरकार ने गोलमेज का तमाशा जारी रखा था। जिस समय गांधीजी गोलमेज में गये हुए थे, उसी समय उनको इस बात का आभास मिल गया था कि मार्ले मिंटो शासन सुधार से जिस साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति का प्रवर्तन किया गया था, वही भेद नीति स्वर्ण तथा अस्वर्ण हिन्दुओं में भी बर्ती जानेवाली है। उसी समय उन्होंने यह घोषणा कर दी थी कि यदि इस प्रकार से हिन्दू समाज को विखंडित करने की कोशिश की गयी तो वे प्राणों की बाजी लगाकर भी इसका विरोध करेंगे। गांधी जी ने जेल से ही ११ मार्च को सरकार को यह लिख भेजा कि वे अपने निश्चय पर दृढ़ हैं। १७ अगस्त को प्रधान मन्त्री मिस्टर मैकडोनल्ड ने अपना कुख्यात सम्प्रदायिक बटवारा घोषित किया। इसमें गांधीजी ने जिस बात को मना किया था, वही बात थी, यानी अस्पृश्यों के लिये पृथक निर्वाचन था, और यह इस प्रकार से था कि यदि गांधी जी इसका विरोध करते तो गलत फ़हमी की गुंजाइश थी। अछूतों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की संख्या से अधिक सीटें दी गयीं थीं और साधारण सीटों में भी प्रति प्रतियोगिता करने का हक दिया गया था। गाँधीजी ने १८ अगस्त को ही पत्र लिखा जिसमें यह कहा कि यदि इसे बदला नहीं गया तो वे २० सितम्बर से आमरण अनशन करेंगे।

पूना पैक्ट

१२ सितम्बर को सरकार ने गांधीजी के निश्चय की बात घोषित कर दी। पंडित मदनमोहन मालवीय के बुलाने पर फौरन बम्बई में एक कानफरेन्स बुलाई गयी जिसमें अछूतों के तथा कथित उच्चवर्ण के नेतागण मौजूद थे। २४ तारीख तक नेतागण एक निर्णय पर पहुँचे। गांधी जी ने इस निर्णय को सन्तोषजनक समझा। २६ सितम्बर को ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने इस निर्णय को मान लिया और उसी दिन कवीन्द्र रवीन्द्र के सामने गांधीजी ने अनशनव्रत भंग कर दिया। इस नयी व्यवस्था के अनुसार यह तय हुआ कि पहले कथित अछूत चार व्यक्तियों को नामज़द करेंगे, इस नामजदगी में अछूत ही भाग ले सकेंगे, इसके बाद कथित उच्च जाति और अछूत इन चार में से एक को चुनेंगे।

हरिजन पत्रिका

महात्माजी ने इस व्यवस्था को मनवाने के बाद सरकार से यह अधिकार मांगा कि उन्हें हरिजन कार्य के सम्बन्ध में जेल में सुविधा दी जाय। ७ नवम्बर तक उनकी यह मांग मान ली गयी, और वे हरिजन पत्रिका निकालने लगे।

कलकत्ता का गुप्त अधिवेशन

१९३३ के अप्रैल में कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन तय हुआ। अब की बार भी मनोनीत सभापति पंडित मदनमोहन मालवीय थे। पर वे रास्ते में ही पकड़ लिये गये, इस कारण चौरङ्गी और धर्मतल्ला के चौराहे पर खुली जगह पर कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। श्रीमती सेन गुप्ता सभानेत्री बनीं और जल्दी जल्दी अधिवेशन का कार्य किया गया। २२ सौ प्रतिनिधि देश भर से रवाना हुये थे, जिनमें १ हजार के करीब अधिवेशन में पहुँच गये थे पुलिस जल्दी ही पहुँच गयी, और प्रतिनिधियों पर बहुत भीषण लाठी चार्ज हुआ। इसके पहिले ही अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता का ध्येय फिर से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वीकृत हो चुका था, सत्याग्रह आन्दोलन का तगड़ा बनाना निश्चित हुआ था, विदेशी वस्त्र बायकाट के लिये देश-वासियों से कहा गया था, ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये विधान पर अविश्वास प्रगट किया गया था हाल में प्रकाशित श्वेतपत्र से लोगों को आगाह किया गया था, गांधीजी को अनशन की सफलता के लिये बधाई दी गयी थी स्वराज्य का अर्थ क्या है इस सम्बन्ध में करांची के मौलिक अधिकार सम्बन्धी प्रस्ताव पर आशा प्रगट की गयी थी।

श्वेत पत्र

सरकार ने १६३३ की १७ फरवरी को एक श्वेत-पत्र प्रकाशित किया था। इसमें शासन-सुधार सम्बन्धी जो प्रस्ताव पेश किये गये वे देश के नरम पंथियों को भी पसन्द नहीं आये थे। इसी पर कांग्रेस में प्रस्ताव हुआ था।

गांधीजी का अनशन और रिहाई

महात्माजी ने पहली मई को यरवदा जेल से यह घोषणा की कि वे ८ तारीख से २१ दिन तक उपवास करेंगे, इस उपवास का उद्देश्य हरिजनों के सम्बन्ध में जनता की कर्तव्य बुद्धि को अधिक जाग्रत करना घोषित किया गया। साथ ही यह आत्म शुद्धि मूलक था। इसके फलस्वरूप गांधीजी ८ तारीख को ही रिहा कर दिये गये।

पटेल और सुभाषबाबू का वक्तव्य

गांधीजी ने जेल से बराबर जब भी लिखा तो हरिजनों के सम्बन्ध में लिखा, वे एक राजनैतिक संग्राम के नेता थे, और इसी रूप में जेल गये थे, इस कारण लोग उनसे राजनैतिक बातों की आशा करते थे, पर ऐसे लोगों को बड़ी निराशा हुई। इन्हीं दिनों श्री वी० जे० पटेल तथा सुभाष बाबू वियना में इलाज करा रहे थे। सरकार ने तो सुभाष बाबू को यूरोप के जहाज पर चढ़ाकर तब छोड़ा था। इन लोगों ने गांधीजी विरुद्ध एक संयुक्त वक्तव्य दिया क्योंकि गांधीजी ने छूटते ही ६ सप्ताह के लिये आन्दोलन को स्थगित कर दिया। उस वक्तव्य में पटेल तथा वोस ने कहा—"गांधीजी ने यह जो सत्याग्रह स्थगित कर दिया, यह एक तरह से इस बात की स्वीकृति है कि वे नेतृत्व के लिये अयोग्य हैं। हम लोग इस निश्चित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मत पर पहुँच चुके हैं कि एक राजनैतिक नेता के रूप में गांधीजी विफल रहे हैं। समय आ गया है कि कांग्रेस को एक नये सिद्धान्त पर संगठित किया जाय। इसके लिये एक नये तरीके तथा एक नये नेता का उद्भव आवश्यक है।

संग्राम स्थगित

यद्यपि यह आन्दोलन ६ सप्ताह के लिये स्थगित किया गया था, पर यह देखा जायेगा कि यह एक तरह से आन्दोलन का अन्त था। गांधीजी ने २६ मई को सफलता पूर्वक अपना अनशन समाप्त किया। १२ जुलाई को स्थानापन्न सभापति श्री अणे ने पूना में नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया जिसमें यह तय हुआ कि अब देश के लिये सार्वजनिक सत्याग्रह उपयुक्त नहीं है, पर कुछ चुने हुए लोग सत्याग्रह कर सकते हैं। इस अधिवेशन में कांग्रेस जनों के द्वारा गुप्त तरीकों के इस्तैमाल की निन्दा की गयी। इसके साथ ही स्थानापन्न सभापति ने सब कांग्रेस संगठनों तथा युद्ध समितियों को रद्द घोषित कर दिया गया। जब युद्ध ही नहीं रहा तो युद्ध समिति कैसी ?

गांधीकी हलचलें

इसके बाद गांधीजी ने फिर लार्ड विलिंग्डन से बात-चीत करने की कोशिश की, पर लार्ड विलिंग्डन इसके लिये तैयार नहीं हुए। तब गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह की तैयार की। उन्होंने सब से पहले तो साबरमती आश्रम को भंग कर दिया, और आश्रमवासियों से यह कहा कि सब कुछ होमकर व्यक्तिगत सत्याग्रह में कूद पड़े। उन्होंने साबरमती आश्रम के सामान आदि हरिजन सङ्घ तथा ऐसी संस्थाओं के हवाले कर दिया! वे स्वयं रास नामक ग्राम के लिये रवाना होने वाले थे, पर उसके पहले ही वे तथा उनके ३४ साथी गिरफ्तार हो गये। वे ४ तारीख को छोड़ दिये गये, और उनको यह हुक्म दिया गया कि वे यरवदा ग्राम छोड़ दें, और पूना में जाकर रहें। इस पर गांधीजी राजी नहीं हुए, और उनको एक साल की सजा दे दी गयी। अब की बार फिर गांधीजी ने जेल में रहते समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिजन चलाने का अधिकार माँगा, पर यह अधिकार नहीं दिया गया, इस पर उन्होंने २० अगस्त को अनशन शुरू कर दिया, पर वे २३ को फिर छोड़ दिये गये।

हरिजन कार्य

३० अगस्त को पंडित जवाहरलालजी छूटे, और गांधीजी से मिले। अब आगे क्या करना चाहिये इस विषय पर वे कुछ तय नहीं कर पाये थे, वे हरिजन आन्दोलन के सम्बन्ध में देश का दौरा करने लगे। गांधीजी ने जब से जेल में हरिजन आन्दोलन उठाया था, तब से देश के बहुत से प्रसिद्ध मन्दिर हरिजनों के लिये खुल गये थे, पर सनातनियों के तरफ से उनका बहुत विरोध भी हुआ था। इस दौरे में गांधीजी पर एक बार पटाके से हमला भी किया गया। गांधीजी कई प्रसिद्ध मन्दिरों को खुलाने में समर्थ रहे।

विहार में भूकम्प और पं० नेहरूजी को सजा

इसी प्रकार के कार्य-क्रम में यह साल निकल गया, और १६ जनवरी को विहार में भयङ्कर भूडोल आया। इस भूडोल से ३० हजार वर्ग मील पर अधिक असर आया, और कम से कम २० हजार आदमी मर गये। सारा देश विहार की मदद के लिये दौड़ पड़ा। महात्माजी तथा पंडित जवाहरलाल विहार पहुँचे। विहार के भूकम्प के जमाने में ही पंडित जवाहरलाल कलकत्ता गये, और वहाँ पर उन्होंने क्रान्तिकारियों की और साथ ही साथ सरकार के आतंकवाद की निन्दा की। इस कारण उन्हें दो साल की सजा हुई।

फिर स्वराज्य-पार्टी

जब से पूना कानफरेंस हुई थी तभी से कुछ नेता इस बात की आवश्यकता समझ रहे थे कि अब तो सत्याग्रह का पर्व खतम हो चुका, अब स्वराज्य-पार्टी के ढंग पर कुछ काम करना चाहिये। इस कानफरेंस ने यह भी तय किया कि आगे के निर्वाचन में भाग लिया जाय।

गांधीजी एकमात्र सत्याग्रही रहे

गांधीजी उन दिनों विहार का दौरा कर रहे थे। जब उन्हें दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कानफरेंस की बात ज्ञात हुई तो उन्होंने ७ अप्रैल को एक दीर्घ वक्तव्य दिया। उसमें उन्होंने कहा कि 'अपने हृदय को बहुत टटोलने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि केवल एक व्यक्ति अर्थात् मैं ही सत्याग्रह की जिम्मेदारी को उठाऊँ।..............मैं यह अनुभव करता हूँ कि जनता ने सत्याग्रह का पूरा संदेश इसलिये नहीं समझा कि यह संदेश उन तक पहुँचते पहुँचते दूषित हो गया। यह हमारे निकट स्पष्ट हो गया है कि आध्यात्मिक तरीके जब अनाध्यात्मिक माध्यमों के जरिये से फैलाये जाते हैं, तो उनकी शक्ति में फर्क आ जाता है। हरिजन दौरे के सिलसिले में मैं इस बात को समझ गया हूँ.........सत्याग्रह को मुझ ही तक छोड़ा जाय।....... अनेक लोगों ने जो आधे हृदय से सत्याग्रह किया है, उसने न तो आतंकवादियों के हृदय को ही स्पर्श किया, और न शासकों के हृदय को ही स्पर्श किया। सत्याग्रह एक समय एक ही अधिकारी व्यक्ति तक सीमित होना चाहिये! इस प्रकार से यह कभी किया ही नहीं गया। अब यह किया जाना चाहिये।'.......छूटे हुए सत्याग्रही क्या करें? इस पर गांधीजी ने यह कहा कि वे रचनात्मक कार्य करें।

सत्याग्रह स्थगित

इसी महीने में पटना में १८ तथा १९ मई को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। बात यह है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी गैर कानूनी करार नहीं दी गयी थी। इस बैठक में गांधीजी की सलाह मानकर सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया, और जिन लोगों ने स्वराज्य पार्टी बनानी चाही थी, मुख्यत: उनको लेकर पार्लियामेंटरी बोर्ड बना दिया गया। इस प्रकार स्वराज्य पार्टी की प्रवृत्ति को कांग्रेस ने अपने अधीन एक बोर्ड मात्र बनाकर इसे अपनी ही एक शाखा बना ली!

कांग्रेस समाजवादी दल का जन्म

गांधीजी ने जिस प्रकार से आन्दोलन को बन्द किया, उससे कुछ ऐसे कांग्रेसजनों में बहुत अधिक असन्तोष उत्पन्न हुआ जो जेलों में रहकर समाजवादी साहित्य पढ़कर मार्क्सवाद के संस्पर्श में आ चुके थे। उन्होंने मार्क्सवाद के अध्ययन के कारण यह नतीजा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकाला कि गांधीजी का नेतृत्व देश को स्वतन्त्रता के मार्ग में ले जाने में असमर्थ है। इसीसे कांग्रेस समाजवादी दल का जन्म हुआ। सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य नरेन्द्रदेव के सभापतित्व में १७ मई को पटना में ऐसे लोगों की एक सभा हुई, जिसमें यह तय हुआ कि गांधीवाद हमारी समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ है, अतएव समाजवाद के आधार पर एक दल बनाया जाय। बिहार में सबसे पहले इस दल की बैठक हुई इसका कारण यह था कि बिहार इस कार्य में अग्रणी था। आचार्य नरेन्द्रदेव के अतिरिक्त बाबू सम्पूर्णानन्द तथा अन्य बहुत से लोग इस दल के जन्म में शरीक थे। पर इनमें से बहुत से बाद को विभिन्न कारणों से दल से अलग होते गये। देश में इस समय तक कम्यूनिस्ट पार्टी कुछ कुछ प्रसिद्ध हो चली थी, पर ३०-३२ के आन्दोलन में इसने जिस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन विरोधी कार्य किये, इससे यह स्वाभाविक था कि बाद को जो समाजवादी धारा निकली वह अलग संगठित हुई। कांग्रेस समाजवादी शब्द के पहले लगा हुआ कांग्रेस शब्द यह प्रगट करता था कि कांग्रेस का सदस्य ही इसका सदस्य हो सकता था। यह कांग्रेस के अन्तर्गत दल था। बाद को १९४७ में इस दल ने अपने नाम से कांग्रेस शब्द निकाल दिया। दल के नेताओं के अनुसार यह शब्द इसलिये निकाल दिया गया जिससे कांग्रेस के बाहर के लोग भी इसमें शरीक हो सकें। यह क़दम भी कांग्रेस के प्रति अविश्वास मूलक ही था।

कुछ राजनैतिक कैदी छूटे

जब कांग्रेस की ओर से बिना शर्त्त सत्याग्रह वापस ले लिया गया, तब सरकार ने १२ जून तक कांग्रेस की कमेटियों को कानूनी करार दे दिया। कुछ राजनैतिक कैदी भी छोड़े गये, पर सब नहीं। क्रान्तिकारी कैदी तो छूटे ही नहीं, साथ ही बहुत से सत्याग्रह से सम्बन्ध कैदियों को भी पूरी कैद काटनी पड़ी। बहुत से ऐसे कैदी तो १९३४ के अन्त तक जेलों में पड़े रहे। बात यह है कि शर्तों के साथ आन्दोलन बन्द तो किया नहीं गया था।

कांग्रेस का बम्बई अधिवेशन

१९३४ के २७ तथा २८ अक्टूबर को बम्बई में कांग्रेस का अधि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेशन श्री राजेन्द्रप्रसाद के सभापतित्व में हुआ। कांग्रेस के नेताओं में राजेन्द्र बाबू महात्माजी के अनन्य भक्त होने के साथ ही अपेक्षाकृत नीरव त्यागी थे। राजेन्द्र बाबू ने अपने अभिभाषण में अहिंसा का गुण गान किया और विफलता के दर्शन का प्रतिपादन किया। वे बोले—'हम एक बार असफल हो सकते हैं, दो बार असफल हो सकते हैं, पर किसी न किसी दिन हम अवश्य सफल होंगे।' उन्होंने कहा कि सत्याग्रह में कई बार सामयिक रूप से हार हो सकती है, पर इसमें पराजय नहीं है। उन्होंने प्रमाण के रूप में एक अँगरेजी कविता को उद्धृत किया :—

Truth for ever on the scaffold,
Wrong for ever on the throne,
Yet that scaffold sways the feuture,
And behind the dim unknown.
Standeth God within the shadow,
Keeping watch above His own"

दूसरे शब्दों में सभापति ने लोगों को धैर्य रखने के लिये कहा था। और ऐसे अवसर पर कहा ही क्या जाता।

कांग्रेस का नया विधान

इस अधिवेशन में एक नया विधान बना, जिसके अनुसार कांग्रेस प्रतिनिधियों की संख्या दो हजार कर दी गयी। सभापति को यह अधिकार मिला कि वे कार्य समिति के सदस्यों को नामजद करें।

महात्माजी कांग्रेस से अलग

महात्माजी ने इस कांग्रेस की कार्रवाई को एक तरह से संचालित किया, फिर भी वे यहीं से कांग्रेस के चार आने की सदस्यता से अलग हो गये। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि मुझमें तथा बहुत से कांग्रेसियों में मतभेद है, और यह मतभेद बहुत अधिक है तथा निरन्तर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने यह साफ साफ कहा कि कांग्रेस में बहुत से लोग ऐसे मालूम पड़ते हैं कि जो अहिंसा में एक पालिसी के तौर पर विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी हालत में उनके लिये कांग्रेस में रहना सम्भव नहीं है। यों तो उन्होंने यह कहा, पर तथ्य यह है कि वे इसके बाद भी बराबर कांग्रेस के सर्वेसर्वा सर्वाधिनायक रहे हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २२ :

लखनऊ कांग्रेस से त्रिपुरी तक

इण्डिया ऐक्ट १६३५

पर गोलमेज की जो खिचड़ी पकती रही, उसके फलस्वरूप जो प्रस्ताव बने उन पर विचार करने के लिये पार्लियामेंट ने एक संयुक्त पार्लियामेंटरी कमेटी बनायी। इस कमेटी ने जो रिपोर्ट दी उसके विरुद्ध प्रदर्शन करने के लिये कांग्रेस कार्यसमिति ने ७ फरवरी का दिन निश्चित किया। पर इसका कोई नतीजा नहीं निकला, और २३ जुलाई को कानून वगैरह बनकर गवर्नमेंट आफ इण्डिता ऐएट १६३५ के रूप में इस योजना पर बादशाह की दस्तखत हो गये। कहना न होगा कि इस ऐक्ट में स्वराज्य की मांग नहीं मानी गयी थी, पर इसमें सन्देह नहीं कि यह माटेग्यू चेम्सफोर्ड शासन सुधार पर तरक्की थी। इसमें राजस्व का ⅘ संरक्षित रखा गया। सेना, परराष्ट्र तथा याचक विभाग बड़े लाट के हाथों में रहा। रेलवे वोर्ड पर रेल की सब बातें छोड़ दी गयी। केन्द्र में जिन धारा सभाओं के निर्माण की बात हुई, उनमें रियासतों के सदस्यों की संख्या दो तिहाई रक्खी गई। इसका उद्देश्य यह था कि ये धारा सभायें बिल्कुल बेकार रहें।

ऐक्ट की तफसील

ब्रिटिश भारत को ११ प्रान्तों में बांटा गया। ऐडन और बर्मा अब तक भारत के अंश थे, अब वे भारत से पृथक कर दिये गये। मद्रास, बम्बई, बंगाल, संयुक्त प्रदेश, बिहार और आसाम में दो-दो धारा सभायें कर दी गयीं। जब कि इङ्गलैंड में भी हाऊस आफ लार्डस के उठा देने की, कम से कम उसकी शक्ति घटाने की बात चल रही थी, उस समय इस प्रकार भारत के कुछ प्रान्तों पर दो धारा सभायें लादना बहुत ही एक प्रतिक्रियावादी कदम था, इसमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्देह नहीं। इस व्यवस्था का उद्देश्य यहां के लोगों को पंगु कर देना था। अब की बार वे शासन-सुधार में सरकारी नामजदगी का तरीका खतम कर दिया गया। अधिक संख्यक दल को मंत्रि-मंडल बनाने का अधिकार मिला। पर गवर्नर के अधिकार, बल्कि विशेषाधिकार इतना था कि वह जब चाहे तब स्वयं शासन कर सकता था। अब की बार कोई १४ फीसदी लोगों को वोट का अधिकार मिला। इस ऐक्ट का सब से झगड़ा लगाने वाला अंश साम्प्रदायिक बटवारा था। गोरों को विशेषकर बंगाल में मंत्रि-मंडल बनाने और बिगाड़ने का अधिकार दे दिया गया। सच कहा जाय तो यह बंटवारा बिल्कुल मनमाना था, और इसका उद्देश्य हिन्दू तथा मुसलमानों को आपस में लड़ाना था।

साम्प्रदायिक निर्णय से सभी नाखुश

खिलाफत आन्दोलन के युग में सामयिक रूप में मुसलमान मध्यवित्त श्रेणी ने (और यही एक बड़ी हद तक मुसलमान जनता के मत का निर्णय करने वाली थी) राष्ट्रीय विचार के हिन्दुओं का साथ दिया था, पर हम देख चुके हैं कि उसके बाद से ही धारा दूसरी तरफ बहने लगी थी। दिसम्बर १६३० में सर मुहम्मद इकबाल के सभापतित्व में इलाहाबाद में मुस्लिम-लीग का जो अधिवेशन हुआ था उसमें पहले पहल पकिस्तान की योजना रखी गयी। बाद के युग में यह नारा एक भयंकर युद्ध घोष के रूप में तथा भ्रातृघात के एक हथियार के रूप में होने वाला था। गोलमेज में जो मुसलमान गये, वे पहले तो एक ढंग के समझौते पर राजी थे, पर उन्हें भड़का दिया गया और उसके फलस्वरूप सारी दुनिया के पत्र जगत के सामने जो जग हँसाई हुई, वह एक स्मरणीय बात है। धूर्त साम्राज्यवाद के विशेष कर यह जग हँसाई इस कारण करायी थी कि सत्याग्रह आन्दोलन के कारण जो अन्तराष्ट्रीय असर पैदा हुआ था, उस पर पानी फिर जाय। मजे की बात यह है कि साम्प्रदायिक निर्णय से मुसलमान भी खुश न हो सके। उन्हें प्रान्तों की कुल १६०० के करीब सीटों में पौने पांच सौ सीटें दी गयी थीं, फिर भी वे समझते थे कि उनके साथ अन्याय हुआ है! बंगाल में मुसलमानों की आबादी ५३ फीसदी थी, पर उन्हें ४७½ फीसदी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीटें दी गयी, और उन्हें सम्पूर्ण रूप से गोरों पर निर्भर रक्खा गया। पंजाब में इनकी संख्या ५५ फीसदी थीं, मगर उन्हें ४६ फीसदी सीटें दी गयी थीं। मुस्लिम-लीग का जिन्ना युग १६३४ से शुरू होता है। ४ मार्च सन् १६३४ को लीग का एक जलसा फिर देहली में हुआ जिसमें अब्दुल अजीज बैरिस्टर सभापति से अलग हो गये, और मिस्टर जिन्ना मुस्लिम-लीग के स्थायी सभापति नियुक्त हुए।

कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन

१६३५ में कांग्रेस का कोई अधिवेशन नहीं हुआ। इसकी नौबत ही नहीं आयी। लोगों को चुनाव में ही अधिक दिलचस्पी थी और चुनाव लड़ने में ही सारी शक्ति लड़ा दी गयी। १६३६ में १२, १३, १४ अप्रैल को कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में पण्डित जवाहरलाल के सभापतित्व में हुआ। पण्डितजी ने अपने अभिभाषण में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर रोशनी डालते हुए कहा कि गरीबों की गरीबी मिटाना, किसानों की उन्नति करना कांग्रेस का ध्येय है। उन्होंने १६३५ के ऐक्ट में दिये हुए शासन-सुधार की तीव्र निन्दा की।

लखनऊ कांग्रेस के कार्य

इस अधिवेशन में यह माँग की गयी कि भारतीयों का शासन विधान भारतीय ही बना सकते हैं, अतएव शीघ्र से शीघ्र भारतीयों का विधान सम्मेलन बुलाया जाय। यह तय हुआ कि अगले चुनाव में हिस्सा लिया जाय। इसके लिये एक पार्लियामेंटरी बोर्ड भी बना दिया गया। अधिवेशन में इस प्रश्न पर भी गरमागरम बहस रही कि चुनाव लड़ने के बाद मंत्री पद ग्रहण किया जाय या नहीं। बहरहाल यह प्रश्न स्थगित रखा गया। इस समय तक अबीसीनिया पर फैसिस्ट इटली द्वारा हमला हो गया था। कांग्रेस ने इसकी सहानुभूति में भी एक प्रस्ताव पास किया। इसी कांग्रेस में जन-सम्पर्क कमेटी भी बनी। सुभाष बाबू इस कांग्रेस में इस कारण भाग न ले सके कि वे बहुत दिनों तक विदेशों में रहने के बाद ८ अप्रैल को बम्बई में लौटे, और वहाँ फौरन १८१८ के रेगूलेशन ३ के अनुसार गिरफ्तार कर लिये गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिनलिथगो का आगमन

इसी महीने में लार्ड विलिंगडन का कार्यकाल खतम हो गया, और उनकी जगह पर लार्ड लिनलिथगो भारत का वायसराय बनकर आये। लार्ड लिनलिथगो भारत से बिल्कुल अपरिचित थे, ऐसी बात नहीं। वे कुछ दिन पहले भारत में भेजे गये कृषि कमीशन के सभापति होकर यहाँ आये थे। यह कमीशन भारत की किसान जनता की क्रयशक्ति बढ़वाने के उपाय सोचने तथा बतलाने के लिये आया था। इसके अतिरिक्त वे उस संयुक्त पार्लियामेंटरी कमेटी के भी सभापति थे, जिसमें इण्डिया एक्ट १९३५ का जन्म हुआ था। लार्ड विलिंगडन का शासनकाल दमन युग था। अब लिनलिथगो ने आकर चिकनी चुपड़ी बातें शुरू कर दीं।

चुनाव घोषणा तथा चुनाव की तैयारी

अब कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा काम चुनाव लड़ना था। इस सम्बन्ध में कांग्रेस की ओर से चुनाव घोषणा बनाने के लिये २२ और २३ अगस्त को बम्बई शहर में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ। यहाँ जो चुनाव घोषणा बनी, उसमें और बातों के अलावा इसका वादा किया गया कि मजदूरों की कम से कम मजदूरी तय करना तथा किसानों को हर तरीके से मुक्त करना कांग्रेस का ध्येय है। इन दिनों देश में इस विषय पर बड़ी बहस चल रही थी कि मंत्रीपद ग्रहण करना चाहिये कि नहीं, पर यहाँ भी इस प्रश्न को आगे के लिये टाल दिया गया। पंडित मदनमोहन मालवीय का दल अलग चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा था, उससे भी कांग्रेस का समझौता हो गया। इस प्रकार अपनी सब शक्तियों को एकत्र कर कांग्रेस चुनाव संग्राम में उतरने के लिये तैयार हो गयी।

फैजपुर अधिवेशन

कांग्रेस का अगला अधिवेशन १९३६ के २७ तथा २८ दिसम्बर को महाराष्ट्र के फैजपुर नामक एक गाँव में हुआ। गांधीजी ने ही यह सलाह दी थी कि कांग्रेस का अधिवेशन गाँवों में होना चाहिये, जिससे कि गाँव की जनता को कांग्रेस के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आने का मौका मिले। अहमदाबाद कांग्रेस के बाद कांग्रेस ने यह नया कदम उठाया था। हम पहले ही बता चुके हैं कि अहमदाबाद कांग्रेस में मेज कुर्सी हटा दी गयी थी, अब कांग्रेस ने गाँवों में अपना अधिवेशन शुरू किया। अवश्य इस नये कदम में साथ ही एक बड़ी समस्या का भी उदय हुआ। वह समस्या यह थी कि कांग्रेस में आयी हुई लाखों जनता के खाने पीने रहने का प्रवन्ध कैसे किया जाय। अवश्य इससे उस इलाके के देहातियों को आर्थिक तथा अन्य सब तरीके से फायदा रहने लगा। पर बाहर के लाखों लोगों की असुविधा की तुलना में यह कहाँ तक लाभ रहा यह विचार्य है।

अधिवेशन का कार्य

इस अधिवेशन के सभापति पंडित जवाहरलाल हुए। पंडितजी ने अपनी स्वाभाव सिद्ध विद्वत्ता के साथ राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की आलोचना करते हुए फासिस्टवाद के खतरे की ओर लोगों की दृष्टि आकर्षित की। उन्होंने फिर लोगों को इस बात को समझाया कि समाजवाद ही भारत की गरीबी की समस्या को हल करने में समर्थ है। पर साथ ही उन्होंने कहा कि समाजवाद स्थापित होने के लिये यह आवश्यक है कि पहले स्वतंत्रता हो। उन्होंने यह भी कहा कि सारे विश्व में समाजवाद और फासिस्टवाद में संघर्ष चल रहा है। इस अधिवेशन में भी मंत्रीपद लिया जाय कि नहीं इस सम्बन्ध में कोई निर्णय नहीं किया गया। यह तय हुआ कि चुनाव के बाद चुने हुए सदस्यों का एक कनवेशन बुलाया जायेगा उसमें यह प्रश्न तय किया जायगा।

चुनाव

१९३७ की फरवरी में प्रान्तों में चुनाव हुआ। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस चुनाव के सम्बन्ध में जिस अथक रूप से देश का दौरा किया, उससे उनका एक के बाद एक दो बार कांग्रेस का सभापति चुना जाना समर्थित हो गया। किसी भी नेता का इस चुनाव के जीतने में इतना श्रेय नहीं प्राप्त है जितना उन्हें है। कांग्रेस ने इन सालों में जिस प्रकार से जेल, लाठी, मार, जुर्माना सहन किया था, उससे कांग्रेसी जनता में प्रिय हो चुके थे। जो लोग गांधीजी द्वारा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रवर्त्तित जेल जाकर कथित हृदय परिवर्त्तन की हँसी उड़ाते हैं, उन्हें भी यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि इसी जेल जाने के कार्यक्रम के कारण ही कांग्रेसी जनता में प्रिय हो गये, और कांग्रेस का नाम घर घर में पहुँच गया।

कांग्रेस की नीति

चुनाव में कांग्रेस विजयी हुई। कांग्रेस को मद्रास में कुल २१५ सीटों में से १५६ अर्थात् ७४ फी सदी, बिहार में कुल १५२ सीटों में से ९८ अर्थात् ६५ फी सदी, बंगाल में कुल २५० सीटों में से ५६ सीट याने २२ फी सदी, मध्यप्रदेश और बरार में ११२ सीट में से ७२ याने ६२·५ फी सदी, बम्बई में कुल १७५ सीटों में से ८६ याने ४९ फी सदी, संयुक्त प्रान्त में २२८ सीटों में से 134 याने ५९ फी सदी, पंजाब में १२५ सीटों में से १८ याने १०.५ फी सदी, सीमा-प्रान्त में कुल ५० सीटों में से १९ याने ३८ फी सदी, सिन्ध में ६० सीट में से ७ याने ११·७ फी सदी, आसाम में कुल १०८ सीट में से ३३ याने ३१ फी सदी, उड़ीसा में कुल ६० सीट में से ३८ याने ६० फी सदी सीटें कांग्रेस को मिलीं।

चुनाव में लीग हारी

इस चुनाव में मुस्लिम लीग ने भी पूरी तैयारी के साथ हिस्सा लिया पर उसे कोई विशेष सफलता नहीं मिली, यह निम्न लिखित सूची से ही ज्ञात होगा।

प्रान्त का नाम	कुल मुस्लिम सीट	लीग को मिलीं
मद्रास	२८	१०
बम्बई	२९	२०
बंगाल	११७	३९
युक्तप्रान्त	६४	२७
पंजाब	८४	१
बिहार	३९	०
मध्यप्रान्त	१४	०
आसाम	३४	९
सीमाप्रान्त	३६	०
उड़ीसा	४	०
सिन्ध	३३	३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लीग का दावा

इस प्रकार लीग को चुनाव में ¼ से भी कम मुस्लिम सीटें प्राप्त हुई। पञ्जाब में सरसिकन्दर ह्यात खां, सिन्ध में मिस्टर अल्लाबख्श, बंगाल में मिस्टर फज्जुलुलहक के नेतृत्व में काम करने वाली यूनियनिस्ट, अल्लाबख्श का दल तथा कृषक प्रजा पार्टी के ही कारण लीग को इस प्रकार नीचा देखना पड़ा। कहना न होगा कि इस जमाने में लीग मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था होने का दावा नहीं कर सकती थी, फिर भी लीग के कुशल नेता पीछे हटनेवाले नहीं थे। मिस्टर जिन्ना ने इन्हीं दिनों वह खतरनाक नारा दिया जिसमें उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में लोकतन्त्र नहीं होना चाहिये। उन्होंने मैनेचेस्टर गार्जेन में एक लेख में यह कह दिया कि एक साधारण अङ्गरेज के लिये यह समझना कठिन है कि क्यों भारतवर्ष में पश्चिम में सम्मानित लोकतन्त्र का सिद्धान्त लागू नहीं हो सकता।

मंत्रीमंडल के ख्याल से दल

जो चुनाव हुआ उसके फलस्वरूप कांग्रेस ६ प्रान्तों में अर्थात् बम्बई, विहार, मद्रास, युक्तप्रान्त, उड़ीसा, मध्यप्रान्त में मंत्रीमंडल बना सकती थी। पंजाब, बंगाल, सिन्ध अर्थात् जिन प्रान्तों में मुस्लिम सीट अधिक थी, उन में लीग कहीं भी मंत्रीमंडल नहीं बना सकती थी पर सर सिकन्दरहयात खां, फज्जुलुलहक तथा अल्लाबख्श इन प्रान्तों में मंत्रिमंडल बना सकते थे और उन्होंने बाद को मंत्रिमंडल बना लिया।

मंत्रीमंडल बनाने की शर्त

कांग्रेस अब भी मंत्रिमंडल वनायेगी या नहीं इस सम्बन्ध में किसी निर्णय में नहीं पहुँच सकी थी। १७ तथा १८ मार्च १९३७ को इस सम्बन्ध में निर्णय करने के लिये दिल्ली में अखिलभारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ। अबकी बार यह तय हुआ कि यदि प्रान्त के गवर्नगण यह वादा करें कि वे विटो या विशेषाधिकार का प्रयोग न करेंगे तभी कांग्रेस मंत्रिमंडल वनायेगी। यह भी तय हुआ कि लाट साहब को यह वादा सार्वजनिक रूप से कहना पड़ेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वायसराय पर आश्वासन

पहली अप्रैल से नये विधान के अनुसार कार्य होनेवाला था। पर कांग्रेस ने जो शर्त दी, इसे सरकार ने स्वीकार नहीं किया, इसलिये सरकार ने अल्प संख्या वाले दलो को मंत्रिमंडल बनाने के लिये बुलाया, और मंत्रिमंडल बन गये। पर विधान के अनुसार ११ में से ६ प्रान्तों में मंत्रिमंडल न बनने के कारण विधान के व्यर्थ होने की नौबत आ गयी। इस कारण सरकार की ओर से कांग्रेस से बात-चीत चली। २१ जून को लार्ड लिनलिथगो ने यह घोषणा की कि कानून के अनुसार शासन कार्य में मंत्रिमंडल को ही अधिकार प्राप्त है। बहुत कम मामलों में गवर्नर अपनी राय से काम कर सकते हैं, और जब वे ऐसे काम करें तो मंत्रिमंडल को यह अधिकार होगा कि वे इस बात को साफ करदे कि अमुक कार्य उनका किया हुआ नहीं है। इस समय तक कांग्रेस के अन्दर मंत्रिमंडल ग्रहण करने वालों की संख्या अधिक हो चुकी थी। ७ जुलाई को कार्य-समिति ने इसी आश्वासन को यथेष्ट समझ कर मंत्रिमंडल कायम कर लिया।

तनख्वाह पाँच सौ

कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों ने मन्त्री पद ग्रहण करते ही करांची के प्रस्ताव में यह जो कहा गया था कि अधिक से अधिक तनख्वाह पांच सौ हो उसे कार्य रूप में परिणत कर दिया। इसके अनुसार मंत्रियों की तनक्वाह पाच सौ और भत्ता २५० हुआ।

काकोरी कैदी रिहा और उनका स्वागत

कांग्रेस ने अपने चुनाब घोषणा में यह वादा किया था कि राजनैतिक कैदी रिहा किये जायेंगे। इसी वादे के अनुसार संयुक्त-प्रान्त के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल ने काकोरी कैदियों को जो गत १२ साल से जेलों के अन्दर बन्द थे रिहा कर दिया। यहां पर कुछ अप्रासंगिक होते हुए भी यह बता दिया जाय कि छूटने पर काकोरी कैदियों का देश में बड़ा शानदार स्वागत हुआ। कानपुर तथा लखनऊ के म्युनिसिपल बोर्डों ने उन्हें मान पत्र दिया, तथा लाखों की भीड़ ने इन लोगों की वाणी सुनी। कम्युनिस्ट, रायवादी, कांग्रेस समाजवादी सबने इनका स्वागत किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गांधीजी द्वारा स्वागत की निन्दा

उस अभूतपूर्व स्वागत से सरकार बहुत घबरा गयी, और गांधीजी को भी आशङ्का मालूम हुई। उन्होंने एक वक्तव्य देते हुए इस सम्बन्ध में किये गये सारे सार्वजनिक प्रदर्शनों को अशोभनीय करार दिया। नतीजा यह हुआ कि कांग्रेस कमेटियों की तरफ से इनका दौरा तथा स्वागत बन्द हो गया, पर फिर भी यूथलीग, छात्रसभा, किसानसभा आदि की तरफ से महीनों तक इनका स्वागत होता रहा। ऐसे ही सब छूटे हुए कैदियों का हुआ।

उन्हीं दिनों अन्दमन के राजनैतिक कैदी अनशन कर रहे थे। सारे देश में उनके लिये बड़ा जोश था। गांधीजी ने इसमें हाथ बटाया।

किसान सम्बन्धी कानून

कांग्रेस मंत्रिमण्डलों ने पदग्रहण करते ही किसानों की भलाई के कानून के कार्य को उठाया, पर जिस तेजी से उन्होंने इस काम को उठाया था, उस तेजी से यह काम इसलिये आगे नहीं बढ़ सका कि कांग्रेस की तरफ से चुने गये असेम्बली तथा कौंसिल के सदस्यों में स्थिर स्वार्थ वाले बहुत से लोग थे, और वे बराबर इन कार्यों के मार्ग में रोड़े अटकाते रहे।

क्रान्तिकारी कैदियों के सम्बन्ध में जिच

संयुक्त प्रान्त तथा बिहार के सभी राजनैतिक कैदी अभी तक छोड़े नहीं गये थे। कुछ क्रान्तिकारी कैदियों की रिहाई के सम्बन्ध में सरकार ने अड़ंगा लगा दिया, उधर देश में इनकी रिहाई के लिये बराबर मांग की जा रही थी। मंत्रिमंडल उन्हें छोड़ना चाहते थे पर गवर्नर इससे रोड़ा अटका रहे थे। फरवरी १६३८ तक यह एक शासन संकट के रूप में परिणत हो गया, और बिहार तथा संयुक्तप्रान्त के मंत्रिमंडलों ने गवर्नर के इस हस्तक्षेप के विरुद्ध मंत्री पदों से इस्तीफा दे दिया। यह स्मरण रहे कि बीच में ३ सितम्बर १६३७ को सीमाप्रान्त के गैर कांग्रेसी मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास हो चुका था, और वहाँ भी काँग्रेसी मंत्रिमंडल कायम हो गया था। इसलिये जिस समय बिहार तथा संयुक्तप्रांत के मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दिया, उस समय सरकार से यह साफ कर दिया कि अभी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो दो ही मंत्रिमंडल ने इस्तीफे दियें है, पर आगे बाकी पांच कांग्रेसी मंत्रिमंडल भी इस्तीफे दें देंगे। इसी हालत में हरिपुरा कांग्रेस हुई। इसके वर्णन के पहले हम यह देख लें कि इस बीच में और कौन सी घटनायें हुई।

कांग्रेस की वैदेशिक नीति

कांग्रेस ने जिस समय मंत्रिमंडल ग्रहण किया, उस समय अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बहुत तेजी से बिगड़ने लगी थी। इस साल जुलाई के महीने में जापान ने चीन पर हमला कर दिया था। उधर अबीसिनीया और स्पेन में लड़ाई तो जारी थी ही। भारतीयों की सहानुभूति प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति शील शक्तियों के साथ थी। २६,३०, ३१, अक्टूबर को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का कलकत्ते में जो अधिवेशन हुआ था, उससे जापान के हमले की निन्दा की गयी थी। इस प्रकार कांग्रेस की आँखें बराबर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की ओर लगी रही।

लीग के साथ समझौते की चेष्टा

इस बीच की घटनाओं में यह भी एक खास बात है कि लीग के साथ समझौते की चेष्टा की गयी। कांग्रेस के सभापति पंडित जवाहरलाल इस सम्बन्ध में मिष्टर जिन्ना से मिले पर कोई नतीजा नहीं निकला। हम पहले ही दिखा चुके हैं कि इस समय तक मुस्लिम सीटों में भी लीग को एक चौथाई सीटें भी नहीं मिली थी। ऐसी हालत में फजलुलाहक, सिकन्दर, अल्लाबख्श आदि मुसलमानों के वास्तविक नेताओं से न मिलकर मिस्टर जिन्ना से मिलना कहां तक उचित हुआ, और कहां तक इसी गलती के कारण मुस्लिम लीग का कब्जा शुरू हुआ यह विचार्य है।

हरिपुरा अधिवेशन

कांग्रेस का अगला अधिवेशन बारदोली के हरिपुरा गांव में १६ फरवरी से श्री सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में शुरू हुआ। सुभाषबाबू १७ मार्च १६३७ को छुटे थे। उन्होंने अपने अभिभाषण में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर रोशनी डालते हुए यह स्पष्ट कर दिया कि लड़ाई का खतरा करीब है। उन्होंने विशेषकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१९३५ के ऐक्ट में उल्लिखित संघ शासन की निन्दा की। कांग्रेस ने भी संघ शासन की इस योजना के विरुद्ध एक प्रस्ताव पास किया।

क्रान्तिकारी कैदी छूटे

दो मंत्रिमंडलों के इस्तीफा देने से जो संकट उपस्थित हुआ था, उसमें सरकार को झुकना पड़ा, और हरिपुरा के बाद कांग्रेस ने इन प्रान्तों में फिर मंत्रिमंडल ग्रहण कर लिया, और जिन राजनैतिक कैदियों के सम्बन्ध में झगड़ा था, वे रिहा कर दिये गये। इस प्रकार कांग्रेसी प्रान्तों के क्रान्तिकारी कैदी सब के सब छूट गये।

नेशनल प्लैनिंग कमेटी

१९३८ में ही सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय योजना कमेटी National planning committee कायम हुई। इस कमेटी का उद्देश्य यह था कि प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान तथा संगठन के द्वारा आगे बढ़ा जाय। स्पष्ट रूप से कहा जाय तो यह कमेटी गांधी जी की कल्पित ग्रामों तक की आत्म यथेष्टता नीति से भारत को ऊपर उठाकर एक आधुनिक औद्योगिक देश में परिणत करना चाहती थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू इस कमेटी के कर्णधार हुए। कांग्रेस सरकारों के अतिरिक्त बंगाल, पंजाब, सिन्ध की सरकारों ने तथा हैदराबाद मैसूर, बड़ौदा, ट्रवनकोर, भूपाल आदि रियासतों ने इस कमेटी में भाग लिया।

इस कमेटी को सब तरह के विद्वानों तथा विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त था। अपने ढंग से यह एक बहुत प्रतिनिधिमूलक संस्था थी और इसने कई मामलों में बहुत हितकर आंकड़ों का संग्रह किया। इस कमेटी का उद्देश्य भारत का शीघ्रातिशीघ्र औद्योगीकरण ही नहीं, सब क्षेत्रों में उन्नति थी, यह इसके विभागों के नाम से ही व्यक्त होगा। इसके विभागों के नाम इस प्रकार थे। (१) कृषि (२) शिल्प (३) विभिन्न सम्प्रदायों की संख्या तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध का निर्णय (४) यातायात तथा यानवाहन के साधनों की उन्नति (५) व्यापार और राजस्व (६) लोक कल्याण (७) शिक्षा। कहना न होगा फिर यह सारा काम एक कमेटी नहीं कर सकती थी इसलिये विशेषज्ञों की अलग कमेटी बना दी गयी। ऐसी २७ कमेटियां बनी। इस कमेटी ने अपने सामने जो उद्देश्य रखे, वे राष्ट्रीय निर्माण की दृष्टि से प्रगतिशील थे। इस कमेटी को समाजवाद की कसौटी पर कसना गलत होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसाम में भी कांग्रेसी मन्त्रीमंडल

आसाम में भी कांग्रेसी मंत्रिमंडल कायम हो गया। इस प्रकार ११ में से ८ प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल कायम हो गये।

कांग्रेसी मंत्रीमंडलों का काम

कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने जिन तरीकों से काम किया, उनको चार हिस्सों में बाँट कर दिखाया गया है। कांग्रेस का उद्देश्य।

(१) लगान तथा मालगुजारी का घटाना (२) किसान को जमीन पर अधिकतर अधिकार देना (३) उसे कर्जदारी से बचाना और (४) मजदूरों की उन्नति करना। कांग्रेस ने इनकी तरफ कदम बढ़ाया। कांग्रेस के प्रधान नेता गाधी जी थे, इसलिये कुछ बातें उनके विशेष विचारों के अनुसार करने की कोशिश की गयी। गांधी जी शराब बन्दी के पक्ष में थे। तदनुसार एक कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस सम्बन्ध में काम शुरू किया। कुछ इसके ऐसे करार पाये गये, जहां शराब का बिकना, बनाना बन्द कर दिया गया। इसी प्रकार गांधी जी की शिक्षा सम्बन्धी—वर्धायोजना को काम में लगाने की कोशिश की गयी। मद्रास के मंत्रिमंडल ने अछूतोद्धार तथा हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में काम किया। संयुक्तप्रान्त के मंत्रिमंडल ने ग्राम सुधार की योजना बनायी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इन्डिया ऐक्ट १९३५ तथा कांग्रेस बार्गिकार बनावट ने बावजूद अनेक सुधारात्मक कार्य किये। किसानों के सम्बन्ध में इन्होंने जो कुछ करना चाहा, वह तो हम पहले ही बता चुके, पर मजदूरों के सम्बन्ध में ये विशेष कुछ कर नहीं पाये। कांग्रेसी मंत्रिमंडल के जमाने में मजदूरों की कई हड़तालें हुई। कई बार विशेषकर कानपुर और बम्बई में मजदूरों पर गोलियां भी चलायी गयीं।

योरोप में फासीवाद

इधर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति क्रमशः बिगड़ती चली जा रही थी। हिटलर एक दुर्दैव की तरह योरोप के राजनैतिक गगन में तप रहा था। १९१४-१८ के युद्ध के बाद फ्राँस तथा इङ्गलैंड के पूँजीपतियों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने जर्मन पूंजीवाद को उठने न देने के लिये सिवा एक के सभी व्यवस्था कर ली थी। याने वहाँ के पूंजीवाद को नष्ट कर समाजवाद स्थापित करने के अलावा सब कुछ किया गया था। वे ऐसा क्यों करते, जब खुद ही पूंजीवादी थे ? जब जर्मन पूंजीवाद जीवित रहा और उसके साथ वहाँ प्रचुर परिमाण में कोयला, लोहा, बिजली तथा विज्ञान था, साथ ही एक ऐसा समाजवादी आन्दोलन था जो इतना तगड़ा नहीं था कि सरकार पर कब्जा करे, पर इतना तगड़ा था कि पूंजीपतियों के शासन को खतरे में डाल दे, साथ ही अंगरेजी साम्राज्यवाद की शह थी, तो फिर फांसीवाद के उदय में क्या कमी थी ? इन्हीं परिस्थितियों में इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में भी फाँसीवाद का उदय हुआ था। हिटलर एक के बाद एक आक्रमणात्मक कदम लेता जा रहा था। उसने १९३८ के सितम्बर में चेकोस्लावाकिया का सूडेटेन प्रान्त माँगा और यह उसे दे भी दिया गया।

इस परिस्थिति में सुभाष बाबू

अब लड़ाई के बादल बिलकुल सर पर थे, सरकार चाहती थी कि ऐसे समय में केन्द्र में भी भारतीयों के साथ कुछ समझौता हो जाय, और वे १९३५ के इण्डिया ऐक्ट के संघवाले हिस्से को, जरूरत पड़े तो कुछ भारतीय उसको उलट फेर के साथ ग्रहण कर लें। सुभाष बाबू के कान में इसकी भनक पड़ी कि यद्यपि वे काँग्रेस के सभापति हैं, पर उनकी पीठ के पीछे संघ योजना को लेने के लिये तैयारी हो रही है। उन्होंने इसकी परवाह नहीं की, और अपने प्रत्येक व्याख्यान में कड़े से कड़े शब्दों में संघ योजना की निन्दा की। उन्होंने यहां तक कहा कि यदि काँग्रेस संघ योजना ग्रहण करे, तो वे सभापति के पद से इस्तीफा दे देंगे, और वे इसके विरुद्ध संग्राम करेंगे इस सम्बन्ध में अभी तक परिस्थिति साफ नहीं हुई कि असली बात क्या थी क्योंकि यदि एक तरफ सुभाष बाबू ऐसा कह रहे थे, तो दूसरी तरफ काँग्रेस के अन्य महान नेता उसके विरुद्ध कह रहे थे।

त्रिपुरी कांग्रेस

चुनाव में सुभाषबाबू जीत गये। गांधीजी अबतक चुप थे, पर अब उन्होंने कहा कि पट्टाभि की हार उनकी हार है। पर सुभाष तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चुन चुके थे। इन्हीं परिस्थितियों में १६३६ में त्रिपुरी कांग्रेस का अधिवेशन १०, ११, १२ मार्च को हुआ। जिस समय त्रिपुरी में कांग्रेस होनेवाली थी उस समय एक तो घटना यह हुई कि सुभाष बाबू बहुत बीमार रहे (इसलिये मौलाना अबुलकलाम ने सभापतित्व किया) और दूसरा उन्हीं दिनों गांधीजी राजकोट के सम्बन्ध में अनशन कर रहे थे। इन दिनों बोसवादी तथा गांधीवादियों का सम्बन्ध इतना खराब हो गया कि गांधीवादी यह कहते थे कि बोस तो बीमार ही नहीं हैं लोगों की सहानुभूति पाने के लिये मक्कर मारकर पड़ा है, और दूसरे लोगों ने यह कहा कि इस समय गांधीजी के अनशन का उद्देश्य अपनी तरफ़ कांग्रेसजनों की सहानुभूति खींचकर सुभाषबाबू को नीचा दिखाना था।

पंत प्रस्ताव

पहले यह भय किया जाता था कि त्रिपुरी में सभापति के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाया जायेगा। पर इस प्रस्ताव पर वोट मिलना मुश्किल है समझकर पंत प्रस्ताव रखा गया जिसमें सभापति को यह आज्ञा दी गयी कि वे महात्माजी की आज्ञा से अपनी कार्य समिति बनावें। कहना न होगा कि यह प्रस्ताव कांग्रेस के प्रचलित रिवाज के विरुद्ध था और सभापति के विरुद्ध अविश्वास के प्रस्ताव के तुल्य था। कांग्रेस समाजवादी दल इस प्रस्ताव पर निस्पक्ष हो गया। इसी को सुभाषबाबू के प्रशंसक त्रिपुरी के विश्वासघात नाम से उल्लेख करते हैं। यह प्रस्ताव पास होगया।

सुभाषबाबू का इस्तीफा और फारवर्ड ब्लाक संगठन

यह झगड़ा बढ़ता ही गया। सुभाषबाबू कार्य समिति न बना सके। कार्य समिति के सदस्यों ने एक साथ इस्तीफा दे दिया। अब सुभाषबाबू के लिये परिस्थिति बहुत विकट हो गयी। अन्त में उन्हें इस्तीफा दे देना पड़ा, और राजेन्द्रबाबू कांग्रेस के सभापति बनाये गये। इसी समय सुभाषबाबू ने फारवार्ड ब्लाक का संगठन किया। इसका उद्देश्य पहले पहल एक ब्लाक अर्थात् वामपक्ष के संयुक्त मोर्चे के रूप में रहना था, पर धीरे धीरे यह एक दलके रूप में परिणत हो गया। जिस समय फारवार्ड बना था उस समय उसमें और गांधी-वादी दल में कोई विशेष सिद्धान्तिक मतभेद नहीं था सिवा इसके कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फारवार्ड ब्लाक तेज चाल में विश्वास करता था, गांधी गुट को नेतृत्व से हटाना चाहता था, और समझौता के विरुद्ध था।

कुछ आपत्तिजनक प्रस्ताव

१९३९ के जून में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने कुछ ऐसे प्रस्ताव पास किये जिनसे यह समझा गया कि कांग्रेस के अन्दर के वाम पक्षीदलों की स्वतंत्रता पर बहुत बड़ा अघात हुआ। ये प्रस्ताव सर्वसम्मति से या बहुत बड़ी सम्मति से पास नहीं हुए थे। इसमें एक प्रस्ताव में यह हिदायत दी गयी थी कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से अनुमति प्राप्त किये वगैर कोई कांग्रेस जन सत्याग्रह नहीं कर सकता। इस प्रस्ताव से सरासर किसान तथा मजदूर सभाओं की स्वतंत्रता छिन गयी थी। यदि वे इस प्रस्ताव को मान लेती, तो फिर उनके स्वतंत्र अस्तित्व की कोई आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि जब प्रत्येक मामले में कांग्रेस कमेटी का हुकुम मानकर ही चलना था, तो फिर उनके स्वतंत्र अस्तित्व की आवश्यकता क्या थी? इस प्रस्ताव का उद्देश्य कांग्रेस मंत्रिमंडलों का मार्ग निष्कंटक बनाना था। इन दिनों जगह जगह पर किसान तथा मजदूर सभायें जमींदारों तथा पूंजीपतियों से खंडयुद्ध लड़ रही थीं। इस प्रस्ताव का उद्देश्य उनको बन्द करना था। दूसरे प्रस्ताव में कांग्रेस मंत्रिमंडलों को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से स्वतंत्र करके अखिल भारतीय पार्लियामेंटरी सब कमेटी के जिसके प्रधान सरदार पटेल थे कर दिया गया। इन दिनों कुछ प्रान्तों में वाम पक्षियों का कांग्रेस में जोर था। दक्षिण पंथी नेताओं को यह डर था कि मंत्रिमंडलों में भी उनकी चलने न लगे। इस कारण यह प्रस्ताव था। एक अन्य प्रस्ताव में कांग्रेस के चुनाव के अधिकार इस प्रकार सीमित कर दिये गये कि दक्षिण पंथियों की तूती बोलती रहे।

प्रस्तावों का विरोध

इन प्रस्तावों का मतलब स्वाभाविक रूप से यह लगाया गया कि इनके द्वारा वाम पक्ष को कुचलने की चेष्टा की गयी है। इनके विरुद्ध क्या किया जाय इसका निर्णय करने के लिये सब नेतृ स्थानीय वाम पक्षियों की एक सभा left consolidation committee के नाम से हुई, जिसमें तय हुआ कि ९ जुलाई को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अखिल भारतीय रूपसे इन प्रस्तावों का विरोध किया जाय। तदनुसार उस तारीख को सार्वजनिक सभाओं का एलान हुआ। आचार्य कृपलानी तथा डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने सख्त धमकी दी कि यदि सूचना के अनुसार सभा की गयी, तो लोगों पर अनुशासन की कार्रवाई की जायेगी। यद्यपि एम० एन० राय left consolidation committee में शामिल थे, पर धमकी पाकर ही वे इस कार्यक्रम से ऐन मौके पर अलग हो गये। और भी बहुत से वामपक्षी कन्नी काट गये। इसलिये वामपक्षी समन्वय कमेटी कमजोर हो गयी।

अनुशासन की कार्यवाही

६ जुलाई की सभायें बहुत सफल रहीं। भारत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक सभायें हुईं। एम० एन० राय के अतिरिक्त सब वाम पक्षियों ने इन सभाओं में भाग लिया था। इस प्रदर्शन के फल स्वरूप कार्यसमिति की अगली बैठक में सुभाषबाबू पर अनुशासन की कार्रवाई की गई, और उन्हें सब पदों से निकाल कर चार आने का सदस्य भर रखा गया। उनके अलावा और जिन कांग्रेस जनों ने ६ जुलाई की सभा में भाग लिया था, उन पर अनुशासन की कार्रवाई करने का भार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों पर छोड़ दिया गया। उस समय सुभाषबाबू बंगाल कांग्रेस कमेटी के सभापति थे, किन्तु इस प्रस्ताव के बाद वे सभापति नहीं रह सकते थे। इस कारण सुभाषबाबू उससे अलग हो गये।

बंगाल में गड़बड़

बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने दूसरा सभापति चुनना अस्वीकार किया, पर सुभाषबाबू के बीच में पड़ने से उन्हीं के द्वारा नामजद श्री राजेन्द्रचन्द्रदेव चुने गये। इसके बाद से तो बराबर बंगाल कांग्रेस कमेटी और कांग्रेस कार्य समिति में झगड़ा बना रहा। यहाँ तक कि कार्य समिति से प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी को रद्द कर एक ऐडहाक कमेटी बना दी, और उसी को चुनाव के सब हक दिये। नतीजा यह हुआ कि रामगढ़ के पहले बंगाल में कांग्रेस का कोई चुनाव न हो सका, और बंगाल, रामगढ़ काँग्रेस के सभापति के चुनाव में भाग न ले सका। वहाँ कुछ कांग्रेसी नेता तथा करीब आधे एम० एल० ए० एडहाक कमेटी की तरफ हो गये, पर जनता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्ण रूप से उनके विरुद्ध थी, इतनी कि एडहाक कमेटी के लोग एक भी सार्वजनिक सभा नहीं कर सकते थे। इस प्रकार बंगाल में बराबर दो कांग्रेस कमेटियां काम करती रहीं, और जब नेता गण १६४२ के बाद छूटे, तभी उनका मिलन हुआ।

वामपन्थी एकता की महान चेष्टा

कार्यसमिति ने सुभाषबाबू के साथ न्याय किया या अन्याय किया, इसे हम इतिहास के फैसले पर छोड़ कर इतना दिखा कर आगे बढ़ जाना चाहते हैं कि सुभाषबाबू ने उस युग में वामपन्थी शक्तियों को एकत्र करने की बहुत बड़ी चेष्टा की थी। यह चेष्टा सफल नहीं हुई, पर इस बात को भुलाया नहीं जा सकता कि इस दिशा में उन्होंने एक बहुत बड़ा कदम रखा। उन दिनों कम्यूनिस्ट पार्टी कांग्रेस में थी। उसके मुखपत्र National Front ने जुलाई प्रदर्शनों के सम्बन्ध में जो लिखा था, वह करीब करीब सही है। उसने लिखा था—It marks the beginning of the unity in action on a mass scale between the forces of the left nationalism and the forces of the proletariat and the peasantry, याने जन आन्दोलन के पैमाने पर वामपन्थी राष्ट्रीयतावादी तथा किसान और मजदूरों की कार्यक्षेत्र में एकता का यह पहला सूचक है। यह तो मानी हुई बात है कि वामपन्थी एकता के बगैर भारतवर्ष में फासिस्टवाद की बहुत संभावना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २२ :

द्वितीय महायुद्ध में काँग्रेस

हिटलर को बढ़ावा

हम पहले म्यूनिक पैक्ट का उल्लेख कर चुके हैं। म्यूनिक पैक्ट वालों का यह उद्देश्य था कि इतने ही से हिटलर मान जायेगा, पर ऐसा नहीं हुआ। हिटलर जर्मन पूँजीवाद की तरफ से उपनिवेशों की माँग कर रहा था, और उसे उपनिवेशों की जरूरत थी, जरूरत इस अर्थ में कि यदि उसे पूँजीवादी दिशा में बढ़ना था तो। इन्हीं का नतीजा यह हुआ कि योरोप में लड़ाई छिड़ने की परिस्थिति हो गयी। रूस के नेतागण इस बात को जानते थे, और वे चाहते थे कि रूस में और पश्चिमी लोकतन्त्रों में एक समझौता हो जाय जिससे हिटलर का विरोध किया जा सके, पर अँगरेज राजनीतिज्ञ इसे टालते रहे। उन्हें यह आशा थी कि हिटलर रूस पर हमला करेगा। सच तो यह है कि इसी धारणा के वशवर्ती होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने जर्मनी के फासिस्टवाद को बढ़ाया था। बात यह है कि हिटलर ने इटली तथा जापान के फासिस्टवादी राष्ट्रों के साथ एक कामीन्टार्न विरोधी पैक्ट कर रखा था जिसके कारण उनके मन में यह सुनहली आशा थी।

रूसी-जर्मन पैक्ट

इन आशाओं को व्यर्थ करने के लिये तथा बहरहाल अपनी रक्षा करने के लिये सोवियट रूस ने फासिस्टवादी जर्मनी के साथ २३ अगस्त १९३९ को अनाक्रमण सन्धि कर ली। स्मरण रहे कि सोवियट रूस पश्चिमी लोकतन्त्रों के साथ जो सन्धि करना चाहता था, वह केवल अनाक्रमण सन्धि नहीं थी, बल्कि उस सन्धि में यह शर्त होने वाली थी कि यदि एक पर आक्रमण हो, तो दूसरा उसकी रक्षा में दौड़ पड़े। पर उन्होंने इसे मंजूर नहीं किया था, तभी रूस को जर्मनी से पैक्ट करना पड़ा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारत सरकार भी लड़ाई में कूदी

कुछ भी हो इसी के बाद हिटलर ने पौलैण्ड पर हमला कर दिया। अब ब्रिटेन तथा फ्रांस पोलैण्ड की रक्षा के लिये वचनबद्ध थे। यहीं से महायुद्ध छिड़ गया। ब्रिटेन लड़ाई में कूदते ही भारत सरकार ने भी युद्ध घोषणा कर दी। इस मामले में सरकार ने न तो केन्द्रीय धारासभा की ही राय ली, और न प्रान्त के मन्त्रिमंडलों की ही राय ली। सरकार इतने ही से सन्तुष्ट नहीं रही, बल्कि उसने अब प्रान्त की कांग्रेस सरकारों के सिर पर से काम करना शुरू किया।

कांग्रेस का रुख

कांग्रेस कार्यसमिति ने १६३६ के अगस्त के प्रारम्भ में ही अर्थात् लड़ाई छिड़ने के तीन सप्ताह पहले ही यह प्रस्ताव पास किया था कि "कांग्रेस लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता के पक्ष में है। कांग्रेस ने बार बार यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया के सुदूरपूर्व में फांसीवादी आक्रमण तथा चेकोस्लावाकिया और स्पेन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा लोकतन्त्र के साथ विश्वासघात किये जाने की निन्दा की है।.......ब्रिटिश सरकार के भूतकाल की नीति तथा इस समय के रवैये से यह ज्ञात होता है कि यह सरकार लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता का पक्षपाती नहीं है, और यह किसी भी समय इन आदर्शों के साथ विश्वासघात कर सकती है। ऐसी हालत में भारतवर्ष ऐसी सरकार के साथ न तो सहयोग कर सकता है और न वह उस लोकतांत्रिक स्वतन्त्रता के लिये अपना धन-जन दे सकता है जबकि इस बात का खतरा है कि इन आदर्शों के साथ विश्वासघात किया जायेगा और जबकि उसे स्वयं लोकतान्त्रिक स्वतन्त्रता नहीं मिली है।" कांग्रेस कार्यसमिति ने सरकार के नीति के विरोध में केन्द्रीय धारा सभा के कांग्रेसी सदस्यों को यह हिदायत दी कि अगले अधिवेशन में उपस्थिति न हो।

सरकार द्वारा स्वतन्त्रता-संकोच

त्रिपुरी कांग्रेस में ही सुभाषबाबू ने अपने अभिभाषण में यह कहा था कि लड़ाई आ ही रही है, इसका मौका हाथ से जाने न दिया जाय, और ६ महीने की मुहलत देकर सरकार पर लड़ाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छेड़ दी जाय। इसी प्रकार अन्य वामपक्षियों ने भी इसी प्रकार की बातें कहीं थी। जिस समय महायुद्ध छिड़ा, उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू चुंगकिंग में थे, वे फौरन वापस बुलाये गये। इस बीच में भारत सरकार ने न केवल भारतवर्ष की तरफ से लड़ाई छेड़ दी थी बल्कि उन्होंने कुछ आर्डिनेन्स लगा दिये जिनसे प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों के अधिकार बहुत कुछ छिन गये थे। पार्लियामेंट ने भी फौरन १६३५ के ऐक्ट को सुधारते बल्कि बिगाड़ते हुए एक संशोधन पास कर दिया था जिससे प्रान्तीय स्वायत्त-शासन एक मजाक बन गया था।

कांग्रेस शर्त के साथ सहायता पर तैयार

सितम्बर १४ को कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में भाग लेने के लिये मिस्टर जिन्ना को भी निमन्त्रण दिया गया था। पर वे नहीं आये। कार्यसमिति ने फासिस्टवाद नाजीवाद की निन्दा की, पर साथ ही वायसराय तथा ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ किया था उसके प्रति विरोध जाहिर किया था। कांग्रेस ने सहयोग देने के लिये कहा, पर कहा कि सहयोग इन मानों में ही हो सकता है, जबर्दस्ती सहयोग प्राप्त करना गलत है। यह कहा गया कि कांग्रेस लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता के पक्ष में है, पर भारतवर्ष एक ऐसे युद्ध में सहयोग नहीं दे सकता जिसका उद्देश्य लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता बताया जा रहा है, पर भारतवर्ष में जो कुछ मामूली नागरिक स्वतन्त्रता थी वह भी छीन ली गयी है। यह कहा गया कि यदि युद्ध का उद्देश्य साम्राज्यवादी स्वार्थों, उपनिवेशों, स्थिर स्वार्थों की रक्षा है तो भारत को ऐसे युद्ध से कोई मतलब नहीं हो सकता। कार्यसमिति ने भारत की रियासतों के शासकों की ओर से हाल में जो यह ऐलान किया गया था कि वे लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता की ओर से लड़ेंगे, इसकी समालोचना करते हुए यह कहा कि पहले वे अपनी रियासतों में तो लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता स्थापित करें, फिर बढ़ बढ़ कर ऐसी बातें मारें। कार्यसमिति ने बार बार यह बात साफ कर दी कि वह ब्रिटेन को सहायता देने के लिये तैयार है, अवश्य बिना शर्त के नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्री मंडलों का इस्तीफा

ब्रिटिश सरकार ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उधर ८ प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रि मंडलों की हालत बुरी होती जा रही थी। गवर्नर और मंत्रियों में खींचातानी बढ़ रही थी। २२ अक्टूबर को काँग्रेस कार्य समिति ने मंत्रिमण्डलों को पद त्याग करने की हिदायत दी, और नवम्बर के अन्दर ही एक एक करके मंत्रिमंडलों ने स्तीफ़ा दे दिया।

दमनचक्र शुरू

मंत्रिमंडलों का स्तीफा देना था कि दमनचक्र बहुत जोर से शुरू हो गया। पंजाब के अहरार तथा संयुक्त प्रान्त की यूथलीग लड़ाई छिड़ने के बाद से ही युद्ध विरोधी प्रचार कार्य करती रही। चारों तरफ इन लोगों की तथा अन्य लोगों की गिरफ्तारियाँ शुरू हो गयीं। अहरारों ने इस समय सबसे अधिक बहादुरी दिखलाई इसमें सन्देह नहीं।

रामगढ़ कांग्रेस

कांग्रेस ने अब भी कोई फैसला नहीं किया कि लड़ाई के विरुद्ध कुछ किया जाय। इसी अवस्था में १६४० के १६,२० मार्च को मौलाना अबुल कलाम आजाद के सभापतित्व में बिहार के रामगढ़ नामक स्थान में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। यह कांग्रेस इस कारण बहुत ही ऐतिहासिक रहा कि इसके बाद कई सालों तक कांग्रेस के अधिवेशन को कोई नौबत ही नहीं आयी। सभापति ने बड़ी योग्यता के साथ कांग्रेस की मांग का स्पष्टीकरण किया, और यह बताया कि कांग्रेस साम्राज्यवादी तथा फासिस्टवादी तरीकों के विरुद्ध है और उसे बहुत ही खुशी होगी यदि वह आजाद होकर फासिस्टवाद के विरुद्ध लड़ सके। मौलाना ने अपने भाषण में हिन्दू और मुसलमानों में सदभाव के लिये भी विशेष आवेदन किया।

रामगढ़ के निश्चय

इस कांग्रेस में युद्ध समस्या पर यह प्रस्ताव हुआ कि कांग्रेस समझती है कि ब्रिटिश सरकार इस युद्ध को किसी महान उद्देश्य के लिये नहीं, बल्कि साम्राज्य की रक्षा के लिये कर रही है। कांग्रेस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने यह घोषणा कर दी कि पूर्ण स्वतन्त्रता के अलावा भारतीय किसी बात पर राजी नहीं हो सकते। कांग्रेस ने अपने इस प्रस्ताव में यह साफ कह दिया कि भारतवर्ष का विधान भारतीयों का विधान सम्मेलन ही बना सकता है। कांग्रेस ने भारतवर्ष को विखंडित करने का विरोध किया।

समझौता विरोधी सम्मेलन

रामगढ़ कांग्रेस के अवसर पर श्री सुभाषचन्द्र ने उसी के पास एक समझौता विरोधी सम्मेलन किया। यह सम्मेलन बहुत ही सफल रहा, और इसमें गान्धीवादी नेताओं को समझौता मूलक नीति का विरोध किया गया। स्वामी सहजानन्द इसके प्रमुख उद्योक्ता थे।

फारवार्ड ब्लाक का संग्राम छिड़ा

इस अवसर पर फारवार्ड ने यह तय किया कि ६ अप्रैल से स्वतन्त्रता संग्राम छेड़ दिया जाय। बाद को सचमुच ६ अप्रैल को कुछ स्थानों में सत्याग्रह के ढंग की बातें हुई। मजे की बात यह है कि बंगाल में जहां सुभाषबाबू स्वयं मौजूद थे, वहां कुछ नहीं हुआ सुभाषबाबू कारपोरेशन में व्यस्त रहे, पर उत्तर भारत के कुछ स्थानों में विशेष कर इलाहाबाद में कोतवाली जेल इत्यादि स्थानों पर झंडा चढ़ाने का आन्दोलन चला, और इसमें करीब एक सौ व्यक्ति गिरफ्तार हुये। यूथलीग ने यह आन्दोलन चलाया। अब यह कहा जा सकता है कि सुभाषबाबू द्वारा चला हुआ यह आन्दोलन संख्या की दृष्टि से सोलहो आने असफल रहा पर शायद इसके कारण कांग्रेस को आगे बढ़ना पड़ा। इस आन्दोलन में दूसरे किसी बामपन्थी दल ने भाग नहीं लिया। दो कम्यूनिस्ट पार्टी ने युद्ध विरोधी पर्चेबाजी जारी रखी। कारपोरेशन से छुट्टी पाने के बाद सुभाष बाबू ने हालवेल मानुमेंट तोड़ने का आन्दोलन चलाया, पर फजलुल हक ने चालाकी से मूर्ति हटवा ली, इस कारण कई सौ व्यक्तियों की गिरफ्तारी के बाद यह आन्दोलन खतम हो गया।

आर० एस० पी० का जन्म

रामगढ़ में ही अनुशीलन समिति के नेताओं को एक अखिल भारतीय बैठक हुई। अनुशीलन समिति बंगाल की एक तपी हुई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रांतिकारी पार्टी थी इस अधिवेशन में पार्टी का नाम भारत का क्रान्तिकारी समाजवादी दल या आर. एस. पी. आई. रखा गया, तथा महान क्रान्तिकारी नेता श्री योगेश्वर जी इसके मंत्री चुने गये। आगे इस दल ने समाजवाद को अपना ध्येय तथा कार्यक्रम घोषित किया।

जून १९४० का सहयोग प्रस्ताव

सरकार का दमन चक्र जोरों के साथ चलने लगा। कांग्रेस के कुछ नेता सहयोग के लिये लालायित हो रहे थे। राजगोपालचार्य इस प्रवृत्ति के नेता थे। इन्हीं के नेतृत्व में जून १९४० में काँगरेस कार्यसमिति ने यह किया कि अभी सरकार इतना करे कि आदर्श रूप से पूर्ण स्वतन्त्रता को मानले पर कार्य रूप में १९३५ के इण्डिया एक्ट के अन्दर ही केन्द्र में विभिन्न दलों की राष्ट्रीय सरकार बनायी जाय, वायसराय रहें,पर शक्ति इस सरकार के हाथ में रहे,तो कांग्रेस सरकार को लड़ाई चलाने में मदद देगी। महात्मा जी ने इस प्रस्ताव का इस कारण विरोध किया कि उनका यह कहना था कि इस प्रकार युद्धोद्योग में शिरकत से अहिंसा की नीति टूट जाती है। पर कांग्रेस के इस प्रस्ताव पर भी सरकार राजी नहीं हुई। सरकार मुंह से तो लोकतंत्र और स्वतन्त्रता की रट लगा रही थी, पर उसका असली उद्देश्य यह था कि साम्राज्य की रक्षा की जाय।

सरकार लड़खड़ा रही थी

स्मरण रहे कि फ्रांस के पतन हो जाने के कारण भारतवर्ष में सरकार के प्रति इतना अविश्वास बढ़ गया था कि लोग खुले आम नोट लेने से इनकार कर रहे थे। यदि इस समय कांग्रेस की तरफ से केवल इसी आन्दोलन को और बढ़ा दिया जाता तो सरकार को लेने के देने पड़ जाते इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि इस समय काग्रेस आन्दोलन छेड़ देती तो सरकार खटाई में पड़ जाती इसमें सन्देह नहीं। पर गान्धीजी ने अति उदारता दिखाकर इस समय सरकार की डूबती नाव को सम्हाला और लोगों से नोट लेने के लिये कहा।

व्यक्तिगतसत्याग्रह शुरू

अन्त तक काँग्रेस ने मजबूरी से व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहना न होगा कि लड़ने का यह कोई बअसर तरीका नहीं था। इस सत्याग्रह के सिलसिले में चुने हुए कांग्रेस जन इस लड़ाई में मदद देना हराम है कह कर या कहने की चेष्टा में गिरफ्तार होते थे।

वैयक्तिक सत्याग्रह की वामपन्थी आलोचना

कांग्रेस आधे दिल से कार्यक्षेत्र में उतरी थी। इस आन्दोलन की समालोचना में यह कहा गया है—

"इस आन्दोलन के महान संचालकों के अनुसार यह आन्दोलन प्रतीकवादी था। राजनैतिक विचारों का कितना दिवालियापन था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ऐसे भयङ्कर यंत्र के साथ एक प्रतीक से लड़ने चलना एक ऐसा विचार था जिससे ज्ञात होता था कि गांधीवाद जिसने सुयोग्य ठाठ के साथ भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण किया था अब सम्पूर्ण रूप से ह्रासशील हो चुका था और अब ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ कैसे लड़ा जाय इसका कोई उपाय उसे नहीं सूझ रहा था। एक प्रतीक के साथ तो एक प्रतीक से लड़ा जा सकता था, पर साम्राज्यवाद एक प्रतीक तो था नहीं। यह बात सच है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद इस लड़ाई के लिए अच्छी तरह तैयार नहीं था इसलिये यह एक विपत्ति में फँस गया था, पर वह चाहे जितना कमजोर हो गया हो, और चाहे जितनी विपत्ति में फंस गया हो, पर वह अब भी लूट और दमन का एक बहुत जबरदस्त क्षेत्र बना हुआ था। नेहरूजी प्रथम वैयक्तिक सत्याग्रही होने वाले थे। यह नहीं मालूम कि नेहरूजी ने कहां तक ऐसा होना इच्छापूर्वक स्वीकार किया था, और कहां तक यह उनके ऊपर लादा गया था। जो कुछ भी हो सरकार उनकी सहायता कर गयी, वे गिरफ्तार हो गये और सत्याग्रह करने के पहले ही एक व्याख्यान के लिये वे जेल पहुँच गये।

वैयक्तिक सत्याग्रह एक दम व्यर्थ नहीं

"फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि वैयक्तिक सत्याग्रह आन्दोलन बिल्कुल व्यर्थ था। कोई भी संग्राम एकदम व्यर्थ नहीं जाता चाहे वह एक प्रतीकवादी संग्राम ही क्यों न हो। न कुछ करने से प्रतीकवादी संग्राम ही अच्छा था। अब ऐसी हालत पहुँच गयी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थी कि युद्ध के विरुद्ध उठाई हुई ऊँगली भी हितकर थी। जब वैयक्तिक सत्याग्रह के फलस्वरूप भारत के जगत प्रसिद्ध व्यक्ति तथा कल के मन्त्री और प्रधान मन्त्री गिरफ्तार होते गये, तो इससे जगत के सामने यह बात साफ़ होती गयी कि भारत के वास्तविक प्रतिनिधि लड़ाई के साथ नहीं है। पर ऐसी हालत में जबकि हमारे साथ जो लोग सहानुभूति कर सकते थे जैसे मान लीजिये अमेरिकन गण स्वयं ही जीवन-मरण के संग्राम में उतरने वाले थे, इस स्पष्टीकरण से क्या आता जाता था।"❀

पर सरकार पर असर नहीं

जहाँ तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सम्बन्ध है, उसने इस आन्दोलन की कुछ परवाह नहीं की। सरकार का दमन जारी रहा। १६४१ में सत्याग्रही कैदियों की संख्या बहुत बढ़ गई। संयुक्त प्रान्त से सब से अधिक लोगों ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। और प्रान्तों में तो वैयक्तिक सत्याग्रह सचमुच वैयक्तिक रहा, पर संयुक्त प्रान्त में यह एक जन-आन्दोलन में परिणित हो गया। अन्य प्रान्तों में जब गिरफ्तारी नहीं हुई तो लोग सत्याग्रह करते-करते दिल्ली के ओर चले।

रूस जर्मन युद्ध और कम्युनिस्ट

१६४१ के २२ जून को हिटलर ने योरोप को जीतने के बाद रूस पर हमला कर दिया। यह स्मरण रहे कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के सब लोग जेलों में पहुँच चुके थे। देवली कैंप में मुख्यतः कम्युनिस्ट नजरबन्द थे। वे अभी तक युद्ध विरोधी ही थे। सच तो यह है कि दिसम्बर १६४१ तक जब तक कि इङ्गलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी से हिदायत नहीं आयी तब तक वे युद्ध विरोधी ही रहे, इसके बाद वे एकाएक युद्ध के पक्षपाती हो गये। अब उनके निकट युद्ध था चरित्र बदल चुका था। उसके बाद वे युद्धोद्योग में मदद देने लगे, और लोकयुद्ध के मूर्खता पूर्ण तथा देशद्रोही सिद्धान्त का प्रचार करने लगे। रायवादी तथा राय तो पहले ही जन मोर्चे से अलग हो गये थे, और सरकार के पिट्ठू के रूप में काम कर रहे थे।

❀देखो मन्मथनाथ गुप्त लिखित "अगस्त क्रान्ति और प्रति-क्रान्ति। पृष्ठ ३४, ३५।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनका कहना था कि यह युद्ध फांसीवाद विरोधी है। इसी कारण वे कांग्रेस से निकाल भी दिये गये थे।

जापानी आक्रमण और कांग्रेस

७ दिसम्बर १६४१ को जापान भी युद्ध में कूद पड़ा, और उसने बात की बात में अमेरिका का पर्ल हार्बर ले लिया। धीरे-धीरे उसने एशिया के दक्षिण पूर्वी हिस्से के सब देशों को हड़प लिया। १६४१ के ३० दिसम्बर को कार्य-समिति ने सरकार की तरफ बहुत तपाक से हाथ बढ़ाया। इस सम्बन्ध में अपनी सचाई दिखाने के लिये कार्य-समिति ने गांधीजी को नेतृत्व से मुक्ति दी। जापानी आक्रमण का फायदा उठाने के बजाय कांग्रेस सरकार के साथ सहयोग करने को तैयार थी। और इस सम्बन्ध में उसकी इच्छा ऐसी प्रबल थी कि अपने नेता को भी अलग करने से नहीं झिझकी।

सुभाष बाबू फरार

इस साल की घटनाओं को समाप्त करने के पहले यह बता दिया जाय कि इस साल के प्रारम्भ में १६४१ की २६ जनवरी के दिन सुभाष बाबू अपने कलकत्ते के मकान से गायब पाये गये। वे कुछ दिन पहले अनशन के कारण मेडिकल ग्राउंड पर रिहा हुए थे। सुभाष बाबू को इस फरारी के क्या महान ऐतिहासिक नतीजे हुए इसका हम बाद को वर्णन करेंगे।

क्रिप्स प्रस्ताव

पूर्व में युद्ध की हालत बहुत जल्दी खराब होती जा रही थी। यद्यपि सरकार अब तक कांग्रेस के सब अनुरोधों को ठुकराती जाती थी, पर मार्च को रंगून जापानियों के कब्जे में चले जाने से ऐसी परिस्थिति आ गयी थी कि ब्रिटिश सरकार यह समझने लगी थी युद्धोद्योग में कांग्रेस का सहयोग प्राप्त करना चाहिये। तदनुसार ११ मार्च को ही क्रिप्स मिशन की घोषणा हुई और सर स्टेफोर्ड क्रिप्स १६४२ के २३ मार्च को नयी दिल्ली में कुछ प्रस्ताव लेकर आये। उनका मतलब यह था कि कांग्रेस युद्ध में मदद दे, तब जापान का सामना करना आसान होगा। क्रिप्स प्रस्तावों का आशय यह था कि भारतवर्ष एक यूनियन या युक्तराष्ट्र बने। इस प्रस्ताव में यह कहा गया था कि युद्ध खतम होने के बाद ही भारतवर्ष को जिम्मेदार सरकार दी जायेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस योजना में लीग को भी जिसने अबतक पाकिस्तान को अपना उद्देश्य घोषित कर दिया था खुश करने की कोशिश की गयी थी। इसमें प्रान्तों को तथा रियासतों को यह स्वतन्त्रता दी गयी थी कि वे युक्तराष्ट्र में यदि चाहें तभी शामिल हो सकते हैं। इस प्रस्ताव के ब्यौरे में जाने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही बता देना यथेष्ट है कि गांधीजी ने इस प्रस्ताव को दिवालिया बैंक पर बाद को तारीख लगा हुआ चैक करके घोषित किया। क्रिप्स प्रस्ताव के समय वैयक्तिक सत्याग्रह बन्द था। आश्चर्य की बात है कि इसी युग में कांग्रेस समाजवादी दल ने शायद कांग्रेस का अनुकरण कर अपने को युद्ध के प्रति निष्पक्ष घोषित किया था। क्रिप्स प्रस्ताव में सब से मजेदार बात यह है कि पहले क्रिप्स कुछ देना चाहते थे, पर एकाएक उनको विलायत से कोई हिदायत आ गयी, वे फिर कड़े पड़ गये।

राष्ट्रपति द्वारा स्पष्टीकरण

क्रिप्स प्रस्ताव की असफलता के कारण अब कांग्रेस के सामने इसके सिवा कोई चारा नहीं रहा कि लड़ाई छेड़े। इस बार्त्ता को भंग करते हुए मौलाना अबुलकलाम आजाद ने यह साफ कह दिया कि ऐसा मालूम होता है कि सरकार भारतवर्ष की ठीक ठीक रक्षा नहीं करना चाहती, बल्कि उसे इसी की फिक्र पड़ी हुई है कि साम्राज्य कायम रहे।

हालत बिगड़ती गई

स्मरण रहे कि जिस समय क्रिप्स प्रस्ताव पर आलोचना हो रही थी उस समय जेलों में हजारों राजनैतिक कैदी तथा नजरबन्द थे। गिरफ्तारियां और भी बढ़ने लगी। जनता ब्रिटिश सरकार से इतनी क्षुब्ध थी कि वह जापान की तथा जर्मनी की जीत चाहने लगी थी। ब्रिटिश शासन के अन्यायों के कारण लोग क्रोध में यह चाहते थे कि अंगरेज एक बार हार जाय फिर चाहे जो कुछ होगा देख लिया जायगा। इन्हीं दिनों सुभाषबाबू जापानी अधिकृत देशों से रेडियो में भाषण दे रहे थे। अवश्य सुभाषबाबू जापानी एजेंट नहीं थे, पर उनके भाषण का उन दिनों यही अर्थ लगाया जाता था कि वे जापान की जीत चाह रहे हैं। इन सब विचारों तथा गिरती हुई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर्थिक अवस्था का यह परिणाम हुआ था कि जनता ने क्रिप्स प्रस्ताव को बिल्कुल पसन्द नहीं किया था। क्रिप्स प्रस्ताव की असफलता पर किसी को दुःख नहीं हुआ था। सब यही चाहते थे कि धोखेबाज अंग्रेजों की कोई मदद न की जाय।

पर फौज में भर्ती जारी

अवश्य इसके साथ ही यह भी बता दिया जाय कि हजारों की तादाद में लोग फौज तथा अन्य युद्ध सम्बन्धी नौकरियों में भर्ती हो रहे थे। एक देश जिसमे आधे लोग पेट भर कर खाना नहीं पाते हैं, उसमें जैसे एक तरफ साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध अनिवार्य था, उसी तरह इस प्रकार भर्ती भी अनिवार्य थी। भर्तियों की सफलता के कारण यह समझना कि जनता में ब्रिटिश विरोध कम था गलत होगा।

जुलाई प्रस्ताव

देश में आन्दोलन के लिये बहुत मांग हो रही थी। १४जुलाई को कांग्रेस कार्य समिति ने १७०० शब्दों का एक प्रस्ताव पास किया। असल में अगस्त प्रस्ताव इसी से उत्पन्न हुआ। इस प्रस्ताव में यह साफ कर दिया गया कि यदि सरकार देश की स्वतंत्रता स्वीकार न करे तो जल्दी ही संग्राम अनिवार्य है। पर इस प्रस्ताव में साथ ही यह कहा गया कि विदेशी आक्रमण को रोकने के लिये इस बीच में मित्रपक्ष की सेनायें रह सकती हैं।

अगले संग्राम पर गांधीजी

गांधीजी ने १९४२ की १९ जुलाई को अगले संग्राम का खाका खींचते हुए कहा "इस बार मैं मांग कर जेल नहीं जाने वाला हूँ। इस संग्राम में मांगकर जेल जाना नहीं है। यह बहुत ही नरम चीज होगी। अवश्य अबतक हमने मांगकर जेल जाने का व्यापार कर रखा था। अबकी बार मेरा इरादा यह है कि चीज को जहाँ तक हो सके शीघ्र तथा ह्रस्व किया जाय।" इसी परिस्थिति में बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ।

२६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अगस्त प्रस्ताव

इसी अधिवेशन में बहुत सोच विचार के बाद अ० भा० कां० कमेटी में वह प्रस्ताव पास हुआ। जो कांग्रेस के इतिहास में अगस्त प्रस्ताव नाम से मशहूर हुआ। इस प्रस्ताव का सार यों है—

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने रूसी और चीनी मोर्चों पर स्थिति के बिगड़ने को निराशा के साथ देखा है, और वह रूसियों और चीनियों की उस वीरता की प्रशंसा करती है जो उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा में प्रदर्शित की है। जो लोग स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं; और आक्रमण के शिकार व्यक्तियों से सहानुभूति रखते हैं उन सबका खतरा नित्यप्रति बढ़ता जा रहा है। यह उस नीति की परीक्षा के लिये बाध्य करता है जिसके मित्रराष्ट्र पोषक हैं। इस नीति का आधार स्वतंत्रता उतनी नहीं है जितना कि साम्राज्यवादी परम्पराओं और प्रणालियों को कायम रखना है। साम्राज्य को अधिकार में रखना शासन सत्ता की शक्ति बढ़ाने के बजाय एक भार और शाप बन गया है। आधुनिक साम्राज्यवाद की सर्वोत्कृष्ट क्रीड़ा भूमि भारत इस प्रश्न की कसौटी बन गया है क्योंकि भारत की स्वतंत्रता से ही ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों की परीक्षा होगी। इस प्रकार इस देश में ब्रिटिश शासन के अन्त होने पर युद्ध का भविष्य और स्वतंत्रता तथा लोकतंत्र की सफलता निर्भर है। आज के खतरे को देखते हुए। भारत को स्वतन्त्र कर देने और ब्रिटिश आधिपत्य को समाप्त कर देने की आवश्यकता है। भविष्य के लिये किसी प्रकार की प्रतिज्ञाओं से परिस्थिति में सुधार नहीं हो सकता। इसीलिये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी भारत से ब्रिटिश शासन को हटा लेने की मांग को दोहराती है। भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा हो जाने पर एक अस्थायी सरकार स्थापित कर दी जायेगी, और स्वतन्त्र भारत मित्रराष्ट्रों का मित्र बन जायेगा। अस्थायी सरकार देश के मुख्य दलों और वर्गों के सहयोग से बनायी जा सकती है। अन्य किसी बात को आधार मानकर संसार की समस्यायें सुलझायी नहीं जा सकतीं। कमेटी का मत है कि संसार की भावी शान्ति, सुरक्षा और व्यवस्थित उन्नति के लिए एक विश्व संघ बने। इस प्रकार का विश्व संघ स्थापित हो जाने पर समस्त देशों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में निःशस्त्री करण हो सकेगा। सेनाओं की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया तथा भ्रमपूर्ण आलोचनाओं से स्पष्ट हो गया है कि भारतीय स्वतन्त्रता की स्पष्ट मांग का भी विरोध किया जा रहा है। यद्यपि यह वर्तमान खतरे का सामना करने के लिये और अपनी रक्षा तथा इस आवश्यक घड़ी में चीन और रूस की सहायता कर सकने के लिए की गयी है। चीन और रूस स्वतन्त्रता की बड़ी मूल्यवान निधि है, और उसकी रक्षा होनी चाहिये, इसलिये कमेटी इस बात के लिये बड़ी उत्सुक है कि उसमें किसी प्रकार की बाधा न पड़े, और मित्रराष्ट्रों की आत्म रक्षा करने की शक्ति में कोई विघ्न न होने पाये। कार्य-समिति ने ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों से ईमानदारी के साथ जो अपील की थी, उसका अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी फिर ब्रिटेन तथा मित्रराष्ट्रों से अपील करना चाहती है। भारत की स्वतन्त्रता के अविच्छेध अधिकार का समर्थन करने के उद्देश्य से कमेटी अहिंसात्मक प्रणाली से और अधिक से अधिक विस्तृत पैमाने पर एक विशाल संग्राम चालू करने की स्वीकृति देती है जिससे देश गत २२ वर्षों के शान्तिपूर्ण संग्राम में संचित की गयी समस्त अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सके। भारतीयों को यह याद रखना चाहिये कि अहिंसा इस आन्दोलन का आधार है। अन्त में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी यह बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहती है कि संग्राम के द्वारा वह कांग्रेस के लिये ही सत्ता प्राप्त करना नहीं चाहती। सत्ता जब मिलेगी तो उस पर समस्त भारतीयों का अधिकार होगा।"

करो या मरो

यही प्रस्ताव भारत छोड़ो प्रस्ताव के नाम से मशहूर है। कांग्रेस के अधिवेशन में पण्डित नेहरू ने इसको पेश किया और सरदार पटेल ने इसका समर्थन किया। प्रस्ताव का स्पष्टी करण करते हुए पण्डित नेहरू ने यह साफ-साफ कह दिया। "प्रस्ताव कोई धमकी नहीं है। यह तो एक निमन्त्रण है। इसके द्वारा हमने बताया है कि हम क्या चाहते हैं। हमने सहयोग का हाथ आगे बढ़ाया है। पर इसके पीछे एक साफ ईशारा भी है कि यदि कुछ बातें नहीं हुई तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिणाम क्या हो सकता है। यह स्वतन्त्र भारत के सहयोग का दावत नामा है। किसी दूसरी शर्त्त पर हमारा सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता। उसके अलावा हमारा प्रस्ताव केवल संघर्ष तथा लड़ाई का वादा करता है।" महात्माजी ने इसी अवसर पर भाषण देते हुए करो या मरो का नारा दिया, जो वह चिनगारी साबित हुआ जिससे सारे देश में तुमुल अग्निकाण्ड मच गया। सहयोग के लिए हाथ बहुत बढ़ाया गया था। तीन साल तक प्रतीक्षा के बाद संग्राम का नारा आया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २३ :

१९४२ की क्रान्ति

सरकार द्वारा आकस्मिक आक्रमण

सुप्रसिद्ध अगस्त प्रस्ताव ८ अगस्त को रात में पास हुआ, और उसी रात को अर्थात् अङ्गरेजी हिसाब के अनुसार कुछ घण्टों बाद ९ अगस्त को बम्बई में एकत्रित सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये। नेताओं की गिरफ्तारी से देश में एक अजीब परिस्थिति हो गयी। यह कोई नहीं सोचता था कि इतनी जल्दी सरकार अपना हमला बोल देगी। सरकार ने अपने ख्याल से ठीक ही किया था, पर कांग्रेस के नेता इसके लिये पूर्णतः तैयार नहीं थे। अगले दिन अर्थात् ९ के दिन को गाँधीजी ने प्रत्येक प्रान्त से कुछ खास कार्यकर्ताओं को बुलाया था जिसमें वे अपना कार्यक्रम बताने वाले थे, पर उसका मौका ही नहीं आया।

स्पष्ट कार्यक्रम नहीं

नतीजा यह हुआ कि देश को ठीक-ठीक कार्यक्रम नहीं दिया जा सका। फिर भी कुछ बातें हवा में थीं, और देश ने उन पर अमल किया। सबमें पहली बात तो कानून भंग कर जुलूस निकालना वगैरह देश के सामने था ही। पर इसके अतिरिक्त कुछ जिम्मेदार काँग्रेसियों ने तोड़ फोड़ के सम्बन्ध में जो हिदायतें दी थीं वे भी इस सम्बन्ध में आगे के आन्दोलन को एक दिशा देने में समर्थ हुए। यह ऐतिहासिक बात है, और इससे इन्कार करने का कोई कारण नहीं है कि जिम्मेदार काँग्रेसियों ने तोड़ फोड़ के सम्बन्ध में हिदायतें दी थीं।

आंध्र की गश्ती चिट्ठी

ऐसी हिदायतों में आन्ध्र की गश्ती चिट्ठी को लिया जा सकता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है जिसमें कांग्रेसजनों से तार काटने की शिफारिश की गयी थी। सरकार ने इस गश्ती चिट्ठी को पकड़ लिया था, और इसका हवाला देकर यह प्रमाणित करने की चेष्टा की गयी कि अव्यवस्थित भीड़ नहीं बल्कि कांग्रेस के नेतागण रेल और तार में हस्तक्षेप और तोड़ फोड़ के लिए जिम्मेदार थे। इस विषय पर सरकारी प्रस्ताव यों था—"कौंसिल सहित गवर्नर जनरल को इस बात का पता रहा है कि कुछ दिनों से काँग्रेस जनों ने बराबर गैर कानूनी और कुछ क्षेत्रों में हिंसात्मक कार्यवाईयां की हैं। ऐसी कार्यवाईयां में रेल, तार यातायात तथा समाचार के साधनों में तोड़ फोड़, हड़तालों की तैयारी, सरकारी फौजों का बरगलाना तथा युद्ध की तयारियों में विशेषकर भरती में बाधा देना था।"

कौन तोड़फोड़ के लिये जिम्मेदार

इसमें सन्देह नहीं कि जिम्मेदार कांग्रेसियों ने तोड़फोड़ के लिये हिदायतें दी, ये हिदायतें केवल गुप्त पर्चों में ही नहीं दी गयी बल्कि छपे हुए पर्चों में दी गयी। भारत सचिव अमरी ने नेताओं की गिरफ्तारी का समर्थन करते हुए एक भाषण दिया, जिसमें बताया गया कि कांग्रेस तोड़फोड़ मूलक कार्य करने का तय कर चुको है। बहुत से लोगों को तो इसी भाषण से ज्ञात हुआ कि कांग्रेस का ऐसा कार्यक्रम है। इस प्रकार से जैसे भी जो कार्य क्रम लोगों को मालूम हो सका उस कार्य क्रम को चलाने के लिये चन्दा भी किया गया। कहीं कहीं पर तो स्रास वगैरह बांटे भी गये। यह कहना सत्य का अपलाप होगा कि ऐसा केवल वाम-पक्षियों ने ही किया या उन लोगों ने किया जो राजनैतिक कार्य में बल प्रयोग में विश्वास रखते हैं। वामपक्षियों में अधिकांश तो पहले ही धर लिये गये थे, यदि वे बाहर होते तो शायद तोड़फोड़ ही करते,पर उनमेंसे बहुत थोड़ेबाहर रह गये थे। इस आन्दोलनसे हिंसात्मक या कथित हिंसात्मक जो भी कार्य हुए,उनमें बचेखुचे वामपक्षी तथा दक्षिणपक्षी सभी कांग्रेसियों ने हिस्सा लिया। कथित हिंसात्मक कार्यों में तथा गुप्त आन्दोलन में दक्षिण पक्षी कांग्रेसी वामपक्षियों के पीछे नहीं रहे बल्कि बताये हुए कारण से आगे ही रहे। यह मैं केवल कार्य के सम्बन्ध में कह रहा हूँ। अवश्य इस आन्दोलन के तोड़फोड़ मूलक अंश में दक्षिण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पक्षियों ने जो हिस्सा लिया था, उससे वे बाद को वे कारणों से या तो मुकर गये, या चुप हो गये, इसलिये वामपक्षियों को यह मौका मिल गया कि १६४२ के तोड़फोड़ मूलक कार्यों का सारा श्रेय वामपक्षी ले लें, पर असली जो तथ्य था उसे हम बता चुके।

जनता की क्रान्तिकारी बुद्धि

पर इस आन्दोलन में सब से अधिक भाग जनता का ही रहा। जनता ने सरकार की चुनौती को स्वीकार कर लिया। जनता ने इस आन्दोलन के दौरान में नई नई टेकनीकों की सृष्टि की। कहीं गोली का सामना करने के लिये लोग लेट जाते, तो कहीं पीछे हट कर फिर रात को हमला किया। बड़े बड़े क्रान्तिकारी जिन कामों को करने में यह नहीं समझ पाते कि कैसे किया जाय, उन सब विशेषज्ञ कामों को जैसे तार काटना, इंजिन तोड़ना, थाने पर कब्जा करना जनता ने अपनी बुद्धि से किया।

जनता के शौर्य पर नेहरू

पंडित नेहरू ने एक व्याख्यान में कहा था—"यद्यपि ६ अगस्त को ही सब नेता गिरफ्तार हो गये थे, फिर भी जनता ने सरकार की चुनौती स्वीकार कर लिया और साहस पूर्ण तरीके से तुर्की बेतुर्की जवाब दिया। नेताओं की गिरफ्तारी पर क्रोध तथा आवेश में जनता के बहादुरी के साथ बम बाजी, मशीनगन के गोले तथा लाठियाँ बर्दाशत कीं। उनके हृदयों स्वतंत्रता के लिये जो अमिट ज्वाला धधक रही थी, वह साहसी तथा वीरता पूर्ण कृत्यों में पल्लवित हुई।"

जनता द्वारा इतिहास का निर्माण

जैसा कि मैंने अपनी अगस्त क्रान्ति तथा प्रति क्रान्ति नामक पुस्तक में लिखा है कि अगस्त १६४२ तथा उसके परिवर्त्तित कुछ समय में भारत की जनता ने इतिहास निर्माण के कार्य में इतने जोर से भाग लिया जितना कि इससे पहले उसने कभी नहीं लिया था। यह गौरव मय प्रयास सफलता से मंडित नहीं होसका, पर इस घटानबहुल युग में जनता ने इतने जोर का प्रदर्शन किया और इतना विराट सराहनीय त्याग तथा उन्मेषशालिनी बुद्धि का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदर्शन किया कि इसे क्रान्ति ही कहना ही उचित होगा। १६४२ का संग्राम इस माने में भी क्रान्ति थी कि इसमें भारतीय जनता ने मध्ययुगीन निद्रा से जगने के बाद अपने लिये नये मार्गों की सृष्टि की, और उस पर औपादानिक गति से चल पड़ी।'

१६४२ की क्रान्ति और कम्युनिस्ट

इस क्रान्ति की घटनाओं पर विचार करने के पहले इस क्रान्ति के समय कम्युनिस्ट पार्टी का जो हिस्सा रहा उसके सम्बन्ध में दो शब्द कह देना उचित होगा, क्योंकि अपने इसी रुख के कारण बाद को कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस से निकाल दी गयी हम यह पहले ही बता चुके हैं कि दुनिया की सब कम्युनिस्ट पर्टियों की तरह भारतीय कन्युनिस्ट पार्टी का भी उद्देश्य विश्व क्रान्ति तथा समाजवाद की स्थापना है। सन्देह नहीं कि यह उद्देश्य बहुत ही उदान्त है, पर कई जन्मगत गलतियों के कारण भारतीय कम्युनिस्ट इन उद्देश्यों से बहुत दूर हो गये हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सब मामलों में रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के अनुसार चलती है। यही इसकी सब से बड़ी गलती है। इसी गलती के कारण वह कई बार बहुत बड़ी गलतियां कर चुकी हैं।

१६३० में कम्युनिस्ट गद्दार

१६३० के आन्दोलन के पहले से समाजवादी रूस ने योरोप की परिस्थिति के अनुसार समाजवाद की रक्षा के निमित्त यह नारा दे रखा था कि जितने लोकतंत्र हैं, वे सब ढकोसले हैं और उच्च वर्ग के राज्य के प्रतीक है। इसी नीति को न मालूम कैसे १६३० में कांग्रेस पर लागू कर दिया गया। यदि कांग्रेस उस समय शासक वर्ग की संस्था होती तो कुछ हद तक यह समझ में आ सकता था भारतीय कम्युनिस्टों ने क्यों यह नीति अख्तियार की, पर कांग्रेस तो उस समय शासतों की संस्था थी। कुछ भी हो इसका नतीजा यह हुआ कि सन् ३०-३२ के आन्दोलन में कम्युनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस के आन्दोलन के विरुद्ध काम किया जब इन दिनों कांग्रेस के लोग सरकार की लाठियां खा रहे थे, और जेल जा रहे थे, उन दिनों कम्युनिस्टपार्टी ने कांग्रेस का झंडा जलाया इत्यादि। बाद को कम्युनिस्टों ने इस सम्बन्ध में अपनी गलती मानी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस में कम्युनिस्ट

जब फासिट-वाद के उद्भव के कारण रूस ने उचित रूप से नारा बदल दिया और संयुक्त मोर्चे का नारा दिया तब से कम्युनिस्ट पार्टी के लोग कांग्रेस में काम करने लगे। और यह मानना पड़ेगा कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया । सन् ३४ में कम्युनिस्ट पार्टी 'गैरकानूनी करार दी गई थी। कम्युनिष्ट पार्टी ने कांग्रेस समाजवादी दल को अपना मंच बनाया, और कई जगह तो कांग्रेस समाजवादी दल के सभी लोग भीतर भीतर कम्युनिस्ट थे। ऐसा नहीं कि यह उन्होंने छिप कर ही किया, कांग्रेस समाजवादी नेता इसको जानते थे, पर अजीब उदासीनता वश उन्होंने इस बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। कांग्रेस समाजवादी दल ने इस प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी को खुला मंच देकर उसे जीवित रक्खा। अस्तु ! कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस के अन्दर काम करती रही। १९४१ के जून में जब जर्मनी ने रूसपर हमला कर दिया उस समय भी वे अपने साम्राज्यवाद विरोधी रूस पर डटे रहे, इन दिनों जेलों में वे बराबर कहते रहे कि नहीं हम कभी अपना रूख नहीं बदलेंगे। पर बाद को जब अन्तर्राष्ट्रीय से हिदायत आगयी, तभी उन्होंने लोकयुद्ध का नारा दिया। और बयान देकर जेलों से छूटे। जब १९४२ में कांग्रेस ने लड़ाई छेड़ दी तो उन्होंने इसका विरोध किया। विरोध करने में उन्होंने कोई तरीका उठा नहीं रखा। कई बहुत जिम्मेदार कांग्रेसी यह समझते हैं कि कम्युनिस्टों ने उन्हें गिरफ्तार भी कराया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कम्युनिस्टों के इस समय का सारा कार्यक्रम देशद्रोहितापूर्ण था। वे १९४२ के वीरों को पांचवे दस्ते के आदमी बताते रहे।

१९४२ में कौन से कार्य किये गये ?

१९४२ में तथा उसके बाद जो घटनायें हुईं, उनके सम्बन्ध में इस छोटे से इतिहास में विस्तार के साथ लिखना सम्भव नहीं है। इसलिये हम संक्षेप में कुछ बातें बता देंगे। इस आन्दोलन के सम्बन्ध में जनता ने क्या क्या किया इसका कुछ विवरण इस प्रकार दिया जा सकता है—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१) समान्तराल सरकार स्थापित की गयी, जैसे बलिया, मेदिनीपुर तथा सतारे में स्थापित हुई।

(२) रेल की लाइनें उखाड़ी गयी।

(३) स्टेशन तथा थाने जलाये गये।

(४) डाकखाने नष्ट किये गये।

(५) सरकारी कर्मचारी मारे गये।

(६) मोटर लारियां जलायीं गयी।

(७) तरह तरह से कानून भंग किया गया।

(८) जेल तोड़ दिये गये।

१९४२ पूर्व आन्दोलनों से भिन्न

इसमें सन्देह नहीं कि अधिकांश स्थानों की जनता ने हत्या तोड़ फोड़ आदि में भाग नहीं लिया, पर उन लोगोंने तो किसी काममें भी भाग नहीं लिया। इसमें सन्देह नहीं कि यह आन्दोलन गुणगत रूप से १९२१, १९३०, १९३१, १९४० के आन्दोलनों से भिन्न था। इस आन्दोलन के दौरान में जो वीर तथा शहीद सामने आये उनके कृत्यों से ही इस बात का अनुमोदन हो सकता है। यह आन्दोलन १८५७ के अधिक निकट था।

बलिया की घटनायें

जिस बलिया को बहुत ख्याति हुए उसकी घटनायें यों हैं—"१९४२ के ९ अगस्त की शाम को गान्धीजी तथा अन्य नेताओं की गिरफ्तारी की खबर बलिया पहुँची। १० अगस्त को शहर में पूर्ण हड़ताल रही। ११ अगस्त को छात्रों ने एक जूलूस निकाल कर कोतवाली की ओर जाना चाहा, पर सिटी मैजिस्ट्रेट ने उन्हें चेतावनी दी कि वे ऐसा न करें। छात्रों ने इस चेतावनी को मानने से इनकार किया, इसपर उनपर लाठी चार्ज हुआ, और कई लोगों को सख्त चोटें आईं। उसी रात को छात्रों के घरों को तलाशियां हुई और ४० छात्र गिरफ्तार कर लिये गये।

"१२ तथा १३ अगस्त को सब तार कट गये, स्टेशन जला दिया गया और सरकारी सम्पत्ति नष्ट कर दी गयी। १४ अगस्त को बलिया जिला सारी दुनिया से कट चुका था। १५ अगस्त को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरकारी इमारतों पर हमले हुए, नगर पोस्ट आफिस लूट लिया गया और जिला कांग्रेस कमेटी का दफ्तर जिस पर १० अगस्त से पुलिस का कब्जा था जनता के अधिकार में आ गया। १६ अगस्त को पुलिस ने शहर में मनमाने तौर पर गोलियां चलायी; जिसमें ६ शहीद हुए, और कई घायल हुए। १० अगस्त को रसड़ा तहसील के थाने तथा खजाने पर जनता ने हमला कर दिया। पुलिस ने यहां पर फिर गोलियां चलायी जिसमें वहां कई खेत रहे १८ अगस्त को जनता ने बांसडीह तहसील के खजाने को लूट लिया तथा वहां के थाने में आग लगा दी! जनता ने बैरिया थाने पर भी हमला कर दिया। इसपर पुलिस साढ़े चार घंटे तक गोलियां चलती रहीं। १६ मरे तथा कई घायल हुए।

"सारे जिले पर जनता का कब्जा हो गया था।

"१६ अगस्त में यह प्रस्ताव किया गया कि बलिया शहर पर हमला किया जाय, जिला मजिस्ट्रेट को पकड़ लिया जाय, तथा जेल पर हमला कर कांग्रेस नेताओं को छुड़ा लिया जाय। पर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने श्री चीतू पांडे को, जो उनदिनों जेल में बन्द थे जेल से मुक्त कर उनके हाथों में आत्मसमर्पण कर दिया"

ढिंढोरा पीट कर अब बलिया की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी गयी और तीन दिन तक बलिया में जनता का राज्य रहा।

२९ अगस्त को मिलटरी आ गई और जनता के साथ कइ बार डट कर लड़ाई करने के बाद बलिया पर अधिकार कर लिया। १ सितम्बर को बलिया के इन्चार्ज अफसर ने लाठ साहब को एक तार भेजा जिसमें कहा गया कि बलिया पर फिर से अधिकार कर लिया गया"

मेदिनीपुर की क्रान्ति

मेदिनीपुर में भी जनता ने पहले तो चुलूस निकाला, जब उसके साथ छेड़ छाड़ हुई तो जनता ने दूसरे ढङ्ग अख्तियार किये। सूत्ताहाट्टा थाना के इन्चार्ज ने जुलूस वालों से तितर बितर होने को कहा पर जनता ने उसे गिरफ्तार कर लिया और पुलिस वालों को गोली न चलाने का मौका देकर उनके हथियार छीन लिए। क्रान्तिकारी जनता इलाके भर में फैल गई। कुछ सरकारी इमारतों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आग लगा दी गयीं। रास्ते बन्द कर दिये गये, तार काट दिये गये। विद्युत वाहिनी ने सारा इन्तजाम अपने हाथों में लिया।

क्रान्ति का दमन

यदि हम और विवरण दें तो वह स्वयं ही एक ग्रन्थ हो जायेगा। जो घटनाएं बलिया तथा मेदनीपुर में हुईं, वे कुछ परिवर्तित रूप में सर्वत्र हुईं। हिन्दी भाषी प्रान्त विशेष कर यू० पी० के पूर्वी जिले बिहार, बंगाल का मेदिनीपुर, आसाम, बम्बई शहर, अहमदाबाद तथा सतारा इस आन्दोलन में सब से आगे रहे। इसलिये हम केवल इतना ही कह कर आगे बढ़ जायेंगे कि सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिये कौन से तरीके इस्तमाल किये। एक तो जनता में भय बैठाने के लिये लोग लूटे गये, और उन पर मारपीट की गयी। बलिया में मार्शे स्मिथ और नेदर सोल ने दमन को एक सूक्ष्म कला में परिणित कर दिया। बहुत से लोग तो गोलियों से उड़ा दिये गये। कुछ कांग्रेसियों के घर जला दिये गये। कुछ स्त्रियों के सिर के बाल काट दिये गये। लोगों को पेड़ों में बांधकर मारा गया। लोगों के मुंह में पेशाब किया गया। कहीं कहीं स्त्रियों पर बलात्कार भी किया गया, और ऐसा उनके घर वालों के सामने हुआ। छोटे बच्चों को कोड़े लगाये गये। वीर्यपात कराया गया, करंट लगा कर नपुंसक बना दिया गया। कोई भी तरीका ऐसा नहीं है जो लोगों को दबाने के लिये काम में न लाया गया हो। सरकारी आँकड़ों के अनुसार केवल १ हजार आदमी गोली से मारे गये, पर अनुमान यह है कि असली संख्या इससे दस गुनी है। आन्दोलन के पांच ६ महीने बाद इसका सामूहिक रूप खतम हो गया।

छै महीने तक के सरकारी आंकड़े

उस समय तक के सरकारी आंकड़े यों हैं—

पुलिस तथा फौज की गोलियों से मरे—	९४०
पुलिस तथा फौज के गोलियों से घायल—	१६३०
कितनी बार गोलियां चलीं—	५३८
गिरफ्तारी—	६००००
नजरबन्द—	१८०००

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जितनी बार फौज बुलायी गयी—	६०
जहां हवाई जहाज से बम गिराये गये—	६
दिसम्बर तक बरबाद स्टेशन—	३१८
गिरायी हुई गाड़ी—	५६
तोड़ फोड़ द्वारा रेल की क्षति—	१८००००० रु०
मोटर लारियों की क्षति—	६००००० रु.
स्टेशनों की इमारतों की क्षति—	६५०००० रु.
डाकखाने जिन पर हमले हुए	६५४
टेलीफोन तथा तार काटे	१२००० जगह।

इसके अतिरिक्त और भी हानि हुई जिसको सही तौर पर दिखाया नहीं गया। इन आंकड़ों में बहुत कमी है, फिर किसी भी आंकड़े से सरकार के लिये परिस्थिति की भयंकरता की नाप नहीं हो सकती। १६४२ की क्रान्ति १८५७ से कहीं अधिक भयंकर थी। यह जन क्रान्ति थी। नेतृत्व तथा कार्यक्रम के अभाव के कारण यह क्रान्ति सफल नहीं हुई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २४ :

गाँधी जी का अनशन और बंगाल का दुर्भिक्ष

नजरबन्दी से गान्धी जी का पत्र

गाँधी जी नजर वन्द हो गये, आगाखाँ प्रासाद से अखबारों के जरिये से देश की घटनाओं पर निगरानी रखते रहे। सच तो यह है कि १४ अगस्त से ही उन्होंने लार्ड लिनथिलगो से पत्र व्यवहार शुरू कर दिया। १४ अगस्त के पत्र में उन्होंने यह लिखा कि भारत सरकार को कम से कम तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए थी जब तक मैं जन आन्दोलन शुरू न करता मैंने सार्वजनिक रूप से यह कहा था कि निर्दिस्ट कार्य पद्धति ग्रहण करने के पहले मैं आपको पत्र लिखूंगा। गाँधी जी ने इस पत्र में यह साफ बताया कि उस पत्र व्यवहार से जो नये मामले निकलते, उन पर फिर पत्र व्यवहार हो सकता था। उन्होने यह भी लिखा कि 'कांग्रेस ने यह आन्दोलन अत्यन्त मित्रता पूर्ण उद्देश्यों से शुरू किया है।' २३ सितम्बर को लिखते हुए गांधी जी ने फिर लिखा कि 'इसके विरुद्ध जो कुछ कहा गया है मेरा यह कहना है कि कांग्रेस की नीति सम्पूर्ण रूप से अहिंसात्मक है। ऐसा मालूम होता है कि सब नेताओं की गिरफ्तारी के कारण जनता को इतना रोष आया कि उसका आत्म संयम नष्ट हो गया।' सरकार ने इस पत्र का कोई उत्तर ही नहीं दिया। सरकार उस समय तक नेता तथा कार्यक्रमहीन जनता को दबाने में व्यस्त थी, वह भला गांधी जी के सुन्दर वचनों को क्यों सुनती ? फिर जापान भारत के किवाड़े की तरफ बढ़ रहा था, जीवन मृत्यु का प्रश्न था।

सरकार के सन्देह पर गांधीजी क्षुब्ध

पर गांधीजी ने १९४२ के अन्तिम दिन वायसराय को एक पत्र लिखा जिसमें यह साफ साफ लिखा कि सरकार के मन में उनकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अहिंसा पर जो सन्देह है, उससे वे बहुत क्षुब्ध हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि ऐसे मौके पर सत्याग्रही के लिये एक ही तरीका है वह उपवास के द्वारा शरीर को कष्ट देना।

वायसराय का उत्तर

इसके उत्तर में वायसराय ने यह लिख भेजा कि उन्हें स्वयं इस बीच में जो कुछ हुआ है दुख है। पहले तो कांग्रेस ने जो पालिसी अख्तियार की, उससे उन्हें दुख हुआ, फिर उसके फलस्वरूप देश भर में जो हिंसात्मक कार्य हुए, जिस प्रकार पुलिस वालों को जिन्दा जलाया गया तथा उनकी हत्या की गयी, उससे उन्हें बड़ा दुख है। वायसराय ने यह भी लिखा कि यदि गांधीजी जो घटनायें घटित हुई हैं उनकी रोशनी में अपनी गलती को महसूस करते हैं, और गलती सुधारना चाहते हैं तो वे वैसा लिख सकते हैं। उसपर फौरन कारवाई की जायेगी।

अगस्त की घटनाओं से गांधजी क्षुब्ध

गांधीजी ने इसके उत्तर में १६ जनवरी १९४३ को लिखा कि '९ अगस्त के बाद जो घटनायें हुई हैं, उनसे मुझे बहुत दुख हुआ है, पर क्या मैंने इन सारी घटनाओं का दोष सरकार के मत्थे नहीं मढ़ा है।.........इतना ही मैं कह सकता हूँ कि मैं अहिंसा में उतना ही विश्वास करता हूँ जितना पहले करता था।'

अनशन की घोषणा

हमें इस पत्र-व्यवहार के ब्यौरे में जाने की आवश्यकता नहीं है। इस पत्र-व्यवहार के फल स्वरूप एक तरफ गांधीजी अपनी बात कहते रहे, दूसरी तरफ सरकार अपनी बात कहती रही, अन्त में गांधीजी ने यह लिख भेजा कि ९ फरवरी से वे अहिंसा के सम्बन्ध में अपने विश्वास को प्रगट करने के लिये अनशन करेंगे। इसके उत्तर में अब की बार वायसराय ने नहीं बल्कि भारत सरकार के ऐडिशनल सेक्रेटरी टाटनहम ने लिखा कि भारत सरकार को बहुत भारी अफसोस है कि गांधीजी २१ दिन का अनशन करने जा रहे हैं और भारत सरकार ने यह तय किया कि वे अनशन के दौरान में बाहर जा सकते हैं। गांधीजी ने इसपर उपवास के दौरान में छूटने से इनकार किया। तब टाटनहम ने उन्हें यह लिख भेजा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि यदि वे छूटना नहीं चाहते हैं, और नजरबन्दी में ही अनशन करना चाहते हैं तो वे ऐसा अपनी जिम्मेदारी पर ही कर सकते हैं। सरकार ने गांधीजी को अपने डाक्टर रखने की तथा भारत सरकार से अनुमति लेकर मित्रों से मिलने की अनुमति दी।

अनशन समाप्त

इस अनशन से देश में बड़ा जोश फैला, और जो आन्दोलन बिल्कुल राख से ढक चुका था, वह फिर एक बार क्षणिक रूप से सुलग उठा। महात्माजी ने इस अनशन में थोड़ा सा नीबू का रस लिया। फिर भी उनकी हालत बहुत खराब हो गयी, और किसी तरह अनशन व्रत समाप्त हुआ। सरकार ने उन्हें बिना शर्त्त के छोड़ने से इनकार किया।

बंगाल में दुर्भिक्ष

१९४२ के १६ अक्टूबर को एक बंगाल के दक्षिणी जिलों में विशेषकर मेदिनीपुर और चौबीस परगने में इतनी प्रबल आँधी आयी कि हजारों लोग बेघर द्वार हो गये, और खेत खराब हो गये। पर इसके कारण मेदिनीपुर वालों पर १९४२ के आन्दोलन पर भाग लेने वालों पर जो भयंकर अत्याचार हो रहे थे, उनमें कोई कमी नहीं आयी। इसका परिणाम यह हुआ कि वहाँ दुर्भिक्ष शुरू हो गया। मेदिनीपुर में तो बहुत कुछ प्राकृतिक कारणों से दुर्भिक्ष का सूत्रपात हुआ था, पर १९४३ में सारा बंगाल एक भयंकर दुर्भिक्ष के पंजों में फँस गया। यह प्राकृतिक कारणों से नहीं बल्कि सरकार की अव्यवस्था तथा अत्याचार के कारणों से था।

१९४२ का प्रतिशोध ?

यह कहा गया है कि बंगाल में जो १९४३ का दुर्भिक्ष पड़ा वह १९४२ में बंगाल में जो क्रान्तिकारी कार्य हुए थे, उनके प्रतिशोध में डाला गया था। सब बातों को तौलने पर यह मालूम होता है कि इसमें सत्य का बहुत अंश है। कम से कम इतना तो बिल्कुल सत्य है कि सरकार की सामरिक तथा असामरिक नीति के कारण यह दुर्भिक्ष पड़ा, और यदि सरकार चाहती तो इस दुर्भिक्ष को रोक सकती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरकार द्वारा जबरदस्ती डिनायल की नीति

जिससे लड़ाई में शत्रु पक्ष के हाथ युद्ध के साधन न लग जायँ इस कारण इस महायुद्ध में तथा साधारण तौर पर अन्य युद्धों में शत्रु सेना के सामने पीछे हटते हुए जितनी भी चीजें लड़ाई के लिये उपयोगी हो सकती थीं, उनको नष्ट कर दिया जाता था। इसी को Scorched earth policy कहते हैं; याने शत्रु सेना जब आगे बढ़ती है तो उसे केवल मिट्टी और सो भी जली हुई मिलती है। १६४२ की १५ फरवरी को ही सिंगापुर जापानियों के हाथों में चला गया था, और जापानी सेना तेजी के साथ भारत की ओर आगे बढ़ती चली आ रही थी। यहाँ तक कि जापानी भारत के करीब आ गये थे। सरकार सिट्टी पिट्टी भूल रही थी। इसी के परिणाम स्वरूप ब्रिटिश सरकार की तरफ से जली मिट्टी का नारा दिया गया, याने भारतीयों से यह कहा गया कि वे इस बात के लिये तैयार हो जायँ कि जापानियों के आहट पाते ही वे अपनी सारी सम्पत्ति को अग्नि देवता के हवाले कर दें। रूस तथा अन्य देशों की बात और थी। वे समझते थे कि यह लड़ाई उनकी है, इस कारण वे बिना किसी हिचकिचाहट के जली मिट्टी की नीति का अनुसरण करते थे। पर भारतीय गण इस युद्ध को अपना नहीं समझते थे, इस कारण उनमें जली मिट्टी नारे का स्वागत नहीं हुआ। स्वयं महात्माजी ने इस नीति को हिंसामूलक कह कर इसका विरोध किया था, पर ब्रिटिश सरकार जापानियों के मारे इतनी डरी हुई थी कि उसने इसका नाम बदल कर Denial की नीति बतलायी, और चूँकि जनता तैयार नहीं थी, इसलिये उसने जबरदस्ती आसाम तथा बंगाल के लोगों की नाव, सायकिल आदि यातायात के सब साधन छीन लिये। उन्हें डर यह था कि जापानी इनका उपयोग न करें।

नाव के अभाव से दुर्भिक्ष

लोगों के पास नाव बिल्कुल रह नहीं गयी थी। नौकरशाही को यह समझना चाहिये था कि बंगाल में मछली पकड़ना खेती के ही बराबर महत्वपूर्ण रोजगार है, और मछली पकड़ना तभी ढंग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से हो सकता है, जब नाव रहें। पर वहाँ तो नावें छीन ली गयी थीं। इसलिये नाव छीनकर जनता से उनकी रोटी का एक सबसे बड़ा साधन छीन लिया गया था। पहले रोज सैकड़ों मन मछली पकड़ी जाती थी, और उससे सैकड़ों आदमी भी पलते थे। इसलिये इस कार्य के बन्द हो जाने से दुर्भिक्ष को उत्तेजना मिली।

दुर्भिक्ष के कारण

इसके लिये तो सरकार जिम्मेदार थी ही पर और लीजिये। युद्ध के कारण लाखों आदमी वर्मा तथा अराकान से आकर बंगाल में इकट्ठे हो गये थे। इस प्रकार उनका बोझ बंगाल ही पर था। बंगाल के औद्योगिक केन्द्रों में बाहर से आकर लाखों आदमी बस गये थे। फिर बर्मा से चावल आना बन्द हो गया था। बंगाल के यत्र तत्र बीसियों हवाई अड्डे बन जाने के कारण खेती की जमीन में कमी हो गयी थी। फिर जापान से मोर्चा लेने के लिये इस समय बड़ी बड़ी सेनायें बंगाल में डटी हुई थीं। यह भी दुर्भिक्ष का एक कारण था। कहीं शत्रु आकर धान वगैरह न पा जाय, इसलिये बहुत से जिलों से धान बिल्कुल हटा दिया गया था।

लड़ाई के कारण दुर्भिक्ष

इस प्रकार यह दुर्भिक्ष सम्पूर्ण रूप से लड़ाई के कारण था। मजे की बात यह है कि ऐसे समय में भी सरकार इस डर से कि कहीं आगे दुर्भिक्ष की हालत और खराब न हो, और फिर फौज को भूखों मरने की नौबत न आवे, इसलिये एक तरफ तो सरकार ने जल्दी जल्दी जो कुछ भी धान आदि मिला उसे खरीद लिया, और दूसरी तरफ बाहर धान का भेजा जाना जारी रहा।

नजीमुद्दिन मंत्रीमंडल से दुर्भिक्ष और बढ़ा

ऐसे समय में कोई भी मंत्रीमंडल होता तो शायद ही कुछ कर पाता, क्योंकि सरकार मंत्रीमंडल के सिर पर से सब काम कर रही थी। पर फिर भी जनप्रिय मंत्रीमंडल होता तो परिस्थिति को सम्हालता। जैसे अन्तर्कालीन सरकार ने १९४६-४७ के करीब करीब सिर पर आये हुए दुर्भिक्ष को सम्हाल लिया और उसे पड़ने नहीं दिया। पर २९ मार्च १९४३ को बंगाल में जो फज्जुलहक का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्रीमंडल था, उसे सरकार ने निकाल बाहर किया। और इसके बाद सर नजीमुद्दीन का मंत्रीमंडल आया। नजीमुद्दीन बिल्कुल सरकारी पिट्ठू थे, इसके अतिरिक्त इस मंत्रीमंडल ने इस्फहानी आदि कुछ मुसलमान पूँजीपतियों को बंगाल सरकार की तरफ से एक तरह से खाद्य द्रव्यों का एकाधिकार दे दिया गया, और इन लोगों ने दुर्भिक्ष से अपने को मालामाल कर लिया। इस विषय में उस जमाने में बहुत आन्दोलन मचा, पर कुछ नहीं हुआ। इस दुर्भिक्ष में कोई ५० लाख व्यक्ति मर गये। जैसे जैसे लोग मरे हैं, वह एक बहुत दुःखद कहानी है।

लीगी मन्त्री मण्डल ने मुसलमान मारे

यद्यपि इस दुर्भिक्ष से मुख्यतः मुसलमान पूंजीपति ही माला-माल हुए, क्योंकि मन्त्री-मण्डल ने उन्हीं को आगे बढ़ाया, पर इस दुर्भिक्ष में जो लोग मरे उनमें मुसलमानोंकी ही बहुत संख्या थी। इस प्रकार लीगी मन्त्री-मण्डल की गलत नीति के कारण हिन्दुओं की तुलनामें अधिक मुसलमान मरे। इससे यह बात साफ हो जाती है कि लीगी मन्त्री मण्डल आम मुसलमानों के लिये चाहे जितना भी दम भरे, पर वह वास्तव में किसी भी दामों पर लीगी पूंजीवादियों तथा नवाबों की संस्था थी और है।

दुर्भिक्ष और भारत सरकार का रुख

इस दुर्भिक्ष के सम्बन्ध में कई समाचार पत्रों ने देश की बड़ी सेवा की। इनमें अमृत बाजार पत्रिका तथा युगान्तर का नाम विशेष उल्लेख योग्य है। फिरंगी अखबार स्टेटसमैन ने भी बराबर दुर्भिक्ष पीड़ितों के चित्र छापे और सरकार की बड़ी कटु आलोचना की। इस दुर्भिक्ष के समय सुभाषबाबू बर्मा में थे और उन्होंने ब्रिटिश सरकार को हजारों मन चावल भेजने का प्रस्ताव किया था, पर सरकार ने इसे मंजूर नहीं किया। इतना बड़ा दुर्भिक्ष हुआ और अमेरिका की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती पर्ल बक ने इसकी सहायता के लिये एक फ़ण्ड भी खोल दिया, आयरलैंड की सरकार की तरफ से डी वैलेरा ने १३ लाख रुपये भेजे, पर फिर भी लार्ड लिनलिथगो जब तक यहाँ रहे एक बार भी बंगाल में नहीं गये, और न उन्होंने इस सम्बन्ध में कोई दिलचस्पी दिखलायी। २० अक्टू-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर १६४३ को लार्ड वावेल ने आकर जब गवर्नर जनरल का पद प्राप्त किया, तो वे बंगाल में गये और उन्होंने दुर्भिक्ष की जाँच की। पर यह सहानुभूति भी मौखिक ही थी। सरकारी गोदामों में लाखों मन गल्ला जमा था, इसमें से हजारों मन तो बाद को सड़ गये, और उनको नदी में डाल दिया गया, पर उस समय जनता को यह गल्ला नहीं दिया गया।

बंगाली जनता की कायरता

१६४३ में बङ्गाल में जो दुर्भिक्ष हुआ और उसमें लाखों आदमी तड़पते हुए जरा सा माड़ माँगते हुए मर गये, यह इस बात को सूचित करता है कि आम जनता पिसते-पिसते इतनी पिस गई है कि उसमें उँगली उठाने की भी सामर्थ्य नहीं रह गयी। बाद को जब पण्डित जवाहरलालजी निकले और उन्हें बताया कि उत्तर भारत में भी दुर्भिक्ष की गुंजाइश है, तब उन्होंने यह कहा था कि यदि ऐसी हालत हुई तो हम लोगों से यह कहेंगे कि कुछ भी करें, पर बंगाल वालों की तरह न मरें। यह बहुत ही सही कथन था। बंगाल की जनता ने इस दुर्भिक्ष में जिस कायरतापूर्ण मनोवृत्ति का परिचय दिया वह बहुत ही निन्दनीय थी।

सुभाष बाबू जर्मनी में

हम पहले ही यह बता चुके हैं कि २६ जनवरी १६४१ को यह पता लगा कि सुभाष बाबू अपने घर से गायब हो गये। उस जमाने में कुछ लोगों ने ऐसे कहा कि वे शायद सन्यासी हो गये। इस पर बड़े बड़े लेख लिखे गये, पर अन्त में यह पता लगा कि सुभाष बाबू काबुल के रास्ते भारतवर्ष से निकल गये, और काबुल में कुछ दिन रहने के बाद जर्मनी पहुँचे।

रासविहारी के कार्य

इस लड़ाई के आरम्भ के पहले ही से सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री रासविहारी बोस के नेतृत्व में जापान में भारत की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में आन्दोलन करने वाली एक संस्था थी। इस संस्था का उद्देश्य जापान के भारतीयों को स्वतन्त्रता के लिये संगठित करना तथा विदेशों में भारतीय स्वतन्त्रता के लिये लोकमत उत्पन्न करना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। श्री रासविहारी बोस के देशप्रेम में कोई सन्देह नहीं, पर जिस समय १९३७ में चीन पर जापान ने हमला किया था उस समय उन्होंने इस हमले का यह कह कर समर्थन किया था कि चीन पर दूसरे विदेशियों का कब्जा है इससे अच्छा है कि जापान का कब्जा हो जाय। फिर भी जहाँ तक भारत का सम्बन्ध था वे अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक उसकी स्वतन्त्रता चाहते थे, अवश्य वे यह समझते थे कि मौका पड़ने पर जापान भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में मदद देगा। इसी धारणा के वशवर्त्ती होकर वे बराबर काम करते रहे।

आनन्दमोहन सहाय, सत्यानन्द पुरी

१९३० के करीब श्री आनन्दमोहन सहाय जापान में रासविहारी से जाकर मिले, और उन्होंने इंडियन नेशनल ऐसोसियेशन आफ चाइना और इण्डियन नेशनल कांग्रेस आफ जापान की स्थापना की। उधर श्याम में श्री सत्यानन्द पुरी भी इसी एसोसियेशन की शाखा खोल कर उसी ढंग पर काम कर रहे थे। इनमें से श्री रासविहारी जापानी सरकार के विश्वासपात्र थे। वे कई बार जापानी सरकार के काम आ चुके थे। सच तो यह है कि वे अपने विचारों में बिल्कुल जापानी हो गये थे। वे एक जापानी महिला से शादी कर चुके थे।

आजाद हिन्द फौज

हम यह पहले ही बता चुके हैं कि १९१४–१८ के महायुद्ध में यह चेष्टा हुई थी कि लड़ाई में जो भारतीय सिपाही कैद होकर जर्मनी पहुँच जाते थे, या जर्मनों के हाथ में पड़ जाते थे, उनको लेकर प्रथम आजाद हिन्द फौज का संघटन हुआ था। इस बार जब १९४२ में जापानी मलय में पहुँच गये, तो बहुत से भारतीय सिपाही उनके हाथों में कैद हो गये, तब फिर इनको संगठित करने का प्रयत्न हुआ। मेजर फूजीवारा ने यह वादा किया कि भारतीयों को स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये सहायता की जायेगी। इस पर ९ और १० मार्च को सिंगापुर में मलाया के देशभक्त भारतीयों की एक सभा हुई। श्री रासविहारी ने इसको और संगठित रूप देने के लिये टोकियो में मार्च के अन्तिम सप्ताह में जापानी अधिकृत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देशों के भारतीयों की एक सभा बुलाई। यह सभा उन्हीं के सभापतित्व में हुई, और इंडिया इंडिपेंडेंस लीग जोरों के साथ काम करने लगी। यह स्मरण रहे कि यद्यपि जापानी भूमि पर तथा जापान की देखरेख में यह सभा हुई, फिर भी यह साफ कर दिया गया कि लीग का उद्देश्य भारत में स्वतन्त्रता स्थापित करना है, और इस स्वतन्त्रता में किसी भी विदेशी शासन का प्रभाव न रह सकेगा। इस सभा में यह और भी घोषित कर दिया गया कि 'भारतीय नायकों के अधीन केवल आजाद हिन्द सेना के द्वारा भारत पर सैनिक अभियान होगा। इंडिपेंडेंस लीग एक कार्यसमिति बनायेगी जिसे यह अधिकार होगा कि वह आवश्यकता के अनुसार जापान से स्थल सैनिक, जल सैनिक तथा वायु सैनिक सहायता लेगी।' यह भी तय हुआ कि भारत का भावी विधान बनाने का एकमात्र अधिकार भारत के प्रतिनिधियों को ही होगा।

केन्द्रीय संगठन कायम

इसके बाद बैंकाक में इस सभा का नौ दिन का दीर्घ अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में जापान, हांगकांग, बर्मा, मंचूको, जग्वाद्वीप, मलाया, बोर्नियो तथा भाईभूमि से प्रतिनिधि आये थे। इस अधिवेशन में रासविहारी बाबू संघ के सभापति चुने गये। यह तय हुआ कि यही एक केन्द्रीय संघ रहे, और इसी की शाखायें पूर्वी एशिया में सर्वत्र खोली जायँ।

आजाद हिन्द फौज में और जापानी सरकार में तनातनी

पहली आजाद हिन्द फौज का संगठन कैप्टन मोहनसिंह के नेतृत्व में हुआ। कैप्टन मोहनसिंह ने इस फौज का संघठन इंडिपेंडेंस लीग की तरफ से किया। प्रारम्भ से ही लीग ने अपनी नीति स्वतन्त्र रखी। जापानी नेता यह चाहते थे कि यह संस्था तथा इसके द्वारा संगठित फौज उनके हाथ की कठपुतली होकर रहे, पर ऐसा नहीं हो सका। नतीजा यह हुआ कि १९४२ के दिसम्बर में जापान तथा आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में कुछ खिंचाव आ गया। यहाँ तक कि ८ वीं दिसम्बर को आजाद हिन्द

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फौज के कर्नल एस० एन० गिल जापानियों के हाथ गिरफ्तार हो गये। इंडिपेंडेंस लीग ने इस पर प्रतिवाद करने के लिये यह तय किया कि जब जापानियों को मनमाना करना ही है, तो वे जो चाहे सो करें, लीग को रहने की आवश्यकता नहीं है। बस इस पर कार्यसमिति ने इस्तीफा दे दिया। श्री रासविहारी को अभी तक जापान पर विश्वास था, इसलिये लीग की कार्यसमिति ने कहा कि वे खुद टोकियो जायँ, और वहाँ से जापान सरकार द्वारा सब बातों का स्पष्टीकरण करवायें।

सुभाष बाबू के आने से नया जोश

जापानियों ने भी इस बात की चेष्टा की कि लीग के नेताओं को नीचा दिखाने के लिये एक दूसरा संगठन कायम किया जाय। इस प्रकार लीग और जापानी सरकार में गड़बड़ी चलती रही। श्री रासविहारी के सम्बन्ध में लोगों में यह धारणा होने लगी कि वे लीग के नेतृत्व करने के उपयुक्त नहीं हैं। जो कुछ भी हो जब १९४३ के २ जून को सुभाष बाबू शोनान या सिंगापुर पहुँचे, और वहाँ पर नये ढंग से कार्य का सूत्रपात हुआ। सुभाष बाबू के महान व्यक्तित्व के कारण जापान अधिकृत देश के भारतीयों में एक नयी उमंग पदा हुई। ४ जुलाई को पूर्वी एशिया के भारतीयों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें सुभाष बाबू सर्व सम्मति से सभापति चुने गये, और आजाद हिन्द फौज नये जोश के साथ बनने लगी। डाक्टर लक्ष्मी स्वामी नाथम् के नेतृत्व में स्त्रियों की भी एक आजाद हिन्द फौज बन गयी और इसका नाम झांसी की रानी फौज रखी गयी।

सुभाष बाबू का मंत्रीमंडल

१९४३ के २१ अक्टूबर को आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की गयी। सुभाष बाबू इसके सर्वाधिनायक, फौजी तथा वैदेशिक मंत्री और प्रधान सेनापति हुए। श्री एस. ए. ऐयर प्रचार मंत्री हुए, कैप्टन डाक्टर लक्ष्मी महिला विभाग की नेत्री हुई। लेफ्टिनेंट कर्नल श्री ए. सी. चटर्जी अर्थ मंत्री हुए, और लेफ्टिनेंट कर्नल अजीज अहमद, लेफ्टिनेंट कर्नल एन. एल. भगत, कर्नल जे. के.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भोंसले, लेफ्टिनेंट कर्नल गुलजारासिंह, लेफ्टिनेंट कर्नल एम. जेड. कियानी, लेफ्टिनेंट कर्नल ए. पी. लोक नाथम, लेफ्टिनेंट कर्नल ईमान कादिर, लेफ्टिनेंट कर्नल शाहनवाज सेना के प्रतिनिधि हुए, श्री आनन्द मोहन सहाय मंत्रीपद, विशिष्ट सेक्रेटरी हुए। श्री रासविहारी वसु प्रधान सलाह कार हुए, इसके अतिरिक्त मेसर्स करीमगनी, देवनाथदास, डी. एम. खां, ए. जेलिया, जे, थिवी, और सरदार ईशर सिंह सलाहकार हुए, श्री ए. एन. सरकार कानूनी सलाहकार हुए।

जब रंगून जापानियों के कब्जे में हो गया तो १६४४ की ७ जनवरी को आजाद हिन्द फौज का प्रधान दफ्तर उठकर रंगून चला गया। इस फौज में करीब ५० हजार सैनिक थे।

आजाद हिन्द फौज पीछे हटी

मार्च के मध्य भाग में यह फौज़ वर्मा की सीमा को पार कर भारत की भूमि पर पहुँची, और पहली बार भारत की स्वतन्त्र भूमि पर स्वतंत्र तिरंगा फहराया। कई कारणों से इनका आगे बढ़ना सम्भव नहीं हुआ, और इन्हें पीछे हट जाना पड़ा। फिर तो जापान की हार शुरू हो गयी, और बराबर आजाद हिन्द फौज को भी पीछे हटना पड़ा। १६४५ के २३ अप्रैल को जापानियों को रंगून छोड़कर जाना पड़ा, इसके साथ-साथ आजाद हिन्द फौज को भी पीछे हटना पड़ा।

पं० नेहरू तथ्यों से प्रभावित

जिन दिनों आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं था, उन दिनों यह समझा जाता था कि आजाद हिन्द फौज जापानियों के हाथ की कठपुतली है, इसी धारणा के वशवर्त्ती होकर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने १६४४ में छूटने के बाद भी यह कहा था कि यदि आजाद हिन्द फौज भारत में आवे तो वे उसके विरुद्ध लड़ने वाले प्रथम व्यक्ति होंगे, पर जब उन्हें यह ज्ञात हो गया कि जो उन्होंने समझा था वह गलत है, तो उन्होंने आजाद हिन्द फौज को सबसे अधिक बढ़ाया, जय हिन्द को भारत के घर घर में पहुँचा दिया, और आजाद हिन्द फौज के कैदियों को छुड़ाने में कोई कसर नहीं रखी। यह उनके खुले दिमाग का द्योतक है ही, साथ ही आजाद हिन्द फौज के लिये बहुत प्रशंसा की बात है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर कम्यूनिस्ट तथ्य से दूर

भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी ने उस जमाने में आजाद हिन्द फौज को पाँचवाँ दस्ता करके घोषित किया और अपने अखबारों में सुभाष बाबू को टोजो का कुत्ता करके कार्टून निकाला। दुख है कि बाद को भी उन्होंने इस सम्बन्ध में अपना रुख नहीं बदला। यह उनके हठधर्मी का परिचय है।

नई क्रान्तिधारा

आजाद हिन्द फौज केवल भारतीय स्वतंत्रता के लिये एक गौरवमय चेष्टा ही नहीं थी बल्कि इसने बाद की भारतीय राजनीति पर कुछ बहुत गहरे प्रभाव डाले हैं। इसने भारत में एक नवीन क्रान्तिकारी धारा को जन्म दिया है। जैसा कि मैंने अपनी पुस्तक "अगस्त क्रान्ति और प्रति क्रान्ति" में लिखा था—

"कोई ५०००० व्यक्ति जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध संशस्त्र युद्ध में भेजे हुए हैं, इस समय दिन रात भारत के कोने कोने में घूम रहे हैं, जनता को अपने किस्से तथा विचार ऐसी भाषा में सुना रहे हैं जो जनता समझती है। इनका सरकारी सेना के साथ भी बहुत निकट सम्बन्ध है और यह सेना ही वह शक्ति है जिस पर साम्राज्यवाद अपने अस्तित्व के लिये निर्भर है और जिसके मिले वगैर कोई क्रान्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार आजाद हिन्द फौज ने साम्राज्यवाद के सबसे तगड़ी किलेबन्दी में दरारें कर दी है। यह उल्लेखनीय है कि सब क्रान्तिकारियों ने भी इस तथ्य को अच्छी तरह नहीं समझा है।"

फौज पर सरकार का विश्वास नहीं

आजाद हिन्द फौज की प्रशंसा के कारण ब्रिटिश भारतीय फौज में जिन भयंकर विस्फोटों का सूत्रपात हुआ, और बराबर होता रहा है, उनके कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद का भारत से पैर उखड़ने में बहुत सहायता मिली है। सच कहा जाय तो सरकार को फौज में विश्वास नहीं रह गया इसी कारण उसे बाद को अपने मुँह से भारत छोड़ने की एक निश्चित तारीख तय करनी पड़ी। पर यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाद की बात है जिसका हम बाद को उल्लेख करेंगे । इस प्रकार फौज में राजनैतिक भावना उत्पन्न कर उसे साम्राज्यवाद की पिट्ठू से एक क्रान्तिकारी शक्ति बनाने का सारा श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को दिया जा सकता है तो श्री सुभाष को दिया जा सकता है । इस महान सेवा के लिये उनका नाम हमेशा स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा। आजाद हिन्द फौज ने साम्प्रदायिक एकता का एक महान आदर्श उपस्थित किया, जो सर्वथा अनुकरणीय है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: २५ :

१९४२ के बाद

ऐटलान्टिक अधिकार-पत्र

१६४३ के अन्त में ही यह एक तरह से मालूम होने लगा कि मित्र राष्ट्रों की ही विजय रहेगी। इटली के अन्दर सेनापतियों का विद्रोह हो गया, और इटली ने आत्म समर्पण कर दिया। जर्मनी का भी दम फूलने लगा था, पर अभी तक जापान तगड़ा बना हुआ था। इसी साल में ऐटलान्टिक महासागर में कहीं पर चर्चिल और रूजवेल्ट बैठे, और उन्होंने एक अधिकार पत्र बना डाला जिसमें परतन्त्र जातियों के लिये स्वतंत्रता का वादा किया गया था। इस अधिकार पत्र के कारण परतंत्र जातियों में विशेषकर भारतीयों में एक खुशी की लहर दौड़ गयी, पर चर्चिल ने जल्दी ही साफ कर दिया कि भारतीयों के सम्बन्ध में यह अधिकार पत्र केवल भारतीयों पर लागू नहीं होता, और यह अधिकार पत्र केवल उन जातियों पर लागू होता है, जो इस युद्ध के दौरान में पराधीन हो चुकी हैं। कहना न होगा कि इससे भारतीयों को विशेष ठेस नहीं लगी, क्योंकि वे तो जानतेथे कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कारनामे तथा इरादे कितने काले हैं। बाद को यह पता लगा कि ऐटलान्टिक अधिकार पत्र नाम की कोई दलील थी ही नहीं।

भारतीय माडरेटों की तरफ से बराबर यह मांग हो रही थी कि कांग्रेस के नेतागण छोड़े जांय, पर इसी प्रकार से भारत सचिव ऐमरी की तरफ से यह घोषणा होती जा रही थी कि जब तक अगस्त प्रस्ताव वापस नहीं लिया जाता तब तक उनके छूटने का कोई प्रश्न नहीं उठता। नतीजा यह था कि दोनों तरफ जहाँ का तहाँ रहा, और ज़िच बन रहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कस्तूरबा का देहान्त

२२ फरवरी १९४४ को महात्मा गांधी की सुयोग्य सहधर्मिणी राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी का देहान्त हुआ। सरकार उन्हें छोड़ने के लिये तैयार थी पर उन्होंने पति के पास रहकर मरना ही अधिक श्रेयस्कर समझा।

गांधी-बावेल पत्र व्यवहार

इसके बाद गांधी जी और लार्ड बावेल में कुछ पत्र व्यवहार हुए जिनमें राजनैतिक विषयों पर भी आलोचना हुई। इस आलोचना के फल-स्वरूप ऐसा मालूम हुआ कि कुछ वातावरण सुधर रहा है। दोनों तरफ से कुछ ऐसी बातचीत हुई जिसमें कि यह मालूम पड़ा कि किसी समझौते की गुंजाइश है। गांधी जी ने अप्रैल ९ (१९४४) के पत्र में लाड बावैल को लिखा कि 'आपके पत्र का मन्तव्य यह है कि कांग्रेस इस समय के शासन में सहयोग करे, और यदि ऐसा न कर सके तो भविष्य के लिये योजना बनाने में हाथ बटावें।

मेरी राय में इसके लिए यह जरूरी है कि दोनों दलों में समता हो और पारस्परिक विश्वास हो। पर यहां तो समता का अभाव है और पग पग पर हम यह देख सकते हैं कि सरकार कांग्रेस पर किस प्रकार अविश्वास रखती है। इन सब के साथ इस तथ्य को जोड़ लीजिये कि कांग्रेस जनों में यह विश्वास नहीं है कि यह सरकार भारत की भविष्य भलाई को सोचने में समर्थ है। विश्वास का यह अभाव भारत ने बहुत सालों तक जो ब्रिटेन का रवैया देखा उसी के कारण उत्पन्न हुआ है। क्या इस बात के लिये समय नहीं आ गया कि आप भारत के निर्वाचित प्रतिनिधियों के जरिये से भारत की जनता से बातचीत करें न कि उनसे यों ही सहयोग माँगे। ये सब बातें अगस्त प्रस्ताव में अन्तर्निहित थीं। उस प्रस्ताव में जो मांग की गयी थी, उसकी पृष्ठ भूमि में हिंसा नहीं बल्कि आत्म बलिदान था। जिस किसी ने भी चाहे वह कांग्रेस जन हो चाहे और कोई, आचरण के इस नियम के विरुद्ध कार्य किया, उसे अपने कार्य के लिए कांग्रेस के नाम के इस्तमाल का अधिकार नहीं था। पर मैं यह देख रहा हूँ कि जैसे लार्ड लिनलिथगो अगस्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रस्ताव से चौंकते थे, वैसे ही आप इस प्रस्ताव से सशंकित हैं। मैंने इस सम्बन्ध में अपना मत परिवर्तित नहीं किया है। आप यह जो कहते हैं कि अगस्त प्रस्ताव का असर यह हुआ कि युद्धो-द्योग में बाधा पहुँची, सो मैं इसे समझने में असमर्थ हूँ। कांग्रेस जनों को एकाएक गिरफ्तार करने के फलस्वरूप जो परिस्थिति उत्पन्न हुई उसकी जिम्मेदारी सम्पूर्ण रूप से सरकार पर है। ......आपका यह कहना है कि 'मेरे निकट यह बात स्पष्ट है कि भारत की रक्षा करने के सम्बन्ध में आपमें हमारी सामर्थ्य पर अविश्वास था और इस लिये आपने हमारी इस कथित सामरिक दुर्गति से फायदा उठाना चाहा।'

गांधी जी मुक्त, तोड़ फोड़ की निन्दा

इस प्रकार गांधी जी में और लार्ड वावेल में पत्र व्यवहार हो रहा था कि इस बीच में गांधी जी कुछ बीमार हो गये, जिसके फल-स्वरूप सरकार ने उन्हें ६ मई को रिहा कर दिया। इसके पहले ही श्रीमती सरोजनी नायडू भी छूट चुकी थीं। गांधी जी ने छूटकर ही बहुत कड़े शब्दों में १६४२ की क्रान्ति के हिंसावाले हिस्से की निन्दा की। इसके पहले ही श्रीमती सरोजिनी नायडू ने यह बयान दिया था कि कांग्रेस ने कोई आन्दोलन शुरू नहीं किया, आन्दोलन इस कारण शुरू हुआ कि लोग तैश में आगये थे। कांग्रेस किसी ऐसे कार्य का समर्थन नहीं करती जो अहिंसा के विरुद्ध पड़ता है।' गांधी जी ने भी छूटते ही छिपकर काम करने की निन्दा की। उन्होंने पंचगनी से २८ जुलाई को एक बयान देते हुए कहा कि 'अक्सर लोग मुझसे जिस प्रश्न पर पूछा करते हैं, वह यह है कि मैं छिपकर काम करने का समर्थन करता हूँ या नहीं। इनमें तोड़ फोड़ तथा गैर कानूनी साहित्य का प्रकाशन भी है। मुझे यह बताया गया है कि कुछ कार्यकर्त्ताओं के फरार हुए वगैर कुछ किया ही नहीं जा सकता था। कुछ लोगों ने यह भी सुझाव दिया है कि इस प्रकार सम्पत्ति नाश को जिसमें यातायात तथा समाचार अदान प्रदान के साधनों का विनाश भी है बशर्त्ते कि इसमें किसी का खून न हो अहिंसा में समझा जाना चाहिये। यह भी मुझे बताया गया है कि दूसरी जातियों में ऐसा बल्कि इससे कहीं ज्यादा किया है। मेरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह कहना है कि जहाँ तक मुझे मालूम है किसी जाति ने सज्ञान रूप से स्वाधीनता प्राप्ति के साधन के रूप में सत्य और अहिंसा का उपयोग नहीं किया है। उस मान दण्ड से नापकर मैं बिना किसी हिचकिचाहट के यह कहता हूँ कि अहिंसा में ऐसे कार्यों का स्थान नहीं होना चाहिये। तोड़ फोड़ और सम्पति का विनाश स्वयं हिंसा है। तथापि यह दिखलाया जा सकता है कि इन कार्यों से जनता में कुछ जोश फैला—लोगों में दिलचस्पी पैदा हुई और जोश आगया, पर मुझे इसमें सन्देह नहीं कि ऐसे कार्यों से सब मिलकर आन्दोलन को नुकसान ही हुआ।'

नौकरशाही पर अच्छा नतीजा

स्मरण रहे कि अभी तक महायुद्ध चल रहा था, इसलिये गांधी जी के इन बयानों का नतीजा नौकरशाही पर अच्छा हुआ होगा, और उसे बहुत कुछ आश्वासन मिला होगा। फिर भी सरकार ने कोई विशेष रुख नहीं दिखाया। सरकार आन्दोलन को दबा चुकी थी, अब उसे काहे की परवाह थी ?

नजरबन्दी से ही लीग से समझौते की चेष्टा

पर गांधी जी बैठे रहनेवाले व्यक्ति नहीं थे। ज्योंही वे कुछ अच्छे हुए त्योंही उन्होंने इस बात के लिये चेष्टा की कि मुस्लिम लीग से समझौता होजाय। १९४३ की मई में ही जब गांधीजी नजर बन्द थे उन्होंने अखबारों में यह पढ़ा था कि मिस्टर जिन्ना ने यह कहा है कि यदि गांधीजी हिन्दू मुस्लिम समस्या को सुलझाना चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि वे मुझसे पत्रव्यवहार करें। इस पर अमल करते हुए गांधीजी ने १९४३ की ४ मई को जिन्ना साहब को एक पत्र लिखा जिसमें उनसे यह कहा गया क्यों न हम और आप मिलकर इस समस्या का ऐसा समाधान निकालें कि वह सबको मान्य हो। गांधीजी ने यह पत्र नजरबन्दी की हालत में लिखा था, इसलिये यह पत्र केवल सरकारके ही जरियेसे जा सकता था। भारत सरकार ने इस पत्र को जिन्ना साहब के पास भेजने से इनकार कर एक विज्ञप्ति निकाल दी। जिन्ना साहब को भी यह समाचार दे दिया गया कि ऐसा एक पत्र रोक लिया गया। छोटी बात होते हुए भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस सम्बन्ध में यह बता दिया जाय कि जिन्ना साहब ने इसके पहले यह भी डींग मारी थी कि उनके नाम भेजा हुआ पत्र रुक नहीं सकता। पर जब इस प्रकार एक अत्यन्त निर्दोष पत्र रुक गया, तो वे चुप्पी साध गये। जिन्ना साहब की नीति में सरकार से युद्ध था ही नहीं।

वार्ता का परिणाम नहीं

अब जब गांधीजी छूटे तो उन्होंने उसी वार्त्ता के सूत्र को फिर से उठा लिया। गांधीजी कई रोज तक जा जाकर जिन्ना साहब के घर पर मिले, और घंटों उनसे आलोचना हुई, पर अन्त में नतीजा कुछ नहीं निकला, क्योंकि जिन्ना साहब अपने पकिस्तानकी मांग पर डटे रहे। बल्कि पहले से कड़बापन और अधिक बढ़ा। सच तो यह है कि गांधीजी ने जिस प्रकार से यह बातचीत चलायी, इससे जिन्ना साहब की शाख पहले से कहीं अधिक बढ़ गयी।

कस्तूरबा ट्रस्ट

गांधीजी के छूटते ही कुछ लोगों ने यह विचार पेश किया कि उनकी पत्नी कस्तूरीबाई गांधी के नाम पर एक ट्रष्ट कायम किया जाय, जिसका उद्देश्य स्त्रियों की उन्नति करना बताया गया। बात की बात में सवा करोड़ रुपये जमा हो गये। महात्माजी ने एक ट्रस्टी मंडल बनाकर के सारा धन उसके हाथ में दे दिया। इस कोष की तरफ से देश की चारों तरफ़ स्त्रियों की शिक्षा के लिये संस्थायें खुलती जा रही हैं। इस ट्रस्ट की देख रेख में स्त्रियों में कार्य की जो योजना बनी है, उसका आधार ग्राम्य आर्थिक पद्धति है।

जर्मनी की हार

१६४५ के शुरू में ही अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति साफ होती जा रही थी। इसने हिटलरी सेना को खदेड़ते-खदेड़ते जर्मनी में कर दिया इधर जब चर्चिल ने देखा कि रूस आगे बढ़ता चला जा रहा है, और वह जहाँ जहाँ बढ़ रहा है वहाँ वहाँ समाजवादी की स्थापना हो रही है तो जल्दी से दूसरा मोर्चा कायम कर दिया। इस प्रकार जर्मनी का पतन हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिमला कानफरेंस व्यर्थ

१९४५ के जून में कार्य समिति के बाकी सदस्य भी छोड़ दिये गये। इसके बाद ही कांग्रेस और सरकार में बात चीत चली जो शिमला कानफरेंस नाम से मशहूर है। इस कानफरेंस में जो बात चीत होने वाली थी उसके सम्बन्ध में लार्ड वावेल ने यह कह दिया था कि किसी एक सम्प्रदाय के विरोध से अधिवेशन भंग नहीं किया जायेगा, पर जिन्ना साहब ने यह जिद पकड़ी कि मुस्लिम लीग ही मुसलमानों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है। और उन्होंने कांग्रेस द्वारा किसी मुसलमान के भेजे जाने का विरोध किया। जिन्ना साहब इस जिद पर डटे रहे और शिमला कानफरेंस खतम होगई। लार्ड वावेल ने गांधीजी के तरीके पर इस कानफरेंस की असफलता का बोझा अपने ऊपर ले लिया। परिणाम यह हुआ कि जिक्र ज्यों का त्यों कायम रहा। जिन्ना साहब के कारण सरकार को फिर एक बार मौका मिला कि वह कहे कि आपसी झगड़ों के कारण वह अधिकार नहीं दे सकी, नहीं तो वह तैयार थी।

चुनाव की तैयारी

बाद को लेवर सरकार आने पर बड़े लाट ने यह एलान किया कि धारा सभाओं के जिस चुनाव को लड़ाई के कारण बन्द रखा गया था, अब वह किया जायेगा। जिस लहजे में चुनाव का एलान किया गया उससे यह भी कुछ भनक आयी कि चुनाव के नतीजे को देख कर सरकार अपने कर्त्तव्य का निर्णय करेगी कांग्रेस तथा लीग ने चुनाव की जोरदार तैयारी शुरू की। इन्हीं दिनों आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध की घटनायें विश्वस्त रूप से मालूम होने लगी और आजाद हिन्द फौज के प्रमुख नेता मेजर जनरल शाहनवाज, सहगल तथा ढिल्लन पर मुकद्दमा चलने को हुआ। बस पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन बहादुरों के विषय को उठा लिया, और इतने जोर का आन्दोलन किया कि एक बार भारत भर में जय हिन्द और आजाद हिन्द फौज के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं पड़ा। प्रत्येक चुनाव की सभा में आजाद हिन्द फौज का उल्लेख किया जाने लगा, और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी गयी मानो आजाद हिन्द फौज की रिहाई और चुनाव दोनों एक ही विषय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। देश में इन दिनों बहुत भारी जोश फैला, यहाँ तक कि यह जोश सेना में भी व्याप्त हो गया। सच तो यह है कि सेना में जो जोश फैला उसी के कारण सरकार को आजाद हिन्द फौज के उल्लिखित तीन अफसरों को रिहा कर देना पड़ा, और बाकियों के साथ नरमी का व्यवहार करना पड़ा। सरकार ने खुली अदालत में आजाद हिन्द फौजियों पर मुकदमा इस कारण चलाया था कि लोगों को नसीहत दी जाय, पर जन-आन्दोलन के कारण सरकार को लेने के देने पड़ गये।

लेबर सरकार का आगमन

१६४५ की जुलाई में ब्रिटेन में चुनाव हुआ। लेबर पार्टी नहीं चाहती थी कि फौरन चुनाव हो पर प्रतिक्रिया की प्रतिमूर्त्ति मदमाते मिस्टर चर्चिल ने यह सोचा कि जर्मनी पर हमारे ही नेतृत्व में विजय प्राप्त हुई है, इस कारण चुनाव में विजय हमारी ही रहेगी। उन्होंने जल्दी से चुनाव करवा दिया, और चुनाव के लिये समाज-वाद बनाम पूँजीवाद को विषय बना कर समाजवाद के विरुद्ध प्रचार किया। वे स्वयं तो चुने गये, पर उनकी पार्टी हार गयी। मिस्टर ऐटली के नेतृत्व में लेबर सरकार की स्थापना हुई। इस चुनाव में ऐमरी जो १६४२ के युग में अपने ब्राडकास्टों से मशहूर हो चुके थे हार गये।

जापान भी पराजित

अब तक सोवियट रूस ने जापान के विरुद्ध युद्ध घोषणा नहीं की थी पर १६४५ के ८ अगस्त को सोवियट ने जापान के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया, और साथ ही साथ लाल सेना मंचूरिया के अन्दर घुस पड़ीं। यद्यपि इसमें और एटम बम के इस्तेमाल में कोई सम्बन्ध नहीं था, पर इसी दिन अमेरिका ने हिरोसिया पर ऐटम बम डाल दिया और यह नगर बिलकुल कहानी की बात हो गयी। अभी जापान वाले हिरोसिया के धक्के को सम्हाल नहीं पाये थे कि नागाशाकी पर भी एटम बम डाला गया। यह भी शहर ध्वंस हो गया। इस पर जापान ने हथियार डाल दिया, और २ सितम्बर को जापान ने हार मानते हुए सन्धि पत्र पर दस्तखत कर दिये। इस प्रकार महायुद्ध समाप्त हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आम चुनाव

१९४५ के अन्त में सब धारा सभाओं का चुनाव हुआ। इन चुनावों में हिन्दू सीटों से काँग्रेस तथा मुस्लिम सीटों से मुस्लिम लीग विजयी हुई। दोनों के मुकाबिले में दूसरी जितनी भी संस्थायें थी, वे बिलकुल हार गयी। कम्युनिस्ट पार्टी ने कुछ उम्मीदवार खड़े किये थे, पर एकाध मामले के अलावा वे सभी क्षेत्र में हार गये। इस प्रकार यह प्रमाणित हो गया कि भारतवर्ष की असली पार्टियां यही हैं।

१९४२ में कांग्रेस

इन दिनों आजाद हिन्द फौज के वीरों की बहुत जबर्दस्त आव-भगत तथा प्रशंसा हो रही थी। साथ ही १९४२ के शहीदों तथा वीरों को बहुत प्रशंसा हो रही थी। दिसम्बर में कार्यसमिति ने अहिंसा पर फिर से प्रस्ताव किया और यह बतला दिया कि १९४२ के तथा आजाद हिन्द फौजके वीरों की प्रशंसा करते हुए भी अहिंसा की नीति पहले की तरह कायम है। कलकत्ते में कार्यसमिति ने अपनी बैठक में ये प्रस्ताव पेश किये—"१९४२ के अगस्त में मुख्य कांग्रेसियों की गिरफ्तारी के बाद नेतृत्वहीन जनता ने बागडोर अपने हाथों में ले ली और स्वतः स्फूर्ति रूप से काम किया। यदि बहुत सी वीरता तथा कुर्बानी के कार्यों के लिए जनता को श्रेय प्राप्त है तो दूसरी तरफ उसने ऐसे भी कार्य किये जो अहिंसा के अन्दर नहीं आ सकते। इसलिए कार्य समिति के लिये यह जरूरी हो गया है कि सबके पथ प्रदर्शन के लिये वह इस बात को साफ कर दें कि अहिंसा के अन्दर सार्वजनिक सम्पति को जलाना, तारों का काटना, गाड़ियों को पटरी से उतारना तथा भय प्रदर्शन नहीं आते। कार्यसमिति का यह मत है कि १९२० की काँग्रेस में अहिंसा सम्बन्धी जो प्रस्ताव पास हुआ था, और जिसकी समय समय पर इतनी व्याख्या होती रही है और जिसके अनुसार इन वर्षों में कार्य हुआ था, उसी के कारण भारत का सिर ऊंचा हुआ है।"

आजाद हिन्द फौज पर कांग्रेस

कार्य समिति ने आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में यह प्रस्ताव पास किया "कांग्रेस इस बात पर गर्वित होते हुए भी कि विदेशों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभूतपूर्व परिस्थितियों में श्री सुभाषचन्द्र बोस ने जिस आजाद हिन्द फौज का संगठन किया उस के लोगों ने कुर्बानी, अनुशासन, देश भक्ति, बहादुरी तथा अपनी सद्भावनाओं का प्रदर्शन किया, तथा यह मानते हुए भी कि कांग्रेस के लिये यह उचित तथा ठीक ही है जिन पर मुकदमा चल रहा है, उनकी पैरवी की जाय, और इस फौज के ऐसे लोगों को जिनको मदद की जरूरत है मदद दी जाय, कांग्रेसियों को यह नहीं भूलना चाहिये कि इन लोगों की पैरवी करने तथा इन लोगों को मदद देने का यह अर्थ हरगिज भी नहीं है कि कांग्रेस किसी भी तरह स्वराज्य प्राप्त करने की अपनी अहिंसा सम्बन्धी नीति से विचलित हो गयी।" इस प्रकार कांग्रेस ने १६४२ तथा आजाद हिन्द फौज के सम्बन्ध में अपने वक्तव्य को स्पष्ट कर दिया।

एक दल तथा एक नेता का नारा

अब की बार जब से कांग्रेस के नेता छूटे तब से कुछ विशिष्ट नेता जैसे संयुक्त प्रान्त में पंडित श्री कृष्णदत्त पालीवाल तथा बम्बई में श्री पाटिल, शंकररावदेव, यहां तक कि सरदार पटेल ने भी एक दल तथा एक नेता का नारा दिया। बात यह है कि १६४२ तथा उसके बाद कम्युनिस्टों ने जिस प्रकार रवैया अख्तियार किया था, उससे कांग्रेस के अन्दर इस नारे का उठना बहुत स्वाभाविक हो गया। पर साथ ही साथ कुछ लोगों ने यह साफ कर दिया कि वे केवल कम्युनिस्ट पार्टी ही नहीं बल्कि किसी भी पार्टी को कांग्रेस में रहने देना नहीं चाहते। इस पर बहुत जोर की बहस छिड़ी। दोनों तरफ से तर्क दिये गये। इसी समय कम्युनिस्ट कांग्रेस से निकाल तो दिये ही गये, पर साथ ही कांग्रेस के विधान को इस तरीके से ढालने की बात चीत चल पड़ी जिससे कि उसमें कोई अन्य दल न रह सके। बाद को कांग्रेस ने एक विधान समिति बना कर यह टेढ़ा प्रश्न उसके सुपुर्द कर दिया।

नवम्बर प्रदर्शन के कारण अहिंसा सम्बन्धी प्रस्ताव

कांग्रेस ने अहिंसा का जो पाठ दिया उसे विशेषकर इसलिये देने की जरूरत पड़ी थी कि नवम्बर में कलकत्ते में छात्रों का एक प्रदर्शन हुआ था जिसने बिल्कुल क्रान्तिकारी ढंग अख्तियार किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। और एक बार फिर १६४२ के दृश्य सामने आ गये। इस अवसर पर छात्रों पर गोली चली, पर छात्र पीछे नहीं हटे। इस अवसर पर छात्रों ने बहुत सी मिलिटरी लारियों को जला दिया, और तोड़ फोड़ के अन्य कार्य भी किये। सच तो यह है कि इस प्रदर्शन के समय सरकार बिल्कुल किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गयी थी। इसी प्रदर्शन के कारण कांग्रेस कार्य समिति को अहिंसा सम्बन्धी प्रस्ताव पास करना पड़ा था।

फरवरी का नौ सैनिक विद्रोह

१६४६ की फरवरी में बम्बई में भारतीय नौसेना के नौजवानों ने एकाएक गदर कर दिया। तलवार नामक एक जहाज में नौसेना को शिक्षा दी जाती थी। इसी जहाज से विद्रोह फैला। ११ फरवरी को गोरे अफसर कमांडर किंग ने भारतीय नौ विद्याशिक्षार्थियों को कुत्ते का बच्चा तथा कुली का बच्चा कहकर गालियां दीं। ऐसी गालियां तो हमेशा से दी जाती थीं, और भारतीय नौ सैनिक उसे बर्दाश्त भी कर लेते थे, पर आजाद हिन्द फौज का प्रभाव तथा प्रशंसा के कारण और दिन प्रति दिन होने वाले गोरों और भारतीयों के व्यवहार में तारतम्य के कारण लोगों का जोश बढ़ा हुआ था। इस कारण इस पर लोग बहुत नाराज हुए और इस पर जिन लोगों को गाली दी गयी थी, उन्होंने अर्जी वगैरह भेजी। पर इसका कोई असर नहीं हुआ। १८ फरवरी को उन्हें बहुत रद्दी नाश्ता मिला इस पर तलवार के ग्यारह सौ नौ सैनिकों ने हड़ताल कर दी। इस पर कमांडर किंग ने उन्हें धमकाया पर इसका कोई असर नहीं हुआ। दोपहर के बाद नौ सैनिकों ने एक सभा की जिसमें उन्होंने अपनी मांग तय की। इन मांगों में उनकी निजी मांगें अच्छा खाना, कमान्डर किंग के विरुद्ध कार्यवाही, गोरे और काले नौ सैनिक की बराबर तनख्वाह आदि मांग तो रखी ही, साथ ही साथ उन्होंने सब राजनैतिक कैदियों, आजाद हिन्द फौजियों की रिहाई की मांग की, यह कहा कि सारी भारतीय फौज हिन्देशिया से वापिस ली जाय। इस प्रकार उन्होंने अपनी राजनैतिक बुद्धि का परिचय दिया। १६ तक सारी भारतीय नौ सेना में हड़ताल हो गयी। हड़तालियों में उपकूल में रहने वाले २० हजार नौ सैनिक तथा २० बड़े जहाज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और १०० के करीब छोटे जहाजों के लोग हड़ताल में शामिल होगये। कई जगह पर जहाजों पर तिरंगा, लीगी हरा तथा लाल झंडे लगा दिये गये और जहाज पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। करांची से लेकर सिंगापुर तक के भारतीय नौ सैनिकों में यह हड़ताल फैल गयी। एक दिन ठहरने के बाद हड़तालियों ने बम्बई की सड़कों पर क्रान्तिकारी नारों के साथ जुलूस निकाला। ऐडमिरल रातें विद्रोहियों से बातचीत करने आये और मांगें ले गये पर उन्होंने जाते ही उपकूल के ३०६ नौसेनिकों को गिरफ्तार कर लिया। २१ तथा २२ फरवरी को स्थिति भयानक हो गई। अब तो शसस्त्र युद्ध की नौबत आ गयी। करांची में भी शसस्त्र युद्ध हुआ गोरों ने नौ सैनिकों को गोलियों से मार कर गिराया। फिर भी हड़ताल चलती रही। अन्त में सरदार पटैल ने इन लोगों से आकर आत्म समर्पण कर देने के लिये कहा तभी यह विद्रोह शान्त हुआ। बाद को बहुत से विद्रोही नौ सैनिकों को बहुत कड़ी सजायें दी गईं, और हजारों तो निकाल दिये गये।

फरवरी प्रदर्शन

फरवरी में आजाद हिन्द फौज के रशीद की सजा के विरुद्ध बम्बई, कलकत्ते तथा अन्य स्थानों में प्रदर्शन हुआ, लारियां आदि जलायी गयीं जिससे फिर एक बार कलकत्ता के नवम्बर प्रदर्शन की बात ताजी हो गयी। इस अवसर पर लीग तथा कांग्रेस का जो एका देखने में आया, वह अभूतपूर्व था। यह साफ साफ पता लग गया कि देश की परिस्थिति बहुत ही क्रान्तिकारी है। सरकार के लिये डर की सबसे बड़ी बात यह थी कि भारतीय सेना में भी अशान्ति फैल गयी थी और सेना राजनैतिक नारे देने लगी थी। १८ फरवरी को नौ सैनिक विद्रोह शुरू हुआ और १९ को ऐटली की तरफ से घोषणा हुई कि मंत्री मिशन भारत जा रहा है।

पार्लियामेन्टरी मिशन तथा मंत्री मिशन

शिमला कानफरेंस में सरकार झुकी नहीं थी पर अब परिस्थिति को सम्हालने के उद्देश्य से एक के बाद एक पार्लियामेंटरी मिशन तथा कैबिनेट मिशन भारतवर्ष में आये और समझौते की वार्त्ता चलायी। पार्लियामेंटरी मिशन जैसे जर्मान की जांच कर गयी, और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर कैबिनेट मिशन प्रस्ताव लेकर मई १६४६ में आ गयी। मंत्री-मंडल के मिशन के नेता के रूप में सर स्टैफोर्ड क्रिप्स आये थे। भारतीय नेताओं के सामने कैबिनेट मिशन ने जो प्रस्ताव रखा, उसका सार यह था—

(१) भारतवर्ष की एक यूनियन बने, जिसमें ब्रिटिश भारत तथा रियासत हो, यूनियन के हाथों में वैदेशिक विभाग, आत्म रक्षा तथा यातायात और समाचार आदान-प्रदान के कार्य हों और इसे यह अख्तियार हो कि इन कार्यों के लिये जिस धन की जरूरत हो वह उगा सके।

(२) यूनियन की एक धारा सभा तथा कार्यकारी विभाग हो, जो ब्रिटिश भारत तथा रियासतों के प्रतिनिधियों के द्वारा बने हो। किसी विषय में यदि कोई बड़ा साम्प्रदायिक मामला धारा सभा में उठ खड़ा हो तो उसके फैसले के लिये उपस्थित प्रतिनिधियों की बहुसंख्या, तथा दो बड़े सम्प्रदायों के मत की जरूरत होगी।

(३) यूनियन के विषयों के अतिरिक्त सारे विषय प्रान्तों के हाथों में होंगे।

(४) यूनियन को जो शक्तियाँ दे दी गयी हैं उनके अतिरिक्त बाकी सभी शक्तियाँ रियासतों के हाथों में होंगी।

(५) प्रान्त इस बात के लिये स्वतंत्र होंगे कि वे धारा सभाओं तथा कार्यकारी विभाग के साथ ग्रूप बनावें, और प्रत्येक ग्रूप को इस बात का अख्तियार होगा कि वह एक साथ जिन प्रान्तीय विषयों को चाहे ले।

(६) यूनियन तथा ग्रूपों के विधान में ऐसी व्यवस्था होगी कि वे धारा सभा की बहुसंख्या से शुरू में हर दस साल विधान के पुनर्विवेचन की माँग रखे। इन्हीं सूत्रों के इर्द-गिर्द नेताओं में तथा मंत्री मिशन में बातचीत हुई।

कार्यसमिति का प्रस्ताव

२४ मई को कांग्रेस कार्य समिति ने एक बहुत दीर्घ प्रस्ताव पास किया, जिसमें यह कहा गया कि मंत्रीमिशन ने जो चित्र पेश किया है और जिस पर उन्होंने अन्तर्कालीन सरकार में भाग लेने के लिये कहा है, वह कुछ साफ नहीं है। "कांग्रेस कार्य समिति का उद्देश्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा लक्ष्य यह है कि भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त की जाय, सीमित अधिकार होने पर भी केन्द्र में शक्तिशाली सरकार स्थापित की जाय, प्रान्तों को पूर्ण स्वायत्त शासन दिया जाय, केन्द्र तथा देश के अन्य अंशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था हो। प्रत्येक व्यक्ति को सुविधा देने के लिये तथा उसके विकास को सम्भव करने के लिये उसके मौलिक अधिकार स्वीकार किये जायँ, तथा प्रत्येक सम्प्रदाय को वृहत्तर ढाँचे के अन्दर रहकर अपनी इच्छानुसार जीवन चलाने के लिये बराबर सुविधा दी जाय। कार्य समिति को दुख है कि इस उद्देश्य के साथ ब्रिटिश सरकार के प्रस्तावों का सामंजस्य नहीं है।" कार्य समिति ने यह कहा कि यदि सरकार सचमुच अन्तर्कालीन सरकार को स्वराज्य की पहली सीढ़ी बनाना चाहती, तो उसके प्रस्ताव और ही होते। कार्यसमिति ने इस अवसर पर यह भी कहा कि विधान सम्मेलन ही भारतवर्ष के विधान का निर्माण कर सकता है और सरकार यदि ईमानदार है तो अन्तर्कालीन सरकार को कानूनन न सही पूर्ण जिम्मेदारी दे देनी चाहिये।

बातचीत भंग

इसके बाद बड़े लाट साहब लार्ड वावेल कांग्रेस तथा लीग से इस बात पर बातचीत करने लगे कि वे अन्तर्कालीन सरकार में सहयोग करें और इस बीच में विधान सम्मेलन का चुनाव आदि हो, जो अन्तिम विधान का निर्माण करे। बड़े लाट साहब ने यह चेष्टा की कि कांग्रेस और लीग अन्तर्कालीन सरकार में बराबर सीट ले। पर इस पर कांग्रेस राजी नहीं हो सकी और बातचीत भंग हो गयी। पर फिर भी बातचीत चलती रही और नये नये प्रस्ताव किये जाने लगे। इस सम्बन्ध में मंत्री मिशन, बड़े लाट, लीग और कांग्रेस के नेताओं में बातचीत होती रही। २६ जून को कांग्रेस कार्य समिति ने अपने प्रस्ताव में कहा कि प्रस्तावित अन्तर्कालीन सरकार के हाथों में इतनी ताकत होनी चाहिये कि वह स्वतंत्र राष्ट्र के तुल्य हो और फिर वही स्वतंत्र राष्ट्र में परिणत हो सके। यह कहा गया कि किसी प्रकार की अन्तर्कालीन या और किसी प्रकार की सरकार बनाने में कांग्रेस राष्ट्रीय हक नहीं छोड़ सकती। कांग्रेस कार्य समिति ने कहा कि "अन्तर्कालीन सरकार के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हाथ में शक्ति तथा अधिकार होना चाहिये, यह जिम्मेदार हो, भले ही कानूनन सम्पूर्ण रूप से स्वतंत्र न हो, पर व्यवहारिक रूप से स्वतंत्र हो। ऐसी सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी रहेगी न कि और किसी के प्रति। कांग्रेस किसी प्रकार अन्यायपूर्ण संख्या समता नहीं मान सकती और न यह स्वीकार कर सकती है कि किसी साम्प्रदायिक दल को यह अधिकार दे दिया जाय कि वह जिस बात को चाहे रद्द कर दे। इस कारण समिति १६ जून के तारीख के बयान के अनुसार अन्तर्कालीन सरकार में भाग नहीं ले सकती।" समिति ने विधान सम्मेलन में भाग लेकर भारत का विधान बनाना स्वीकार किया, पर साथ ही यह कहा कि इस बीच में प्रतिनिधि स्थानीय जिम्मेदार सरकार की स्थापना होनी चाहिये क्योंकि गैर-जिम्मेदार सरकार के रहते हुए न तो दुभिक्ष पर ही रोक-थाम हो सकती है और न विधान सम्मेलन का कार्य हो सकता है। कार्य-समिति ने विधान सम्मेलन के सम्बन्ध में भी यह कहा कि भारतीयों की वोट से विधान सम्मेलन का निर्माण होना चाहिये, विधान सम्मेलन के अधिकार पर कोई रोक-टोक न हो, और विधान सम्मेलन विभक्त भारत नहीं बल्कि संयुक्त भारत के विधान की रचना करे।

विधान सम्मेलन का निर्वाचन

विधान सम्मेलन का निर्वाचन जल्दी ही जुलाई में हो गया। यह विधान सम्मेलन सार्वजनिक वोट पर नहीं बल्कि धारा सभाओं के सदस्यों के द्वारा चुनाव हुआ। चुनाव में पहले की तरह एक सीमाप्रान्त के अलावा सब जगह से मुसलमान सीटों से लीगी और हिन्दू सीटों से कांग्रेसी आये। लीग ने चुनाव में तो हिस्सा लिया पर बाद को कह दिया कि वह विधान सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेगी। यहीं से विधान सम्मेलन के सफल होने में सन्देह हो गया।

अन्तर्कालीन सरकार में कांग्रेस

कुछ बात चीत के फलस्वरूप कांग्रेस ने अन्तर्कालीन सरकार में भाग लेना मंजूर कर लिया और २ सितम्बर १९४६ को पंडित नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने अन्तर्कालीन सरकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में भाग लेना शुरू किया। इस दिन सारे देश में कांग्रेसियों ने बहुत खुशी मनायी और चूंकि लीगी इसमें शरीक नहीं हुए, इस कारण सारे भारत के मुसलमानों ने हड़ताल मनायी तथा काले झंडे दिखाये। अन्तर्कालीन सरकार में कांग्रेस की शिरकत के कारण ही भारत बंगाल दुर्भिक्ष के वृहत्तर संस्करण से बच गया।

बाद को लीग भी शामिल

बाद को लीग ने जब देखा कि अन्तर्कालीन सरकार में जाने से अड़ंगा लगाने की नीति अधिक सफल हो सकेगी तब लीग के नेताओं ने बड़े लाट के साथ बातचीत के दिखावे के बात अन्तर्कालीन सरकार ने भाग लेना स्वीकार कर लिया।

मेरठ कांग्रेस

इसी समय मेरठ में रामगढ़ कांग्रेस के बाद नवम्बर १६४६ में कांग्रेस का अधिवेशन कई साल बाद हुआ। सुप्रसिद्ध नेता अध्यापक कृपलानी इस अधिवेशन के सभापति बनाये गये। रामगढ़ से लेकर १६४६ तक मौलाना अबुलकलाम कांग्रेस के सभापति रहे, इसके बाद पं० नेहरू सभापति बने, पर अन्तर्कालीन सरकार में जाने के बाद उनका सभापति रहना अनुचित समझा गया। यह अधिवेशन बहुत ही सफल होता, पर अगस्त में लीग ने प्रत्यक्ष कार्य दिवस नाम से जिस तूफाने बत्तमीजी का सूत्रपात किया था, उसके कारण आबहवा बहुत गन्दी हो गयी थी, और ऐन मौके पर गढ़मुक्तेश्वर में कुछ बखेड़ा भी होगया, इसके अतिरिक्त दुर्भिक्ष की हालत के कारण यह अधिवेशन शानदार न हो सका। फिर भी आचार्य कृपलानी ने अपने व्याख्यान में इस बात को दिखा दिया कि इस बीच में जो दमन हुआ उसके बावजूद कांग्रेस पहिले से कहीं अधिक शक्तिशाली हुई है। फिर भी मेरठ अधिवेशन का सबसे सनसनी पूर्ण मुहूर्त्त यह था जब कि भारत सरकार के उपसभापति पंडित नेहरू ने यह बताया कि अन्तर्कालीन सरकार में वायसराय और लीग के षडयंत्र के कारण ऐसी परिस्थिति हो गयी है कि किसी भी समय कांग्रेस को उससे निकल आकर संग्राम का सूत्रपात करना पड़ सकता है। इस अधिवेशन में कांग्रेस के विधान के सम्बन्ध में एक समिति भी बना दी गयी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंडित नेहरू तथा जिन्ना की विलायत यात्रा

लीग ने अन्तर्कालीन सरकार का बायकाट कर रखा था, इस कारण लीग और कांग्रेस में कोई समझौता हो सकता है या नही जिससे लीग ६ दिसम्बर से शुरू होने वाले विधान परिषद में भाग ले सके, इस बात को जानने के बहाने से मि० ऐटली ने पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा मिस्टर जिन्ना को विलायत बुलाया। पहले तो पंडितजी ने इस पर कहा कि जाना व्यर्थ है क्योंकि लीग ने १६ मई की घोषणा को स्वीकार कर दिया है अर्थात् विधान सम्मेलन में भाग लेने के शर्त्त को मान कर ही अन्तर्कालीन सरकार में हिस्सा लेना शुरू किया था, इस लिये बेकार की बातचीत से कोई फायदा नहीं है। २६ नवम्बर को पंडितजी ने लार्ड वावेल को लिख भेजा कि लन्दन जाने का अर्थ ही यह है कि फिर सारी बात पर आलोचना की जाय। पंडित नेहरू ने कहा कि वे इसके लिये तैयार नहीं है, फिर ६ दिसम्बर से विधान सम्मेलन की बैठक होने जा रही है, कहीं उस वर्क न आ सके, तो विधान सम्मेलन स्थगित कर दिया जायगा और इस पर तरह तरह के खतरनाक प्रचार कार्य हो, तो उससे बहुत नुकसान होगा। प्रधान मंत्री ने इस पर यह लिख भेजा कि ६ दिसम्बर से विधान सम्मेलन का अधिवेशन हो यही उद्देश्य लेकर आलोचना होने जा रही है इसलिये मंत्री-मिशन की योजना को त्याग देने अथवा विधान सम्मेलन के अधिवेशन को स्थगित करने का कोई सवाल नहीं उठता। प्रधान मंत्री ने यह लिखा कि मंत्री मिशन योजना को बदलना या स्थगित करना लक्ष्य नहीं है, बल्कि उसे सफल बनाना ही लक्ष्य है। फिर भी पंडितजी ने जाने से इनकार किया पर जब मिस्टर ऐटली ने फिर अनुरोध किया और यह वायदा किया कि ६ दिसम्बर के पहले ही वे लौट सकेंगे, तब वे राजी हुए। अब पंडित नेहरू राजी हुए तो मिस्टर जिन्ना राजी नहीं हुए। मिस्टर जिन्ना ने कहा कि पंडित नेहरू को जो आश्वासन दिये गये हैं यदि वे सही है तो उनके जाने का कोई अर्थ नहीं होता। इस पर प्रधान मंत्री ने लिख भेजा कि किसी तरह के दृष्टि कोण से आलोचना में कोई बाधा नहीं है इस पर मिस्टर जिन्ना जाने के लिये राजी हो गये। लन्दन में इस आलोचना का कोई नतीजा नहीं हुआ और पंडित नेहरू तथा मिस्टर जिन्ना जैसे गये थे वैसे ही लौट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आये। पहले कांग्रेस वालों में कुछ ऐसी राय थी कि विवादग्रस्त विषय फेडरल कोर्ट के सुपुर्द कर दिये जाय पर बाद को कांग्रेस ने यह इरादा छोड़ दिया।

विधान सम्मेलन

६ दिसम्बर को यथारीति विधान सम्मेलन की कार्रवाई शुरू हुई। प्रसिद्ध विद्वान् श्री सच्चिदानन्द सिनहा अधिक उम्र होने के नाते इस अधिवेशन के सभापति बने और उन्हीं के सभापतित्व में स्थायी सभापति के रूप में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद का चुनाव हुआ। पंडित नेहरू ने पहिले ही पत्रों को वक्तव्य देते हुए कह दिया था कि विधान सम्मेलन सर्वप्रभु संस्था है, वह किसी की आज्ञा नहीं मानेगा। विधान सम्मेलन के कुल सदस्यों की संख्या ३८५ थी। इनमें से सीधे सीधे कांग्रेस तथा कांग्रेस के द्वारा नामजद २०७ सदस्य थे। अन्य १४ सदस्यों के कांग्रेस के साथ काम करने की उम्मीद थी। अवश्य यह जो ३८५ सीटें गिनायी गयीं इनमें रियासतों की ६३ सीटें जोड़ी नहीं गयीं। विधान सम्मेलन ने स्थायी सभापति चुनने के बाद उपसमितियों का निर्माण किया और उसका कार्य चलने लगा। १३ सितम्बर को पंडित नेहरू ने यह प्रस्ताव रखा कि भारतवर्ष एक प्रजातांत्रिक तथा पूर्ण प्रभु राष्ट्र होगा।

६ दिसम्बर की घोषणा

६ दिसम्बर से विधान सम्मेलन का अधिवेशन शुरू हुआ, पर उधर ६ दिसम्बर को ही ब्रिटिश ने एक घोषणा की थी जिसके द्वारा यह कहा गया कि प्रान्तों के ग्रूपिंग को मानकर ही विधान सम्मेलन कार्य कर सकता है। कहना न होगा कि यह प्रस्ताव विधान सम्मेलन की पूर्ण प्रभुता पर हस्तक्षेप करती थी। अभी विधान सम्मेलन ने कुछ काम नहीं किया था, और तिसपर ऊपर से यह हुक्मनामा आया, यह कोई अच्छा लक्षण नहीं था पर कांग्रेस कार्य समिति ने यह समझकर कि सरकार कहाँ तक जाती है देखा जाय इस घोषणा को स्वीकार कर लिया। कांग्रेस के नेता शायद इस तरह से सोचते थे कि कुछ प्रान्तों को न सही, बाकी प्रान्तों को ब्रिटिश सरकार स्वतंत्रता देती है या नहीं यह देखा जाय। स्मरण रहे कि इस घोषणा के द्वारा ब्रिटिश सरकार ने १६ मई की घोषणा के विरुद्ध कार्य किया था। उस घोषणा में कहा गया था कि किसी भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अल्पसंख्यक सम्प्रदाय को यह अधिकार न होगा कि वह किसी अगले कदम में बाधा पहुँचावे, पर इस घोषणा में यह कहा गया था कि सरकार इस बात के लिये तैयार नहीं है कि किसी भी अनिच्छुक अंग पर विधान सम्मेलन के फैसलेको लागू किया जाय। यद्यपि कांग्रेस ने ६ दिसम्बर की घोषणा को मान लिया, फिर भी मिस्टर जिन्ना तथा उनकी पार्टी ने विधान सम्मेलन में भाग लेने से इनकार किया। कांग्रेस ने फिर भी इस आशा से कि शायद लीग को सुबुद्धि आजाय और बाद को वह विधान सम्मेलन में भाग ले, पंडित नेहरू वाले प्रस्ताव को बिना पास किये ही २३ दिसम्बर को कुछ जाब्ते की कार्रवाई करने के बाद अपने अधिवेशन को स्थगित कर दिया। आसाम के नेताओं ने कांग्रेस कार्य समिति के बावजूद यह तय किया कि वे ग्रूपिंग में शरीक नहीं होंगे।

कलकत्ता हत्याकांड

अगस्त १९४६ से लीग ने बंगाल में जो कार्यपद्धति चलायी थी, उसके कारण बंगाल के हिन्दुओं की हालत बहुत खराब हो गयी थी। १६ अगस्त को जिस दिन लीग का प्रत्यक्ष दिवस शुरू हुआ, उस दिन भीतर भीतर लीगी हर तरीके से तैयार थे, और उन्होंने भयंकर रूप से हिन्दुओं की हत्या करने का कार्यक्रम उठाया। केवल यही नहीं, लीगी सरकार ने पुलिस को लोगों की मदद के लिये जाने नही दिया। नतीजा यह हुआ कि कलकत्ता में हिन्दू बहुत बुरी तरह मारे गये, और जब तीन दिन बाद हिन्दू प्रथम विस्मय से जगकर आत्मरक्षा के लिये खड़े हो गये, तो पुलिस ने हस्तक्षेप शुरू किया।

नोआखाली और बिहार के दंगे

इसीके बाद लीग ने नोआखाली में संगठित तरीके से हिन्दुओं का वध किया। अबकी बार लीगियों ने स्त्रियों को भगाना, लोगों को जबर्दस्ती मुसलमान बनाना शुरू किया। पुलिस ने सताये हुए लोगों की बिल्कुल मदद नहीं की इसके विपरीत अपराधियों की मदद की। लोगों में इतना आतंक छा गया कि लोग गाँव घर छोड़ कर भाग गये। गाधीजी को लोगों ने जाकर नोआखाली की खबर बतायी तो वे भारी विपत्ति उठाकर नोआखाली में पहुँचे और जनवरी में उन्होंने गाँव-गाँव का दौरा करना शुरू किया। उनका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उद्देश्य हिन्दू मुस्लिम मेल कराना था बंगाल के दंगों की प्रतिक्रिया में बिहार में भी बहुत भयंकर दंगे हुए जिनमें स्वाभाविक रूप से अधिक मुसलमान मारे गये। दंगा तो बंगाल में भी हुआ और बिहार में भी हुआ, पर बिहार में सरकार ने निर्दय होकर दंगाइयों को दबाया और मुसलमानों की रक्षा की, जब कि बंगाल में लीगी सरकार ने दंगा में प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष भाग लिया, फिर दंगा खतम होने के बाद अपराधियों को पकड़ा नहीं और भगायी हुई औरतों का पता लगाने में कुछ मदद नहीं दी। भगायी हुई स्त्रियों में कुछ हिन्दू स्त्रियों के बसरा तक ले जाये जाने की बाद को खबर मिली। गांधीजी नोआखाली के बाद दंगा-पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करने लगे, पर उधर नोआखाली से पीठ फेरते ही नोआखाली में फिर भयंकर अत्याचार शुरू हो गया।

फिर बंग भंग का नारा

बंगाल की लीगी सरकार की साम्प्रदायिक नीति तथा खुल्लम-खुल्ला मुसलमान दंगाईयों और अपराधियों के साथ पक्षपात करने के कारण बंगाल के हिन्दुओं तथा राष्ट्रीय विचार के लोगों में यह धारणा जोर पकड़ती गयी कि किसी भी प्रकार लीगी सरकार के अधीन रहना दुर्भाग्य होगा। इस कारण कभी जो बंगाली हिन्दू बंगभंग के विरुद्ध अपना शोणित देकर लड़े थे, इस बात पर मजबूर हुए कि बंगभंग का नारा दें। ऐसे लोगों ने यह नारा दिया कि बंगाल के पश्चिमी जिले जिनमें हिन्दुओं की बहुसंख्या है एक प्रान्त के रूप में संगठित किये जाय। यह आन्दोलन दिनबदिन जोर पकड़ता गया। अन्त तक जाकर बंगाल की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, हिन्दू महासभा तथा ऐसे दलों ने जो साम्प्रदायिकता से बिल्कुल दूर भी थे, इस नारे का पूर्ण समर्थन किया। मजे की बात यह है कि जब इस आन्दोलन को जोर पकड़ते देखा तो लीग के नेता वृहत्तर बंगाल का नारा देने लगे और यह कहने लगे कि बंगाली जाति के एक बने रहने में ही भलाई है। ये लोग भूल गये कि इनके सिद्धान्त के अनुसार बंगाली जाति का तो कोई अर्थ ही नहीं होता क्योंकि जाति तो मुस्लिम और हिन्दू ये ही दो हैं। ये लोग यह भी भूल गये कि उनके लिये तो एक ही शब्द पाकिस्तान है वृहत्तर बंगाल का कोई अर्थ नहीं होता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एशियाई सम्मेलन

१९४७ के मार्च में मुख्यत: पं० जवहारलाल नेहरू की चेष्टा से दिल्ली में अखिल एशिया सम्मेलन बुलाया गया। एशिया के प्रत्येक देश ने इस सम्मेलन में अपना प्रतिनिधि मंडल भेजा तथा भारत की सब पार्टियों ने इसके साथ पूरा सहयोग किया। केवल भारतीय मुस्लिम लीग ने इसका बायकाट किया। इस प्रकार अखिल एशिया सम्मेलन का बायकाट कर लीग के नेताओं ने सारे एशिया के प्रतिनिधियों के सामने यह स्पष्ट कर दिया कि उनके विचार बहुत ही संकीर्ण हैं। उन्होंने इस सम्मेलन पर यह दोष लगाया कि यह एक विशेष पार्टी अर्थात् कांग्रेस की तरफ से की जा रही है इसलिये वे इसमें शरीक नहीं हो सकते। यह द्रष्टव्य है कि इस सम्मेलन में बाहर से जो प्रतिनिधि आये उनमें बहुत से मुसलमान थे। ३० देश के २३० प्रतिनिधि लेकर इस सम्मेलन का अधिवेशन शुरू हुआ। पं० जवाहरलाल नेहरू ने इस सम्मेलन का उदघाटन करते हुए यह कहा कि योरोप तथा अमेरिका के अखबारों में यह शंका प्रकट की गयी है कि यह सम्मेलन गोरी जातियों के विरुद्ध सम्मेलन है, सो यह गलत है हम एक दुनिया के आदर्श के लिये काम करेंगे।

एशियाई सम्मेलन के कार्य

इस सम्मेलन में किसी देश की आन्तरिक राजनीति पर कोई आलोचना पहले से ही मना कर दी। ऐसा कदाचित इसलिये हुआ कि कहीं किसी समस्या पर आपसी झगड़ा उठ खड़ा न हो। श्रीमती सरोजिनी नायडू इस सम्मेलन की सभा नेत्री रहीं। इस सम्मेलन में हिन्देशिया के क्रान्तिकारी नेता डाक्टर शहरयार सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। अवश्य अन्य देशों से जो प्रतिनिधि आये थे, वे अपने अपने देश के बड़े नेता थे। इस सभा के कारण एशियाई देशों में मित्रतापूर्ण वातावरण उत्पन्न हुआ। अवश्य ही इस सम्मेलन से एशिया छोड़ों का साम्राज्यवाद विरोधी नारा निकला।

१९४८ जून तक भारत छोड़ने की घोषणा

इस सम्मेलन के पहले ही १९४७ की २० फरवरी को ऐटली साहब ने यह घोषणा की थी कि १९४८ के जून को ब्रिटिश सरकार भारत छोड़ देगी। इस घोषणा में मिस्टर ऐटली ने यह कहा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"अनेक वर्षों से ब्रिटेन की एक के बाद एक सरकार भारत में स्वायत्त शासन प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करती आ रही है। इस नीति का अनुसरण करने के कारण भारतीयों में क्रमश बढ़ती हुई जिम्मेदारी बढ़ती गयी है। और आज यह हालत पहुँच चुकी है कि शासन व्यवस्था तथा भारतीय सशस्त्र सेना भारतीय कर्मचारियों पर बहुत कुछ निर्भर है। शासन सुधार के क्षेत्र में भी देखा जाता है कि पार्लियामेन्ट में १९१९ और १९३५ में भारतीयों को यथेष्ठ अधिकार दे दिये गये।........" इस प्रकार शासन सुधार के इतिहास देने के बाद इस घोषणा में यह कहा गया कि १९४८ के जून के पहिले जिम्मेदार भारतीयों के हाथों में ताकत देने का सरकार सुनिश्चित इरादा कर चुकी है। जो सरकार भारतीयों के समर्थन से बनेगी, और जो सरकार न्याय के सिद्धान्तों के अनुसार भारत का शासन कर सकेगी तथा उनमें शान्ति स्थापित कर सकेगी, ब्रिटिश सरकार उसके हाथों में जिम्मेदारी देने के लिये उत्सुक है। अगले साल तक इस विराट जिम्मेदारी को लेने के लिये सब दलों को झगड़े मिटा कर एक हो जाना चाहिये। सम्पूर्ण रूपसे प्रतिनिधि मूलक विधान सम्मेलन जिस विधान की रचना करेगी, ब्रिटिश सरकार पार्लियामेन्ट में उसे समर्थन करेगी। यदि इस बीच में वैसा ही विधान नहीं बन पाया तो उस हालत में ब्रिटिश सरकार किस के हाथों में भारतीय केन्द्रीय सरकार की ताकत दे देगी, इसे बादको ... जायेगा। १९४८ के जून तक शायद पूरी शासन शक्ति समर्पित करना सम्भव न हो, इसलिये पहले ही से उसकी तैयारी कर देनी चाहिये। असामरिक शासन व्यवस्था कुशलता पूर्वक हो और भारत की देश रक्षा ढंग से हो सके, इसका आयोजन बहुत जरूरी है। देशी रियासतों के सम्बन्ध में घोषणा में यह कहा गया कि ब्रिटिश सरकार सार्वभौमशक्ति की हैसियत से जो ताकत रखती है, तथा उनके साथ जो सम्बन्ध है उन्हें पूर्ण तरीके से शक्ति दे देने के पहले ब्रिटिश सरकार नहीं छोड़ेगी। भारत में ब्रिटेन के व्यापारिक तथा औद्योगिक स्वार्थों की भी रक्षा करने की बात इसमें कही गयी।

घोषणा का असर

इस घोषणा के पहले अन्तर्कालीन सरकार में लीग तथा कांग्रेस का सम्बन्ध इतना कड़ुवा हो चुका था कि कांग्रेस के नेतागण यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खुले आम धमकी देने लगे थे कि या तो लीग १६ मई १६४६ की घोषणा को मान कर विधान सम्मेल में सिरकत करे या वह अन्तर्कालीन सरकार छोड़ कर चली जाय, पर इस घोषणा से यह परिस्थिति रुक गयी।

पंजाब में दंगा

ऐटली की घोषणा के बाद ही पंजाब के यूनियनिस्ट मंत्रीमंडल के नेता खिजिर हयातखां ने यह कह कर इस्तीफा दे दिया कि इस घोषणा से परिस्थिति इतनी बदल गई कि अब उनका प्रधानमन्त्री रहना उचित ज्ञात नहीं होता। तदनुसार उन्होंने पद त्याग कर दिया। पता नहीं कि यह बात पहले से तय की या नहीं, मंत्रीमंडल के इस्तीफा देते ही लीग की तरफ से भयंकर साम्प्रदायिक-दंगे शुरू हो गये, और हजारों निरीह लोग मारे गये। लीग की असेम्बली पार्टी मंत्रीमंडल बनाने में असमर्थ रही। दंगे के कारण पंजाब के सिख तथा हिन्दुओं ने भी पंजाब के विभाजन का नारा दिया और कांग्रेस कार्यसमिति ने उसे कबूल भी कर लिया।

आगे की झांकी

जिस समय इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ लिखे जा रहे हैं उस समय एक तरफ तो देश के सामने ऐटली की वह अस्पष्ट घोषणा है, जिसका मंशा ठीक ठीक पता नहीं क्या है, और दूसरी तरफ लीग के कारण देश में साम्प्रदायिक वातावरण फैला हुआ है। ऐसी हालत में भविष्य का नकशा बिलकुल साफ नहीं आ रहा है। किसी भी हालत में प्रगतिशील शक्तियों की विजय होगी इसमें सन्देह नहीं क्योंकि क्रान्ति की शक्तियाँ कितनी भी बहकायी जाने पर रुक नहीं सकती। विधान सम्मेलन लीग के अतिरिक्त सब पार्टियों की राय से पंडित नेहरू के उस प्रस्ताव को पास कर चुका है जिसमें भारतवर्ष को एक पूर्णप्रभु प्रजातंत्रिक राष्ट्र कर के घोषित किया गया है, पर उधर लीग भी पाकिस्तान पर डटी हुई है और मुस्लिम जनता उसके साथ है। ऐसी हालत में भारत का किसी न किसी रूप में विभाजन अवश्य भावी ज्ञात होता है, पर ऐसी आशा है कि यदि विभाजन हो भी तो अन्त में एकता होगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेयन

परिशिष्ट

३ जून १९४७ को भारतवर्ष को औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त हुआ युग युग की लदी हुई जंजीर खनखनाकर गिर पड़ी। इससे देश में अपार हर्ष की लहर दौड़ गई। पर साथ ही देश का जो दो हिस्सों में धार्मिक विभाजन हुआ, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान इससे देश की सारी समझदार जनता विशेषकर राष्ट्रीयतावादी तथा समाजवादी हिस्सा वहुत दुखी हुआ। कुछ समाजवादी तो अखंड हिन्दुस्तान के नारे में विश्वास रखते थे, पर अधिकांश समाजवादी जातियों के आत्म-निर्णय में यहाँ तक कि राष्ट्र वनाने की हद तक आत्म निर्णय विश्वास करते हुए भी भारतवष के इस प्रकार विभाजन के विरुद्ध थे कि वे समझते थे कि धार्मिक विभाजन का समाजवाद में कोई स्थान नहीं हैं। आश्चर्य की वात है कि अपने को समाजवाद की एकमात्र ठेकेदार समझनेवाली पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी की इस सम्बन्ध में क्या नीति है यह समझ में नहीं आया। कम्युनिस्ट पार्टी ऐसे गोलमोल शब्दों में अपनी नीति को व्यक्त करती रही कि विरुद्ध मतावलम्बियों को उसके सम्बन्ध में परस्पर विरुद्ध धारणायें उत्पन्न होती रही। फिर इस सम्बन्ध में भी उसकी नीति बराबर बदलती रही।

कांग्रेस के नेताओं ने देश के धार्मिक विभाजन को यह समझकर ग्रहण किया कि इससे कम से कम आपसी झगड़े का अन्त हो जायगा। तीन जून को दिल्ली से पहले तो वायसराय लार्ड मौंटबेटेन ने ब्राडकास्ट किया जिसमें उन्होंने भारतवर्ष का औपनिवेशिक पद प्राप्त होना और उसका दो राष्ट्रों में विभाजित होना घोषित किया। इसके वाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यह घोषित किया कि कांग्रेस इस घोषणा को यह समझकर स्वीकार करती है कि इस प्रकार शायद बिछुड़े हुए हिस्सों के जुड़ने में शीघ्रता हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लीग तथा उसके नेताओं को जो ज़रा भी जानता था, वह कभी यह आशा नहीं कर सकता था कि जिस रूप मे पाकिस्तान मिला वो उस रूप में वह किसी भी प्रकार उनको खुश कर सकता था। जिस संस्था ने नोआखाली में तथा कलकत्ता में संगठित तरीके से हिन्दू-हनन तथा उनकी स्त्रियों को भगाने का कार्यक्रम चलाया था, उनसे यह आशा करना कि वे शक्ति हाथ में पाकर बिलकुल साधु हो जायेंगे तथा लोकतांत्रिक तरीके से चलेंगे दुराशा- मात्र थी।

जूनागढ़, काश्मीर की घटनायें तथा पूर्वी बंगाल द्वारा आसाम और पश्चिमी बंगाल की भूमि पर चढ़ाई से यह स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान का बनना झगड़े घटाने में सहायक न होकर झगड़ों का पैमाना और स्थापित्व बढ़ाने में सहायक हुआ।

जो झगड़े पहले बहुत कुछ दंगों के रूप तक रह सकते थे, अब उनका युद्ध तथा महायुद्ध में परिणित होने की सम्भावना दृष्टिगोगचर हो रही है। जिस समय यह परिशिष्ट लिखा जा रहा है, (मई १६४८) उस समय काश्मीर पर हमला जारी है, यह अच्छी तरह साबित हो चुका है कि काश्मीर पर यह जो हमला है, इसमें पाकिस्तान का हाथ है, पाकिस्तान इन आक्रमणकारियों को खाना दाना, अस्त्र-शस्त्र, छोटे तोप दे रहा है; इस आक्रमण का मामला संयुक्त-राष्ट्र संघ के सामने पेश हुआ पर उसने पक्षपातपूर्ण निर्णय दिया जो भारत को मान्य नहीं। यह सन्देह होता है कि काश्मीर का युद्ध शायद कभी खतम न हो क्योंकि कबीलों को तो ब्रिटिश कभी ठीक नहीं कर पाये, और अब पाकस्तान ने कबीलों को बिल्कुल स्वतन्त्र कर दिया कि वे जहाँ चाहे तहाँ जावें।

फिर पाकिस्तान बनने के तुरन्त बाद ही पश्चिमी पंजाब के सारे हिन्दू तथा सिक्ख मारे गये तथा जो बचे उन्हें वहाँ से मारकर खदेड़ दिया गया, फलस्वरूप पूर्वी पंजाब के मुसल-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानों के साथ भी ऐसा ही हुआ, जिसका नतीजा एक यह हुआ कि कड़वापन बढ़ गया, और भारतीय यूनियन लिये एक ऐसा प्रश्न उत्पन्न हो गया कि उसका सारा ध.. इसी में खर्च होने लगा। किसी राष्ट्र-निर्माण-सम्बन्धी योजना को कार्यान्वित करने की कोई गुञ्जाइश ही नहीं रही क्योंकि बिना धन के किसी योजना को कार्यान्वित करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

यद्यपि क्रान्तिकारी परिस्थितियों के दबाव के कारण ही भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिला था, फिर भी कोई क्रान्ति नहीं हुई थी। एक अधूरी क्रान्ति के कारण जो कुछ मिला, उसमें स्वाभाविक रूप में अधूरापन रह गया।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CALCUT
ven u
he orga
at th

10,000
trial
one of
untry
the la
minute
team in
st the ta
play, in
d ball
A tru
can b
the
asant
a few
othe
sly
wapa
ahar
natha
and
divid
Bagar
binat
r gre
pared
al thr
strik
in
a w
man
arv
hea
M
geni
sc
mid
ti
rte

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CALCUT
ven u
game orga
guna at th

About 10.000
unequal trial
between one of
of the country
ed up at the la
The 90-minute
home team in
against the ta
tional play, in
tions and ball
Bagan. A tru
counter can b
fact that the
todian Prasant
ball only a few

On the oth
continuously
footed Swapa
shrewd Jahar
and Ulganatha
goal time and
few individ
Mohun Baga
knit combina

In their gre
Bagan spared
up a goal thr
forward strik
left-flank in
unleash a w
beat Laxman
was a marve
liant overhea
keeper P M
flash of geni
as Mitra, se
well up mid
just near th
Gupta darte
In the

The U.P. custodian, Laxman foils a dangerous move by the Bagan forwards at the Central Sports Stadium on Sunday.
N.H. Photo.

MAHINDRAS IN 1-0 LEAD: GOLD CUP

BOMBAY, April 27.—Mahindra and Mahindra of Bombay led 1-0 ... Mahindra's centre-forward Victor D'Souza scored the only goal

ment here
ing the qu
He won
in straigh
19 points
Tjun T
and curr
champio
Kewk Cl
Victoria
In th
the win
fourth-
New Ze

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

...t Sea Against ...ily Bagan

By Our Sports Reporter

LUCKNOW, Sunday.

...ride Mohun Bagan today ground the Uttar Pradesh Ele- ...perious heel, winning by five goals to nil, in an exhibition ... of the birthday celebrations of Chief Minister H. N. Bahu- ...rts Stadium here.

into goal bringing Mohun Bagan's tally to 5-0.

TEAMS:

MOHUN BAGAN: P Mitra (E Ganguly), B Dikpati, S Chakraverty, N Goswami, D Palit, R Dutta, (Tapan Bose) P Banerjee (Barun Misra) Ulganathan, Kesto Mitra, J Das, S Sen Gupta (Dastidar).

U.P. XI: Laxman, M Abbas, P Thapa, N Chatterjee, SP Chatterjee, SG Paul Sabbarwal, Pradhan, Megh Bahadur DS Thapa, Bhatta, R Singh and R Chand substituted in second-half.

Referee: AD George.

BAREILLY-NAINI TAL MOTOR RALLY

From Our Correspondent

NAINI TAL, April 27.—A 146-km long motor rally from Bareilly to Naini Tal is to be organised on May 10.

It is the second occasion when such a rally has been planned.

To be organised by the Bareilly Jaycees the forthcoming rally is expected to attract 40 participants.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शि.
११२

ओड़िया-प्रवेश

देवनागरी लिपि के माध्यम से

भुवन वाणी ट्रस्ट
लखनऊ ३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh